होमियोपैथिक

केण्ट मेटिरिया-मेडिका

लेखक—

जेम्स टेलर केण्ट ए, एम, एम, डी।

प्रोफेसर आफ मेटिरिया-मेडिका, हेरिङ्ग कालेज, शिकागो,

लेखक—"रेपर्टरी आफ दी होमियोपैथिक

मेटिरिया-मेडिका" और

"होमियोपैथिक फिलासफी" और व्याख्यानदाता।

प्रकाशक—

एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

८४, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

द्वितीय संस्करण] १९४४ [मूल्य १८)

प्रकाशक—
श्रीफकीरदास सरकार
एम० भट्टाचार्य एण्ड को०
८४, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

मुद्रक—
श्रीरत्नेश्वर बोस
इकनमिक प्रेस
२५, रायबगान स्ट्रीट, कलकत्ता।

इ० पि०—२०००—१० १०-४४ ई०।

वक्तव्य।

महामना केण्ट-लिखित मेटिरिया मेडिकाका यह हिन्दी भाषान्तर, हिन्दी-भाषा-भाषी जनताके सम्मुख उपस्थित करते हमें बहुत ही प्रसन्नता होती है। डाक्टर केण्ट अपने समयके अद्वितीय चिकित्सक थे। उनकी औषध-निर्वाचन-प्रणाली, होमियोपैथिक विज्ञानका प्रभूत ज्ञान और चिकित्सा-प्रणाली अतीव आदर्श मानी जाती थी। इतना ही नहीं, कालेजोंमें उनकी होमियोपैथिक शिक्षा-पद्धतिकी धूम थी। मेटिरिया-मेडिकाके तो वे अद्वितीय विद्वान माने जाते थे। इसके अतिरिक्त, होमियोपैथिक चिकित्सा-पद्धति तथा लक्षणावलीके साथ भेषज विज्ञानका सादृश्य और सामञ्जस्य मिलाकर औषधका निर्वाचन, उनके समान करनेवाला उस कालमें दूसरा कोई न था। इसीलिये, वे कालेजके मेटिरिया-मेडिकाके अध्यापक चुने गये थे। परन्तु यह मेटिरिया-मेडिका उन्होंने पुस्तकाकार प्रकाशित करनेके उद्देश्यसे न लिखी थी, बल्कि कालेजमें विद्यार्थियोंको पढ़ाते समय प्रत्येक औषधपर उन्होंने जो व्याख्यान दिये थे, यह उनका ही संग्रह है, पर यह संग्रह भी ऐसा अपूर्व है, जिसका जोड़ा ही नहीं है। किसी औषधके गूढ़ और गूढ़तम विषयको विद्यार्थियोंके मानस-पटलपर अङ्कित कर देना सहज-साध्य कार्य नहीं है, पर महामना केण्टने अपने शिक्षा-ज्ञान और अभिज्ञता द्वारा, असाध्य-साधन कर दिखाया है। मेटिरिया-मेडिका जैसे कठिन विषयको अपनी वर्णन-शैलीके कारण उन्होंने सरल-से-सरल बना दिया है। कोई भी औषध उठाकर पढ़िये, पढ़कर छोड़ दीजिये, बिना कोई विशेष मस्तिष्क-चालना किये ही आप देखेंगे, आपके मस्तिष्कमें कुछ-न-कुछ छाप पड़ गयी है, कुछ-न-कुछ आपको याद हो गया है। कलाकार केण्टकी वर्णन-शैली और शिक्षा-पद्धतिकी यही कुशलता है।

हिन्दीमें इस ग्रन्थकी बड़ी जरूरत थी, हिन्दीमें ही क्यों, होमियोपैथिक चिकित्सक-मात्रके लिये ही यह ग्रन्थ विशेष आदरकी सामग्री है। इसमें जिस तरह रोग लक्षणावलीपर ध्यान रखकर दवाएँ बतायी गयी हैं, उसी तरह वैसे ही, सम-लक्षणोंमें थोड़ा-सा ही अन्तर पड़ जानेपर, किस तरह दवा बदल जाती है और किस तरह क्रियामें अन्तर पड़ जाता है, यह भी अच्छी

तरह बता दिया गया है। दवाके चुनावका तरीका तो इसमें इतना स्पष्ट बताया है, कि वर्णन-शैली और औषध निर्वाचन प्रणाली देखकर आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है। डाक्टर केण्टने इसमें मेटिरिया-मेडिकाके समस्त औषध नहीं लिये हैं, जिन औषधोंकी बराबर आवश्यकता हुआ करती है, जिनका व्यवहार अपरिहार्य है और अन्य दवाओंकी सहायता लिये बिना ही जिनसे समस्त आवश्यक कार्य चल सकता है, वे सभी प्राय. ले लिये हैं।

चेष्टा तो यही की गयी है, कि अनुवादकी भाषा सरल हो और खूब ही सरल रखी भी गयी है, पर फिर भी विज्ञानका विषय है—चिकित्सा-शास्त्रका वृहत् ग्रन्थ।

इस ग्रन्थमे औषध-सूची पुस्तकके अन्तमे दी गयी है— वह भी इस ढङ्गसे कि जहाँ जो दवा आयी है, उस पृष्ठकी संख्या दे दी गयी है। बड़े अक्षरोंकी संख्याएँ वे हैं, जहाँसे दवाका आरम्भ हुआ है और छोटे अक्षरोंकी संख्याएँ वे हैं, जहाँ किसी अन्य औषधके वर्णनमे उनका जिक्र आया है।

अमेरिकाके **मेसर्स बोरिक एण्ड टैफेलने** यह ग्रन्थ अङ्गरेजीमें प्रकाशित किया था। प्रचारके उद्देश्यसे उन्होंने इसका हिन्दी भाषान्तर प्रकाशित करनेकी हमें जो अनुमति प्रदान की है, उसके लिये हम उन्हें अनेक **धन्यवाद** देते हैं।

एक बात और भी—हमारा उद्देश्य होमियो-भक्तोंको इस चिकित्सा-विज्ञानका ज्ञान प्राप्त कराना ही रहा है। इसीलिये पुस्तकें तथा दवाओंका मूल्य हमारे यहाँ सदैव बहुत ही कम रखा जाता है। इसी अनुसार इस वृहत् ग्रन्थका भी मूल्य बहुत ही कम रखा गया है।

आशा है, होमियो-मन्दिरके पुजारीकी यह भेंट भी हिन्दी-भाषी जनता उसी दृष्टिसे स्वीकार करेगी, जैसी अबतक करती आयी है।

माघ, १३४६ } **एम० भट्टाचार्य एण्ड को०**

केण्ट-लिखित प्रथम संस्करणकी भूमिका।

होमियोपैथिक मेटिरिया-मेडिकापर ये व्याख्यान होमियोपैथीके पोस्ट ग्रेजुएट स्कूलमें दिये गये थे। इनमेंसे कुछ जर्नल आफ होमियोपैथिक नामक पत्रमें भी प्रकाशित हुए थे, पर इस पुस्तकके लिये उनका पूरी तरह संशोधन कर दिया गया है। ग्रन्थकारकी इच्छाके विरुद्ध रहनेपर भी विद्यार्थियोंके जबर्दस्त अनुरोधके कारण इसका ढङ्ग बातचीतका ही रहने दिया गया है। ये व्याख्यान ग्रन्थकारकी प्रत्येक दवाको अध्ययनकी प्रणाली वर्णन करनेके रूपमें ही दिये गये हैं। जब कोई अज्ञान मनुष्य कुछ कहता है, तो चिकित्सकके मनमें उसकी सब बीमारियाँ बैठ जाती है, इसीलिये, मेटिरिया-मेडिका पारिभाषिकत्वसे सरल व्याख्यानके रूपमें अवश्य ही घटा लानी चाहिये। दो औषध कभी ठीक-ठीक समान भावसे अध्ययन नहीं किये जाते। मनमें ठीक बैठ जानेके लिये प्रत्येककी आवश्यकता कुछ विभिन्न ही रहती है और यही उस औषधका चरित्रगत लक्षण है। इस ग्रन्थमें समस्त मेटिरिया-मेडिका नहीं ली गयी है, बल्कि जिनकी पूरी-पूरी परीक्षा हो चुकी है और जिनके जबर्दस्त चरित्रगत लक्षण हैं, वे ही दवाएँ इस उद्देश्यसे इसमें वर्णित हुई है, कि लोग समझ ले कि मेटिरिया-मेडिका किस तरह व्यक्त की जा सकती है और कैसे उसका व्यवहार हो सकता है। दवाके अध्ययन करनेके और भी तरीके है, पर ग्रन्थकारको प्रत्येक दवाकी प्रकृतिका स्थायी ज्ञान विद्यार्थियोंके मनमे जमा देनेकी स्वाभाविक प्रणाली यही मालूम हुई। ऐसा भी हो सकता है, कि यह ऐसा ही दिखाई देता है, क्योंकि ग्रन्थकार एक इसी प्रणालीसे सदैव काम लेता आ रहा है। चरित्रगत लक्षणोंको बारम्बार दुहरानेपर लोग आपत्ति कर सकते है, पर अभिज्ञताने प्रमाणित कर दिया है, कि प्राथमिक विद्यार्थियोंके मनमें किसी दवाको स्थायी भावसे जमा देनेका इसके सिवा दूसरा तरीका ही नहीं है।

इस ग्रन्थके प्रणयनमें हैनिमैनको मेटिरिया-मेडिका पूरा, हेरिङ्गके गाइडिङ्ग सिम्पटम्स तथा इनसाइक्लोपीडिया आफ प्योर मेटिरिया-मेडिका ग्रन्थोंने बहुत अधिक सहायता पहुँचायी है।

इसमें दिये हुए व्याख्यान विभिन्न औषधो के सम्पूर्ण वर्णनसे पूर्ण नहीं हैं, बल्कि इसमें कुछ बहुत ही मुख्य और प्रधान बातोंका ही वर्णन है। सम्पूर्ण

वर्णन तो अपरिसीम ही है। हमने तो इतनी ही आशा की है, कि इससे कुछ नवीन चिकित्सक और विद्यार्थियोंको थोड़ी सहायता प्राप्त हो जायगी। मैटिरिया-मेडिकाको समझ लेनेका कोई भी सुविख्यात सुगम पथ नहीं है, यह कष्टकर और कड़ी मजदूरी है, पर अन्य बृहत् विज्ञानोंकी तरह यह उतना कष्टप्रद भी नहीं है। यद्यपि यह जीवनकी रक्षा और कष्टोंको घटा देनेवाला है, परन्तु इसकी महानताके कारण बहुत-से इस काममें हाथ ही न डालेंगे और बहुत-से यह अच्छी तरह जानते और खुले-आम यह अज्ञान स्वीकार करते हुए भी कि जो प्रणाली वे बरत रहे हैं, वह अपूर्ण, वृथा और अकसर नाशक भी हो जाती है, जनसाधारणकी सेवासे बाज न आयँगे। कितनों ही का कथन है, कि इस तरह लक्षणावलीके विश्लेषणपर उनका विश्वास नहीं है, पर यदि इसपर भ्रम-पूर्ण अधिकार प्रकट करनेके लिये कोई दूसरी प्रणाली रखी जाती है, तो उसका परिणाम यही होता है, कि वे जहाँ के-तहाँ उसी तुच्छ मानसिक अनिच्छाकी दशामें लौट आते हैं और चिल्लाते हैं—"खट्टे अंगूर।"

सावधानता-पूर्वक अध्ययन तथा प्रयोगसे ही मैटिरिया-मेडिकाका ज्ञान प्राप्त हो सकता है। यह समझी जा सकती है, पर कण्ठ नहीं की जा सकती। जो मैटिरिया मेडिकाको कण्ठ कर लेना चाहेंगे, वे निश्चय ही असफल होंगे। हमेशा इसे पास रखना चाहिये तथा इसका ठीक ठीक और अनवरत प्रयोग करना चाहिये। तुलनाके लिये सम्पूर्ण रेपर्टरीके सहारे मैटिरिया-मेडिकाका अनवरत अध्ययन ही कार्यका उत्तम ज्ञान प्राप्त करनेकी प्रणाली है। मैटिरिया-मेडिकाका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये, हैनिमैनके आर्गेननको अच्छी तरह आयत्त कर लेना चाहिये, जिसके बाद लक्षणावली और आर्गेनन तो हाथ मिलाये ही चलते हैं। यदि होमियोपैथिक दवाओंकी यत्न पूर्वक प्रयोग करना हो, तो आर्गेनन, लक्षणावली और पूरी रेपर्टरी तो सदैव परिचालक ग्रन्थोंकी तरह साथ रहनी चाहिये।

इस ग्रन्थमें जो प्रणाली प्रयोगमें लायी गयी है, उसके कारणकी और भी विस्तृत परीक्षा जिन्हें करनी हो, उन्हें लेकचर्स आन होमियोपैथिक फिलासफीका वल्यू आफ सिम्पटम्स अध्याय देखना चाहिये।

अक्टूबर—२८, १८०४
१०८, एन स्टेट स्ट्रीट, शिकागो।

जेम्स टेलर केण्ट

दूसरा संस्करण।

क्लासमें विद्यार्थियोंके बारम्बार अनुरोधके कारण ये व्याख्यान पहली बार पुस्तकाकार प्रकाशित किये गये थे। अब दूसरे संस्करणकी मांग आयी है। इसमें भी ढङ्ग वही बातचीतवाला रहने दिया गया है, जो क्लासमें व्याख्यान देनेका था। बहुत-सी अन्य दवाएँ इसमें सम्मिलित कर दी गयी हैं और सम्पूर्ण ग्रन्थका संशोधन कर दिया गया है, कितनी ही दवाएँ नयी हैं और नये ढङ्गसे उपस्थित की गयी हैं। यद्यपि "लक्षणावलोकी सूची" होमियोपैथिक मेटिरिया-मेडिकाका एक महत्व पूर्ण अंश है, पर विद्यार्थी जिस समय व्याख्यान सुनते हैं, उस समय दवाकी धारणाको उस रूपमें मनमें जमा लेना कठिन हो जाता है। इसीलिये, ग्रन्थकारने अर्द्ध-रोगी पार्श्व चिकित्सा-प्रणालीका ढङ्ग इन लक्षण-समूहोंको बताने और वर्णन करनेमें स्वीकार किया है, जिससे कि प्रत्येक औषधकी एक मूर्त्ति सामने आ जाये। ऐसा इसलिये किया गया है, कि विद्यार्थी सम्पूर्ण और आंशिक दोनों ही रूपसे औषधको समझ जाये और उनकी उस स्मरण शक्तिपर इतना बोझ न आ पड़े, जो हमेशा मेडिकल कालेजोंमें अत्यधिक कार्यके कारण क्लान्त रहती है। "लक्षण सूची" तो परिचालक ग्रन्थके रूपमें सदा सर्वश्रेष्ठ ही रहेगी, पर बहुत दिनोंतक शिक्षा-कार्य द्वारा यह देखनेमें आया है, कि बहुत-से विद्यार्थी, जो इस सूची द्वारा औषधको हृदयङ्गम नहीं कर सकते, वे ही अर्द्ध रोगी पार्श्व चिकित्सा-प्रणाली और बातचीतके ढङ्गसे बहुत अच्छी तरह समझ जाते हैं।

यदि इन व्याख्यानों द्वारा हमारी नित्य प्रयोगमें आनेवाली दवाओंको कुछ अधिक समझनेकी शक्ति मिली, तो हमारी आशा पूर्ण फलवती हो जायगी। यह मान लिया गया है, कि मानव मस्तिष्क किसी औषधकी एक साधारण प्रति-मूर्त्ति ही ग्रहण कर सकता है। अतएव, अकसर जटिल लक्षण-समूह रहनेपर, डाक्टरखाने या रोगी-शय्या-पार्श्वमें विशेष विचारकी जरूरत पड़ जाती है, उस समय हमेशा रेपर्टरी द्वारा परीक्षाकी बहुत अधिक आवश्यकता रहती है।

सितम्बर—१, १८११
९२, स्टेट स्ट्रीट, शिकागो।

जेम्स टेलर केण्ट

होमियोपैथिक
केराट मेटिरिया-मेडिका।

एब्रोटेनम।

(Abrotanum)

इस अत्यन्त बहुमूल्य ओषधिका तो बहुत अधिक व्यवहार होना चाहिये। **ब्रायोनिया** तथा **रसटक्स** द्वारा आरोग्य होनेवाली अवस्थाओंमें इसका व्यवहार तो होता है, पर इसके लक्षणोंपर यदि अच्छी तरह ध्यान दिया जाये तो इसके रोगी एक विशेष प्रकारके होते हैं। हृत्पिण्डमें उत्तेजना रहनेके साथ वातकी अवस्था, नाकसे खून जाना, पेशावके साथ खून जाना, चिन्ता तथा कम्पन, खासकर जब पतले दस्त आनेका भी इतिहास प्राप्त हो तो इसका प्रयोग होता है। यदि ऐसा हो जाये कि एकाएक पतले दस्त आना बन्द हो जाये, और ऊपर लिखे लक्षण सब उत्पन्न हो जायें तो ऐसी अवस्थामें ऐब्रोटेनमकी ही जरूरत रहती है। यदि वातका दर्द एकाएक दब जाये और वात दब कर हृद्पिण्डकी गड़बड़ीके लक्षण पैदा हो जायें तो ऐब्रोटेनम ही उसकी दवा है। यह बहुत कुछ **लीडम, आरम** और **केलमिया** के समान है।

बच्चोंकी सुखण्डीकी बीमारीकी यह बहुत ही फायदेमन्द दवा है और इसमें इसका काफी व्यवहार भी होता है। पर इसके रोगी बच्चेकी **सुखण्डी पैरोंसे आरम्भ होती है और धीरे धीरे ऊपरी अंग भी पतले पड़ते जाते हैं।** यहाँ तक कि चेहरेपर सबके अन्तमें इस रोगका आक्रमण होता है, अर्थात् यह दवा **लाइकोपोडियम, नेट्रम-म्यूर** और **सोरिनम** के बिल्कुल विपरीत है।

ब्रायोनियाके सब लक्षण मिलनेपर भी, जब ब्रायोनियासे लाभ नहीं हुआ है तो इसने प्लुरिसी (वक्षावरकझिल्ली प्रदाह) को आरोग्य किया है। एक स्त्रीको श्वासकष्ट, घबड़ाहट, ठण्डा पसीना, हृदपिण्डमें दर्द प्रभृति सभी दुर्लक्षण उत्पन्न हो गये थे, उसका मृत्युकाल उपस्थित समझकर उसके रिश्तेदार और मित्र उसे घेरे बैठे थे। इसी समय यह जाननेमें आया कि कई महीनोंसे वह एक पैरके घुटनेमें वातकी तकलीफ भोग रही थी, वह लकडीके सहारे घरसे बाहर निकलती थी पर यह अवस्था होनेके कुछही दिन पहले एक तेज मरहम लगानेके कारण वह बहुत जल्द आरोग्य (आरोग्य नहीं, बल्कि उसकी बीमारी भीतर छिप गयी) हो गयी और उसके बाद ही यह आक्रमण हुआ। ऐब्रोटेनमने उसे तुरन्त पूर्ण आरोग्य कर दिया।

सन्देहजनक वमनके साथ पेटमें जलन और जखमकी तरह दर्दको भी इसने उत्पन्न और आरोग्य किया है।

स्तन-प्रदाह ऐब्रोटेनमका एक विशेष उपसर्ग है। एक रोगका दूसरेमें परिवर्त्तित हो जाना भी ऐब्रोटेनमकी ही याद दिलाता है। कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह या सूजन, जो उस जगहको छोड़कर अण्डकोष या स्तनग्रन्थिमें उतर आती है, साधारणत **कार्बो-वेजिटेबिलिस** अथवा **पलसेटिला** से आरोग्य हो जाती है। पर जब इन ओषधियोंने अपनी कोई भी क्रिया नहीं दिखायी है, उस समय ऐब्रोटेनमने ही आरोग्य किया है।

एकाएक अतिसार रुककर बवासीर, तथा वातकी तकलीफ बन्द होकर अगर खूनका स्राव, जैसा कि ऊपर बताया है, हो जाये तो इसपर तुरन्त ध्यान देना चाहिये।

ठण्डी सीडवाली ऋतु या ठण्डा हवा ऐब्रोटेनमके रोगीको सहन नहीं होती। उसे पीठके दर्दकी बहुत अधिक तकलीफ रहती है तथा रातमें उसके लक्षण या तकलीफें बदतर हो जाया करती हैं।

लड़कोंके अण्ड-वृद्धि रोगको यह आरोग्य कर देता है और बच्चोंकी नाभीसे अगर रक्तस्राव होता हो तो यह आरोग्य कर देता है।

इसके रोगीको या तो पतले दस्त आते है अथवा कब्जियत हो जाती है। कब्ज होते हीवातकी तकलीफ पैदा हो जाती है पर अतिसार अर्थात् पतले दस्त आते रहनेके समय वह अच्छा रहता है, क्योंकि दस्त आना बन्द होते ही

वह रोगसे भर जाता है। **नेट्रम-सल्फ** और **जिङ्कम** की तरह पतले दस्त उसे बहुत आराम पहुँचाते हैं।

उसे इधर उधर शरीरमें तेज़ दर्द हुआ करता है, पर यह दर्द विशेषकर डिम्बाशय और सन्धियोंमें होता है।

एसेटिक एसिड ।

(Acetic Acid)

पीले, दुबले-पतले मनुष्योंकी बीमारीमें यह दवा ज्यादा फायदा करती है। कई वर्षोंके पुराने रोगी, जो कमजोर होते चले आये हैं और जिन्होंने वंशगत रूपसे यक्ष्मा अर्जन कर लिया है, वे इसके प्रयोग-क्षेत्र हैं। दुबलापन, कमजोरी, खूनका घट जाना या रक्तहीनता, भूख न लगना, तेज प्यास, बदबूदार पीला पेशाब—ये सभी लक्षण एसेटिक-एसिडके हैं। कामोत्तेजनकी तरह, स्पन्दनके साथ ही साथ तापकी लहर आती है और जाती है। छोटी लड़कियोंका हरित्पाण्डु रोग, सारे शरीरमें शोथका भाव, कीड़े काटने या किसी कीड़ेके डंक मारनेका दुष्प्रभाव ये सब इस दवासे आरोग्य हो जाते हैं। क्लोरोफार्मका अगर बुरा प्रभाव हो जाये तो सिर्का (विनिगर) उसकी एक बहुत दिनोंकी प्रचलित औषधि है। जिस कासके साथ रक्तस्राव होता है, उसकी भी यह एक लाभदायक दवा है। नाक, पाकाशय, मलनाली, फेफड़े या फोड़े प्रभृति कितने ही स्थानोंकी श्लैष्मिक झिल्लियोंसे रक्तस्राव होनेपर भी यह फायदा करता है। रोगीको सर्दी सहन नहीं होती।

मन विस्मृ खलित रहता है, अपने बच्चोंको भी पहचान नहीं सकती, ताज़ी घटनाको भी भूल जाती है, घबड़ाहटका दौरा होता है, हमेशा एक न एक तकलीफ बनी ही रहती है। सोचा करती है, कि कुछ होना चाहता है, आशंकित चित्त, चिड़चिड़ी, क्रोधित, हमेशा ही शिकायत किया करती है।

दुर्बल तथा रक्तहीन रोगियोंमें मूर्च्छाका भाव, सर-दर्द, चेहरा पीला और मोमकी तरह रहता है। नाकसे रक्तस्राव, एक गाल पीला दूसरा लाल, कण्ठनली या स्वरयंत्रकी डिफ्थीरिया (झिल्लीक-प्रदाह), बेहद प्यास रहती है,

पाकाशय अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णु रहता है। पेट पर हाथ नहीं रखा जाता। रक्तकी कै होती है और जो खाया-पिया रहता है, सब निकल जाता है, चबानेकी तरह दर्द, पाकाशय तना और फूला रहता है, उसमें हमेशा गड़बड़ी मालूम होती है, पाकाशय तथा उदरमें जलनका भाव, पर यह पेटके बल लेटनेपर घट जाया करता है।

तलपेटमें बहुत दर्द होता है, वह तना रहता है, और उसमें या तो वायु भरी रहती है अथवा शोथ रहता है, छूनेसे बहुत तकलीफ़ होती है, अतिसार, पतले, खून-मिले या केवल खूनके दस्त आते हैं, बवासीरके मसेसे बहुत ज्यादा खून निकलता है, पुराना अतिसार या सग्रहणीको बीमारी।

बहुत ज्यादा बदबूदार और पानीकी तरह पेशाब होता हैं। पेशाबके साथ चीनी रहनेवाले (मधुमेह) अथवा बिना चीनीवाले बहुमूत्रके रोगी, जिनमें तेजप्यास, दुर्बलता तथा शरीरकी त्वचाका रग बदरग और मास-क्षयका भी लक्षण था, इसने आरोग्य कर दिया है।

धातु-क्षयके साथ दुर्बलता, जननेन्द्रिय शिथिल रहती है तथा पैर फूले रहते हैं।

जरायुसे रक्तस्राव, बदबूदार आर्त्तव-स्राव या मासिक ऋतुस्रावका रक्त पानीकी तरह निकलता है, हरित्पाण्डु रोगके साथ मासिक ऋतुस्राव बहुत ही कम होता है।

स्वरयत्रकी कमजोरी, क्रूप या काली खाँसी और डिफ्थीरिया या स्वर-यंत्रकी डिफ्थीरियाके अनेकानेक रोगी इसने आरोग्य कर दिये है। आवाजका कर्कश पड़ जाना, साथ ही श्लैष्मिक झिल्लीका पीलापन, दुबले, रक्तहीन, पीले, जिन्होंने वशगत रूपसे यक्ष्मा प्राप्त किया है, ऐसे मनुष्योंकी पुरानी सूखी, खुसखुसी खाँसी, उसके साथकी हाथ-पैरोंमें सूजन, पतले दस्त और श्वास-कष्ट या रातमें पसीना होना, फेफड़ेसे खून जाना, छाती और पेटमें जलन, सीनेमें घरघराहटकी आवाज, पुरानी ब्राङ्काटिस (वायुनली प्रदाह)।

हाथ-पैरोंमें कमजोरी और खजताके साथ ही साथ सूजन, यह वातकी वजहसे भी हो सकती है और शोथ रोगके कारण भी, अतिसारके साथ ही साथ हाथ पैरोंमें सूजन।

यह गहराई तक काम करनेवाली और सार्वाङ्गिक औषधि है और जब खूब अध्ययन कर इसका प्रयोग किया जाता है, तो बहुत लाभ करती है।

सिर्का, काफी, साधारण नमक प्रभृति सभी चीजें, जिनका हमलोग खाद्य रूपमें अपव्यवहार करते है, बडी बडी लाभदायक दवाएँ हो जाती है। जटिल पुरानी बीमारियोंको आरोग्य करनेके लिये अक्सर इनपर ध्यान देना चाहिये।

एकोनिटम नेपेलस।

(Aconitum Napellus)

ऐकोनाइट एक लघु-क्रियाशील दवा है अथात् इसका प्रभाव थोडी देरतक रहता है। इसके लक्षण भी बहुत देरतक नही बने रहते। बडी मात्रामें यह एक भयंकर विषका काम करता है, या तो जीवन ही नष्ट कर देता है या बहुत जल्द इसका प्रभाव दूर हो जाता है। इसी तरह, रोगीको आरोग्य होना होता है, तो वह बहुत जल्द आरोग्य भी हो जाता है। आराम होनेमें देर नहीं लगती। इसके बाद कोई पुरानी बीमारी नही हो जाती। इसकी लक्षण तूफानकी तरह आते, तकलीफ देते और चले जाते है। जरा ध्यान देनेसे ही मालूम हो जायगा कि इसकी बीमारियाँ किस ढगकी होती हैं और किस प्रकृतिके रोगीको इस तरहकी थोडे समयवाली और आकस्मिक बीमारियाँ होती हैं। यदि अपने अनुभव और होमियोपैथिक विचारोंके अनुसार, हमलोग क्षण भरके लिये भी इस विषयपर ध्यान दे, तो हमें याद आ जायगा कि बलवान, रक्तपूर्ण मनुष्योंको, जब सर्दी लग जाती है तो वे बहुत जल्द शय्याशायी हो जाते है, पर कमजोर मनुष्य, दुबले-पतले मनुष्य, बीमार होते हैं और नयी बीमारियोंसे भी बहुत धीरे धीरे आरोग्य होते हैं तथा वे इतनी तेज़ीसे और इतने आकस्मिक रूपसे बीमार भी नहीं होते। इसीसे तथा एकोनाइटके आकस्मिक प्रभावकी परीक्षा करनेसे, यह सरलता पूर्वक मालूम हो जायगा कि ऐकोनाइटके रोगी विशेषकर मोटे-ताजे और वे ही होते हैं, जिनमें रक्तकी अधिकता होती है। मजबूत, दृढ मास-पेशियोंवाले मनुष्य, सबल चचल लडके और बच्चे, बहुत थोडी सर्दी या खुली हवा लगनेसे बीमार नहीं होते, बल्कि जोरकी सर्दी या हवा लगनेपर ही बीमार होते हैं। कम कपडे पहननेके कारण हवा लग जाना अथवा एकाएक तेज ऋतु परिवर्तन हो जाना, बहुत देरतक सर्दी या उत्तरी

सूखी तेज हवाका लगना प्रभृति कारणोंसे पैदा हुई बीमारियाँ इसके अन्तर्गत है। पतले कपड़े पहननेके कारण यदि बलवान मनुष्यको सर्दी लग जाये, या वह सर्दीमें बाहर घूमता रहे, सर्दीके मध्यकालकी सूखी हवा लग जाये तथा इन आकस्मिक ऋतु परिवर्त्तनोंका उसपर प्रभाव पड़ जाये, तो रात होनेके पहले ही वह बीमार हो जाता है और तेज़ उपसर्ग सब पैदा हो जाते हैं। ऐकोनाइटके रोगी इसी ढगके बलवान और रक्तपूर्ण होते हैं। उनका हृदय बहुत सबल, मस्तिष्क तीव्र कार्यशील और रक्तका दौरान भी सबल रहता है। ये यदि एकाएक सर्दी या तेज़ हवा लगकर बीमार हो जायें तो इनके लिये ऐकोनाइटकी ही जरूरत पड़ती है।

प्रदाह हो जानेके बाद अकसर जो नतीजा होता है, ऐकोनाइटमें उस ढगकी प्रकृति बिलकुल ही नहीं है। यह रोग-रूपी तूफान इतना जल्द निकल जाता है, कि आरम्भिक अवस्थाकी सूचना देता ही यह मालूम होता है। इन बलवान रोगियोंमें एकाएक रक्तसचयका लक्षण अच्छी प्रतिक्रियासे ही चला जा सकता है। रोगीको भय होता है, कि उसकी एकाएक मृत्यु हो जायगी, पर वह बहुत जल्द आरोग्य हो जाता है। डनहमने ठीक ही कहा है, कि यह एक तेज़ तूफान है और जल्द ही निकल जाता है। डनहमने अपनी मेटीरिया मेडिकामें इसका जो वर्णन दिया है, वह बहुत ही कवित्व-पूर्ण और पढ़ने योग्य है।

सूखी, ठण्डी हवा लगकर रोगका एकाएक आक्रमण हो जाता है। रक्तपूर्ण बच्चोंमें इसका नमूना मिलता है। एकाएक उन्हें तेज बोखार और मस्तिष्कमें रक्तसचयके लक्षण पैदा हो जाते है, या ज्वरके साथ अकड़न पैदा हो जाती है। मस्तिष्क, फेफड़ा, यकृत, रक्त, गुर्दा या मूत्रपिण्ड, किसी भी शरीर यत्नमें इसकी तेजी तथा एकाएक रोग-पैदा होनेका लक्षण दिखाई दे सकता है। **शीत-ऋतुकी तेज सर्दीके, कारण या ग्रीष्म ऋतुकी तीव्र गर्मीके** कारण, जो रोग पैदा होते हैं, उनमें यह बहुत लाभ करता है। जाड़ेके दिनोंकी फेफड़े तथा मस्तिष्ककी बीमारियाँ तथा गर्मीके दिनोंका आँतोंका प्रदाह तथा पेटकी गड़बड़ीमें यह उपयोगी होता है। हम जानते हैं, कि ये बलवान रक्तपूर्ण मनुष्य किस तरह एकाएक बहुत गरम हो जाते हैं और बहुत बीमार हो पड़ते है। देखनेमें यह आकस्मिक आक्रमण बहुत ही भयकर मालूम होता है। इन सभी प्रादाहिक अवस्थाओंके साथ खूनके दौरानक तेज,

हृदुपिण्डकी क्रियाका बहुत तेज हो जाना, मस्तिष्ककी भीषण गडबडी, तथा अत्यन्त भयका तीव्र आघात भी सम्मिलित रहता है।

एकोनाइटकी अवस्थाके साथ जो मानसिक लक्षण सम्मिलित रहते हैं, वे प्रत्यक्ष रूपसे ही आरोग्यके लिये प्रकट रहते हैं। रोगीको अपनी बीमारीकी तेजी स्पष्ट अनुभव होती हैं, क्योंकि उसमें बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना तथा उपदाह मौजूद रहता है। उसके चेहरे पर भी भयके लक्षण दिखाई देते हैं और उसकी हृत्पिण्डकी क्रिया भी इतनी तेज़ रहती है, कि सबसे पहली बात वह यही सोचता है, कि वह चला, मृत्यु निकट है, यह मृत्यु हो है, जिसका उसे भय रहता है। यह मृत्यु-भय उसके चेहरे पर वर्त्तमान रहता है। वह कहता है—"डाक्टर! दवा देनेका अब कोई लाभ नहीं है, मैं मर रहा हूँ।" कभी कभी तो वह अपनी मृत्युका काल ठीक ठीक बता देता है। यदि उस कमरेमें घडी रहती है, तो वह बता देता है, कि घडीका काँटा जिस समय अमुक स्थानपर पहुँचेगा, उस समय उसकी मृत्यु होगी। जब कभी हमलोगोंको यह भीषण भयका लक्षण दिखाई दे, यह भयानक घबडाहट, घोर बेचैनी तथा रोगकी यह तेज़ी और एकाएक आक्रमण होनेका लक्षण दिखाई दे, तो समझ लेना चाहिये, कि यह मनुष्य या तो एकोनाइटके विषसे मर रहा है या इसे एकोनाइटकी जरूरत है। जिसे एकोनाइटका जहर फैलनेकी तरह बीमारी हो, उसे एकोनाइटकी एक बहुत छोटी खुराककी जरूरत है। यह अत्यन्त लघु क्रियात्मक ओषधि है, यह हमेशा याद रखना चाहिये।

इसपर तो ध्यान देना ही वृथा है, कि शरीरके जिस अंशपर हम विचार कर रहे हैं, वहाँ प्रादाहिक अवस्था प्राप्त होगी। पर प्रदाहका स्थान या प्रदेशपर विचार करनेकी अपेक्षा जरूरत है, रोगीके चेहरेपर ध्यान देनेकी। जिनका मैंने ऊपर वर्णन किया है, ऐसे ही लक्षण अवश्य प्रकट होंगे। आपको सबसे पहले ध्यान देना होगा रोगीके चेहरेपर, मानसिक लक्षणोंपर, बेचैनी पर और रोगकी तेज़ी पर। इसके अलावा कुछ ऐसे मानसिक लक्षण और भी हैं, जो इस भय घबडाहट प्रभृति लक्षणोंसे कम आवश्यक हैं पर वे लक्षण रोगीमें प्रकट हुए इन हृहत लक्षणोंके भीतर छिपे रहते हैं। उसे अपने मित्रोंपर बिल्कुल ही प्रीति नहीं रहती। उनका क्या हो रहा है, इसपर वह बिल्कुल ही ध्यान नहीं देना चाहता, अब उनसे मानो उसे कोई भी मतलब नहीं है। यह एक उदासीनताकी-सी अवस्था रहती है।

एकोनाइटके रोगीकी सब लक्षण लीजिये और तब दवाका प्रयोग कीजिये, नहीं तो दूसरी उससे अच्छी दवा दीजिये। एक दूसरी चाल और भी चली आ रही है अर्थात् बोखार देखते ही ऐकोनाइटका प्रयोग होता है। बँधी गतसे काम करनेवालोंमें बहुतोंके लिये ऐकोनाइट ही ज्वरकी दवा है, पर यह बुरा अभ्यास अथवा चिकित्सा प्रणाली है।

ऐकोनाइटमें इतनी जल्दी और तेजीसे आँखोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है, कि देखनेवाले आश्चर्य करतेहैं, कि इतने कम समयमें यह कैसे हो गया। आँखें बहुत फूल जाती है, उनके किसी तरहका स्राव नही होता या बहुत ही कम पानी जैसे श्लेष्माका स्राव होता है। यदि एकाएक प्रदाह हो जाये और आँखसे गाढ़ा श्लेष्माका स्राव होता हो, तो वह कभी भी एकोनाइटका लक्षण नही है। ऐकोनाइटके प्रदाहका कोई परिणाम-सूचक लक्षण नही पैदा होता। प्रदाहके परिणाम स्वरूपमें जो अवस्थाएँ उत्पन्न होती है, वे किसी दूसरी ही दवाकी ओर संकेत करती है। जब तक एकोनाइटका रोगी सामने हाजिर न रहे तबतक तो ज्वरके लिये आप एकोनाइटकी बात भी नही सोच सकते। एकोनाइटके ज्वरके साथ रोशनी सहन न होनेका लक्षण भी अवश्य ही वर्त्तमान रहेगा। "ज्वरके साथ बहुत अधिक बेचैनी" आँखकी पुतलियाँ सिकुडी रहती है और टकटकी लगी हुई रहती है। "चक्षुगोलकके भीतरी गहराईवाले अंशका प्रदाह और उसमें बहुत तेज दर्द रहता है।" एकोनाइटका प्रयोग तभी कीजिये, जब उसके लक्षण मिलें। वह प्रदाह जो बहुत दिनोंतक बना रह सकता है, जिसमें पीव पैदा हो सकता है या श्लेष्मिक झिल्लीमें प्रदाह होकर पकनेकी सम्भावना रहती हैं, उनमें कभी एकोनाइटके लक्षण नही दिखाई पडते हैं। आरक्त ज्वर वातश्लेष्मिक ज्वर (टाइफायड ज्वर) प्रभृति शरीरका खून दूषित होनेवाले ज्वरोंमें कभी भी ऐकोनाइटका प्रयोग न कीजिये। ऐसी अवस्थामें हमें कभी भी एकोनाइटके तीव्र लक्षण न मिलेंगे। इससे स्नायविक उत्तेजनाके लक्षण कभी भी नही रहते, बल्कि उसके विपरीत, तन्द्रा, आलस्य, त्वचाका रंग बैंगनी हो जाना प्रभृति लक्षण दिखाई देंगे—पर एकोनाइटमें शरीरकी त्वचाका रंग चमकीला लाल रहता है। किसी तरहकी भी तमखीर अर्थात् वह अवस्था जो भीतरी रसरक्त बिगडनेके कारण उत्पन्न होती है, उसमें कभी एकोनाइटका प्रयोग न करें क्योंकि इसमें रसरक्त बिगडनेके लक्षण बिलकुल ही नही हैं।

धीमी गतिवाले तथा अविराम ज्वरके लिये तो कभी एकोनाइटकी बात भी न सोचनी चाहिये। धीमी गतिवाले अविराम ज्वरका लक्षण एकोनाइटमें बिलकुल ही नहीं हैं। एकोनाइटका ज्वर थोड़ी देर तक रहनेवाला और उसका आक्रमण बहुत ही तेज होता है। स्वल्प-विराम ज्वरसे भी इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि इसमें ऐसे लक्षण बिलकुल ही नहीं हैं। सविराम ज्वर या पारीके बोखारके पहले आक्रमणके समय आपको धोखा हो सकता है, पर ज्यों ही बोखार छूटकर दुबारा फिर आया कि एकोनाइटका दरवाजा बन्द हो गया। कई ऐसी दवाएँ हैं, जिसमें बँधे समयपर रोग प्रकट होता है या रोगकी लहर उठती है, पर एकोनाइटमें ऐसी अवस्था नहीं है। तेजसे तेज बोखारका हमला भी रातभरमें ही दब जायगा यदि एकोनाइट उसकी दवा है। अगर ऐसा नहीं होता, तो दुःखकी बात है, कि आपने इसको देकर भूल की है, और यह किसी न किसी समय हानि पहुँचायगा। किसी बीमारीके सभी उपसर्गों पर ध्यान देना चाहिये, केवल उस दवाके लक्षणोंपर ही नहीं, बल्कि उन लक्षणोंपर भी जो उस दवामें नहीं है।

एकोनाइटमें आँखें प्रदाहित हो जाती हैं। उनमें,जलन और एकाएक सूजन आ जाती है, पलकें इतनी जल्द फूल जाती हैं, कि वे बहुत अधिक तकलीफसे खोली जासकती हैं, और जब कि चिमटीके सहारे पलकका किनारा पकड़ कर जबर्दस्ती पलक खोली जाती है, तो उससे गरम पानीकी कई बूँदें टपक पड़ती हैं, पर पीव नहीं निकलता है। सर्दी लग जानेके कारण ही यह अवस्था शीघ्रता-पूर्वक हो जाती है। जब की श्लैष्मिक पटलोंका प्रदाह हो जाता है, तो खून मिला पानी निकलता है। एकाएक रक्तवाहिनियाँ रक्तसे भर जाती हैं और चूने लगती है। रक्तवाहिनियाँ फटती है और केशिकाओंसे रक्त चूता है।

इसी तरह **कानका प्रदाह** भी एकाएक ही पैदा हो जाता है। **"कानमे टपक और काटनेकी तरह तेज दर्द होता है।"** बच्चा ठण्डी उत्तरी हवामें, बिना अच्छी तरह वस्त्र पहने, घूमता रहता है। इसके बाद चीखता-चिल्लाता घर लौटता और अपने हाथ कानपर रखता है। दिनमें बाहर निकलनेके बाद, सध्याके समय ही यह आक्रमण विशेष कर होता है। ज्वर और घबड़ाहट बनी रहती है, उसे गोदमें रखना पड़ता है। बीमारी बहुत तेज रहती है। आवाज बर्दाश्त नहीं होती। श्रवण-शक्ति

इतनी तीव्र हो जाती है, कि उसके अंग-प्रत्यंगसे गाने बजानेकी आवाज मानो प्रवेश करती है। शरीरके सभी अंगोंमें हमलोगोंकी स्नायुओंकी तीव्र अवस्था प्राप्त होगी। जहाँ कहीं कोई बीमारी होगी, वह जोरकी और तेज होगी और रोगी हमेशा ही घबड़ाहट और उत्तेजनामें भरा रहेगा। "कानमें डंक मारने, जलने, टपकने, फाड़ने या काटनेकी तरह दर्द।"

सर्दी—यदि तेज सर-दर्दके साथ सर्दी हो जाये, दिनमें खुली हवा और सर्दी लगकर अगर रातमें जोरकी और एकाएक सर्दी हो जाये, तो यह लघु, पर शीघ्र क्रियात्मक औषधि तुरन्त फायदा करेगी। **कार्बो-वेजिटेबिलिसकी** नाककी सर्दी कई दिनोंतक खुली हवा लगनेपर होती है। **सलफर** की नाककी सर्दी भी कई दिनोंतक खूब हवा खानेपर होती है। कार्बो-वेजिटेबिलिसके रोगीको बहुत गरम हो जानेके कारण सर्दी लग जाती हैं, क्योंकि वह आफिस जानेके समय ओवर कोट (लबादा) पहनकर जाता है। एकोनाइटमें वह ठण्डी हवामें हलके कपड़े पहन कर चला जाता है। और यदि वह रक्तपूर्ण और बली मनुष्य रहता है तो आधी रातके पहले ही उसे यह बीमारी हो जाती है।

पर खासकर इसका व्यवहार उन बच्चोंकी बीमारीमें होता है जिनका रंग गुलाबी रहता है, जो हृष्ट-पुष्ट रहते हैं और जिनमें भरपूर रक्त रहता है , पीले, दुबले बच्चोंपर इसका प्रयोग नहीं होता। ये दुबले-पतले बच्चे देरकर बीमार होते हैं क्योंकि उनकी जीवनी-शक्तिकी क्रियाएँ इतनी घटी रहती हैं, कि उनमें दो तीन दिनोंतक बीमारी नहीं पैदा होती। इस तरह अगर किसी एक ही परिवारके एक रोगियल और एक हृष्ट-पुष्टको लेकर उनको हवामें छोड़ दें तो एक को तो क्रूपकी (काली खाँसी) बीमारी उसी रातमें हो जायगी और उसके लिये एकोनाइटके प्रयोगकी जरूरत होगी , पर दूसरा, दूसरे दिन सवेरे बीमार होगा और इसके लिये जरूरत पड़ेगी **हीपर** की।

नाककी सर्दीके साथ नाकसे रक्त-स्राव, सर-दर्द, चिन्ता और भय प्रभृति उपसर्ग रह सकते हैं। एकोनाइटके रोगियोंमें घबड़ाहटका लक्षण पहले उनके चेहरेपर दिखाई देता है। एकोनाइटका निमोनिया भी अकसर चेहरेपर ही दिखाई दे जाता है , चेहरेकी ओर देखिये, भरपूर घबड़ाहट और चिन्ताका भाव दिखाई देगा। आप जानते हैं, कि चेहरेका भाव ही एक

ऐसी चीज है, जिससे भीतरकी बहुत-सी बातें मालूम हो जाती हैं, यह सारा किस्सा बता देता है। आनन्द और शोक तथा मानव-परिवारकी विपत्तियाँ—सभी आप एक बार सामनेके मनुष्यके चेहरेपर निगाह डालते ही बहुत-कुछ जान ले सकते हैं, कि क्या हुआ है? उनके स्पर्शमें आनेके पहले एक या दो बार ध्यानसे उन्हें देख भर लेना होगा। आपकी चिन्ता या घबड़ाहट दिखाई देगी।

"एक गाल लाल और दूसरा पीला" यह लक्षण कई दवाओंमें हैं, पर चिन्तायुक्त चेहरा, भय, ताप और बेचैनी तथा वह आकस्मिकता जिससे किसी रक्त-पूर्ण मनुष्यपर रोगका आक्रमण होता है—कल बहुत सूखी और तेज हवा थी—यह देखते ही आप कह देंगे कि यह एकोनाइटका लक्षण है, पर यह किसी दूसरी दवाका भी लक्षण हो सकता है, यदि अवस्था कुछ दूसरी ही हो। "चेहरेका स्नायुशूल मानो चेहरेकी दोनों तरफ गर्म तार दौड़ रहे हैं।"—कोई मनुष्य सर्द, तेज हवामें घोड़ेपर सवार होकर कहीं जाता है, उसके चेहरेमें जोरकी सर्द हवा लग जाती है, वह सुन्न हो पड़ता है, फिर दर्द और बहुत ही तेज दर्द पैदा हो जाता है। छुरीसे काटनेकी तरह दर्दके कारण वह चौंकता और चिल्लाता है। एकोनाइट इसमें तुरन्त फायदा पहुँचायगा। "च्यूँटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी" एकोनाइटमें इस तरह स्नायुओंमें सुरसुरीका भाव भी है। इसमें ऐसा भी अनुभव होनेका भाव है, मानो किसीने स्नायुओंमें बरफका पानी ढाल दिया। जिस साइटिका या टप्रसी वातमें स्नायुओंमें बरफका पानी ढाल देनेका यह लक्षण रहता है, उसमें एकोनाइट लाभ करता है। "दर्दके साथ या बिना किसी तरहके दर्दके चेहरेमें किसी चीजके रेंगने, सुरसुराने या झुनझुनीका भाव।" चेहरेमें तेज गरमी और तेज बोखार रहता है। जिस ओरका चेहरा दबा रहता है, उसमें अकसर पसीना हो जाता है, पर ज्योंही रोगी दूसरी करवट हो जाता है, त्योंही चेहरेका वह हिस्सा तुरन्त सूख जाता है और दूसरी तरफ तुरन्त ही पसीना होने लगता है।

ओह! **दाँतके दर्द** को यह कैसी आराम पहुँचानेवाली दवा है। दाँतके दर्दमें यह इतना लाभ पहुँचाती है, कि हरेक वृद्धा अब इसका गुण जान गयी है। वह रुईमें इसकी एक बूँद डाल लेती है और दाँतकी जड़के गड्ढेमें दबा रखती है। यह अकसर तुरन्त ही दर्द घटा देता है, पर एक

खुराक एकोनाइट इससे भी ज्यादा फायदा दिखा सकता है। पर दर्दकी वह तेजी, फिर वही पुरानी बात कहनी पड़ती है अर्थात् सूखी, ठण्डी हवा लगकर दर्द, रक्त-पूर्ण व्यक्तियोंका दर्द, दाँतकी जड़ खोखली, दर्द बहुत ही तेज़ और दाँतमें काटने या धक्का देनेकी तरह दर्द—इन लक्षणोंपर ध्यान रखना होगा। कभी-कभी तो यह दर्द मजबूत निरोग दाँतमें भी हो जाता है और समूची दन्त-पङ्क्तिमें तकलीफ होने लगती है। हवामें घुड़सवारी करनेके कारण और खुली हवा लगनेके कारण तेज दर्द। एक खुराक एकोनाइट देते ही दर्द तेजीसे आराम हो जाता है और छूट जाता है।

स्वादमें गड़बड़ी तथा पेटकी गड़बड़ी, पानीके सिवा **सभी चीजें तीती मालूम होती हैं** और ओह। एकोनाइटका रोगी किस तरह पानीके लिये तरसता है। उसके लिये भरपूर पानी मिलना असम्भव मालूम होता है और यह उसे खूब सहन भी होता है।

जलन तो इस दवाका ऐसा लक्षण है, जो सब जगह मौजूद रहती है। सब तरहके दर्दोंमें यह जलन मौजूद रहती है। सरमें जलन, स्नायु-पथोंमें जलन, मेरुदण्डमें जलन, ज्वरमें जलन, कभी-कभी तो इस ढङ्गकी ज्वाला या जलन रहती है, कि मानो मिर्चा लगा दिया है।

कण्ठनालीके प्रदाह की एकोनाइट बहुत ही बढ़िया दवा है। यह कब? जब जलन, यन्त्रणा, सूखापन, तालुमूल या गलगह्वरका बहुत लाल हो जाना और समूचे कण्ठके लाल हो जानेका लक्षण मौजूद हो। कभी-कभी तो कोमल तालु बहुत फूल जाता है। बहुत अधिक प्रदाह और कण्ठ जहाँतक दिखाई देता है, उसका नया प्रदाह, पर इतनेसे ही यह नहीं समझना चाहिये, कि ये एकोनाइटके लक्षण हैं। यह उस ढङ्गके रोगी आरोग्य करता है, यह कण्ठका प्रदाह आरोग्य करता है। पर हरेक होमियोपैथिक चिकित्सकको मालूम है कि इस लक्षणके कण्ठके प्रदाहको आरोग्य करनेवाली, एकोनाइटकी तरह की चालीस-पचास दवाएँ हैं। मैंने तो केवल एक अवर्णित रोगीका हवाला दे दिया है। इन लक्षणोंके सहारे कोई भी होमियोपैथिक चिकित्सक दवाका चुनाव नहीं कर सकता, पर कण्ठकी अन्य प्रकृतिपर ध्यान दे। प्रत्येक चिकित्सकको स्वय अपनेसे ही यह सवाल करना चाहिये—"ऐसे कण्ठमें और क्या रहनेसे वह एकोनाइटका कण्ठ हो

जायगा ?" और तब आप-ही-आप यह सवाल पैदा हो जाता है, कि जबतक चिकित्सकने स्वयं कण्ठ नहीं देखा, तबतक ठीक दवाका चुनाव नहीं कर सकता। **बुद्धिमान चिकित्सकके लिये,** केवल कण्ठ देखनेसे रोगीका पूरा हवाला नहीं मिल जाता। यदि चिकित्सकके लिये केवल प्रादाहित अङ्ग देखना ही बहुत जरूरी है, तो वह यकृतकी चिकित्सा कैसे करेगा ? वह *यकृतको तो देख नहीं सकता। वह पेटकी गड़बड़ीकी दवा कैसे देगा ?* पेटके भीतर तो वह देख नहीं सकता। अतएव, हमलोगोंको बाध्य होकर उसपर ही निर्भर रहना पड़ता है, जो बुद्धिमान चिकित्सकको रोगीकी प्रकृतिमें दिखाई देता है और उसी समय तुरन्त ही हमलोगोंको इन बातोंका रहस्य मालूम हो जाता है। यदि आपके मनमें एकोनाइटके रोगीका चित्र पूरी तरह अङ्कित हो जाये, तो आप दवाका चुनाव कर सकते हैं। जो चीज़ दिखाई दे सके, उसे देखना अच्छा अवश्य है। यदि आप यकृतको देख सकें, तो मैं कहूँगा कि आप उसे देखें। अगर आप हृत्पिण्ड देख सकें, तो उसको भी देखकर परीक्षा करने कहूँगा।

पर वह कण्ठ कैसा रहता है, जो ठीक-ठीक रोगीकी अवस्था बता देता है ? यह तो सत्य है, कि कण्ठमें किसी तरहका भी दर्द अगर हो जाता है, तो निगलनेमें तकलीफ होती है। मेरे कहनेका यह मतलब है, कि इस दर्द या सूजनमें ऐसा कोई लक्षण नहीं है जो चिकित्सकको बता सके कि यह एको-नाइटका रोगी है। यदि वह रोगी, रक्त-पूर्ण रोगी हो, यदि वह ठण्डी तेज हवामें, दिनके अधिकांश भागमें घूमता रहा हो और रातमें तेज जलन, कण्ठमें फाड़नेकी तरह दर्दके साथ उसकी नींद खुल गयी हो, वह कुछ निगल न सकता हो, जोरका बोखार हो, ठण्डा पानी पीनेकी तेज प्यास हो और उसे कितना भी पानी पिलाया जाये काफी न मालूम होता हो और वह **घबड़ाहट** तथा **ज्वर भावमें हो,** तो आपको समझना चाहिये, कि यह एकोनाइटका **रोगी** है। कितनी ही बार तो रोगी इतने चतुर हो जाते हैं, कि वे वैसा ही लिख देते हैं, जैसा कि उसके परिवारवाले कार्य करते हैं। आप जानते हैं, कि रोगी कैसा दिखाई देता है। कभी-कभी तो एक अनभिज्ञ आदमी भी किसी चिकित्सककी लड़कीसे बढ़कर वर्णन आपको भेज देता है और लिखता है—"डाक्टर साहब! आप कृपाकर दवा भेज दें, मैंने रोगीका कण्ठ देखा है, वह भरपूर लाल है।"

आता है। थोड़ा पेशाब, रुका हुआ पेशाब या पेशाबका दब जाना—भी इसके अन्तर्गत है। किसी आघातके कारण पेशाबका रुक जाना। नये पैदा हुए बच्चे को अगर किसी आघात या झटका लगनेके कारण पेशाब रुक जाये, तो यह सर्वोत्तम औषधि है। मान लीजिये, कि तुरन्तके जनमे बच्चेको किसी तरहका आघात प्राप्त हो गया है, दूसरी बार जब आप देखने जाते हैं, तो दाई कहती है—"डाक्टर साहब! बच्चे को तो पेशाब नहीं हुआ।" कारण यह है, कि उस बच्चे को जन्मके समय इतना आघात प्राप्त हुआ है, कि इसकी शारीरिक क्रियाएँ अभी ठीक नहीं हुई हैं।

काटने और फाड़नेकी तरह दर्दके साथ मसाने (मूत्राशय) का प्रदाह। पेशाब जलता हुआ होता है और उसमें जलनकी तरह दर्द भी होता है। पेशाब गर्म और गहरा लाल रङ्गका होता है या लाल और साफ अथवा खून-मिला आता है। सर्दीकी वजहसे, खासकर लड़कोंका पेशाब रुक जाना, बच्चे रोते, चिल्लाते और बहुत बेचैन रहते हैं। अवस्था-प्राप्त या बच्चे, किसीको भी मसानेकी प्रादाहिक अवस्था हो, यह याद रखे, कि एकोनाइट बतानेवाली सभी मानसिक अवस्थाएँ इसके साथ भी मौजूद रहेंगी।

एकाएक पैदा हो जानेवाले भयानक अण्डकोषके प्रदाहके रोगियोंको भी एकोनाइट आरोग्य कर देता है। रक्त-पूर्ण मनुष्योंकी सर्दी लगकर अण्डकोषका प्रदाह या शीत लग जानेके कारण प्रदाह, पर अगर सूजाकका मवाद आना रुककर साधारण अण्डकोष-प्रदाह हो गया हो, तो एकोनाइटसे कोई भी लाभ न होगा।

सहानुभूति-सूचक स्वाभाविक भाव-प्रवणताके कारण स्त्रियाँ स्वभावत. ही एकोनाइटकी रोगिनी होती हैं। स्नायविक आघात या भय प्रभृति कारणोंसे अकसर उन्हें बीमारियाँ हो जाती हैं। स्वाभाविक रीतिसे वे उन्हीं कारणोंसे बीमार नहीं होती हैं, जिन कारणोंसे पुरुष बीमार होते हैं। किसी पुरुषको भयके कारण शायद ही कभी प्रदाह होगा, पर रक्त-पूर्ण बलशालिनी या उत्तेजनाशील स्त्रियोंके गर्भाशय अर्थात जरायु और डिम्बाशयके प्रदाहका एक साधारण कारण भय ही होता है। भयके कारण अकसर गर्भ-स्राव हो जाता है, पर यदि एकोनाइट समयसे काफी पहले पड़ जाता है, तो यह उस गर्भ-स्रावको रोक देता है, जो भयके कारण हुआ चाहता है। भय या आकस्मिक भावोद्रेकके कुछ बाद ही एकोनाइटका सुई बेधने, जलने या फाड़नेकी तरह

दर्द होने लगता है। कभी-कभी कोई गर्भवती चिकित्सकसे कह सकती है—"मेरे सौरी-घर या प्रसवका प्रबन्ध करनेकी आपको कोई जरूरत नहीं है, कोई फायदा नहीं है। मैं जानती हूँ, कि इस प्रसवके समय मैं मर जाऊँगी।" अगर ऐसी कोई एक बात है, दवा चुनाव करनेका कोई प्रधान लक्षण है, तो वह यही है। एक खुराक एकोनाइट खिला दीजिये, विषयको ही बदल दीजिये, वह प्रसव गृहमें चली जायगी। कुछ दिनके बाद आप उससे उस भयके सम्बन्धमें पूछिये। वह कहेगी—'अब उसपर कुछ ध्यान न दीजिये।" इसी तरह कितनी ही छोटी बातोंसे काम निकाला जा सकता है; पर भयकी यह अवस्था, एक बड़ी ही विचित्र चीज है तथा किसी स्त्रीके व्यक्तित्व और उसकी सम्पूर्ण प्रकृतिको बता देती है। वह अपना मृत्यु-काल पहलेसे ही बताती है। एकोनाइट बच्चोंकी भी दवा इसीलिये है, कि अकसर बच्चे भयके कारण ही बीमार हो जाते हैं।

"रक्तपूर्ण स्त्रियोंकी जननेन्द्रियका प्रदाह।" पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्री और बच्चोंकी बीमारियोंमें एकोनाइटका बहुत अधिक प्रयोग होता है। भावप्रवण, बलवती और उत्तेजनाशील स्त्रियोंमें इसका प्रयोग होता है। पर पुरुषोंको अगर सूखी ठण्डी हवा लगकर प्रादाहित अवस्था पैदा हो जाती है, तो इसका प्रयोग होता है। एकोनाइटके रोगीको सन्तुष्ट कर देनेका यह एक आश्चर्यमय ढङ्ग है। आप एकोनाइटका प्रयोगकर तथा बहुत शीघ्रतासे पसीना लाकर, बोखार हटाते हुए उसे प्रभावित कर बता सकते हैं, कि होमियोपैथीमें कैसी अजूबा चीजे भरी हैं और कितनी तेजीसे इससे आरोग्य होता है, पर यह तभी होता है जब बोखार नया आया हुआ हो और यह पहला आक्रमण हो।

"कठिन और कष्टकर प्रसवके बाद, प्रसवके बादका दर्द बहुत ही तीव्र होता है, यह पश्चात् वेदना काटने या फाड़नेकी तरह होती है और कुछ-न-कुछ ज्वर-भाव भी रहता है।" जरायुसे रक्त स्राव, जिसमें लाल चमकीला रक्त निकलता है और मृत्यु-भय भी रहता है। इस सूतिकावस्थामें सर्दी लग जानेके कारण जो बीमारियाँ होती हैं, देखिये, उनमें एकोनाइट कैसा आश्चर्य-जनक काम करता है, पर इसे सूतिका-ज्वरके साथ न मिला दीजिये। सूतिकावस्थामें सर्दी लगकर बीमारी या रक्त-स्राव एक सरल रोग है। इसमें सड़न नहीं होती या विष नहीं फैलता, कभी कभी स्तनपर भी आक्रमण हो जाता है। छातीमें दर्दका भाव रहता है, दूध नहीं उतरता और कुछ ज्वर-

भाव भी रहता है, पर यदि परिस्रवका स्राव होना बन्द हो गया हो, तो एकोनाइट कदापि न दीजिये।

चिमटेके सहारे जिनका जन्म होता है या बहुत कष्टदायक प्रसवसे जो बच्चे पैदा हुए हैं, उनमें श्वास-कष्टका लक्षण रहता है, बच्चा ऐसा पड़ा रहता है, कि मानो दम नहीं है, साँस नहीं चलती, हृत्पिण्डमें भी कुछ कष्ट रहता है और कई घण्टोंके भीतर ही ज्वर आ जाता है, एकोनाइट उनको एक बहुत ही सहज दवा है। बच्चोंका पेशाब रुकना एक ऐसा साधारण लक्षण है, कि इसके लिये एकोनाइटके सिवा किसी दूसरी दवाकी शायद ही कभी जरूरत पड़ती है। बच्चा अभीतक बोल नहीं सकता, वह अपने कष्ट भी प्रकट नहीं कर सकता, ऐसे मामलोंमें चिकित्सकको बँधे नियमसे वाध्य होकर काम करना पड़ता है। इस अवस्थामें बँधी गतके काम करनेवाले चिकित्सक भी अगर पेशाब रुकनेकी अवस्थामें एकोनाइटका प्रयोग करते हैं, तो वे कुछ-न-कुछ सफल ही होते हैं, पर यह भी सत्य है, कि यदि माताका पेशाब रुक जाता है, तो कितने ही स्थानोंपर एक खुराक **कास्टिकमसे** ही यह लक्षण दूर हो जाता है।

क्रूप (खुनक) रोगकी भी एकोनाइट एक बँधी दवाकी तरह है और इसीलिये, इसका बहुत अपव्यवहार होता है, पर यह उन सब क्रूपके रोगी बच्चोंकी दवा है जिन रक्त-पूर्ण बच्चोंकी बीमारी एकाएक पैदा हो जाती है, सूखी ठण्डी हवा लगकर होती है और जो दिनके समय माताके साथ सर्द-हवामें घूमते रहे हैं। बच्चा रातमें आनन्दसे सो जाता है, पर शायद रातके ८, १० या ११ बजे जाग उठता है, अपना कण्ठ पकड़ लेता है, उसे तेज खाँसी, काली खाँसी, श्वास-रोध करनेवाली खाँसी और रूखी, भूँकनेकी आवाजकी तरह खाँसी, आने लगती है। एकोनाइटकी क्रियाकी तेजीके साथ शायद ही कोई दूसरी दवा उस अवस्थामें समता कर सकती है, जब कि दिनमें सर्दी लगनेके कारण और एकाएक इस तरहकी बीमारी पैदा हो जाती है। दिनमें ठण्डी हवा लगकर जो क्रूप या काली खाँसीकी बीमारी होती है और दूसरे दिन सवेरे या दूसरे दिन शामतक जिसके लक्षण नहीं प्रकट होते, उसकी कितनी ही दवाएँ है, पर खास दवा **हीपर** है। हीपरकी क्रिया धीमी होती हैं। जो बच्चे पहलेसे ही कुछ न कुछ कमजोर होते हैं तथा जिनपर क्रूपका अकसर हमला हुआ करता है, उनके लिये यह ज्यादा उपयोगी है।

स्पञ्जिया भी इसके समान गुणवाली दवा है, पर इसमें कमजोर और अकसर सर्दी हो जानेवाले बच्चोंको क्रूपके बहुतसे लक्षण नहीं हैं। क्रूपके सम्बन्धमें एकोनाइट और **स्पञ्जियाके** रोगीके चेहरेका प्रभेद निर्णय करना कठिन है, क्योंकि दोनोंको ही क्रूप खांसीमें चेहरा घबड़ाया हुआ हो जाता है। एकोनाइटका क्रूप रोग बहुत ही तीव्र होता है, इसमें स्वर-यन्त्रमें प्रदाह, स्वर-यन्त्रकी अकड़न—ये सब लक्षण बहुत तेजीसे उत्पन्न हो जाया करते हैं। **स्पञ्जियाके** क्रूपमें प्रदाहका लक्षण कम रहता है, पर अकड़नके साथ प्रदाह पैदा होता है। स्पञ्जियाका रोगी भी यद्यपि ११ बजे रातमें जाग उठता है और उसमें श्वासरोध तथा दम घुटने और हांफनेका भाव रह सकता है, पर इसमें एकोनाइटकी तरह ज्वरकी तेज उत्तेजना नहीं रहती, न आशङ्काका भाव ही रहता है, पर इसमें एकोनाइटमें होनेवाला सूखापन सर्वत्र विद्यमान रहता है। एकोनाइटमें रोगीकी अवस्था साधारणतः शुष्क ही रहती है या थोड़ा सा पानीकी तरह स्राव होता है, स्पञ्जिया एकदम शुष्क होता है। यदि श्लैष्मिक झिल्लीमें प्रदाह हो जाता है, तो वह भी शुष्क ही रहता है। एकोनाइटके क्रूपके ये लक्षण हैं'- स्वर-यन्त्र छुआ नहीं जाता। "पहली नींदके समय ही रोगी जाग उठता है। सूखी ठण्डी हवा लगकर क्रूपका आक्रमण होता है।"

ऐकोनाइटमें श्वासकी भी तकलीफें भरी हैं। छोटी छोटी श्वास-नलियोंके सकोचनके कारण श्वास-कष्ट, यह दमाकी तरह मालूम होता है। कैशिका-नलियोंके प्रदाह (Capillary bronchitis) के कारण जो श्वास-कष्ट होता है, उसमें यह विशेष उपयोगी होता है और रक्त-पूर्ण मनुष्योंको सर्दी लगनेके कारण, हवा लगनेके कारण या किसी तरहसे आघात लगनेकी वजहसे अथवा हृत्पिण्डकी उत्तेजनाके कारण जो श्वास-कष्ट होता है, उसमें फायदा करता है। भयके कारण श्वास-कष्ट, जैसा कि स्नायविक उत्तेजनशील, सहजमें ही रोगका आक्रमण हो जानेवाली रक्त पूर्ण स्त्रियोंको होता है, उनकी श्वास-क्रिया लघु,कष्टकारक, घबड़ाहट-भरी और तीव्र रहती है। यह दमाका श्वास-कष्ट है। इसमें अकसर छोटी श्वास-नलियोंकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंका सूखापन बना रहता है।

"तनकर सीधा बैठ जाता है और मुश्किलसे साँस ले सकता है"—एकोनाइटमें एकाएक हृत्पिण्डका ऐसा ही तीव्र उपदाह होता है। नाड़ी मानो फड़कती हुई, कमजोर पूर्ण और उछलती रहती है, बिछावनपर रोगी बैठ

जाता है, कण्ठ पकड़ लेता है, सभी चीजें इधर-उधर फेंक देना चाहता है, आधी रात होनेके पहले ही शरीर गर्म, तेज प्यास, तेज भय—ये सभी लक्षण आकर इकट्ठे हो जाते हैं।"

"श्वास-कष्टके कारण दारुण यन्त्रणा। श्वास-कष्टके साथ हृत्पिण्डमें दर्दका एकाएक आक्रमण हो जाता है।" ये सब एक साथ पैदा हो जाते हैं। "बहुत अधिक श्वास-रोधका भाव।" इस भय और व्यग्रताके कारण उसे बहुत अधिक पसीना होने लगता है, वह पसीनेसे तर हो जाता है, पर इतनेपर भी उसका शरीर गर्म ही रहता है। जब उसकी यह व्यग्रता दूर हो जाती है, तो उसका शरीर गर्म हो जाता है। इस तरह इस भयङ्कर घबड़ाहटके साथ ताप और पसीना दोनों ही होते हैं। नाड़ी सूतकी तरह पतली रहती है।

"श्वास छोड़नेके समय अच्छा रहता है"—स्वर-यन्त्रमें प्रायः श्वास लेनेके समय ही अकड़न होती है। "श्वास लेनेके समय सबसे बुरी अवस्था हो जाती हैं, लगातार रह-रहकर सूखी खाँसी आती है। कष्टकर श्वास-प्रश्वास, वक्षोदर मध्यस्थ पेशीसे ही श्वास लेता है। न्युमोनिया प्रभृति वक्षके रोग।" वक्ष-गह्वरके यन्त्रोंमें, वक्षावरक झिल्लीमें, फेफड़ेमें तथा वायु-पथकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें एकोनाइट बहुत जल्द सोज़िश अर्थात प्रदाह उत्पन्न कर देता है। न्युमोनियामें इस ढङ्गकी साँसकी तकलीफ रहती है और एकाएक ही यह तकलीफ पैदा हो जाती है। यदि यह जल्दी-जल्दी फैलता है, तो यह न्युमोनियामें चला जा सकता है। प्रदाह इतना अधिक हो जाता है, कि श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे खून निकलने लगता है। रक्त बैंगनी लाल रहता है या जो बलगम निकलता है, वह सफेद रहता है और उसपर लाल रक्तकी बहुत अधिक रेखाएँ पड़ी रहती हैं। आप ब्राङ्को-न्युमोनियाके रोगीको पलङ्गके पास जाइये, जाते ही आपको उगालदान या थूकनेके पात्रमें चमकीले लाल रक्तकी रेखाओंसे भरा बलगम दिखाई देगा। अब उस तेजी और भयङ्करतापर ध्यान दीजिये, उसकी बेचैनी और घबड़ाहटको देखिये—वह अपनी मृत्युका समय पहलेसे ही बताता है—ऐसा ही रोगी एकोनाइटका रोगी होता है। न्युमोनियाकी बीमारीमें, जब फेफड़ेपर आक्रमण हो जाता है, जब फेफड़ेके ऊपरी आधे हिस्सेमें रोगका आक्रमण रहता है, तब एकोनाइटकी जरूरत होती है। कभी-कभी तो समस्त श्लैष्मिक-झिल्लियाँ, दिखाई देनेवाला कण्ठ, स्वर-यन्त्र, टेटुआ, श्वास-नलियाँ, सबसे ही रक्त चलता है। कभी-कभी तो मुँहमें

खून भर आता है, इतना कड़ा प्रदाह होता है। वक्षकी बीमारियोंमें दर्द बहुत अधिक होता है। यह दर्द गोली मारने, जलने, फाड़नेकी तरह होता है और रोगीको बाध्य होकर पीठके बल, कुछ उठी हुई अवस्थामें, लेटे रहना पड़ता है। किसी करवट नहीं लेट सकता पीठके बल ही लेटे रहना पड़ता है, क्योंकि करवट सोनेसे तकलीफ़ बढ़ जाती हैं। हट्ट बलवान रक्त-पूर्ण मनुष्योंको सूखी ठण्डी हवा तथा एकाएक किसी प्रकारका आघात लगना ही रोगका कारण होता है। इसमें यक्ष्मा (थाइसिस) की तरहका मुँहसे रक्त-स्राव नहीं होता, बल्कि यह अनैच्छिक रक्त-स्राव है, थोड़ा-सा बलगमके साथ रक्त मिला हुआ रहता है। बिगड़े हुए स्वास्थ्यवाले क्षीण रोगियोंको इस अवस्थामें एकोनाइट देनेका भ्रम उत्पन्न हो सकता है, पर नहीं, ऐसे रोगियोंको एकोनाइट न देना चाहिये। बहुत-सी इससे अच्छी दवाएँ भी हैं। सभी रोगी हमेशा न्युमोनियाके रोगी नहीं रहते, बल्कि सिर्फ़ शुद्ध श्वास-नलियोंका प्रदाह ही रह सकता है।

"सूखी खाँसी, वमन, श्रोकाई, तेज ज्वर, बलगमके साथ खून आना।" थोड़ा-सा पानीकी तरह बलगम और रक्तके सिवा और कुछ भी नहीं निकलता। अधिकतर ऐसा ही हुआ करता है। सूखी खाँसी, समूचे वक्षमें सूखापनका भाव, स्वर-यन्त्र तथा कण्ठमें भी सूखापनका भाव ही रहता है। बहुत-से ठण्डे पानीकी कै कर देता है और बहुत देरतक जोर-जोरसे खाँसनेके बाद थोड़ा-सा केवल रक्त निकल आता है, पर जो थूक निकलता है, वह साधारणत श्लेष्मा ही रहता है।

न्युमोनियामें जो बलगम निकलता है, वह अकसर लोहेके जङ्गकी तरह दिखाई देती है, मानो उस बलगममें लोहेका जङ्ग मिला दिया गया है। **ब्रायोनिया, रस्टक्स** तथा कुछ अन्य दवाओंमें भी साधारणत यह लक्षण है, पर एकोनाइटमें कुछ बैंगनीपन लिये **लाल या चमकीला लाल बलगम निकलता है।** इसमें जो रक्त-स्राव होता है, **वह भी चमकीला लाल और कभी-कभी बहुत अधिक होता है।**

न्युमोनिया हो, क्रूप हो या वक्षकी अन्य बीमारियाँ हों, इन सबका आक्रमण एकाएक ही होता है। रोगी अगर सोना चाहता है, तो उसके स्वर-यन्त्रमें ऐंठन होती है और वह सूखा रहता है। ज्योंही वह सोना

चाहता है, स्वर-यन्त्र सूख जाता है। इसीलिये वह जाग उठता है और हाथसे अपना गला पकड़ लेता है। वह समझता है, कि अब दम घुटा। यह सब ठण्डी हवा लगनेके कारण ही होता है। बलवान मनुष्य खुली हवामें निकलते हैं, उन्हें सर्दी लग जाती है और एकोनाइटके लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

जहाँ कहीं एकोनाइट प्रयोगके योग्य प्रदाह होता है, वहाँ ऐसा मालूम होता है, मानो उस स्थानपर गरम भाफ़ बह रही है या "उस स्थानपर आगकी लहर-जैसी जलन मालूम होती है।" स्नायुओंमें भी गर्मी या सर्दीकी अनुभूति होती है।

बोखार जब खूब ऊँचा चढ़ा रहता है, तो नाड़ी भारी और उछलती हुई तथा दृढ़ और बलवान रहती है, पर जब बोखार पहले-पहल चढ़ता रहता है और भयङ्कर घबड़ाहट तथा स्नायुओंका तनाव रहता है, तो नाड़ी बहुत क्षुद्र रहती है, जब हृद्-क्रिया ठीक-ठीक स्थित हो जाती है, तो नाड़ी बलवान हो जाती है।

"मेरुदण्डमें ऊपरसे नीचेकी ओर फाड़नेकी तरह दर्द, गर्दन दर्द-भरी और अकड़ी, मेरुदण्डमें कीड़ा रेंगनेकी तरह अनुभव होना, यह सब सर्दीकी वजहसे और एकाएक ठण्ड लग जानेके कारण होता है।

"हाथका काँपना"—इसके साथ ही इस तरहका आकस्मिक नवीन आक्रमण। "अंगुलियोंमें सुरसुरीकी तरह दर्द"—इसके साथ भी इसी तरहका नवीन और आकस्मिक प्रादाहिक आक्रमण। "बर्फकी तरह शीतलता, पैर बरफकी तरह ठण्डे, तलहथी गर्म" हाथ गर्म और पैर ठण्डेका भाव भी कभी-कभी मौजूद रहता है। सन्धियोंमें वातका आक्रमण, पहली बारका आक्रमण, वात या गठियाकी पुरानी बीमारी नहीं, बल्कि वातका नया आक्रमण और वह आक्रमण जो एकाएक सर्दी लग जानेके कारण तथा सूखी ठण्डी हवामें दूरकी घुड़सवारी करनेके कारण होता है। इनके साथ बोखार, घबड़ाहट-भरी बेचैनी और मनकी वह सङ्कटापन्न अवस्था भी रहती है, जिसका कई बार वर्णन किया जा चुका है।

"माँस-पेशियोंका काँपना, झुनझुनाना, ऐंठना।" **स्नायु-सब** एकोनाइटके लक्षण तथा एकोनाइटके रोगोंसे भरे रहते हैं। रक्त-पूर्ण मनुष्योंका स्नायु-प्रदाह (वर्म आसव) की यह आश्चर्यजनक दवा है। सर्दी और खुली हवा

लग जानेके कारण स्नायु सुन्न पड़ जाते हैं। स्नायुओंमें और खासकर उन स्नायुमें जो सतहके पास हैं, झुनझुनी और सुन्नपन पैदा हो जाता है। "स्नायु-कोषोंका प्रदाह, स्नायुओंका उत्तेजित हो जाना और बहुत तेज बेचैनी रहती।"

सलफरका एकोनाइटसे बहुत बड़ा सम्बन्ध है, इसमें भी एकोनाइटके बहुत-से लक्षण हैं। जिन बहुत दिनोंकी पुरानी बीमारियोंमें, सुदृढ़ बलवान शरीरवालोंको, **सलफर** बहुत फायदा पहुँचाता है, उन्हीं लक्षणोंवाली नयी और एकाएक होनेवाली बीमारियोंमें एकोनाइट लाभ करता है। साराश यह कि एकोनाइटके लक्षणवाली **नयी बीमारीमें एकोनाइट** और **पुरानीमें सलफर** लाभदायक है। एकाएक जिन बीमारियोंका आक्रमण होता है और जिनमें एकोनाइट लाभ करता है, उनमें कुछ ऐसी भी रहती है, जिनके दुहरानेकी सम्भावना रहती है। एकोनाइटमें यह दुहरानेकी प्रकृति रोकनेकी ताकत नहीं है, **सलफरमें** है, यह याद रखना चाहिये, कि अधिकांश लक्षण अवश्य ही मिलने चाहिये। साथ ही यह भी अकसर दिखाई देगा, कि जिन रोगोंमें एकोनाइटका प्रयोग हो सकता है या लाभ करता है, उसके बाद **सलफरमें** लक्षण पैदा हो जाते हैं। कभी-कभी तो रोगके तेज दौराके बाद कमजोरी बनी रह जाती है। एकोनाइट इसे आरोग्य नहीं कर सकता, उसमें दुहराना रोकनेकी कोई भी शक्ति नहीं है। जो काम यह कर सकता है, वही करता है। बस इसके बाद उसका काम खतम हो जाता है, पर **सलफरमें** ऐसी बात नहीं है।

एकोनाइटके बाद **आर्निका** और **बेलेडोना** बहुत सुन्दर कार्य करते हैं। कभी-कभी तो सचमुच ही आपको ऐसा मालूम होगा, कि जिस रोगमें इसका प्रयोग किया गया है, उसमें जो कुछ हैं, सबको ही यह आरोग्य कर सकता है, पर ऐसा भी मालूम होता है कि इसको लँभड़ानेवाली कोई चीज पकड़े हुए हैं। इस अवस्थामें **आर्निका, बेलाडोना** और **इपिकाक** तथा **ब्रायोनिया,** इस आक्रमणका सब काम पूरा करते हैं या कभी-कभी **सलफर** कर देता है। साधारणत **सिलिकासे** भी होता है। इसलिये औषधिका सम्बन्ध हमें अवश्य अध्ययन करना चाहिये।

यदि आपने एकोनाइटकी कई खुराकें सेवन करा दी हैं अथवा बहुत कड़ी मात्रा दे दी है तथा आपका रोगी बहुत धीरे-धीरे आराम हो रहा है या आपके रोगीने ही अज्ञानवश स्वय एकोनाइटका सेवन कर लिया है, तो **काफिया या नक्स-वोमिकाका** प्रयोग कीजिये। ये उसकी हालत दुरुस्त कर देंगे और रोगीको सुधार देंगे।

ऐक्टिया रेसिमोसा।

(Actea Recemosa—Black Cohosh)

इस दवाकी परीक्षा बहुत थोड़ी हुई है, इतनेपर भी इसमें कई लाभदायक विषय हैं। इसकी परीक्षा करनेपर जो लक्षण प्रकट हुए हैं, उनसे मालूम होता है, कि मानव-परिवारमें और खासकर हिस्टिरिया-ग्रस्त और वातकी अवस्थावाली स्त्रियोंकी रोगी अवस्थासे इसका बहुत अधिक सादृश्य है। रोगी हमेशा सर्द रहता है, उसे जरा-सेमें ही सर्दी लग जाती है, सर्द और तर मौसम उसे सहन नहीं होता। उससे एक वात जनक अवस्था पैदा हो जाती है और केवल समूचे शरीरकी सन्धियों और पेशियोंमें ही वात नहीं होता, बल्कि स्नायु-पथपर भी वातका आक्रमण हो जाता है। सार्वाङ्गिक स्नायविक विकारमें इच्छा-शक्तिकी समता नहीं रहती या ऐच्छिक संस्थानोंमें बहुत गड़बड़ी पैदा हो जाती है। यही हिस्टीरियाका भीतरी कारण है। इसके लक्षण वातसे सम्मिलित रहते हैं। दर्दके साथ-ही-साथ समस्त शरीरमें एक तरहकी यन्त्रणा बनी रहती है, पेशियाँ काँपती हैं, उनमें झटका आता है और सुन्नपन पैदा हो जाता है। इसका रोगी शरीरकी पेशियोंपर अपनी इच्छा-शक्तिका प्रयोग ही नहीं कर सकता, ऐच्छिक संस्थानमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है और कड़ापन आ जाता है।

इसकी रोगिनियोंमें सर्दी-प्रवणता रहती है अर्थात सर्दी लग जानेका भाव रहता है और इसी वजहसे उन्हें ग्रन्थियों तथा यकृत और जरायु प्रभृति वृहत् यन्त्रोंमें एक तरहकी स्पर्श-कातरता मालूम होती है। सर्द तर ऋतु (**डलकामारा**) और ठण्ड लग जानेके कारण ही उनके इन यन्त्रोंमें

बीमारी पैदा होती है। सरके सिवा शरीरके अन्य सभी स्थानोंमें सर्दी लगनेका भाव रहता है और यह सर्दी शरीरके किसी विशेष अङ्ग या समूचे शरीरके ठण्डे होनेपर और भी बढ जाती है। ठण्डमें तथा खुली हवामें सर-दर्द अच्छा रहता है, यह इसका एक विशेष लक्षण है। सार्वाङ्गिक लक्षण तो सर्दीसे रोग बढना ही है।

इसमें मानसिक अवस्था बहुत ही भयानक रहती है और एकके बाद दूसरी, इस तरह पर्यायक्रमसे एक बार मानसिक, फिर शारीरिक विशृङ्खलता उत्पन्न होती है। तेज़ उदासी या दु खित विषन्न-भाव, रोगिनी मानो शोकमें डूबी रहती है। **सोरिनम** और **पल्सेटिलाकी** तरह बैठ जाती है और शोकमें गोते खाती रहती है। हिलने-डोलने, चलने-फिरने, भय, उत्तेजना या सर्दी लगनेपर यह अवस्था या तो तुरन्त दूर हो जाती है अथवा बढ जाती है। साधारणतः **सारी मांस-पेशियोंमें यन्त्रणा रहती है, समूचे शरीरमें कुचल जानेका भाव रहता है।** इसके साथ ही मास पेशियोंमें खींचन और झटका लगता है, यह एकदम एकाएक पैदा हो जाता है। इससे स्नायविक गुल्मवायु रोग-ग्रस्त लडकियोंपर उदासी छा जाती है, वह चुपचाप बैठ जाती है और कुछ नहीं बोलती। पूछनेपर या तो रोने लगती है या कितने ही ढङ्गोंसे अपनी भयङ्कर उदासीका कारण बताती हैं। सर-दर्दके साथ भी प्रत्यक्ष उदासीका भाव रहता है। उसके हावभाव बदला करते हैं। मानसिक तथा शारीरिक लक्षण हमेशा परिवर्त्तित होते रहते हैं, अन्य लक्षण पर्याय-क्रमसे उत्पन्न होते और बदलते हैं। इन गुल्म-वायु तथा वात ग्रस्त प्रकृतिवालियोंका यह फडकनका लक्षण चिकित्सकोंको नर्त्तन (कोरिया) रोगकी तरह मालूम होता है। वात भी एक दिनमें नर्त्तन-रोगमें परिवर्त्तित हो जा सकता है और इस नर्त्तन-रोगके कारण समूचे शरीरकी पेशियोंमें यन्त्रणा उत्पन्न हो जाती है। अकसर फडकन, दर्द और सुन्नपन—ये एक साथ ही रहते हैं।

नर्त्तन-रोगके भी कुछ खास लक्षण हैं, जिन्हें याद कर लेना चाहिये। सर्दी लगने या भावानुभूतिवाली अवस्थामें पेशियोंमें फडकन या झटका लगा करता है। यदि शरीरके किसी अंशको दबाया जाता है, तो उसी स्थानकी पेशियां फडकने लगती हैं। ऐसी स्नायविक, वात-ग्रस्ता तथा गुल्म-वायु-रोग-ग्रस्ताओंको हमेशा ही नर्त्तन रोग (कोरिया) नहीं भी बना रह सकता

है, तो उसे बराबर मिचलीक तकलीफी बनी रहती है। आप यह भी देखेंगे कि जब एक लक्षणोंका दल (लक्षण-समूह) बहुत ही तीव्र हो जाता है, तो दूसरे कुछ समयके लिये दब जाते हैं और इसी तरह, वे पल्सेटिलाकी भाँति परिवर्त्तित हुआ करते हैं, पर सामूहिक रूपसे सब लक्षण ग्रहण करने चाहियें, जिसमें रोगीका पूरा पूरा चित्र सामने आ जाये। आज एक प्रकारके लक्षण-समूह लेकर कोई स्त्री आपके पास आयेगी, पर दो सप्ताह बाद, वही स्त्री दूसरे ही प्रकारके लक्षण-समूहोंके साथ फिर उपस्थित होगी। ऐसी रोगिनियोंके लिये दवा चुनना अत्यन्त ही कष्ट-साध्य है और कभी-कभी तो आपको दर्जनों बार लक्षण ग्रहण करने होंगे और उन्हें इस तरह सजाकर रखना होगा, मानो यह सब उसे एक ही दिन अनुभवमें आये थे तथा इसी अनुसार आपको अपना नुस्खा भी तैयार करना होगा। गुल्म वायु-ग्रस्ता रोगिनियोंको इन्हीं परिवर्त्तनशील लक्षणोंके कारण सम्हालना मुश्किल हो जाता है। और भी एक बात है, उनमें चिकित्सकको धोखा देनेकी भी एक प्रवृत्ति रहती है।

"प्रसवकी पहली हालतमें सिहरावन मालूम होना, प्रसव-कालमें हिस्टीरियाके लक्षण पैदा हो जाना।" दर्द बन्द हो जाता है या अनियमित होता है, इसी वजहसे उससे कोई काम नहीं निकलता, जरायुका मुँह भी नहीं खुलता, पर जब नियमित दर्द होता है, तो इमें कुछ आवश्यक लक्षण देखनेमें आते हैं। दर्द पैदा होता है और उससे मालूम होता है, कि सन्तोषजनक ढङ्गसे सब काम हो जायगा। दर्द नियमित होता है और बहुत देरतक होता है। मालूम होता है, कि दो तिहाई काम हो गया, पर एकाएक प्रसूता जोरसे चिल्ला उठती है और अपना ऊरु पकड़ लेती है—कारण यह कि दर्द जरायु स्थानको छोड़कर ऊरुमें चला जाता है, ऊरु-स्थानमें जोरसे मरोड़का दर्द होता है। प्रसूताको मलना और उलट देना पड़ता है। यह दवा दर्दकी गति ठीक कर देगी और इसके बाद जो दर्द पैदा होगा, वह काम पूरा करके ही छोड़ेगा। प्रसव-कालमें कुछ स्त्रियाँ इतनी भावुक हो जाती हैं, कि यदि उनके सामने कोई भावोत्तेजक कहानी कही जाती है या कोई उत्तेजना पैदा करनेवाली बात हो जाती है, तो दर्द बन्द हो जाता है, ऐसी ही भाव-प्रवण वे हो जाती है। यदि प्रसव हो गया है और प्रसवके बाद होनेवाला क्लेद-स्राव आरम्भ हो गया है, तो यह परिस्रव या प्रसवके बादका स्राव रुक

जायगा। यदि उसे सर्दी लग गई और उसमें मरोड़ या कष्टदायक प्रसवके बादका दर्द आरम्भ हो गया है, तो स्तनमें दूध आना बन्द हो जायगा। समूचे शरीरमें यन्त्रणा और कुचलनेकी तरह दर्द मालूम होगा तथा बोखार आ जायगा। इस दवाकी **कालोफाइलम**से तुलना करनी चाहिये। उसमे आगे लिखे लक्षण हैं'—स्त्रियोंके जनन यन्त्रमें दुर्बलता, कमजोरीके कारण ही उसे गर्भ नहीं रहता, बन्ध्या बनी रहती है या गर्भ रहनेके महीने दो महीनेके बाद ही गर्भ-स्राव हो जाता है। प्रसव-कालमें जरायुका सकोचन इतना कमजोर हो पड़ता है, कि अपने भीतरकी चीजको निकाल नहीं सकता और उसे केवल तकलीफ हुआ करती है। मासिक रज स्रावके समय प्रसवकी तरह दर्द होता है, इसके साथ ही जाघ और पैरोंमे, यहाँतक कि तलवे और अगूठेतक खीचनका दर्द होता है। पेशियों तथा बन्धनियोंकी शिथिलता रहती है, जरायु-स्थानमें भार तथा वह अपनी जगहसे हटा रहता है। सामनेकी ओर भी वक्र रह सकता है, खाल उधेड़ देनेवाला प्रदरका स्राव होता है। मासिक रज'-स्राव या तो समयके बहुत पहले या बहुत देरसे होता है। उसे सर्दी सहन नहीं होती और गर्म वस्त्र मांगती है—ठीक **पल्सेटिला**की तरह। **इग्नेशिया**की भाँति वह हिस्टीरिया (गुल्म वायु) ग्रस्त भी रहती है। वह चिड़चिड़ी और आशङ्कित चित्त रहती है। ऐक्टियाकी भाँति उसमें वातके लक्षण रहते हैं, केवल छोटी-छोटी सन्धियोंपर अधिककर वातका आक्रमण होता है। इसके बाद उसे प्रसवके बादका दर्द आरम्भ होता है। यह दर्द वक्षण-प्रदेशमें मालूम होता है। पीठमें वातके कारण कड़ापन उत्पन्न हो जाता है और मेरुदण्ड अत्यन्त स्पर्श असहनीय हो पड़ता है, उसे नींद नहीं आती, बेचैन रहती है और इन सबके साथ उत्तेजना भी बनी रहती है। यौवनावस्थाका नर्त्तन रोग, जिसमें बहुत देरसे मासिक रज-स्राव होता था, इसने आरोग्य कर दिया है।

"माथा और गर्दनके पिछले भागमें यन्त्रणा।" **ग्रीवा-सन्धिकी पेशियोंके तनावके कारण माथा पीछेकी ओर खिंच जाता है, पीठमे ऊपरसे नीचेकी ओर भयङ्कर दर्द बना रहता है।** पीठका वातका दर्द। पीठकी पेशियाँ तनी रहनेके कारण पीठके बल लेटा नहीं जाता। पेशियोंकी फड़कन और सकोचनके कारण करवट

उसे करने दिया जाये, तो वह उत्तेजित नहीं होता। उदाहरणार्थ, यदि वह बातचीत करना चाहता है, तो जबतक उससे बात करते रहा जायगा, तबतक उसकी उत्तेजना प्रकट न होगी, पर ज्योंही आप ऐसा कोई काम करेंगे, जो वह नहीं चाहता, तो तुरन्त यह उत्तेजना या इच्छा-शक्तिकी गडबडी पैदा हो जायगी और यही मानवीय अवस्थाके सबसे भीतरी अंश है। रोगी जो चाहता है, वह उसकी इच्छा-शक्तिकी ही चीज है और जो चीज़ उसकी इच्छाको प्रकट करती है, वह प्रत्येक परीक्षामें सबसे आवश्यक चीज़ है। आप कह सकते हैं, कि वह मनुष्य उदास है, पर वह उदास इसीलिये है, कि जो वह चाहता है, वह उसे नहीं मिलता। वह उसी चीजकी इच्छा करता है, जो उसके पास नहीं है और उसीके लिये वह उदास रहता है, यह उदासी यहाँतक बढ जा सकती है, कि मन भी भ्रमित हो पडे।

चित्तका विभ्रम और सरमें चक्कर आना, अब इनके प्रभेद देखिये।—बुद्धि-विभ्रम ही सरका चक्कर नहीं है, इसको क्षणभरके लिये सोचिये, आपको मालूम हो जायगा, कि यह नहीं है। बुद्धिकी गडबडी ही मनकी गडबडी है, अनुभूति केन्द्र या ज्ञानेन्द्रियोंकी गडबडी नहीं है। चलनेके समय डगमगाना तथा मन-विभ्रमका वह काल, जिसमें ठीकसे सोचा नहीं जा सकता, इनका प्रभेद देखिये। शिरोघूर्णन अर्थात सरमें चक्कर तो एक फेरा खानेकी अनुभूति है; इसका सम्बन्ध ज्ञानेन्द्रियोंसे है। कुछ होमियोपैथिक रेपर्टरियोंमें यह एक बहुत बडी भूल की गई है, कि मनकी घबडाहटको चेतना-केन्द्रके अन्दर सरमें चक्करके साथ रख दिया गया है। इन बातोंपर अच्छी तरह विचार करना चाहिये, जिसमें कि हमलोगोंको अच्छी तरह समझमें आ जाये, कि रोगी जो लक्षण बताते हैं, उन लक्षणोंका मतलब क्या रहता है। कोई रोगी कह सकता है,—राह चलते समय उसके सरमें चक्कर आ जाता है या ऐसा मालूम होता है, कि भीतरकी सभी चीजें घूम रही हैं, पर इतनेपर भी अंकोंका एक लम्बा जोड वह लगा सकता है, उसका मन स्वच्छ रह सकता है। यदि हमलोग भी इतने साफ हों, कि बातोंका मतलब अच्छी तरह समझ सकें, तो हमलोगोंको रोगी क्या कहना चाहता है, यह अच्छी तरह समझमें आ जायगा। रोगीकी भाषाको लिख लेना बहुत ही आवश्यक है, पर इतनेपर भी अकसर रोगी कहते कुछ हैं और उनका मतलब

कुछ दूसरा ही रहता है और उस समय ब्रैकेट ( ) में उनका वास्तविक मतलब लिख लेना भी आवश्यक होता है। उदाहरणार्थ, मान लीजिये, कि कोई रोगी कहता है—"मेरी छातीमें इतना दर्द है," पर यह बात वह अपने तलपेटपर हाथ रखकर कहता है या मासिक रज स्रावके समय कोई स्त्री कहती है,—मेरे पेटमें जोरका दर्द होता है, पर आप ठीक जानते है, कि यह दर्द पेटमें नहीं, बल्कि जरायुमें है। उनके बयानपर रोगीसे अकसर सवाल करना चाहिये या उनसे कहना चाहिये, कि रोग या दर्दवाली जगहपर हाथ रखो। इसी तरह रोगी सरमें चक्करके विषयमें भी कहते हैं, जब उनके सरमें बिलकुल ही चक्कर नहीं आता, बल्कि उनके चित्तमें घबडाहट रहती है या मनमें घबडाहट बताते है, जब राह चलते हुए उनके पैर डगमगाते है।

पल्सेटिला और **केलि-कार्वकी** तरह, इस दवाकी प्रकृति भी है **इधर-उधर हटनेवाला दर्द** समूचे शरीरमे होना। इधर-उधर घूमनेवाला, तेज, गोली लगनेकी तरह अथवा फाडनेकी तरह दर्द, यह दर्द मानो एक अङ्गसे दूसरे अङ्गपर उडता-फिरता है, कभी-कभी तो मुश्किलसे त्वचाकी गहराईतक दर्द मालूम होता है और कभी कभी यह दर्द स्नायु-पथोंमें घूमता अनुभवमें आता है।

यह दवा **सर-दर्दके** लक्षणोंसे भरी है। इसमे धीमा यन्त्रणादायक दर्द भी होता है, जब ऐसा मालूम होता है, कि मस्तिष्क दब जायगा, पर ये दर्द खासकर **मस्तकके पिछले भागसे मालूम होते हैं, मानो माथा कुचल जायगा**। कठिन निरन्तर यन्त्रणादायक दर्द, तीव्र, क्लेश-दायक दर्द, मस्तिष्कमें भार मालूम होना। "धीमा ललाटमें होनेवाला दर्द, यह दाहिनेसे बायीं ओर होता है और ललाटकी त्वचामें सकोचनका भाव मालूम होता है।" माथा भरा मालूम होता है, उसमे धीमा और बहुत दर्द होता है, कपालमें बराबर यन्त्रणादायक दर्द बना रहता है। दाहिनी आँखके ऊपरी भागमें दर्द। "दाहिने चक्षु गह्वर प्रदेशके ऊपरी स्थानका स्नायु शूल।" बायीं पार्श्व-कपालास्थि (कनपटीकी हड्डी) मे धक्का मारनेकी तरह दर्द, इसके बाद यह दाहिनी तरफ होता है।" खोपडीमें सुरसुरी मालूम होना। यदि अधस्त्वचाकी परीक्षा करे तो समूचे शरीरमें सुरसुरी, खुजली धक्का मारनेकी तरह, झटका लगने और लगातार बने रहनेवाला दर्द मिलेगा। अतएव,

सभी काम धीरे-धीरे होते हैं। शारीरिक क्रियाएँ धीमी पड जाती हैं, हृत्पिण्ड जोर लगाकर कार्य करता है और शिराएँ रक्तसे भरी रहती है।

"डकारें—खट्टी, तीती और तेलही आती है, वमनकी इच्छा होती है, कलेजेमें जलन होती है और खानेके बाद मुँहमें अन्न चढ आता है।" यह **पाचनकी एक बहुत बड़ी गडबड़ी है** और इन्ही लक्षणोंसे यह **फास्फोरस** और **फेरम**की श्रेणीकी दवा मालूम होती है। ज्योंही रोगीके कण्ठके नीचे खायी हुई सामग्री उतरती है, कुछ ही देर बाद, वह खट्टी हो जाती है तथा रोगी उसे कै कर देता है, यह तबतक, जबतक पेट बिलकुल ही खाली नहीं हो जाता। **फास्फोरस, फेरम** और **आर्सेनिकम**, इस्क्युलस तथा कुछ दूसरी दवाओंमें भी ठीक ऐसी ही अवस्था है। इस्कुलसमें पाकाशयमें जखम और रक्त-सञ्चयका भी लक्षण है। "पाकाशयमें बराबर तकलीफ और जलन बना रहना, वमन करनेकी प्रवृत्ति।" ऐसी अवस्था पाकाशयमें जखम होनेपर ही सकती है।

तलपेट भी तकलीफोंसे भरा रहता है। यदि दाहिने कुक्षि-देश (कोख), उदर और सरलान्त्रके लक्षणोंपर ध्यान दिया जाये, तो इनके अध्ययनसे मालूम होगा, कि यकृती-शिराका रक्त-प्रवाह रुक गया है (portal stasis), पाचन-शक्ति धीमी पड जाती है, कब्ज बना रहता है और पाखानेके समय काँच निकल पडती है अर्थात सरलान्त्र बाहर निकल आती है। इसकी बवासीर बहुत तकलीफ देनेवाली होती है और **दाहिने कुक्षि-देशमें पूर्णता मालूम होती है।** यकृत भी रोगसे भरा रहता है, भोजनके बाद आँतें तथा सरलान्त्रमें बहुत तकलीफ मालूम होती है। मल-नालीमें खीले गडने, आरीसे काटनेकी तरह या जलनकी तरह दर्द होता है, मानो मल-द्वार **खीलोंसे भरा** हुआ है। बादी बवासीर या अन्त्र-वलिके कारण बहुत तकलीफ होती है। सभी आर्शिकी शिराएँ विकृत हो जाती है और उनमें जखम हो जाता है। इन विकृत शिराओंकी बगलमें, मल-नालीमें मल चिपका रहता है, इसके बाद जखम हो जाता है तथा खूनका स्राव और बहुत तकलीफ होती है। यह अकसर कहा जाता है, कि बादी बवासीरमें, जिसमें खून नहीं निकलता, इससे फायदा होता है, पर यह खूनी बवासीरको भी आरोग्य करती है। इसके मलनालीके लक्षणोंपर मूल-ग्रन्थमें दो पृष्ठ लिखे

हो जाता है तथा पसीना, सुस्ती, निद्रा प्रभृति लक्षण पैदा हो जाते हैं। "अकड़न, बहुत कमजोरी और सुस्ती, इसके साथ ही औंघाई या निद्रालुता रहती है। अकड़नके साथ दस्त, कै होने बाद बच्चेका दूध पीना।"

इथूजाके रोगीके चेहरे तथा भाव-भङ्गीमें ऐसी कितनी ही बातें रहती हैं, जो इस दवाको निर्देश करती हैं। देखनेसे ही इतनी बातें मालूम हो जाती हैं, कि कोई सवाल करनेकी जरूरत ही नहीं रह जाती, तुरन्त दवा दे दी जा सकती है, पर यह उचित नहीं है। एक कार्यव्यस्त चिकित्सक, जिसने ठीक-ठीक भावसे ऊँचाईके साथ मेटिरिया-मेडिकाका अध्ययन किया है तथा जिसने सिद्धान्तोंका अध्ययन किया है, वह समयपर तुरन्त दवा देकर बहुत उपकार कर सकता है, पर वह वास्तवमें ऐसा करता नहीं है, क्योंकि वह ऐसी कितनी ही बातोंको एकत्र करता है, जो बाहरी मनुष्य सोच भी नहीं सकते। इथ्यूजा वाह्य-पटलपर ही अपने लक्षण दिखा देता है, पर ऐसी बहुत-सी ओषधियाँ हैं, जिनका लक्षण बाहरी शरीरपर कुछ भी देखनेमें नहीं आता, क्योंकि उनके लक्षण भीतर और गभीर अनुभूति पटलपर ही प्रकट होते हैं। इसको अच्छी तरह समझानेके लिये एक रोगीका उदाहरण देते हैं। मान लीजिये, कि देखनेमें एक सुदृढ मनुष्य, जो अपनेको एकदम स्वस्थ समझता है, आपके साथ भोजन करनेके लिये निकला। आपने कुछ देरतक देखा, कि उसकी नाक बराबर मानो हिल रही है। यह तुरन्त ध्यान देनेकी बात है। वह अपने स्वास्थ्यका कभी जिक्र ही नहीं करता, खाते खाते ज्योंही दरवाजा एकाएक जोरसे बन्द होता है, वह उछल पड़ता है। यह दूसरा चिन्ह है। इसके बाद वह आपसे कहता है, कि वह कितना खाता है, उसका कितना उत्तम प्रभाव होता है, भोजनके बाद उसकी तबियत कितनी प्रसन्न रहती है और आपने भी देखा है, कि वह भरपूर खाता है। आपने उसके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें एक शब्द भी उससे नहीं कहा है। आपने उससे, उसके स्वास्थ्य-सम्बन्धी कोई लक्षण भी नहीं पूछे हैं। अन्तमें, जब आपने उसके आगे दूधका कटोरा रखा, तब उसने कहा—"ओह! मैं दूध नहीं पी सकता, दूध पीनेसे ही पतले दस्त आने लगते हैं, मैं कभी दूधका नाम भी नहीं लेता।" ऐसा कौन होगा, जो इतनेपर भी दवाखानेमें बुलाकर परीक्षा किये बिना उसे दवा न दे सकेगा? ऐसे रोगीके लिये **नेट्रम-कार्ब**के सिवा और कौन-सी दवा चुनी जा सकती है? कभी-कभी किसी सुदृढ बलवान

घण्टे बीत जाये और तब बच्चा रोये तो समझना चाहिये कि उसको भूख लगी है और इस अवस्थामें अगर कुछ खायगा तो पचा भी सकेगा, पर इससे कम समयके भीतर ही खिलाना या स्तनका दूध पिलाना बहुत बुरा अभ्यास है। यह तो इस तरह हो सकता है, कि चायके प्यालेमें आधा प्याला दूध लेकर पिलाया जाये, वह कुछ पच जाये तो थोड़ी देर बाद, फिर थोड़ा अधिक पिलाया जाये और फिर कुछ उससे भी ज्यादा पिलाया जाये। इस तरह बच्चा अपना खाया हुआ पदार्थ थूकने लगता है, वह खट्टा हो जाता है। ग्रीष्म-ऋतुकी पहली ही लहर उसे मस्तककी बीमारी उत्पन्न कर देती है। इस बुरे तरीकेपर तो केवल बहुत प्रौढ और मजबूत लड़के ही ठहर सकते हैं। मैंने इन बच्चोंको लक्ष्य किया है और देखा है, कि इस बुरे अभ्यासमें वे तभीतक छट सकते हैं, जबतक कि ग्रीष्म-ऋतु नहीं आती। चिकित्सकको इन सब बातोंपर ध्यान देना और जोर देकर दूसरोंको भी समझा देना चाहिये। कोई वृद्धा आती और कहती है—"वह डाक्टर कुछ नहीं जानता।" बच्चेको अवश्य कुछ खिलाना चाहिये। अब ऐसे अनियमित-भावसे जिन बच्चोंको खिलाया गया है, इथ्यूजा उनको खूब लाभ करता है। इस अवस्थाकी दवाओंमें अर्थात जब मस्तिष्कके रोगके कारण पाचन-क्रिया एकदम बिगड़ जाती है, उस समय इथ्यूजा ही इस अवस्थाकी सर्व-श्रेष्ठ औषधि होती है। खूब अधिक चिकित्सा करनेवाले अनुभवी चिकित्सकोंका यही मत है, कि इथ्यूजा बच्चोंकी ही दवा है, पर "जवानों" की भी कभी-कभी इथ्यूजाकी अवस्था हो जाती है, जब किसी तरहकी उत्तेजना या मस्तिष्क रोगके कारण पाचन एकदम बन्द हो जाता है। दिन-रात खानेवाले बुभुक्षित जो हमेशा कुछ-न-कुछ खाते ही रहते हैं, जिनका मुँह हमेशा चला ही करता है, हमेशा जेबमें कुछ-न-कुछ खानेकी चीजें भरे ही रहते हैं, यहाँतक कि वह अवस्था आ जाती है, कि पाकाशयकी क्रिया ही बन्द हो जाती है। इस अवस्थाके कारण पैदा हुई मन्दाग्निको इसने आरोग्य किया है। मस्तककी बीमारियोंके कारण, जिसमें माथा गर्म हो जाता है, वमन होता है, सुस्ती, पसीना तथा लम्बी नींद आती है, ऐसी मन्दाग्निके रोगीको भी यह खूब फायदा करता है।

बच्चोंकी अकड़नका लक्षण भी इथ्यूजामें है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि मस्तिष्क-रोगोंका पाकाशयपर प्रभाव नहीं पहुँचता, लेकिन बच्चेको अकड़न हो जाती है, उसके हाथ लसदार हो जाते हैं, चेहरा मुर्देकी तरह

हो जाता है तथा पसीना, सुस्ती, निद्रा प्रभृति लक्षण पैदा हो जाते हैं। "धकडन, बहुत कमजोरी और सुस्ती, इसके साथ ही औंघाई या निद्रालुता रहती है। धकडनके साथ दस्त, कै होने बाद बच्चेका दूध पीना।"

इथूजाके रोगीके चेहरे तथा भाव-भङ्गीमें ऐसी कितनी ही बातें रहती हैं, जो इस दवाको निर्देश करती हैं। देखनेसे ही इतनी बातें मालूम हो जाती हैं, कि कोई सवाल करनेकी जरूरत ही नहीं रह जाती, तुरन्त दवा दे दी जा सकती है, पर यह उचित नहीं है। एक कार्यव्यस्त चिकित्सक, जिसने ठीक-ठीक भावसे ऊँचाईके साथ मेटिरिया-मेडिकाका अध्ययन किया है तथा जिसने सिद्धान्तोंका अध्ययन किया है, वह समयपर तुरन्त दवा देकर बहुत उपकार कर सकता है, पर वह वास्तवमें ऐसा करता नहीं है, क्योंकि वह ऐसी कितनी ही बातोंको एकत्र करता है, जो बाहरी मनुष्य सोच भी नहीं सकते। इथ्यूजा वाह्य-पटलपर ही अपने लक्षण दिखा देता है, पर ऐसी बहुत-सी औषधियाँ हैं, जिनका लक्षण बाहरी शरीरपर कुछ भी देखनेमें नहीं आता, क्योंकि उनके लक्षण भीतर और गभीर अनुभूति पटलपर ही प्रकट होते हैं। इसको अच्छी तरह समझानेके लिये एक रोगीका उदाहरण देते हैं। मान लीजिये, कि देखनेमें एक सुदृढ मनुष्य, जो अपनेको एकदम स्वस्थ समझता है, आपके साथ भोजन करनेके लिये निकला। आपने कुछ देरतक देखा, कि उसकी नाक बराबर मानो हिल रही है। यह तुरन्त ध्यान देनेकी बात है। वह अपने स्वास्थ्यका कभी ज़िक्र ही नहीं करता, खाते-खाते ज्योंही दरवाजा एकाएक जोरसे बन्द होता है, वह उछल पडता है। यह दूसरा चिन्ह है। इसके बाद वह आपसे कहता है, कि वह कितना खाता है, उसका कितना उत्तम प्रभाव होता है, भोजनके बाद उसकी तबियत कितनी प्रसन्न रहती है और आपने भी देखा है, कि वह भरपूर खाता है। आपने उसके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें एक शब्द भी उससे नहीं कहा है। आपने उससे, उसके स्वास्थ्य-सम्बन्धी कोई लक्षण भी नहीं पूछे हैं। अन्तमें, जब आपने उसके आगे दूधका कटोरा रखा, तब उसने कहा—"ओह! मैं दूध नहीं पी सकता, दूध पीनेसे ही पतले दस्त आने लगते हैं, मैं कभी दूधका नाम भी नहीं लेता।" ऐसा कौन होगा, जो इतनेपर भी दवाखानेमें बुलाकर परीक्षा किये बिना उसे दवा न दे सकेगा? ऐसे रोगीके लिये **नेट्रम-कार्ब**के सिवा और कौन सी दवा चुनी जा सकती है? कभी-कभी किसी सुदृढ बलवान

उससे बिलकुल ही उदासीन बना रहता है। नम्र और शान्त प्रकृतिका मनुष्य मनमानी करनेवाला, जिद्दी और दाम्भिक बन जाता है।

शरीरकी पेशियोंकी गतिकी समता बनाये रखनेमें कष्ट होता है। मस्तिष्क और मेरुदण्डकी क्रियाकी समता भी नहीं रहती, हाथ तथा अगुलियोंकी गति बिगड जाती है, हाथसे चीज उठानेके समय उसके हाथसे गिर जाती है। किसी चीजको पकडते समय अगुलियाँ अकडकर खुल जाती हैं। कभी कभी एक ऐसी बीमारी पैदा हो जाती है कि रसोइदारिनें बराबर थाली कटोरे तोड डाला करती हैं, वे उनके हाथोंसे अनायास ही गिर जाती हैं। इसे आप **एगरिकस** या **एपिस**से आरोग्य कर सकते हैं, पर इन दोनों दवाओंके लक्षण विपरीत हैं। **एगरिकस**की रोगिनी आगके पास बैठना पसन्द करती है, पर **एपिस**की रसोई-घरके बाहर निकल जाना चाहती है। यह विकृति या अतिपूर्णता शरीर और मस्तिष्क दोनोंकी ही रहती है। प्रत्येक प्रकारका परिवर्त्तन रोगी तथा चिकित्सकके अनुभवमें आता है। किसी-किसी समय रोगी मूर्ख, उजड्ड और अनिपुण बन जाता है और किसी समय, **खासकर रातमें समय,** तेज और कवित्वपूर्ण होकर बिना किसी श्रमके कविता बनाने लगता है। सवेरेके वक्त तो वह क्लान्त और ढीला-सा रहता है, यह भाव दो पहरतक रह सकता है। सवेरेके वक्त मानसिक लक्षण बदतर बने रहते हैं और शामके वक्त वे अच्छे रहते हैं। नींदमें सभी झटके और मरोडके लक्षण दबे रहते हैं, खुली हवामें टहलनेके समय सरमें चक्कर आता है, उसे हमेशा ही सर्दी मालूम होती रहती है। जिस कामका वादा करता है, ठीक उसके विपरीत काम करता है, सरमें चक्कर और मनकी विशृङ्खलता एक साथ मिली रहती है।

मेरुदण्डके लक्षणोंके साथ अर्थात मेरुदण्डमें कम्पन और झटका मालूम होनेके साथ-ही-साथ सर-दर्द होता है। इस दवाके सर-दर्दमें यह लक्षण बना ही रहता है। मेरुदण्डके रोगियोंका सर-दर्द। इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो तेज बरफ छुलाया जा रहा है या ठण्डी सुई घुसाई जा रही है, यह एक सार्वाङ्गिक लक्षण है, दूसरे अङ्गोंमें भी ऐसा ही अनुभव होता है। ऐसा सर-दर्द, मानो काटो घुसायी जा रही है। सवेरेके वक्त कुछ खून भी जाता है, यह रक्त गाढ़ा काला रहता है और मुश्किलसे टपकता है। सरमें

ठण्ढकका भाव रहता है, खोपड़ीमें सब तरहके अद्भुत-अद्भुत लक्षण बने रहते हैं, खुजलाने या खरोंचनेके बाद बरफकी तरह ठण्ढक मालूम होती है। यह बरफकी तरह ठण्ढकका भाव समूचे शरीरमें दौड़ जाता है। किसी तरहके दाने शरीरपर न दिखाई देनेपर भी खुजलाहट खूब रहती है। यह अकेली नहीं रहती और खुजलानेके बाद शरीरके उस हिस्सेमें बरफकी तरह ठण्ढक मालूम होती है या ऐसा अनुभव होता है, मानो उसपरसे जोरकी हवा बह रही है। नर्त्तन रोगकी भांति सर बराबर हिला करता है। खोपड़ीमें खुजली, यह खासकर सवेरे सोकर उठनेपर होती है, इसमें सारे शरीरके लक्षण सवेरेके वक्त ही बढ़ते हैं, खोपड़ीमें प्रत्यक्ष दाने भी दिखाई देते हैं, पपड़ी जमनेवाला अकौता हो जाता है।

आँखोंका ऐंठना और हिलना। ऐगरिकसके रोगीकी आँखोंमें यह लक्षण अवश्य ही रहेगा। रोगी यदि आपको ओर देखेगा, तो आँख घड़ीके लङ्गरकी तरह हिलती रहेगी, वह बराबर पीछे हटेगी और फिर आगे बढ़ेगी। रोगी बहुत कोशिश करता है, कि आपपर दृष्टि जमाये रहे, पर आँखें हिला ही करती हैं। यह लक्षण केवल नींदके समय बन्द हो जाता है। यही नहीं, सब तरहकी गतियां निद्रा-कालमें रुक जाती हैं। **साइक्युटा, आर्सेनिकम, सलफर, पल्सेटिला** प्रभृति कई अन्य दवाओंसे भी आँखका यह उपसर्ग आरोग्य होता है, पर ऐगरिकससे भी यह लक्षण उत्पन्न और आरोग्य होता है। दृष्टि तथा रङ्गोंको देखनेमें भी लक्ष्य करने योग्य गड़बड़ी रहती है। आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ-सी उड़ती रहती हैं। रोगीको पढ़नेमें तकलीफ होती है, चीजें वहाँ दिखाई देती हैं, जहाँ वे वास्तवमें नहीं रहतीं। आँखोंके सामने काली मक्खियाँ, काले बिन्दु उड़ते दिखाई देते हैं, द्वित्व-दृष्टि—पदार्थ दो दिखाई देते हैं, आँखोंके सामने मानो मक्खियां उड़ती हैं। आँखकी मांस-पेशियोंमें कमजोरी रहती है, आँखकी गति अनियमित और पुतलियाँ फैली अथवा सकुचित रहती हैं। आँखके सामने कुहरा या मकड़ेका जाल-सा तना मालूम होता है। आँखोंमें आक्षेपिक ऐंठन और फड़कन रहती है। फड़कन या झटका और मरोड़ तो इसका एक निर्देशक लक्षण है, साथ ही आँखोंकी नर्त्तन-रोगकी तरह गति तथा आँखके सामनेके रङ्ग और मूर्त्तियोंका विकृत आकारमें दिखाई देना।

सवेरेके वक्त पतले दस्त आते हैं, बहुत-सा गर्म-वायु (एलो) निकलता है। साथ ही मल-नालीमें जलन रहती है, कोमल पाखाना होता है, बहुत काँखना पड़ता है। बहुत जोरका पाखाना लगता है, पाखानेके पहले, समय और बाद भी कूथनका भाव बना रहता है। ऐसा मालूम होता है, मानो मल-नाली फट जायगी, पाखाना हो जानेपर भी ऐसा ही अनुभव होता है। (**मर्क्यूरियस और सलफर**)। एकाएक जोरका दर्द उठता है, रोगी जरा भी ठहर नहीं सकता, कष्टकर, फट जानेकी तरह अनुभूति रहती है। **पाखाना होनेसे पहले** तलपेटमें काटने और चिकोटी काटनेकी तरह दर्द होता है, बहुत मरोड़ रहता है, मल-नालीमें दर्द-भरा कूथनका भाव रहता है। **पाखाना होनेके समय** शूलका दर्द और वायु निकलता है, मल-द्वारमें जलन, घावकी तरह दर्द, खोंचा मारनेकी तरह और काटनेकी तरह दर्द होता है, पसीना होता है, कमरसे पैरतक दर्द, यह पाखाना हो जाने बाद भी बना रहता है। **पाखाना हो जाने बाद** सब-दर्द आराम हो जाता है, मलद्वारमें चबानेकी तरह दर्द और **मल-नालीमें कूथनका भाव**, मल-द्वारमें काटनेकी तरह दर्द, कोखवाली जगहपर पीसनेकी तरह दर्द, तलपेटमें तनावका भाव, तलपेट और नाभीके चारों ओर भार मालूम होना, वंक्षमें दर्द। **पाखाना हो जाने बाद भी कूथनका भाव** बहुत ज्यादा रहता है।

मल-नालीमें पक्षाघातका भाव या कब्ज रह सकता है, मल कड़ा होता है, पाखानेके समय इतना काँखना पड़ता है, मानो जीवन इसीपर निर्भर है, इतनेपर भी पाखाना नहीं होता। निम्न अङ्गके पक्षाघातकी आरम्भिक अवस्था। इसके साथ ही मास पेशियोंमें ऐंठन और मेरुदण्डमें जलन होती है। काँखनेसे कोई लाभ न होता देख, एक रोगीने जोर देना छोड़ दिया, आप-से-आप ही पाखाना हो जाता था। यह लक्षण केवल **आर्जेण्टम-नाइट्रिकममें** (मल-मूत्र) दिखाई दिया है। जितने जोरका पाखाना लगता है, उतने ही वेगसे पेशाब भी लगता है, बूंद-बूंदकर पेशाब होता है। इस दवाका एक विचित्र स्वरूप यह है, कि पेशाब होनेके समय वह ठण्डा मालूम होता है। जिस समय पेशाब बूंद-बूंद होता है, उस समय मूत्र-नालीसे ये सब बूंदें निकलती हुई गिन ली जा सकती हैं। पेशाब बहुत धीमी धारमें निकलता है या बूंद-बूंद होता है, धाराको तेज बढ़ानेके लिये दबाव देना

पड़ता है।" "पेशाब जलकी तरह, साफ, नारङ्गी रङ्गका, चमकीला या पीले रङ्गका होता है॰ गहरा पीला और गर्म, लाल, बुलबुलेकी तरह, उसमें एक तरहके चूरकी तरह तलछट पड़ता है, दोपहरके पहले पानीकी तरह, तीसरे पहर दूधकी भाँति, मठाकी तरह, साथ ही लाल या सफेद तलछट (फास्फेट आफ मैग्नेशिया), जहाँ लगता है, वही सतहसे चिपका रहता है, पेशाबमें फास्फेट निकलता है, दूधिया पेशाब। पेशाबपर तेलहा-पदार्थ या उसपर इन्द्र-धनुषकी तरह नाना प्रकारके रङ्ग दिखाई देते हैं, तेलही झिल्लियाँ पेट्रोलियमकी भाँति पेशाबपर तैरा करती हैं। वात, गठिया तथा हिस्टीरिया ग्रस्त मनुष्योंको बहुत थोड़ा पेशाब होना। ठण्डे, कमजोर, पीले तथा राज-यक्ष्मा हो जानेकी सम्भावनावाले मनुष्य। पेशाब बहुत थोड़ी मात्रामें होने लगता है और एक तरहका सर-दर्द पैदा हो जाता है। ऐसा बहुत दिनोंतक चलता है और रोगीको कब्ज बना रहता है। दस्त आनेपर सर-दर्द आरोग्य हो जाता है। **फ्लुयोरिक एसिड**के रोगीको, अगर पेशाब लगता है और वह नहीं जाता तो सर-दर्द पैदा हो जाता है।

रूपान्तर भी हुआ करता है। एक दिनमें ही दूध सूख जाता है, पर मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय या मेरुदण्डमें रक्त-सञ्चयके लक्षण पैदा हो जाते हैं। स्तन-प्रदाह। खासकर यदि दूध आना रुक जाता है, तो स्तन प्रदाहके उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

जननेन्द्रियाँ ठण्डी और सिकुड़ी रहती हैं। पुरुष तथा स्त्रियोंकी जननेन्द्रियकी तुलनात्मक परीक्षा करनेपर मालूम होता है, कि स्त्री जननेन्द्रियपर इसकी परीक्षा भली भाँति नहीं हुई है, पर पुरुषोंमें ऐसे बहुत-से लक्षण पैदा होते हैं, जो स्त्रियोंकी जननेन्द्रियसे सादृश्य रखते हैं। पुरुषोंके लक्षण सङ्गमके बाद बुरे हो जाते हैं और स्त्रियोंको भी ऐसा ही होता है। कामोत्तेजन, सङ्गम इत्यादिके बाद स्त्रियोंमें मूर्च्छित हो जानेका उपसर्ग पैदा हो जाता है और पुरुषोंको कमजोरीका दौरा हो पड़ता है। कम्पन, ऐंठन प्रभृति ऐगरिकसका कोई भी लक्षण, सङ्गमके बाद बदतर हो जा सकता है, क्योंकि जननेन्द्रियकी क्रिया और मेरुदण्डसे बहुत घना सम्बन्ध है। जिन्हें मेरुदण्डकी बीमारियाँ रहती हैं, उन्हें इस कामके बाद तकलीफ होती है।

पुरुषोंमें, सङ्गम-कालमें, मूत्रनलीकी खाल उधड़ जानेके कारण जलन होती है या वीर्य निकलनेके समय, वीर्य गर्म रहता है, उसकी वजहसे जलन

यह आघात एकाएक जोरकी आवाज़, डकार, खाँसी, पीठके बल या बायीं करवट सोनेपर आ जाता है, रातमें अथवा बोखारके समय यह बढ जाता है। यह अकसर दूसरे-दूसरे अङ्गोंमें जैसे उदर या पीठ अथवा प्रत्यङ्गोंमें भी फैल जाता है।

पीठमें भी कितने ही विचित्र और इस औषधिके निर्देशक लक्षण प्रकट होते हैं। समूचे मेरुदण्डमें कडापन आ जाता है, झुकनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मेरुदण्ड टूट जायगा। रोगीको अनुभव होता है, कि कोई चोज़ इस तरह कसी हुई है, कि वह झुकते ही टूट जायगी। पीठकी पेशियोंमें कसावट, पीठकी रीढमें, गहराईमें, झुनझुनी, धक्का देने या जलनकी तरह तेज़ दर्द। मेरुदण्डका दर्द झुकनेपर बहुत बढ जाता है। मेरुदण्डमें सब तरहका दर्द, दर्द पीठकी राहसे ऊपर चढता और नीचे उतरता है। मेरुदण्डके, खासकर गर्दनके पिछले भागमें और पृष्ठ-देशकी पसलियोंके बीचमें स्पर्श सहन नहीं होता। मेरुदण्डके उपदाहमें, कटि-प्रदेशमें गर्म सेंकका सहन न होना। मृगीको सुरसुरीकी तरह ऐसा मालूम होता है, मानो समूची पीठमें ठण्डी हवा लग रही है, ऐसा अनुभव होता है, मानो शरीरमें बरफ छुलाया जा रहा है। ठण्डी जगहें, पीठमें सर्दी तथा कुछ रेंगने, चलने और सुरसुरानेकी तरह अनुभव होना, पीठके चमडेका सुन्न पड जाना, अधिकांश दर्द गर्दनके पिछले भागमें और कमर तथा त्रिक-प्रदेश (lumbo-sacral region) में होता है। इस स्थानपर स्त्री-सङ्गमके कारण दर्द, कटि-प्रदेश तथा त्रिक-प्रदेशमें, खासकर परिश्रम करने, बैठे रहने प्रभृति समयपर दर्द। त्रिक-प्रदेशमें तो इस तरहका दर्द होता है, मानो किसीने मारा है, मानो यह टूट जायगा, स्त्रियोंको कमरके नीचे दर्द होता है।

प्रत्यङ्गोंमें साधारणत ऐंठन हुआ करती है, प्रत्यङ्ग सुन्न पड जाते हैं, नर्त्तन-रोगकी तरह फडका करते हैं, इधर-उधर शरीरमें जलन हुआ करती है, पक्षाघात-ग्रस्त स्थान सर्द मालूम होते हैं। प्रत्यङ्ग सब तथा हाथ काँपा करते हैं, सब तरहकी गतियाँ बिगडी रहती हैं। सन्धियोंमें वात और गठिया, निम्नाङ्गका पक्षाघात, निम्नाङ्गका काँपना और उनमें कमजोरी मालूम होना।

हाथमें इस तरहकी जलन और खुजली मानो पाला मार गया है। छोटी सन्धियोंमें, जहाँ खूनका दौरान कमजोर रहता है, वहाँ भी बरफ लगनेके लक्षण प्रकट हो जाते हैं। अंगूठे तथा अंगुलियाँ कडी पड जाती हैं।

आराम करनेके समय, ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ और खासकर निम्न-अङ्गकी हड्डियाँ टूट जायँगी। ऐसा अनुभव होता है, मानो जघास्थि टूट जायगी। जघास्थिमें लगातार दर्द बना रहता है, बालकोंको स्नायु-शूलकी तरह दर्द हो जाता है, उन्हें आगके पास बाध्य होकर बैठना पड़ता है, नहीं तो हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं। हड्डियोंमें दर्द होता है, पैरोंमें भार मालूम होता है। निम्न-प्रत्यङ्गोंमें दर्द, सुई गड़ने, फाड़ने या लगातार बना रहनेवाला दर्द होता है, यह गर्म प्रयोग या हिलाने-डुलानेपर अच्छा रहता है।

निचले प्रत्यङ्गोंमें गर्भ रहनेके बादसे ही पक्षाघातकी तरह कमजोरी मालूम होती है। प्रत्येक बार गर्भवती होनेपर ऐसा ही होता है और रोगिनीको शय्याशायी होना पड़ता है। यह लक्षण ऐगरिकसको बताता है। पैरोंमें भार मालूम होता है, पैर बहुत भारी मालूम होते हैं। निम्न-प्रत्यङ्गोंमें कम्पन और झटका लगता है।

ऐग्नस कैस्टस।

(Agnus Castus)

इस आश्चर्यजनक औषधिपर अकसर ध्यान नहीं दिया जाता है। बहुत अधिक इन्द्रिय-परिचालन और गुप्त-दुर्गुणोंके कारण जिनका स्वास्थ्य बिगड़ गया है, उन पुराने पापियोंका इलाज करते समय इसपर अवश्य ध्यान देना चाहिये। इसके रोगी पीले, दुबले-पतले होते हैं और अपने दुष्कर्मोंपर पश्चात्ताप किया करते हैं। यह पुरुष-स्त्री दोनोंके लिये ही समान लाभदायक है। जननेन्द्रिय कमजोर हो जाती है और ढीली पड़ जाती है। सभी क्रियाओंकी इच्छा नहीं होती।

एक स्त्री जो गुप्तरूपसे व्यभिचारमें बहुत लिप्त थी, उसने विवाह होनेपर देखा कि उसमें बिलकुल ही कामोद्दीपन नहीं होता। वह इस औषधिसे आरोग्य कर दी गई। इसके बाद जब उसे बच्चा हुआ तो उसके स्तनमें दूध नहीं उतरा, ऐग्नसका प्रयोग किया गया और इसने तीसरे सप्ताहके अन्तमें रुका हुआ दूध जारी कर दिया।

दूध आना आरम्भ होनेके बाद, वह रुक जाता है या बहुत थोड़ा हो जाता है। ऊपर बताया इतिहास जब मालूम रहता है और वह स्त्री बहुत ही सुस्त रहती है, तो यदि कोई बाधा न पड़ी, तो बहुतकर यह दवा आरोग्य कर देती है।

ऊपर लिखा इतिहास अगर मिलता हो, तो यह जरायुसे रक्त-स्राव तथा युवतियोंका रुका हुआ मासिक ऋतु-स्राव फिरसे जारी कर देगा। योनि-पथ बहुत ढीला पड़ जाता है, अकसर जरायु अपनी जगहसे हट जाता है और अण्डेके सफेद अंशकी तरह बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव होता है।

पर अपने आरम्भिक जीवनमें बहुत इन्द्रिय-परिचालन करनेवाले युवककी भी बड़ी दर्दनाक अवस्था रहती है, उसका हृदय भग्न रहता है और जब उसका विवाह हो जाता है, तो वह अपनेको नपुंसक पाता है। उसे सूजाक हुआ रहता है, उसने बहुत ज्यादतियाँ की हैं और अब उसकी लिंगेन्द्रिय ढीली, सर्द रहती है और पाखानेके समय वीर्य तथा मूत्राशय-मुखग्रायी-ग्रन्थिसे रस-स्राव होता है। अपनी सुन्दरी युवती स्त्रीको देखकर उसमें उत्तेजना नहीं आती। यद्यपि अभी हालमें ही उसे गुप्त रूपसे सफलता मिल चुकी है और सवेरेके वक्त उत्तेजना भी होती थी, पर अब नहीं होती।

ऊपर लिखे कारण और अवस्थाकी वजहसे बहुत-से कष्टदायक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। स्मरण-शक्तिका क्षय हो जाता है, निराशा, आत्म-हत्याकी इच्छा, आशंका, भय और चिड़चिड़ापन प्रभृति लक्षण पैदा हो जाते हैं। इन रोगियोंको सर-दर्दकी तकलीफ रहती है और रोशनी सहन नहीं होती और स्नायविक लक्षण तो इतने उत्पन्न हो जाते हैं, कि उनका वर्णन नहीं हो सकता। त्वचामें सुरसुरी होती है, माथा, चेहरा और दाँतोंमें फाड़नेकी तरह दर्द होता है, हलका-से-हलका भोजन भी पेटमें गड़बड़ी पैदा कर देता है तथा मिचलीकी शिकायत बहुत अधिक बनी रहती है। उसकी मांस-पेशियाँ झूल पड़ती हैं, वह रक्त-हीन हो जाता है, उसकी ग्रन्थियाँ और खासकर प्लीहा बढ़ जाती है। उसके पेटमें बहुत अधिक वायु होता है, उदरके भीतरके यन्त्र भारकी तरह लटक पड़ते हैं। मल-नालीकी कमजोरी बढ़ती जाती है और कब्जियत पैदा हो जाती है। वह पाखाना फिरनेके समय बहुत जोर लगाता है, पर उससे या तो पाखाना होता ही नहीं अथवा सिलिका, सैनिकुला और थूजाकी तरह निकलकर पीछे लौट जाता है। मल बड़ा

और कड़ा रहता है। मल द्वारमें खुजली और चिनक मारनेकी तरह होता है तथा जोरकी आवाज़के साथ वायु निकलता है, जिसमें पेशाबकी तरह गन्ध रहती है। मल-द्वारकी खाल उधड़ जाती है। इसके बाद उसे जल्द ठुस-ठुसी खाँसी और रातमें पसीना होने लगता है। उसके प्रत्यङ्ग सब थके और ठण्डे रहते हैं, उसे सर्दी सहन नहीं होती और चुपचाप पड़ा रहना चाहता है। परिश्रम या हिलने-डोलनेसे उसकी तकलीफें बढ़ जाती हैं। वह कोई चिकित्सकोंके पास परामर्शके लिये जाता है और सभी कहते हैं, कि तुम्हें **धातु-दौर्बल्य** (Neurasthenia) हो गया है। उस रोगीको अवश्य एग्नस कैस्टस सेवन कराना चाहिये।

एइलेन्थस ग्लैण्डुलोसा।

(Ailanthus glandulosa)

यह दवा खासकर धीमी रस-रक्त आदि बिगड़कर होनेवाली बीमारियोंमें उपयोगी होती है। यह बात, डिफ्थीरिया, आरक्त ज्वर (scarlet fever), खूनमें ज़हर फैल जाना और लाक्षणिक सान्निपातोंमें तथा खासकर उन रोगियोंमें दिखाई देती है, जिनमें केशिकाओंमें रक्त-सञ्चय हो जानेके कारण चकत्ते, लाल रङ्ग-बिरङ्गे चकत्ते शरीरपर दिखाई देते हैं। ऐसी निम्न-श्रेणीकी बीमारीका शायद सबसे अचूक प्रदर्शन सांघातिक आरक्त-ज्वर है। इसमें नियमित रूपसे दाने नहीं निकलते, बल्कि उनके बदले लाल चकत्ते, गुलाबी ददोरोंकी तरह निकलते हैं। उद्भेद स्वाभाविक रीतिसे नहीं फैलते हुए निकलते हैं या भीतर दब जाते हैं और इसीलिये, मसूढ़ों तथा नाकसे रक्त-स्राव होता है और कण्ठमें एक भयङ्कर सूजन पैदा हो जाती है। चेहरा बैंगनी और उन्मत्तोंकी तरह रहता है, आँखोंमें खून भरा रहता है और यहाँतक कि आँखसे खूनका स्राव भी होता है। बहुत सुस्ती मालूम होती है, पर यह वास्तवमें जड़ा रहती है। वह अचेत और मुरदेकी तरह दिखाई देता है। आप कण्ठको देखें, तो वह बैंगनी धब्बोंसे भरा दिखाई देगा और इसके साथ ही वैसी ही सूजन दिखाई देगी जैसी कि **बेप्टीशियामें** पायी

जाती है। यह एक निम्न और दमी श्रेणीकी बीमारी है। खून बहुत तेजीसे बिगड़ता जाता है, निकला हुआ खून काला रहता है। बच्चा एक तरहकी बेखुदीवाली अवस्थामें पड़ा रहता है और उसे मुश्किलसे जगाया जा सकता है। कभी-कभी अंगुलियोंपर या शरीरपर इधर-उधर छाले निकल आते हैं। नाक, मुँहसे दुर्गन्ध निकलती है। जहाँतक सम्भव है, उतनी ही तेजीसे बच्चा प्राण-घातक रोगकी ओर बढ़ता जाता है। कभी-कभी तो यह बीमारी धीमे बोखारसे शुरू होती है, परन्तु सर्दी लग जाने या कुछ स्वाभाविक दिखावोंके दब जानेके कारण, बीमारी धीमे सान्निपात (टाइफायड) के रूपमें बदल जाती है। परिणाम यह होता है, कि जहाँ पहले साधारण स्वल्प-विराम ज्वर रहता था, वहाँ अब एक प्रकारकी अवसन्नता-जैसी अवस्था आ जाती है। रोगीके हृत्पिण्डकी गति तेज़ हो जाती है। दुर्गन्ध, पीलापन या नीलापन, शरीरपर बैंगनी चकत्तोंके साथ गैरिक रक्त-सञ्चय होकर, एक रङ्ग-बिरङ्गी शकल बन जाती है। जब किसी रोगमें इस तरह एकाएक हेर-फेर हो जाये, तो खूनमें ज़हर फैल रहा है और एक लाक्षणिक सान्निपातवाली अवस्था प्रकट होती है। स्वल्प-विराम ज्वर जो चौबीस घण्टोंके भीतर ही एक तीव्र रस-रक्त बिगड़नेवाली अवस्थामें बदल जाता है, डिफ्थीरिया जो जड़ताके साथ यह रूप धारण कर लेता है और शरीरकी त्वचा रङ्ग-बिरङ्गे दागोंसे भरी जाती है, इस ढङ्गकी बीमारियोंके नमूने हैं।

इस अवस्थाके साथ-ही-साथ रहनेवाले मानसिक लक्षण भी मजेदार होते हैं। मैंने इस सम्बन्धमें जो लिख रखा है, उसे पढ़ता हूँ। रोगी जाग रहा है, पर उसका मन मानो स्वप्नमें है। बच्चा हर समय रोता है, अपने चारों ओर चूहेकी तरह छोटे-छोटे जन्तु दौड़ते देखता है। उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो चूहा या कोई ऐसी ही छोटी चीज़ उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंपर रेंग रही है। स्मरण-शक्ति एकदम नष्ट-सी मालूम होती है, क्षणभर पहले कही हुई बात भी उसके दिमागसे निकल जाती है, हमेशा भूलता रहता है। पिछली समस्त घटनायें भूल जाती हैं, पिछली घटनायें या तो भूल जानेमें आती है अथवा इस तरह अनुभवमें आती है, मानो किसी दूसरेपर बीती हों या उन्हें रोगीने कहीं पढ़ा हो, उसकी स्वप्नवाली अवस्था रहती है। इसीलिये, ऐसा मालूम होता है, मानो पिछली घटनायें वह स्वप्नमें देख रहा है या उन्हें उसने स्वप्नमें देखा है। किसी मानसिक चेष्टामें अपना मन नहीं लगा

सकता, सवालोंका ठीक ठीक जवाब नहीं दे सकता, मानो वह अर्द्ध-चेतन अवस्थामें है और अन्तमें वह एकदम बेहोश हो जाता है। इन रस-रक्तके बिगड़नेकी आरम्भिक अवस्थामें बहुत चिन्ता और बेचैनी रहती है। इसके बाद सभी चीजोंके प्रति उदासीनता और बदहवासी आ जाती है। मन कमजोर, सुस्त पड़ जानेके साथ लगातार आहें भरा करता है, बहुत उत्तेजना-प्रवण, अर्द्ध-चेतन रहता है और अन्तमें बेहोश, बद-हवास, प्रलाप-ग्रस्त और अचैतन्य हो पड़ता है। नींद न आने और बेचैनीके साथ बुदबुदाकर प्रलाप बकता है। यह मानसिक अवस्था भीतर रस रक्त बिगड़ जानेवाली बीमारीमें ही होती है, मतलब यह कि पुरानी बीमारी अच्छी तरह बाहर प्रकट नहीं हुई है। डाक्टर वेल्सने इस दवाका बहुत-से रोगियोंपर प्रयोग किया था, क्योंकि उस समय ब्रोकलिन नगरमें यह आरक्त-ज्वरकी प्रचलित दवा हो रही थी और इससे बहुत-से रोगी बच गये थे। इसमें आरक्त ज्वरके प्राणघातक भावको बदलकर धीमा बना देनेकी शक्ति मालूम होती है।

पाठ्य ग्रन्थमें लिखे लक्षणोंके अलावा यह देखा गया है, कि रोगीके केश झड़ जाते हैं और रातके समय पलक बन्द करनेपर आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ती दिखाई देती हैं। "आँखकी पुतलियाँ चौड़ी होकर फैल जाती हैं, नाकसे बहुत ज्यादा, पतला, कटु, पनीला और खूनका स्राव होता है। यह रस-रक्त बिगड़नेवाले आरक्त-ज्वरकी अवस्थामें होता है। नयनोंमें रक्त भर जाता है, बहुत सुस्ती रहती है और चेहरा देखनेसे ही मालूम होता है, कि रोगीको बहुत कष्ट है। चेहरा महागनीकी तरह काला हो जाता है।" यह भीतर दबे हुए आरक्त ज्वरमें होता है। चेहरा बैंगनी, फूला-फूला, भर्राया और उन्मत्तोंकी तरह रहता है। इस दवाका बहुत अधिक व्यवहार नहीं होता। इसके लक्षणवाले रोगी भी अकसर नहीं मिलते, पर जब इसके निर्देशक लक्षण मिलते हैं, तो बहुत फायदा करती है। मारात्मक आरक्त ज्वरमें भी अकसर इस खास तरहकी श्रेणी आपको न दिखाई देगी। ऐसा आरक्त ज्वर आपको कितनी ही अन्य दवाओंमें भी दिखाई देगा, पर यह दवा एकदम मारात्मक श्रेणीके आरक्त ज्वरकी है और इसका साधारण व्यवहार तो उसी बहुव्यापक आरक्त ज्वरमें होता है, जिसमें अधिकांश रोगियोंको प्राणघातक श्रेणीका आरक्त ज्वर होता है। साधारणत आरक्त ज्वर तीन प्रकारका होता है। एकमें आप देखेंगे, कि इसका आक्रमण हलका और

जाती है। यह एक निम्न और दबी श्रेणीकी बीमारी है। खून बहुत तेजीसे बिगड़ता जाता है, निकला हुआ खून काला रहता है। बच्चा एक तरहकी बेखुदीवाली अवस्थामें पड़ा रहता है और उसे मुश्किलसे जगाया जा सकता है। कभी-कभी अंगुलियोंपर या शरीरपर इधर-उधर छाले निकल आते हैं। नाक, मुँहसे दुर्गन्ध निकलती है। जहाँतक सम्भव है, उतनी ही तेजीसे बच्चा प्राण-घातक रोगकी ओर बढ़ता जाता है। कभी-कभी तो यह बीमारी धीमे बोखारसे शुरू होती है, परन्तु सर्दी लग जाने या कुछ स्वाभाविक दिखावोंके दब जानेके कारण, बीमारी धीमे सान्निपात (टाइफायड) के रूपमें बदल जाती है। परिणाम यह होता है, कि जहाँ पहले साधारण स्वल्प-विराम ज्वर रहता था, वहाँ अब एक प्रकारकी अवसन्नता-जैसी अवस्था आ जाती है। रोगीके हृत्पिण्डकी गति तेज़ हो जाती है। दुर्गन्ध, पीलापन या नीलापन, शरीरपर बैंगनी चकत्तोंके साथ शैरिक रक्त-सञ्चय होकर, एक रङ्ग-बिरङ्गी शकल बन जाती है। जब किसी रोगमें इस तरह एकाएक हेर-फेर हो जाये, तो खूनमें ज़हर फैल रहा है और एक लाक्षणिक सान्निपातवाली अवस्था प्रकट होती है। स्वल्प-विराम ज्वर जो चौबीस घण्टोंके भीतर ही एक तीव्र रस-रक्त बिगड़नेवाली अवस्थामें बदल जाता है, डिफ्थीरिया जो जड़ताके साथ यह रूप धारण कर लेता है और शरीरकी त्वचा रङ्ग-बिरङ्गे दागोंसे भरी जाती है, इस ढङ्गकी बीमारियोंके नमूने हैं।

इस अवस्थाके साथ-ही-साथ रहनेवाले मानसिक लक्षण भी मजेदार होते हैं। मैंने इस सम्बन्धमें जो लिख रखा है, उसे पढ़ता हूँ। रोगी जाग रहा है, पर उसका मन मानो स्वप्नमें है। बच्चा हर समय रोता है, अपने चारों ओर चूहेकी तरह छोटे-छोटे जन्तु दौड़ते देखता है। उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो चूहा या कोई ऐसी ही छोटी चीज़ उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गोंपर रेंग रही है। स्मरण-शक्ति एकदम नष्ट-सी मालूम होती है, क्षणभर पहले कही हुई बात भी उसके दिमागसे निकल जाती है, हमेशा भूलता रहता है। पिछली समस्त घटनायें भूल जाती हैं, पिछली घटनायें या तो भूल जानेमें आती है अथवा इस तरह अनुभवमें आती है, मानो किसी दूसरेपर बीती हों या उन्हें रोगीने कहीं पढ़ा हो, उसकी स्वप्नवाली अवस्था रहती है। इसीलिये, ऐसा मालूम होता है, मानो पिछली घटनायें वह स्वप्नमें देख रहा है या उन्हें उसने स्वप्नमें देखा है। किसी मानसिक चेष्टामें अपना मन नहीं लगा

सकता, सवालोंका ठीक ठीक जवाब नहीं दे सकता, मानो वह अर्द्ध-चेतन अवस्थामें है और अन्तमें वह एकदम बेहोश हो जाता है। इन रस-रक्तके बिगड़नेकी आरम्भिक अवस्थामें बहुत चिन्ता और बेचैनी रहती है। इसके बाद सभी चीजोंके प्रति उदासीनता और बदहवासी आ जाती है। मन कमजोर, सुस्त पड़ जानेके साथ लगातार आहें भरा करता है, बहुत उत्तेजना-प्रवण, अर्द्ध-चेतन रहता है और अन्तमें बेहोश, बद-हवास, प्रलाप-ग्रस्त और अचैतन्य हो पड़ता है। नींद न आने और बेचैनीके साथ बुदबुदाकर प्रलाप बकता है। यह मानसिक अवस्था भीतर रस रक्त बिगड़ जानेवाली बीमारीमें ही होती है, मतलब यह कि पुरानी बीमारी अच्छी तरह बाहर प्रकट नहीं हुई है। डाक्टर वेल्सने इस दवाका बहुत-से रोगियोंपर प्रयोग किया था, क्योंकि उस समय ब्रोकलिन नगरमें यह आरक्त-ज्वरकी प्रचलित दवा हो रही थी और इससे बहुत-से रोगी बच गये थे। इसमें आरक्त-ज्वरके प्राणघातक भावको बदलकर धीमा बना देनेकी शक्ति मालूम होती है।

पाठ्य ग्रन्थमें लिखे लक्षणोंके अलावा यह देखा गया है, कि रोगीके केश झड़ जाते हैं और रातके समय पलक बन्द करनेपर आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ती दिखाई देती हैं। "आँखकी पुतलियाँ चौड़ी होकर फैल जाती हैं, नाकसे बहुत ज्यादा, पतला, कटु, पनीला और खूनका स्राव होता है। यह रस-रक्त बिगड़नेवाले आरक्त-ज्वरकी अवस्थामें होता है। नथुनोंमें रक्त भर जाता है, बहुत सुस्ती रहती है और चेहरा देखनेसे ही मालूम होता है, कि रोगीको बहुत कष्ट है। चेहरा महागनीकी तरह काला हो जाता है।" यह भीतर दबे हुए आरक्त ज्वरमें होता है। चेहरा बैंगनी, फूला-फूला, भर्राया और उन्मत्तोंकी तरह रहता है। इस दवाका बहुत अधिक व्यवहार नहीं होता। इसके लक्षणवाले रोगी भी अकसर नहीं मिलते, पर जब इसके निर्देशक लक्षण मिलते हैं, तो बहुत फायदा करती है। मारात्मक आरक्त ज्वरमें भी अकसर इस खास तरहकी श्रेणी आपको न दिखाई देगी। ऐसा आरक्त ज्वर आपको कितनी ही अन्य दवाओंमें भी दिखाई देगा, पर यह दवा एकदम मारात्मक श्रेणीके आरक्त ज्वरकी है और इसका साधारण व्यवहार तो उसी बहुव्यापक आरक्त ज्वरमें होता है, जिसमें अधिकांश रोगियोंको प्राणघातक श्रेणीका आरक्त ज्वर होता है। साधारणतः आरक्त ज्वर तीन प्रकारका होता है। एकमें आप देखेंगे, कि इसका आक्रमण हल्का

सरल होता है। इसके उद्भेद सब निकल आते हैं और बिना जोरका बोखार आये ही ये निकल आते हैं। अच्छी तरह अगर इन रोगियोंकी सेवा-सुश्रूषा की जाये, गर्म कमरा और भरपूर कपड़े दिये जायें, तो ये बिना किसी दवाके ही आराम हो जाते हैं। इनके शरीरका चमड़ा चमकीला लाल, चिकना और उज्ज्वल रहता है, ऐसे रोगी विपज्जनक नहीं होते। यही बीमारी जब किसी दूसरी बार फैली हो, तो आप देखेंगे, कि इस ढङ्गके रोगी तो शायद ही एकाध मिलें, पर अधिकांश रोगियोंमें कण्ठकी तकलीफ वर्त्तमान रहेगी, उद्भेद निकलेंगे भी तो बहुत कम, माथेमें रक्त-सञ्चय तथा मेरुदण्डके लक्षण वर्त्तमान रहेंगे तथा गर्दनके पिछले भागमें दर्द भी मौजूद रहेगा। कण्ठ भयानक रूपसे फूला और प्रदाहित, दर्दसे भरा और चमकीला लाल रहेगा। तीसरे ढङ्गके आरक्त ज्वरमें कण्ठ भयानक रूपसे फूल जाता है, सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें सूजन आ जाती है तथा ग्रन्थियोंके बढ़ जानेके साथ-ही-साथ रोगकी समूची गति खून जहरीला हो जाने या रस-रक्तमें विकार हो जानेकी ओर रहती है। शरीरकी त्वचा फूली-फूली रहती है और बहुत दुर्गन्ध आती है, चमड़ा कालापन लिये हो जाता है और शरीरपर दाने बहुत कम निकलते हैं, कभी-कभी तो आरम्भसे अन्ततक भी शायद ही कहीं दिखाई देते हैं। यदि इन रोगियोंको बिना चिकित्साके छोड़ दिया जाये, तो अवश्य ही मर जायँगे। ये बड़े भयङ्कर प्राण घातक आक्रमण होते हैं। इस लेखकोंने इन्हें "सरल आरक्त-ज्वर" (Scarlatina simpler), "कण्ठ-दोष-पूर्ण आरक्त-ज्वर" (Scarlatina anginosa) और "मारात्मक आरक्त ज्वर" (Scarlatina maligna) नामकरण किया है। जिस समय यह बहु-व्यापक-रूपमें फैलता है, उस समय किसी परिवारमें तीनों ही श्रेणियोंका और किसीमें दो श्रेणीका आरक्त-ज्वर दिखाई देता है। एक बच्चेको हलके ढङ्गका दूसरेको उससे कठिन रस-रक्त बिगड़ जानेवाले ढङ्गका आक्रमण होगा, जिसमें शरीरपर इधर-उधर और अङ्गुलियोंके सिरेपर छाले निकल आयेंगे, इनसे बदबू आयेगी। यदि बच्चा ज्यादा दिन जी जाता है, तो ज्योंही छाले फटते हैं, जखम होना आरम्भ हो जाता है, पर ये मरनेवाले रोगी हैं, प्राण-घातक ढङ्गका रोग है। हलके आरक्त ज्वरमें जब उद्भेद नहीं भी निकलते, उस समय भी अंगुलोसे दबानेपर एक सफेद दाग पड़ जाता है, जो जल्दी नहीं मिलता। जितना ही ज्यादा दाग पड़ता है, उतने ही हल्के ढङ्गका आक्रमण होता है।

जितना ही रस-रक्त बिगड जानेवाले ढङ्गका होता है, उतना ही धीमा खूनका दौरान होता है और इस दवामें खासकर यही अवस्था वर्त्तमान रहती है। उद्भेद अर्थात दाने न निकलनेपर भी चर्मके रक्त सञ्चयकी अवस्था और शिराओंमें रक्त-सञ्चयकी अवस्था तो मौजूद ही रहती है। यह लक्षण बहुत-सी दवाओंमें है; पर **बेरेट्रम-विरिडि** रक्त-वाहिनियोंकी सिकुडने और फैलानेकी शक्तिमें इस तरह पक्षाघात हो जाता है, कि चर्मपर कसकर अंगुलीसे एक लकीर खींच दी जाये, तो बहुत देरतक वह बनी रहती है। इन सभी रस-रक्तकी विकृतिवाले रोगोंमें एक तरहकी बदबू आती है, जो कभी-कभी तो मुर्देकी गन्धकी तरह होती है और कभी बदबूदार मांसकी तरह होती है। यह लक्षण निम्न-श्रेणीके रोगमें मिलता है और वहाँ यही दवा लाभ करती है।

कण्ठ बहुत फूला, कालिमा लिये लाल, करीब-करीब बैंगनी रङ्गका रहता है। बहुत ज्यादा सुस्तीके साथ डिफ्थीरिया, कण्ठ बदरङ्ग और सूजा हुआ तथा तालुमूल-ग्रन्थि बढी रहती है और उसपर गहरे जखम रहते हैं।" अकसर तो कण्ठ और तालुमूल-ग्रन्थि इस तरहकी, शोथ-ग्रस्तकी तरह मालूम होती है, मानो उन्हें दबानेपर उनपर गड्ढा पड जायगा। रस-रक्त बिगड जानेवाले कुछ रोगियोंको, जब प्रतिक्रिया होनेका समय आता है, तो बहुत बदबूदार पतले दस्त आने आरम्भ हो जाते हैं। रोगका चाहे कोई भी नाम क्यों न हो, इन रस-रक्तके विकारकी अवस्थाओंके साथ गर्दनके पिछले भागमें और सरमें दर्द होता है।

"श्वास-प्रश्वास जल्दी-जल्दी, अनियमित और भारी रहता है। तलहत्थी तथा तलवेमें जलन होती है, रोगी उन्हें रखनेके लिये ठण्डी जगह खोजा करता है। ऐसा अनुभव होता है, मानो एक चुहिया पैरसे दौड गयी, कोई साँप पैरपर रेंग गया।" मेरे परीक्षकोंमेंसे एकमें ये लक्षण उत्पन्न हुए थे। धीमी बहुत कमजोर करनेवाली बीमारियोंमें एकाएक और बहुत ज्यादा सुस्ती आ जाती है। "वमन, नाडी क्षुद्र और तीव्र तथा चमडा बैंगनी हो जाना" ये लक्षण प्रकट होते हैं। "मस्तिष्कसे लेकर हाथ पैर शाखा अङ्गोंतक बिजलीकी एक लहर-सी कपकपी मालूम होती है।" "सवेरे ८ बजेके वक्त सर्दी मालूम होती है, इसके साथ ही जाडा, ताप और पसीना।" जाडा मालूम होनेके समय खाये हुए पदार्थकी कै होती है और कूल्हेमें बेधनेकी तरह दर्द होता है, जाडा मालूम होनेके पहले मारात्मक गोटियाँ निकल आती हैं, ये खासकर चेहरे

लिये तैयार रहता है, यदि आप सुनें, अध्ययन करें और काफी समयतक अपेक्षा करें।

ऐलियम सेपा।

(Allium Cepa)

ऐलियम सेपाका प्रयोग विशेषकर 'सर्दी' के लिये होता है। इन सर्दियोंके बहुतसे दृश्य हैं, नाककी सर्दी, कण्ठकी सर्दी, स्वर-यन्त्रकी सर्दी, श्वासोपनलियोंकी सर्दी। रोगी तथा उसकी सर्दीके सभी नज़ारे—उसकी नाककी सर्दीका स्राव, उसका स्वर-यन्त्र-प्रदाह, उसकी खाँसी तथा उसकी सारी शिकायतें, गर्मीसे बढ़ जाती हैं, गर्म कमरेमें बदतर रहती हैं, सिर्फ स्वर-यन्त्रकी सुरसुरी नहीं बढती, बल्कि यह सर्द हवा भीतर खींचनेपर बढती है। इस तरह कभी-कभी ठण्डी हवासे खाँसी भी उत्तेजित हो जाती है, लेकिन रोगीको स्वय ठण्डी हवामें आराम मालूम होता है और गर्मी सहन नहीं होती। नाककी सर्दीका स्राव, सर्दी और सार्वाङ्गिक लक्षण—प्राय: अधिकांश लक्षण सन्ध्याके समय बदतर हो जाते हैं। ऐलियम सेपाके ये दो बहुत ही निर्देशक स्वरूप हैं।

यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि वृद्धा स्त्रियाँ कानमें दर्द होनेपर, कानपर प्याज बाँध देती थीं और जब कण्ठमें दर्द बना रहता, तो गर्दनके चारों ओर प्याज बाँधती थीं, क्योंकि प्याज प्राय: सभी जलवायुमें सर्दीका प्रभाव दूर करनेके लिये अकसर उपयोगी होता है। किसी भी ऋतुमें, सर्द, तर, बेधनेकी भाँति तेज़ हवा, ऐलियम सिपाके उपसर्ग—नाकसे सर्दीका स्राव, ला ग्रिपी (एक तरहका मारात्मक इन्फ्लुएञ्जा), इन्फ्लुएञ्जा या चाहे इसका जो कुछ नाम भी क्यों न हो, प्रभृति पैदा कर सकती है। ऐलियम सिपाके उपसर्गोंके साथ अकसर रक्त-सञ्चयसे उत्पन्न सर-दर्द हो जाता है। नाकमें जखमकी तरह मालूम होता है, आँखोंसे बहुत ज्यादा पानी निकलता है। यह हमेशा स्निग्ध होता है। नाकसे भी बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव होता है, यह जहाँ लगता है, वहाँकी खाल उधड जाती है। कण्ठ तथा स्वर-यन्त्रमें जखमका भाव, यह छातीतक फैल जाता है। नाकमें जखमकी तरह

हो जाना, चौबीस घण्टोंमें ही यह स्वर-यन्त्रमें जा पहुँचता है। स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी होनेके कारण तथा रातमें गर्म कमरेमें लेटनेपर खाँसी आने लगती है। रातमें सोनेके समय ऐलियममें लक्षणोंकी बहुत कष्टकर वृद्धि हो जाती है। मैंने रोगियोंको खाँसते समय स्वर-यन्त्रके दर्दका वर्णन करते सुना है। वे कहते हैं, कि ऐसा मालूम होता है, मानो प्रत्येक बार खाँसनेके समय कोई अंकुसीसे नीचेकी ओर खींचता है। प्रत्येक बार खाँसनेके समय स्वर-यन्त्रमें फाड़नेकी तरह दर्द होता है। छींक, सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जखमकी तरह दर्द और फाड़नेकी तरह खाँसी, ये सभी लक्षण गर्म कमरेमें और शामको बदतर हो जाते हैं। यह आश्चर्यकी बात है, कि प्याज किस तेजीसे इस "सर्दी" को दूर भगा देता है।

अब हम इस सर्दीके स्रावकी विशेषताओंपर विचार करते हैं। आरम्भका लक्षण तो यह है, कि बहुत ज्यादा छींके आती हैं। छींककी तेजी बढ़ती ही जाती है। बराबर नाकसे पानी चुआ करता है। आगकी तरह जलन होती है, जिससे ऊपरी ओठका मांस और नाककी दीवारकी खाल उधड़कर जखम और लाली आ जाती है। यहाँ ध्यान देनेकी बात है, कि नाकसे जो पानी चूता है, उससे तो खाल उधड़ जाती है, पर आँखसे निकलनेवाला पानी कोमल होता है। इसे ख्याल रखिये, क्योंकि जब हम **इयुफ्रेशिया**का अध्ययन करना आरम्भ करेंगे, तो ठीक इसके विपरीत लक्षण मिलेगा। हमें नाकसे ठीक इसी तरहका पानीकी तरह स्राव उसमें भी होता दिखाई देगा और इसी तरहका बहुत ज्यादा आँसू भी बहता मिलेगा, पर इसका आँसू कटु, खाल उधेड़नेवाला और नाकका स्राव कोमल होता है। सेपाका नाकका स्राव ऊपरी ओठपरके केशोंको साफ़ कर देता है और रक्त-सञ्चय इतना अधिक रहता है, कि रोगीकी नाकमें एकदम भरापन मालूम होता है, उसमें टपक और जलन होती है और कभी-कभी नाकसे रक्तका स्राव भी होता है। जबड़ोंकी राहसे चेहरेमें दर्द होता है, यह दर्द सरतक फैल जाता है। धीमा कपालका दर्द, आँखोंके ऊपर होनेवाला सर-दर्द, सर-दर्द बहुत तेज़ होता है और आँखे रोशनी सहन नहीं कर सकती है। माथेमें फाड़ने, फटने और टपककी तरह दर्द होता है।

इस औषधिका एक दूसरा दृश्य भी है। मैं नहीं जानता कि इसकी बीमारी क्यों बायीं तरफ पैदा होकर दाहिनी ओर चली जाती है, पर हमेशा

मार देते हैं, उनको दवा **कैमोमिला** है। **पल्सेटिला, कैमोमिला** और ऐलियम सेपासे आप अधिकांश बच्चोंका कानका दर्द आरोग्य कर सकते हैं।

अब ऐलियम सेपाकी सर्दीके साथ होनेवाले आँखोंके लक्षणपर ध्यान दीजिये। *याद रखिये, कि आँखसे जो स्राव होता है, वह मृदु होता है।* आँखोंमें जलन तो होती है, पर गालपर ढुलक पडनेवाले आँखके आँसू खाल नहीं उधेड देते। बहुत ज्यादा और मृदु प्रकृतिके आँसुओंका स्राव होता है, गर्म कमरेमें और शामके वक्त आँसुओंका स्राव ज्यादा होता है।

हम सभी जानते हैं, कि प्याज कितना वायु-पूर्ण उद्भिद है। बच्चोंके शूलके दर्दकी यह एक अचरजभरी दवा है। काटने, फाडने, भेदनेकी तरह दर्दके कारण बेचारा बच्चा करीब-करीब दोहरा हो जाता है, तलपेटमें भयानक दर्दके कारण वह चीखता है। "तलपेटमें सुई वेधनेकी तरह दर्द।" "शूलका दर्द, *यह यकृतकी जगहपर आरम्भ होता है और समूचे तलपेटमें फैल जाता है।* नाभीके पास तो बहुत जोरका रहता है और बैठनेपर बहुत बढ जाता है। वायु-शूल। कुकुर खाँसी (हुपिङ्ग खाँसी) की ऐलियम सेपा एक आश्चर्यजनक दवा है। इसके रोगी बच्चोंको अजीर्ण, वमन और पेटमें अफराका लक्षण रहता है, बदबूदार हवा खुलती है, शूलके दर्दके कारण वह दोहरा जाता है। ऐलियम सेपासे बच्चोंके मलद्वारका फटना और स्पर्श सहन न होना तथा रक्त-स्राव होना भी आरोग्य हो जाता है।

आवाजकी नयी बीमारियाँ, श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहके कारण स्वर-भङ्ग, स्वर-यन्त्रसे बहुत ज्यादा बलगम निकलता है, बहुत तेजीसे स्वर-यन्त्रमें जोरका प्रदाह हो जाता है, साथ ही जैसी बतायी है, वैसी खाँसी और स्वर-यन्त्रमें फाडनेकी तरह दर्द रहता है। कोई-कोई तो इसका वर्णन इस तरह करते हैं, कि मानो ऐसा अनुभव होता है, कि कोई चीज़ अटक आयी है। जो इससे भी अधिक ठीक बताते हैं, वे कहते हैं, मानो प्रत्येक बार खाँसनेके समय स्वर-यन्त्रकी राहसे कोई अकुसी खीची जा रही है। स्वर-भङ्गके साथ स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी, हुपिङ्ग-खाँसीमें भी स्वर-यन्त्रमें उसी तरहका दर्द-भरा रहता है। बच्चा हिलता और थर-थर काँपा करता है। आप यह देखकर ही समझ सकते हैं, कि स्वर-यन्त्रमें फाडनेकी तरह दर्द होनेके कारण यह खाँसनेसे डरता

है। श्वासके साथ ठण्डी हवा भीतर जानेके कारण खाँसी और श्वासमें तकलीफ़ होती है, पर गर्म हवा भीतर जाती है, तो सुरसुरी इतनी बढ जाती है, कि रोगीको बाध्य होकर खाँसना ही पडता है। इस तरह गर्म कमरा और ठण्डी हवा—दोनों तरहसे ही खाँसीकी वृद्धि होती है। कभी-कभी तो सर्दीका दौरा श्वासोपनलियोंपर भी हो जाता है, इस हालतमें बोखार आ जाता है और नाडीकी गति तेज़ हो जाती है। अगर स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी हो, ठण्डी हवा खींचनेसे खाँसी आती हो, गर्म कमरेमें और शामके वक्त खाँसी बढती हो, साथ ही स्वर-यन्त्रमें फाडनेकी तरह दर्द होता हो, तो ऐलियम-सेपा अवश्य आरोग्य कर देगा। खाँसी आक्षेपिक होती है और बहुत-कुछ क्रूप (कालो खाँसी) या हूपिङ्ग खाँसी (कुकुर खाँसी) की तरह होती है। क्रूपकी खाँसीके लिये तो सेपाने अपना इतिहास छोड रखा है। बच्चेको क्रूप हो जानेपर हुवाएँ कण्ठपर प्याज बांध देते हैं और इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि जङ्गली बस्तियोंमें, जहाँ चिकित्सक नहीं मिलते, एलोपैथिक चिकित्साकी अपेक्षा यह कहीं ज्यादा फायदा करता है।

"हेरिङ्गके गाइडिङ्ग सिम्पटम्स" से इसका एक सुन्दर विवरण उद्धृत किया जाता है।—"रूखी, कर्कश, टनककी आवाज़, आक्षेपिक खाँसी, यह स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी होकर आने लगती है, खाँसीके कारण स्वर-यन्त्रमें जखम तथा चीरने-फाडनेकी तरह इतना तेज़ दर्द पैदा हो जाता है, कि रोगीको कष्टसे झुका देता है और उसे खाँसी रोकनेके लिये सब तरहकी चेष्टाएँ करनी पडती हैं।" बहुत जोरकी स्वर-यन्त्रकी खाँसी, जिससे रोगीको बाध्य होकर हाथसे अपना कण्ठ पकड लेना पडता है, ऐसा अनुभव होता है, मानो खाँसीके कारण स्वर-यन्त्र फट जायगा। बच्चा स्वर-यन्त्रको दबाकर पकड रखता है। यह **एकोनाइट**के लक्षणसे बिलकुल ही अलग है। उसमें बच्चा सूखी ठण्डी हवा लगकर, कुत्ता भूँकनेकी तरह खाँसीके साथ आधी रातके समय जाग पडता है और स्वर-यन्त्रको पकड लेता है। इसीलिये ऐलियम सेपाके बदलेमें **एकोनाइट**का प्रयोग नहीं हो सकता।

एक दूसरा उपसर्ग भी है, जिसपर यह दवा आश्चर्यजनक-रूपसे कार्य करती है अर्थात चोटके कारण अगर स्नायु-प्रदाह हो जाये और अकसर नश्तर लगवानेके बाद जो छिन्नाग्र रह जाता है, तो इस उपसर्गपर भी यह बेतरह

साधारणत' तलपेटमें ही दर्द होता है। शूलकी तरह दर्द, तलपेटमें वायु-शूल, जो उसे जीवनसे निराश बना देता है। शूलका आक्रमण होनेपर वह अत्यन्त उपद्रावित और उत्तेजित हो उठता है। एक छोटा-सा आश्चर्य-जनक लक्षण है—"लोगोंसे घृणा करता है, सबको दूर हटा देता है।"

आँतोंकी बीमारोके समय मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय, एक प्रकारको शिराओंके रक्तकी रुकावट है, जैसा कि यकृतो-संस्थानमें होता पाया जाता है। "ललाटका सर-दर्द।" "सर-दर्द गर्मीसे बढ जाता है और सर्द प्रलेपसे घटता है। गर्मी से बढना और सर्दी से घटना ऐलोमें बराबर रहता है। इसका रोगी ठण्डे घरमें रहना चाहता है, उसे गर्मी और दाह मालूम होती है, उसकी त्वचा अकसर गर्म और सूखी रहती है, रातमें बिछावनपर खुला पड़ा रहना चाहता है, हाथ-पैरोंमें जलन होती है, हाथ गर्म और पाँव ठण्डे रहते हैं या हाथ ठण्डे और पैर गर्म रहते हैं। यह पर्यायक्रमसे होता है। उसे माथा गर्म मालूम होता है और उसपर कोई ठण्डी चीज़ रखना चाहता है। यह उस स्थानकी गर्मीके कारण होता है, ज्वर नहीं रहता, शरीर-पटलपर गर्मीकी अनुभूति, रक्त-सञ्चयका भाव और समस्त शरीर-पटलमें भरापन मालूम होना, भरापन और सूजी हुई शिराएँ समस्त शरीरपर रहती हैं। इस दवामें रक्त स्राव एक साधारण बात है। नाकसे, आँतोंसे, मूत्राशयसे, गैरिक (कालिमा लिये) रक्त स्राव होता है। शिराएँ रक्तसे भर जाती है और त्वचा गर्म हो उठती है। शरीरके द्वारोंमें बहुत गर्मी, आँख, मुँह, कण्ठ गर्म और जलते हुए रहते हैं। इसमें मल-द्वारमें सूखापन, जलन और खाल उधेड देनेके भावका भी लक्षण है।

"खाने-पीनेके सम्बन्धमें" हम देखते हैं, कि "खानेके बाद ही तलपेट गुड-गुडाने लगता है।" पतले दस्त आनेपर भी, यहाँतक कि कल रहनेपर भी, खाने पीने बाद आँतोंमें शूलका दर्द होने लगता है।

पुराने बियर नामक शराब पीनेवालोंके रोगोंमें यह दवा फायदा करती है। बियर पीनेके कारण पतले दस्त आने लगना। जिन मनुष्योंको प्रत्येक बार बियर नामक शराब पीनेके कारण पतले दस्त आने लगते है, आप देखेंगे, कि ऐलोके लक्षण उनमें अधिकांश मिलते हैं, पर कभी-कभी कैलि-बाइक्रोमके भी लक्षण मिलते हैं, क्योंकि ये दोनों दवाएँ उनके पाकाशय और उदरके लक्षणोंसे बहुत सादृश्य रखती है। "पाकाशयमें दबावके साथ ओकाई।"

कैशिकाएँ तथा शिराओंमें रक्त-सञ्चय-प्रवणताका यह एक दूसरा उदाहरण है— "रक्तकी कै" और आँतोंसे रक्त आना।

यकृत-प्रदेशमें बहुत दर्द, जलन और गर्मी प्रभृति मालूम होते हैं, अधिककर दाहिने कुक्षिदेश (कोख) आपको तनाव और भरापन मालूम होता है। यह विशेषकर यकृतकी दवा है। यह सलफरकी तरह गहराईतक काम करनेवाली नहीं है। आप अकसर देखेंगे, कि ऐलो एक आराम पहुँचानेवाली दवाके रूपमें काम करता है, पर इसके बाद **सलफर, सलफरिक-एसिड, कैलि-बाई-क्रोम या सीपिया**का प्रयोग करना पड़ता है। ये दवाएँ इसकी अनुपूरक हैं और ऐलोकी क्रियाको पूरा कर देती हैं। यकृतकी बीमारियोंमें अगर यकृतकी जगहपर बहुत भरापन तनाव, डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम हो तथा शरीरकी त्वचा सूखी, गर्म जलती हुई-सी हो पर तापमान-यन्त्र (थर्मामिटर) में ताप बढ़ा हुआ न दिखाई दे, तो ऐलो आरम्भमें बहुत अच्छा फायदा दिखायगा। ऐलोमें कुछ बोखारका लक्षण भी है, पर चमड़ेकी गर्मी और सूखापनका यह भाव ज्वरके बिना ही होता है और उस ढङ्गका होता है और जैसा सोरा रोग-ग्रस्त रोगियोंमें दिखाई देता है। इसकी अच्छी तरह परीक्षा नहीं हुई है, इसीसे अच्छी तरह पता नहीं लगा है, कि ऐलोमें किसी तरहके उद्भेद निकलते हैं या नहीं, पर परीक्षामें यदि ऐसा प्रमाणित हो जाये, तो यह भी सोरा-नाशक दवाओंमें आ जायगा। यद्यपि यह **सलफर**की भाँति गहरी, बहुत दिनोंतक क्रिया करनेवाली तथा धातुगत परिवर्त्तन लानेवाली दवा नहीं है, तथापि **एकोनाइट** और **बेलेडोना**की तरह लघु-क्रियाशील औषधि भी नहीं है। इसमें रोग साधारण तेजीसे उत्पन्न होते हैं। **ब्रायोनिया**से इसका सम्बन्ध उत्तम रूपसे स्थापित किया जा सकता है। **सलफर**की भाँति **ब्रायोनिया** जीवनी-शक्तिपर इतनी गहराईतक काम नहीं करती।

उदरका सबसे बढ़कर ध्यान देनेका स्वरूप इस दवाका है, उसका भरापन, तनाव और गुड़गुड़ाहट। ऐसा मालूम होता है, मानो तलपेट भर जायगा और गड़गड़ाहट इतनी ज्यादा रहती है, कि उस कमरेमें रहनेवाला हर शख़्स सुन सकता है। इसमें लगातार गुड़गुड़ाहट रहती है, पेट गुड़गुड़ाकर जोरकी गड़गड़ाहटके साथ दस्त आते हैं, मानो किसी छिद्रसे पानी गिर रहा है। पूर्वके लेखकोंने इसे फड़फड़ाकर दस्त आना लिखा है, क्योंकि

जिस समय दस्त होता रहता है, उस समय बहुत वायु निकलता है, जिससे गुडगुडाहट और यह फडफडाहट होती है। बहुत सा वायु निकल जानेपर भी तलपेट ज्यों-का-त्यों तना मालूम होता है। किसी तरह आराम नहीं मिलता, दर्द अकसर तलपेटको पारकर कून्हेके पास होता है। बहुत तनाव मानो अनुप्रस्थ वृहत्-अन्त्र (बडी आँतका आडा हिस्सा) के पास फट जायगा तथा ऊर्द्धगामी और अधोगामी वृहदन्त्रमें भी ऐसी ही अवस्था रहती है। दर्द, गुडगुडाना, गडगडाना, भार और बाहरकी ओर दबाव मालूम होता है। ऊपरी तलपेट और नाभीके चारों तरफ ऐंठन और पीसनेकी तरह दर्द होता है, जिससे बाध्य होकर रोगीको झुककर बैठे रहना पडता है। इस तरह उसे आराम मिलता है। "तलपेटमें कमजोरी मालूम होना, मानो पतले दस्त आयँगे।" कभी-कभी तो इतनी ज्यादा कमजोरी रहती है, इतनी ज्यादा कि उसे बिछावनपर पडे-पडे पाखाना जाना पडता है। इस समय इतनी ज्यादा सुस्ती रहती है, कि अकसर **पोडोफाइलम**के लक्षणका भ्रम हो जाता है। **पोडोफाइलम**में भी बहुत तनाव, भयानक वेग, अत्यधिक आध्मान-वायु तथा आँतोंमें जोरकी गडगडाहट रहती है और बीमारी ४ बजेसे सवेरे उत्पन्न होती है। ऐली इस जगहपर भी **सलफर**के सदृश है, क्योंकि इसके रोगीको भी बिछावन छोडकर तडके ही दौडते हुए पाखाने जाना पडता है और पतले दस्त आते हैं और ऐसा भी अकसर होता है, कि रोगीको अपने पैर ठण्डे रखनेके लिये ओढनेसे बाहर निकाल रखना पडता है। तलवेमें जलन होती है, इसलिये रोगी उन्हें खोले रखता है। तलपेटमें पीसनेकी तरह दर्द, तलपेटमें कमजोरी मालूम होना। "समूचा तलपेट खासकर उसका पार्श्व-देश—नगलका हिस्सा और नाभीके दोनो ओर दर्दसे भरा रहता है।" उदर इतना स्पर्श-असहिष्णु कि उसे किसी भी स्थितिमें आराम नहीं मिलता। "सर्दी लग जानेके बाद धीमा, तलपेटका दर्द, यह सवेरे और शामको, दोनों ही वक्त बार-बार होता है।"

अब कुछ ऐसे औदरिक लक्षण भी हैं, जिनका सम्बन्ध स्त्रीसे है, न कि अतिसारसे। "ऐसा मालूम होता है, मानो विटप-उपस्थास्थि-सन्धि (पेडूकी हड्डियाँ जहाँ जुडी है) और गुदास्थिके बीचमें एक ठेपी अडी हुई है।" "पुट्ठे और कमरमें प्रसवकी तरह दर्द होता है, जो खडे रहनेपर बढ जाता है।

बहुत दिनोंकी पुरानी जरायुकी स्थान च्युतिकी बीमारीको, जब उसमें भरापन मालूम होनेका भाव, शरीर-पटलमें गर्मी, सवेरेके वक्त पतले दस्त, जरायुमें नीचेकी ओर खिचाव और गुदास्थि तथा विटप उपस्थास्थि-सन्धिके बीचमें ठेपो लगी रहनेका भाव था, ऐलोने इसे आरोग्य कर दिया। जरायुका दबाव बाहरकी ओर रहनेके कारण ही ऐसा अनुभव होता है। इस तरहका नीचेकी ओर खिचाव मालूम होता है, मानो वस्ति-गह्वरका समस्त अंश बाहर निकल पड़ेगा। वस्ति गह्वरमें और योनि पथमें एक फोंफी रहनेकी तरह अनुभव होना।

"पाखाना लगता है, पर केवल गर्म वायु निकलता है, इससे कुछ आराम मिलता है, पर फिर पाखानेका वेग हो जाता है।" मतलब यह है, कि इससे बाध्य होकर रोगीको पाखाने जाना पड़ता है, पर पाखाना जानेपर सिर्फ हवा छूटती है। पुराने रोगियोंके लिये— उनके लिये जिन्हें कब्ज रहता है, जिन्हें कई दिनोंतक पाखाना होता ही नहीं, पर रह-रहकर मालूम होता है या दिनमें कई बार उन्हें पाखाने जाना पड़ता है, पर केवल थोड़ी-सी हवा छूटती है, पाखाना नहीं होता, उनके लिये यह लाभदायक है। **नेट्रम-सल्फ** साधारणतया इस अवस्थाको दूर कर देगा। "थक्का थक्का, पानीकी तरह दस्त।" यह ऐलोका एक प्रधान-स्वरूप है, पतले पानीकी तरह दस्तके साथ कड़ी गाँठे निकलती हैं। पानी-जैसे दस्तके साथ मलके थक्के निकलते हैं या पतले दस्तके साथ, छोटे छोटे कड़े थक्के गोलियाँ या भेड़की मींगीकी तरह दिखाई देते हैं। कब्ज होनेपर मल ढेलेकी तरह या गोलियोंकी तरह होता है। कभी-कभी तो ये गोलियाँ मलनालीमें बहुत देरतक पड़ी रहती है और पाखाना भी नहीं लगता और अन्तमें ये अनजानमें निकल जाती है और वस्त्रमें मिलती है। मल-द्वारमें किसी तरहकी अनुभूति नहीं होती, एकदम अनुभूति-राहित्य या स्पर्श-लोप रहता है। पाखाना होते समय किसी तरहकी अनुभूति नहीं रहती।

ऐलोकी बहुत-सी तकलीफें आमाशयकी प्रकृतिकी होती है, साथ ही मलान्त्र और बड़ी आँतके नीचेवाले हिस्सोंमें प्रदाहकी अवस्था रहती है। खून तथा पीली चाशनीकी तरह आम निकलती है। कभी-कभी तो ऐलोके रोगीको श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह बतानेवाली बहुत-सी चाशनीकी तरह आमके सिवा और कुछ नहीं निकलता। बवासीरकी चिकित्सामें भी ऐलोको न भूलना चाहिये। इसका मसा अंगूरके गुच्छेकी तरह होता है। "मल-द्वारमें

इतनी खुजली और दर्द होता है, कि नींद नहीं आती।" रोगीको बाध्य होकर अपनी अगुली मलद्वारमें डालकर खुजलाना पड़ता है। इतने जोरकी खुजली होती है, कि रोगी ऐसा किये बिना रह नहीं सकता, मालूम होता है, कि वह खुजलीसे पागल हो जायगा। सिर्फ कोई ठण्डी चीज़ लगानेसे उसे कुछ आराम मिलता है। ऐलोका एक साधारण लक्षण यह है, कि मरहमोंसे जलन बढ़ जाती है। मरहम लगानेके बाद जखमके चारों तरफके चमड़ेमें ज्यादा जलन हो जाती है। सलफरका रोगी भी किसी तरहका मरहम बर्दाश्त नहीं कर सकता, यह उसके लिये ज़हरका काम करता है और शरीरपर उद्भेद निकल आते हैं।

जहाँ कहीं कोई श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाह-ग्रस्त हो जाती है, वहीं चाशनीकी तरह गाढ़ा श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है। अगर किसी जगहपर जखम या छालोंकी तरह दाग या प्रादाहित स्थान हो जाता है, तो गाढ़ी, चाशनीकी तरह श्लेष्माकी पपड़ियाँ, करीब-करीब चमड़ेके बराबर मोटी उतार ली जा सकती हैं। कभी-कभी मलान्त्रके निचले हिस्सेकी यही हालत हो जाती है और रोगी कहता है, कि चाशनीके ढेलेकी तरह पाखाना होता है। **ग्रैफाइटिसमें** यक्ष्मेकी तरह मलमें, ऐसा मालूम होता है, मानो उसपर अण्डेकी सफेदी लिपटी हुई है। कभी-कभी पाखाना होनेके पहले, ऐलोके रोगीको अन्दाजन चायके प्यालेभर गाढ़ी चाशनीकी तरह आम निकल पड़ती है, जो उसके मलान्त्रके निचले भागमें भरी रहती है। लक्षण मिलनेके कारण ऐलोने एक स्ट्रिकचर—मलनालीके सङ्कोचनकी बीमारी आरोग्य कर दी। इस मलनालीके सङ्कोचनने सभी मलका मलद्वारके पास आना रोक दिया था, लेकिन मलनालीमें दिनमें तीन-चार बार आम भर जाती थी और रोगीको बाध्य होकर चाशनीकी तरह बहुत-सी आम पाखानेमें निकालनी पड़ती थी, निकला हुआ मल एक नलीके आकारसे ज्यादा मोटा न होगा। कहा जाता है, कि हमारी दवाएँ सङ्कोचनों (strictures) को आरोग्य नहीं कर सकती, पर वे सङ्कोचनोंको आरोग्य तो करती हैं, यदि वे रोगीको आरोग्य कर सकती है, तो प्रकृति आश्चर्यजनक-रूपसे समस्त प्रादाहिक तन्तुओंको और नलियोंको स्वाभाविक अवस्थामें ला देती है। मलद्वार और मलनालीके सङ्कोचनोंमें ऐसा होता तो कितनी ही बार देखा गया है।

ऐल्यूमेन।

(Alumen)

एल्यूमिनाकी तरह, यह दवा भी पेशियोंकी एक तरहकी विचित्र पाक्षाघातिक दुर्बलता, एक तरहकी बलकी कमी, शरीरके सभी भागोंमें उत्पन्न कर देती-सी मालूम होती है। हाथ-पैरोंमें कमजोरी मालूम होती है, खासकर यह कमजोरी मलान्त्र और मूत्राशय (मसाना) में ज्यादा अनुभव होती है। मलान्त्र और बड़ी आँतमें अपने भीतरकी सामग्री बाहर निकालनेकी शक्ति न रहनेके कारण मल जमा होता जाता है। मसानेकी क्रिया भी धीमी होती है और पेशाब भी बहुत मुश्किलसे निकाला जाता है। पेशाब कर लेने बाद भी मसाना करीब करीब आधा पेशाबसे भरा रहता है। पेशाब बहुत धीमी धारसे निकलता है और जब रोगी पेशाब करनेके लिये बैठता है, तो पेशाब **हौपर**की तरह, सीधा टपका करता है, इसीसे इसमें धीमो—शिथिल क्रियाका पता लगता है। यह पाक्षाघातिक अवस्था शिराओंतक जा पहुँचती है और नलियोंको फैलाने या सिकुड़नेवाले स्नायुओंका भी पक्षाघात (Vasomotor paralysis) हो जाता है।

इस दवामें एक दूसरी विचित्र दशा यह है, कि जिस किसी स्थानपर प्रदाह होता है, वहीं **कड़ापन आ जाता है**। जिस किसी दवामें ही यह प्रकृति रहती है, कुछ-न कुछ कर्कट रोगका (Cancer) सम्बन्ध उसमें रहता है, क्योंकि काठिन्य-प्रवणता (कड़ापन आ जानेकी प्रकृति) कर्कट-रोगका एक स्वाभाविक स्वरूप है। ऐल्यूमेनमें जखमका लक्षण है और यह कड़ापन जखमको ही सूचित करता है। कड़ी तलीवाले जखम या जिस किसी जगह खूनका दौरान कमजोर होता है, जैसे उपास्थिमय अर्शोंपर, वहाँ चमड़ेपर छोटी-छोटी पपड़ियाँ दिखाई देती हैं और एक बड़ा मोटा कड़ा ढेला-सा बन जाता है। इस पपड़ीके नीचे रस-स्राव हुआ करता है, पपड़ी उखड़ती जाती है और नलियोंको फैलाने और सिकोड़नेवाले स्नायुओंके पक्षाघातके कारण तन्तु सब कमजोर रहते हैं और जखम आराम नहीं हो पाता। ऐपिथि-लियोमा (Epithelioma) अर्थात उपत्वकका अर्बुद इससे अधिक कुछ नहीं

काम करना पड़ता है। ऐल्यूमिनने ब्रह्म-रंध्रके दबावकी तरह दर्द, एक ऐसे रोगीको आरोग्य कर दिया है, जिसे इस दर्दके साथ पर्यायक्रमसे होनेवाली बहुत ही कष्टदायक उपदाहित मसानेकी बीमारी थी।

"सरमें चक्कर आना, पीठके बल लेटनेपर, इसके साथ ही पाकाशय-गह्वरमें कमजोरी मालूम होना, आँख खोलने और दाहिनी करवट हो जानेपर रोग बढ़ जाना।" इस दवाकी एक दूसरी शकल और भी है,— **दाहिनी करवट लेटनेपर कलेजेमें धड़कन** होने लगती है। सबको ही यह लक्षण अद्भुत मालूम होगा, क्योंकि यह कलेजेकी धड़कन साधारणतः बायीं करवट लेटनेपर ही बढ़ जाती है, पर काँपता हुआ, बढ़ा या विशृङ्खलित हृत्पिण्ड अकसर बायीं करवट लेटनेपर और भी बदतर हो जाता है, क्योंकि उस समय हृत्पिण्डको जगह कम मिलती है, पर यही आश्चर्य, अप्राप्य और बेजोड़ लक्षण हो जाता है, जब ये लक्षण दाहिनी करवट लेटनेपर और भी बढ़ जाते हैं। यदि किसी रोगीमें ऐसा लक्षण रहे तो ठीक ऐसे ही लक्षणोंवाली दवाका चुनाव करना बहुत ही आवश्यक होता है। साथ ही यह भी देखनेमें आता है, कि जिस दवामें यह विचित्र लक्षण ठीक-ठीक मिल जाते हैं, उसीमें उस रोगीके अन्य लक्षण भी प्राप्त हो जाते हैं।

इनमें एक और भी लक्षण जोड़ देना चाहिये अर्थात समस्त शरीरकी **पेशियोंका धीमापन और ढीलापन,** सभी मांस-पेशियोंका सुस्त पड़ते जाना, बाहु और पैरोंमें कमजोरी मालूम होना।

कब्जकी बीमारीमें पाखाना लग सकता है, पर होता नहीं है या कई दिनोंतक पाखाना लगता ही नहीं है। मल निकालनेकी शक्ति ही नहीं रहती, रोगी बहुत देरतक काँखता है, पर होता कुछ भी नहीं है, अन्तमें कई दिन बाद पाखाना होता है। मलकी जमी कड़ी गाँठे, छोटी-छोटी कड़ी गोलियोंकी तरह आपसमें मिली निकलती हैं। ऐल्यूमिनकी धातुका यह एक अत्यन्त निर्देशक स्वरूप हैं। 'मल, बार बार पाखाना नहीं लगता, सूखा और कड़ा रहता है, बड़ा काला, और भी कड़ा लेंड या भेंडकी मीगीकी तरह चोटे-छोटे टुकड़े, पाखाना हो जाने बाद भी आराम नहीं मिलता।" पाखाना हो जाने बाद भी ऐसा अनुभव होता है, मानो मलनाली अब भी भरी हुई है। यह विचित्र अवस्था मलान्त्रकी कमजोरी या आंशिक पक्षाघातके

कारण हो जाती है। अर्थात मलान्त्रमें यह शक्ति नहीं रहती, कि अपने भीतरकी सारी सामग्रियां निकाल बाहर करें और इसीलिये, ऐसा अनुभव होता है, कि पाखाना साफ नहीं हुआ। मलान्त्रमें जखम हो जाता है, उससे रक्त निकलता है। बवासीरमें भी घाव हो जाता है, उसमें भी बहुत दर्द होता है, इसलिये प्रत्येक बार पाखाना होने बाद रोगीको बहुत तकलीफ होती है, मलांत्रमें धीमा-धीमा दर्द बराबर बना रहता है।

श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहकी अवस्था भी इस दवामें सब जगह दिखाई देती है। पुराने कण्ठमाला-ग्रस्त, सोरा-दोष-पूर्ण रोगी, जिनकी आंखोंमें पीले मृदु-स्राव होनेकी पुरानी बीमारी रहती है, साथ ही शिराएँ बढ़ी रहती हैं, स्त्रियोंके योनि पथ और पुरुषोंकी मूत्रनलीसे पीला स्राव होनेकी पुरानी बीमारी रहती है या पुराना दर्द-रहित सूजाक रहता है। श्लैष्मिक-झिल्लीसे स्राव होनेके अलावा घाव हो जानेकी भी प्रकृति रहती है, इसीलिये योनि-पथमें छोटे-छोटे जखमके गड्ढे पड़ जाते हैं या छोटे छालोंकी तरह दाग योनि पथमें और जरायु-ग्रीवामें हो जाते हैं। जब किसी रोगीको पुरानी सूजाककी बीमारी रहती है और पुराने सूजाककी तरह सफेद मवाद आनेके बदले मवाद पीला निकलता है तथा मूत्रनलीमें थोड़ा कड़ापन रहता है, जिसे रोगी चिकित्सकका ध्यान आकर्षण करनेके लिये "ढेलेकी तरह" कहता है। मूत्रनलीमें "छोटे गुच्छे" के साथ मवाद आना। ये छोटे-छोटे जखम होते हैं और उन जखमोंके नीचे कड़ापन रहता है। यदि ऐसी अवस्था रहे, तो यह ऐल्यूमेनका सूजाक है। थोड़े ही दिन बाद रोगीको दो या तीन सङ्कोचन (stricture) का दौरा हो जायगा, जबतक उसे यह दवा न दी जायगी, क्योंकि इनमेंसे प्रत्येक जखम नलीको सकरी करते हुए सङ्कोचन पैदा करते जाते हैं। श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहवाली अवस्था और जखमोंकी एक दूसरी अद्भुत शकल है, रक्तवाहिनियोंको दोषी बनानेकी उनकी प्रवृत्ति। शिराएँ सूज जाती हैं और उनसे खून निकलता है। यह यहाँतक हो जाता है, कि किसी भी प्रदाहित या सड़ींसे भरे स्थान और जखमसे भी रक्त-स्राव होता है।

इसमें इस तरहका स्नायु-शूलका दर्द **माथेमें** होता है, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। यह सर-दर्द सबेरे सोकर उठते ही हो जाता है। **आँखोंमें**

भी प्रदाह और रस-सञ्चयकी प्रकृतिके लक्षण रहते हैं और उनमें भी जखम हो जानेका शक रहता है। पीव बहनेवाला आँखोंका प्रदाह (आँख उठना), पुराना आँखका दर्द। "बत्तीकी रोशनीमें चीजें दो दिखाई देती है।" "बायीं ओरकी नाकमें नासार्बुद (Nasal polypus) हो जाता है। नाकका ह्रक्-रोग (नकड़ा) या कर्कट (कैन्सर), चेहरा मुर्देकी तरह पीला और ओंठ नीले रहते है। "जीभका गूमड़ अर्थात कड़ा अर्बुद।" देखिये, इसमें किस तरहके छोटे-छोटे प्रवर्द्धन या कड़ापन और रस-स्राव पैदा करनेकी प्रवृत्ति है। दाँतसे खून जाना, दाँत क्षय हो जाते हैं और मसूढ़े दाँतसे अलग हो जाते है, दाँत ढीले पड़ जाते हैं, मसूढ़े देखनेमें शीताद रोग (खारिश) की तरह हो जाते हैं।" "मुँहमें जलन और जखम रहते हैं, दाँतके पासका चमड़ा भूरा, मैला और छेदोंसे भरा रहता है। इसके चारों ओरका मांस उठा रहता है, बदबूदार लार बहती है।" मुँहमें भी हमें वही जखमका साधारण स्वरूप मिलता है, साथ ही मुँह सूखा, जीभ और कण्ठ सूखे तथा बरफकी तरह ठण्डे पानीकी बहुत ही तेज़ प्यास रहती है। "उपजिह्वा बढ़ी और प्रादाहित रहती है। रोगीमें तालुमूल-प्रदाह हो जानेका लक्षण रहता है।" "जो कुछ खाता है, उसीकी कै हो जाती है।" इसके बाद आप एक शब्द "जखम" रख दें, क्योंकि यह खासकर रक्त-सञ्चयकी उसी अवस्थाको बताता है, जहाँ सहजमें ही जखम हो जाता है।

उदरमें आध्मानका लक्षण मिलता है, आँतें अपनी क्रिया नहीं करतीं, उनकी क्रिया आक्षेपिक होती है और इसीलिये रोगीको मरोड़ और शूलके दर्दकी तकलीफ़ भोगनी पड़ती है। वेधने, फाड़ने और मरोड़नेकी तरह दर्द, तलपेटका पीछेकी ओर खिचना और नाभीके स्थानपर खिचाव मालूम होना। यदि आप **लेड—सीसा**के ज़हरका, उनपर प्रभाव देखें, जो सफेद सीसाका काम करते हैं, तो आपको इस दवाकी प्रति-मूर्त्ति उनमें साफ दिखाई देगी और आपको यह देखकर आश्चर्य न होगा, कि यह दवा और प्लम्बम—ये दोनों आपसमें प्रतिविष (antidote) का काम करती है। वे ऐसा ही करती है, क्योंकि वे इतनी सदृश-गुण-सम्पन्न हैं। वे एक घरमें रह नहीं सकतीं। सीसाका काम करनेवालोंके सीसक-शूल (Lead-colic) की ऐल्यूमेन एक बहुत बड़ी दवा है। यह सीसक-शूल-प्रवणता भी दूर कर देती है। इस प्रवणताके कारण ही कितने रङ्गसाज़ोंको अपना काम छोड़ देना

पड़ा है। ऐल्यूमि अकसर इस प्रकृतिको दूर कर देगा और उनको फिर अपना काम करने योग्य बना देगा।

स्त्रियोंमें "जरायुमें भार नीचेकी ओर भीवातक दबाव डालता है, योनि-पथमें दाने हो जाते हैं, बहुत ज्यादा श्वेत प्रदरका स्राव होता है, दुबलापन, पीला चेहरा, जरायुका कड़ा पड़ जाना, यहाँतक कठिन अर्बुद (scirrhus) और "जरायुका जखमतक" होता देखा जाता है। कभी कभी तो जरायुकी इस अवस्थाका पता, किसी स्त्रीके इस कथनसे लगता है, कि सङ्गमके समय इतना दर्द होता है, कि वह असह्य हो जाता है। यह तो कोई ताज्जुबकी बात नहीं है, कि जब इतनी तकलीफें मौजूद हैं, तब स्वाभाविक क्रिया नहीं की जा सकतीं।

"स्वर-रोध"—आवाज़ न निकल सकनेकी पुरानी बीमारी, बारम्बार सर्दी लगने और शरीर-विधानकी क्रिया निम्न-श्रेणीकी होनेके कारण ऐसा हो जाता है। बहुत-सा पीला बलगम थूकमें निकलता है। यह पीला बलगम कण्ठमें इकट्ठा होनेके कारण रोगी बार-बार खाँसकर गला साफ किया करता है। "सन्ध्याके समय लेटनेपर सूखी खाँसी आती है, सवेरेको पुरानी खाँसी।" खाँसी इस दवाका कोई आवश्यक उपसर्ग नहीं है। यह तो शरीर-विधानकी क्रियाकी साधारण अवस्था है, जिसपर ध्यान रखना चाहिये। खाँसीसे रोगकी प्रकृति कुछ चिकित्सकको नहीं मालूम होती, क्योंकि इन छोटे छोटे जखमोंके रहनेके कारण कुछ-न कुछ खाँसी आयेगी ही। ऐसे रोगीको या तो यक्ष्मा हो जा सकता है अथवा कोई दूसरी प्राण-घातक बीमारी हो जा सकती है।

ऐल्यूमेन उन वृद्ध मनुष्योंको बहुत फायदा करता है, जिन्हें सवेरेके वक्त बहुत ज्यादा डोरीकी तरह लसदार बलगम निकलता है, छातीमें सर्दी जमी रहती है। फुसफुससे रक्त-स्राव होता है और सीनेमें बहुत कमजोरी मालूम होती है, यहाँतक कि इस कमजोरीके कारण बलगम निकलना मुश्किल हो जाता है, इस लक्षणमें यह **ऐण्टिमोनियम-टार्टरिकम**के समकक्ष है।

ऐल्युमिनाके साथ इसका सम्बन्ध रहनेके कारण यदि इसकी और भी परीक्षा की जाये, तो इसमें सन्देह नहीं कि मेरुदण्डके बहुत-से लक्षण प्रकट होंगे। यह विख्यात है, कि इसके रोगीका मेरुदण्ड कमजोर रहता है, मेरु-दण्डमें ठण्डक रहती है और एक ऐसा भाव रहता है, कि मानो ऊपरसे पीठके

नीचेकी ओर ठण्डा पानी ढाला जा रहा है। स्कन्धास्थिके नीचेवाले कोणकी रेखामें पृष्ठ-मेरुदण्डमें दर्द, कन्धा तथा इस स्थानपर कमजोरी मालूम होना। **ऐल्यूमिना**की तरह ही इसमें भी ऐसा अनुभव होता है, मानो अङ्ग-प्रत्यङ्ग फीता या डोरीसे बँधे हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो बाहोंके स्थानपर एक डोरी कसकर बँधी हुई है। अगुलियाँ बेडौल हो जाती हैं, जैसी कि हाथसे चीजें गिर जानेके समय हो जाती हैं। रातमें निम्न-प्रत्यङ्गोंमें दर्द होता है, उनमें कमजोरी और सुन्नपन आ जाता है—ये सब मेरुदण्डके लक्षणोंके विभिन्न प्रदर्शन हैं। ऐसा अनुभव होता है, मानो घुटनेके नीचे पैरमें एक डोरी बँधी है, चलनेके समय तलवेमें दबाव सहन नहीं होता, खूब ढके रहनेपर भी पैर घुटनेतक ठण्डे रहते हैं, ये सब मेरुदण्डपर इस दवाकी क्रिया होनेके अन्य प्रमाण हैं। समस्त शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्द, प्रत्यङ्गोंमें कुछ रेंगने या सुरसुरी होनेवाला पक्षाघात।

समस्त शरीरमें खून दौड़ रहा है, इस तरहकी अनुभूतिके साथ रोगी रातभर जागता रहता है। कितनी शिकायतें नींदके समय ही पैदा होती हैं। रातमें डरावने स्वप्न देखता है। मौसमका बदलना उसे सहन नहीं होता है और सर्दी तो एकदम सहन नहीं होती।

ऐल्यूमिना।

(Alumina)

ऐल्यूमेनके बाद, क्रियाशीलतामें, इस दवाका अति सुन्दर स्थान होता है, क्योंकि ऐल्यूमेनकी प्रकृतिमें बहुत-कुछ ऐल्यूमिना है और ऐल्यूमिनापर ही ऐल्यूमेन अधिकांश निर्भर करता है, क्योंकि कार्य-प्रणालीके लिये यही उसका आधार है। इस स्थानपर थोड़ा-सा हवाला दे देना उचित मालूम होता है। जब किसी आक्साइड या कार्बोनेटकी पूरी-पूरी और अच्छी तरह परीक्षा हो जाती है और मानसिक लक्षण सब प्रकट कर लिये जाते हैं, तो कभी-कभी उसी मूलके दूसरे नमकोंका प्रयोग आप थोड़ी मात्रामें कर सकते हैं, जिनके कुछ मानसिक लक्षण परीक्षामें प्रकट हो चुके हैं,

मान लीजिये कि निश्चित रूपसे **ऐल्यूमेन** बतानेवाले लक्षण-समूह आपको मिल रहे हैं। अबतक **ऐल्यूमेन**के मानसिक लक्षण परीक्षामें भरपूर प्रकट नहीं हुए, परन्तु आक्साइड रहनेवाले ऐल्यूमेनके मूल-पदार्थके मानसिक लक्षण आपको मालूम है। इस तरह यदि रोगीमें ऐल्यूमिनाके मानसिक, पर **ऐल्यूमेन**के शारीरिक लक्षण हों, तो आप विज्ञान-सिद्ध-रूपसे यह निष्कर्ष निकालेंगे, कि दोनोंमें **ऐल्यूमिना** रहनेके कारण **ऐल्यूमेन** रोगीको आरोग्य कर देगा।

ऐल्यूमिनाके मानसिक लक्षण हमें अच्छी तरह मालूम है। यह बुद्धि-शक्तिपर ही अपना प्रभाव डालकर, बुद्धिको इतनी विशृङ्खलित बना देता है, कि रोगी किसी विषयका निर्णय ही नहीं कर सकता, उसका निर्णय गडबडाया रहता है। उसमें हृदयङ्गम करनेकी शक्ति नहीं रहती, जिन पदार्थोंको वह जानता या सत्य समझता था, वे भी उसे असत्य मालूम होने लगते है और वह सन्देह करने लगता है, कि वास्तवमें वे वैसे हैं या नहीं। **गाइडिङ्ग सिम्पटम्स** नामक ग्रन्थमें, यह बात इतनी खुलासा नहीं बतायी गई है, पर **क्रानिक डिजिजेस** नामक ग्रन्थमें इस विषयका पूरा वर्णन मिलता है और कहाँ क्या होता है, उसका पूरा विवरण दिया हुआ है। उसमें लिखा है — "जब वह कोई बात कहता है, तो उसे ऐसा मालूम होता है, मानो किसी दूसरेने यह बात कही है। इसी तरह जब कोई चीज़ देखता है, तो उसे अनुभव होता है, कि किसी दूसरेने देखा है या यदि वह अपनेको दूसरेमें रूपान्तर कर दे सके, तो तभी देख सकता है।" तात्पर्य यही कि रोगीका मन विशृङ्खलित रहता है' उसके विचार और चिन्ता-धारा भी बिगडी रहती है। इस दवाने ये लक्षण आरोग्य कर दिये हैं। अपने स्वरूपकी चेतनता भी गडबडा जाती है, उसे इसी बातका ठीक-ठीक निश्चय नहीं रहता कि वह कौन था, ऐसा मालूम होता है, मानो वह आपेमें नहीं है। उसके मनकी हतबुद्धि-जैसी अवस्था रहती है। वह बोलने, लिखनेमें भूल करता है, इच्छाके विपरीत शब्दोंका प्रयोग करता है, गलत लफ्जोंका व्यवहार करता है, बुद्धिका विभ्रम और तमसाच्छन्नता पैदा हो जाती है, विचारोंकी शृङ्खला ठीक नहीं रख सकता।

इसके बाद वह एक दूसरी ही अवस्थामें जा पहुँचता है। इसमें वह जल्दबाज हो जाता है, कोई भी काम तेजीसे नहीं होता, समय उसे बहुत"

धीरे-धीरे बीतता मालूम होता है, सभी कामोंमें देर होती है, कोई भी काम ठीक समयपर नहीं होता। इसके अलावा उसमें मनोवेग उत्पन्न हो जाता है। जब वह कोई धारदार शस्त्र या खून देखता है, तो उसमें मनोवेग उत्पन्न हो जाता है, जिसकी वजहसे वह काँपता है। मारने या हत्या करनेके काममें आनेवाले शस्त्र देखते ही उसका मनोवेग बढ जाता है और उसमें अपनेको ही मार डालनेकी इच्छा पैदा हो जाती है।

ऐल्यूमिनाका रोगी बहुत ही उदास, सदैव उदास रहता है। हमेशा विलाप करता है, कलपता है, क्रोध करता है और एकदम जल्दीमें रहता है। भाग जाना चाहता है, अवस्था अच्छी हो जानेकी आशासे, उस स्थानसे चला जाना चाहता है, आँसू बहाया करता है। सभी तरहके खाम-खयाल उसमें पैदा हुआ करते हैं, एक तरहकी आशंका उसमें सदैव बनी रहती है। अपने मनकी इस अवस्थापर वह जब कभी सोचता है, तो उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी बुद्धि-वृत्ति नष्ट हो जा रही है। वह इस उन्मत्तता, जल्दबाजी और मनकी विशृङ्खलतापर विचार करता है,—ओह! कितनी कठिनतासे वह अपना नाम जानता है, वह कितना चिडचिडा है और वह ताज्जुब करता है, कि वह उन्मत्त तो नहीं हो जायगा और अन्तमें वह वास्तवमें यही सोचता है, कि वह उन्मत्त होता जा रहा है।

ज्यादातर मानसिक लक्षण सवेरे सोकर उठनेपर उत्पन्न होते हैं, सवेरे सोकर उठनेपर उदासी और रुलाईका दौरा होता है। उसका स्वभाव बदला करता है, कभी-कभी तो उसकी मानसिक अवस्था कुछ अच्छी रहती है और उसका स्वभाव शान्त तथा प्रशान्त रहता है, पर इसके बाद ही वह डरने लगता है और शङ्कित हो पडता है। वह सोचता है, कि कोई दुर्घटना होना चाहती है और घोर चिन्तामें जा पडता है, भविष्यके विषयमें चिन्ता।

दूसरा इसका ध्यान देनेका स्वरूप है, वह ढङ्ग जिससे यह दवा मेरुदण्डसे निकलनेवाले स्नायुओंपर अपनी क्रिया करती है। जिन पेशियोंमें इन स्नायुओंसे मदद पहुँचती है, उनमें दुर्बलता रहती है, समूचे शरीरमें कमजोरी मालूम होती है, निगलनेमें तकलीफ होती है, अन्नवहनलीका पक्षाघात, बाहु उठाने या हिलानेमें कष्ट, अर्द्धाङ्ग पक्षाघात अथवा निम्नाङ्गकी पेशियोंका पक्षाघात या मूत्राशय और मलान्त्रमें पक्षाघात हो जाता है। अर्द्ध-पक्षाघातके ढङ्गसे यह पक्षाघातिक अवस्था आरम्भ होती हैं, बहुत दिनोंतक एक प्रकारका

काम न कर सकनेका ढङ्ग रहता है, यही बढ़कर अन्तमें सम्पूर्ण पक्षाघातमें परिणत हो जाता है।

सभी कार्य धीमे पड़ जाते हैं, स्नायुओंकी सञ्चालिनी-शक्ति दुर्बल पड़ जाती है, यहाँतक कि यदि हाथ-पैरोंमें आल्पीन भी गड़ा दी जाती है, तो पता नहीं लगता, जबतक दूसरी-तीसरी बार नहीं गड़ायी जाती। रोगीकी समस्त पेशियाँ इस तरह दुर्बल हो जाती हैं, कि चेतनातक एकदम गायब हो जाती है और बुद्धि जड़की तरह हो जाती है,—एक मानसिक जड़ताका भाव आ जाता है, उसके दिमागमें अनुभूति पहुँचती भी है, तो बहुत ही धीरे-धीरे।

इस दवामें सब जगह पाक्षाघातिक अवस्था है। यह बहुत तरहसे दिखाई देती है। पेशाब धीरे-धीरे निकलनेसे प्रकट होता है, कि मूत्राशय पक्षाघात-ग्रस्त है। पेशाब होना आरम्भ होनेके पहले रोगिनी बहुत देरतक बैठी रहती है, जोर लगानेकी उसमें शक्ति नहीं रहती, इसके बाद पेशाबकी धार धीमे-धीमे निकलती है। रोगिनी कहेगी—वह जल्दीसे पेशाब नहीं कर सकती, पेशाब धीमेसे आरम्भ होता है और उसकी धार धीमी रहती है और कभी-कभी तो बूँद-बूँद पेशाब होता है। कभी यह पेशाब रुक जाता है और आप-से-आप टपका करता है। मलान्त्रमें भी यही धीमापन दिखाई देता है। इसकी ताकत चली जाती है और पाखानेके समय मामूली जोर भी नहीं लगाया जा सकता। मलान्त्र इतना अर्द्ध-पक्षाघात ग्रस्त रहता है, कि वह मलसे भरा और तना रह सकता है, उसमें मल भी बहुत भरा रह सकता है तथा मल नरम रहनेपर भी पाखाना नहीं होता, कब्ज ही रहता है। इस दवामें अकसर कड़ा पाखाना होता है, पर इस दवाका सबसे उत्तम काम तभी देखनेमें आता है, जब नरम मल रहनेके साथ-साथ मलान्त्र अर्द्ध-पक्षाघात-ग्रस्त रहता है। यदि ऊपर बताये मानसिक लक्षण रहनेके साथ-ही-साथ मल बड़ा, कड़ा, गाँठ-गाँठ या ढेला-ढेला हो, तो ऐल्यूमिना उसे आरोग्य कर देगा। अब कोमल मल निकालनेमें भी कितना जोर लगाना पड़ता है, यह कभी-कभी नीचे लिखे ढङ्गसे रोगी ही आपको बताते मिलेंगे —पाखानेमें बैठकर बहुत देरतक राह देखनी पड़ती है। यद्यपि मलनाली भरी रहती है और रोगिनीको कई दिनोंसे पाखाना नहीं हुआ रहता, वह सचेत रहती है, कि पाखाना होना ही चाहिये और यह भी जानती है, कि मलान्त्र मलसे भरा है, इतनेपर भी उसे बहुत देरतक बैठे रहना पड़ता है और अन्तमें वह तलपेटकी

पेशियोंको जोरसे दबाकर बहुत काँखती है, पर यह भी देखती है, कि मलान्त्र बिलकुल ही जोर नहीं लगा रही है। वह काँखती ही रहती है, बहुत ज्यादा पसीने भर जाती है, खुड्डीपर लटक पडती है, यदि लटकने योग्य कोई सहारा रहता है तथा प्रसवकी तरह बहुत जोर लगाती है, अन्तमें बहुत मुश्किलसे कोमल मल निकलता है। फिर भी यह भाव बना ही रह जाता है, कि भीतर बहुत-सा पाखाना रह गया है।

इसमें सन्देह नहीं कि और भी कितनी ही दवाओंमें यह लक्षण है, कि कोमल पाखानेके समय भी जोर लगाना पडता है, पर उनका अपना अलग-अलग चरित्रगत लक्षण है। उदाहरणार्थ, मान लीजिये, कि कोई स्त्री हैं, जो जाग नहीं सकती, कोई स्त्री कहती है, कि विना सोये उसके लिये एक सतर पढना भी असम्भव है, वह बराबर सोयी रह सकती हैं, उसका मुँह दिन-रात सूखता रहता है और उसकी जीभ तालुसे सट जाती है। अब उसे पाखानेके समय काँखने और मल निकालनेकी चेष्टाओंका वर्णन करने दीजिये, फिर आपको दवा जाननेके लिये ज्यादा परिश्रमकी जरूरत न होगी। यदि वह रोगिनी, जो कुछ उसने कहा है, इसके साथ ही यह भी कह दे, कि कुछ देरतक खडी रहनेपर उसे बेहोशी आने लगती है, बन्द कमरेमें उसे तकलीफ होती है और ठण्डी हवामें सब उपसर्ग पैदा हो जाते हैं, तो वह **नक्स-मस्कीटा**की रोगिनी है। अब देखिये, कि दवाएँ किस सरलतासे बातें करती हैं, वे अपनी कथा आप ही कह देती हैं। मान लीजिये, कि बहुत दिनोंसे लगातार रक्त-स्राव होनेवाली कोई रोगिनी आपके पास आती है। वह क्षीण और दुर्बल हो रही है। आध्मानके कारण उसे बहुत तकलीफ होती है, बहुत डकारें आती हैं तथा वायु छूटता है, पर जितना ही वायु निकलता है, उतनी ही उसकी तकलीफ बढती जाती है और मल नरम रहनेपर भी उसे बहुत देरतक काँखना पडता है, बहुत चेष्टा करनी पडती है, मलान्त्रकी क्रिया नहीं होती, आपको उसे **चायना** देनेके सिवा और कोई गति नहीं है। दवाओंको जब बोलने और अपनी कथा सुनाने दिया जाता है, तो उनका चुनावका काम हो जाता है। मैंने यह इतना इसीलिये कहा है, कि आप मलान्त्रकी निष्क्रियतापर ही लक्ष्य रखकर औषधिका चुनाव नहीं कर सकते। रोगीके द्वारा ही यह बढाईका काम होना चाहिये। यह

एक ऐसा सिद्धान्त है, जिसपर सदैव ध्यान रखना पड़ेगा, जिसका उल्लङ्घन कदापि न होगा। किसी एक ही प्रकारके लक्षणवाली बीसो दवाएँ हो सकती हैं, पर रोगीके सम्बन्धमें आपको कुछ निश्चित बातें मिलेगी। जिस प्रणालीसे वह अपने व्यवसाय करता है, वह प्रणाली जिससे सम्पूर्ण मनुष्यपर रोगका आक्रमण होता है, इन सब बातोंपर ध्यान देनेसे ही आप प्रभेद निर्णय कर सकते हैं। आपने ऐल्यूमिना, **चायना** और **नक्स-मस्केटा**के रोगी देखे। किसी चिकित्सकका एकमात्र कर्त्तव्य है, रोगीकी चिकित्सा करना। इसका यह मतलब है, कि **रोगीका** तबतक अध्ययन करना चाहिये, जबतक रोगका आभास पूरी तरह न मिल जाये।

इस दवामें सरमें चक्करका भी पूरा-पूरा लक्षण है। रोगी काँपता है, चक्कर खाता है और उसके चारों ओरके पदार्थ बराबर चक्कर खाया करते हैं। श्रान्त-क्लान्त मनुष्य, वृद्ध स्वास्थ्य-हीन पुरुष तथा बुढापेके कारण क्षीण हुए मनुष्योंके सरका चक्कर इसमें बहुत कुछ मिलता है। आँखे बन्द करनेपर जो सरका चक्कर आता है, जैसा कि मेरुदण्डके रोग तथा पश्चात मेरुदण्डके अगल-बगलमें जो सफेद अश्म मज्जा-रूपमें (मेरु-मज्जा) भरा रहता है, उसकी बीमारी होनेपर इस ढङ्गका चक्कर आता है। गति-शक्ति-राहित्यकी तरहके रोगोंको भी ऐल्यूमिनाने आरोग्य कर दिया है। पैरके तलवेमें यह एक तरहका सुन्नपन उत्पन्न करता है, एक प्रकारकी, क्षणिक तीव्र वेदना होती है। आँखे बन्द करनेपर सरमें चक्कर आता है, ढलमलाता है तथा समता-रक्षाकी विशृङ्खलताको उत्पन्न करता है। यह सत्य है, कि गति-शक्ति-राहित्य (Locomotor Ataxia) की आरम्भिक अवस्थामें अगर ऐल्यूमिनाका प्रयोग हो जाता है, तो प्रकृतिकी जो भीतरी पोषण-क्रिया होती है, उसको भीतरी अवस्थाको ठीककर बीमारीकी वृद्धिको यह रोक देती है। वृद्ध असाध्य रोगियोंका पक्षिक तीव्र दर्द मैंने **ऐल्यूमिनियम मेटालिकम**से बन्द कर दिया है तथा स्नायुओंकी पारावर्त्तित क्रिया आश्चर्य रूपसे बढाते हुए, रोगीकी सार्वाङ्गिक उन्नति दिखा दी है।

जैसा कि ऊपर बताया है, सवेरे सोकर उठनेपर अधिकांश लक्षणोंकी वृद्धि हो जाती है। पेशाब कुछ चलने-फिरने और गर्म हो जानेकी अपेक्षा इस समय धीमी धारसे होता है, सवेरेके वक्त रोगीके अङ्ग-प्रत्यङ्ग अपेक्षाकृत कड़े रहते हैं और सवेरेके वक्त उसे अपनी मानसिक अवस्थाको जोर लगाकर ठीक रखना

पडता है। वह घबडाया हुआ जागता है और सोचता है, कि कहाँ है। खासकर कितने ही बच्चोंको आप देखेंगे कि सवेरे घबडायी अवस्थामें उठते हैं। ये ऐल्यूमिना, इस्कुलस और लाइकोपोडियमके रोगी हैं। उन्हें ध्यान टेकर सोचना पडता है, कि ये चीजें वास्तवमें ऐसी हो सकती हैं या नहीं और ये चीजें कैसी दिखाई देनी चाहिये और सोचते हैं, कि वे घरमें हैं या किसी दूसरी जगहमें।

मिचली और वमनके साथ बहुत तरहका सर-दर्द होता है। जभी सर्दी लगती है, सरमें दर्द होने लगता है, यह सम्भवतः श्लैष्मिक-झिल्लियाकी प्रादाहित अवस्थाके कारण होता है। ऐल्यूमिनाके रोगीको श्लैष्मिक-झिल्लियोंके सूखेपनकी तकलीफ़ लगी ही रहती है। नाक सूखी और बन्द रहती है, खासकर एक ओर—साधारणतया बायीं ओरकी नाक बन्द रहती है। नाक खोलोंसे भरी, सूखी झिल्लियाँ या पपडीसे भरी रहती है। पुराना घीण पीनस रोग। नाकके अगले छेदमें खरोट जमती है और कण्ठकर्णी-नलीके स्वर-यन्त्र-मुखके पीछेवाले जगहमें भी खरोंटें जमती हैं (Fossa of Rosen-muller)। समूची नाकमें बडी-बडी हरी और बदबूदार खरोंट जमती हैं। अब सर-दर्दका सम्बन्ध देखिये। जब कभी इसके रोगीको सर्दी लगती है, तो गाढा पीला स्राव रुक जाता है और नाकसे पानीकी तरह स्राव होने लगता है। आँखके ऊपर कपालमें दर्द हो जाता है, यह सरतक फैल जाता है, साथ ही मिचली और कै होती है। यह पुरानी सर्दीके कारण होनेवाला सर-दर्द कहलाता है। लेट जानेपर सर-दर्द घटता है। रोगी सर-दर्दके कारण बीमारको तरह हो जाता है और बँधे समयपर सर-दर्दका आक्रमण (Periodical headaches) होता है। आप देखेंगे, कि सोरा-दोषवाले—वृद्ध भग्न-स्वास्थ्य धातुवाले तथा दुर्बल प्रकृतिवाले तथा कण्ठमाला प्रकृतिके जिन्हें यक्ष्मा और सर्दीके रोग होनेकी सम्भावना रहती है, उनकी प्रकृतिसे ऐल्यूमिना मिलता है।

इस दवाको श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह हो जानेकी प्रवृत्ति एक विशेष बात है। जहाँ कहीं श्लैष्मिक-झिल्ली है, वहीं प्रदाह हो जानेकी सम्भावना रहती है। ऐल्यूमिनामें चर्म और श्लैष्मिक-झिल्ली अर्थात बाहरी और भीतरी चर्म तथा शरीर-पटलपर आक्रमण होता है। इस श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रादाहित अवस्थाके कारण दृष्टिमें भी गडबडी पैदा हो जाती हैं। धुँधला देखता है,

मानो कुहरेके भीतरसे देख रहा है, कभी-कभी ऐसा भी कहते हैं, कि मानो पर्देके भीतरसे देखता है। दृष्टिका एक धुमैला धुँधलापन। समूची दवामें जैसी पाक्षाघातिक दुर्बलता रहती है, वही कितनी ही पेशियोंमें या पेशीदलमें भी दिखाई देती है। इसीलिये, चश्मा भी बड़ी कठिनाईसे ठीक होता है। आँखकी पेशियोंकी क्रियाशीलता भी गड़बड़ा जाती है।

श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी यह प्रादाहित अवस्था नाकके पीछेवाले भागतक चली जाती है और पश्चात् नासा-रन्ध्र (Posterior nares) कड़े बलगम और पपड़ियोंसे भर जाता है। कण्ठको यदि देखा जाये, तो आपको मालूम होगा, कि कोमल तन्तु और तालुमूल तथा गलकोषकी तथा जहाँतक दिखाई देता है, वहाँतककी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें या तो दाने पैदा हो गये हैं अथवा ये स्थान फूले, खून-भरे और प्रादाहित हो रहे हैं। गलकोष सूखा अनुभव होता है और उसमें एक पुरानी स्पर्श-असहनीयता और यन्त्रणा रहती है। कुछ निगलनेके समय डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है और ऐसा अनुभव होता है, मानो कण्ठ छोटी-छोटी खीलोंसे भर रहा है। खासकर क्षणभर आराम करने बाद ऐसा ही होता है। कुछ निगलने या घूंट लेने तथा कण्ठ तर करते रहनेपर अच्छा रहता है। रातकी हवामें, थोड़ी देरतक चुपचाप बैठे रहनेपर, वहाँ डोरीकी तरह बलगम इकट्ठा हो जाता है। यह बढ़कर स्वर-यन्त्रमें चला जाता है, उस समय स्वर-यन्त्रमें और छातीमें दर्द तथा पुराना सूखापन और खुसखुसी खाँसी पैदा हो जाती है, यही श्लैष्मिक-झिल्लियोंका प्रदाह अन्नवहानलीतक फैलकर चला जाता है। यह स्थान भी स्पर्श-असहिष्णु और बेडौल हो जाता है। रोगी बड़े कष्टसे कुछ निगल सकता है, जोर लगानेपर खायी हुई चीज़का गोला नीचे उतरता है और जबतक यह नीचे आता रहता है, रोगीके अनुभवमें आता रहता है। निगलनेमें यन्त्रणा, बेडौलपन, अर्द्ध-पाक्षाघातिक अवस्था और कष्ट बराबर रहते हैं। यह पाक्षाघातिक दुर्बलता रोगीको याद दिलाती रहती है, कि उसे निगलनेमें जोर लगाना चाहिये और यह निगलनेकी क्रिया, जबतक वह सामग्री कण्ठनलीकी राहसे उतरती रहती है, रोगी अनुभव करता रहता है, मानो कण्ठनली स्पर्श-असहिष्णु हो गई है। पाकाशय, आँते तथा मलनलीकी भी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ प्रदाहित रहती हैं, इसीलिये कोमल या कड़े मलके साथ श्लेष्मा भी गिरता रहता है। मूत्राशय (मसाना), गुर्दों और मूत्रनलीकी श्लैष्मिक-

झिल्लियोंकी प्रादाहित अवस्था भी रहती है तथा पुराना सूजाक बढकर उससे सर्दीका स्राव या पुराने सूजाकका श्लेष्मा अथवा पोव-मिला (gleet) स्राव हो सकता है। कभी-कभी यह ठीक ग्लीट (पुराना सूजाक, जिसमें श्लेष्मा और पीवका स्राव होता है) नहीं रहता, पर मवाद महीनों आता रहता है। यह स्राव थोडा दुधिया सफेद रहनेके बदले, जैसा कि स्वाभाविक-रूपसे सूजाकके अधिक दिनके रोगियोंको होता है, पीला निकलता है और किसी तरहका दर्द भी नहीं होता। ऐसा ही योनि-पथसे भी होता है। योनिसे जो स्राव होता है, वह गाढा, पीली आभा लिये सफेद और कभी कभी क्षय करनेवाला होता है। इस तरह हम देखते हैं, कि जिस धातुगत प्रकृतिका हम वर्णन कर चुके हैं, उसमें श्लैष्मिक-झिल्लियोंके प्रदाहकी अवस्था बहुत अधिक वर्त्तमान रहती है।

अब चर्मपर आइये। इसमें भी वैसी ही अवस्था दिखाई देगी। रोगीको सब तरहके उद्भेद निकल सकते हैं, चमडा मुरझाया रहता है। सूख जाता है और उसपर उद्भेद निकल आते हैं, मास कडा पड जाता है, जखम होता है, ददोरे पडते हैं और उनसे खून बहता है। बिछावनकी गर्मीसे इन उद्भेदोंकी खुजली बढ जाती है। बिछावनमें शरीर गरमा जानेपर, किसी तरहके उद्भेद न रहनेपर भी, शरीर बहुत खुजलाता है, यहांतक कि रोगी उसे तबतक खरोचता रहता है, जबतक खून नहीं निकलने लगता। इससे उन उद्भेदोंका एक आभास आपको मिल जाता है, जिसपर आपको विचार करना है। पपडियोंसे भरा एक रोगी आपके पास आकर कहता है,—"रातमें गर्म हो जाते ही मुझे खुजली पैदा हो जाती है और मैं तबतक खखोडता रहता हूँ, जबतक खून नहीं निकलने लगता।" अब ऐल्यूमिनामें इसका पता लगाना अत्यन्त आवश्यक है, कि खुजलानेके कारण ये पपडियाँ जमी हैं अथवा खुजलीके उद्भेदोंकी तरह ही ये उद्भेद निकलते हैं, क्योंकि ऐल्यूमिनामें पहलेसे ही किसी तरहका उद्भेद नहीं रहता, पर रोगी इस तरह खखोडता है, कि चमडा छिल जाता है और उसपर पपडी जमती है। इस अवस्थामें आपको उद्भेदोंकी दवा न देनी होगी, बल्कि बिना उद्भेदके ही चर्म खुजलानेकी। अब देखिये,—**मेजेरियम, आर्सेनिकम, डलिकस** और ऐल्युमिना—इनमें चमडेमें खुजलाहट होती है और रोगी तबतक खुजलाता रहता है, जबतक खून नहीं निकलने लगता। इसके बाद उसे कुछ

शान्ति मिलती है। इसमें सन्देह नहीं, कि इस खुजलानेके बाद प्रत्यक्ष-रूपसे उद्भेद निकल आते हैं, क्योंकि उनपर पपड़ी जमती है। घाव भरना आरम्भ होते ही खुजली पैदा हो जाती है। रोगीको तो उसी अवस्थामें आराम मिलता है, जब खाल उधड़ी रहती है। चमड़ेसे खून बहने और तर रहनेपर, खुजली कुछ शान्त रहती है। कितनी ही पुस्तकोंमें उद्भेदके साथ खुजली और उद्भेदोंके बिना ही खुजली—इनमें कोई प्रभेद नहीं माना है। इसी वजहसे अधिकांश नये चिकित्सक यही समझते हैं, कि चमड़ेकी खुजलीके साथ उद्भेद अवश्य ही रहते हैं और किस ढङ्गके ये उद्भेद हैं, उनका स्वरूप निर्णय करनेमें वे भूल करते हैं। चमड़ा मोटा पड़ जाता है, कड़ा हो जाता है और उसमें घाव हो जाते हैं, जखमोंके नीचे भी कड़ापन रहता है। चमड़ा तथा श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी बहुत ही शिथिल अवस्था रहती है, साथ ही इनमें कड़ापन आ जानेकी प्रवृत्ति भी रहती है। हर जगह श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें मोटापन दिखाई देता है, इस मोटेपनके बाद छोटे-छोटे जखम हो जाते हैं और फिर समय पाकर इन जखमोंकी तलीमें कड़ापन आ जाता है। चर्मके सम्बन्धमें भी यही बात सत्य है। सभी चीजोंके साथ रूखापन और जलन रहती है और यही बात साधारण रूपसे श्लैष्मिक-झिल्ली तथा चर्मके बारेमें भी कही जा सकती है।

पुरानी दानेदार पलकें। आँखकी पलकें अगर उलटकर देखी जायें, तो मालूम होगा, कि श्लैष्मिक-झिल्ली मोटी पड़ गई है। कभी-कभी तो इस मोटाई या सूजनके कारण उलटी पलककी बीमारीकी तरह (ectropian) पलक उलट जाती है। "बरुनियाँ झड़ जाती हैं," अर्थात यही साधारण अवस्था रहती है। सभी स्थानोंके केश झड़ जाते हैं, सब अङ्ग केश-हीन हो जाते हैं, माथेके केश बहुत अधिक झड़ते हैं। कानोंमें नाना प्रकारकी आवाजें—भनभनाहट प्रभृति आती है और श्रवण-शक्तिमें भी गड़बड़ी आ जाती है, कानसे पीव-भरा स्राव होता है।

"नाककी नोंक फटी"—भी इस दवाका लक्षण है। जगह-जगह कड़ापन आ जाता है, इस तरह जिनमें इस तरहकी सूजन और उद्भेद निकलनेकी प्रवृत्ति रहती है, उन्हें व्रक-रोग (नकड़ा) और त्वचार्बुद (Epithelioma) हो जानेमें सहारा मिलता है। **आर्सेनिकम, लैकेसिस, सलफर**

और **कानायम**की तरह ऐल्यूमिना और **ऐल्यूमेन**, इन उपसर्गोंकी दवाएँ है। शरीरके किसी विधान-रंध्रमें रस-प्रवेश (infiltration) हो जानेके कितने ही रोगी इन दवाओंने आरोग्य किये हैं। मुखमण्डलकी त्वचा तथा शरीरके कितने ही हिस्सोंमें कुछ रेंगनेकी तरह मालूम होता है। खासकर गरम होनेपर खुजली पैदा हो जाती है, तनाव-जैसा अनुभव होता है, वस्त्र-रहित स्थानोंपर तथा चेहरेमें एक अजब तरहकी अनुभूति होती है, मानो एक सूखा हुआ अण्डेका सफेद अंश लिपटा हुआ है अथवा सूखा रक्त या चेहरेपर मकडीका जाल चिपका हुआ है। यदि आप कभी किसी ऐसी जगहपर गये हों, जहाँ मकडीका जाल हो और कोई छोटा मकडीका जाल आपके चेहरेमें चिपक गया हो, तो आपको मालूम होगा, कि इससे कैसी एक रेंगनेकी तरहकी विचित्र अनुभूति उत्पन्न हो जाती है, आप इसे हटाये बिना तो रह ही नहीं सकते। यह भाव खासकर ऐल्यूमिना, **बोरैक्स** और **बैराइटा-कार्ब**में है। चमडेमें रेंगने और सुरसुरानेका भाव, चेहरेका खुजलाना, ये लक्षण इतने खुजलानेवाले होते हैं, कि रोगी बैठकर लगातार अपना चेहरा रगडा करता है। आप सोचेंगे कि वह स्नायविक हो पडा है। वह स्नायविककी तरह मालूम भी होता है, क्योंकि वह अपने हाथका पिछला भाग (करभ) मलता बैठा रहता है। यह पता लगा लेना उत्तम है, कि वह हाथ शान्त न रख सकनेके कारण ऐसा कर रहा है अथवा खुजलीके कारण, क्योंकि चेहरेमें खुजलीके भावके कारण ऐसा होनेपर रोगी अपना हाथ चेहरेपर इस तरह ले जाता है, मानो कोई चीज़ झाडकर हटा देना चाहता है।

कण्ठके बारेमें जितना कहना उचित था, उतना शायद मैंने नहीं कहा है। "गल-गह्वरमें जखम, छेददार घाव, जिनसे पीली आभा लिये भूरा स्राव होता है, बहुत बदबूदार पीव निकलता है।" यह भी कहा जा सकता है कि रोगीको अकसर पुराना कण्ठका घाव उभड आया करता है। ऐल्यूमिनामें यह भी है। इसमें श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें घर बनानेकी एक विशेष प्रवृत्ति है। ऐल्यूमिनाके रोगीमें सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे रक्त-स्र[illegible] स्रावको दिखाई देगा। उसकी नाक तथा लाल आँखोंसे स्राव [illegible] उसकी नाक बन्द हो जाती है और बहुत बार नयी सर्दीका रहता है। कण्ठकी तकलीफ बहुत तेज़ रहती है, सभी [illegible]

होता है, कण्ठमें नयी सर्दी बैठ जानेकी यह दवा नहीं है, न नये कण्ठके घाव या यन्त्रणाकी ही दवा है, बल्कि यह एक गहराईतक काम करनेवाली सोरा-नाशक दवा है और महीनोंतक इसकी क्रिया जारी रहती है। सर्दी लग जानेपर इसका सबसे अधिक फायदा दिखाई देता है। इस सम्बन्धमें यह **सिलिका, ग्रेफाइटिस** और **सलफर**की तरह है। यह तन्तुओंके परिवर्त्तनोंपर प्रभाव डालता है, पर यह धीरे-धीरे होता है, क्योंकि यह एक धीमी गतिसे काम करनेवाली दवा है। गहराईतक बैठे हुए सोराजनित रोगोंमें साधारणत यह दवा देनेके बाद जब रोगीको स्वत कुछ आराम मालूम होता है, तो उसके लक्षण सब दूर होनेमें महीनों लग जाते हैं। वह कह सकता है'—"मुझे अच्छा तो मालूम होता है, पर मेरे लक्षण सब ज्यों के-त्यों वर्त्तमान हैं। मैं अच्छी तरह खा और सो सकता हूँ। ऐसी अवस्थामें दवाका बदलना मूर्खता होगी। श्लैष्मिक-झिल्लियोंका प्रदाह, पीठका दर्द तथा दूसरे लक्षण, जिनको लक्ष्यकर आपने दवा दी है, उनके बहुत जल्द आरोग्य हो जानेकी आशा नहीं कर सकते। कई सप्ताहके बाद भी यदि आपको फायदा दिखाई दे तो सन्तुष्ट होना चाहिये। **प्लम्बम**से जो पाक्षाघातिक दुर्बलता उत्पन्न होती है, उसमें भी यही बात होती है। एक ऐसी नयी दवा भी आजकल व्यवहारमें आ रही है, जिसकी भरपूर परीक्षा और लक्षण प्रकट हो चुके हैं तथा इस दवाके लक्षणोंसे जिसका बहुत अधिक सादृश्य है। यह **कुरारि** है। मेरी इच्छा है, कि इसकी और भी उत्तमतासे परीक्षा हो, पर **प्लम्बम** और ऐल्यूमिनाके सदृश इसमें बहुत-सी चीजें भरी हैं और खासकर पियानो बजानेवालोंके हाथ और अंगुलियोंकी दुर्बलता इसका एक विशेष लक्षण हैं। एक पुरानी पियानो बजानेवाली भी कह सकती है, कि कुछ देर बजाते रहनेपर उसकी अगुलियाँ धीमी पड जाती हैं, प्रसारिणी-पेशियोंमें कमजोरी मालूम होती है, अगुलियाँ उठानेकी शक्ति नहीं रहती, उठानेवाली गति मानो रुक जाती है। **कुरारि** इसे बहुत कुछ दूर कर देता है। अगुलियोंको उठानेकी शक्तिमें तेजी ला देती है, पर यह दवा, साधारण तरीकेसे अर्द्ध-पाक्षाघातिक अवस्थामें काम करती है। **कुरारि** खासकर सकोचिनी-पेशीकी अपेक्षा प्रसारिणी-पेशीपर ज्यादा काम करती है, परन्तु ऐल्यूमिनामें सकोचिनी और प्रसारिणी दोनों ही पेशियोंका पक्षाघात रहता है।

श्वेतसारसे, खासकर आलूके श्वेतसार द्वारा, जिन दवाओंमें रोग-वृद्धिका लक्षण पाया जाता है, यह भी उनमेंसे ही एक है। आलू खानेके कारण रोग-वृद्धि, आलू खानेकी वजहसे अजीर्ण, पतले दस्त आना, पेटमें बहुत वायु होना और खाँसीका बढ जाना, नमक, शराब, सिर्का, लाल मिर्च तथा स्पिरिट-मिले पेयोंके व्यवहारसे भी इसकी रोग-वृद्धि होती है। ऐल्यूमिना एक मेरुदण्डकी दवा है और नशीले पेयोंके कारण वृद्धि, कुछ अन्य मेरुदण्डकी दवाओंमें भी मिलती है। यह **जिङ्कम**में भी है। **जिङ्कम**का रोगी शराब नहीं पी सकता, क्योंकि उसके सभी उपसर्ग इससे बढ जाते हैं। यह दवा इतनी स्पर्श-असहिष्णु है और थोडी-सी ही शराब पीनेपर इतना आसानीसे असर हो जाता है, कि उसे बाध्य होकर शराब छोड देनी पडती है। इससे उसे केवल नशा ही नहीं आता, बल्कि उसकी शिकायतें भी बढ जाती हैं।

अब वास्तवमें इस दवामें पाचन-शक्ति बिगड जाती है, उसके पाकाशयकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें प्रदाह हो जाता है। पाकाशयमें जखम हो जाता है, सरल-से-सरल भोजनसे भी अजीर्ण पैदा हो जाता है। खट्टी और तीती डकारें आती हैं, खायी हुई चीजें, श्लेष्मा और पित्तकी कै होती है, भाफके कारण पाकाशय फूला रहता है, यकृत भी रोगोंसे भरा रहता है, दोनों ही कोखोंमें तकलीफभरी रहती है, लेकिन खासकर दाहिने कोखमें ज्यादा तकलीफ रहती है।

ऐल्यूमेनका वर्णन करते समय **सीसे** (Lead) से इसका जो विशेष सदृश सम्बन्ध है, उसपर ध्यान दिला चुका हूँ। यह दवा भी सीसेका प्रभाव और सीसेकी स्पर्श-असहिष्णुताको दूर कर देगी। सीसेका काम करनेवाले, रङ्गसाज और चित्रकार तथा उन मनुष्योंको, जिन्हें सीसेका स्पर्श सहन नहीं होता, जो सीसा-मिली केश धोनेकी सामग्री व्यवहारके कारण पक्षाघात ग्रस्त हो पडते हैं, उनका शूलका दर्द और पाक्षाघातिक दुर्बलता इससे अच्छी होती है। बहुत वर्ष अभी नहीं हुए हैं, कि श्वेत-प्रदरके लिये स्त्रियाँ सीसेके एसिटेटका (Acetate of lead) व्यवहार करती थीं, पर कितनों ही को यह इतना असह्य हो जाता था, कि इसका व्यवहार ही छोड दिया गया। इस स्पर्श-असहिष्णु अवस्थाके कारण जो उपसर्ग पैदा हो जाते हैं, ऐल्यूमिना उनका जबर्दस्त प्रतिविष है।

मल और मलान्त्रकी अवस्थामें भी सार्वाङ्गिक अवस्थाकी तरह ही यह इतनी सदृश है, कि कुछ आवश्यक विषयके सिवा और कुछ कहनेकी ही नहीं

रह जाता। आप यह अन्दाजा लगा सकते हैं, कि इस दवामें मलद्वारके फटनेका लक्षण होगा, आप स्वभावसे ही इनकी आशा कर सकते हैं, जब कि आप इसपर विचार करें गे, कि इसके रोगीमें किस ढङ्गकी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ और तन्तु उत्पन्न होते हैं। इसके रोगीको बहुत ज्यादा कब्जकी तकलीफ़ रहती है, बहुत काँखना पड़ता है, श्लैष्मिक-झिल्ली मोटी और फूली रहती है और इसीलिये मल द्वार फट जाता है। जब आप शरीर-विधानमें किसी दवामें ऐसी अवस्था उत्पन्न करते और लाते देखे, तथा इस तरहकी श्लैष्मिक-झिल्ली उत्पन्न करते पाये, जो मल-द्वारमें फटे घाव उत्पन्न करे, तो जबतक आप उस दवासे मल-द्वारके फटे घावको आरोग्य न कर दे, तबतक यह देखनेके लिये ठहरनेकी जरूरत नहीं है, कि यह दवा उसे ठीक बैठती है या नहीं। आपको यह देखनेके लिये रैपर्टरी नहीं उलटना होगा, कि इस दवाने मल-द्वारके फटे घावपर क्या क्रिया की है। दवाओंके साधारण ज्ञानसे ही आपको मालूम हो जायगा, कि इससे रोगीको आराम हो जाना चाहिये, क्योंकि इससे चर्म और श्लैष्मिक-झिल्लियोंको एक ऐसी अवस्था उत्पन्न होती है, जैसा कि मल-द्वारके फटे घाववाले रोगीको होनी ही चाहिये। चमड़ा कड़ा पड़ जाता है, उसमें जखम हो जाता है, तथा वह बेढङ्गा और अस्वस्थ्य हो जाता है, कब्जियत पैदा हो जाती है और इस तरह, इस प्रणालीसे औषधिका अध्ययन करनेके बाद, आपको मल-द्वारका फटा घाव इसे आरोग्य करते देख, कभी आश्चर्य न होगा। आपको यह भी विचारना चाहिये, कि दूसरी किन दवाओंमें समस्त जव-शरीरकी यह अवस्था पैदा हो जाती है और देखना चाहिये, कि दूसरी कौन-कौन दवाएँ हैं, जिससे ये फटे घाव आरोग्य हो सकते है। यदि आप **नाइट्रिक-एसिड, कास्टिकम** और **ग्रैफाइटिस** की प्रकृतिपर ध्यान दें गे, तो आप देखें गे, कि उन्होंने फटे घाव आरोग्य करनेमें क्यों कमाल दिखाया है। मेटिरिया-मेडिकाके अध्ययनकी यही प्रणाली है। देखिये,—यह मनुष्य, उसके यन्त्र और तन्तुओंपर क्या क्रिया करती है।

"बार-बार पेशाब लगना।" "पाखानेके समय काँखते वक्त पेशाब निकल जाता है अथवा बिना इस तरह जोर लगाये पेशाब नहीं कर सकता।" यह एक बहुत बड़ा लक्षण है, यह एक विचित्र लक्षण हैं और प्रथम श्रेणीका विशेष लक्षण कहा जा सकता है। अपना मसाना खाली करनेके लिये रोगीको

पाखानेके वक्त कांखना ही पड़ता है। "पेशाब तीखा और क्षय करनेवाला होता है।" "मसाना और सङ्गमेन्द्रियमें कमजोरी मालूम होती है।" "मूत्र-नलीमें सूजन और उससे हलका पीला पीव निकलता है।" "पेशाब होनेके साथ-साथ जलन।"

पुं-जननेन्द्रियके लक्षण हैं,—कमजोरी, ध्वज-भङ्ग और रातमें स्वप्न-दोष। जब बहुत अधिक इन्द्रिय-परिचालन या अत्याचारोंके कारण सङ्गमेन्द्रिय दुर्बल हो पड़ती है, उस समय यह फायदा करती है। मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि (prostate gland) में भरापन रहता है और वह बढ़ी हुई रहती है। इसके अलावा इस मुखशायी-ग्रन्थिकी और भी बहुत-सी गड़बड़ियाँ रहती हैं, जिनके साथ मलद्वार तथा जननेन्द्रियके बीचकी सीवनकी जगहपर भरापन मालूम होता है। सङ्गमके बाद मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी जगहपर असुखकर भाव और तकलीफ-सी मालूम होती है। वीर्यपातके समय या बाद अथवा रेत'-स्खलनके बाद तकलीफ होती है। कामेच्छा घट जाती है और कभी-कभी तो बिलकुल ही नष्ट हो जाती है। सङ्गमेन्द्रियकी पाक्षाघातिक दुर्बलता अथवा अर्द्ध-पक्षाघात—यही अवस्था, जो सभी उपसर्गों के साथ इस दवामें है। "कष्टकर मल-त्यागके समय मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे रक्त-स्राव। रातमें लिङ्गमें कष्टदायक कड़ापन।"

इस दवासे स्त्रियोंको होनेवाली बहुत-सी बीमारियाँ भी आरोग्य की जा सकती हैं, पर उनकी तकलीफें ज्यादातर श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहसे सम्बन्ध रखती हैं। इसका एक नमूना श्वेत-प्रदर है। बहुत ज्यादा कटु, खाल उधेड़नेवाला, पीला, श्वेत-प्रदरका स्राव होता है, इतना ज्यादा प्रदरका स्राव होता है, कि वह जघातक चू पड़ता है और यह स्राव लगकर वह जगह लाल और प्रदाह-ग्रस्त हो जाती है। जरायु-मुखमें जखम, श्लैष्मिक-झिल्लियाँ कमजोर और फैली रहती हैं और उनमें सहजमें ही घाव पैदा हो जाता है। सभी अङ्ग दुर्बल अवस्थामें रहते हैं। बन्धनियोंके ढीलापनके कारण नीचेकी ओर खिंचनेका भाव रहता है, भार मालूम होता है, श्रोणि-गह्वर भारी मालूम होता है। स्राव साधारणत गाढ़ा और पीला होता है, पर यह अण्ड-लालकी तरह, सूतेकी तरह, अण्डेके सफेद अंशकी भाँति, बहुत अधिक मात्रामें और कटु भी हो सकता है। "पारदर्शक श्लेष्मा" "श्वेत-प्रदरका स्राव क्षय करनेवाला और बहुत ज्यादा, एँड़ीतक बहता चला आता है।" दिनके

समय यह भरपूर देखनेमें आता है, क्योंकि ये उपसर्ग चलने या खड़े होनेके समय ज्यादा हो जाते हैं। यह वास्तवमें कोई आवश्यक लक्षण नहीं है, बल्कि एक साधारण अवस्था है। मासिक ऋतु स्रावके बाद उस स्त्रीकी अवस्था सुधरते सुधरते दूसरा महीना आ जाता है। उसकी सभी पेशियाँ कमजोर रहती हैं, उसमें कोई दम नहीं मालूम होता। यह करीब करीब चालीस बरसकी उमरवाली उन स्त्रियोंके लिये फायदेमन्द हैं, जिनका मासिक स्राव बन्द होनेका समय आ पहुँचा है। ऋतु-काल पिछड़ता जाता है, स्राव बहुत थोड़ा होता है, इतनेपर भी होता है। बहुत ज्यादा तकलीफ होती है और ऋतु कालमें रोगिनीकी अवस्था बहुत कष्ट-पूर्ण हो जाती है। ऋतु-स्रावके बाद शारीरिक और मानसिक क्लान्ति ऐल्यूमिनाका एक मजबूत निर्देशक लक्षण है। इसके अलावा, यदि औरतको सुजाककी बीमारी है और दवा देनेवाली चिकित्साके कारण उसका भोगकाल बढ़ा दिया गया है, तो ऐल्यूमिना उसकी लाभदायक दवा है। अबतक कुछ-कुछ लाभ करनेवाली दवा देकर उसे आराम पहुँचाया गया है, पर ऐसी कोई दवा नहीं पड़ी है, जो गहराईतक पहुँचकर रोगको निर्मूल कर दे, क्योंकि बीमारी बार-बार दोहराती है। बार-बार जो स्राव दोहराता है, पल्सेटिला या अन्य दवाएँ देनेपर कुछ दिनोंतक अच्छा रहता है और खासकर सुजाकके कारण थूजा देनेपर भी कुछ रुकता है। यह सब प्रयोग "वह बीमार" है, इस ढङ्गसे नहीं हुए हैं। रोगिनी क्लान्त और श्रान्त रहती है और अब आप सम्पूर्ण रोगिनीको जाँच करें और उसमें यदि आपको अर्द्ध-पाचावातिक अवस्था दिखाई दे तथा आराम पहुँचानेवाली दवासे रुका हुआ स्राव बार-बार होता दिखाई देता हो, तो स्त्री और पुरुष दोनोंके लिये ही इसी दवापर ध्यान दीजिये।

पुरुषोंके स्रावमें किसी तरहका दर्द नहीं होता। सुजाकका मवाद आना बहुत दिनोंतक जारी रहा, गया, आया, पर अब ऐसी अवस्था है, कि कई बूंद मवाद आता है, पर दर्द नहीं होता। इस दवाने ऐसे बहुत-से पुराने रोगी आरोग्य कर दिये हैं। डरानेवाला पुराना सर्दीका स्राव। हर जगहकी श्लैष्मिक-झिल्ली रक्त-सञ्चय होनेवाली अवस्थामें और कमजोर रहती है।

गर्भवतियोंकी कुछ तकलीफोंमें भी यह लाभ करता है। कोई कब्जकी बीमारी न रहनेवाली स्त्री भी जब गर्भवती हो जाती है, तो उसे कब्जकी

शिकायत हो जाती है, साथ ही ऐल्यूमिनाके सभी चरित्रगत लक्षण अर्थात मलान्त्रकी क्रिया न होना, उसमें भीतरकी चीजें बाहर निकाल देनेकी शक्तिका न रहना प्रभृति लक्षण आ जाते हैं। उसे उदरकी पेशियोंसे काम लेना पड़ता है और बहुत देरतक काँखते रहना पड़ता है। इसके अलावा, बच्चेमें भी इसी तरहका काँखनेका भाव रहता है। नये पैदा हुए बच्चे या कई महीनोंके बच्चोंमें आप ऐसे लक्षण देखेंगे, जिनमें ऐल्यूमिनाकी जरूरत रहती है। जब कोई दूसरी दवा नहीं सूझ पड़ती, तो बच्चोंके कब्जमें यह साधारण रूपसे व्यवहार की जाती है, बच्चा काँखता है, जोर लगाता है और मल निकाल देनेकी हर तरहकी कोशिश करता है। मलकी परीक्षा करनेपर वह कोमल और सहजमें ही निकल जानेवाला मालूम होता है।

इसमें गलेमें रूखापन, स्वरबद्धता तथा स्वरयन्त्रकी पाक्षाघातिक दुर्बलताका लक्षण भी है। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, भग्न-स्वास्थ्यके कारण ही ऐसा हो जाता है। उसकी आवाज़ कमजोर रहती है और रोगी अगर गवैया रहता है, तो बहुत थोड़ी देरतक गा सकता है, बहुत थोड़ा परिश्रम कर सकता है, उसे सभी काम एक भार-से मालूम होते हैं। स्वर-तन्तुकी पाक्षाघातिक अवस्था रहती है, जो दृढ़तासे बढ़कर स्वर-रोध उत्पन्न कर देती है।

इसकी खाँसी और वक्षकी तकलीफें बहुत ही आश्चर्यजनक होती हैं। कुछ खाँसियोंके साथ बलगम निकलता है, पर इसकी खाँसी अकसर एक ही ढङ्गकी, सूखी, खुसखुसी खाँसी रहती है और एक लँझड़ानेवाली कष्टप्रद खाँसी रहती है, जो बरसोंतक लगी रहती है। यह सूखी और खुसखुसी खाँसी, खासकर जिस खाँसीके साथ कमजोरी भी शामिल रहती है, उसमें यह **आर्जेण्टम मेटालिकम**के सदृश है, पर **आर्जेण्टम मेटालिकम**की खाँसी दिनके समय आती है। ऐल्यूमिनामें ऐसा नहीं होता, इसकी खाँसी सवेरेके वक्त आती है। ऐल्यूमिनाकी खाँसीके लक्षण ये हैं:—"सवेरे सोकर उठते ही, खाँसी आने लगती है।" प्रत्येक दिन सवेरे बहुत देरतक सूखी खाँसी आती रहती है। खाँसी कड़ी, सूखी, खुसखुसी रहती है और रोगिनी तबतक खाँसती रहती है, जबतक उसकी साँस नहीं रुकती, के कर देती है और पेशाब निकल जाता है। यह लक्षण साधारणतः स्त्रियोंमें दिखाई देता है। "सूखी, खुसखुसी खाँसी, इसके साथ ही बार-बार छींक आना।" पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है —

"बढी हुई उपजिह्वा (कौआ बढना)", पर इसे ऐसा पढना चाहिये, कि "बढी हुई शुण्डिकाकी अनुभूतिकी वजहसे।" यह एक अनुभूति है, कि कोई चीज़ कण्ठमें सुरसुरा रहा है। एक ऐसी सुरसुरी या गुदगुदी मानो शुण्डिका (कौआ, घण्टी) बहुत लटक आयी है और वह रोगी आपसे यह भी कहेगा, कि उसका तालु भी बहुत लम्बा जरूर हो गया है। एक दूसरी बात भी प्राय उसी ढङ्गकी है—"इस अनुभूतिके कारण खाँसी आना, मानो कण्ठमें कोई चमडा लटक रहा है।" कभी-कभी जो तालुके सम्बन्धमें नहीं जानते, वे कण्ठमें कुछ पडे रहनेकी बात कहते हैं और जो तालुका ज्ञान रखते है, वे कहते हैं, कि घण्टी (शुण्डिका) बढ आयी है, पर दोनों ही एक विचार है। स्वर-यन्त्रमें भी गुदगुदी मालूम होती है, यह हमेशा गानेवालोंके सम्बन्धमें कहा जाता है। पक्षाघात या स्वर-यन्त्रसे बहुत ज्यादा काम लेनेके कारण अगर गला फँस जाये तो ऐल्यूमिनापर ध्यान देना चाहिये। आवाज़ गिर जाती है और कमजोर पड जाती है और जब सर्दी लग जाती है, तो एक विचित्र प्रकारकी ही सुरसुरी पैदा हो जाती है, ऐसे रोगियोंको ऐल्यूमिना बहुत फायदा करता है। ऐसी अवस्थामें ऐल्यूमिनाकी उपयोगिता जबतक होमियो-पैथिक चिकित्सकोंको न मालूम था, तबतक वे गानेवाले तथा वक्ताओंका गला फँसने, आवाज़ धीमी पडने और बहुत कँपकँपी होनेपर **आर्जेण्टम मेटा-लिकम**का ही प्रयोग करते थे। यहाँ मुझे **रसटक्स**के विषयमें भी कुछ कह देना चाहिये, मुश्किल है, कि फिर यह ध्यानमें आये। सर्दी लग जानेके बाद बहुत-से पुराने गवैयाकी आवाज़में कमजोरी रह जाती है। यह गाना आरम्भ करनेपर उन्हें मालूम होती है। गाना आरम्भ करनेके समय उनकी आवाज़ कमज़ोर और रूखी रहती है, पर कुछ देर गाते रहनेपर यह अवस्था सुधर जाती है। इन सब रोगियों, पादडियों, वकीलों, उपदेशक प्रभृतिको **रसटक्स** दीजिये। आवाज़ गरमाते ही वे ठीक हो जाते हैं, पर वे कहते हैं, कि ठण्डी जगहमें जाकर कुछ देरतक आराम करनेके बाद जब मैं फिर गाना आरम्भ करता हूँ, तो मेरी अवस्था पहलेसे बदतर हो जाती है।" अगर वे बहुत गर्म जगहमें रहते और आवाज़से काम लेते रहते है, तो उनकी आवाज़ अच्छी रहती है। यह **रसटक्स**की सार्वाङ्गिक अवस्थासे मेल खाता है। एक प्रकारका स्वर भङ्ग और भी होता है, जो ऐल्यूमिना और

आर्जेण्टम मेटालिकमके पाद्माघातिक स्वर-भङ्गसे कुछ भिन्न ही रहता है। यह स्वर-भङ्ग भी, जिसका मैं जिक्र कर रहा हूँ, उसी श्रेणीके मनुष्योंको होता है, आवाज़को काममें लानेके आरम्भमें, उन्हें ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें कुछ बलगम आ गया, जिसे खखारकर साफ कर देनेसे आवाज़ ठीक-ठीक काम करने लगेगी। स्वर-रज्जु, काम लेना आरम्भ करनेके समय बलगमसे ढकी रहती है, उसे निकाल फेंकनेपर वे अच्छा काम कर सकते हैं, जबतक कि वे स्वर-रज्जुसे काम लेते जाते हैं। यह **फास्फोरस**का लक्षण है। ऐसे रोगियोंको आवाज़से काम लेनेपर दर्द होता है। स्वर-रज्जुमें गति होनेपर दर्द होता है और स्वर-यन्त्रको छूनेसे दर्द होता है। कभी-कभी तो यह दर्द इतना स्पष्ट हो जाता है, कि आवाज़ निकालनेकी चेष्टा करते ही ऐसा मालूम होता है, कि किसीने छुरी मार दी। इसलिये स्वर-भङ्गका प्रभेद भी पूरी तरह निर्णय कर लेना चाहिये। होमियोपैथी एक विवेचनकी सामग्री है।

सीनेका घावकी तरह दर्द, जो बोलनेपर बहुत बढ जाया करता है। सीनेकी मांसपेशिक शक्तिमें कमजोरी रहती है, फेफड़े भी कमजोर मालूम होते हैं और सीनेमें भी कमज़ोरी मालूम होती है, जोरसे बोलना सीनेकी तकलीफ बढा देता है।

पीठ और प्रत्यङ्गोंसे सम्बन्ध रखनेवाले लक्षण भी अत्यन्त विचित्र हैं। साधारण ढङ्गसे मैं उन्हें बता चुका हूँ। मेरुदण्डमें जलन, पीठमें दर्द, पीठमें जलने और सुई गडनेकी तरह दर्द। रोगी इसे इस तरीकेसे कहता है — "पीठमें दर्द, मानो निम्न कशेरुकाके भीतरसे गर्म लोहा घुसाया जा रहा है।" वात-रज्जु, अर्थात सुषुम्ना (spinal cord) के प्रदाहकी उस अवस्थामें इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है, जिससे प्रकट होता है, कि झिल्लियोंपर भी बीमारीका हमला हो गया है। इस दवाकी एक दूसरी चीज़ सुषुम्नाका प्रदाह है अर्थात यह एक विख्यात अवस्था है, पट्टी बँधी रहनेकी तरह अनुभव होना, समूचे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें, जहाँ तहाँ पट्टी बँधे रहनेकी तरह अनुभूति इसका एक साधारण लक्षण है। शरीरके चारों ओर पट्टी कसी रहनेकी अनुभूति उपदाहकी अत्यन्त स्पष्ट अवस्था और सुषुम्नाके प्रदाहका चरित्रगत लक्षण हैं। सुषुम्नाके उपदाहके साथ ही स्थान-स्थानपर स्पर्श सहन न होना। कितनी ही जगहोंपर ऐसा दर्द होता है, मानो मेरुदण्डमें गर्म लोहा घुसाया जा रहा है।

सुषुम्नामें दर्द, पाक्षाघातिक दुर्बलता, बढता हुआ पक्षाघात और सम्पूर्ण पक्षाघातके साथ सुषुम्नामें छेदने और फाडनेकी तरह दर्द।

"चलनेके समय तलवेमें दर्द, मानो तलवे बहुत कोमल और फूले हुए है।" "चलनेके समय एँडीका सुन्न हो जाना, घुटने काँपना"—ये सब साधारण दुर्बलताकी बाते है। "बैठे रहनेपर मानो प्रत्यङ्ग सो जाते हैं।" जब कभी कोई प्रत्यङ्ग किसी चीज़से दब जायगा, वह सुन्न हो जायगा। रक्तका दौरान कमजोर रहता है, सञ्चालनशीलता कमजोर रहती है और स्नायुओंकी क्रिया भी दुर्बल रहती है, सभी चीजे सुस्त पड जाती है, बाहु और पैर भारी मालूम होते हैं। प्रत्यङ्गोंमें दर्द, मानो सन्धियोंको दबाकर हड्डियाँ पतली की जा रही है।" अब हम स्नायुओंके कुछ लक्षण बताते हैं, जिनसे जो बाते हम कह आये है, वे और भी स्पष्ट हो जायँगी। "शारीरिक उत्तेजना नहीं उत्पन्न होती, ताकत बहुत क्षय हो जाती है, खासकर खुली हवामे घूमनेके समय।" "एकाङ्गी पक्षाघात, खासकर प्रसारिणी-पेशियोंका।" "गठियाके रोगियोंका वातज और कम्पनशील पक्षाघात।" गठियाके रोगी, जिनकी सन्धियोंमें गांठे पड जाती हैं, नष्ट स्वास्थ्यवाले रोगी, जिन्हें अर्द्ध-पाक्षाघातिक सुस्ती रहती है। "मन तथा शरीरकी उत्तेजित अवस्था।" शरीरमें जहाँ-तहाँ कँपकँपी होती है। "धीमी, लडखडाती हुई चाल, जैसा तेज़ बीमारीके बाद हो जाता है।" उसे धीरे-धीरे सभी काम करने पडते है, जल्दी नही कर सकता। "इच्छा न रहनेपर भी हाथ-पैर हिलने लगते हैं।"

नीदमें भी सब तरहके सपने और गडबडियाँ लगी रहती है, अतएव, नींद भी बेचैन और विशृङ्खलित होती है। सोनेपर ताजगी नही आती, कलेजेमें धडकन होनेके साथ जागता है। "बहुत तरहके स्वप्न देखता है और बार-बार जाग पडता है, भयसे चौंक पडता है, बडबडाता और चिल्लाता है।" नींदके समय गर्दनकी पेशियाँ इतनी खिंच जाती है, कि माथा पीछे खिंच जाता है।" पाक्षाघातिक दुर्बलतावाले रोगियोंको ऐसा होता है, इस तरह गर्दनके पीछेकी पेशियाँ खिंच जानेके कारण उसकी नींद खुल जाती हैं, नींदके समय गर्दनके पीछे झटका लगता है।

इस दवाके रोगियोंमें ज्यादातर जैव तापकी बहुत कमी रहती है, ठण्डक ही रहती है, इतनेपर भी रोगी खुली हवामें रहना चाहता है। खूब कपडे पहने रहना और गर्म बने रहना चाहता है, पर खुली हवामें ही रहना चाहता

है। प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तन और जोरकी हवासे रोगीको बराबर सर्दी लग जाया करती है। कभी-कभी तो रोगी बरफकी तरह ठण्डा होकर बिछावनपर जा लेटता है, पर ज्योंही बिछावनमें वह गरमा जाता है, त्योंही खुजली और बिछावनकी गर्मीसे उसे इतनी तकलीफ़ होती है, कि उसे किसी तरह आराम नहीं मिलता। ये दो बीमारियें हैं, जो एक साथ मिली होती हैं। हाथ-पैरोंमें तथा हाथकी पीठ (करभ) का खूनका दौरान इतना कमजोर रहता है, कि शीत ऋतुमें हाथ बराबर ठण्डा रहता है तथा उनमें दर्दोरे और ऐसे फटे घाव हो जाते हैं, जिनसे खून निकलता है।

जघाके सामनेवाले अगका चमड़ा रूखा, उधड़ा और खुजलाहटसे भरा रहता है। यह कहा गया है, कि सूखा-मौसम तथा सूखी, ठण्डी ऋतु ऐल्यूमिनाके रोगियोंके उपसर्गों की वृद्धि कर देती है और तर ऋतुमें कभी-कभी तकलीफ घटी रहती है।

इस दवाके ज्वरके लक्षण कुछ विशेष स्पष्ट नहीं हैं। इसमें न तो बहुत जाडा ही लगता है, न जोरका बोखार ही आता है, लेकिन धीमें और सुस्त पुराने उपसर्ग और पुराने लक्षण स्पष्ट-रूपसे बने रहते हैं, कमजोर तथा भग्न-स्वास्थ्यवाले रोगियोंको रातमें और सवेरे बहुत पसीना होता है। सवेरे कुछ इनको सर्दी भी मालूम होती है। प्यासके साथ जाड़ा होता है।

चर्मका पुराना सूखापन इस दवाका एक विचित्र स्वरूप है। पसीना बहुत कम और शायद ही कभी होता है। जिन्हें बहुत अधिक और सुस्त करनेवाला पसीना होता है, उनके लिये यह उपयोगी नहीं है। यह कैल्केरियाके बिलकुल विपरीत है, क्योंकि उसमें बहुत ज्यादा पसीना होता है, पर इस दवाका रोगी, मेरुदण्डके और पाक्षाघातिक उपसर्ग रहनेके कारण, परिश्रमसे क्लान्त तो हो पड़ता है, बहुत सुस्त हो जाता है, लेकिन पसीना नहीं होता। आपको इच्छा हो, तो पसीना लानेके लिये उसपर ओढनोंका ढेर लगा दीजिये, पर वह केवल गरमा जायगा, खुजली जारी हो जायगी, पर पसीना नहीं होगा। बहुत थोड़ा पसीना। पसीना लानेकी शक्तिका बिलकुल ही न रहना। फटे घाव, दरारोंके साथ चमड़ेका पुराना सूखापन। सूखापनके कारण चमड़ा जीर्ण-शीर्ण, फटा और दरारोंसे भरा हो जाता है। करभ (हाथका पिछला भाग) के मोटे चमड़ेका अत्यन्त सूखापन रहता है और शीत ऋतुमें हाथ ठण्डा और बदरङ्ग हो जाता है।

ऐम्ब्रा ग्रिशिया।

(Ambra Grisea)

इस दवाको सम्पूर्ण रूपसे अध्ययन करनेपर ऐसा मालूम होगा, कि आप किसी ऐसेका चरित्रगत लक्षण अध्ययन कर रहे हैं, जो **समयके पहले ही** वृद्ध हो गया है। अकसर आप देखेंगे, कि पचास वर्षकी अवस्थाके ही किसी मनुष्यमें वे लक्षण उत्पन्न हो गये हैं, जो अस्सी वर्षकी अवस्थावाले मनुष्यमें उत्पन्न होने चाहते थे और इस दवाका अध्ययन करनेपर आपको मालूम होगा, कि उसी रूपका—अकाल-पक्वताका इसमें वर्णन है। हम कम्पन तथा विचित्र ढङ्गकी एक दुर्बलता, जिसका शब्दोंमें वर्णन नहीं हो सकता, देखते हैं—यह वार्द्धक्य है। रोगके कारण मनकी यह विशृङ्खलता नहीं हुई है, बल्कि वृद्ध पुरुषोंमें, उतरती जिन्दगीमें, जो एक अद्भुत अवस्था दिखाई देती है, यह वही है। इसमें कम्पन, झटका और मनकी एक स्वप्नकी भांति अवस्था और स्मरण-शक्तिकी कमी रहती है। इसका रोगी एकसे दूसरे विषयपर जाता है, कोई सवाल करता है और उसका जवाब पाये बिना ही दूसरा पूछ बैठता है। *इस तरह वह एक विषयसे दूसरेपर फाँदता जाता है।* इसे मनकी विशृङ्खलता कैसे कहा जा सकता है, यह मनको एक स्वप्न-सी अवस्था है, वार्द्धक्यकी एक अवस्था है। जवान आदमियोंके मनकी यदि ऐसी अवस्था दिखाई दे तो यह दवा फायदा करती है, जब कि मन उन्मत्त नहीं रहता, पर यह कमजोर तो रहता ही है, खासकर यह उन मनुष्योंके लिये उपयोगी है, जिन्हें *क्षणभरके लिये, तीव्र जिज्ञासा-प्रियता उत्पन्न हो जाती है* और **वे एकसे दूसरे विषयपर कूदा करते हैं।** अकसर रोगी मुझसे सवाल-पर-सवाल करता जाता है, पहलेके जवाबकी राह ही नहीं देखता, एक स्थिर न रहनेवाला, चञ्चल, बकवादी, जो इसपर *ध्यान भी नहीं* देता, कि मैंने उसके प्रश्नोंका उत्तर नहीं दिया है। मैं अपने मन-ही-मन कह देता हूँ, कि इस रोगीको ऐम्ब्रा ग्रिशियाकी जरूरत है। आजकलकी सामाजिक स्त्रियोंके मनकी ऐसी ही अवस्था इतनी अधिक रहती है कि आप सभी जगहोंपर यह देखकर आश्चर्यमें जा पड़ेंगे। एक वर्त्तमान सामाजिक

सुन्दरी युवती जो अपनी जान जानेपर भी अपने मोजेकी एँडीतक रिफू नहीं कर सकती थी, वही कुछ वर्षों में इस अवस्थामें जा पहुँचती है। यहाँतक कि ऐम्ब्रा भी उसे आरोग्य नहीं कर सकता, परन्तु एक प्रकारकी ऐसी स्नायविक बीमारी होती है, जो इन्ही लक्षणों द्वारा प्रकट होती है। इसे ऐम्ब्रा-ग्रिशिया आरोग्य कर देगा। इसका एक दूसरा रूप है, दबे हुए मनका गर्म मिज़ाजमें पर्यायक्रमसे बदलना, यह सम्भवतः बुढापेमें होता है। सुस्तीके बाद अत्यधिक उत्तेजनाका एक समय आता है, सभी चीज़ोंसे—आनन्द, शोक, मनुष्य प्रभृति सबसे उदासीनता पैदा हो जाती है। उदासीन व्यवहार करता है। ये ऐसी बातें हैं, जो खूब सम-चित्तवाले मनुष्यका भी कलेजा मसोस डालती है। वह इसपर आश्चर्य भी नही करता, कि इन आश्चर्यजनक चीज़ोंपर उसे उत्तेजना क्यों नहीं आती, ऐसी ही उसकी उदासीनताकी निश्चित अवस्था रहती है। **सवेरेके वक्त बहुत-सी तकलीफें बढ़ जाती है।** वह सुस्त और विकल-चित्त अवस्थामें सोकर उठता है, स्वप्नकी अवस्थामें रहता है और सन्ध्याके समय उसमें उन्मत्तताके लक्षण पैदा हो जाते हैं।

वृद्ध मनुष्योंके सरल अद्भुत **सरके चक्कर**की बीमारीमें, ऐम्ब्राका बहुत उपयोगिताके साथ बहुत व्यवहार होता है। इनका सर इतना चक्कर खाता है, कि राहमें निकल नहीं सकते, सवेरे सोकर उठनेपर इतना चक्कर खाता है, कि उन्हें पैरोंके सहारे खडे होनेके पहले कुछ देरतक ठहर जाना पड जाता है। यह बुढापेके कारण और असमयकी वृद्धता (अकाल वार्द्धक्य) के कारण सरका चक्कर है। ऐसा मनुष्य अगर किसी बातपर मन लगाना चाहता है, तो उसके विचार गडबडा जाते है। यह एक ऐसा चित्त-विभ्रम है, जिसमें **विचार-धारा अन्तर्द्धान हो जाती है।** उसे अपने विचारोंको उसी स्थानपर लानेके लिये कितनी बार चेष्टा करनी पडती है, तब कहीं किसी विचारपर अपना मन स्थिर कर सकता है, पर किसी विषयपर मन.सयोग मुश्किल रहनेपर भी उसे बाध्य होकर बैठे रहना और उन **अप्रीतिकर विषयोंको सोचे रहना पडता** है, जो जबर्दस्ती उसके मनमें उठते है, वह उनसे छुटकारा ही नही पा सकता, यह कुछ-कुछ **नेट्रम-म्यूरसे** सदृश हैं, पर **नेट्रम-म्यूर**का एक विचित्र स्वरूप यह है, कि दु खदायी घटनाओंको सोचनेमें रोगिनीको आनन्द आता है और उन्हें सोचती, वह

रातभर जागती पड़ी रहती है। कितनी ही मूर्त्तियाँ, कृत्रिम चेहरे, बिकट कल्पनाएँ, खाम खयाल और दृश्य उसे तङ्ग करते और जगाते रहते हैं। अर्द्ध-स्वप्नावस्थामें, अपने मनमें वह इन सुख-भङ्गियोंको धारण किये पड़ी रहती है। व्यापारमें गड़बड़ीके कारण सरमें चक्करके साथ ऐसी अवस्था हो सकती है अथवा माथेमें रक्त-सञ्चय और मस्तिष्क क्लान्त हो जानेके कारण भी ऐसी हालत हो सकती है।

इस दवामें एक बात यह भी है, कि **किसी दूसरे मनुष्यकी मौजूद रहनेसे रोगके लक्षण बढ़ जाते हैं**, इसके अलावा, **बातचीत करनेपर भी उपसर्गों की वृद्धि होती है।** रोगिनीके पाससे उसकी सेवा करनेवाली दाई जबतक हट न जायगी, तबतक उसे पाखाना न होगा। बहुत जोर लगानेपर भी किसीके सामने उसे पाखाना न होगा। **नेट्रम-म्यूरमें** किसी मनुष्यके सामने रोगीको पेशाब नहीं उतरता। इस दवाका यह एक साधारण स्वरूप है—चित्तका विकल रहना और दूसरे मनुष्योंके सामने कष्ट होना, आदमियोंका साथ रहनेपर चित्त-विकलता, ज्योंही वह आदमियोंके बीचमें पहुँचता है, त्योंही उसका चेहरा लाल हो जाता है, काँपता है, उसमें स्नायविक उत्तेजना पैदा हो जाती है और विचार गायब हो जाते हैं। इन लक्षणोंके साथ-ही साथ रोगी सोचता है, कि उसका दिमाग खराब होता जा रहा है और अन्तमें वह **उदासीन**, शोक पूर्ण और निराश होकर बैठ जाता है, जीवनसे विराग हो जाता है। उसे अपने जीवनसे घृणा मालूम होती है और वह मृत्युकी कामना करता है। 'घोर उदासी।" "दु खित, विषन्न, कई दिनोंतक रोता बैठा रहता है।" समयसे पहले बुढ़ापा आ जानेवाले भग्न स्वास्थ्य पुरुषोंकी ऐसी ही दशा रहती है। यह एक नष्ट स्वास्थ्यका चित्र है। अब यह सवाल उठता है, कि यदि ऐसा कोई रोगी मिले, जो इसी ढङ्गके काम करता हो या ऐसा ही दिखाई देता हो, तो क्या वह ऐसे समयपर आया है, कि आप उसे आरोग्य कर सकें ? आप तुरन्त देखते हैं, कि आपके सामने वह आदमी है जो नीचे ही उतरता जा रहा है और किसी-न-किसी प्रकारके उन्मादकी अवस्थामें जा रहा है। चिकित्सक जब किसी स्नायविक मानसिक अवस्थावाले ऐम्ब्रा ग्रिशियाके रोगीको देखता है अथवा पहलेके किसी मजबूत, बलवान मनुष्यको अब सिहरते, काँपते और उत्तेजित-चित्त

बहुत ज्यादा खून बहना।" "नाकमें सूखा रक्त इकट्ठा रहता है।" "नाकका बहुत दिनोंका लगातार बना रहनेवाला सूखापन, छींक आनेकी तरह बार-बार उपदाह।" नाकमें पुराना, सूखा, श्लैष्मिक-झिल्लियोंका प्रदाह, इसके साथ ही श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी क्षीण अवस्था रहना, भीतरकी तरफ नाक चमकीली और फटी-फटी रहती है।

बिना प्यासके ही मुँहका सूखा रहना, कण्ठमें निगलनेके समय दाँतसे काटनेकी तरह दर्द, कण्ठमें खाल उधड़नेका भाव, कण्ठकी तकलीफें सवेरेके वक्त बहुत बदतर हो जाती है। भोजनके बाद उपसर्गोंका बदतर हो जाना तथा गर्म पेयोंके बाद, खासकर गर्म दूध पीनेके बाद, शिकायतोंका बदतर हो जाना। "भोजनके बाद खाँसी और मुँह बन्द हो जाना।" कण्ठके लक्षणोंका एक विचित्र ही सम्मिलन रहता है। कण्ठमें सूखापन और बलगमका इकट्ठा होना, इसे निकालनेकी वह चेष्टा किया करता है और जब वह खखारकर श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करता तो झकलाता है और कभी-कभी कै कर देता है। खाँसीके कारण वमन, हरेक बार पाखाना होने बाद, पाकाशय-गह्वरमें कमजोरी मालूम होती है। पाकाशय-गह्वरमें एकदम खालीपनका भाव मालूम होता है। यकृत-प्रदेशमें गहरा दबाव मालूम होता है, यह सवेरेके वक्त ज्यादा हो जाता है, भोजनके बाद बदतर होता है और पाखाना होने बाद और भी बदतर हो जाता है। बहुत वायुके साथ, खासकर भोजनके बाद तलपेटमें तनाव या फूलनेका भाव मालूम होता है। पीनेके बाद भी कुछ लक्षण बहुत बढ़ जाते हैं, कभी-कभी तो ये उपसर्ग आधी रातके समय पैदा होते हैं, आँतोंमें गड़गड़ाहट और काटनेकी तरह मालूम होकर रोगी जाग उठता है। तलपेट ठण्डा रहता है, ऐसा अनुभव होता है, मानो तलपेटका सम्पूर्ण भीतरी भाग ठण्डा पड़ गया है। दूसरे वक्त, ठण्डक, तलपेटमें एक बगलमें मालूम होती है।

वृद्ध मनुष्योंकी, बद्धमूल प्रबल कब्जियत और खासकर उस अवस्थामें जब पाखाना होने वक्त कोई पास नहीं रह सकता। "बार-बार पाखाना लगता है, पर होता नहीं, इससे रोगिनी बहुत चिन्तित हो पड़ती है, इस समय किसी दूसरेका रहना असह्य हो जाता है।" स्वाभाविक पाखाना हो जानेपर भी तलपेटमें दबाव या खालीपनका भाव और तलपेटमें कमजोरी मालूम होती है, यह डकार आने या हवा खुलनेपर हलकी पड़ जाती है।

खून-मिला पेशाब, साथ ही पेशाबमें लाल तली जमती है। पेशाब जब होता है, तो उसपर बादलकी तरह सफेद पदार्थ दिखाई दिया करता है। पीलापन लिये भूरा रहता है और भूरा ही तलछट पड़ता है। "पेशाबमें खट्टी गन्ध आती है।" पेशाब मात्रामें बहुत ज्यादा होता है। "पेशाब होनेके साथ मूत्रनली और योनिमें जलन, चुनचुनी, खुजली और सुरसुरी होती है। जाँघोंके भीतरकी खाल उधड़ जाती है और उसमें यन्त्रणा होती है। "मुष्कमें बेतरह खाज होती है", कामेच्छा हुए बिना ही सवेरेके वक्त लिङ्गमें बेतरह कड़ापन आता है, इसके साथ ही जननेन्द्रियमें सुन्नपन रहता है। इग्नेशिया और नेट्रम-म्यूरके जैसे ही बहुत ज्यादा इधर-उधर भ्रमण करनेवाले लक्षण होते हैं। सामूहिक रूपसे यदि उनपर विचार किया जाये, तो वे सम्मिलित कर लिये जा सकते हैं, पर थोड़े लक्षण यदि एक बार लिये जाते हैं, तो वे आश्चर्यजनक रूपसे आपसमें विरोधी दिखाई देते हैं। इसकी धारणा करनेके लिये आपको समूची दवापर विचार करना चाहिये।

दो मासिक ऋतु स्रावोंके मध्यमें बहुत ज्यादा खून जाना। "जरा-जरा-सी घटनापर दो ऋतु-स्रावोंके बीचमें रक्त-स्राव होने लगता है," कड़े पाखानेके समय जोर लगाते वक्त योनिसे-रक्त-स्राव, यहाँतक कि कुछ ही दूर चलने या कुछ अधिक परिश्रम करनेसे ही रक्त-स्राव होने लगता है। नसें फैल जानेके कारण, मासिक ऋतु-स्रावके समय बायाँ पैर एकदम नीला हो जाता है, साथ ही पैरमें दबावका दर्द रहता है। "लेटनेसे जरायुके लक्षण बढ़ जाते हैं।" यह एक ऐसी चीज़ है, जिसकी आशा ही नहीं की जा सकती। ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा होता है। "समयके सात दिन पहले ही ऋतु-स्राव होने लगता है और इसके बाद जननेन्द्रियमें भयानक खुजली होने लगती है।" "भगोष्ठोंके फूल जानेके साथ यन्त्रणा और खुजली होना।"

इस दवाका एक दूसरा प्रत्यक्ष स्वरूप है, जिसको आप इस दवाके समस्त स्नायविक उत्तेजना और सुस्तीके लक्षणोंके साथ आशा कर सकते हैं, वह है, हृत्पिण्डके लक्षणोंके साथ श्वास-कष्ट, साँस लेने और छोड़नेमें तकलीफ, एक तरहका दमा, थोड़े ही परिश्रमसे यह पैदा हो जाता है। सङ्गमकी चेष्टा करनेपर दमाका दौरा होता है।

"स्वर-यन्त्र तथा टेटुआमें खुजली, खरोंच और यन्त्रणा।" "कण्ठ, स्वर-यन्त्र तथा टेटुआमें सुरसुरी।" इसमें हर जगह खुजलाहट होती है और यह

खुजलाहट बहुत कुछ एक रेंगनेकी तरह होती है। "बच्चों तथा वृद्ध मनुष्योंका दमा, दुर्बल, कम्पनशील तथा कमजोर मनुष्योंका।" श्वास-प्रश्वासके समय सीनेमें सीटीकी तरह आवाज होना। "आक्षेपयुक्त खाँसी।" **तीव्र आक्षेपिक खाँसी, इसके साथ ही बार-बार डकार और स्वर-भङ्ग।"** इस ढङ्गकी खाँसी, अधिकतर स्नायविकताके कारण आती है। इस खाँसीके साथ उत्तेजना, स्नायविकता और कम्पन रहता है, जिससे किसी तजुर्बेकारको आश्चर्यसे देखना पडता है, कि इसे कोई मस्तिष्क या मेरुदण्डका रोग तो नहीं है। स्नायविक खाँसी, जैसी कि मेरुदण्डके उपदाहके समय अकसर आया करती है। स्वर-यन्त्रके सकोचनके कारण खाँसी, इसके बाद ही बहुत ज्यादा सफेद बलगम निकलता है। यह रह-रहकर आनेवाली आवेशिक खाँसी है, बहुत-कुछ कुकुर खाँसी (Whooping Cough) की तरह आती है। थोडे ही परिश्रमसे, सङ्गीतसे और उत्तेजनासे दमा-जनित श्वास-कष्ट, माथेमें रक्त-सञ्चयके साथ खाँसी। कुछ सोचने या चिन्ताके कारण खाँसी आने लगना।

इन लक्षणोंके प्रकट होनेके थोडे ही दिन बाद यह रोगी दुबला होता और सूखता जायगा। यह इतना सूख जाता है, कि उसका चमडा सूखे गो-मासकी तरह हो जाता है। इन सबके साथ उसे कम्पन और हिलनेका लक्षण भी रहेगा।

छातीकी बायीं तरफ भीतर गहराईमें रोगी फाडनेकी तरह दबावकी शिकायत करता है, छातीमें खाल उधड जानेका भाव, खुजली, सुरसुरी। खुजली, यदि रोगी उस स्थानको छूना या खुजलाना चाहता है, तो उस समय इधर-से-उधर हट जाया करती हैं।

आपको यह जानकर जरा भी आश्चर्य न होगा, कि थोडा भी परिश्रम करनेपर, उत्तेजनासे, सङ्गीतसे या मनको किसी विषयपर लगानेकी चेष्टा करनेपर, इसके रोगीके कलेजेमें धडकन होने लगती है, साथ ही कपकपी भी होने लगती है। यह धडकन उसे हाथ पैरोंतकमें अनुभव होती है, उसकी समूची देह काँपती है, उसके हाथ-पैर फडकते है, उसे अपनी हर जगहकी धमनियोंमें यह कम्पन मालूम होता है और उसके कलेजेकी धडकनके कारण श्वासमें दबाव पैदा हो जाता है।

प्रत्यङ्ग सब महजमें ही सुन्न हो जाते हैं, जरा-सा भी दबानेपर ये सो जाते हैं, जरा-सा ही एक-पर-एक अङ्ग रखनेपर ही सुन्न हो पड़ते हैं। हाथ पैरोंमें सर्दी, कम्पन और कड़ापन रहता है, अंगुलियोंके नख भगुर (टूटनेवाले) और कुंचित (सिकुड़े) हो जाते हैं, लेटनेपर बाँहें सुन्न हो जाती हैं, जांघ तथा घुटनेकी खोखली जगहपर घाव-जैसी यन्त्रणा तथा खाल उधड़ जानेकी तरह हो जाता है। निम्नाङ्गमें भार और पाक्षाघातिक दुर्बलता मालूम होती है। रोगी वृद्ध हो जाता है, बुढ़ापा बढ़ता आता है। इस दवाने मध्य वयस मनुष्योंको होनेवाला आरम्भिक कम्पन आरोग्य कर दिया है। इसने मांस पेशियोंकी शक्तिके क्षय हो जानेके साथ होनेवाले प्रत्यङ्गोंके सो जाने" का भाव और रक्तका दुर्बल दौरान आरोग्य कर दिया है। उन बच्चोंके लिये यह बहुत लाभजनक होती है, जो उत्तेजनशील, स्नायविक और कमजोर होते हैं। 'क्षीण व्यक्तियों" तथा "वृद्ध व्यक्तियों और बच्चोंके लिये" लाभदायक है।

ऐमोनियम कार्बोनिकम।

(Ammonium Carbonicum)

यदि हमलोग पुरानी पद्धतिसे (एलोपैथिक) इलाज करते होते और ऐमोनियम कार्बकी कितनी ही रूपोंमें आश्चर्यजनक उड़ायी (वायु-परिणामशील) प्रकृतिपर विचार किये होते, तो इसको मूर्च्छा तथा साधारण रोगोंमें आराम पहुँचानेवाला ही समझ लेते तथा बारहसींगेके (hart shores) रूपमें इसे भी हृद्रोगों तथा कुछ दूसरी स्त्रियोंकी बीमारोमें प्रयोग करते, पर ऐमोनियम-कार्ब एक गहराईतक काम करनेवाली सार्वाङ्गिक दवा है--एक सोरा विष-नाशक है। इससे बहुत जल्द रक्तमें परिवर्त्तन हो जाता है, यह सम्पूर्ण शरीर-विधानको गड़बड़ा देता है और एक शीतादकी तरह प्रकृति बना देता है। इसके सभी स्राव कटु होते हैं, लार भी कटु होकर ओठोंकी खाल उधेड़ देती है, इस तरह ओठोंके कोने और बीचका भाग फट जाता है तथा ओठ उधड़े, सूखे और पपड़ी जमे हो जाते हैं। पलके, आँखसे खाल उधेड़नेवाला रस-स्राव होने और लगनेके कारण आँखकी पलकोंमें जखम हो जाता है, सूख जाती है

और उनमें दरारे पड़ जाती हैं। मल भी कटु और खाल उधेड़नेवाला होता है। मासिक रज'-स्राव और श्वेत-प्रदरके कारण स्त्री-जननेन्द्रियकी भी खाल गिर जाती है और घाव हो जाता है और चमड़ेपर जहाँ-कहीं जख्म हो जाता है और उससे जो रस चूता है, उससे जखमके चारो ओरकी खाल उधड़ जाती है। सभी तरहके रस-स्राव और स्रावोंकी यही खाल उधेड़नेवाली प्रकृति रहती है।

इस दवामें काले खूनका स्राव होता है। यह रक्त अकसर तरल रहता है, जमता नहीं, जरायु, नाक, मसाना और आँतोंसे इसी तरहका रक्त-स्राव होता है। खून काला रहता है, इससे प्रकट होता है, कि रक्तके दौरानमें बहुत गड़बड़ी है। शरीरपर नाना प्रकारकी चित्तियाँ पड़ जाती हैं, साथ ही पीलापन आ जाता है।

इसकी हृत्पिण्डपर तीव्र क्रिया होती है। जिसमें कलेजेकी धड़कन सुन पड़ती है और प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर धड़कन बढ़ जाती है। इसके साथ ही बहुत सुस्ती बनी रहती है। यह एक अद्भुत बात है, कि हमारे पूर्वज जानते थे, कि **ऐमोन-कार्ब** हृत्पिण्डपर आक्रमणके साथ होनेवाले श्वास-कष्टको दूर कर देता है और आजकल ऐमोनिया (नौसादरका पानी) का पानी या हरिनका सींग करीब-करीब वैसे ही लक्षणोंमें व्यवहृत होता है। वे इसे ताकत लानेवाली दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं, पर जब लक्षण मिलता है, तो एक ही खूब ऊँची खुराक काफी होती है। पूर्वके मनुष्य, हलके ढङ्गके नियुमोनिया (फुसफुस-प्रदाह) में जब बढ़ी हुई अवस्थामें पलटा खानेका समय आता था, तो बारहसींगेका सींग व्यवहार करना जानते थे। यह एलोपैथिककी पुरानी चिकित्सा है, पर कुछ रोगोंमें इसका होमियोपैथिक सम्बन्ध भी रहता है। नियुमोनियाके अन्तमें हृत्पिण्डकी क्रिया बन्द होनेके साथ सुस्तीकी भयानक अवस्थावाले रोगीको इसने एक बार आरोग्य कर दिया था और इसने एक बार एक रोगीको आरोग्य कर दिया था इसलिये सबके लिये और सदाके लिये यह दवा हो गयी।

रक्त-विघात हो जानेवाली अवस्थाका भी ऐमोनियम कार्बोनिकमसे सम्बन्ध है। विसर्प बहुत सुस्तीके साथ सांघातिक आरक्त-ज्वर, बहुत अधिक श्वास-कष्टमें यह अवस्था दिखाई देती है जिससे मालूम होता है, कि हृत्पिण्डकी गति बन्द होना चाहती है। इसके साथ ही शरीर-पटलपर अस्वाभाविक दाग

दिखाई देते हैं, क्योंकि रक्तवाहिनियाँ पाचाघातिक अवस्थामें रहती हैं। ग्रन्थियाँ बढ़ी रहती हैं और चेहरा मैला, फूला फूला और भरौया रहता है। शताब्दियोंसे ठीक ऐसी ही अवस्थाओंमें एलोपैथिक चिकित्सा द्वारा ऐमोनियम कार्बोनिकमका व्यवहार होता आया है और इसने अत्यन्त उपयोगिताके साथ अपना होमियोपैथिक सम्बन्ध भी दिखा दिया है।

इसके रोगियोंमें सहज कमजोरी, कमजोर हृत्पिण्ड और चीणता (दुबलापन) रहती है। दवाओंमें लक्षणोंका अभाव रहता है तथा क्रिया-फल भी नहीं मिलता। रोगीके हिलने डोलनेपर कलेजेमें धड़कन और साँसमें तकलीफ होने लगती है, इसलिये लेटे रहना पड़ता है। यह सिर्फ कमजोरीके कारण होता है। करीब डेढ़ बरसतक एक ऐसे ही रोगीके फेरमें मैं पड़ा रहा। शहरमें एक ऐसी औरत रोगिनी थी, जिसके ठीक ऐसे लक्षण थे। उसमें एक विचित्र प्रकारकी हृत्पिण्डकी कमजोरी थी और हिलने-डोलनेपर श्वास-कष्ट और धड़कन बढ़ जाती थी। मैं इस रोगिनीका इलाज कर रहा था, पर मैंने इसका पूरी तरह अध्ययन नहीं किया था। मेरी चिकित्सासे लाभ न होनेके कारण, मेरी चिकित्सा छोड़कर, वह एक अत्यन्त सुयोग्य स्नायविक रोगोंके विशेषज्ञके इलाजमें गयी। इसने उसे "विश्राम-चिकित्सा" (Rest-cure) पर रखा और कहा कि छ सप्ताहमें आरोग्य हो जायगी, पर छठे सप्ताहके अन्तमें उसकी अवस्था पहलेसे भी बदतर हो गयी। तब एक हृद्-रोगका विशेषज्ञ उसकी परीक्षाके लिये बुलाया गया। उसने कहा, कि यह सत्य है, कि हृत्पिण्ड खूब बलवान नहीं है, पर कोई यान्त्रिक बीमारी नहीं है, इसीलिये, यह मेरे इलाजका विषय नहीं है। इसके बाद एक फेफड़ेका विशेषज्ञ बुलाया गया और फिर तो सब तरहके विशेषज्ञोंसे उसकी परीक्षा करायी गयी। उसके सभी यन्त्रोंकी खूब जाँचाई हुई, अन्तमें यह निर्णय हुआ कि किसीमें कोई खराबी नहीं है, पर बेचारी रोगिनी अपनी बीमारी और कलेजेकी धड़कनके कारण चल नहीं सकती थी। उसे कुछ सूखी, खुसखुसी खाँसी आती थी, पर वह कुछ नहीं थी, क्योंकि उसके वक्षकी परीक्षा की गई और उसमें भी कोई दोष न पाया गया। लगातार तीन महीनोंतक तकलीफकी इस आगमें झुलसनेके बाद धीरे-धीरे उसकी अवस्था खराब ही होती गई। फिर मुझे बुलाया गया, क्योंकि उसके निवास-स्थानके बगलमें रहनेवाला परिवार मेरा ही भक्त था। मैं उस रोगिनीका अध्ययन करने लगा।

सके लक्षण अत्यन्त अस्पष्ट थे, पर उन कई लक्षणोंके अलावा और कुछ न
ला। अन्तमें मैंने ऐमोनियम कार्बोनिकम ही स्थिर किया और वह अट्ठारह
हीनोंसे इसी दवापर है। अब वह पहाड़पर चढ़ती है, जो चाहती है,
ही करती है और अब वह गृहस्थी करने जा रही है। स्नायविक अवसन्नता,
स्तिष्कका क्षय या चाहे जो कुछ निदान उसपर क्यों न लादा जाये, वह
स दवाके प्रभावसे बच गयी है। इसीसे आपको मालूम हो जायगा, कि
ह दवा कितनी गहराईतक काम करनेवाली है। एक खुराक छः सप्ताहसे
कर दो महीनोंतक उसपर क्रिया करती है और प्रत्येक बार उसकी अवस्थाको
ढतासे सुधारती जाती है।

प्रत्येक बार मासिक ऋतु-स्रावके समय घोर क्लान्ति आ जाना। हैज़ा या
ज़ा-जैसे ही लक्षणवाली किसी दूसरी बीमारीका पहले दिन ही आक्रमण
ना, बहुत ज्यादा दस्त आते हैं। कभी-कभी तो वमनके साथ बहुत-सुस्ती
हती है, वेरेट्रमकी तरह क्षय, साथ ही ठण्डक, नीलापन, सुस्त पड़ते
ना और श्वास-कष्ट। अबतक जिस ढङ्गके श्वास-कष्टका मैंने वर्णन किया है,
ह दमा-सम्बन्धीय श्वास-कष्ट नहीं है, यह हृद्-दोषके कारण श्वास-कष्ट है।
त्पिण्डकी कमजोरीके कारण उत्पन्न होता है, पर इस दवामें दमाका भी
क्षण है और इसके दमामें भी एक विचित्रता रहती है। अगर रोगीवाला
मरा गर्म रहता है, तो श्वास-कष्ट इतना बढ़ जाता है, कि दम घुटनेकी तैयारी
जाती है। मानो साँसकी कमीकी वजहसे रोगी मर जायगा। आराम
लनेके लिये उसे बाध्य होकर ठण्डी हवामें जाना पड़ता है। दमा-सम्बन्धी
गोमें जब गर्म कमरेसे रोगीका श्वास कष्ट बढ़ता है, तब ठण्डेसे रोगीकी
रीरिक अवस्था और भी खराब हो जाती है। सर्दीसे शारीरिक उपसर्ग और
र-दर्द और भी ज्यादा बढ़ जाते हैं।

इस दवाका एक साधारण लक्षण है—हड्डियोंमें दर्द। हड्डियोंमें ऐसा
र्द होता है, मानो वे टूट जायँगी। ऋतुके प्रत्येक परिवर्त्तन अथवा मुँहके
पकी घटा-बढ़ीके कारण दाँतमें भयानक दर्द पैदा हो जाता है। जबड़े या
ाँतकी जड़ोंमें दर्द होता है, इसका एक प्रत्यक्ष स्वरूप है, केशोंका झड़ना,
ुलियोंके नाखून पीले पड़ जाते हैं, मसूढ़े दाँतसे अलग हो जाते हैं और
नसे खून बहता है। दाँत ढीले हो जाते हैं, जो सभी लक्षण शीताद-
कृति (scorbutic) से सम्बन्ध रखते हैं।

इस दवामें हिस्टीरिया (गुल्म-वायु) भी है। इस अवस्थामें यदि स्नायविक स्त्रियाँ अपने साथ ऐमोनियाकी शीशी रखें, तो कौन-सी आश्चर्यकी बात है। कितनी ही स्त्रियाँ ऐसा ही किया करती हैं, क्योंकि ज्योंही वे किसी बन्द घरमें जाती हैं, उन्हें बेहोशी सी आने लगती है और उन्हें बाध्य होकर अपना टोटका व्यवहार करना पडता है। यदि स्त्रियोंका यह आक्रमण हलके ढङ्गका होता है, तो यह हिस्टीरियाके कारण नहीं होता, बल्कि यह उस स्त्रीकी स्पर्श-असहिष्णु प्रकृतिके कारण होता है। पर यदि यह भाव अधिक बढा हुआ रहता है, तो यह हिस्टीरिया (गुल्म-वायु) के कारण होता है। बारहसींगेका सींग व्यवहार करनेपर हिस्टीरियाकी बेहोशी दूर की जा सकती है। ऐमोन-कार्बसे हृत्पिण्डकी क्रिया बलवान होती है और आराम मिलता है।

इसमें विषादका भाव भी भरा हुआ है। रोगिनी बहुत रोती है, बेहोशीका दौरा होता है, घबडाहट, बेचैनी और हिलने-डोलनेपर क्लान्ति आ जाती है। दूसरे मनुष्य जो कहते हैं, वह सुनना उसे बिल्कुल ही सहन नहीं होता, दूसरोंकी बातें करते सुननेपर वह बीमार हो जाती है। तर ऋतुमें मानसिक और शारीरिक, दोनों ही प्रकारकी बीमारियाँ बढ जाती हैं, उसे सर्द, तर और कनकनी-भरी ऋतु सहन नहीं होती। गठियाके उपसर्ग, स्नायविक रोग, सुस्ती, हृत्पिण्डकी बीमारियाँ, श्वास-कष्ट, सर-दर्द प्रभृति उपसर्ग ठण्डी कनकनी-भरी ऋतुमें बढ जाते हैं। मौसम बदलने या तर मौसममें रक्त सञ्चयकी वजहसे उत्पन्न टपकका सर-दर्द हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो ललाट और आँखोंकी राहसे मस्तिष्क बाहर निकल पडेगा। "ललाटमें इस तरहकी टपक और धमक होती है, मानो फट जायगा।" चलनेके समय सर-दर्द और खासकर वह सर-दर्द, जो मासिक ऋतु-कालमें उत्पन्न होता है, बढ जाता है। सवेरे सर-दर्द बढा रहता है। ऊपर बताये हुए लक्षणवाले ऐसे सर-दर्दमें यह दवा **लैकेसिस**से विपरीत सम्बन्ध रखती है, क्योंकि **लैकेसिस**में ये सब अवसादक अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं। पुरानी पाठ्य-पुस्तकोंमें आप यह उद्धरण देखेंगे—**लैकेसिस**से शत्रुभावापन्न।" इसका मतलब यह है, कि जब उच्च क्रममें **लैकेसिस**का प्रयोग किया गया है तथा उसने लाभ किया है, तो उसके बाद **ऐमोनियम-कार्ब** आरोग्यदायक लाभ नहीं दिखाता, बल्कि कभी कभी तो रोगीके लक्षणोंको मिलाकर और

विशृङ्खलितकर रोगीको बिगाड देता है। पर यदि लैकेसिसका प्रयोग बहुत ही निम्न-क्रममें किया गया है तथा स्थूल औषधिका ज़हर रोगीमें फैल गया है, तो उस समय यह दवा ऊँची शक्तिमें यदि प्रयोग की जाती है, तो क्रियामें सादृश्य रहनेके कारण प्रतिषेधक बन जाती है। रोगीके कितने ही ज़हरीले लक्षणोंको यह दूर कर देती है। यदि साँप काटे हुए मनुष्यकी आकृतिकी आप परीक्षा करें और फिर इस दवाकी लक्षणावलीकी जँचाई करें, तो आपको दोनोंमें बहुत अधिक समानता मालूम होगी। यह विख्यात है, कि साँप काटनेमें इस दवाका बारम्बार व्यवहार हुआ है। यह सत्य है, कि इससे सभी रोगी नहीं जी गये, पर इसने कुछ-न-कुछ किया अवश्य है, नहीं तो इसकी इतनी कीर्त्ति नहीं स्थापित हो जाती। इसे प्रतिषेधक या विष हरण करनेवालेके रूपमें न प्रयोग कीजिये, पर खूनमें ज़हर फैलनेका तथा अन्तरुत्सेकके साथ जीव-जन्तुओंके काटनेका लक्षण मिले या इरीसिपलाकी तरह काला तरल रक्त निकलनेकी प्रवृत्ति दिखाई दे, तो इसका प्रयोग कीजिये। साँपका विष फैलनेपर काला रक्त निकलनेकी प्रवृत्ति रहती है, यह रक्त जमता नहीं है।

इसमें आँखके भी बहुत-से लक्षण हैं। सर-दर्दके साथ आँखमें आगकी चिनगारियाँ, द्वित्व-दृष्टि, रोशनीका सहन न होना।" जैसी धातुगत प्रकृतिकी अवस्था मैंने बतायी है, वैसी ही या जब ये लक्षण मौजूद रहें, तो इस दवाने मोतियाबिन्द आरोग्य कर दिया है। इसने रोगीको आरोग्य कर दिया और अन्तमें आँखोंका चमकदार चित्रपत्र (retina) भी साफ़ हो गया है। आँखोंमें जलन, आँखमें टपक, आँखें घोर लाल।

यह श्रवण-शक्तिमें भी गडबडी पैदा कर देती है, सुननेमें कठिनता होती है और कानसे कटु तरल स्राव होता है।

जैसा कि ऊपर बताया है, नाकमें भी शीताद या श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रादाहिक अवस्था रहती है। नाकसे जो सर्दीका स्राव होता है, वह कटु रहता है। "तेज़ दर्द, मानो दिमाग ठीक नाकके ऊपर जोरसे उतरता आता है।" "सवेरे हाथ-मुँह धोनेके समय नाकसे खून गिरता है।" नहानेपर इसके बहुत-से उपसर्ग पैदा हो जाते हैं और एक स्पष्ट स्वरूप यह है, कि नहाने बाद त्वचापर लाल, रङ्ग-बिरङ्गे दाग पड जाते हैं। नहानेसे समूची देहमें जहाँ-तहाँ लाल दाग पड जाता है और नाकसे खून निकलता है। नहानेपर कलेजेकी धड़कन भी बढ जाती है।

सांघातिक आरक्त ज्वर, डिफ्थीरिया तथा रस-रक्त बिगड़नेवाली अन्य अवस्थाओंकी तरह कण्ठ दिखाई देता है। बैगनी, फूला, जखमोंसे भरा, उसमें खून बहता है, सड़नेवाला जखम रहता है। इसके साथ ही बहुत सुस्ती रहती है, तालुमूल तथा अन्य ग्रन्थियाँ बढ़ी रहती हैं, कण्ठ और गर्दनके बाहरी ओरकी ग्रन्थियाँ भी बढ़ी रहती हैं और ढेलेकी तरह मालूम होती हैं। डिफ्थीरियामें जब नाक बन्द हो जाती है, तो बच्चा श्वासके लिये हाँफता हुआ नींदसे जाग पड़ता है। यहाँ फिर लैकेसिससे और सर्प-विषवाली दवाओंसे इसका सम्बन्ध दिखाई देता है, क्योंकि इसके बाद ही तुरन्त रोगी सो जाता है और श्वास रुद्ध होकर जाग पड़ता है। डिफ्थीरियामें और बहुत अव सन्नताके साथ होनेवाली छातीकी बीमारीमें, नींदके बाद रोगीकी दशा बहुत बदतर हो जाती है।

बहुत जल्दी-जल्दी ऋतु-स्राव होता है। "मासिक रज-स्रावका रक्त काला होता है, अकसर थक्के-थक्के निकलते हैं।" श्वेत-प्रदरका स्राव कटु होता है। "तलपेट और योनि-पथमें बहुत तेज़ फाड़नेकी तरह दर्द होता है।" "भगनासामें उपदाह रहता है। जननेन्द्रिय फूल जाती है।" अब हम कुछ ऐसी बात बताते हैं, जिसका यहाँ वर्णन नहीं हुआ है, लेकिन यह बहुत ही आवश्यक लक्षण है,—यह है, सम्पूर्ण योनि-यन्त्रमें घावकी तरह दर्दकी अनुभूति। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है, कि उसके समूचे भीतरी भागकी खाल उधड़ गई है। यह एक घावकी तरह दर्दकी अनुभूति है, हमेशा ही छूनेपर दर्द नहीं होता। खासकर मासिक ऋतु-स्रावके समय ही भीतर गहराईतक दर्दका यह भाव अनुभव होता है। मासिक ऋतु-स्रावकी पूरी अवधितक जखमकी तरह दर्द और खाल उधेड़नेका भाव। "समयके पहले ही ऋतु-स्राव, बहुत ज्यादा, काला, अकसर थक्कोंमें होता है और उसके पहले पीसनेकी तरह और शूलका दर्द होता है।"

इस दवामें सर्दी और खाँसीके लक्षण भरे हुए हैं; साथ ही वक्ष और वायु पथोंमें बलगमकी बहुत घरघराहट होती है। प्रश्वासका दबाव, श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहके कारण श्वास-कष्ट, फेफड़ेकी छोटी कोशिकाओं और बड़ी नलियोंमें रक्त इकट्ठा होकर रक्त-सञ्चय हो जानेपर तथा छातीमें ऐसा बलगम भर जानेपर, जिसका निकालना मुश्किल होता है, अगर लक्षण मिलते हैं, तो खासकर यही एक दवा हो जाता है। छातीमें बहुत घरघराहट होती

है और बहुत कमजोरी मालूम होती है, चय रोगकी अन्तिम अवस्थामें आराम पहुँचानेकी यह बहुत उत्तम औषधि है, जब बहुत ठण्डक, अवसाद और वक्षमें दुर्बलता रहती है, तो ऐमोनियम कार्बोनिकामकी एक खुराक ही बहुत फायदा पहुँचा देती है। यह **स्टेनम**की भाँति वक्षमें दुर्बलताकी अनुभूति है। वह मुश्किलसे जोरकी आवाज़के साथ खाँस सकता है और **ऐण्टिम-टार्टकी** तरह कमजोरीके कारण वह बलगम निकाल नहीं सकता। थोडी दमासे उत्पन्न खाँसी।

इस दवाके उपसर्ग खासकर सवेरे ३ बजनेके समय उत्पन्न होते हैं, इसी समय खाँसी भी आती है। वृद्ध मनुष्य, जिन्हें छातीमें सर्दीकी शिकायत रहती है, उनकी बीमारी सवेरे २ बजनेके समय ही बढती है। इसके साथ ही कलेजेमें धडकन, सुस्ती रहती है और इसी समय ठण्डे पसीने और श्वास-कष्टके साथ उनकी नींद खुल जाती है। नाडी करीब-करीब नहीं मिलती है। हृत्पिण्डमें कमजोरी रहती है, चेहरा पीला और ठण्डा रहता है।

"बहुत कमजोरी।" रस-रक्त बिगडनेवाली तेज़ बीमारियाँ, सान्निपातिक ज्वर (टाइफायड), झिल्लीक प्रदाह (डिफथीरिया), आरक्त ज्वर, विसर्प प्रभृतिके साथ या अन्तमें दोषावह प्रतिक्रिया। उन बीमारियोंमें, जिनमें संकट-काल आ जाता है (Crisis), यदि रोगी खूब चुनी हुई दवा देनेपर भी घोर अवसन्न हो पडे, तो आपको ऐसा उदाहरण प्राप्त होता है, जब यह दवा स्नायविक सुस्तीमें आर्सेनिकमके साथ प्रतियोगिता करती है। ऐलोपैथिक साहित्यमें "हृद्क्रिया-रोध (Heart failure—धुकधुकी बन्द होना)" शब्द दिखाई देता है। वे कहते हैं, कि रोगी अच्छा तो हो रहा था, पर एकाएक धुकधुकी बन्द (हृद्-क्रिया-रोध) हो जानेके कारण मर गया। बहुतसे ऐसे मौके हैं, जिस समय, अगर समयपर ऐमोनियम कार्बोनिकमका प्रयोग होगा, तो रोगीकी जान बच जायगी।

"खुली हवामें घूमनेकी इच्छा नहीं होती।" बच्चे नहाना पसन्द नहीं करते, बिछावनकी गर्मीसे वातका दर्द और जाडा घट जाता है। "गर्म कमरेमें सर-दर्द अच्छा रहता है, बदन धोनेपर उपसर्ग सब लौट आते हैं, नाकसे खून जाने लगता है, हाथ नीले हो जाते हैं, शिराएँ फूल जाती हैं।" "ठण्डी हवामें उपसर्ग बढ जाते हैं।'

अब हम चर्मकी आकृतिका वर्णन करते है,—"शरीर इतना लाल रहता है, मानो आरक्त ज्वरके दाने हों।" "बदबूदार चिपटे जखम निकलते है, जिनमें ऐसी अनुभूति होती है, मानो कुछ गड रहा है।" "औंवाईके साथ मारात्मक आरक्त ज्वर, नींदमें हो ये आरम्भ हो जाते है।" "जब लघु-मस्तिष्कके लक्षण प्रबल रहते हैं, उस समय वृद्ध पुरुषोंका विसर्प-रोग।" जब किसी तेज़ बीमारीका इलाज किया जावे और शरीरपर विष-फोडा (कार्बङ्कल) या विसर्प-रोगकी तरहके उद्भेद दिखाई दे और रोगीको आराम न मिलता हो, तो समझना चाहिये कि खतरा है। जल्द हो कोई दवा खोज निकालनी चाहिये। किसी भीतरी रोगके कारण जब रोगी दुर्बल होता जाये, तो कोई बुरा अस्वस्थ्य फोडा या कार्बङ्कल (विष-व्रण) अथवा विसर्पके छालोंका निकल आना कुछ असाधारण बात नहीं है। रोगीको आराम पहुँचनेके बाद हो अगर ये न निकल आयें, तो भयको बात है। एक मारात्मक अवस्था इससे प्रकट होती है, जो आना हो चाहती है, जो अब रोकी नहीं जा सकती और यह तीव्रता नाश करके हो छोडेगी। ऐसी अवस्थाकी वृद्धिको रोकनेवाली दवाओंमें यह अन्यतम है। सच तो यह है, कि कोई भी दवा, जो लक्षण-समूहोंसे सादृश्य रखती है, वही प्रयोग करने योग्य औषधि है।

ऐमोनियम म्युरियेटिकम।

(Ammonium Muriaticum)

रक्त-वाहिनियोंको तरह हो समूचे शरीरमें रोगीको अकसर खौलनेका भाव मालूम होता है। रोगीको सर्दी सहन नहीं होती, खुली हवामें बहुत-से उपसर्ग बढ जाते हैं। गर्मीकी झलक मालूम होती है, जिसके अन्तमें पसीना होता है। फाडनेकी तरह दर्द और बहुत अधिक चुनचुनी बनी रहती है। श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जलन और खाल उधड जानेका भाव रहता है, कण्डराओंमें खोंचन या छोटी हो जानेका भाव अनुभव होता है, यह दीर्घ-कालतक कार्य करनेवाली दवा है, इसके कई विश्वास योग्य मानसिक लक्षण प्रकट हुए हैं। चिन्ता, चिडचिडाहट तथा कितने हो मनुष्योंके प्रति विराग,

माथेमें स्नायु-शूल और वातका दर्द, माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द, कनपटीमें सुई गड़ने और फाड़नेकी भाँति दर्द, खोपड़ी तथा शरीरके दूसरे-दूसरे भागोंमें खुजलाहट, खसड़ाकी तरह सारे शरीरमें दाने, लक्षण मिलनेपर यह झिल्ली-कोषकी सर्दीको आरोग्य करता है। आँखके सामने पीले दाग, धीमी रोशनी या चन्द्रमाकी रोशनीमें पलक तथा आँखके गोलेमें जलन, चमकीली रोशनीमें आँखोंके सामने धुँधलापन मालूम होता है। ठण्डी हवामें टहलनेके समय कानमें जलन, सुननेमें तकलीफ़, दाहिने कान, कण्ठ और स्वर-यन्त्रकी सर्दी।

बहुत छींक, पानीकी तरह जलन करनेवाला स्राव, इतनेपर भी नाक बन्द रहती है। स्वर-यन्त्रमें जलनके साथ सर्दीका स्राव, नाककी सर्दीकी, बँधी हुई दवाके रूपमें इसका व्यवहार होता था तथा कितने हो गलेके घाव तथा स्वर-यन्त्रके प्रदाहमें। इन बीमारियोंके लिये, प्राचीन समयमें, लाल ऐमोनियम बड़े-बड़े खण्डोंमें उत्पन्न किया जाता था। एक साधारण छुरीसे, कई टुकड़े एक गिलास पानीमें, खुरचकर गला लिये जाते थे। लक्षणोंपर ध्यान दिये बिना ही यह दवा दे दी जाती थी। कठिन सर्दी, बोखारके साथ हो या बिना ज्वरके हो, कितने ही बहुत जल्द आरोग्य हो जाते थे। अब इस दवापर ध्यान नहीं दिया जाता, इसके लक्षण खूब ध्यानसे अध्ययन करने चाहिये।

बहुत-सी शिकायतोंके साथ चेहरा बहुत पीला बना रहता है। चेहरेकी हड्डियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द, सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ निम्न-हनु और कर्णमूल-ग्रन्थिकी सूजन। ऐमोनियम-कार्बकी तरह मुँह और ओंठमें जलन और खाल उधेड़नेका भाव। जीभ फूली, यह नये गलक्षतकी बहुत ही लाभदायक दवा है, पर खासकर उस अवस्थामें यह ज्यादा फायदा करती है, जब लसदार श्लेष्मा और स्पष्ट जलनका लक्षण रहता है। गर्दन और गर्दनकी गाठोंमें टपक, बहुत सूजन, पीला चेहरा, कण्ठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, निगलनेके समय बहुत दर्द, प्यास रहे या न रहे—ये सब लक्षण रहनेपर, इससे विशेष लाभ होता है।

खाये हुए पदार्थकी डकार आती है और वमन होता है। भरापनके साथ भूख लगनेका भाव, यह एक पेट फूलनेकी अवस्था है। खालीपनका भाव, पेट और प्लीहामें चबानेकी तरह दर्द, तलपेटमें जलन, सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। वायुके कारण पेटका तना रहना, आँतोंमें बहुत गड़गड़ाहट,

वङ्क्षण-प्रदेशमें बहुत दर्द। मासिक ऋतु-स्रावके समय तलपेट और पीठमें दर्द, तलपेट मोटा, ढीला और भारी हो जाता है और निम्नाङ्ग क्षीण रहते हैं। पाखाना होनेके समय और बाद बहुत देरतक मलनाली और मलद्वारमें जलन तथा खाल उधेड़नेका भाव बना रहता है। मलद्वार तथा अण्डकोषके बीचकी सीवनी-सन्धिमें सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। कड़ा, टुकड़ा-टुकड़ा मल, पाखानेके समय निकालनेमें बहुत तकलीफ होती है, औदरिक पेशियोंसे जोर लगाना पड़ता है, इसकी भाँति सभी ऐमोनियाके लक्षणोंमें दर्द-भरा बवासीर रहता है। इसने ऐसा अतिसार आरोग्य किया है, जिसमें मल आँतोंकी खुरचनकी तरह, रक्त-भरा और पानीकी तरह पतला होता है, साथ ही सवेरेके सख्त हरे, चिकने दस्त आते हैं। **ऐमोनियम कार्बोनिकम**की तरह मासिक ऋतु-स्रावके समय अतिसार, पतले दस्त और कै। बढ़ी हुई मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि तथा वर्द्धित जरायुकी बीमारी इससे आरोग्य हो गयी है।

हर महीने बहुत जल्द ऋतु-स्राव हो जाता है, साथ ही पीठ और तलपेटमें दर्द होता है। बहुत कुछ **ऐमोनियम कार्बोनिकम**की तरह ही स्राव काला और थक्का-थक्का होता है। मासिक ऋतु-स्रावके समय अकसर आँतों और मलान्त्रसे रक्त-स्राव होता है, इसके साथ हैज़ाकी तरह लक्षण प्रकट होते हैं।

जरायुसे बहुत अधिक रक्त-स्राव, बहुत ज्यादा और बिना किसी दर्दके श्वेत-प्रदर। तलपेट और मासिक ऋतु-स्रावके सभी लक्षणोंके साथ बहुत ज्यादा वायु निकलता है और आँतोंमें गुड़गुड़ाहट तथा शूलका दर्द रहता है।

ये लक्षण खासकर पोली, दुबली-पतली और कमजोर औरतोंमें ही प्रकट होते हैं।

स्वर-यन्त्र तथा छोटी-छोटी श्वासनलियोंतक फैलनेवाली सर्दीकी बीमारीमें जिनमें सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द और जलन रहती है, तो यह लाभ करता है। स्वर-भङ्ग तथा स्वर-रोध, इसके साथ ही स्वर-यन्त्रमें जलन, स्वर-यन्त्रसे बराबर खखार-खखारकर बलगम निकाला करता है। बाहुओंसे काम लेने या हाथसे परिश्रम करनेपर श्वासमें तकलीफ, खुली या ठण्डी हवामें छातीपर भार मालूम होना। स्वर-यन्त्रमें लगातार सुरसुरीके कारण सूखी खाँसी, नित्य ही श्वास-रोध करनेवाली खाँसीका दौरा होना, कमजोर मनुष्य जो यक्ष्माकी ओर अग्रसर होते जाते हैं, जिन्हें रोज़ाना सूखी खाँसी आती है और नाड़ी तेज़ रहती है।

कमरकी रेखाके पास पीठमें तेज़ दर्द, यह रातमें बहुत बढ जाता है, कन्धोंके बीचमें ठण्डक मालूम होना।

प्रत्यङ्गोंमें सुई गडने, खींचने या फाडनेकी तरह दर्द, प्रत्यङ्गोंमें खींचन मालूम होना, निम्नाङ्गोंकी पेशियों और कण्डराओंमें तनाव रहना, चलनेके समय जांघके पिछले भागमें तनाव। रातके समय, बिछावनमें पैर ठण्डे हो जाना, रातके पिछले भागमें बहुत ज्यादा रात्रि-स्वेद (Night-sweats) होना, गर्मीकी झलक और बोखार।

यदि पाठक इसकी परीक्षा-कालके लक्षणोंको सावधानतासे अध्ययन करेंगे, तो इस दवाका बताये हुए मौकेपर ठीक-ठीक व्यवहार तो कर ही सकेंगे, साथ ही ऐसे भी कितने प्रयोग देखनेमें आयेंगे, जिनको नहीं बताया गया है।

ऐनाकार्डियम ओरियण्टेल।

(Anacardium Orientale)

यह दवा विचित्र मनोभाव और विचारोंसे भरी हुई है। इसमें मन दुर्बल मालूम होता है। यदि बुद्धि एकदम जड नहीं हो जाती, तो करीब-करीब जड हो गयी रहती है। ऐसा दिखाई देता है, मानो रोगी स्वप्नमें है, सभी बातें अद्भुत रहती हैं, बहुत धीमी गतिसे कोई बात समझता है, उत्तेजना स्पष्ट रहती है, हर चीज़से विचलित हो जाता है, शाप देता है, यादद्दाश्त कमजोर रहती है, क्षणभर पहलेकी भी बात भूल जाता है, उसकी सभी चेतना गायब-सी रहती है और वह इस तरह चारो ओर टटोलता है, मानो सपनेमें है। अवस्था बदला करती है, पर्यायक्रमसे अवस्था बदलती है। मनमें सुस्ती और शिथिलता बनी रहती है, हमेशा अपने मन-ही-मन कुछ तर्क-वितर्क किया करता है, उसके चरित्रमें स्थिर-चित्तता नहीं रहती, वह यह करे कि वह, यह स्थिर नहीं कर सकता। वह हिचकता है और अकसर कुछ भी नहीं करता, खासकर अच्छी या बुरी क्रिया वह निर्णय नहीं कर पाता। उसे ऐसा-वैसा करनेका आदेश देती हुई आवाजें

सुन पड़ती है और ऐसा प्रकट होता है, कि अच्छी और बुरी इच्छाओंके मध्यमें वह पड़ा हुआ है। उसकी दुष्प्रकृति उसे अत्याचार और अन्याय करनेके लिये उभाड़ती है, पर सद्इच्छा इसमें बाधा देती और रोक लेती है। इस तरह दो इच्छाओं और दो मनोभावोंमें द्वन्द्व बना रहता है। जब कोई मानव-प्रकृतिका जानकार इसका वास्तविक विश्लेषण करता है तो मालूम होता है, कि उस मनुष्यकी वाह्य इच्छा-शक्ति बिगड़ी हुई है, पर भीतरी इच्छा-शक्तिपर औषधिका प्रभाव नहीं पहुँच सकता। बाहरी प्रभावोंके कारण उसकी वाह्य-इच्छा हमेशा उत्तेजित रहती है, पर उसकी वास्तविक इच्छा, जिसमें कि उसकी चेतना है, इसे रोकती है और उसे इन मनोवेगोंको कार्यमें परिणत नहीं करने देती। इसका पता तो तभी ठीक-ठीक लगता है, जब इसकी क्रिया किसी वास्तविक अच्छे आदमीपर होती है। उसकी वाह्य-इच्छा जब जागरित होती है, तो एक द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है, पर किसी बुरे आदमीमें संयम नहीं रहता और उसमें ये लक्षण उत्पन्न भी नहीं होते।

मति-विभ्रम, एक कन्धेपर एक भूत और दूसरेपर देव-दूत बैठ जाते हैं। उसमें बुरे कामोंकी इच्छा होती है तथा शापने और कसम खानेकी अदम्य बासना पैदा हो जाती है। उसे जब गम्भीर रहना चाहिये, तब हँसता है, इस तरह तबतक जारी रहता है, जबतक वाह्य-इच्छाकी सारी सामग्रियाँ उलट-पलट नहीं हो जाती। भीतरी घबड़ाहट अर्थात भीतरी इच्छा, इस बाहरी हलचलके कारण चञ्चल बनी रहती हैं। "इच्छा तथा विवेकमें विरोध" यह प्रकट करनेकी चेष्टा है, जिसके विषयमें वह मनुष्य कुछ भी नहीं जानता। "ऐसा अनुभव करता है, मानो उसकी दो इच्छा-शक्तियाँ हैं।" यह अच्छी बात है। अन्तमें यह बाहरी इच्छाको नष्ट या बेकार बना देता है और जब कोई मनुष्य स्वाभाविक रूपमें बुरा होता है और ऐनाकार्डियमके बेकार करनेवाले प्रभावोंका भी उसपर असर रहता है, तो वह हिंसात्मक कार्य करता है। कोई दुराचारी उसके ज्ञान या विवेक द्वारा नहीं रोका जाता, बल्कि कानूनके भयसे वह रुका रहता है। ऐनाकार्डियम वाह्य इच्छाओंको बेकार बना देता है और उसे क्षीण बुद्धि कर देता है तथा वह अपने स्वाभाविक परिवर्त्तित मनके कारण ही हिंसात्मक कार्य करता है। इसने मनके एक हिस्सेपर ऐसी क्रिया की है, कि उससे बहुत-कुछ शिक्षा मिल जाती है। मैंने ऐनाकार्डियम, **आरम और आर्जेण्टम**से मानव मनपर होनेवाली दवाओंकी क्रियाका बहुत-

ज़हरका यह प्रतिविष है। समूचे शरीरमें दाने, पीली फुन्सियाँ साधारणत निकलती हैं। उद्भेदोंमें बहुत खुजली रहती है। **नैट्रम-म्यूर**की तरह तलहत्थीमें मसे निकलते हैं, त्वचामें बहुत जलन होती है। **रसटक्स**से इसके लक्षण इस सम्बन्धमें बहुत मिलते-जुलते दिखाई देते हैं।

ऐण्टिमोनियम क्रूडम।

(Antimonium Crudum)

इस पदार्थकी पूरी-पूरी परीक्षाको अध्ययन करते समय, आप यह देखकर चकित रह जायँगे, कि इसके सभी लक्षण पाकाशयमें ही अपना केन्द्र बनाते हैं। चाहे कोई भी शिकायत रोगीको क्यों न हो, पाकाशय उसमें अवश्य ही शामिल रहता है। दर्दसे उसका पाकाशय खराब हो जाता है और मिचली पैदा हो जाती है, सर-दर्द होता है, तो भी पेटमें कोई बीमारी रहती है, सभी रोगोंके साथ उसका पाकाशय बिगड जाता है और इसके विपरीत जब कभी उसके पेटमें गडबडी होती है, तो उसका समूचा शरीर बीमार हो जाता है। पाकाशयमें जो बीमारियाँ प्रकट होती हैं, उनमें इस दवाकी बहुत करके जरूरत पड़ा करती है।

सबसे आवश्यक तो उस **धातु**की श्रेणीके मनुष्यका मानसिक लक्षण है, जिसे इस दवाकी जरूरत रहती है। इससे मनका एक बहुत ही कठोर लक्षण पैदा हो जाता है और जीवित रहनेकी इच्छा ही नहीं रह जाती। चिकित्सक यह अच्छी तरह जानते हैं, कि बीमारी बढी हुई है, यदि रोगीमें जीवित रहनेकी इच्छा नहीं होती, तो उसे अपना जीवन भार मालूम होता है। जब मैं किसी रोगीको यह कहते सुनता हूँ—"डाक्टर साहब! यदि मैं मर जाता तो अच्छा होता।" मैं ऐसा रोगी नहीं चाहता, उसके शरीर-विधानमें कोई-न-कोई गहराईतककी बीमारी अवश्य है, जिसे हटाना मुश्किल है। यह एक भयानक लक्षण है और जब यह लक्षण पैदा हो जाता है, तो रोगीका मरना एक साधारण घटना हो जाती है। "जीवनसे घृणा होना।" यह लक्षण खासकर धीमे, लँभडानेवाले और सान्निपातिक ज्वरकी भाँतिके अविराम ज्वरमें मिलता

है। इस दवामें मियादी बोखार (टाइफायड) की सब तरहकी अवसन्नता है और इसमें लगातार बने रहनेवाले बोखार तथा स्वल्प-विराम और सविराम ज्वरके भी लक्षण हैं। इसमें **आर्सेनिकम**की तरह ही सुस्ती रहती है, पर **आर्सेनिकम**में मृत्युका भयानक भय छाया रहता है, परन्तु इसमें जीवन ही भार मालूम होता है और इस तरह ये दोनो ही दवाएँ अलग हो जाती हैं। **आर्सेनिकम**में हमेशा बेचैनी रहती है, किन्तु इस दवामें शायद ही कभी बेचैनी रहती है। **आर्सेनिकम**में बहुत तेज़ प्यास रहती है, इस दवामें प्यास बिलकुल नहीं है। इस तरह, यद्यपि दोनों ही दवाओंमें अविराम ज्वरमें बहुत ज्यादा सुस्तीका भाव है, तथापि हम देखते हैं, कि उनके स्वरूपमें इतना अन्तर है, कि दोनों एकदम अलग हो जाती हैं। ऐसा टाइफायड (मियादी बोखार) उन छोटी लड़कियोंमें जवानी आनेके समय कभी-कभी दिखाई देगा, जिन्हें हरित्पाण्डु रोग हो जानेकी सम्भावना रहती है। उन्हें भी जीवन भार मालूम होता है, लेकिन यह गुल्म-वायु रोग (हिस्टीरिया) के कारण, जीवन भार मालूम होता है। बहुत ही क्लान्तिका काल, कमजोरी और बेहोशीका एकाएक आक्रमण होना। इसके साथ ही साधारणत इसका दूसरा स्वरूप भी आपको दिखाई देगा, जो उसी समय उत्पन्न नहीं होता, बल्कि उसके साथ ही पर्यायक्रमसे यह लक्षण उत्पन्न होता है या कभी-कभी उत्पन्न होता है अर्थात बहुत अधिक उत्तेजनाशील, तेज़, स्नायविक, हिस्टीरिया-ग्रस्त, हठीड, छोटी लड़कियो या स्त्रियांको ऐसा मालूम होता है, कि वे ऐसी हल्की रोशनीसे ढँकी हुई हैं, जो मानो रङ्गीन शीशीके भीतरसे आ रही है, या शामके चन्द्रमाकी धीमी ज्योति पड़ रही है। पाठ्य-ग्रन्थमें जो यह लिखा है, कि—"चन्द्रमाकी चाँदनीमें मनमें रसिक-भाव उत्पन्न हो जाना।" यह हिस्टीरियाकी अवस्था है, प्रेमका बिगड़ा हुआ विकाश है। ऐसे स्नेह बीमारीमें ही उत्पन्न हो सकते हैं या जिनके सार्वाङ्गिक स्नायु-सम्थानमें समता नहीं रहती, उनको ही हो सकते हैं। इस ढङ्गके रोगियोंमें ही ऐण्टिम-क्रूडमकी मानसिक अवस्था और धातुगत प्रकृति प्राप्त होती है तथा ऐसी मानसिक अवस्थाके साथ शारीरिक अवस्था पाकाशयपर, ऊपर कहे अनुसार, अपना प्रभाव जमाती दिखाई देती है।

इस दवामें एक ऐसी सार्वाङ्गिक अवस्था भी मिलती है, जिसपर खयाल रखना चाहिये। यह एक गठिया या वातकी अवस्था है। इसके लक्षण

मौसम बदलनेके साथ-साथ बदला करते हैं, सर्दीमें, तर ऋतुमें और ठण्ड पानीसे नहानेपर ये उपसर्ग बढ़ जाते हैं, गर्म स्नानकी गर्मीसे रोगी अच्छा रहता है। खट्टी शराब पीनेपर और किसी तरहकी ताकतकी दवा खानेपर बीमारी बढ जाती है। जब आप यह कहें, कि "शराब नुकसान करती है", तो केवल इतना ही जान लेनेसे काम न हो जायगा, कि रोगीको शराब नुकसान करती है, बल्कि यह जाना होगा, कि कौन-सा उपसर्ग शराब पीनेपर बढ जाता है। ऐसे रोगियोंको सहजमें ही नशा आ जाता है, पर मानसिक लक्षणोंकी बनिस्बत शारीरिक लक्षण ज्यादा गडबडा जाते हैं। खट्टी शराब पीनेपर उसकी गठियाका लक्षण बदतर हो जाता है, खट्टी शराबसे सब तरहके दर्द और यन्त्रणाएँ बढ जाती हैं। सर-दर्द भी इसी कारणसे उत्पन्न हो जाता है तथा खट्टी शराबसे पाकाशयके लक्षणोंकी बहुत अधिक वृद्धि हो जाती है।

रोगी रातमें, तर ऋतुमें, सोड-भरी सर्दीमें बदतर रहता है, पर चुपचाप पडे रहनेपर, गर्म प्रयोगसे अच्छा रहता है, लेकिन बहुत गरम हो जाने तथा विकीर्णित तापसे (radiated heat) और गर्म कमरेमें और भी ज्यादा खराब हो जाता है। सूर्यकी गर्मी और खुली चूल्हेकी भँभाडीकी गर्मीसे बहुतसे उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। ऐण्टिम-क्रूडके रोगीको खुली आग बिलकुल ही प्रकृतिके विपरीत होती है। आगकी तरफ देखनेपर कुकुर खाँसी (हूपिङ्ग खाँसी) के रोगी बच्चेकी खाँसी और भी बढ जायगी। ये अद्भुत बातें हैं, ये इतनी अद्भुत हैं, कि इनको वर्णन करनेका कोई दार्शनिक अनुमान ही नहीं प्राप्त होता और न ऐसी कोई कल्पना ही प्राप्त होती है, जिनके सहारे इनकी व्याख्या की जाये, पर ये ऐसी निश्चित बातें हैं, जिनको हमें मानना ही पडता है।

रोगीकी समूची गठियाकी प्रकृति इस तरह एकाएक बदल जाती है, कि आपको ताज्जुब होगा, कि विशेष बाहरी लक्षण सब कहाँ चले गये, क्योंकि तुरन्त रातभर या दिनभरमें ही रोगी वमन करना आरम्भ कर देता है और उसे लगातार कई दिन या हफ्तोंतक बराबर तबतक कै होती रहती है, जबतक कि हाथ-पैरोंमें गठियाके लक्षण फिरसे प्रकट नहीं हो जाते। यह भी एक आश्चर्यकी बात है, कि कितनी तेजीसे पुराने ढङ्गके रोगका स्थान-परिवर्त्तन आरम्भ हो जाता है। यह स्थान एक जगहसे दूसरी जगहपर बदला करता है। हाथ-पैरोंकी गठियाका लक्षण एकाएक बन्द हो जाता है और पाकाशयके लक्षण आ पहुँचते हैं। आप चाहें तो इसे पाकाशयकी गठिया भी कह सकते हैं।

इस दवामें सर्दीके लक्षण भी हैं। नाककी सर्दी, पाकाशय, मलनाली वगैरहकी सर्दी और सर्दी लग जाने या खट्टी शराब पीनेकी वजहसे—इन सबमेंसे किसी भी स्थानसे बहुत ज्यादा श्लैष्माका स्राव होना। रातमें नाक बन्द हो जाना, सर्दीका एक बड़ा ही कष्ट देनेवाला लक्षण है। ज्योंही रोगी किसी बहुत गर्म कमरेमें आता है, उसकी नाक बन्द हो जाती है। नाककी सर्दी पुरानी पड़ जानेकी भी प्रवृत्ति रहती है, क्योंकि रोगीका स्वास्थ्य दुर्बल तथा रक्तका दौरान धीमा और कमजोर रहता है। जब यही सर्दी पुरानी पड़ जाती है, तो रातमें यह बढ़ जाती है और इसके साथ ही माथेमें दर्द भी होता है। ज्यों-ज्यों सर्दी कम होती और सूखती जाती है, त्यों-त्यों सर-दर्द और भी ज्यादा होता जाता है। उसके सरमें स्नायु-शूलका दर्द होता है, कुचलनेकी तरह दर्द होता है और वमनके साथ पाकाशयकी भयानक बीमारी उत्पन्न हो जाती है। उसे अकसर वमनके साथ सर-दर्द हो जाता है और परिवारवाले इसे पाकाशयिक सवमन सर-दर्द कहते हैं, पर ऊपर जो लक्षण बताये गये हैं, वे सर्दी लग जानेके कारण उत्पन्न होते हैं, जो गाढ़े स्रावको नाकके सूखेपनमें बदल देते हैं। इस समय रोगी साँसके साथ जो हवा खींचता है, वह नाकके भीतर आगकी तरह जलन पैदा कर देती है। तेज़ वमन पैदा हो जानेपर कभी-कभी ये तकलीफें आप-से-आप चली जाती हैं, पर कभी-कभी वे नहीं भी हटती हैं, पर सर दर्द वमन होनेपर भी आराम न होकर कई दिनोंतक बना रह सकता है अथवा बहुत-सी कै होनेपर आराम हो जा सकता है। ऐसी बहुत सी दवाएँ हैं, जिसमें इस ढङ्गका सर-दर्द होता है कि वमन होनेपर रोगी आराम अनुभव करता है, पर इस दवाका रोगी देरतक कै करता रहता है तथा शिथिल और सुस्त हो जाता है। चलने-फिरनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है, रातमें बढ़ता है, लेट जानेपर अच्छा रहता है या शान्त चुपचाप रहनेपर और खुली हवामें अच्छा रहता है। गर्म कमरेमें, शरीर बहुत गर्म हो जानेपर, विकीर्णित ताप और रोशनीमें बढ़ जाता है। आप देखते हैं, कि किस तरह सर्दी, सर-दर्द और पाकाशयके लक्षण सब एक साथ ही रहते हैं। रोगी बीमार है, इसलिये आप अलग-अलग लक्षण नहीं समझ कर सकते, आपको सम्पूर्ण मनुष्यके ही लक्षण लेने होंगे।

श्लैष्मिक-झिल्लीका एक दूसरा लक्षण भी है और यह बहुत आवश्यक लक्षण है। इन झिल्लियोंसे दूधकी तरह सफेद पपड़ी या तही निकलती है, यह

खासकर जीभपर दिखाई देती है। समूची जीभपर दूधकी तरह सफेद तही जमी रहती है। इस दवाके सभी रोगोंमें यह लक्षण आपको दिखाई देगा। बच्चोंकी पेटकी बीमारी, पाकाशयिक ज्वर, ज्वर तथा बहुत वमनके साथ होनेवाली बीमारियाँ, सम्पूर्ण स्नायु-मण्डलका बहुत अधिक उपदाह, सान्निपातिक ज्वरमें पाकाशयकी उत्तेजना,—इन सबमें जीभ सफेद दिखाई देती है। ज़रा-सी कोई उत्तेजना मिलनेपर ही रोगी चिढ़ उठता है और बिगड़ जाता है। हरेक चीज़ उसे मानो तङ्ग करती है, उसे खानेकी इच्छा नहीं होती, भोजनकी गन्ध और खयाल भी उसे विचलित कर देते हैं। यह लक्षण **आर्सेनिकम**की तरह है।

रातमें सोनेको जानेके समय वह ठण्डे पानीसे नहा लेता है और सवेरे जब नींद खुलती है, तो आवाज़ जकड़ी हुई मिलती है। एक शब्द भी नहीं बोल सकता, यह एकदम दर्द-रहित अवस्थामें उत्पन्न हो जाता है, उसे तबतक इस अवस्थाका पता भी नहीं लगता, जबतक वह बोलनेकी चेष्टा नहीं करता। इसके साथ ही स्वर-यन्त्रकी अकड़न भी रह सकती है और रोगीके कण्ठ पकड़ रखनेका लक्षण भी रह सकता है। सर्दी कभी-कभी कण्ठ या टेटुआतक भी उतर जाती है, जिससे ब्राङ्काइटिस (वायुनली-भुज-प्रदाह) या निमोनिया (फुसफुस-प्रदाह) की बीमारी हो जाती है।

घटते हुए आवेशमें सूखी खुसखुसी आक्षेपिक खाँसी। मैं इसका खुलासा करता हूँ '—पहला दौरा (आवेग) तो बहुत जोरोंका होता है, रोगीकी हड्डी पसलीतक हिला देता है और अधिक या थोड़े समयतक रहता है, दूसरा दौरा उससे कम तेज़ होता है और इसके बादवाला और भी घटी हुई तेजीसे। इस तरह लगभग एक दर्जन या कुछ कम, घटती हुई तेजीसे दौरा होनेपर, उसको सूखी खुसखुसी खाँसी आती है। इसमें आवेश नहीं रहता, पर यह पहली बारकी खाँसी समूचे शरीरको हिला देती हैं। यह ब्राङ्काइटिसमें हो या हूपिङ्ग खाँसीमें, तथा जीभ सफेद और कुछ-न-कुछ पाकाशयकी गड़बड़ी भी हो, तो ऐण्टिम-क्रूड ही उसकी दवा है। यह तुरन्त रोगीकी शकल ही बदल देगा। सीनेमें घावकी तरह दर्द, खुञ्जता और कुचल जानेका भाव, खाँसीकी तेजीके कारण उत्पन्न हो जाता है।

पाकाशयके लक्षणोंपर भी पूरी तरह विचार करना चाहिये। लगातार मिचली, पाकाशयमें ढेलेकी तरह मालूम होना, हमेशा पेटमें बहुत खा लेनेकी

तरह भरापन मालूम होना, मानो रोगीने बहुत खा लिया है—यह उस अवस्थामें भी रहता है, जब वह कुछ भी खाया नहीं रहता। तलपेट चिपटा रहनेपर भी पेट तना हुआ मालूम होता है, उसको तनाव मालूम होता है और पेटकी सारी सामग्री वमन कर देता है। पेटकी सामग्रीके वमन हो जाने बाद रोगीकी कैमें कीचकी तरह पदार्थ निकलते हैं। बहुत देरतक ओकाई, मिचली, पेटमें भार, ये सब लक्षण बराबर ही बने रहते हैं, वमन होनेपर भी उसे आराम नहीं मिलता और सुस्ती बहुत बढ जाती है।

यकृत अथवा उसके किसी अंशमें प्रदाह और कडापन। पित्ताशय-प्रदेशमें दर्द, यकृत-प्रदेशमें बहुत जोरका दर्द और यकृतमें छेदने तथा फाडनेकी तरह दर्द। कभी-कभी इन लक्षणोंके साथ कामला-रोग भी मिला रहता है।

उदर अर्थात तलपेटमें लक्षणोंका एक समूह रहता है। तेज़ औदरिक वेदना, जलन, बहुत तनाव, यह तनाव क्रमशः इस तरह बढता हुआ मालूम होता है, मानो कोई पेंच घुसाया जा रहा है। यह किसी चीज़पर दबाव डालता है और तनाव धीरे-धीरे बढता जाता है। सान्निपातिक ज्वर (टाइफायड) की आध्मानिक अवस्था (जब पेट फूला रहता है) उस समय, तथा आध्मान-वायुके रोगियोंमें और गर्मीके दिनोंके अतिसारमें यह लक्षण दिखाई देता है। इसके साथ ही पाकाशयके लक्षण भी मिले रहते हैं और जीभ सफेद रहती है। खासकर ऐसा उस अवस्थामें होता है, जब खट्टी शराब पीने और ठण्डे स्नान करनेके कारण, उन वात प्रकृतिवालोंको ऐसा हो जाता है, जिनकी अंगुलियोंके जोडोंकी गिरहें दर्द-रहित हो जाती हैं तथा पाकाशय और आँतोंमें तनाव और दर्द रहता है।

इस दवामें शुष्क अतिसारका भी लक्षण है, पर थक्के-मिले और पतले दस्त भी आते हैं। खट्टी शराब पीनेके कारण पतले दस्त आना। ऐसा मालूम होता है, कि आँतोंके खाली होनेमें बहुत समय लगता है, रोगी दौडकर पाखाने जाता है, थोडा-सा ढेलेकी तरह और कुछ पतला दस्त होता है। इसके बाद ही फिर उसे दौडकर पाखाने जाना पडता है तथा फिर उसी तरह कुछ ज्यादा थक्के और पतला मल निकलता है। यह गर्मीके दिनोंके अतिसारमें तबतक बराबर हुआ करता है, जबतक आँतें बिल्कुल ही खाली नहीं हो जाती और इसके बाद बहुत मरोड होता है। यह उस ढङ्गका अतिसार हैं, जो रक्तामाशयमें परिणत हो जाता है। मलान्त्र और बडी आँतमें

प्रदाह हो जाता है, जिसमें बहुत तकलीफ, खूब मरोड़, देरतक कूथन और बहुत ज्यादा सुस्ती रहती है।

पुरानी वात-प्रकृतिवाले रोगियोंकी तकलीफ देनेवाली बवासीर, उन्हें सर्दी, तर दिन और ठण्डे पानीसे स्नान करनेके कारण हमेशा जखमकी तरह यन्त्रणा और प्रदाह बना रहता है तथा खट्टी शराब पीने या खट्टी चीजें खानेकी मूर्खता यदि रोगी करता है, तो ये तकलीफे और भी बदतर हो जाती हैं। खट्टी शराब, खट्टे फल या न पचनेवाली चीजें खानेके कारण अथवा ठण्डे पानीसे नहाने और तर ऋतुमें पाकाशय, उदर, मलान्त्र और बवासीरकी सभी तकलीफे बदतर हो जाया करती हैं।

वस्तिगह्वरके यन्त्र (Pelvic Viscera), खासकर स्त्रियोंके, बहुत ढीले पड़ जाते हैं, यहाँतक कि वस्ति-गह्वरमें नीचेकी ओर खिंचाव पैदा हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो वस्ति-गह्वरके सभी पदार्थ बाहर निकल जायँगे या गिर जायँगे। जरायु अपनी जगहसे हट जाता है और प्रदरकी तरह स्राव होता है। मासिक ऋतु-स्रावके समय नाना प्रकारकी तकलीफे पैदा हो जाती हैं। डिम्बाशय उपदाहित और दर्द-भरा रहता है, जैसा कि हिस्टीरिया-ग्रस्त लड़कियोंमें तथा उनमें दिखाई देता है, कि जिन्हें प्रेमका बदला नहीं प्राप्त हुआ है और जो स्वप्न-राज्यमें ही भ्रमण किया करती है।

इस दवासे पसीना होता है, बहुत ज्यादा, सुस्त करनेवाला पसीना। रात्रि-स्वेद (रातके समय होनेवाला पसीना), जैसा कि लँभड़ानेवाली बीमारियोंमें होता पाया जाता है। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर पसीना होने लगता है, जरा-सा भी गर्म हो जाते ही रोगी पसीनेसे तर हो जाता है और इसके बाद ही सर्दी लग जाती है।

चर्म घाव-पूर्ण रहता है और उसमें मसे, गड्ढे, नाखूनकी खराबियाँ और बुरे केश प्रभृति पैदा होनेकी प्रवणता रहती है। नाखूनोंके नीचे, जुड़े सींगकी तरह प्रवर्द्धन निकलते हैं और उनमें बहुत ज्यादा दर्द होता है। अंगुलियोंकी नोंकपर छोटे-छोटे, सींगकी तरह प्रवर्द्धन निकलते हैं। थोड़ा भी दबाव देनेपर गड्ढा हो जाता है या घावकी तरह वह जगह हो जाती है। काम करनेवाले श्रमिकोंमें आप अकसर तलवेका चमड़ा मोटा पड़ जानेकी प्रवृत्ति देखेंगे। चलनेमें उन्हें बहुत यन्त्रणा होती हैं, क्योंकि इन गड्ढेवाली जगहोंपर स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता और इनमें छोटे-छोटे दानोंके

बहुत-से केन्द्र होते हैं, इस दवाकी गड्ढे बनाने और कड़ा करनेकी प्रवृत्ति है। हाथपर मसे निकलते हैं, केश भी अस्वस्थ रहते हैं, लाल घेरेके साथ शरीरपर फुन्सियाँ निकलती हैं, फुन्सीवाले उद्भेदोंकी तन्नी प्रादाहित, लाल और स्पर्श सहन न होनेवाली रहती है।

अब यदि आप इस दवाकी परीक्षामें पैदा हुए लक्षणोंको अच्छी तरह अध्ययन करेंगे तथा इस दवाकी विशेषताओंको हृदयङ्गमकर, उन्हें शरीरपर ठीक-ठीक मिलान कर लेंगे, तो आप ऐण्टिम-क्रूडके सम्बन्धमें कुछ समझ सकेंगे।

ऐण्टिमोनियम टार्टारिकम।

(Antimonium Tartaricum)

ऐण्टिमोनियम टार्टारिकमके रोगीका अध्ययन करते समय सबसे पहली बात जो देखनेमें आती है, वह उस रोगीके चेहरेमें रहती है। रोगीका चेहरा पीला और बीमारकी तरह रहता है, नाक खिंची और धँसी रहती है, आँखें भी धँसी रहती हैं और आँखोंके चारों तरफ काला घेरा पड़ जाता है, ओठ पीले और सिकुड़े रहते हैं, नथुने फैले और फड़फड़ाते रहते हैं तथा नथुनोंके भीतरका स्थान काला तथा मैला दिखाई देता है। चेहरा ठण्डे पसीनेसे भरा, ठण्डा और पीला रहता है। चेहरा देखनेसे मालूम होता है, कि वह बीमार है। कमरेकी हवा बहुत कटु रहती है, बदबूदार या दूषितसे भी ज्यादातर कटु रहती है, उसमें जाते ही आपको मालूम होता है, कि इसमें मृत्यु भरी है। परिवारके मनुष्य घबड़ाये रहते हैं, वे इधर-उधर जाते-आते हैं, सुश्रूषा करनेवाली दाई भी उत्तेजित तथा व्यस्त अवस्थामें रहती है और आप ऐसे ही दृश्यमें एक होमियोपैथिक दवाका चुनाव करने जाते हैं। यह उत्तेजना पूर्ण अवस्था, वह अवस्था है, जिसमें आप तेजीसे कोई काम नहीं कर सकते, पर इतनेपर भी आपको बहुत जल्द अपना नुस्खा तैयार करना होगा। उस समय आपकी विचार-धारामें कुछ न-कुछ ये चीजें हस्तक्षेप करती हुई कहेंगी, कि आपको इस समय सर्वोत्तम भावसे सोचना होगा और बहुत शीघ्रतासे विचार करना पड़ेगा।

अब, किस ढङ्गके रोगियोंमें हमें यह अवस्था और दृश्य दिखाई देते हैं, जहाँ इस दवाकी प्रकृतिके सभी स्वरूप और लक्षण मिल जाते है? सबसे पहले—दर्सी—श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहवाले रोगियोंमे, भग्न-स्वास्थ्य-वाले रोगियोंमें, कमजोर बच्चोंमें और वृद्ध पुरुषोंमें ये लक्षण दिखाई पड़ते हैं। श्वासोपनलियाँ (Bronchial tubes) तथा टेटुआ (Trachea) की सर्दीकी अवस्थामें, हमारे कान यदि सचेष्ट रहें, तो हम वक्षके भीतरकी **घरघराहट** और बुलबुले फूटनेकी तरह बुदबुदाहट सुन सकते हैं। यदि आप किसी मरते हुए रोगीके कमरेमें गये होंगे, तो आपने अवश्य ही मृत्यु-कालकी घरघराहट सुनी होगी। यह घरघराहटकी आवाज़ भी वैसी ही होती है। रह-रहकर हलके रङ्गका सफेद श्लेष्मा मुँहभर निकल आता है। यह वह अवस्था है, जिसमें वक्ष दृढतासे बलगमसे भरता जाता है, पहले तो रोगी इसे निकालकर थूक सकता था, पर अन्तमें, बलगम भर जानेके कारण उसकी साँस रुकने लगती है और वक्ष तथा फेफड़ेमें उसे निकालनेकी शक्ति नहीं रह जाती। यह फेफड़ोंकी पाक्षाघातिक अवस्था है। यह उस ग्रिपी (जटिल इन्फ्लुएञ्जा) रोगके रोगीको हो सकती है। पहले यह एक ऐसा रोगी रह सकता है जिसपर बहुत तेजीसे रोगका हमला हो गया है और बीमारी बहुत तेजीसे बढ़ती जाती है। यह ऐसा रोगी हो सकता है, जिसमें समयके पहले ही अवसन्नता पैदा हो जाती है अर्थात तीन-चार दिन या एक सप्ताहमें ही सुस्ती आ जाती है। इस रोगके प्रथम तीन-चार दिनोंमे तो ऐण्टिमोनियम-टार्टके लक्षण न मिलेंगे। जबतक प्रतिक्रिया अच्छी रहती है और रोगीकी ताकत बनी रहती है, तबतक आपको यह मुर्देकी तरह जड़वत् चेहरा, धसा, ऐंठा, ठण्डा और ठण्डे पसीनेसे तर चेहरा न दिखाई देगा। वक्षमें यह घरघराहट भी न सुन पड़ेगी, क्योंकि ये लक्षण, वे लक्षण हैं, जो निष्क्रिय अवस्थाका प्रदर्शन करते हैं। ऐण्टिमोनियम-टार्टमें कमजोरी और प्रतिक्रियाका अभाव रहता है। इसलिये, हम देखते हैं, कि यह उन रोगियोंके लिये उपयोगी होता है, जिनकी ऐसी अवस्था रहती है अथवा जो रोगी इतने कमजोर रहते हैं, कि जब वे बीमार पड़ते हैं, तो तुरन्त निष्क्रिय या शिथिल अवस्थामें जा पहुँचते हैं। नियुमोनिया (फुसफुस-प्रदाह) के [illegible] (वायु[illegible]) टेटुआका प्रदाह, साधारणत वायु-पर्याे[illegible] प्रदाह [illegible] साथ रहता है या बहुत ही थोड़ा [illegible] है। [illegible]के भीतर ही यह

भयङ्कर हो जाये, तो रोगी शिथिलता और दुर्बलताकी अवस्थामें जा पहुँचेगा, पर पहली अवस्था ऐण्टिमोनियम टार्टारिकमको नहीं निर्देश करती, बल्कि **ब्रायोनिया या इपिकाक** पहली अवस्थाकी दवाएँ हैं। इन दवाओंको देते समय आपकी धारणा रहती है, कि ये ही रोगीको आरोग्य कर देंगी। वे करेंगी, भी, पर उसी अवस्थामें, जहाँ आरम्भसे ही यह कमजोरी नहीं है या जहाँ आरोग्य प्राप्त करनेके लिये पूरी-पूरी प्रतिक्रियाकी शक्तिका अभाव है। अब दूसरी दवाका समय आता है और यही वह समय है, जब यह दवा अपनी क्रिया आरम्भ करती है।

इपिकाकमें भी इस कर्कश घरघराहटका कुछ लक्षण है, पर इसके साथ ही फेफड़ेमें चीज़ें बाहर निकालनेकी बहुत ज्यादा शक्ति रहती है। इस दवामें भी कर्कश घरघराहट है, जो बहुत दिन बाद पैदा होती है, पर **इपिकाकमें**, बीमारीके पहले दिनसे ही घरघराहट पैदा हो जाती है। इस दवामें खाँसी, गला फँसने तथा ओकाईके लक्षण हैं, पर यह बहुत शिथिलता, सुस्ती और शरीर सर्द हो जानेवाली अवस्थामें ही होता है। ऐसा दिखलाई पड़ता है, मानो रोगी मर जायगा। उस रोगीको खाँसते सुनते ही आपको तुरन्त यह खयाल आ जायगा कि इसके फेफड़ोंमें जरूर ही गहरी दुर्बलता होनी चाहिये। हमलोग जानते हैं, कि गहरी साँसके साथ फेफड़ेमें बाहर निकालनेकी क्रियाको पैदा करनेकी शक्ति रहती है, पर ऐण्टिमोनियम-टार्टके रोगीके फेफड़ोंमें यह ताकत नहीं रहती। बलगमसे छाती भरी रहती है और घरघराया करती है। खाँसी भी ढीली, घरघराहटकी आवाज़के साथ आती है, पर बलगम नहीं निकलता या बहुत ही थोड़ा निकलता है, पर इससे रोगीको कोई आराम नहीं पहुँचता। उसकी छाती बलगमसे भरी रहती है, उसका दम घुटता है और वास्तवमें वह मर रहा है, निष्कासन-शक्ति न रहनेके कारण कार्बोनिक-एसिडके ज़हरसे मर रहा है। नियुमोनियाके रोगियोंमें, जब पहले-पहल सर्दी लगकर बीमारी पैदा होती है, तो यह आक्रमण बहुत तीव्र हो सकता है, इतना तेज़ आक्रमण कि जिसकी तेजीके कारण समयके पहले ही सुस्ती आ जाती है अर्थात तीन चार दिन बाद ही अवसन्नता आ जाती है। यह दवा जाड़ा आरम्भ होनेके समय या प्रदाहकी बढ़ी हुई अवस्थाके समय नहीं प्रयोग की जाती,, बल्कि उस अवस्थामें इसका प्रयोग होता है जब रस-क्षरण (Exudation) होने लगता है।

परन्तु रोगके आक्रमणकी तेजी उसमें सुस्ती ला देती है या वह दूसरोंकी भाँति यदि पहलेसे ही कमजोर रहता है, तो वह सहजमें ही रोगसे शिथिल और अवसन्न हो पड़ता है। ठीक **एकोनाइट, बेलेडोना, इपिकाक** और **ब्रायोनिया**की तरह, क्योंकि इनकी बीमारीका आक्रमण बहुत वेगका होता है,—ऐण्टिमोनियम-टार्टमें ठीक इसकी विपरीत अवस्था रहती है। थोड़ा बोखार, ठण्डा पसीना, ठण्डापन, शिथिलता, जड़वत् चेहरा। इसलिये, यही वह दवा है, जो ब्राङ्काइटिस, न्युमोनियाके कठिन रोगोंके दृश्यपर पर्दा डालती है, बहुतसे इनके रोगी ऐण्टिमोनियम-टार्टकी अवस्थामें ही समाप्त होते हैं। एक वृद्ध **गठिया वातका रोगी है**, बहुत दिनोंकी बीमारीके कारण दुर्बल हो गया है, हमेशा चिड़चिड़ापन मालूम हुआ करता है, पीला हो रहा है और सन्धियाँ बढ़ रही हैं। तर ऋतुकी प्रत्येक लहर उसके वक्ष, स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें सर्दी या श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह उत्पन्न कर देती हैं और बहुत ज्यादा बलगम निकलने लगता है। वह तुरन्त शय्याशायी हो जाता है, अवसन्न हो जाता है और कर्कश घरघराहट पैदा हो जाती है। जिन बच्चोंको अकसर ठण्डी तर ऋतुमें, शिशिरके अधड़-पानी और बसन्तमें तथा बादलवाली ऋतुमें बार-बार ब्राङ्काइटिस हो जाया करती है। ज्योंही एक सर्दी उनको आराम होती है, दूसरेका दौरा हो जाता है। नया आक्रमण उनपर बहुत जोरका नहीं होता, पर उनमें यह धीमी सर्दीकी घरघराहट बराबर बनी रहती है। बन्द हो-होकर वक्षमें फिर घरघराहट होने लगती है। बच्चा सर्द और पीला रहता है। ऐसे शक्तिमान बच्चे, जो सर्दी लगनेपर बीमारकी तरह नहीं दिखाई देते, कुछ-न-कुछ ताकतवर रहते हैं, उनकी छातीमें घरघराहट तो रहती है, पर कमजोरीके कारण वे शय्याशायी नहीं होते, न इससे अवसन्न ही हो पड़ते हैं, पर उनमें घरघराहट हुआ ही करती है। ऐसे बच्चोंके लिये, **कैलि-सल्फ**की जरूरत होती है। यह एकदम दूसरा ही स्वरूप है—तुरन्त कमजोरी आ जाना, इसी दवाको निर्देश करता है। **बहुत वृद्ध मनुष्योंको** यह कमजोरी आती है तथा वृद्ध स्वास्थ्य-भङ्ग हुए पुरुषोंको, जिनको बहुत वर्षोंसे **वक्षकी सर्दी** लगी हुई है, जाड़ेके दिनोंमें प्रत्येक बार जब जोरकी सर्दी पड़ती है, तो उनके वक्षमें सर्दी बैठ जाती है, गाढ़ा सफेद बलगम निकलता है, इसके साथ ही बहुत श्वास-कष्ट रहता है, जिससे वह शय्याशायी हो जाता है। उसे बाध्य होकर खाटपर बैठ

जाना पड़ता है और पंखेकी हवा खानी पड़ती है, वक्ष भर जाने और श्वास-कष्ट रहनेके कारण वह लेट नहीं सकता। ऐण्टिमोनियम टार्टारिकम मरनेके पूर्व उसे ऐसे कितने ही आक्रमणोंके सहनेकी शक्ति प्रदान करेगा। ऐसे वृद्ध पुरुषोंमेंसे किसीका बलगम जब पीला और बदबूदार रहता है, तो **एमोनियेकम** उनको कितनी ही शीत-ऋतुएँ पार करा देता है। बहुत-से ऐसे वृद्ध मनुष्य दिखाई देते हैं, जिन्हें जाड़ेमें छातीमें सर्दी लग जाती है, उन्हें कई वर्षोंसे ऐसा होता आया है, इसके आरोग्य होनेकी आशा ही उन्होंने त्याग दी है। जब बलगम पीला रहेगा, तो **एमोनियेकम** उन्हें आरोग्य कर देगा और जब सुस्ती, पसीना, ठण्डापन तथा चेहरा नीला और भर्राया रहेगा, तो ऐण्टिमोनियम टार्टारिकम आराम करेगा। चिकित्सामें ये ही इस औषधिके प्रधान प्रयोग हैं।

इसमें बहुत तरहके दर्द और तकलीफें रहती हैं। ऐण्टिमोनियम-टार्ट बहुत-कुछ ऐण्टिमोनियम क्रूडमके आधारपर है, इसी आधारपर यह बहुत-कुछ अपने वक्षके लक्षण निर्माण करता है। इसके बहुत-से लक्षण ऐण्टिमोनियम क्रूडमके सदृश हैं, बहुत-से लक्षण गरमा जानेपर और बहुत ज्यादा कपड़े पहन लेनेपर बढ़ जाया करते हैं। इसके रोगीको कन्धे या गलेपर बिना किसी कपड़ेके ही पलङ्गपर बैठे देखेंगे, यहाँतक कि साँस लेनेमें सहूलियत होनेके लिये नाइट गाउनको (रातमें पहननेका चोंगा) भी गलेपर खुला ही रखना पड़ता है। यदि कमरा बहुत गर्म हो जाता है, तो उसका दम घुटने लगता है। यह **ऐण्टिमोनियम क्रूडमसे** मिलता है। **ऐण्टिमोनियम क्रूडमकी** तरह ही ठण्डे पानीसे नहानेपर इसकी बीमारी बढ़ जाती है, **ऐण्टिमोनियम क्रूडमकी तरह** श्लैष्मिक-झिल्लियाँ सफेद गाढ़े श्लेष्मासे ढँकी रहती हैं। इसके अलावा उसे कोई तङ्ग करे या उसके काममें हस्तक्षेप करे, तो यह भी उसे बर्दाश्त नहीं होता। सभी चीजें उसे भार मालूम होती हैं। बच्चा जब बीमार रहता है, तो कोई उसे छुए या बात करे अथवा उसकी ओर देखे, तो यह भी पसन्द नहीं करता। अकेला पड़ा रहना चाहता है, बच्चा हमेशा ही कातर-स्वरसे रोया और कलपा करता है, कितनी ही बार तो श्वास-प्रश्वासकी क्रिया गोंगियानेकी तरह होती है। घरघराहट और कराहना, हमेशा ही उसका मिज़ाज बिगड़ा

रहता है अर्थात तङ्ग करनेपर बहुत ही उत्तेजित हो जाता है। किसी तरहकी भी गड़बड़ीसे उसकी श्वास-क्रिया बढ़ी मालूम होती है, वह रुष्ट हो जाता है और उत्तेजित हो उठता है। ताज्जुब नहीं कि रोगी बहुत आशङ्कित हो, क्योंकि उसके चेहरेसे ही ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें ऐसा भाव उठ रहा है, मानो वह मर रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो वह धसा जा रहा है और यदि उसे जल्दी आराम नहीं पहुँचाया जायगा, तो वह अवश्य ही मर जायगा, क्योंकि उसकी छाती इतनी भरी रहती है, कि उसका श्वास रोध हो जाना चाहता है और यह दम घुटनेका भाव, श्वास-कष्ट, दृढ़तासे बढ़ता ही जाता है। **लाइकोपोडियम**की भाँति नासा-प्राचीर हिला करती है। लाइकोपोडियमसे इसका बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है और बहुत कुछ सादृश्य रखता है।

ऐण्टिमोनियम-टार्टमें बहुत तरहका सर-दर्द भी है, पर ऐण्टिमोनियमके सर-दर्दमें ऐण्टिमोनियम क्रूडम ही ज्यादा काम कर सकता है और ऐण्टिमोनियमकी बचकी बीमारियोंमें इस दवाकी क्रिया ज्यादा होती मालूम होती है। इन दोनों ही दवाओंमें अत्यन्त स्पष्ट पाकाशयिक लक्षण भी रहते हैं। लगातार मिचली, वमन और अनपच बना रहता है। ऐण्टिमोनियम टार्टमें श्वास-कष्टके साथ पेटकी बीमारी रहती है। प्रत्येक चीज़से घृणा करता है, भोजनसे भी घृणा हो जाती है, यहाँतक कि पानी पीनेपर भी कै हो जाती है। उसकी एक विनिद्र दबी अवस्था रहती है और यदि इसके रोगीको शान्त रहने दिया जाता है, तो सब तरहकी तकलीफें रहनेपर भी, वह या तो सो जाता है या ऐसी अवस्थामें जा पड़ता है, कि उसे कुछ अनुभव भी नहीं होता। वह खाँसेगा और सो जायगा और श्वास-कष्टके कारण उसकी नाक बजती रहेगी। इस तरह कितने ही लक्षण **ऐण्टिमोनियम क्रूडम**के सदृश है, पर **ऐण्टिमोनियम क्रूडम**में प्रादाहित श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव नहीं होता। सम्पूर्ण शरीर-विधानकी भी अवस्था निष्क्रिय नहीं रहती, परीक्षामें यह इतनी निराशाजनक नहीं ठहरी है और न देखनेमें ही इतनी भयानक रहती है।

चिकित्सा-रूपमें अधिकतर ऐण्टिम-टार्ट बचकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी क्रियाके लिये ही प्रयोग किया जाता है, पर इसमें सम्पूर्ण शरीरकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी

वही धीमी क्रिया रहती है। आँखोंसे सफेद श्लेष्माका स्राव होता है। "आँखें, उभरी, चमकीली, धुँधली और तैरती हुई मालूम होती हैं, सूजाकके कारण आँखोंका प्रदाह," पर वातज अवस्थाके कारण इस दवाका एक दूसरा ही रूप सामने आता है। **ऐण्टिमोनियम क्रूडम**की तरह एक दूसरा ही विषय। सन्धियोंपर रोगका आक्रमण होता है, उनसे धीमा, अनुग्र रस-स्राव होता है और वे सूज जाती हैं, सभी सन्धियोंकी शोथज सूजन, सन्धियोंमें गठियाके कारण रस-स्राव, यह विशेषकर ठण्डी, तर ऋतुमें खराब हो जाया करता है। आँखोंमें गठियाकी प्रकृतिके लक्षण। सन्धियोंके साथ-ही-साथ आँखोंमें भी रस-स्राव होता है, इस तरह आँखोंकी भी गठियाकी अवस्था रहती है। सारे शरीरपर गठियाकी अवस्थाका प्रभाव हो जाता है। श्लैष्मिक-झिल्लियाँ लाल और प्रदाहित हो जानेके बदले पीली रहती हैं, ये पीली और ढीली रहती हैं और मालूम होता है, मानो इनसे रस स्राव होगा। इसपर बहुत जल्द श्लेष्मा जम जाता है, वक्षमें यही अवस्था होती है। **आर्सेनिक** तथा अन्य नशी दवाओंकी तरह इसमें जलता हुआ खाल उधड़नेका भाव नहीं है, यद्यपि इसमें भी आर्सेनिककी तरह सुस्ती, घबड़ाहट और ठण्डे पसीनेका लक्षण है।

इसके बाद यह गठियाकी दशा दाँतोंपर आक्रमण करती है। उसके सभी दाँत वात-पूर्ण रहते हैं। "दाँतोंमें वातका दर्द होता है", इसके साथ ही सन्धियोंमें भी वातका दर्द रहता है। दाँतोंमें स्पर्श सहन नहीं होता। "दाँत श्लेष्मासे ढके रहते हैं।"

सभी शिकायतोंके साथ पाकाशय भी गड़बड़ाया रहता है, मिचली, पाचन-शक्ति नहीं रहती तथा खानेकी चीज़ोंसे बहुत ज्यादा घृणा रहती है। पाकाशयमें गयी हुई चीज़ोंकी कै हो जाती है, चम्मचभर पानी पीता है, तो वह भी निकल जाता है, इसकी अधिकांश बीमारियोंमें **प्यास नहीं रहती।** इसमें प्यास रहना तो एक अपवाद है। श्वास-कष्टका आक्रमण होनेपर साधारणत रोगीके बन्धु कुछ करनेके लिये, उसे चारों ओरसे घेरे रहते हैं, शायद एक गिलास पानी ही देना पड़े। रोगी पानी पिलानेसे उत्तेजित हो उठता है, उसे तकलीफ़ होती है और वह अनिच्छा प्रकट करता है। पानी पीनेपर बच्चा क्रोधसे गुर्रा उठता है। श्वासोपनलियोंकी बीमारियाँ,

बहुत अधिक बलगम निकलना तथा छातीमें बहुत अधिक घरघराहटके साथ प्यासका न रहना। कभी-कभी पाकाशयमें ठण्डी चीजोंकी अदम्य इच्छा पैदा हो जाती है, पर ऐसा शायद ही कभी होता है। "खटाई या खट्टे फल खानेकी इच्छा," पर ये रोगीको बीमार बना देते हैं। ऐण्टिमोनियम क्रूडमकी तरह सिर्का, खट्टे पदार्थ, खट्टी शराब, खट्टे फल प्रभृति खानेके कारण पाकाशयकी बीमारियाँ। दूध और खासकर सभी पोषक पदार्थोंसे अरुचि, पर दूध खासकर उसे बीमार बना देता है और मिचली तथा वमन होने लगता है। पाकाशय तथा उदर वायुके कारण खब तने रहते हैं, तलपेट फूला रहता है, पाकाशय तथा उदरके लक्षणोंके साथ **लगातार मिचली** बनी रहती है, पर यह मिचलीसे भी कुछ बढकर है। प्रत्येक खाद्य या पोषक पदार्थोंपर भयानक घृणा रहती है। यह मिचली इस भावके साथ रहती है, कि यदि वह कुछ भी खायगा, तो मर जायगा। केवल खाद्य-पदार्थों पर ही अरुचि नहीं रहती, केवल वैसी साधारण मिचली ही नहीं रहती, जो वमनके पहले होती है, बल्कि खाद्य-पदार्थोंसे एक भीषण घृणा रहती है। कमजोरीके कारण घबडाहट और भी बढ जाती है और जब उसे खानेको दिया जाता है, तो उसका दम और भी घुटने लगता है। दयालु मनुष्य चाहते हैं, कि रोगी कुछ खाये, शायद उसने दिनभर या दिन-रात कुछ नहीं खाया है, पर खाद्य-पदार्थकी चिन्ता ही उसके श्वास-कष्टको बढा देती है, उसकी मिचली बढा देती हैं, उसकी अनिच्छा और उसकी बीमारीको बढा देती है। इस दवामें वमन कोई साधारण बात नहीं है। यह वमन कुछ-न-कुछ आक्षेपिक (Spasmodic) होता है। "भयानक ओकाई, मिचली, ओकाई तथा वमनकी चेष्टा", "श्वास-कष्ट, बडे कष्टके साथ ओकना।" मालूम होता है, कि पाकाशयमें आक्षेपिक क्रिया हो रही है और बडे कष्टसे, बहुत बार, बहुत तरहकी चेष्टाएँ करनेपर कहीं थोडा-सा निकलता है, फिर कुछ ज्यादा निकलता है, इसके बाद बन्द हो जाता है। "बहुत-ने श्लेष्माके साथ, जो कुछ भी पेटमें हो, उसकी कै।" कभी-कभी रक्तके साथ गाढा, सफेद, डोरीकी तरह बलगम निकलता है। "बहुत जोर लगकर कीचड़—कीचकी तरह वमन करता है, बहुत अधिक मात्रामें श्लेष्माका वमन होता है, लसदार बलगमकी कै होती है। "पित्तके साथ कीचड़का वमन। काढा, पनीला बलगम, फिर थोडा खाद्य, फिर पित्तकी कै होती है।" पर प्रधान चीज़ जो वमनमें निकलता

है। सब जगहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे गाढ़ा, सफेद, लसदार बलगम निकलता है। कड़ा और डोरोकी तरह, सूतकी तरह खींच दिया जा सकता है। रोगीकी कण्ठनली और मुँहसे जब यह गाढ़ा डोरीकी तरह सफेद बलगम निकलता है, तो रोगीको अकसर सांस रुकने लगती है, इससे मुँह भर जाता है। पेटकी सामग्री, जो श्लेष्मा या श्लेष्मा और पित्त रहता है, उसे निकाल बाहर करनेके लिये रोगीको भयानक चेष्टा, एक प्रकारकी आक्षेपिक चेष्टा करनी पड़ती है। वमनमें पहले तो श्लेष्मा निकलता है, फिर बहुत जोर लगानेपर पाकाशयमें पित्तका उद्दीरण होने लगता है और इसीलिये लगातार फिर पित्तकी कै होती है। बहुत जोर लगानेके कारण पाकाशयमें रक्त-स्राव भी होता है और पाकाशयकी सामग्रीपर रक्तकी रेखा पड़ी रहती है। सब जगहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जख्म हो जाता है। इसमें नाक तथा स्वर-यन्त्रमें जखम हो जाता है, इन जख्मोंसे खून बहता है। पाकाशयमें रक्त-स्रावी घाव हो जाता है और इसीलिये खूनकी कै होती है।

ऐण्टिमोनियम क्रूडमकी तरह यह पुराने शराबियोंको लाभ पहुँचाता है। पुराने शराबी कभी-कभी दुर्बल हो पड़ते हैं और बार-बार उन्हें सर्दी लगी करती है। बहुत व्यभिचार करनेके कारण और कई दिनोंतक दुराचारमें लगे रहनेके कारण, ये शिथिल और सर्द पड़ जाते हैं, उन्हें सर्दी लग जाती है और छाती बलगमसे भर जाती है। उन्हें कै, श्वास रोध और वमन होने लगता है। "पुराने शराबियोंकी छातीमें बलगमकी घरघराहट।" ऐसी अवस्थामें कभी-कभी ऐण्टिम-टार्टकी जरूरत पड़ती है। **ऐण्टिम-क्रूडकी** तबतक जरूरत रहती है, जबतक बीमारी पाकाशयमें ही सीमित रहती है। ऐण्टिम-टार्टकी उस अवस्थामें जरूरत पड़ती है, जब बढ़ती हुई घबड़ाहट, सर्दी और अवसन्नताके साथ वक्षके लक्षण मौजूद रहते हैं, बहुत दिनोंतक शराब पीते रहनेके कारण अवसन्नता। पुराने गठियाके रोगी, पुराने शराबी, वृद्ध भग्न-स्वास्थ्य प्रकृतिवाले मनुष्य, भग्न-स्वास्थ्यवाले बच्चे, मानो वे बुड्ढे हो गये हैं। इन्हें छातीमें सर्दी लग जाती है, बलगमकी बहुत अधिक घरघराहट रहती है। उन्हें इस दवाकी जरूरत रहती है।

बहुत करके पाकाशयमें एक तरहकी घबड़ाहट रहती है। यह हमेशा दर्द नहीं कहलाता, बल्कि एक चिन्ताका भाव, एक मृत्यु-कालकी तरह

बहुत अधिक बलगम निकलना तथा छातीमें बहुत अधिक घरघराहटके साथ प्यासका न रहना। कभी-कभी पाकाशयमें ठण्डी चीजोंकी अदम्य इच्छा पैदा हो जाती है, पर ऐसा शायद ही कभी होता है। "खटाई या खट्टे फल खानेकी इच्छा," पर ये रोगीको बीमार बना देते हैं। ऐण्टिमोनियम क्रूडमकी तरह सिर्का, खट्टे पदार्थ, खट्टी शराब, खट्टे फल प्रभृति खानेके कारण पाकाशयकी बीमारियाँ। दूध और खासकर सभी पोषक पदार्थोंसे अरुचि, पर दूध खासकर उसे बीमार बना देता है और मिचली तथा वमन होने लगता है। पाकाशय तथा उदर वायुके कारण खब तने रहते हैं, तलपेट फूला रहता है, पाकाशय तथा उदरके लक्षणोंके साथ लगातार मिचली बनी रहती है, पर यह मिचलीसे भी कुछ बढ़कर है। प्रत्येक खाद्य या पोषक पदार्थोंपर भयानक घृणा रहती है। यह मिचली इस भावके साथ रहती है, कि यदि वह कुछ भी खायगा, तो मर जायगा। केवल खाद्य-पदार्थों पर ही अरुचि नहीं रहती, केवल वैसी साधारण मिचली ही नहीं रहती, जो वमनके पहले होती है, बल्कि खाद्य-पदार्थोंसे एक भीषण घृणा रहती है। कमजोरीके कारण घबड़ाहट और भी बढ़ जाती है और जब उसे खानेको दिया जाता है, तो उसका दम और भी घुटने लगता है। दयालु मनुष्य चाहते हैं, कि रोगी कुछ खाये, शायद उसने दिनभर या दिन-रात कुछ नहीं खाया है, पर खाद्य-पदार्थकी चिन्ता ही उसके श्वास-कष्टको बढ़ा देती है, उसकी मिचली बढ़ा देती हैं, उसकी अनिच्छा और उसकी बीमारीको बढ़ा देती है। इस दवामें वमन कोई साधारण बात नहीं है। यह वमन कुछ-न-कुछ आक्षेपिक (Spasmodic) होता है। "भयानक ओकाई, मिचली, ओकाई तथा वमनकी चेष्टा", "श्वास-कष्ट, बड़े कष्टके साथ ओकना।" मालूम होता है, कि पाकाशयमें आक्षेपिक क्रिया हो रही है और बड़े कष्टसे, बहुत बार, बहुत तरहकी चेष्टाएँ करनेपर कहीं थोड़ा-सा निकलता है, फिर कुछ ज्यादा निकलता है, इसके बाद बन्द हो जाता है। "बहुत-ने श्लेष्माके साथ, जो कुछ भी पेटमें हो, उसकी कै।" कभी-कभी रक्तके साथ गाढ़ा, सफेद, डोरीकी तरह बलगम निकलता है। "बहुत जोर लगकर लोंद—कीचकी तरह वमन करता है, बहुत अधिक मात्रामें श्लेष्माका वमन होता है, लसदार बलगमकी कै होती है। "पित्तके साथ लोंदका वमन। गाढ़ा, पनीला बलगम, फिर थोड़ा खाद्य, फिर पित्तकी कै होती है।" पर प्रधान चीज जो वमनमें निकलता

है। सब जगहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे गाढ़ा, सफेद, लसदार बलगम निकलता है। कड़ा और डोरीकी तरह, सूतकी तरह खींच दिया जा सकता है। रोगीको कण्ठनली और मुँहसे जब यह गाढ़ा डोरीकी तरह सफेद बलगम निकलता है, तो रोगीको अकसर साँस रुकने लगती है, इससे मुँह भर जाता है। पेटकी सामग्री, जो श्लेष्मा या श्लेष्मा और पित्त रहता है, उसे निकाल बाहर करनेके लिये रोगीको भयानक चेष्टा, एक प्रकारकी आक्षेपिक चेष्टा करनी पड़ती है। वमनमें पहले तो श्लेष्मा निकलता है, फिर बहुत जोर लगानेपर पाकाशयमें पित्तका उद्गीरण होने लगता है और इसीलिये लगातार फिर पित्तकी कै होती है। बहुत जोर लगानेके कारण पाकाशयमें रक्त-स्राव भी होता है और पाकाशयकी सामग्रीपर रक्तकी रेखा पड़ी रहती है। सब जगहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जखम हो जाता है। इसमें नाक तथा स्वर-यन्त्रमें जखम हो जाता है, इन जखमोंसे खून बहता है। पाकाशयमें रक्त स्रावी घाव हो जाता है और इसीलिये खूनकी कै होती है।

ऐण्टिमोनियम क्रूडमकी तरह यह पुराने शराबियोंको लाभ पहुँचाता है। पुराने शराबी कभी-कभी दुर्बल हो पड़ते हैं और बार-बार उन्हें सर्दी लगी करती है। बहुत व्यभिचार करनेके कारण और कई दिनोंतक दुराचारमें लगी रहनेके कारण, ये शिथिल और सर्द पड़ जाते हैं, उन्हें सर्दी लग जाती है और छाती बलगमसे भर जाती है। उन्हें कै, श्वास रोध और वमन होने लगता है। "पुराने शराबियोंकी छातीमें बलगमकी घरघराहट।" ऐसी अवस्थामें कभी-कभी ऐण्टिम-टार्टकी जरूरत पड़ती है। **ऐण्टिम-क्रूडकी** तबतक जरूरत रहती है, जबतक बीमारी पाकाशयमें ही सीमित रहती है। ऐण्टिम-टार्टकी उस अवस्थामें जरूरत पड़ती है, जब बढ़ती हुई घबड़ाहट, सर्दी और अवसन्नताके साथ वक्षके लक्षण मौजूद रहते हैं, बहुत दिनोंतक शराब पीते रहनेके कारण अवसन्नता। पुराने गठियाके रोगी, पुराने शराबी, वृद्ध भग्न-स्वास्थ्य प्रकृतिवाले मनुष्य, भग्न-स्वास्थ्यवाले बच्चे, मानो वे वृद्ध हो गये हैं। इन्हें छातीमें सर्दी लग जाती है, बलगमकी बहुत अधिक घरघराहट रहती है। उन्हें इस दवाकी जरूरत रहती है।

बहुत करके पाकाशयमें एक तरहकी घबड़ाहट रहती है। यह हमेशा दर्द नहीं कहलाता, बल्कि एक चिन्ताका भाव, एक मृत्यु-कालकी तरह

धँसते जाना, पाकाशयमें एक अवर्णनीय खालीपन मालूम होता है, मानो वह मर रही है। "पाकाशयमें मिचलीके साथ घबड़ाहट।" वमन और पित्तके साथ यकृतका धीमा रक्त-सञ्चय।

यह दवा काटनेकी तरह दर्दसे भरी है; मानो छुरीसे काट रहा है। आँतोंमें चिकोटो काटनेकी तरह मालूम होना। शूलका दर्द, तलपेटका तना रहना, यह तलपेट रक्ताम्बु (Sorum) के कारण तना रह सकता है अथवा वायुके कारण। "तेज़, काटनेकी तरह दर्द, मानो छुरीसे काटा जा रहा है।" "तलपेटमें बहुत तेज दर्द।" शोथ, सब तरहके ऐण्टिमोनियोंकी एक प्राकृतिक अवस्था है। मुझे याद है, कि एक क्रियाशील अश्व-चिकित्सक उन सब घोड़ोंको काली ऐण्टिमोनी अस्तबलमें जा-जाकर खिलाता था, जब उनमें कीड़े हो जानेकी बीमारी वहाँ फैली हुई थी। मुझे मालूम हुआ कि वह सभी घोड़ोंको काली ऐण्टिमोनी दे रहा है। मैंने कहला दिया कि—मैंने अपने घोड़ेको जो दवा दी है, उसके सिवा और कुछ न दिया जाये। करीब-करीब उन सभी घोड़ोंको शोथ हो गया, जिनकी उसने चिकित्सा की थी और वे कई दिन, बल्कि कई सप्ताह पैरमें पट्टी बँधाये बीमार रहे। यह ऐण्टिमोनियमकी एक परीक्षा थी। ऐण्टिम-टार्ट इससे भरा है। पहले यह चाल चली हुई थी कि भग्न-स्वास्थ्य प्रकृतिवालोंको, न्युमोनिया और ज्वरके अन्तमें ऐण्टिम-टार्ट सेवन कराया जाता था, पर आराम हो जाने बाद, तीन-चार महीनोंतक उनके पैरमें सूजन प्रायः बनी रहती थी। यदि वे इसे न सेवन करते थे, तो उन्हें "ज्वरके घाव" निकलते थे। "ज्वरके घावों" का एक साधारण कारण ऐण्टिमोनियम है। भग्न-स्वास्थ्यवाले मनुष्योंको एक तरहका लँभड़ानेवाला और धीमा जखम पैरपर होता है। कभी-कभी तो यह बिलकुल आराम हो नहीं होना चाहता। यह तबतक कभी भी आराम नहीं होता, जबतक हमारी प्रणालीके चिकित्सकके हाथमें वे रोगी नहीं आते।

एपिस मेलिफिका।

(Apis Mellifica)

इस दवामें शरीर-पटलके इतने अधिक लक्षण हैं, कि पहले हम इसके बाहरी दृश्यका ही अध्ययन करेंगे। समूचे शरीरपर एक तरहके मोटे ददोरे निकलते हैं। कभी-कभी तो ये गुलाबी रङ्गके रहते हैं, ये रूखे रहते हैं और अगुली छुलानेपर रूखे ददोरे मालूम होते हैं, उस समय रोगी गर्मीसे बहुत व्याकुल हो पड़ता है और ददोरे रहने या न रहनेपर भी शरीर बहुत स्पर्श कातर रहता है। जहाँ-तहाँ गाठ-गांठकी तरह सूजन पैदा होती और मिट जाती है। इसके बाद विसर्पकी तरहके प्रादाहिक फफोले, यहाँ-वहाँ और सरके पास पैदा होते हैं। इसके साथ ही चेहरा, आँख और पलकोंमें सूजन पैदा हो जाती है। विसर्प, शरीरके किसी भी स्थानमें हो सकता है, पर यह साधारणतः चेहरेपर ही होता है, बहुत अधिक प्रादाहिक क्रिया होती है और इसमें डङ्क मारने तथा जलनेकी तरह दर्द और शोथ रहता है। हाथ-पैरोंमें यह शोथ स्पष्ट दिखाई देता है और सूजनको दबानेपर गड्हा पड जाता है। एक सार्वाङ्गिक आमवात भी दिखाई दे सकता है। किसी-किसी समय चेहरा बहुत सूज जाता है, पलकें पानीके थैलेकी तरह दिखाई देती हैं, घण्टी (शुण्डिका) पानी-भरे थैलेकी तरह झूला करती है, उदर-प्राचीर मोटी पड जाती है, दबानेपर गड्हे पड़ते हैं और किसी भी स्थानकी श्लैष्मिक-झिल्लीको देखनेसे ऐसा मालूम होता है, मानो छेद करनेपर वहाँसे पानी निकल पडेगा। फूलन या शोथ, जिसमें दबानेपर गड्हा पड़ता है, एक ऐसी सार्वाङ्गिक अवस्था है, जो किसी भी प्रादाहिक दशाके साथ वर्त्तमान रह सकती है। इसके सभी उपसर्ग सर्दीसे घटते और गर्मीसे बढ़ते हैं। चर्मके लक्षण और रोगीके लक्षण गर्मीसे बढ़ जाते हैं। ऐसी ही मानसिक् दशा प्रादाहिक अवस्थाओंमें, हृत्पिण्ड-सम्बन्धी अवस्थाओंमें, शोथ तथा कण्ठके जखम प्रभृतिमें भी रहती है। कभी-कभी तो गर्म पेय, गर्म कमरा, गर्म कपडे या आगकी गर्मी प्रभृतिसे रोग-वृद्धिकी तरह हो जाता है। गर्मी रहनेसे ही रोगीको बहुत तकलीफ होने लगती है। मस्तिष्ककी बीमारियोंमें, यदि किसी मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयवाले एपिसके रोगीको आप गर्म स्नान करा दें, तो उसे टङ्कार-रोग

हो जायगा। इसीलिये, गर्म पानीका स्नान "बेहोशीके दौरामें" हमेशा लाभ-दायक नहीं होता। ऐलोपैथिक चिकित्सा प्रणालीके पाठ्य-ग्रन्थोंमें यह इतना सिखाया जाता है, कि वृद्धाएँ तथा छात्रियां जानती हैं, कि बेहोशीके दौराके लिये गर्म स्नान उपकारी है और यदि वहाँ आप चुपचाप जायें, तो देखेंगे कि बच्चा मरा पड़ा है। थोड़ी ऐंठन और टङ्कार हो जानेकी प्रवणतावाले मस्तिष्कके इस रक्त-सञ्चयमें, बच्चेको गर्म-स्नान करा देते हैं, पर वहाँ जाकर आपको एक भयावनी अवस्था दिखाई देगी। यदि बच्चेके मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयके लिये **ओपियम** या एपिसकी जरूरत है, तो गर्म पानीके स्नानसे बेहोशी और भी बदतर हो जाती है। यदि दाईने ऐसा काम किया है, तो आपको घरमें जाते ही दवा मालूम हो जायगी, क्योंकि वह कहेगी, कि गर्म स्नानके बाद बच्चेकी दशा और भी खराब हो गयी है। वह मुर्देकी तरह पीला हो गया है और मुझे भय है, कि मरना ही चाहता है। यहाँ आपको ऐसी अकड़नकी बीमारी मिलती है, जो गर्मीसे बढ़ जाती है। यह खासकर **ओपियम** और एपिसको निर्देश करती है। सम्पूर्ण एपिसमें यही दशा है। पुस्तकोंमें यह नहीं लिखा है, कि एपिसके कण्ठके लक्षण गर्म पेयोंसे बदतर हो जाते हैं, रोगी एकदम ठण्डी चीजें चाहता है और गर्म चीजें नहीं खाना चाहता, क्योंकि उनसे उनकी रोग-वृद्धि होती है। एक बार मेरे एक सहकर्मीने मुझे लिखा था, कि जैसा कहा गया था, केवल साधारण लक्षणको ध्यानमें रखकर, समूचा रोगी एपिसका मिलनेके कारण, मैंने एक डिफ्थीरियाका ऐसा रोगी आरोग्य किया है, जिसे सर्दीसे आराम पहुँचता था। इससे मालूम होता है, कि साधारणतः लक्षण किस तरह विशेषमें परिणत हो जाते हैं और किस तरह उनका उपयोग किया जा सकता है। साधारणसे ही हमारी मेटिरिया-मेडिका बनी और बढ़ा करती है।

बाह्य-पटलपर एपिसका रोगी शोथ, लाल ददोरे, उद्भेद, आमवात, विसर्पसे भरा दिखाई देता है। यह प्रदाह श्लैष्मिक-झिल्लीतक फैल जाता है। जब हमलोग किसी मनुष्यके केन्द्रसे परिधितक काम लेते हैं, तो हमलोग मस्तिष्क, हृदुपिण्ड और जरूरी भीतरी यन्त्रोंको सबसे भीतरी अंश मान लेते हैं तथा उनके आवरण और पर्दोंको बाहरी मानते हैं। एपिस बाहरी चीजोंपर अपना प्रभाव पहुँचाता है, यह आवरण अर्थात उसके पर्दोंपर कार्य करता है। आप देखते हैं, कि यह किस तरह चर्म तथा उसके पासवाले तन्तुओंपर प्रभाव

डालता है और इसी तरह किसी यन्त्रके आवरण तथा आच्छादनपर भी अपनी क्रिया करता है। जैसा कि हृदावरक झिल्लीपर (Pericardium) होता है। इससे रक्ताम्बु-पूर्ण प्रदाह होता है, जिसमें रस-स्राव होता है। एपिस मस्तिष्ककी झिल्लियोंमें प्रदाह उत्पन्न करता है। हृदपिण्ड, हृदावरक-झिल्लीको आवरण करनेवाले रक्ताम्बु-कोष तथा अन्त्रावरक-झिल्लीमें भी यह उसी तरहका प्रदाह उत्पन्न करता है। इस तरह हम देखते हैं, कि आवरणोंपर ही एपिसका विशेष प्रभाव पहुँचता है अर्थात चर्म, श्लैष्मिक-झिल्लियाँ तथा यन्त्रोंके आवरणपर इसकी विशेष क्रिया होती है और इनके साथ ही हमें प्राप्त होता है—शोथ, श्लैष्मिक-झिल्लियोंका प्रदाह और विसर्प। इन सभी प्रादाहिक अवस्थाओंके साथ डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन रहती है, समय-समयपर तो ऐसी जलन होती है, मानो अंगारा रखा है और डङ्क मारनेमें ऐसा मालूम होता है, मानो सुई या छोटी काँटियाँ घुसायी जा रही है।

एपिसके मानसिक लक्षण भी बड़े आश्चर्यप्रद हैं तथा सम्पूर्ण मानसिक अवस्थाओंमें अद्भुत है, गर्मी और गर्म कमरेमें रोग-वृद्धिका लक्षण रहता है। इसके और भी अपने लक्षण हैं,—उदासी, लगातार रोना, आँसू बहाना, बिना किसी कारणके ही दिन-रात रोते रहना, विरक्तकर विचार तथा हरेक बातके लिये चिन्ताके कारण सो नहीं सकना, बराबर रोते रहनेके साथ-ही-साथ निराशाका भाव, उदासी और उदासीनता, अत्यन्त उत्तेजना-प्रवणता, हर चीजके लिये मानो कष्ट बटोरता है, मूर्खता-पूर्ण सन्देह और ईर्षासे भरा रहता है। रोगिणी एकदम आनन्द-रहित रहती है, प्रसन्न या आनन्दित करनेवाली प्रत्येक बातसे यह उदासीन रहती है। उन चीजोंका अपने लिये प्रयोग करनेकी उसमें योग्यता ही नहीं रहती, जो उसे सुखी कर सकेगी। वह उनका कुछ दूसरा ही मतलब लगा लेती है। प्रसूति-कालके किसी स्त्रीका या बड़ी अवस्थाकी किसी स्त्रीका मूर्ख-उजड्ड बच्चोंका-सा व्यवहार, गम्भीर अवसरोंपर मूर्खता-पूर्ण बातें करती है, जैसे कि कोई बच्चा बोलता है। बच्चा धीरे-धीरे बेहोशीकी अवस्थाकी ओर बढ़ता जाता है। तन्द्रामें पड़ा रहता है, उसके एक तरफके शरीरमें ऐंठन होती है, दूसरा पार्श्व एकदम गति-हीन रहता है, इधर-से-उधर सर लुढ़काता है, माथा पीछेकी ओर कसकर खिंचा रहता है, आँखकी पुतलियाँ या तो सिकुड़ीं अथवा फैली रहती हैं। आँखें बहुत लाल, चेहरा भर्राया, एक मूर्खों की दशा या अर्द्ध-चेतन अवस्था रहती है। बच्चा

अधमुँदी आँखोंसे पड़ा रहता है, मानो सुन्न हो गया हो। यह मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह या मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह (Cerebro-spinal Meningitis), जिसमें आँखका गोला बाहर निकला रहता है, उस अवस्थामें फायदा करता है, जब सारे लक्षण गर्मीसे बढ़ जाते हैं। अगर कमरा बहुत गर्म हो जाता है, तो बच्चेकी और भी भयावनी अवस्था हो जाती है, एकदम मुर्देकी तरह या पीला हो जाता है। यदि बच्चेमें ताकत रहती है, तो ओढ़ना लात मारकर फेंक देता है। यदि वह ऐसी स्थितिमें है, कि जहाँ वह किसी बड़ी खुली झिलमिलीसे देख सकता है, तो उसके रोग-लक्षण और भी बढ़ जायँगे। मैंने ऐसे एपिसके रोगी बच्चे देखे हैं, जिन्हें खुली आगकी पाससे हटा देना पड़ा है। खुली आग या चूल्हेसे निकलकर जो गर्मी उन्हें लगती है, उससे बचनेके लिये वे रोते-चिल्लाते हैं। गर्मी प्रत्येक लक्षणकी वृद्धि कर देती है और कभी-कभी रोगीके समूचे शरीरमें ठण्डा पसीना होने लगता है, जिससे न तो उसका ज्वर ही घटता है और न जलनकी गर्मी ही। बहुतकर तो उसका माथा इधर-उधर लुढका करता है, दाँत कड़मड़ाया करते हैं तथा आँखें टङ्कार हो जानेकी तरह चमका करती हैं, बार-बार बच्चा माथेपर हाथ ले जाता है, एक अर्द्ध-चेतनाकी अवस्था रहती है और बच्चा एक इस तरहकी चीखसे चीखता है, जिसका मतलब ही है, कि मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय हो गया है। Cri-encephalique—मस्तिष्ककी चिल्लाहट (Brain cry), यह चीख एपिसका एक सुदृढ़ स्वरूप है। मस्तिष्ककी बीमारी रहनेपर बच्चा इसी तरह नींदमें चीखता है। पाठ्य-ग्रन्थोंमें लिखा है —"बेधनेवाली चीखसे गहरी नींदमें बाधा पड़ती है।" साधारण परीक्षाके आरम्भिक लक्षणोंमें, हम उस रोगको देख सकते हैं, जो इसके सदृश हैं, क्योंकि हमलोग सदा दवाको बढ़ी हुई अवस्थामें नहीं देखते। हमलोग रोगको बढ़ते हुए देखते हैं और आरम्भिक अवस्थामें भी जरूर देख सकते हैं। जो चीजें समान-रूपसे आरम्भ होती है, उनका समान ही अन्त भी होता है।

एपिसमें बुदबुदाना, प्रलाप और बकवादीपन भी रहता है। सब तरहका चिल्लाना, चीखना, कहरना—यह बहुत तेज हो या कम तेज। मृत्युका-पूर्वाभास, मृत्युका भय, सन्यास (Apoplexy) का भय। "बहुत व्यस्त, बेचैन, कामका ढङ्ग बदला करता है, साथ ही बेढङ्गापन।" एपिसमें अंगुली, अंगूठे तथा प्रत्यङ्गोंमें विशेषकर बेढङ्गापन दिखाई देता है। समूचे स्नायु-मण्डल साम-

जम्यकी गड़बड़ी प्रकट करते हैं। मार्मजम्यकी यह गड़बड़ी इस दवामें है। वेटइ्गापन, आँखें मन्दकर हिलाते रहना, आँख मन्द रहनेपर सरमें चक्कर आना। "भय, क्रोध, विरक्ति, ईर्षा या बुरी खबर सुननेके कारण पैदा हुए उपसर्ग।" "किसी गहरे मानसिक आघातके कारण दाहिने अङ्गका पक्षाघात-ग्रस्त हो पड़ना।"

एपिसकी बीमारियाँ तेजी और भयङ्करतासे आक्रमण करती हैं। वे बहुत शीघ्रतासे आती हैं, और क्रमसे तबतक बढ़ती हैं, जबतक बेहोशी नहीं आती। मैंने भाग्यवश मधुमक्खीके डङ्कके ज़हर चढ़नेके बहुत-से भयानक रोगी देखे हैं। जब किसी अत्यन्त स्पर्श-कातर रोगीको मधुमक्खीके डङ्कका ज़हर चढ़ता है, तो वह भयानक रूपसे बीमार हो जाता है। अधिकांश मनुष्योंको जीवन-कालमें मधुमक्खीने डङ्क मारा होगा। जहाँ डङ्क लगता है, वहाँ थोड़ी-सी सूजन-भर होती है। यह सूजन रोबिन चिड़ियाके अण्डेके बराबर होती है या ज्यादा-से-ज्यादा मुर्गीके अण्डेके बराबर। इससे उसकी धातुगत अवस्था उस समय नहीं बदलती, वह मनुष्य एपिसका स्पर्श-कातर नहीं रहता, सम्भव है, कि उसे छः जगह मधुमक्खीने डङ्क मारा हो, पर हर जगह कुछ थोड़ी-सी फूलन-भर हो जाती है, पर मधुमक्खीके डङ्कसे स्पर्श कातर यदि कोई मनुष्य आपको मिले और उसे किसी भी जगह जरा-सा भी यह डङ्क लग जाये, तो उसे मिचली और घबड़ाहट पैदा हो जाती है, जिससे उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो वह मर रहा है और लगभग दस मिनटोंके भीतर ही वह शुलपित्ती (Urticaria) से सरसे पैरतक भर जाता है। वह छटपटाता है, जलता है और ठण्डे पानीसे नहाना चाहता है, वह डरता है, कि यदि उसका रोग घटानेके लिये कुछ न किया गया, तो वह मर जायगा। वह इस तरह लोटता और तड़पता है, मानो अपनेको टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। मैंने ये सब लक्षण एपिसमें पैदा होते देखे हैं। इसका प्रतिविष **कार्बोलिक एसिड** है। इस अवस्थामें **कार्बोलिक एसिडका** प्रयोग होते मैंने देखा है और रोगीने **कार्बोलिक एसिडकी** अनुभूति ऐसी बतायी है, मानो कण्ठसे नीचे उतरते ही ठण्डक आ गयी हो। वह कहता है,—"क्यों डाक्टर साहब! मुझे अनुभव होता है, कि यह खुराक मेरी अंगुलियोंके सिरेतक पहुँच गयी है। इस अवस्थामें जब आप किसी प्रति-विषका प्रयोग करें तो ध्यान दें, कि रोगी क्या कर रहा है। यदि आपको

सच्चा प्रतिविष मिल जाये और जब कभी किसी रोगीके लिये सच्ची आरोग्यदायक औषधि मिले, तो आप कितनी ही ऊँची शक्तिकी दवा क्यों न दें, रोगी कहेगा—"मुझे इसका अनुभव रोम-रोममें और अगूठेकी नोकतक होता है।" जब उसके शरीर-विधानके अन्तरतम प्रदेशमें सच्ची प्रतिविष औषधि पहुँचती है, तो ऐसी ही अनुभूति होती है और इसी ढङ्गसे हम अपनी दवाकी क्रिया रोगीके लक्षणोंसे, सदा परिचालित होती प्राप्त करना चाहते हैं, वे ही हमें बतायेंगे, कि कौन-सी दवा देनी चाहिये और इस तरहकी दवा जब दी जाती है, तो उसकी सर्वोच्च क्रिया इसी ढङ्गकी प्राप्त होती है।

यदि एपिसके लक्षण हमें अच्छी तरह समझमें आ जायें तो बिना किसी चक्षु-विशेषज्ञके ही हमलोग आँखका इलाज कर सकते हैं। वे अपने लोशन, कास्टिक लोशन प्रभृतिसे लाभ पहुँचानेकी अपेक्षा अधिक मनुष्योंको अन्धा बना देते हैं। पुरानी चाल तो यह थी, कि ताँबा और सिलवर नाइट्रेट साल्यूशनसे जला देना और वर्त्तमान चीजें भी उससे कुछ बहुत उत्तम नहीं हैं। वर्त्तमान समयमें जो होमियोपैथिक चिकित्सक आँखोंके साथ ही फुसफुसके और शरीरके किसी अन्य भागके लक्षण अच्छी तरह नहीं ग्रहण कर सकता, वह चिकित्साके योग्य नहीं है। आँखोंकी बीमारियोंका भी इलाज चिकित्सक कर सकते हैं। होमियोपैथीमें आँखोंका इलाज अथवा किसी दूसरे शरीर-यन्त्रका इलाज जैसी कोई चीज़ नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण यन्त्रोंके साथ पूरे रोगीका इलाज करना पड़ता है, न कि एक-दो यन्त्र लेकर किसी रोगीका।

एपिस आँखोंकी एक बहुत बड़ी दवा है। रोगके कारण इसमें गहरी प्रादाहिक बीमारियाँ हो जाती हैं। ये प्रदाह विसर्पकी प्रकृतिके होते हैं, जिनसे श्लैष्मिक-झिल्लियाँ और पलकें मोटी पड़ जाती हैं, आँखपर सफेद दाग पड़ जाता है, धुन्ध-रोग हो जाता है। धुन्ध-रोगके साथ प्रदाह, यह बहुत फैला हुआ रहता है या दाग-से पड जाते हैं, रक्तवाहिनियाँ बड़ी हो जाती हैं। जब प्रादाहिक अवस्थाकी क्रिया तीव्र रहती है, तो इसके साथ ही ऊपरी तथा निचली दोनों ही पलकोंमें शोथ हो जाता है और कभी-कभी तो समूचा चेहरा शोथ-ग्रस्त हो पड़ता है, जैसा कि मधुमक्खीके डङ्क मारनेपर दिखाई देनेकी आशा की जा सकती है। पलकोंको श्लैष्मिक-झिल्लीकी सूजन इतनी ज्यादा रहती है, कि वे उलट जाती हैं और कच्चे गो-मांसकी तरह दिखाई

देती है। आँखसे इतना पानी बहता है, कि गालतक बहता आता है। आगकी तरह जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है, धोनेसे और ठण्डी चीजोंके प्रलेपसे अच्छा रहता है और गर्म प्रयोगसे बढ़ जाता है। आँखकी पुरानी बीमारियाँ, जो खुली आग देखने या उससे निकलनेवाली गर्मी लगनेपर बढ़ जाती है, उनमें रोगी कुछ ठण्डी चीज़ लगाना चाहता है। पुरानी दानेदार पलकोंकी बीमारी। पुराने प्रदाहका बहुत तरहका और बहुत विस्तृत परिणाम होता है। सफेद चीजें या बरफकी ओर देखनेपर बीमारी बढ़ जाती है। चक्षु-गोलकमें दर्द, चक्षु-गोलकमें भीतर गहराईपर दर्द, सुई गड़ने, जलने, डङ्क मारने या खोंचा मारनेकी तरह दर्द। अर्जुन रोग—यह एक तरहका आँखोंका प्रदाह होता है, इसमें कनीनिकाके चारों ओर अगूठीकी तरह उठे हुए पर्दे पैदा होते हैं। एपिस अकसर पुराने कण्ठमालाजनित आँखोंके रोगमें फायदा पहुँचाता है। रक्तवहा-नाड़ियोंके रोग—शिराएँ बढ़ जाती हैं। "चक्षुतारा-प्रदाह", "आँखोंमें रक्त-सञ्चय, रक्तवाहिनियोंमें छेद हो जाता है।" सम्पूर्ण चक्षु-श्वेत पटल प्रदाहित रहता है। आलोकातङ्क—रोशनीका सहन न होना। वातज योजकत्वगौप—आँखोंकी योजक त्वचाका प्रदाह अर्थात वात-रोगियोंका बहुत जोरका आँखोंका प्रदाह, आँखोंका सर्दीकी वजहसे प्रदाह, आँखोंका कण्ठमाला-जनित प्रदाह। आँखसे खूब गर्म आँसू बहते हैं, आँखोंमें जलन होती है, आँख तथा चेहरेके एक पार्श्वका विसर्प रोग। यह दाहिनेसे बायीं तरफ फैलता है। यह कितने ही ढङ्गोंसे एपिसका निर्देशक होता है। विसर्प चेहरेके दाहिनी ओर पैदा होता है तथा बायीं तरफके नाकपर फैल जाता है। डिम्बाशयका प्रदाह बायीं ओरकी अपेक्षा दाहिनी ओर ज्यादा होता है। जरायुमें भी दाहिनी ओर ही होता है। वस्ति-गह्वरके सम्पूर्ण दाहिने भागमें दर्द, यह बायीं ओर फैल जाता है। जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द यहाँ-वहाँ हुआ करता है और दाहिनेसे बायीं ओर फैलता है।

आरक्त-ज्वरके साथ या उसके बाद मध्य-कर्णका प्रदाह।

अब हम एपिसकी कण्ठकी बीमारियोंपर आते हैं। इसमें बहुत सी कण्ठकी तकलीफें हैं। एपिस डिपथीरियाको खासकर उस अवस्थामें आरोग्य करता है, जब बहुत जोरोंका प्रदाह रहता है तथा झिल्ली बहुत थोड़ी रहती है अथवा धीरे-धीरे गुप्त-रूपसे निकलती है और यह आश्चर्यकी बात है, कि यह

किस तरह धीरे-धीरे बढ़ती है। ये अंग शोथ-ग्रस्त रहते हैं और कोमल तालु पानीके थैलेकी तरह फूल जाता है और शुण्डिका अर्द्ध-पारदर्शकके रूपमें, पानी-भरे थैलेकी तरह लटका करती है। समूचे कण्ठ और मुँहकी ऐसी जल पूर्ण शोथ-ग्रस्त-सी अवस्था रहती है, मानो जरा-सा छेद कर देनेसे ही पानी निकल पड़ेगा। कण्ठमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है। यह ठण्डेसे घटता है और गर्मीसे बढ़ता है। सब तरहके गर्म पदार्थ और पेयोंसे घृणा, जीभ यहाँतक फूल जाती है कि मुँह भर जाता है, जीभका दाहिना आधा भाग बहुत खराब रहता है अथवा पहले दाहिनी ओर आक्रमण होता है। कच्चे मासकी तरह शक्ल जीभकी, गालका गड़हा और कण्ठकी, मानो आवरण-हीन खाल उधड़ी-सी अवस्था रहती है। कण्ठमें कितनी ही तरहकी सूजन रहती है। जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द तथा लालीके साथ धीमी सूजन। प्रदाहके परिणाममें पैदा हुए कण्ठके जखम। आरक्त-ज्वरके साथ होनेवाले तेज-से-तेज कण्ठके घावमें भी एपिस फायदा करता है। लक्षण मिलनेपर यह आरक्त-ज्वरको आरोग्य कर देता है और कभी-कभी ददोरे रुखड़े रहनेपर भी आरक्त-ज्वरमें एपिससे फायदा होना कोई असाधारण बात नहीं है। आरक्त-ज्वरके दाने सदा चिकने और चमकीले नहीं हुआ करते, जब ये दाने बिलकुल ही नहीं निकलते, तो चेहरा बहुत मलिन रहता है और साथ ही कण्ठमें जोरोंका प्रदाह रहता है। परिवारमें आरक्त ज्वर चल रहा है और बिना दानोंके ही किसीका चमड़ा लाल हो रहा है, जिन रोगियोंकी बीमारी गर्मीसे बढ़ जाती है, ओढ़ना उतार फेंकना चाहते हैं तथा कमरेकी गर्मी सहन नहीं होती, उनके लिये उपयोगी है। रोगी ठण्डा कमरा चाहता है, गर्मीसे तकलीफ बढ़ती है, ठण्डी चीजोंकी इच्छा करता है। खासकर विकीर्णित ताप (Radiated heat) से बीमारी बढ़ती है अथवा चूल्हे या अग्नि-नियामक (Register) से जो हवा निकलती है, उससे तकलीफ बढ़ती है। थोड़ी-सी भी गर्म हवा जब उसके शरीरके ऊपरसे चली जाती है तो उसकी साँस घुटने लगती है। सविराम ज्वरके शीतके समय जो गर्मी उसे बुरी मालूम होती है, इस शीतके समय भी यदि वह गर्म कमरेमें रहता है, तो उसका दम घुटने लगता है। थोड़े-से भी विकीर्णित तापसे आरक्त ज्वर, डिफ्थीरिया या गलेके जखममें उसका दम घुटने लगता है। वह चाहता है, कि दरवाजे खिड़कियाँ खोल दी जायें, कुछ ठण्डक चाहता है। कभी-कभी तो दाने न निकलनेकी

वजहसे आरक्त ज्वरके रोगीमें टकार पैदा हो जाता है और कभी-कभी तो एपिस इसको बहुत ही उपयुक्त दवा हो जाती है। इसकी **कूप्रम, जिङ्कम** और **ब्रायोनिया**से अवश्य तुलना करनी चाहिये। इस अकड़नको गर्म-स्नान और भी बढ़ा देगा।

"सवेरेके वक्त सङ्कोचन और जखमकी अनुभूति होती है।" कण्ठमें जखम और सूजन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द। "कड़ी चीजें निगल नहीं सकता।" इन उपसर्गों के साथ अकसर सिहरावन, कम्पन, थोड़ा थोड़ा जाड़ा तथा हल्का बोखार मिला रहता है, कितनी ही बार आप सोचेंगे, कि गर्म कम्बल ओढ़ा देनेसे रोगीको आराम मिलेगा, पर यह उसको हालत और भी खराब कर देगा, रोगी उसे उतार फेंकेगा। बच्चा ओढ़ना लात मारकर फेंक देगा। अवस्था-प्राप्त रोगी ओढ़ानेके समय जो काँप रहा था, वह भी ओढ़ना उतार फेंकेगा। ये अद्भुत और विचित्र बातें निर्देशक स्वरूप हैं, ये ऐसी चीजें हैं, जिनकी कैफियत नहीं दी जा सकती।

एपिसमें वमन, मिचली तथा बड़ी घबड़ाहटके साथ ओकाई और मिचली रहती है। खायी हुई चीज़ और पित्तका वमन, तीते और खट्टे तरलोंका वमन।

एपिस समस्त तलपेटमें और कोखमें घावकी तरह यन्त्रणा और कड़ापन पैदा कर देता है। एपिसके बहुत-से रोगोंके साथ कड़ापनकी अनुभूति रहती है। तलपेट वायुसे तना रहता है। वायु-पूर्ण अवस्था, बहुत तनाव और भरापन कड़ा और ढोलकी तरह रहता है। सभी प्रादाहिक रोगोंमें, अन्त्रावरण-प्रदाहमें, यकृतके प्रदाहमें, वस्ति गह्वरके प्रदाहमें, बहुत तनाव और कसावट रहती है, पर यह कसावट सदा सार्वाङ्गिक नहीं होती, कभी-कभी स्थानिक होती है, कभी-कभी इसके साथ थोड़ा रक्त-सञ्चय भी रहता है, पर यह कसावट समूचे तलपेटमें रहती है और इसी कसावटकी वजहसे, रोगीको इस भयसे खाँसना असम्भव हो जाता है, कि कुछ फट जायगा। खाँसनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ टूट जायगा। पाखानेके समय काँख नहीं सकता, स्त्रियोंके उदर और वस्ति-गह्वरके उपसर्गों में तो यह एक बहुत साधारण बात है। रोगिनी कहेगी कि पाखानेके समय वह जोर नहीं लगा सकती, क्योंकि उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो यदि वह जोर लगायेगी (काँखेगी), तो कुछ टूट जायगा। सीनेकी भी यही हालत रहती है। ऐसा

मालूम होता है, मानो खाँसनेपर कुछ टूट गिरेगा, मानो सभी तन्तु तनने या फैलनेकी हालतमें हो रहे हैं।

यकृतकी बहुत ज्यादा अनुभूति-भरी अवस्था, यकृत और तिल्लीका प्रदाह, छोटी पसलियोंमें दर्द, यह बायी करवट लेटनेपर बढ जाता है। "पसलियोंके नीचेसे दर्द, यह ऊपरकी ओर फैलती है। कुक्षिदेशमें दर्द-भरे सकोचनका भाव रहनेके कारण रोगीको बाध्य होकर सामनेकी ओर झुक जाना पडता है।" सभी उपसर्गों में रोगीको सामनेकी ओर झुकना और प्रत्यङ्गोंको ढीला कर देना पडता है, क्योंकि तनावकी अवस्था रहनेके कारण उन्हें बहुत कष्ट होता है। छूनेपर पाकाशयमें स्पर्श सहन न होना। रोगिनोका समूचा तलपेट इस तरह तरह यन्त्रणासे भरा रहता है, कि छूनेसे उसे बहुत तकलीफ होती है, स्त्रियोंकी सभी उदरकी बीमारियोंमें तलपेट बहुत यन्त्रणापूर्ण और दर्दसे भरा रहता है। सम्पूर्ण तलपेटमें घावकी तरह यन्त्रणा, तनाव और डङ्क मारनेकी तरह जलनका दर्द रहता है, पाकाशयमें जलनकी तरह ताप।

तलपेटके बाहरी भागकी एक शोथ-ग्रस्त-सी अवस्था रहती है। कभी अकेला शोथ और कभी उसके साथ हो सर्वाङ्गीन शोथ रहता है। प्रत्यङ्ग भरपूर सूज जाते हैं, दबानेपर गडहा पडता है, पैर और प्रत्यङ्ग फूले रहते हैं। साथ ही प्रत्यङ्गोंमें जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द और सुन्नपन रहता है।

ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें कुचल गई हैं। एपिसमें पानीके जैसा दस्त तो एक साधारण बात है, पीले दस्त, हरे दस्त, जैतूनकी तरह हरे दस्त, पानीकी तरह दस्त प्रभृति। रोज़ छ से आठतक पतले दस्त आते हैं, जिनमें सडे मांसकी तरह गन्ध रहती है। यह खासकर बच्चों और बालकोंके एक विचित्र प्रकारके दस्तोंमें उपयोगी होता है, जब दस्तमें खून मिला रहता है या श्लेष्मा अथवा खाया हुआ पदार्थ मिला रहता है। यह देखनेमें टोमाटो (विलायती बैगन) की चटनीकी तरह मालूम होता है। पाखानेके साथ मल-द्वार बाहर निकल आता है (काँच निकलना) और खुला रहनेकी तरह दिखाई देता है। **फास्फोरस** और **पल्स**की तरह खुला मल-द्वार। पुराना अतिसार, रक्तामाशय तथा आँतोंसे रक्त-स्राव, साधारणतः माथेकी तकलीफोंके साथ कब्ज रहता है, कई दिनोंतक पाखाना ही नहीं होता। मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय और नये मस्तिष्कके जल सञ्चय (Hydrocephalus) के साथ आँतें एकदम पक्षाघात-ग्रस्त-सी मालूम होती हैं।

एपिसमें बहुत सी पेशाबकी तकलीफें भी हैं। पेशाब थोड़ा बूंद-बूंदकर होता है, पेशाब होनेके पहले बहुत काँखना पड़ता है, तब कहीं कई बूंद टपक पड़ता है, थोड़ा सा गरम पेशाब टपक पड़ता है, जलता हुआ पेशाब, खूनका पेशाब। क्योंकि कई बूंद पेशाब मूत्राशयमें इकट्ठा होता है, पेशाब लग जाता है, लगातार हाजत होती है, पेशाब लगता है, होता नहीं। इसके बाद पेशाब एकदम रुक जाता है। बच्चोंको बहुत देरतक पेशाब नहीं होता, चीखते हैं और माताकी छाती पर हाथ ले जाते हैं, नींदमें रोते हैं, ओढ़ना उतार फेंकते हैं। अकसर एक खुराक एपिस ही फायदा कर देगा। पेशाब ऐल्बुमेनसे भरा रहनेपर अकसर आरक्त ज्वरमें इसकी जरूरत रहती है। जननेन्द्रियमें सूजनके साथ पेशाबकी बीमारियाँ, अमसर शोथग्रस्त रहता है। अग्र-चर्म बेतरह फैला रहनेके साथ या अण्ड-वृद्धि होनेके साथ छोटे लड़कोंको थोड़ा पेशाब होना, जितनी ही बार पेशाब लगता है वह चीखता है, क्योंकि गत बार उसे जो दर्द हुआ है, वह उसे याद है। गुर्दा, मलनली, मसाना और मूत्रनलीकी प्रादाहिक बीमारियाँ। सम्पूर्ण मूत्र-पथ उपदाहित रहता है, बहुत कुछ कैन्थरिसकी तरह और ये दोनों ही दवाएं आपसमें प्रतिविषका काम करती हैं। यदि किसी ऐसे लड़केको देखनेके लिये आप बुलाये जायें जिसे कुछ एपिस खिलाया गया है, तो आप अकसर कैन्थरिससे ही उसका विष दूर करेंगे। एपिसमें झटका, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द समूचे मूत्र-पथमें मालूम होता है। "अनजानमें पेशाब होना।" मूत्ररोधके साथ मूत्रनलीमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। मूत्र-यन्त्रोंका रोगात्मक उपदाह। 'मूत्रकष्ट, पेशाब करनेके समय तेज दर्द, दूध पीनेवाले बच्चोंका मूत्र रोध।" एपिसकी परीक्षा होनेके पहले ही दवाएं इस बातको जानती थीं। जब किसी नये पैदा हुए बच्चेको पेशाब नहीं होता, तो वे किसी मधुमक्खीके छत्तेसे दो चार मधुमक्खियाँ पकड़ लाती, उसपर गर्म पानी ढाल देती थी और उसमेंसे एक चायका चम्मचभर बच्चेको पिलाकर आरोग्य कर देती थीं। इसी तरहकी कुछ घरेलू चीजें परिवारके मनुष्योंको और धात्रियोंको मालूम रहती थीं। ठीक इसी तरह हमलोग भी एपिसका प्रयोग करते हैं। पेशाब थोड़ा और बदबूदार, इसमें अण्डलाल और रक्त कण मिले रहते हैं।" खासकर अण्डलाल-मिला (Albuminuria) पेशाबकी नवीन बीमारीमें। अण्डलाल-मिले मूत्रके साथ गुर्देकी नयी प्रादाहिक बीमारियाँ, जैसा—

डिपथीरिया या आरक्त-ज्वरमें या इसके बाद हुआ करता है, जैसा किसी नयी बीमारीके पुछल्लेके रूपमें होता है। गुर्देका प्रदाह कितने ही रोगियोंकी जान ले लेता है तथा ऐलोपैथिकके हाथोंसे बहुत-से रोगी इसमें मरते हैं, पर होमियोपैथके हाथोंसे एक भी नहीं। पुरुष और स्त्री दोनो ही की जननेन्द्रियोंसे इसका घनिष्ट सम्बन्ध है। जननेन्द्रियकी सूजन और शोथ-ग्रस्त अवस्था। स्त्रियोंका एपिस बहुत बड़ा बन्धु है, लक्षण मिलनेपर, ऐसा मालूम होता है, कि यह उनकी सभी प्रादाहिक बीमारियोंको आरोग्य कर देता है अर्थात इससे जरायु और डिम्बाशयका प्रदाह और बाहरी तथा भीतरी भागकी भयानक तकलीफें उत्पन्न होती हैं और लक्षण मिलनेपर इनमेंसे अधिकांश प्रादाहिक बीमारियाँ इससे आरोग्य हो जाती है। यह गर्भ-स्रावतक रोक देता है। यदि कोई बदमाश गर्भ-स्राव करा देनेकी चेष्टा करता है, वह स्त्री दवा खा भी लेती है और दर्द भी पैदा हो जाता है, इतना दर्द कि जरायुकी सामग्री बाहर निकाल दे। खासकर प्रथम, द्वितीय और तृतीय मासमें, थोड़ा-सा रक्त-स्राव हुआ है, यह गर्भ-स्रावकी आशङ्का है, अभीतक झिल्लियाँ नहीं फटी हैं, पर जल्द ही फटना चाहती हैं, उसे डङ्क मारने और जलनकी तरह दर्द होता है, खुली पड़ी रहती है, बहुत गर्मी मालूम होती है, शायद **अर्गटकी** लम्बी खुराकके कारण। उसे अफसोस होगा, कि एपिसने उसे आरोग्य कर दिया। ऐसा दुराचार प्रचलित है, पर स्त्रियोंमें दुर्घटनाएँ और कमजोरियाँ रहा ही करती हैं, जिनसे अपनी गर्भ-रक्षापर उनका ध्यान रहनेपर भी वे एपिससे डरती हैं और ऐसी माताओंकी एपिस उपयोगिनी दवा है। डिम्बाशयमें, खासकर दाहिने डिम्बाशयमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द, जब ये बहुत बढ़ जाते हैं और यहाँतक कि कोष-गर्भ (Cystic) भी हो जाता है, तो इसकी एपिस एक बहुत उपयोगिनी औषधि प्रमाणित हुई है। इसने अकसर अर्बुद (Tumours) तक आरोग्य कर दिया है तथा उसका बढ़ना रोकनेके लिये या गायब कर देनेके लिये इसने कोष गर्भ बना दिया है। दाहिना डिम्बाशय-प्रदेश बहुत ही स्पर्श-कातर रहता है। मासिक ऋतु-स्रावके समय जरायु और डिम्बाशयमें दर्द, डङ्क मारने, छेदने और फाड़नेकी तरह दर्द, छुरीसे काटा जा रहा है, गर्मीसे बदतर हो जाता है। यह लक्षण बहुत सरलता-पूर्वक मिल जाता है, क्योंकि बहुत से कष्टदायक लक्षणोंमें आराम मिलनेके लिये ताप या गरम पानीके सेंकका

प्रयोगकर परीक्षा की जाती है, पर इस दवामें उपसर्ग बढ़ जाते हैं। वह इसे हटा देती है, क्योंकि गर्मीमें बीमारी बहुत बढ़ जाती है। "डिम्ब कोष बढ़ा" प्रभृति। दाहिने डिम्बाशयका शोथ। डिम्बाशयका अर्बुद—(Ovarian tumour)।

ऐपोसाइनम कैनाबिनम।

(Apocynum Cannabinum)

एपिससे गुण-वैषम्यमें तुलना करनेको यह एक बढ़िया दवा है। लक्षणोंमें आपको यह सदृश तथा एपिससे आरोग्य होनेवाली बीमारियोंकी तरह मिलेगी। इसकी शोथकी अवस्था, वातज अवस्था गह्वरोंका शोथ, कोषिक तन्तुओंकी अर्बुदकी तरह सूजन, शोथमें होनेवाला थोड़ा पेशाब, शोथकी प्रादाहिक सूजन, जो बहुत कुछ उसके सदृश रहता है, देखकर आप आश्चर्यमें आ पड़ेंगे। यदि आप दो रोगियोंकी चिकित्सा करना आरम्भ करें और उनके विशेष लक्षणोंको लेकर चिकित्सा करें तथा उनका एक स्वरूप रोगकी ह्रास-वृद्धि, सर्दी-गर्मीपर ध्यान न दें, तो बहुत-से रोगियोंमें आप एपिस और ऐपोसाइनमका प्रभेद भी न कर सकेंगे, क्योंकि उनकी सूजन, उनका रक्त-स्राव उनका तनाव और उनकी अन्य गड़बड़ियाँ बहुत-कुछ मिलती-जुलती हैं। दोनों ही शोथकी दवाएँ हैं। बँधी गतकी चिकित्सा करनेवाले पहले एपिसकी परीक्षा करेंगे और इसके बाद ऐपोसाइनमकी और फिर किसी दूसरी ऐसी दवाको देंगे, जो शोथमें लाभ करती है।

पर इसकी सभी बीमारियाँ **सर्दीसे बढ़ती** हैं, स्वतः रोगीको भी **सर्दीसे तकलीफ बढ़ जाती है।** ठण्डी मालिश या प्रयोगोंसे उसकी तकलीफें बढ़ जाती हैं, उसके तनाव और शोथ-ग्रस्त अवस्थामें भी वह सर्द ही रहती है, हवा सहन नहीं होती, ठण्डे पेय उसे सहन नहीं होते, ठण्डे पेयोंसे उसके पेटमें दर्द, यहाँतक कि वमन हो जाता है। ठण्डे पेयोंसे तलपेटमें दर्द होता है। पाकाशयमें ठण्डी चीज जानेपर शरीरमें, इधर-उधर

बेचैनी-सी मालूम होती है। इसी जगह आपको मालूम हो जाता है, कि इसमें और **एपिस**में क्या अन्तर है? जो केवल लक्षण खोजा करते हैं तथा उन परिस्थितियोंसे प्रभेद नहीं करते और जो रोगी तथा उन लक्षणोंसे सम्बन्ध रखनेवाले स्वरूपोंपर ध्यान नहीं देते, वे इन दोनों बहुत बड़े अन्तरोंको समझ ही नहीं पाते, जहां एकमें गर्मीसे रोगीकी तकलीफ़ बढ़ जाती है और दूसरेमें सभी उपसर्ग सर्दीसे घट जाते हैं।

सभी **स्राव घट** जाते हैं। पेशाब थोड़ा होता है, चमड़ा सूखा रहता है, कोई भी रोग क्यों न हो, उसे पसीना नहीं हो सकता, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो पसीना होनेपर उसकी बीमारी घट जायगी। पानी निकलता ही नहीं, वह खूब पानी पीता है, पानी उसके कौषिक तन्तुओंमें जाकर उनमें तनाव पैदा कर देता है और उसे शोथ हो जाता है। उसकी जलीय धातु रहती है, जो पानी भीतर तो खींचती है, पर निकालती नहीं है। उसे पेशाब बहुत थोड़ा होता है, उसे पसीना बहुत थोड़ा होता है या बिलकुल ही नहीं होता, उसका चमड़ा सूखा रहता है, कभी-कभी गर्म रहता है, इतनेपर भी उसे जाड़ा लगता रहता है। चमड़ा खुरखुरा, भूसियोंसे भरा और रूखा रहता है, पर वह सर्दीसे भरा रहता है। **एपिस**के रोगियोंको सूखा चमड़ा और थोड़े पेशाबकी बहुत भयानक तकलीफ़ रहती है, इतनेपर भी **एपिस**के रोगीको तकलीफ़ें सब जगह गर्मीसे बढ़ जाती हैं और सर्दीसे घटती है। यह शोथ, वात और बहुत-सी बीमारियोंमें प्रभेद करनेका बहुत बड़ा स्वरूप है। "रस-स्रावी झिल्लियोंका शोथ।" मस्तिष्क, हृदावरक-झिल्ली, फुसफुसावरक झिल्ली, अन्त्रावरक झिल्ली, ये सभी रससे भरी रहती हैं। इससे बहुत तकलीफ़, बेहद बेचैनी रहती है। इसके अलावा प्रादाहिक वात भी **एपिस**की तरह ही होता है, इसमें भी, इसके साथ ही शोथ हो जाता है। सन्धियाँ, एड़ीकी सन्धियाँ, अंगूठेकी सन्धियाँ, अंगुलीकी सन्धियाँ, शरीरकी सभी सन्धियोंका प्रदाह। सन्धियोंकी सूजनमें भी **एपिस**की तरह ही गड्ढे पड़ते हैं, परन्तु ज्वर-भावके साथ थोड़ा पेशाब, पसीनेकी कमीमें वह बराबर ही शीत-कातर हो पड़ता है और रोगी अङ्गोंको अच्छी तरह लपेटे रहता है, पर **एपिस** उन्हें खुला रखना चाहता है। कोई कह सकता है,— "क्यों, यह तो केवल एक लक्षण है।" जो मनुष्य, रोगीमें प्रकट हुए लक्षण

और किसी अंगमें प्रकट हुए लक्षणमें प्रभेद नहीं देख सकता, वह केवल एक ही लक्षण उन सबमें देखता है। जब वह किसी रोगीको लेकर, रेपर्टरीमें देखेगा, तो उसे वह एक लक्षणके रूपमें व्यवहार करेगा। इतनेपर भी वह स्वरूप कभी कभी बाक़ी सबको ही हटा देगा, क्योंकि यह सम्पूर्ण रोगीमें प्रकट हुआ है, न कि किसी एक अंगमें। ऐसी बहुत-सी दवाएँ हैं, जिनमें रोगीको बीमारी गर्मीसे घट जाती है। वह गर्मीमें रहना चाहता है, वह गर्म रहना चाहता है, पर इतनेपर भी रोगवाले हिस्सेमें वह ठण्डी चीजें लगाना चाहता है, पर जो सार्वाङ्गिक लक्षण है, वही प्रधान स्वरूप होता है। यदि हम सार्वाङ्गिक चीज़ोंको नहीं जानते और उनका विशेषसे प्रभेद नहीं कर सकते, तो हमारी मेटिरिया मेडिका एकदम गोलमाल हो जाती है। अतएव, हमलोगोंको स्वत. रोगी और उसके अंगोंके लक्षणोंसे प्रभेद करना चाहिये। "प्यासके साथ शोथ।"

टाइफायड और आरक्त-ज्वर जैसी निम्न-श्रेणीकी बीमारियोंकी यह बहुत बड़ी दवा है तथा लँभड़ानेवाली बीमारियोंके बाद भी लाभ करती है। रोगी बहुत सुस्त, बहुत ही शीत-कातर, अत्यन्त रक्त हीन हो जाता है, बहुत ज्यादा प्यास लगती है, पेशाब थोड़ा होने लगता है, चमड़ा सूख जाता है। यह एक बुरा आरोग्य-काल है, वह रोग-मुक्त नहीं हुआ है। शोथ भीतर बैठ जाता है, आरक्त ज्वरके बादका शोथ, सान्निपातिक ज्वरके बादका शोथ। टाइफायड ज्वरकी भाँति एक निम्न-श्रेणीकी बीमारीने चार या पाँच सप्ताहोंतक उसे बिछावनपर डाल रखा है, वह शरीरसे क्षीण और सुस्त हो पड़ा है। अब उसके शरीरपर मास नहीं चढ़ता उसे भूख नहीं लगती, पर वह बहुत ज्यादा पानी पीता है, ऐसा मालूम होता है, कि वह पानीके सिवा और कुछ नहीं चाहता। उसका चमड़ा फैलने लगता है, भर जाता है और शोथ-ग्रस्त हो पड़ता है। यह **एपिस**की तरह है और यदि उसे हमेशा गर्मी मालूम होती हो, खुला रहना चाहता हो तथा ठण्डी चीज़ें चाहता हो, तो **एपिस**का ही प्रयोग उपयोगी होगा।

इस दवाके मानसिक लक्षण प्रकट नहीं हुए हैं। हमलोग रोगीके शय्या-पार्श्वके कुछ लक्षण जानते हैं, वे कुछ विशेष आवश्यक नहीं हैं। मस्तिष्कमें जल-सञ्चय हो जानेके कारण जो बेहोशी आती है, उसको इसने आरोग्य किया है, पर हम नहीं जानते कि किस ढङ्गसे आरम्भिक मस्तिष्क रोगके रोगीको यह

फायदा करेगी, क्योंकि इतनी परीक्षा नहीं हुई है। हम केवल बहुत समयके बादको अर्थात कई हफ्ते बादकी अवस्था जानते हैं, रोगी सर इधर-उधर हिलाता और पटका करता है और वह बहुत दुबला हो जाता है। बच्चोंको इसके साथ ही जाड़ा और बोखार भी रहता है और उसकी खोपड़ी फैलने लगती है, ब्रह्मरंध्र चौड़ा होता जाता है, इस समय हमलोग कोई ऐसी दवा सोचने लगते हैं, जो वन्द गह्वरोंके शोथको आरोग्य करती है, यह उनमेंसे ही एक है, पर हमलोग इसका आरम्भ नही जानते। हमलोग एपिसका आरम्भ तो जानते हैं, पर इसका नहीं जानते। हनिमैनकी परीक्षाएँ विवरणोंसे परिपूर्ण हैं। उन्होंने अपने परीक्षकोंसे तर्क करके उनके स्वरूप, लक्षण, आरम्भ होनेका समय और कब वे अन्त होते हैं, यह सब पूछा है। कितने ही लक्षण तो स्वत' उन्हें अपने ऊपर अनुभव हुए हैं, क्योंकि उन्होंने अपने ऊपर ही कितनी ही दवाओंकी परीक्षा की। हनिमैनकी कुछ अनुभवाधिक्य प्रकृति और गभीर मनन-शक्ति थी। उनकी परीक्षाओंने दवाओंके भीतरी तहतक हमें पहुँचा दिया, जिसे वह किसी दूसरी तरहसे कदापि न प्राप्त कर सकते थे। जो दवाओंकी मुनासिब तरीकेसे, मनोयोगसे, सावधानतासे परीक्षा करते हैं, वे किसी दूसरेकी अपेक्षा मेटिरिया-मेडिका ज्यादा सीख सकते हैं। वे कष्ट-सहिष्णु हो जाते हैं और इसीलिये ज्यादा दिन जीते हैं। वे अपने सङ्ग-साथमें, वायु-मण्डलमें, अपने सङ्गी-साथीमें और अपने परिस्थितिमें कठोर हो जाते हैं। वे उन्नत बन जाते हैं और वे कुछ ऐसी चीज़ देख सकते हैं, जो हनिमैनने देखी थी। पर आजकल जो परीक्षाएँ होती हैं, उनमें साधारण लक्षणोंके सिवा और कुछ भी नहीं लिखा जाता अर्थात पेटमें दर्द, मिचली, सर-दर्द, पीठमें दर्द, ठण्डे पैर। हमारी कितनी ही दवाओंकी इससे कुछ विशेष परीक्षा नहीं हुई है।, क्या, कब और कितना, छोड़ दिये जाते हैं। आकारगत लक्षण छोड़ दिये जाते हैं। खूब सूक्ष्म अनुभूतियोंका वर्णन नहीं रहता, क्योंकि वे भावोद्रेक-सम्बन्धीय समझी जाती हैं। "निरुत्साह और घबड़ायी।" ऐसा अनुभव करती है, मानो रोनेके सिवा वह और कुछ कर ही नही सकती, पर हम पुरुष या स्त्री किसीके भी प्रेमके सम्बन्धमें कुछ नही जानते। हमलोगोंकी इच्छा या घृणा, मानसिक या शारीरिकके सम्बन्धमें कुछ नहीं मालूम होता और इसीलिये, यह कहा जा सकता है, कि यह आंशिक परीक्षा है और केवल उन्हीं रोगोंके लिये ऐसी दवा उपयोगी हो सकती है, जो शरीर वाह्य-पटलपर उत्पन्न होते हैं।

"अत्यन्त तन्द्राभिभूतताके साथ, मस्तिष्कमें जल-सञ्चय" (Hydrocephalus) अर्थात इसकी अन्तिम अवस्थामें, शोथज सूजनके साथ भयानक सुस्ती, मांसका क्षय, प्रत्यङ्गोंका कड़ापन रहता है। मस्तिष्कमें जल-सञ्चय होनेपर कितनी ही बार दर्द स्नायुओंमें धक्का देता है और सन्धियोंपर आक्रमण करता है। सब बात यह है,—**एपिस** और **कैल्केरिया-कार्ब** जैसी दवाएँ तथा यह दवा आश्चर्यजनक रूपसे गहराईतक काम करती हैं। मस्तिष्कमें जल सञ्चयके रोगोंमें सबसे स्थायी और निश्चित प्रदर्शन यह होता है, कि यह पेशाबकी तेजी बढ़ा देता है, जो बराबरमें थोड़ा होता आया है। मस्तिष्कमें जल सञ्चयके लिये, **टियुबरकुलिनम** (Tuberculinum) का अध्ययन कीजिये।

चेहरेपर महान कष्टका भाव छाया रहता है। "चेहरा फूला", भर्राया और चित्तियोंसे भरा रहता है। आँखके भीतर चित्तियाँ रहती हैं, दबानेपर दब जाती हैं। जीभ सूखी, तेज़ प्यास। "एक दूसरी भी दवा है।" इस दशाकी एक दूसरी भी दवा है, जिससे अकसर भ्रम हो जाना सम्भव है और बहुत से अवसरोंपर इसके पहले ही जिसका प्रयोग होना उचित है। यह **आर्सेनिक** है। इसमें **एपिस** और **ऐपोसाइनम**के शोथके सभी लक्षण हैं। इसमें तलपेट और बन्द गह्वरोंकी सब तरहकी सर्दी और फैलावका लक्षण हैं, इसके भी सभी उपसर्गोंका और स्वयं रोगीको भी गर्मीसे उपशम होता है और इस कामके लिये बहुत तेज़ तापकी जरूरत रहती है। रोगी बहुत गर्म कमरेमें रहना चाहता है, पर इसमें कुछ दूसरी ही बात है। इसमें मृत्युकी तरह सुस्ती, मृत्युकी तरह चिन्ता और भीषण बेचैनी रहती है। यह इन दोनोंमेंसे किसी भी दवामें नहीं है। इसमें और भी ऐसी मुर्देकी तरह गन्ध, कमरेमें घुसते ही आती है, जैसी इन दोनोंमेंसे किसी भी दवामें नहीं आती। इसी तरह हमें अपनी दवाओंको लेकर, एक-एककर और फिर तुलना करते हुए अध्ययन करना पड़ता है। सार्वाङ्गिक लक्षणोंमें जो दवाएँ सदृश हों, उनको गर्मी और सर्दीपर विचार करते हुए तुलना करनी चाहिये। इस तरह हमें उन दवाओंकी सूची मिल जाती है, जो ठण्डेसे घटती है और जो गर्मीसे घटती है और दूसरी ऐसी बेसिर-पैरकी सूची मिल जाती है, जो इन दोनोंमेंसे किसीसे भी नहीं घटती, यहीं तो काम आरम्भ करनेकी जगह है, इनका हमें विभाजन और परिविभाजन करते जाना होगा।

"कण्ठमें गाढ़ा, पीला बलगम। तेज़ प्यास। छातीके प्रदेशमें कड़ापन, भरापन। एक तरहका तनावका भाव।" क्षणभरके लिये आप सोच और देख सकते हैं, कि फुसफुसावरक-गह्वरके भरनेके कारण बाहरी फैलाव या तनाव बहुत ज्यादा नहीं होता, क्योंकि पसलियाँ इसे रोकती हैं। वे एक प्राचीर बना लेती हैं और इसीलिये, वृद्धि या फैलाव फेफड़ोंकी ओर तथा वक्षोदर-मध्यस्थ पेशी (Diaphragm) की ओर होता है। इसी जरियेसे खाँसीके साथ बढ़ता हुआ श्वास-कष्ट पैदा होता है। एपिसकी तरह इस दवाके रोगीको भी बैठे रहना पड़ता है, वह लेट नहीं सकता। वक्षोदक रोग (Hydrothorax) में रोगीका बाध्य होकर बैठे रहना आपको एक साधारण स्वरूप मालूम होगा, क्योंकि लेटे रहना फेफड़ेपर दबाव बढ़ा देता है तथा श्वासकी जगहको सकरी बना देता है और इसी वजहसे, इस भारी पानीके ठेले, वक्षावरक-झिल्ली-गह्वरको, वक्षोदर-मध्यस्थ-पेशीके सहारे लटकाने देनेके लिये उसे बैठे रहना पड़ता है, पर इससे तलपेटमें दबाव और आँतोंमें तनाव पैदा हो जाता है। "सोकर उठनेपर प्यास। दिनभर प्यासा रहता है। बहुत प्यास, पर पानी रुचता नहीं।" वह ठण्डा पानी पसन्द करता है, पर उसके पाकाशयको यह इतना अरुचिकर होता है, कि पाकाशयमें दर्द पैदा हो जाता है या गर्म होनेके पहले ही वमन हो जाता है या फैलाव पैदा कर देता है या बेचैनी ला देता है, इसी वजहसे वह ठण्डे पेयोंसे डरता है। गर्म पेयसे उसे ज्यादा आराम मिलता है। गर्म पेय उसे गर्म कर देते हैं, उसे ज्यादा आराम पहुँचाते हैं, सर्द चीज़ोंसे रोग बढ़ते हैं। इतनेपर भी उसे ठण्डेकी ही प्यास रहती है।

इसके बाद तनाव और वमनकी बारी आती है। आपको शोथके साथ कोषिक तन्तुओंके तनाव (Distension of cellular tissue) के ऐसे रोगी मिलेंगे कि आपको मालूम होगा कि अब पाकाशयसे रक्तमें पानी बिलकुल ही नहीं लिया जा सकता। वह भरा रहता है, रक्तवाहिनियाँ तनी रहती हैं, उसका पाकाशय भी तना रहता है और उसे बाध्य होकर वमन करना पड़ता है और इसी तरह अपने समूचे शरीरके तनावके साथ वह पीता और वमन करता है। मुश्किलसे वह खा सकता है, नीचे उतार नहीं सकता, यह नहीं पचेगा। इसीसे इन लक्षणोंका कुछ अंश उत्पन्न होता है। "कौड़ी-प्रदेश (Epigastrium) में और वक्षमें दबाव मालूम होना। इसी वजहसे उसके लिये चलने-फिरने योग्य भरपूर साँस लेना असम्भव हो जाता है।

थोड़ा भी खा लेनेपर उसे तनाव मालूम होता है। रोगी सोकर उठते ही अपने पेटमें कुछ डाल लेना चाहता है। तेज़ भूख रहती है, पर थोड़ा भी भोजन, यहाँतक कि एक ग्रास भी उसे तनावका भाव पैदा कर देता है। उसका पाकाशय पहलेसे ही पानीसे भरा रहता है, यह बहुत ज्यादा मात्रामें पानीको के करता है या बिना तथा न पची हुई खाद्य-सामग्रीको के करता है। शोथ अवस्था अवस्थामें, अन्तमें पाकाशय बहुत उपदाह प्रवण हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, कि उसमें होकर कुछ भी नहीं ठहरता, अन्तमें उसे आँतोंका पक्षाघात हो जाता है, गुर्देकी क्रिया नहीं होती और मुश्किलसे कुछ पेशाब होता है। ओझ प्रादाहित हो जाती है, सभी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ प्रादाहित हो जाती हैं और शायद पाकाशय भी प्रादाहित रहता है। तलपेट बहुत तना रहता है, उदर-शोथ।

अब दूसरा दृश्य देखिये। ऐसा मालूम होता है, कि एक एककर सभी यन्त्र अपना काम बन्द करते जाते हैं। डिम्बाशय और गर्भाशय अपनी क्रिया कर नहीं सकते और शोथकी अवस्थाके साथ रजोरोधकी बीमारी पैदा हो जाती है। स्त्री दुर्बलता और स्नायविक उत्तेजनाकी निम्न-श्रेणीपर जा पहुँचती है, मासिक रज-स्राव होता ही नहीं, तलपेट बहुत अस्वाभाविक-रूपसे स्पर्श-असहिष्णु रहता है, तलपेटका प्रसारण और फिर अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका प्रसारण और तनाव रहता है।

शोथके साथ पर्यायक्रमसे यदि अतिसार हो, तो ऐपीसाइनम उसे आरोग्य कर देता है। कभी-कभी पतले दस्त शुरू हो जानेपर सारी तकलीफें चली जाती हैं। पतले दस्त, रातमें बहुत ज्यादा, पीले, पानीकी तरह तथा इच्छा न रहनेपर भी अनजानमें होते जाते हैं। मुझे मालूम है, कि एक रोगीको शोथके लिये अधिक मात्रामें ऐपोसाइनम दिया गया। इसने अपना एक विचित्र ढङ्गका अतिसार आरम्भ कर दिया और जबतक इस तरहके पतले दस्त आते रहे, बढ़ी हुई प्लीहा और सूजनके लक्षण सभी स्वाभाविक-रूपसे, उस चिकित्सककी दृष्टिसे गायब हो गये। उसे मुझे दिखाया गया। मैंने कहा—"ठहरिये।" अन्तमें उस ऐपोसाइनमके विषका प्रभाव रोक दिया गया, तुरत उसकी हृद्-गति बन्द हो गयी। डिजिटिलिसके ऐलोपैथिक प्रयोगसे भी ठीक ऐसी ही अवस्था होती है। एक ऐसा समय आता है, कि बाध्य होकर डाक्टरको डिजिटिलिसका प्रयोग बन्द कर देना पड़ता है और

मुँह फाड़ना, साँय-साँय करना और खाँसना।" टार्टर एमेटिकमें मिलने-वाली सब तरहकी घरघराहटकी आवाज़ इसमें भी रहती है और टार्टर एमेटिकमें भी इसी तरह बचके भर जानेका भाव है। रोगी लेट नहीं सकता।

नाड़ी क्षुद्र और अनियमित रहती है, करीब करीब मिलती ही नहीं। तकियेसे सर उठानेकी चेष्टा करते ही मूर्च्छा आने लगती है। क्षुद्र और कमजोर नाड़ी। वक्षावरक-झिल्लीका शोथ, कलेजेकी धड़कन बहुत ही कष्टदायक होती है।

आर्जेण्टम मेटालिकम।

(*Argentum Metallicum*)

अब हम चांदी धातु (Metallic Silver) का अध्ययन आरम्भ करते हैं। इसमें भी कोई सन्देह ही नहीं, कि यह बहुत गहराईतक काम करनेवाली दवा है, क्योंकि इसका प्रयोग बराबर, सांकेतिक और औषधि रूपसे होता आया है। समस्त इतिहासमें यह एक बहुमूल्य पदार्थ है। यह सोरा-विष-नाशक है और इसके लक्षणोंसे मालूम होता है, कि प्रमेह-विष नाशक भी है। यह जीवन-शक्तिपर गहराईतक काम करता है और खासकर स्नायु तथा स्नायु-आवरणोंपर प्रभाव पहुँचाता है। इसमें स्नायुके ही उपसर्ग प्रकट होते हैं, इससे शरीरकी सभी उपास्थियोंपर रोगाक्रमण होता है। इसमें उपास्थियोंकी अभिवृद्धि, सन्धियोंकी उपास्थि-सम्बन्धी अंशोंका मोटा पड़ जाना तथा कान और नाककी उपास्थियोंके मोटे पड़नेका लक्षण है। यह उपास्थि-वर्द्धन (Cartilaginous growth) और अर्बुद (Tumours), रस-स्राव उत्पन्न करता है। यह स्नायु-तन्तुओंपर आक्रमण करता है, यह एक गहरी यान्त्रिक दवा है, यह साधारण दवासे बढ़कर है, क्योंकि यह मनुष्यका जो कुछ है, उन सबको आक्रान्त करती है। खासकर वे स्नायु-तन्तु जो सम्वाद-वाहकका काम करते हैं उसपर हमला होता है। इससे मस्तिष्क

भी बहुत गहरे ढङ्गसे आक्रान्त होता है, जिससे परिवर्त्तन और धीरे-धीरे कोमलता उत्पन्न होती है। इसका एक विचित्र स्वरूप यह है, कि किसी मनुष्यपर इसकी साधारण क्रिया ऐसी होती है, कि यह बुद्धि-वृत्तिको नष्ट कर देती है। यह उसके स्नेहको शायद ही कभी विशृङ्खलित करती है, सिर्फ धीमे और हलके परिवर्त्तन इच्छा-सस्थानमें उत्पन्न कर देती है, पर याददाश्त और मनुष्यका बुद्धि अंश इतना ज्यादा विशृङ्खलित हो जाता है, कि वह एकदम शक्ति-हीन हो जाता है। बड़ी-बड़ी बीमारियोंमें—और यह बीमारियोंसे तो भरी है—उसकी तर्क-शक्तिको यह नष्ट कर देती है। सब तरहके सर और पीठके दर्दमें तथा शरीरमें जो बेधने और फाड़नेकी तरह दर्द, यह पैदा करता है, उनमें यह रोगीकी स्मरण-शक्ति और विचार-शक्तिको विचलित कर देता है, उसकी सोचनेकी शक्तिको विशृङ्खलित कर देता है। यह उन्हें ही होता है, जिनमें बुद्धि-शक्तिसे कार्य लेनेका अधिक अभ्यास रहता है। व्यवसायी, छात्र, पाठक और सोचनेवाले, तर्क करनेवाले, एक ऐसे स्थानपर आ पहुँचते हैं, जहाँ उनकी तर्क-धारा रुक जाती है और जरा भी मानसिक परिश्रम करनेपर सरमें चक्कर आने लगता है, वह थक जाते हैं। सोनेके बाद सब लक्षण बदतर हो जाते हैं। दिनभर परिश्रमके बाद, आराम मिलनेके बदले, वह इतनी मानसिक क्लान्ति और दुर्बलतामें सोकर उठता है, कि मुश्किलसे उठ सकता है और इसी तरह वह बहुत मुश्किलसे अपनेको दूसरे दिनके मानसिक या शारीरिक कार्यके उपयुक्त बना पाता है। यदि वह कुछ ज्यादा मानसिक कार्य करना चाहता है, तो उसे सर-दर्द पैदा हो जाता है। सर-दर्द अधिकतर मस्तकके सामनेवाले भागमें होता है, पर माथेके पिछले भागमें भी होता है।

इसका एक दूसरा आश्चर्यजनक स्वरूप यह है, कि इसके रोगीके स्नायुओंमें और खासकर हाथ-पैरोंके स्नायुओंमें छेदने और फाड़नेकी तरह बहुत दर्द होता है। फाड़नेकी तरह, मानो आराम करनेके समय स्नायु टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे। ठण्डी, सीड़वाली ऋतु और तूफानी ऋतुमें वात पैदा हो जाता है, बहुत ज्यादा सूजन नहीं होती, यद्यपि इसमें सूजन है, पर विशेषकर उपास्थियोंमें दर्द होता है और स्नायुओंकी राहसे दर्द होता है। यह दर्द इतना तेज होता है, कि रोगी शान्त नहीं रह सकता। इसलिये, इसमें सर्दीसे, तर ऋतुसे और सर्दी लगनेपर सन्धियों और स्नायुओंमें वातकी अवस्था पैदा हो जाती

है, इसीलिये वह बराबर टहला करता है। बहुतसे लक्षण हिलने-डोलनेसे और खासकर टहलनेसे अच्छे रहते हैं। रोगी बहुत थक जाता है और क्लान्त हो जाता है, पर दर्द इतना तेज़ रहता है, कि उसे चलना ही पडता है। खूब अधिक काफी पीनेसे ये दर्द कभी-कभी दब जाते हैं, यह बीमारीको दबा देती है और उसमें सब तरहकी तकलीफें छोड जाती है, जिससे उसे स्वास्थ्यभङ्ग होनेका भय होता है और समय पाकर वह एकदम बेकार हो जाता है। "मानसिक दुर्बलता, शारीरिक अवसाद" छेदने और फाडनेकी तरह दर्द। सन्धियोंके तथा सन्धि-उपास्थियोंके रोग। हड्डियोंमें फाडनेकी तरह दर्द—और वास्तवमें उसका स्वास्थ्य भङ्ग हो जाता है, एक पुरानी भग्न-स्वास्थ्य अवस्था, जवानी रहते ही आ जाती है। "चालीस वर्षका आदमी अस्सी वर्षके बुड्ढेकी तरह हो जाता है।" ये सभी हिलने-डोलनेसे अच्छे रहते हैं।

इसके अलावा, इसमें रस-स्राव भी भरा है। प्रादाहित उपास्थियोंसे रस-स्राव होता है और फिर उनकी कडी गाँठे बँध जाती हैं। उपास्थि-तन्तुओं (Cartilaginous tissues) की बहुतायत हो जाती है, इसी वजहसे सन्धियोंके चारो ओरकी उपास्थियाँ मोटी पड जाती हैं। कान और नाककी उपास्थियाँ भी मोटी हो जाती हैं। एपिथेलियोमा (त्वचाका कर्कट-रोग) की तरह रस-स्राव होता है। कठिन अर्बुद (Scirrhus) और त्वचाका कर्कट रोग (Epithelioma) को यह आश्चर्यजनक आराम पहुँचानेवाला है। इसने अन्तस्त्वक्‌के कर्कट रोगको आरोग्य किया है। इससे जरायु ग्रीवाका एपिथे-लियोमा आरोग्य करनेका हवाला भी पाया जाता है।

सब जगह जखम निकलते हैं, उपास्थि-तन्तुओंमें आरम्भ होनेवाले जखम तथा कौषिक तन्तुओंके भीतरके दरारोंसे बहुत ज्यादा स्राव होता है। जखमोंकी तलीसे स्राव होता है और वे कडे पडते जाते हैं।

इसका दूसरा प्रत्यक्ष स्वरूप यह है, कि इससे दोनों ही अण्ड आक्रान्त होते हैं, पर इसका विशेष प्रभाव दाहिनेपर ही होता है। बायाँ डिम्ब-कोष और दाहिना अण्ड। ऐसी बातें भी विचित्र ही हैं, कि स्त्री-पुरुष दोनोंमेंसे किसी एकके एक पार्श्वमें यह अपने लक्षण प्रकट करता है और दूसरेमें विपरीत पार्श्वमें।

इसने सब तरहके अर्बुद, डिम्ब-कोषकी अभिवृद्धि और तन्तुओंसे रस-स्राव आरोग्य किया है। यह सर्दीकी दवा है। इसका रोगी अपनेको गर्म

रखना चाहता है और इसका दर्द भी गर्मीसे घटता है। इसका सर-दर्द गर्मीसे घटता है—दबानेसे और कसकर पट्टी बाँध देनेसे घटता है। मैंने सर-दर्दके ये लक्षण कितनी ही बार इससे आरोग्य कर दिये हैं, जब रोगीको अपना माथा लपेटे हुए देखा है।

अब इस दवामें, हमलोग एक श्रेणीके ऐसे रोगी पाते हैं, जिनमें जैवनिक ताप (Vital heat) नहीं रहता। वह अपनेको गर्म रखना चाहता है, बहुत-कुछ क्षीण रहता है, बहुत ही दुबला होता जाता है, बहुत ज्यादा स्नायविक रहता है तथा अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णु रहता है। इसमें बहुत तरहके खाम-खयाल उत्पन्न होते हैं। चाँदीको जरूरत रखनेवाली स्त्रियाँ स्नायविक दशामें ऐसे आश्चर्यजनक और बेहिसाब काम कर बैठती हैं (आर्जेण्टम-नाइट्रिकमसे तुलना कीजिये), कि वे अपने मित्रोंकी समस्त सहानुभूति खो बैठती हैं और हिस्टीरिया-ग्रस्त कहलाती हैं। स्नायुओंको गहराईतक जमी बीमारी। अपने आस-पासकी चीजोंसे ही अति अधिक स्पर्श-असहिष्णु होती जाती हैं।

अब आर्जेण्टम मेटालिकमकी मानसिक अवस्था भी ठीक वैसी ही रहती है, जैसी चित्त-विभ्रमके कारण पैदा हो जाती है, ठीक वैसा ही जैसी भावोद्रेकके कारण होती है ठीक उसी तरह जैसे भयसे, क्रोधसे, आतङ्कसे तथा मनकी विशृङ्खलतासे समता चली जाती है, क्योंकि इसका रोगी अपनी चारों ओरकी स्थितिसे बहुत ही स्पर्श-कातर तथा विरक्तियोंसे बहुत विचलित रहता है। दर्दके कारण वह प्रलाप-ग्रस्त रहता है। वह यह अनैच्छिक प्रलाप नहीं है, जो निम्न प्रकृतिके बोखारमें दिखाई देता है, बल्कि वह उद्दण्ड और क्रोध पूर्ण हो जाता है। उसे मानसिक उत्तेजना, क्रोध और एक ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है जिसमें वह बहुत तेजीसे अण्ट-सण्ट बकता है। कभी-कभी तो एक ऐसी अस्वाभाविक उत्तेजनाकी अवस्था आ जाती है, जिसमें उसकी सब बातें उसके विचारोंकी प्रकृतिसे भरी रहती है। वह हमेशा ऐसा दिखाई देता है, मानो वह नशेमें हो और वह एक विषयसे दूसरेपर उड़ता रहता है और बकबक किया करता है। क्षणभरके लिये तो उसका मन बहुत ही तेज़ और क्रियाशील दिखाई देता है और जो कुछ वह बक रहा था, सब भूल जाता है।

"समाजमें बोल नहीं सकता," क्योंकि वह अयोग्य रहता है, वह मानसिक क्लान्त रहता है और वह भूल जाता है, कि वह क्या कह रहा था।

अपना वाक्य-सूत्र भूल जाता है, वह बोलनेसे डरता है, क्योंकि बोलनेके समय वह बीमार हो जाता है। यदि उसे उत्तर देनेके लिये बाध्य किया जाता है, तो उसका सर घूम जाता है और अपने चारों ओर उसे अद्भुत ही दृश्य दिखाई देते हैं तथा उसे स्नायविक कम्पन और आघात अनुभव होता है। जब वह थक जाता है, तो ये आघात बिजलीके धक्केकी तरह उसे लगते हैं। यह एकाएक पैदा होता है, पर इसके उत्पन्न होनेका सबसे बढ़िया समय वह है, जब वह सोनेके लिये जाता है। वह सोचता है, कि अब वह दिनभरके झंझटोंसे बच गया और आराम कर सकता है, पर ज्योंही उसे नींद लगती है, त्योंही सरसे पैरतक एक झटका लगनेके कारण वह जाग पड़ता है। इसके बाद दूसरा, फिर तीसरा, कभी-कभी तो रातभर वह इसी तरह सरसे पैरतक काँपा करता है। उसके प्रत्यङ्ग काँपते हैं, उसका निम्नाङ्ग ऐंठता और झटका खाता है, तब वह बिछावन छोड़कर टहलता है, उन्हें चलकर भगा देना चाहता है। **आर्जेण्टम नाइट्रिकम**की परीक्षामें भी यह प्राप्त हुआ है, पर यह बहुत कुछ आर्जेण्टम मेटालिकमको ही चीज़ है और आर्जेण्टम मेटालिकमने इसे बहुत बार आरोग्य किया है। हैनिमैनने जो दवाओंका अध्ययन किया है, उसमें उन्होंने यही 'सोनेको जानेके समयके झटके' को ही विशेषता दी है। प्रत्यङ्गोंमें झटका, यह एक बिजलीकी तरह झटका है, जो समूची देहको हिला देता है। "वह अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें चिन्तित रहता है, सोचता है, कि उसका निश्चय ही स्वास्थ्य भङ्ग हो रहा है," क्योंकि उसकी कमजोरी बढ़ती जा रही है। वह चल नहीं सकता, फिर भी वह बेतरह बेचैन होता जाता है। बिना तकलीफ़के वह कोई मानसिक या शारीरिक व्यायाम नहीं कर सकता। कुछ ध्यान करनेके बाद या ज्योंही वह किसी गर्म कमरेमें घुसता है, उसके सरमें चक्कर आ जाता है, मस्तक और ज्ञान-तन्तुओंकी बीमारियोंमें यह एक अपवाद है। उसे सर्दी हमेशा ही सहन नहीं होती, किसी घरमें जब कमरा बन्द रहता है, उसके सरमें चक्कर आने लगता है।

यह इस दवाका एक आश्चर्यजनक रूप है, कि खासकर दोपहरके समय दर्द, यन्त्रणा प्रभृति बहुत-से उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। जाड़ा, सर-दर्द, दोपहरके समय डिम्बकोषमें दर्द, सरमें चक्करके साथ सरका घूमना, मानो नशा पिया हो, सर-दर्द सामने कपालमें और पश्चात् मस्तिष्कमें होता है। एक ओरका मस्तिष्कका रोग, एक पार्श्वका सर-दर्द, एक ही समय सरका तेज़

स्नायु-शूल, मानो मस्तिष्कमें खूब गहराईपर दर्द हो रहा है मानो यह आधा दिमाग घेरे हुए है। ज्यादाकर सर-दर्द दाहिनी ओर होता है,—एक पार्श्वका सर-दर्द, वे भग्न-स्वास्थ्यवाले रोगी, जो धूप लगकर अवसन्न और दुर्बल हो गये हैं। खोपड़ी, कान तथा शरीरपर इधर-उधर खुजली निकलती है। पाला मार जानेकी तरह जलन और खुजली। इसमें ऐगरिकसकी तरह अगूठे और कानमें खुजली और जलन होती है, वह इन जगहोंको खखोड़ता है, पर खखोड़नेसे उसे तबतक आराम नहीं मिलता, जबतक चमड़ा नहीं उधड़ जाता, जबतक उससे खून नहीं निकलता, पर खुजलानेसे आराम किसी तरह नहीं मिलता। कानकी खाल उधड़ना, कानोंमें हमेशा अंगुली डालता और खुजलाया करता है। सुरसुरी, खुजली और जलनके कारण खुजलाते खुजलाते खाल उधेड़ डालता है।

इसका एक दूसरा विचित्र रूप है, आँखोंके गोलेकी अपेक्षा पलकोंपर चाँदीका प्रभाव ज्यादा होता है। इससे दृष्टि आक्रान्त होती है और दृष्टिमें धुँधलापन आ जाता है, दृष्टि लोप हो जाती है, पर पलकोंमें इससे रस-स्राव होता है, पलकें यहाँतक मोटी पड़ जाती हैं, कि वे उपास्थिकी तरह कड़ी हो जाती हैं। श्लैष्मिक-झिल्लीसे रस-स्राव होता है और वह कड़ी हो जाती है और पलकें खोली नहीं जा सकतीं। वे आक्षेपिक रूपसे बन्द हो जाती हैं और जो लगाये बिना अलग नहीं की जा सकती, यह मोटापन और रस-स्रावके साथ पलकोंका प्रदाह है। बहुत ज्यादा स्राव होता है। अब, चूंकि हम श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदेशमें आ जाते हैं, इसलिये हम यह कह देना चाहते हैं, कि इस दवामें सर्वत्र हमें धीमा सर्दीका स्राव प्राप्त होगा। कुछ स्थानोंपर गाढ़ा और पीला स्राव होता है, पर इसके साथ ही धीमी, श्लैष्मिक-झिल्लीकी एक धीमी अनुग्र अवस्था, पर आर्जेण्टम मेटालिकमका चरित्रगत लक्षण, इसका प्रधान स्राव भूरा, गाढ़ा, लसदार श्लेष्माका होता है। रोगीके फेफड़ोंसे—वायु पथोंसे, टेटुआसे, स्वर-यन्त्रसे, खाकी श्लेष्माका स्राव होता है। योनिसे खाकी श्लेष्मा मूत्रनलीसे खाकी श्लेष्मा और आँखोंसे भी खाकी श्लेष्मा ही निकलता है। केवल कुछ अवसरोंपर इससे पीला स्राव होता है। जब जखम होने लगता है, जैसा कि स्वर-यन्त्रमें और पलकोंपर होता है, तो इन जखमोंसे गाढ़ा और पीला स्राव होता है, परन्तु सिवा मूत्रनलीके, जखमवाले अन्य श्लैष्मिक-पटलोंसे यह स्राव खाकी ही होता पाया जाता है। पुराने सूजाकके

था और जो सूजाकके बाद उपकोषमें उत्पन्न हुआ था, आरोग्य कर दिया। प्रदाह, बहुत कड़ापन, दर्द, सूजन, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द।

एक दूसरा जरूरी लक्षण भी है। "धीमो प्रकृतिका आरम्भसे ही आठ महीनोंका पुराना, पीलापन लिये हरा सूजाकका मवाद।" इसके रोगीके लक्षण सत्य प्रमाणित हो चुके हैं। अब सूजाकका तो यह एक स्वाभाविक स्वरूप है, कि मवाद पीला आता है या पीलापन लिये हरा निकलता है और आरम्भिक अवस्थामें गाढ़ा रहता है। इसके बाद यह धीरे-धीरे यहाँतक हलका होता जाता है, कि यह सफेद, गाढ़ा या पतला हो जाता है। फिर भी हलका होते-होते यह सफेद और ग्लीटकी तरह हो जाता है। आर्जेण्टम मैटाल्लिकम उस समयकी दवा है, जब स्राव पीला रहता है। सब तकलीफें बन्द हो जाती हैं और अमूमन जब दर्द बन्द हो जाता है, तो मवाद बहुत जल्द हलका होना आरम्भ हो जाता है, पर आर्जेण्टम मैटालिकमके रोगियोंका दर्द रुक जाता है, स्राव धीमा पड़ जाता है, मूत्रनलीके दर्दकी स्पर्श-कातरता चली जाती है और गाढ़ा हरापन लिये या पीलापन लिये मवाद रह जाता है। बहुत दिनोंके पुराने रोगियोंके इन गाढ़े धीमे स्रावोंकी दवा खोजनेमें हमलोगोंको बहुत तकलीफ होती है। ये पुराने जटिल रोगी, जिनका स्राव अबतक पीला और गाढ़ा ही रहता है, वे साधारण दवाओंसे वशमें नहीं आते— उनके लिये एक विचित्र ही श्रेणीकी दवाकी जरूरत है। आर्जेण्टम मैटालिकम, **ऐल्यूमिना, ऐल्यूमेन, सलफर।** आरम्भिक अवस्थामें इनपर ध्यान नहीं जाता, पर रोगीकी सार्वाङ्गिक धातुगत अवस्था द्वारा ही उनके लक्षणोंका चरित्र प्रकट होता है।

स्त्रियोंकी डिम्बाशयकी तकलीफें रस-स्राव, कड़ापन, मसानेकी बीमारियाँ, कोषमय डिम्बकोष, ये सभी इस दवासे आरोग्य होते हैं। डिम्बाशयका अर्बुद, बहुत बढ़ा, कड़ा, कठिनता-प्राप्त डिम्बाशय—खासकर बायाँ डिम्बाशय। दाहिना अण्डकोष, बायाँ डिम्बकोष, बायें डिम्बकोष और पीठमें दर्द। बायें डिम्बकोषमें दर्दके साथ जरायुका अपनी जगहसे हट जाना, बैठनेके समय पीठकी छोटी-सी जगहमें दर्द। विशेषकर बायें डिम्बकोषके ही रोग आरोग्य हुए हैं, यद्यपि यह दोनोंकी ही बीमारियाँ आरोग्य करता है।

इस दवाका दूसरा बृहत् प्राप्त रूप है,—कमजोरी, समूचे शरीरकी पेशियोंकी शिथिलता, कम्पन और अब यदि यह विचार भी लगा दिया जाये—

तथा योनि-यन्त्रोंमें इस दवाका वह रूप भी दिखाई दे,—तो यह देखनेमें आयगा, कि जरायुको पकड़े रहनेवाली पेशियाँ, चौड़ी बन्धनी-पेशी (Broad ligament) प्रभृति, एक शिथिलताकी अवस्थामें रहती हैं, वे जरायुको लटक जाने देती हैं। दूसरे शब्दोंमें, हम जरायुकी स्थान-च्युति प्राप्त करते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, कि होमियोपैथिक दवाओंमें आश्चर्यजनक रूपसे पेशी-तन्तुको स्थिति स्थापकता (Tonicity) पैदा करनेकी योग्यता है और इससे ही वे स्थान-च्युत जरायुको अपने स्वाभाविक स्थानपर ला देती हैं और खींचनके इस भावको, जिसका वर्णन स्त्रियाँ किया करती हैं, हटा देती हैं। एक वह अनुभूति, मानो भीतरी भाग सब बाहर निकले आ रहे हैं। स्थान-च्युतिके साथ ही ये सब अनुभूतियाँ रहती हैं। आर्जेण्टम इसकी एक दवा है। वास्तवमें समस्त योनि-मण्डल फूलकर वजनमें बढ़ जाता है, तन्तुओंसे रस-स्राव होता है और वे कड़े पड़ जाना चाहते हैं, जरायु-ग्रीवामें रक्त सञ्चय हो जाता है और कड़ी पड़ जाती है। जखम होने लगता है। बहुत बढ़ जाती है, रक्तसे भर जाती है। जरायु-ग्रीवाके कठिन त्वचार्बुद (Epithelioma) को भी यह आराम पहुँचानेवाली दवा है। साथ ही जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द, बहुत ज्यादा, बदबूदार, पीलापन लिये हरा और खून मिला स्राव। इसने अतिरज-प्रवणता (Menorrhagia), बहुत ज्यादा मासिक रज-स्रावको आरोग्य कर दिया है। सार्वाङ्गिक लक्षण मौजूद रहनेपर रक्त-स्रावके साथ रहनेवाली शिथिलता बहुत जल्द दूर हो जायगी। जरायुका जखम, स्राव बदबूदार, खुजली पैदा करनेवाला रहता है। "कभी-कभी तो असह्य दुर्गन्ध-भरा, खून-मिला पानी निकलता है।" बेतरह बदबूदार श्वेत-प्रदरमें यह दवा बहुत फायदा करती है (कैलि-आर्स, कैलि-फास)। "जरायु-ग्रीवा बहुत फूली रहती है, एक स्पञ्जके ढेर-सी मालूम होती है, भिन्न-भिन्न और जखमोंमें गड्ढे पड़े रहते हैं।" जरायुके कठिन अर्बुदके रोगमें, जहाँ इसका प्रयोग हुआ है, यह कहा जाता है—'तीन दिनोंके भीतर बदबू गायब हो जाती है।" जब कोई दवा इस ढङ्गसे क्रिया करती है, तो यह वास्तवमें वृद्धि रोक देती है। सच तो यह है, कि कर्कटकी दशा (Cancerous state), जो चौदह या सोलह महीनोंमें बदलकर सीमापर पहुँचती, वह दो या तीन बरसतक बन्द हो जायगी और रोगी आराममें रहेगा। चुनी हुई दवासे जखम आरोग्य हो जाता है; यह क्षयको

और बरसोंतक रोगोको अपने मित्रोंके साथ आरामसे रखता है। कैन्सरकी बीमारीमें जोवनकी दशा बहुत निम्न हो जाती है। अमूमन सारी शारीरिक अवस्था आराम होनेके बाहर रहती है।

अब हम स्वर-यन्त्रकी दशापर आते हैं। यह एक आश्चर्यजनक स्वर-यन्त्रकी दवा है। प्रदाहके साथ स्वरका बिगड़ जाना, स्वर-यन्त्रसे बहुत काम लेनेके कारण, जैसे—गवैयों और वक्ताओंको हुआ करता है, जो स्वर-यन्त्रसे बहुत अधिक काम लेनेके लिये बाध्य रहते हैं। तब यह स्वर-रज्जुको एक पाक्षाघातिक दुर्बलता हो जाती है। इस दवापर भरपूर विचार करनेपर मालूम होता है, कि थोड़ा भी देरतक यदि परिश्रम किया जाये, तो रोग-वृद्धि हो जाती है—परिश्रमकी वृद्धिसे पाक्षाघात हो जानेकी प्रवणता। ऐसा ही फेफड़ोंमें—शरीरके सभी भागोंमें होता है। इसके बाद स्वर-भङ्ग पैदा हो जाता है। अब इसकी रस-स्रावी शक्तिके सम्बन्धमें जो कुछ हम जानते हैं, उन सबका प्रयोग कीजिये, हमें फेफड़ेका गुटिका-दोष (Tuberculosis) प्राप्त होता है। गवैये, व्याख्यानदाता, जो भग्न-स्वास्थ्य, स्नायविक, मन्दाग्नि-वाले, बुरे वंशज होते हैं, जिन्हें स्वर-यन्त्रका गुटिका-दोष हो जाता है और स्वर-रोध हो जाता है। इसके बाद जखम हो जाता है। यह रोग अन्तमें फेफड़ोंमें जा पहुँचता है। वे क्षीण हो जाते हैं और उन्हें रातमें पसीना होने लगता है। "स्वर-रोध" अकसर एक कष्टप्रद प्रकृतिका होता है।

इसके बाद, स्वर-यन्त्रमें सर्दी बैठ जाती है। "जोरकी आवाजमें बोल नहीं सकता, स्वर-यन्त्रमें लगातार सुरसुरी हुआ करती है, उत्तेजक खाँसी।" स्वर-यन्त्रके ऊपरी भागमें खाल उधड़ने और जखमकी तरह मालूम होना, हँसनेपर खाँसी बढ़ जाती है, हँसनेसे स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी होती है और उससे खाकी रङ्गका बलगम निकलता है। यदि छोटे-छोटे वायु-पथोंमें तथा फेफड़ोंमें उपदाह हो, तो हँसनेसे उसे खाँसी आने लगेगी और उससे खाकी श्लेष्मा निकलेगा। "टेटुआ जहाँ दो भागोंमें विभक्त होता है, वहाँ खाल उधड़नेकी तरह एक दाग पड़ जाता है, जब कि रोगी स्वर-यन्त्रसे काम लेता है, बातचीत करता है, हँसता ह या गाता है।" वक्षके मध्यमें खाल उधड़ जानेकी तरह अनुभूति होती है। "उन भग्न-स्वास्थ्य पुरुषोंमें स्वर-यन्त्रका रुखड़ापन और स्वर-भङ्ग, स्वर-यन्त्रका क्षय रोग।" एक पचीस वर्षसे कम उम्रका भी मनुष्य पचास वर्षका दिखाई देता है। उसके बहुत-सी

सलवटें पड जाती हैं, मानो बहुत चिन्तामें पड गया हो। उसे सूखी खाँसी आती है, बहुत थोडा खाकी रङ्गका बलगम निकलता है, इतनेपर भी वह बहुत-कुछ दुबला, बहुत-कुछ अच्छा रह सकता है? उसने वंशगत चय रोग प्राप्त किया है। खाँसी गहरी रहती है, बोलने, हँसने और गर्म कमरेसे बढ जाती है। हँसनेसे खाँसी आने लगती है और स्वर-यन्त्रमें बलगम पैदा हो जाता है। यह दवा यक्ष्मा होनेकी सम्भावना और सूखी तङ्ग करनेवाली खाँसी दूर कर देगी। बहुत थोडी, खुसखुसी खाँसी खासकर इस दवाके अन्तर्गत है। **ब्रायोनिया**की तरह इसमें कभी भी तेज़ आचेपिक हिला देनेवाली खाँसी नहीं आती। खाँसी आनेपर स्वर-यन्त्रमें घावकी तरह यन्त्रणा मालूम होती है।" खाँसीके साथ सहजमें ही बलगम निकल जाता है, श्लेष्मा निकालनेके लिये वह इतना नहीं खाँसता, जितना वह थोडा-सा उपदाह दूर करनेके लिये खाँसता है, पर जब श्लेष्मा रहता है, तो वह आसानीसे निकल जाता है। जैसा अन्य दवाओंमें है, वैसा इसमें बलगम निकालना मुश्किल नहीं होता। "स्वर-यन्त्रसे सहजमें ही अलग हो जानेवाला श्लेष्मा।" वह इसे केवल स्वर-यन्त्रकी चेष्टासे खखार कर निकाल देता है, दिन और सन्ध्याके समय खाँसी और स्वर-यन्त्रमें खरोंच। यह गर्म कमरेमें बदतर हो जाता है और खुली हवामें या चलने-फिरनेसे अच्छा रहता है।

इससे छातीमें कमजोरी मालूम होती है। दो दवाओंमें छातीमें कमजोरीका लक्षण है और आप सहजमें ही उनका प्रभेद नहीं बता सकते। कमजोर आवाज़, कमजोर छाती, एक अनुभूति, कि साँस लेना बहुत मुश्किल है, बात करना बहुत कठिन होता है, खाँसना भी अत्यन्त मुश्किल होता है। क्योंकि छातीकी पेशियाँ बहुत कमजोर मालूम होती हैं। ये दोनों दवाएँ आर्जेण्टम मेटालिकम और **स्टैनम** है। छातीकी पेशियोंकी बहुत अधिक कमजोरी, रोगी इसपर बहुत-कुछ विचार करता है, पर यह दुर्बलता उस दुर्बलतासे बिलकुल अलग है, जिसे यक्ष्माकी दुर्बलता माना जाता है, यह वक्षकी पेशियोंकी एक दुर्बलताका भाव है। वक्षकी एक पक्षाघातिक दुर्बलता है। इसमें सन्देह नहीं, कि यह दवा **ऐण्टिम-टार्ट**से बिलकुल ही अलग है, जिसमें वक्षमें भयङ्कर दुर्बलता रहती है, पर आपको याद होगा, कि वह दवा नयी बीमारियोंकी है, पर यह लँभडानेवाली बीमारियोंमें लाभदायक है। बहुत दिनोंकी स्थायी बीमारी, इस तरह 'वक्षकी बहुत कमजोरीका मतलब

है" जो कुछ मैंने वर्णन कर देनेकी चेष्टा की है और वह, यह है, जिसे अकसर रोगी वर्णन करनेकी चेष्टा करते हैं, पर कर नहीं सकते। "डाक्टर साहब! मुझे वक्षमें बहुत कमजोरी मालूम होती है।"

यह दवा हृत्पिण्डकी गड़बड़ीके लक्षणोंसे भरी है। पीठके बल लेटनेपर कलेजेमें धड़कन होने लगना, "वक्षमें एक प्रकारका कम्पन अनुभव होने लगना।" वक्षमें हिलने, फड़फड़ाने या काँपनेका भाव, जैसा कि भिन्न-भिन्न रोगी कहा करते हैं, कि वक्षमें कम्पन, समूचे शरीर, हाथ-पैरकी कम्पनशील दुर्बलता। इस दवामें सार्वाङ्गिक कम्पनके साथ कलेजेकी धड़कनका लक्षण बहुत अधिक है। बार-बार कलेजेमें धड़कन होना, गर्भावस्थामें कलेजेमें धड़कन, रातमें कलेजेमें धड़कन, सर-दर्दके साथ कलेजेमें धड़कन, सार्वाङ्गिक दुर्बलताके साथ कलेजा धड़कना, धीरे-धीरे बढ़ती हुई कमजोरी, उसकी सार्वाङ्गिक दुर्बलताकी वजहसे चलनेके समय उसके घुटने आपसमें टकरा जाते हैं, कलेजेमें धड़कन और सार्वाङ्गिक दुर्बलताके साथ घुटनेमें कम्पन, प्रत्यङ्ग सब कड़े पड़ जाते हैं। "प्रत्यङ्गोंमें इस तरहका सुन्नपन, मानो वे सो गये हैं।" शक्तिका घट जाना। **आराम करनेके समय ही बहुत-सी तकलीफें बढ़ जाती हैं। बैठे रहनेपर पीठमें दर्द, चलते रहनेपर अच्छा रहता है।** दवाओंमें होनेवाली सभी स्नायविकताएँ इस दवामें पायी जाती है।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम।

(Argentum Nitricum)

इस दवाके लक्षणोंकी परीक्षा करनेपर मालूम होगा, कि धातुओंकी तरह इसमें भी बुद्धि सम्बन्धी लक्षणोंकी ही प्रधानता रहती है, सीमित-रूपसे चित्त-वृत्तिमें विशृङ्खलता पैदा होती है। मानसिक लक्षणकी प्रधानता रहती है। सबसे पहले स्मरण-शक्तिमें गड़बड़ी, विचार-शक्तिमें विशृङ्खलता, अपने कार्यों तथा व्यवहारोंका विवरण देनेमें रोगी बहुत उत्तेजित हो जाता है। वह विचार-शक्तिसे रहित रहता है, अजूबा काम करता है और विचित्र ही निर्णय

किया करता है, बेवकूफीका काम करता है, उसमें सब तरहके विचार, खाम-ख्याल और मति विभ्रम पैदा हुआ करते हैं। दुर्भावनाओंके कारण उसका मन व्यथित रहता है और खासकर रातके समय तो उसके विचार उसे इतनी व्यथा पहुँचाते हैं, कि वह बहुत ही चिन्तित हो जाता है और यह उसे जल्दबाज़ और चञ्चल बना देता है, वह बाहर निकल पड़ता है और लगातार टहला करता है, वह जितना ही तेज़ चलता है, उतना ही वह सोचता है, कि और भी तेज़ चलना चाहिये और वह तबतक चला करता है, जबतक भरपूर क्लान्त नहीं हो जाता। अद्भुत भाव, विचार और भय उसके मनमें उत्पन्न होते हैं। उसमें ऐसा भाव पैदा होता है, कि या तो उसमें बेहोशीके लक्षण हैं अथवा कोई गहरी बीमारी पैदा हो जाना चाहती है। उसके मनमें यह एक विचित्र विचार पैदा हो जाता है, कि यदि वह सड़ककी किसी मोड़पर आ पहुँचेगा, तो उसमें एक उत्तेजनाका भाव पैदा हो जायगा, गिर पड़ेगा और बेहोश हो जायगा। इससे बचनेके लिये वह बन्द राहकी ओर जायगा, वह उस मोड़से इस भयसे बचना चाहता है, कि वह कुछ अद्भुत कार्य कर बैठेगा। उसकी मानसिक अवस्था ऐसी खराब हो जाती है, कि उसके मनमें सब तरहके भावोद्रेक आने दिया करता है। उसके मनमें विचित्र भावोंकी एक लड़ी सी बँधी रहती है और जब वह किसी पुलको पार करता है या ऊँची जगहपर चढ़ता है, तो उसके मनमें यह विचार पैदा होता है, कि या तो वह अपनेको मार डालेगा या शायद कूद पड़ेगा या यदि वह कूद पड़े तो क्या होगा और कभी-कभी तो ठीक पुलसे पानीमें कूद पड़नेका ही भावोद्रेक हो जाता है। जब वह खिड़कीसे देखता है, तब उसके मनमें आता है, कि खिड़कीसे कूदना कितनी भयानक बात है और कभी-कभी तो यही भाव आता है, कि वह सचमुच ही खिड़कीसे कूद पड़ेगा। मृत्युका भय रहता है, अति चिन्तित अवस्था, कि मृत्यु निकट है और अक्सर बहुत बार **ऐकोनाइट**की तरह वह अपनी मृत्युका समय बताता है, समय बढ़ता देखकर वह घबड़ाता है। जब अपने किसी करनेवाले कामपर विचार करता है या जो कुछ उसने करनेका वादा किया है, उसे सोचता है या किसी कामकी राह देखता है, तो वह बहुत चिन्तित रहता है। किसीसे मिलनेका निश्चित समय आता है, तो जबतक उससे भेंट नहीं हो जाती, घबड़ाता रहता है। यदि वह रेलसे यात्रा करना चाहता है, तो वह बहुत घबड़ाया भयसे भरा और चिन्तित तथा

काँपता हुआ स्नायविक बना रहता है, जबतक कि वह चलती हुई गाड़ीपर बैठ नहीं जाता और फिर यह भाव चला जाता है। यदि गलीकी मोड़पर उसे किसी मनुष्यसे मिलना होता है, तो वह बहुत घबड़ाया रहता है। अकसर उसे घबड़ाहटसे तबतक पसीना होता रहता है, जबतक उससे मिल नहीं लेता। केवल ये ही खास लक्षण नहीं मौजूद रहता, बल्कि चिन्ता या घबड़ाहटके कारण ही उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। वह उत्तेजनाशील रहता है, सहजमें ही रुष्ट हो जाता है और इसीका यह परिणाम होता है, कि दर्द पैदा हो जाता है। जब वह क्रोधित होता है, तो प्रचण्ड रूप धारण कर लेता है और उसके सरमें दर्द पैदा हो जाता है तथा क्रोधके बाद खाँसी आने लगती है, छातीमें दर्द हो जाता है और कमजोरी आ जाती है। इन परिस्थितियोंके कारण उसे जो चिन्ता होती है, उससे रोग उत्पन्न हो जाता है। जब वह कहीं जाता है,—शादीमें या तमाशा देखने या किसी असाधारण घटनामें, तो वह घबड़ाया रहता है, डरता है और दस्त आने लगते हैं, इस तरह यह इन बातोंकी एक जबर्दस्त दवा है। पाठ्य-ग्रन्थमें कहा है, कि अपने विचित्र कार्यों का वह अद्भुत कारण बताता है। अपनेको छिपानेकी कोशिश करते हुए, मानो वह स्वय समझ रहा है, कि यह उसकी मूर्खता थी। शोक, उदासीनता और चित्त-विभ्रम, दोष-पूर्ण स्मरण-शक्ति, ऊँचे मकान देखकर उसके सरमें चक्कर आने लगता है और आँखें बन्द करनेपर या तो उसका शिरोघूर्णन बढ़ जाता है अथवा आने लगता है। सरमें चक्करके साथ उसके कानमें भनभनाहट होने लगती है, बहुत कमजोरी और कम्पन मालूम होता है।

मस्तिष्कको क्लान्ति तथा मस्तिष्कसे काम लेनेके कारण धातुगत सर-दर्द। ऐसी मानसिक क्लान्तियोंमें, सर-दर्द, स्नायविक उत्तेजना और कम्पन, हृत्पिण्डकी यान्त्रिक बीमारियाँ और कारबारियोंका यकृत रोग, विद्यार्थी, मस्तिष्कसे काम करनेवालोंमें, जिनमें बहुत दिनोंसे उत्तेजना है, अभिनेताओंमें, जो सर्व-साधारणमें खूबसूरतीसे उतरनेकी उत्तेजना बहुत दिनोंसे भोगते आ रहे हैं। मनकी यह अवस्था तबतक बढ़ती हो जाती है, जबतक कि सार्वाङ्गिक दुर्बलता नहीं आ जाती। कम्पन, पक्षाघात, सुन्नपन, क्रिया-विकार, कलेजा धड़कना, समूचे शरीरमें फड़कन ये सभी मानसिक अवस्थाके साथ रहते हैं। यह स्नायविक अवस्था तबतक जारी रहती है, जबतक शरीरके सभी यन्त्र विशृङ्खलित

नहीं हो जाते। पाकाशयमें पाचन नहीं होता। जो कुछ खाता है, वही वायुमें परिणत हो जाता है, वह बीमार हो जाता है और दर्दको तकलीफ होने लगती है। कलेजेको धडकनके साथ-ही-साथ खूनका दौरान भी बहुत गडबडा जाता है, सब रक्तवाहिनियाँ खूनसे भर जाती हैं और समूचे शरीरमें फडकन होती है, रक्तवाहिनियोंमें रोग हो जाता है। मेदमय अर्बुदको अपकर्षता और शिराओंका प्रसारण शिरास्फीति रोग (Varicose veins), श्लेष्मिक-भिल्ली तथा चर्मपर जखम, ये सब हड्डियाँ और हृदपिण्ड बहुत ही कमजोर हो जाता है, हाथ-पैर ठण्डे और नोले हो जाते हैं ओठ भी ठण्डे और नीले रहते हैं। ये सभी उपसर्ग मानसिक परिश्रम, नाटक प्रभृति देखने, दोस्तोंमें मिलने और किसीसे मिलनेका कोई समय स्थिर करनेपर बढ जाते है। यह दवा खासकर स्नायविकताकी है। यह मेरुदण्डके लक्षणोंसे भरी है, हाथ-पैरोंमें ऊपरसे नीचे छेदने, फाडनेकी तरह दर्द होता है। ऐसा हो दर्द गति-शक्ति-राहित्य (Locomotor ataxia) में होता है, एक बहुत तेज़ धक्का देनेकी तरह दर्द। इस दवाका एक जबर्दस्त रूप यह है, कि रोगी अपने बहुत-से लक्षणोंको, कुछको छोडकर, सुधारकर कहता है अर्थात् वह बहुत-कुछ **पलसेटिला**के रोगीको तरह होता है। वह ठण्डी हवा, ठण्डे पेय, ठण्डी चीजें पसन्द करता है, वह बरफ और कुलफी मलाई खाना चाहता है, ठण्डी हवामें सर रखना चाहता है, गर्म कमरेमें श्वास-रोध हो जाता है। गर्म वस्त्रसे भी उसको साँस रुकने लगती है। खिडकी, दरवाजे खोल रखना चाहता है, बन्द घरमें श्वास नहीं ले सकता। कमरेमें अगर दूसरे मनुष्य रहते हैं, तो श्वास-रोध होने लगता है। गिर्जा या नाट्यशालामें नहीं जा सकता, आनन्द मनाने या भीड-भाडकी जगहमें नहीं जा सकता, उसे घरपर ही रहना पडता है, उसे भीडसे भय होता है कितने ही स्थानोंसे डरता है।

इसमें हर जगह जखम मिलता है, पर खासकर श्लैष्मिक-भिल्लीपर जखम हो जाता है। कण्ठमें जखम होता है, पलकों तथा कनीनिकामें घाव हो जाता है, मूत्राशयका जखम, जरायु, योनि-पथ तथा वाह्य कोमल अङ्गोंका जखम। जखम हो जानेको यह प्रवृत्ति कुछ आश्चर्यजनक मालूम होती है, विचित्र इस सम्बन्धमें है, कि इसके रोग-तत्वमें ऐसी प्रवृत्ति प्रकट हो, जब कि पुराने चिकित्सक (एलोपैथ) इसे जखम जलानेके लिये व्यवहार करते हैं और

इतनेपर भी यह उन्हें अच्छा कर देता है। हम जानते है, कि फास्फोरस जला देगा तथा यह जखम होनेकी प्रवृत्तिको दृढ कर देगा, जखमको गहरा बना देता है, पर आर्जेण्टम नाइट्रिकम उसे भरने देता है। श्लैष्मिक-झिल्लियोंपर लाल उभार, दाने होते है, रक्तवाहिनियाँ बड़ी हो जाती हैं, बैंगनी दिखाई देती हैं। स्पर्श सहन न होनेवाले जखम। मासिक रजः-स्रावके समय और पहले स्त्रियोंके उपसर्ग पैदा होते है, यही उनकी रोग-वृद्धिका सद् काल होता है। यदि उसमें आर्जेण्टम नाइट्रिकमके लक्षण हैं, तो इस समय वे सबसे बदतर अवस्थामें जा पहुँचेगी। उसे बहुत तीव्र अतिरजः, स्नायविक उत्तेजना, गुल्म-वायुके प्रदर्शन और एक अस्वाभाविक बढ़े हुए रज-स्रावका भयानक कष्ट रहता है। इस दवामें रक्त-स्राव-प्रवणता भी है। जखमसे खून निकलता है, नाकसे, छातीसे भी खून जाता है, पेशाब खून-मिला रहता है, श्वेत-प्रदरका स्राव बहुत ज्यादा होता है, मासिक रज-स्राव भी ज्यादा रहता है, साधारणत श्लैष्मिक-झिल्लियों और जरायुसे रक्त-स्राव होता है। रक्तका वमन, इसने बहुत दिनोंका तथा बहुत ही बद्धमूल पाकाशयका जखम आरोग्य कर दिया है, जब खूनका वमन होता था। •

मासिक रज-स्रावके समय रोग-वृद्धि इस दवाका एक सुदृढ लक्षण है और इसकी रोगिनी बीचके समयमें अच्छी रहती है। कलेजेकी धड़कन, कम्पन, स्थानका ठण्डापन, यद्यपि ठण्डी हवाकी इच्छा रहती है, ओंठका नीलापन, पैरोंका घुटनेतक ठण्डा पड़ जाना और हाथोंका कोहनीतक ठण्डा हो जाना, इतनेपर भी रोगी ठण्डी चीजें ही माँगता है, कुछ ठण्डा ही चाहता है। यह लक्षण किसी दूसरे समय नहीं भी दिखाई दे सकता है। यह इसका एक विचित्र स्वरूप है। "रोगिनी **दाहिनी** करवट नहीं सो सकती, क्योंकि इससे कलेजेकी धड़कन बहुत ज्यादा बढ जाती हैं।" ऐसी बहुत-सी दवाएँ हैं, जिनमें बायी करवट लेटनेपर कलेजा ज्यादा धड़कने लगता है, पर दाहिनी करवट सोनेपर कलेजेकी धड़कन बढ़नेवाली दवाएँ बहुत कम है (**ऐल्यूमेन, बेडियागा, कैलमिया, कैलि-नाइट्रिकम, लिलि-टिग्रिनम, प्लाटिना, स्पञ्जिया**)। यह असाधारण, अद्भुत, विरल और विचित्र लक्षण है। *यह इस दवाका इतना मजबूत निर्देशक स्वरूप है,* कि अमूमन यह सबकी ही दिखाई देता है, क्योंकि यह **हृत्पिण्ड**का लक्षण है तथा सार्वाङ्गिक लक्षणोंसे मिल गया है। इस स्पर्श-असहिष्णुताके साथ,

उसे बाध्य होकर, दूसरी स्थितिमें जाना पड़ता है, उठकर टहलना पड़ता है, क्योंकि वह दाहिनी करवट लेटा था। रोगी कहेगा, कि दाहिनी करवट सोनेपर उसे सरसे पैरतक धमक मालूम होती है। हाँ, उसे सब जगह ही धमक होती है। दाहिनी करवट सोनेपर एक सार्वाङ्गिक स्पन्दन अनुभव होता है। विशेष लक्षणोंपर और खासकर सारे शरीरके विशेष लक्षणोंको लक्ष्यमें रखकर इस दवाका प्रयोग करते समय ये सार्वाङ्गिक चीजें न भूल जायें। मत भूलें, कि पुस्तकोंमें बहुत अधिक आध्मानवाली जिन दवाओंका हवाला है, यह भी उनमेंसे ही एक है। उसका पाकाशय इतना तना रहता है, मानो फट जायगा, डकार आने या हवा छूटनेपर मुश्किलसे कुछ आराम मिलता है।

उसमें यह एक कष्टदायक भाव भरा रहता है, कि उसके समस्त कार्य असफल होंगे। चलनेके समय वह चिन्तासे बेहोश-सा हो जाता है, जिससे उसे और भी तेजीसे चलना पड़ता है। इर जगह आपको बुद्धि-सम्बन्धी लक्षणोंकी प्रधानता ही प्राप्त होगी।

सर-दर्द रक्त-सञ्चयकी प्रकृतिका होता है, बहुत टपक होती है, सर्दीसे घटता है अथवा कसकर बाँध देनेसे। मानसिक परिश्रम और उत्तेजनासे, सरमें चक्करके साथ सर दर्द, मिचली और वमन। माथेमें दाहिना और खोदने, काटने, सुई बेधने या धमककी तरह दर्द, माथा बहुत बड़ा अनुभव होता है।

आँखके लक्षण भी बहुत ज्यादा हैं। वे उसी तरहके साधारण प्रकृतिके रहते हैं, जैसे जखमके साथ श्लैष्मिक झिल्लीके प्रदाहके अवस्थामें दिखाई देते हैं। ठण्डेसे आराम मिलता है। गर्म कमरेमें और आगके पास बैठनेपर, आँखके सभी लक्षण बदतर हो जाते हैं, रोगी ठण्डी चीजें लगाना चाहता है, ठण्डे पानीसे धोना चाहता है। अत्यधिक आलोकातङ्क (रोशनीसे भय होना), रोशनीसे घृणा होती है, यह लक्षण गर्म कमरेमें और भी बढ़ जाता है, ठण्डा कमरा चाहता है, अन्धेरेमें रहना चाहता है। आँखकी रक्तवाहिनियोंमें बहुत सूजन, अर्बुदकी तरह फूलन और लाली रहती है और देखनेमें आँख फोड़ेकी तरह खाल उधड़ी-सी मालूम होती है। "रुकी हुई रक्तवाहिनियोंके साथ अर्जुन रोग।" "चक्षु-कोषकी कनीनिका धुँधली रहती है।" "नये पैदा हुए बच्चेकी आँखकी कनीनिकाका जखम, पलकोंसे बहुत ज्यादा क्लेदका स्राव।" और यही वह चीज़ है, जिसे 'अंधी गतसे काम करनेवाले' प्राचीन समयसे

लेकर आजतक आँखके इलाजमें व्यवहार करते आ रहे हैं, उनको आर्जेण्टम नाइट्रिकमसे चिकित्सा करते हैं। आलोकातङ्क, बहुत देरतक महीन सिलाई या बढ़िया छपाई देखते रहने बाद, एकाएक जिनकी दूर-दृष्टि हो जाती है, उन्हें रक्त-सञ्चयकी अवस्थाके कारण हो ऐसा होता है, बुढ़ापेके कारण नहीं, बल्कि यह कुछ ऐसी चीज़ रहती है, जिसे आरोग्य करना चाहिये। साधारण दूरकी छपाई भी वह एकाएक नहीं देख सकता, बल्कि उसे कुछ दूरीपर पकड़े रखना पड़ता है। यदि यह किसी पचीस वर्षके जवान या बच्चेको पैदा हो जाये, कि थोड़ी दूरीकी चीज़का प्रभेद निर्णय नहीं कर सकता हो, ऐसी दूर-दृष्टि पैदा करनेवाली आँखकी स्थितिकी गड़बड़ी इसने उत्पन्न और आरोग्य की है। "पलकोंका शोथ प्रभृति।"

इस दवामें सूजन या शोथ तो सर्वत्र ही रहता है अर्थात जहाँ कहीं शोथ हो सकता है, वहीं सूजनकी अवस्था रहती है।

ध्यान देने योग्य विशेषताएँ प्राप्त करनेका एक दूसरा स्थान चेहरा है। "चेहरा, चेहरेपर बूंद-बूंद पसीना लगा रहता है।" "चेहरा धँसा, पीला, नीलापन लिये।" "असमयमें ही वृद्धकी तरह दिखाई देता है।" "चेहरा नीला, भारी श्वास-प्रश्वास, नाड़ी नहीं मिलती।"

अब कण्ठके लक्षण आते हैं। इस दवाका दूसरा स्वरूप है, इसको मसे निकालनेकी प्रवृत्ति। इसमें मस्सा बढ़ानेकी ओर प्रवृत्ति रहती है और कण्ठमें भी छोटे-छोटे मसेकी तरह प्रवर्द्धन निकलते हैं, कण्ठमें, जननेन्द्रियमें और मलद्वारके चारों तरफ अर्बुदकी तरहके उभार, इसीलिये प्रमेह-विष-दूषित प्रकृतिवालोंके (Sycotic constitution) लिये यह विशेष उपयोगी होती है। इसके प्रयोगके लिये आवश्यक सभी स्राव, प्रमेह-विष-दूषित प्रकृतिके होते हैं।

"निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें खोंचे फँसी हैं।" तुरन्त आपको हीपर-सल्फरसे इसका निकटस्थ सम्बन्ध मालूम होगा। जखमके साथ कण्ठकी प्रादाहिक अवस्थामें आर्जेण्टम नाइट्रिकमका रोगी ठण्डे कमरेमें रहना चाहता है, वह ठण्डी हवाकी इच्छा करता है और ठण्डी चीजें ही खाना चाहता है, पर हीपरका रोगी गर्म चीजें पीना चाहता है, गर्म कपड़े पहनना चाहता है, गर्म कमरेमें रहनेकी इच्छा करता है और बिछावनके बाहर अपना हाथ भी नहीं निकाल सकता, क्योंकि उसे कण्ठमें

दर्द होने लगता है। यहाँ सब लक्षण आपको विपरीत ही दिखाई देते हैं, पर दोनोंको ही 'कण्ठमें" खोंचे मालूम होती है। पुरानी सूखी सर्दीमें **ऐल्यूमिना** और **नेट्रम-म्यूरियेटिकम**में कण्ठमें खोंचे रहनेके लक्षण हैं, पर *अगर दर्द तथा सूजनके साथ कण्ठ लाल हो, तो इन दोनों दवाओंसे कोई* भी लाभ न होगा। पहलीवाली दोनों उपयोगी होती हैं। मछलीकी हड्डीकी तरह कण्ठमें "खोंचे।" **नाइट्रिक एसिड, हीपर** और आर्जेण्टम नाइट्रिकम, मछलीकी हड्डी कण्ठमें रहनेकी तरह अनुभूतिकी बड़ी ही उपयोगिनी दवाएँ हैं। बहुत-सी दवाओंमें कण्ठमें खोंचे रहनेके लक्षण हैं, पर ये सर्व-प्रधान हैं। हम जानते हैं, कि कण्ठके जखमके लिये किस तरह आर्जेण्टम नाइट्रिकमका प्रयोग हुआ है। पर यहाँ कण्ठमें बहुत दिनोंके रक्त-सञ्चयको भी लाभदायक दवाके रूपमें यह आती है। स्वर-भङ्गके साथ श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह या सर्दी, मसाकी तरह प्रवर्द्धन, मसे प्रभृति। स्वर-भङ्ग, स्वर-रज्जुके चारों ओरकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें सूजन तथा स्वर-रज्जुका अपूर्ण पक्षाघात। स्वर-रज्जु पर फूलगोबीकी तरह मसे।

"भूख न लगना", कुछ पीनेसे इनकार करता है, यह एक दूसरा रूप है। **चीनी खानेकी इच्छा**, उसे इसकी बहुत इच्छा रहती है, पर खानेसे ही बीमार हो जाता है। डकारें आती हैं, वायु बढ़ जाता है, पाकाशयमें अम्ल उत्पन्न हो जाता है। वह चीनी पचा नहीं सकता, यह एक विरेचकका काम करती है और दस्त आने लगते हैं। चीनीसे इतनी *प्रत्यक्ष रोग-वृद्धि* होती है, कि माताका दूध पीनेवाले बच्चेको हरे रङ्गके दस्त आने लगते हैं, अगर माँ मिश्री खाती है। इतनेपर भी क्या यह आश्चर्यकी बात है, कि बच्चेको अतिरिक्त खुराक मातासे प्राप्त होती है तथा चीनीको दिनभर गलने और अतिरिक्त होनेमें लगता है *तथा बच्चेको ज़हरकी तरह वह खिलायी जाती है?* एक रोगी मुझे याद है, जिसे मैं बराबर सलाहेजता रहा था। उसे **मर्क्युरी**के दस्त आते थे, निश्चय ही वे घासकी तरह हरे होते थे। अच्छा **कैमोमिला**में घासकी तरह हरे दस्त आते हैं और **आर्सेनिकम**, **मर्क्युरियस** *तथा और भी बहुत-सी दवाओंमें घासकी तरह दस्तके लक्षण* हैं। उन दिनों मैं भी बँधे नियमसे काम करनेवाला था, मैं **मर्क्युरियस**के सिवा और कोई भी दवा न खोज निकाल सका और यद्यपि उस बच्चेको

मर्क्युरियस, आर्सेनिक और **कैमोमिला** दिया गया, पर कोई लाभ न हुआ। इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि उसकी माँ मिसरी खाया करती है। जब उससे पूछा किया कि तुम मीठी चीजें चीनी प्रभृति खाती हो। उसने कहा—"नहीं, बिलकुल नहीं।" पतिने कहा—"वाह तुम खाती तो हो, मैं नित्य ही तो आधा सेर मिसरी लाता हूँ। तुम उसे क्या कर डालती हो?" उसने जवाब दिया—"ओह। वह कुछ नहीं है।" माताने मिसरी खाना बन्द कर दिया, पर वह बच्चा तबतक अच्छा न हुआ, जबतक उसे आर्जेण्टम नाइट्रिकम न दिया गया। **"चीनी खानेकी अदम्य इच्छा।"** कितनी ही दवाओंमें चीनीकी इच्छाके लक्षण हैं, पर उनमें कितनी ही ऐसी हैं, जिनमें बेखटके ही इसे रोगी खा सकता है। यह एक विचित्र बात है, जब एक ही प्रकारका खाद्य-पदार्थ, दूध, चीनी, नमक, खेतसार प्रभृति और खानेकी चीजें विकार कर डालती हैं, जब यह कहा जाता है, कि "मैं चम्मच-भर भी खेतसार-मिली कोई चीज़ अण्डा या चीनी बीमार हुए बिना नहीं खा सकता।" यह सदैव विचित्र और अद्भुत है, क्योंकि यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जो केवल इच्छा और पाकाशयपर प्रभाव उत्पन्न करती है, बल्कि यह सम्पूर्ण रोगीपर प्रभाव डालती है। रोगी कहता है—"मैं बीमार हो जाता हूँ।" और इसीलिये यह सार्वाङ्गिक लक्षण हो जाता है। जब रोगीको चीनी खानेपर पतले दस्त आने लगते हैं, तो यह कोई स्थानिक या विशेष लक्षण नहीं रहता, क्योंकि पतले दस्त आनेके पहले ही सम्पूर्ण रोगी बीमार हो जाता है। पतले दस्त तो उसके बाहरी दिखावे हैं, क्योंकि यह एक सार्वाङ्गिक लक्षण है। इसलिये यह आवश्यक है, कि इसकी भरपूर परीक्षा की जाये।

"कैमें निकले हुए पदार्थसे कपड़ेमें काला दाग पड़ता है।" खाद्य-पदार्थकी लगातार कै होती है, वह कभी-कभी मुँहभर खाये पदार्थ तबतक कै करता रहता है, जबतक कि पेट बिलकुल खाली नहीं हो जाता। **फास्फोरस** और **फ़ेरम**की तरह मुँहभर खायी हुई चीज़के साथ डकारमें वायु निकलती है, रोगी इसे थूका करता है, मुँह भर जाया करता है।

"डकार आनेपर आराम मिलता है।" "बहुत-सा वायु ऊपरको ओर चढ़ता है।" बार-बार डकार आती है, हमेशा ही डकारसे आराम नहीं

पहुँचता, डकारमें यह बहुत-कुछ चायनाकी तरह है। कार्बो-वेजमें भी डकार आनेपर कुछ देरके लिये आराम मिलता है और रोगीको अच्छा मालूम होता है। कार्बो-वेजिटेबिलिसमें ऐसा ही होता है। इसके रोगीका पेट इतना फूलता है, मानो फट जायगा, वह किसी तरह भी वायु निकाल नहीं सकता, पर अन्तमें बहुत तकलीफ़ और तनावके बाद खाली डकारें आती हैं और तब उसे आराम मिलता है। चायनामें भी रोगीका पेट तना रहता है और रह-रहकर वायु निकलता है, पर उसे आराम नहीं मिलता। इससे उसे कोई मदद नहीं पहुँचती और कभी-कभी तो रोगी कहता है, कि इसके बाद और भी बहुत बुरी हालत हो जाती है। ऐसा ही कभी-कभी आर्जेण्टम नाइट्रिकममें भी होता है। यह प्रत्यक्ष रूपसे दोनोंमें ही है। "बहुत-से पाकाशयिक रोग डकारके साथ ही होते हैं।" "डकार कठिनतासे आती है, अन्तमें बड़े जोरसे हवा निकलती है।" "खानेके बाद मिचली, वमनकी कष्टप्रद चेष्टाओंके साथ मिचली।" मैंने आर्जेण्टम नाइट्रिकमके रोगीको एक ही क्षणमें कै करते और दस्त करते देखा है, ऐसा नहीं है, कि क्षणभर पहले दस्त और फिर कै, बल्कि मारात्मक हैज़ाकी तरह बहुत सुस्तीके साथ दोनों ही रास्तोंसे निकलता है। रोगी बहुत शिथिल, सुस्त और कमजोर हो जाता है। "वमन, उसपर भूरी रेखाएँ रहती हैं, एक-पर एक तहोंकी तरह जमी रहती हैं, काफीके चूरकी तरह वमन होता है।"

पाकाशय, यकृत और तलपेट दर्दसे भरे रहते हैं, इन सब कष्टकर आध्मानोंके कारण तलपेट तना रहता है। पाकाशयका प्रदाह पाकाशयका जखम बहुत ही कष्टदायक अतिसार, बहुत ज्यादा वायुके साथ अतिसार। दूध पीनेवाले बच्चोंको बहुत वायुके साथ दस्त आना, इसके साथ ही बहुत मरोड़का दर्द तथा ऐंठनके साथ बदबूदार खूनकी रेखा पड़े हुए दस्त होते हैं। "दूध पीनेके बाद बच्चोंको पतले दस्त आना।" अतिसार और रक्तामाशयके सम्बन्धमें दूसरी बात यह है, कि पाखानेके साथ खुरचन-सी निकलती है। यह डिफ्थीरियाकी झिल्ली या तहोंकी तरह होती है इस तरहका तलछट, मानो मलान्त्र तथा झिल्लीको डोरियाँ पाखानेके साथ निकल रही हैं। रातके समय जोरको आवाज़के साथ बदबूदार श्लेष्माका हरा पाखाना।

'पेशाब अनजानमें और बिना रुके होने लगता है, पेशाबका वेग होता है, पेशाब कुछ कष्टसे, पर बिना किसी रुकावटके हो जाता।" मूत्रनलीसे

रक्त-स्राव, कष्टदायक लिङ्गोत्थान, सूजाक।" इसमें पुरुषोंका बहुत ही कष्टदायक सूजाक तथा दर्द-भरा लिङ्गोत्थान होता है। स्त्रियोंके योनि-पथमें बहुत यन्त्रणा होती है तथा बाहरी कोमल भाग फूला रहता है, सूजन। पेशाब करनेपर योनिमें घावकी तरह यन्त्रणा होती है, खून-मिला स्राव। पुरुषोंको मवाद आना रुक जानेके कारण अण्डकोषका प्रदाह। स्त्रियोंमें, डिम्बकोषका प्रदाह तथा सभी वस्ति-गह्वरके यन्त्रोंका प्रदाह रहता है। समूचे वस्ति-गह्वरमें बहुत अधिक यन्त्रणा, योनि-पथसे रक्त-स्राव, जरायुमें जखम और सङ्गममें कष्ट होता है अथवा असम्भव हो ही जाता है। "गर्भाशयमें और उसके चारों ओर खोंचें रहने या दरार पड़ जानेकी तरह दर्द प्रभृति।" जहाँ कहीं जखम रहते हैं, वहीं यह अनुभूति होती है। "जरायु-मुख या जरायु-ग्रीवाके जखमके साथ जरायुको स्थान-च्युति।" थोड़ी देरतक होनेवाला रक्त-स्राव, तलपेट और पाकाशयमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द। अतिरज। मासिक ऋतु-स्रावके समय स्नायविक रमणियोंकी शिकायतें, रज:-स्राव या तो रुका रहता है अथवा थोड़ा होता है। गर्भावस्थाके उपसर्ग।

हृत्पिण्ड और नाड़ी-सम्बन्धी लक्षणोंमें, "कलेजा धड़कने और समूची देहमें धमक होनेके साथ घबड़ाहट।" थोड़े भी मानसिक भावोद्रेक या एकाएक शारीरिक परिश्रम करनेपर तेजीसे कलेजा धड़कने लगना, कलेजेकी धड़कनके कारण, आराम मिलनेके लिये रोगिनीको बाध्य होकर जोरसे अपना कलेजा दबा रखना पड़ता है। हृद्पिण्डको क्रिया अनियमित रहती है, सविराम होती है प्रभृति।

बैठनेके समय कमरको जगहपर दर्द होने लगता है, पर खड़े होने या चलनेपर अच्छा हो जाता है। आध्मान-वायुके कारण पीठमें दर्द, मेरुदण्डमें घावकी तरह दर्द, रातके समय पीठमें दर्द, कमरके स्थानपर बहुत भार मालूम होना, गति-शक्ति-राहित्य (Locomotor ataxia) की यह बहुत ही लाभ-दायक दवा है।

बहुत बेचैनी, इसके स्नायविक लक्षण भी बहुत-से हैं, समय बाँधकर शरीरमें कँपकँपी होना, पैरमें फाड़नेकी तरह दर्दके साथ नर्त्तन रोग। चौंककर तथा उत्तेजनामें नींद खुलती है। अकड़नके पहले बहुत बेचैनी रहती है। स्नायविक, बेहोश हो जानेकी तरह, कम्पनका भाव प्रभृति।

नींदके लक्षण भी बिलकुल ही साधारण लक्षणोंकी तरह है। कष्टकर रात्रि स्वप्न, भयङ्कर स्वप्न देखता है। उत्तेजना और चौंककर जाग पड़ता है। नींदमें सब तरहको अद्भुत और भयावनी चीजें देखता है। दुष्ट और भयानक चीजोंके सपने देखता है और ऐसा बोध होता है, कि प्रत्येक बात उसीपर घटा चाहती है, मरे हुए वस्तुके सपने प्रभृति।

सवेरे जागनेपर सब प्रत्यङ्गोंमें कुचलनेकी तरह दर्द होता है, वक्षमें लगातार बना रहनेवाला दर्द प्रभृति। बहुत स्नायविक रहनेके कारण रातमें सो नहीं सकता।

विसर्पको तरह शय्या-क्षत। सवारी करते समय कलेजेकी धड़कन और घबड़ाहटके कारण उसे बाध्य होकर गाड़ी छोड़कर पैदल चलना पड़ता है और वह भी खूब तेज़ीसे।

बैंगनी रङ्गके ददोरे, जैसे कि बहुत ही जटिल आरक्त ज्वरमें और रस-रक्त बिगड़नेवाली बीमारियोंमें निकलते हैं, वैसे ही निकल आते हैं।

इसका अत्यन्त स्वाभाविक प्रतिविष **नेट्रम-म्यूरियेटिकम** है। जब आपको ऐसा जखम दिखाई दे, जिसमें कण्ठ गर्म लोहेसे दाग दिये जानेकी तरह हो जाये या नाइट्रेट आफ सिलवरसे जरायु-ग्रीवा अथवा पलके दाग देनेकी तरह मालूम हो, तो **नेट्रम-म्यूर**का खयाल कीजिये और देखिये, कि क्या रोगीके लक्षण उसके प्रयोगकी ताईद नहीं करते। इन दूषित व्यवहारोंका यह अत्यन्त साधारण स्वाभाविक प्रतिविष है।

आर्निका माण्टेना।

(Arnica Montana)

आर्निकाका रोगी विषाद-ग्रस्त रहता है, अकेलेमें रहना चाहता है, बातचीत नहीं करना चाहता और न किसीको अपने पास आने देना चाहता है। वह दो कारणोंसे किसीको अपने पास आने नहीं देना चाहता, एक तो वह किसीसे बात नहीं किया चाहता, यह एक मानसिक अवस्था है और दूसरे उसके शरीरमें इतना घावकी तरह दर्द रहता है, कि किसीको छूने नहीं देता

चाहता। इस दवाको ये दो अत्यन्त मजूबा बाते है। उपदाहित, विषाद-ग्रस्त, उदास, भय-पूर्ण, सहजमें ही डर जाता है, सब तरहकी बाते सोचा करता है खासकर यह कि उसे हृत्पिण्डकी कोई बीमारी है या वह मर जायगा अथवा उसे कोई गहरी बीमारी हो गयी है। रातभर सपने देखता है, डरावने सपने, कीचड़-भरे पानी, डाकू प्रभृतिके स्वप्न। रातभर वह डरा करता है, रातमे वह बार-बार उठता है, हृदपिण्डके स्थानको पकड़ लेता है, भयङ्कर भयमें रहनेकी प्रकान बन जाती है और डरता है, कि कुछ दुर्घटना घटनेवाली है। इस समय उसमें आकस्मिक-रूपसे मृत्यु-भय पैदा हो जाता है, यह भय उसे रातमें जगा देता है, वह अपना कलेजा पकड़ लेता है और सोचता है, कि वह आकस्मिक-रूपसे अभी मरना चाहता है। उसमें भयङ्कर आशङ्का उत्पन्न हो जाती है, पर अन्तमें वह सावधान हो जाता है, लेट जाता और भय-पूर्ण निद्रामें सो जाता है, फिर मृत्युके भयङ्कर भयके साथ जाग उठता है और कहता है—"अभी किसी डाक्टरको बुलाओ।" दिनमें जो खासे भले-चगे रहते हैं, उन्हें दिनभरके बाद, रातमें ऐसा ही हुआ करता है, उनपर कोई सहानुभूति नही दिखाता, क्योंकि वे वास्तवमें बीमार नहीं मालूम होते, यह सिर्फ एक मानसिक अवस्था है। यह अवस्था उनमें भी दिखाई देती है, जो किसी रेलगाडीकी राहकी दुर्घटनामें जा पडे हैं या उन्हें किसी तरहका आघात पहुँचा है। चोटके कारण जिन्हें घाव हो गया है और कुचल गये है। वे आकस्मिक मृत्युके भयसे रातमें जाग पडते हैं, उनके चेहरेपर भय छाया रहता है। जिस भयका वास्तवमें उनपर दौरा हो चुका है, उसी भीषण भयका दोहराना। यह **ओपियम**के सदृश है, पर **ओपियम**का भय दिनमें भी रहता है। आर्निकाका रोगी इसका स्वप्न देखता है।

जब रस-रक्त बिगडनेवाली कोई बीमारी हो जाये अथवा तेज़ बोखार हो या किसी दुर्घटना अथवा चोटके बाद ज्वर आ जाता है, तो रोगी बहुत अवसन्न हो पडता है, जड और बेहोश हो जाता है। वह जगाया जा सकता है और ठीक-ठीक किसी सवालका जवाब भी दे देता है, पर फिर तन्द्रामें जा पडता है या एक भी शब्द उच्चारण करनेसे हिचकता है और जब जवाब देनेकी चेष्टा करता है, तो ठीक समुचित शब्द उसे नहीं मिलते और फिर बेहोश-सा हो जाता है। जगानेपर वह चिकित्सककी ओर देखता और

कहता है—"मैं आपको नहीं चाहता, मैंने आपको नहीं बुलाया है, मैं बीमार नहीं हूँ, मुझे डाक्टरकी जरूरत नहीं है।" ऐसा वह उस समय भी कहेगा, जब वह बहुत बीमार है। रक्तकी तरह काला तरल पाकाशयसे वमन करनेके बाद, मैंने आर्निकाके रोगीको तकियेके सहारे पट पड़े हुए देखा है। वह भयानक बीमार है, उसका चेहरा चितकबरा हो रहा है, उसे रस-रक्त-विकारकी बीमारी है या वह रोग है, जिसमें मारात्मक सर्दीका भय रहता है। उसे देखते ही कोई भी कह सकता है कि वह मरना ही चाहता है। वह आपकी ओर देखकर कहेगा—"मैं बीमार नहीं हूँ, मैंने आपको नहीं बुलाया है, आप घर जाइये।' पर जब उसका स्वास्थ्य अच्छा था, वह बहुत ही सुशील था, मिलनसार हो रहा था, मुझे अच्छी तरह जानता था, मुझसे हाथ मिलाकर प्रसन्न होता था, पर अब वह मुझे देखते ही उत्तेजित हो उठा है और कहता है, कि मेरी कोई जरूरत नहीं है। ऐसी ही "सदमे" वाली अवस्था होती है, करीब-करीब सान्निपातिक प्रलाप-ग्रस्त अवस्था। इस ढङ्गके वाक्य समाप्तकर वह तन्द्रामें जा पड़ेगा, ढेर किये हुए बिछावनपर लेट जायगा और जब उससे कुछ कहा जायगा, तो केवल कराहेगा। वह एकान्तमें पड़ा रहना चाहता है चाहता है, कि उसे कोई तङ्ग न करे और कोई उससे बात भी न करे। कोई सदमा पहुँचनेके बाद, जो बीमारियाँ होती हैं, जो समस्त शरीरको हिला देती हैं तथा जिनमें खूनका दौरान भी गड़बड़ा जाता है, उनमें यही अवस्था होती है। जब लक्षण-पूर्ण टाइफायड आरम्भ होता है अर्थात जब कोई सविराम या स्वल्प विराम ज्वरमें टाइफायड प्रकृतिके लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं, जब जीभ चमकीली हो जाती है तथा ओंठ और दाँतोंपर कीट जमने लगती है, जब रोगी सुस्त पड़ता जाता है और समूचे शरीरमें यन्त्रणा होती है, उन्हीं समयोंपर, जैसी हमने वर्णन की है, वैसी मानसिक अवस्था आती है। इस समय रोगीको अवश्य आर्निका देना चाहिये। आर्निका उसकी रोग-वृद्धिमें बाधा देगा और सान्निपातिक अवस्था (Typhoid state) न आने देगा। कभी-कभी उन तीव्र आरक्त ज्वरोंमें भी आर्निका लाभ करता है, जब कि उद्भेद नहीं निकलते और जब कि शरीर धुमैला, चितकबरा और लाल दागोंसे भरा रहता है। रोगी हमेशा करवट बदला करता है और विपन्नता तथा जड़ताके साथ वह अवस्था आती जाती है। यह एक आश्चर्यजनक दवा है। एक गलत समझी हुई दवा है और एक वह दवा है, जिसका

गलत प्रयोग होता है, क्योंकि यह क़रीब-क़रीब कुचले घावपर ही सीमित हो रही है। कितनी ही ऋतुओंमें, पश्चिमकी मलेरिया-पूर्ण घाटियोंमें तो स्वल्प-विराम ज्वरकी यह राम-बाण दवा हो रही है। रक्त-सञ्चयके कारण सर्दी, सुस्ती, तन्द्रा, चितकबरी त्वचाके साथ होनेवाले भयङ्कर आक्रमणोंमें, रक्त-सञ्चयके साथ एकाएक आकस्मिक रूपसे घबड़ाहटके साथ जो सर्दी उत्पन्न हो जाती है, उनमें यह लाभदायक है। चिकित्सक इन ज्वरोंको जानते हैं, वे उनसे भय खाते हैं और केवल आनिका और **लैकेसिस** तथा अन्य गहराईतक काम करनेवाली दवाओंसे ही उनका सामना कर सकते हैं। यह सत्य नहीं कि इन रोगियोंको जरूर **क्विनाइन** पड़नी चाहिये। बहुत वर्षों तक मैं ऐसे रक्त-सञ्चयवाले रोगियोंका इलाज करता रहा हूँ और मैंने अनेकानेक रक्त-सञ्चयी सर्दियाँ देखी है, पर **क्विनाइन** देनेकी कभी जरूरत नहीं पड़ी। मैं अपने दवाके बक्समें रेपर्टरी और कुछ दवाएँ रखे रहना, क्विनाइन रखनेकी अपेक्षा उत्तम समझता हूँ। चीनीकी गोलियाँ सुरक्षित रूपसे, सदाके लिये और सरलतापूर्वक आरोग्य करती हैं, पर **क्विनाइन** कभी आरोग्य नहीं करता, बल्कि रोगको दबा देता है और **क्विनाइन** और **आर्सेनिक** सेवन किये हुए रोगीके बादके इतिहासमें जीवनभर रक्त-सञ्चय और तीव्रता ही मिलती है।

"रातमें हृत्पिण्डकी तकलीफ़के साथ, तुरन्त मृत्युका भीषण भय", वहाँसे यह सम्पूर्ण शरीर-विधानमें फैल जाता है, पर यह तुरन्त मृत्युका भय इसका एक निर्देशक स्वरूप है और हृत्पिण्डकी कोई बीमारी हुए बिना ही यह उत्पन्न हो जाता है। जब रोगीको कुछ नहीं होनेवाला रहता, उसी समय रातमें भयङ्कर भय, एक भयङ्कर रक्त-सञ्चय, जो खासकर लघु-मस्तिष्क और मेरुदण्डके ऊपरी भागपर आक्रमण करता है।

"अनैच्छिक स्रावोंके साथ तन्द्रा।" "बेहोशी, अचैतन्य।' "मुर्देकी तरह पड़ा रहता है।" ये लक्षण निम्न-श्रेणीके रोगोंमें, सान्निपातिक ढङ्गके रोगोंमें उत्पन्न होते हैं। बहुत से स्वल्प-विराम ज्वर, जिनका अच्छी तरह इलाज नहीं होता या बुरी सेवा-सुश्रूषाके कारण जो जारी रहते है, अविराम ज्वरमें परिवर्त्तित हो जाते हैं, कई सप्ताहोंतक क्रमश सुस्त होते रहने बाद सच्चा स्वत-सम्भूत टाइफायड उत्पन्न होता है, पर लाक्षणिक टाइफायड एकाएक उत्पन्न हो जा सकता है तथा साधारण टाइफायडसे इसके लक्षण जटिलतर हुआ करते हैं। स्वत सम्भूत टाइफायड शायद ही कभी किसीकी जान लेता है और आम-

तोरसे यह आराम हो जाता है, यदि चिकित्सक खयाल करता है। यह प्रलाप-पूर्ण निम्न-श्रेणीके ज्वरोंके प्रलापको दवा है, यहाँतक कि यदि कम्पनशील प्रलाप भी हो तो लाभ करती है। "निराशा, उदासीनता", "व्याधि-शङ्काके रूपकी चिन्ता, चिड़चिड़ापन।" "डरता है, कि जो उसकी ओर आ रहे हैं, वे मार देंगे।" यह शारीरिक और मानसिक दोनों ही है।

पर सम्पूर्ण रूपसे मनकी इस मानसिक अवस्थाके साथ, अब हम सार्वाङ्गिक शारीरिक अवस्थाको ग्रहण करनेके लिये तैयार होते हैं, जिसमें सभी रोगोंमें, समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह अनुभूति होती है। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि कुचल जानेमें आर्निकाका व्यवहार होता है, पर इसे बाहर लगाना और टिञ्चरकी तरह मालिश करना एक महान मूर्खता है। यह कुचले घावोंमें, अपने रोग-तलमें चित्ती चित्ती स्थान अवश्य उत्पन्न करता है। यदि आप बड़ी मात्राओंमें इसे खाये, तो आपके शरीरपर भी चित्ती-चित्ती दाग, नीले दाग पड़ जायँगे, जो छोटी कैशिकाओंमें रक्तप्लावन होकर, कालशिराकी वजहसे पीलापन लिये हो जाते हैं। ऐसा ही, बहुत-कुछ कुचले घावोंमें भी होता है। यह कैशिकाओंसे और बड़ी बड़ी रक्तवाहिनियोंसे रक्त निकलकर जमता है, पर रोगीके समूचे शरीरमें, उसे घाव और कुचल जानेकी तरह हो जाता है, मानो उसपर खूब मार पड़ी है। आर्निकाके रोगीको, यदि आप उसकी बाहरी अवस्था जाननेके लिये गौरसे देखेंगे, तो उसे आप करवट बदलते और हटते हुए पायेंगे। आप तुरन्त ही मन-ही-मन प्रश्न करेंगे, यह क्यों बेचैन हो रहा है? और यदि आप अपने मन-ही-मन दवाओंकी तुलना करें, तो आप कहेंगे, कि यह तो **रस्टक्स**की तरह है। एक स्थानपर वह कुछ ही क्षण रहता है और फिर हट जाता है। वह भले ही अर्द्धचेतन अवस्थामें क्यों न हो, आप उसे कुछ-न-कुछ करवट बदलते पायेंगे, थोड़ा-सा हो और फिर आगे, इसी तरह रोगी बराबर करता जायगा, जबतक वह दूसरी करवट न हो जायगा। इसके बाद वह फिर आरम्भ कर देता है, वह थोड़ा उठकर हटता है और इसी तरह वह एक करवटसे दूसरी करवट बदला करता है। अब सवाल तो यह पैदा हो जाता है, कि वह क्यों इस तरह सरका करता है, वह बेचैन क्यों है? यह बात हम करना बहुत आवश्यक है। **आर्सेनिक**के रोगोमें भी हम वह दर्दनाक **घबड़ाहट** देखते हैं, जो उसे बराबर इधर-से-उधर हटाया करती है। **रस्टक्स**के रोगोंमें

यह दर्द-भरी बेचैनी समूचे शरीरमें मालूम होती देखते हैं, जिससे कि वह शान्त नहीं रह सकता। आर्निकाके रोगीको घावकी तरह इतनी यन्त्रणा रहती है, कि कुछ देर ही वह एक अङ्गके बलपर लेटा रह सकता है। इसके बाद उसे दूसरी करवट होकर, उस अङ्गको हटाना ही पड़ता है। इसीलिये जब हम उससे पूछते हैं—"तुम इस तरह क्यों सरकते रहते हो?" तो वह कहता है, कि बिछावन कड़ा मालूम होता है। शरीर यन्त्रणा-पूर्ण है, यह कहनेका भी यह एक ढङ्ग है। कुछ अधिक बुद्धिमान रोगी कहेगा—"क्योंकि यह बहुत ज्यादा यन्त्रणासे भर रहा है और ऐसा मालूम होता है, मानो मैं कुचल गया हूँ या किसीने मुझे मारा है। इसीलिये मैं दूसरी जगहपर जाना चाहता हूँ।" यह लक्षणानुगत सान्निपातिक ज्वर (Symptomatic typhoid) हो, तो दर्दकी यह अवस्था मौजूद रह सकती है। सविराम ज्वर, स्वल्प-विराम ज्वर या किसी चोटके बाद, जिसमें रोगीका शरीर सब जगह वास्तवमें कुचल गया है, इनमें भी आपको वही लगातार बनी रहनेवाली बेचैनी, गति और मिनट-मिनटपर हटनेका लक्षण दिखाई देगा। वह हटता है और समझता है, कि अब उसे आराम मिलेगा, पर उसे आराम क्षणभरके लिये ही मिलता है। जितना ही ज्यादा वह लेटा रहता है, उतना ही उसका यह दर्द बढ़ता जाता है और इतना अधिक हो जाता है, कि उसे अपनी जगहसे हटना ही पड़ता है। **रसटक्स**का रोगी, जितना ही ज्यादा देरतक लेटा रहता है, उतनी ही ज्यादे उसकी बेचैनी बढ़ती जाती है और उतना ही अधिक उसको लगातार बना रहनेवाला दर्द होता है। अन्तमें उसे ऐसा अनुभव होता है, कि अगर वह न हटेगा, तो उड़ जायगा। **रसटक्स**में हटनेपर बेचैनी चली जाती है और आर्निकामें यन्त्रणा तब दूर होती है, यदि वह नयी जगहपर चला जाता है। **आर्सेनिकम**में अगर रोगीको हटते हुए देखते हैं और वह उन्मत्तकी तरह दिखाई देता है, तो वह घबड़ाया रहता है और यह घबड़ाहट ही उसे हटनेके लिये बाध्य करती है और उसे आराम नहीं मिलता, क्योंकि वह हटा ही करता है। **रसटक्स** और आर्निकाके रोगी प्रत्येक थोड़ी-सी गतिसे कुछ आराम पाते हैं।

आर्निकाके रोगीको सहजमें ही रक्त-स्राव होने लगता है, उसकी रक्त-वाहिनियाँ शिथिल मालूम होती हैं और भीतरकी ओर श्लैष्मिक-झिल्लीसे

सरलता-पूर्वक रक्त स्राव होता है। सरलता-पूर्वक नीले दाग पड जाते हैं और श्लैष्मिक-झिल्लीसे सरलता पूर्वक भीतरी रस स्राव होता है। प्रादाहित स्थानोंसे रक्त-स्राव होता है। उसे सर्दीको या श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी अवस्था भी हो सकती है और यदि उसे खांसी आती है, तो सहजमें ही रक्त आने लगता है। वक्षसे और कण्ठसे खखारकर जो बलगम निकाला जाता है, उसपर रक्तकी रेखा पड़ी रहती है अथवा आल्पीनके माथेकी तरह रक्त-बिन्दुके छींटे रहते हैं। उसके पेशाबमें भी खून रहता है और शरीरके कितने ही द्वारोंसे रक्त-स्राव होता है। रक्त वाहिनीके तन्तुओंमें इतनी काफी ताकत नहीं रहती, कि रक्तवाहिनी-प्राचीरमें ही रक्तको रोक रखे और वे चूती रहती हैं।

समूचे शरीरमें खञ्जता, यन्त्रणा और कुचल जानेकी तरह अनुभूति रहती है। एक वातज खञ्जता, सन्धियाँ फूली, यन्त्रणा-भरीं और खञ्ज रहती हैं। यदि कोई नयी बीमारी बहुत ही तीव्र हो जाती है, तो ऊपर लिखे मानसिक लक्षण प्राप्त होते हैं तथा पेशियोंमें बढ़ती हुई घावकी तरह यन्त्रणा हो जाती है। इस यन्त्रणा तथा शरीरके इस कुचल जानेकी तरहवाली अवस्थाकी आर्निका एक बहुत ही उपादेय औषधि है। इसीलिये चोट, कुचल जाना, सदमा, सन्धियोंकी चोट, खञ्जताके साथ पीठकी चोट और घावकी तरह यन्त्रणाकी बहुत ही आवश्यक दवा है। ऐसी अवस्थाओंकी आर्निका सबसे पहली दवा होती है और जबतक दूसरी किसी दवाके निश्चित लक्षण न मिले, तबतक यही पहली दवा रहनी भी चाहिये। किसी मोच खायी हुई एँड़ीके सब दर्द आर्निका अकसर निकाल देगा और हरेक मनुष्यको आश्चर्यमें डालता हुआ, कई दिनोंमें ही रोगीको इधर-उधर घूमने लायक बना देगा। मोच खायी हुई सन्धिकी नीली और काली शकल, आश्चर्य रूपसे थोड़े ही समयमें गायब हो जायगी, यन्त्रणा चली जायगी और वह उस सन्धिसे आश्चर्यमय सरलता-पूर्वक काम ले सकेगा। मैंने एक मोच खायी एँड़ी उस अवस्थामें देखी है, जब वह काली और नीली हो रही थी। वह इतनी फूली थी, कि जूते नहीं पहने जा सकते थे, पर आर्निकाकी एक खुराकके बाद, वह सूजन आश्चर्य-जनक-रूपसे गायब हो गयी। बदरङ्ग भी हलका पड गया और रोगी अपने पैरोंके बल खड़ा होने योग्य हो गया। आर्निका-मिला जल (Arnica lotion) बाहर लगानेसे ऐसा फायदा कभी नहीं दिखाई दे सकता। कुचल

जानेके घावोंमें आर्निकाकी ऊँची शक्तिसे बहुत फायदा होता है और जब कोई भी निश्चित विपरीत निदर्शन नहीं प्राप्त होते, तो आर्निका ही सर्व-प्रथम औषधि रहती है, पर ऐसी अवस्थाओंके बाद कण्डराओंमें जो एक कमजोरी आ जाती है, उसके लिये सदा आर्निका ही काफी नहीं होता उस समय **रसटक्स** ही उसकी बादकी स्वाभाविक दवा होती है। यदि सन्धियोंमें कमजोरी और स्पर्श-असहनीयता रह जाती है तो **रसटक्स**के बाद **कैल्केरिया** देना चाहिये। इसमें सन्देह नहीं, कोई एक ही दिन और एक ही गिलासमें ये सब दवाएँ न दे देगा, बल्कि **रसटक्स** देनेके पहले यह देखनेके लिये ठहरेगा, कि आर्निकाकी क्या क्रिया हुई। जखमी हो जाने बाद किसी अङ्गमें बराबर दर्द, अस्थिरता और कमजोरी आ जाना तो एक बहुत साधारण बात है। इस अवस्थामें **रसटक्स** ही उपयोगी दवा होती है। इसी तरह किसी कुचिकित्सित सन्धिका दर्द-भरी और कमजोर रहना बिलकुल ही स्वाभाविक है। इस समय **कैल्केरिया, रसटक्स**के बादके प्रयोगके लिये अत्यन्त उपयुक्त होता है। कभी-कभी रोगीके अद्भुत लक्षणोंके कारण हमलोगोंको **कास्टिकम, स्टैफिसेग्रिया** तथा दूसरी दवाओंपर भी ध्यान देना पड़ता है, पर इन सभी दवाओंका कुछ-न-कुछ सम्बन्ध आर्निका, **रसटक्स** और **कैल्केरिया**से है। दूसरे प्रकारके आघातोंके लिये **लीडम** और **हाइ-पेरिकम**की तुलना कीजिये।

कुछ पुरानी बीमारियोंमें भी आर्निका उपयोगी है, खासकर गठियाके पुराने रोगियोंमें। अत्यन्त अनुभवाधिक्यके साथ तथा सन्धिकी नयी यन्त्रणाओंके साथ किसी गठियाके पुराने रोगीका सोकर उठना, एक बिलकुल ही साधारण है। आप वृद्ध पितामहको घरके किसी कोनेमें बैठे देखेंगे और यदि छोटा बच्चा दौड़कर उनकी तरफ जाता है, तो वे कहेंगे—"ओह! दूर ही रहो, दूर रहो।" उन्हें एक खुराक आर्निका दे दीजिये, वे बच्चेको अपने ऊपर भी दौड़ने देंगे। वह नहीं चाहते कि कोई उन्हें छुए या उनके पास जाये, वे सोचते हैं, कि कोई भी चीज जो उनकी ओर आ रही है, उन्हें कुछ-न-कुछ चोट पहुँचायगी। उनमें बहुत ज्यादा अनुभवाधिक्य (Sensitiveness) रहता है, उनकी सन्धियाँ घावकी तरह और स्पर्श-असहिष्णु रहती हैं और वे डरते हैं, कि ये उन्हें चोट पहुँचायेंगे।

इस दवामें विसर्पकी तरह प्रदाह रहता है, यदि ऊपर वर्णन की हुई मानसिक दशाके साथ चेहरेका विसर्प रहे, साथ ही यन्त्रणा तथा समूचे शरीरमें घाव तथा कुचल जानेकी तरह अनुभूति हो, तो आर्निकाका प्रयोग करनेके पहले आपको कुछ ज्यादा सोचनेकी जरूरत नहीं है। समूचे शरीरमें यन्त्रणा और कुचल जानेकी तरह भाव तथा मानसिक अवस्था, किसी भी औषधिके विपक्षमें तथा आर्निकाके पक्षमें ही निर्णय देंगे। गुर्दा, मसाना तथा यकृतका प्रदाह, यहाँतक कि निमुमोनियामें भी, मानसिक अवस्था तथा दर्द, कुचल जानेकी तरह सारे शरीरमें दर्द, ऐसे रोगियोंमें आश्चर्यजनक कार्य दिखा देनेमें आपकी सहायता करेंगे। यद्यपि आर्निकाने कभी निमुमोनिया नहीं उत्पन्न किया है। जङ्गकी तरह बलगम निकलनेमें जो कुछ होता है,—इसमें वे सभी बातें हैं। वक्षका सभी तरहका जखमकी तरह दर्द, सर्दीकी अवस्था, खाँसी और बलगम, यन्त्रणा, समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्द। अब इन अवस्थाओंके साथ तन्द्रावाली दशा और किसी यन्त्रकी प्रादाहिक अवस्थाकी मानसिक अवस्था इससे सम्मिलित कर दीजिये, वही इस दवामें भी है। आर्निकापर निर्भर करनेके लिये हमलोगोंको किसी विशेष प्रकारके निदानकी सूक्ष्मतापर माथा लड़ानेकी जरूरत नहीं है।

गोश्त, शोरवा और दूधसे आर्निकाके रोगीको घृणा रहती है। विशेष-विशेष समयपर बहुत प्यास लगती है, उदाहरणार्थ,—सविराम ज्वरके जाड़ेके समय रोगीको तेज़ प्यास लगती है, पर दूसरे समय उसे बिलकुल ही प्यास नहीं रहती। "गहरे लाल थक्कोंकी कै, मुँहका स्वाद तीता, सार्वाङ्गिक यन्त्रणा" स्याहीकी तरह काले पदार्थकी कै।

सूजन, पेट फूलना, सुस्ती और अस्थिरताकी प्रवृत्तिके साथ तलपेट, यकृत और आँतोंकी प्रादाहिक अवस्थाकी एक लाभदायक दवा है तथा इतना दर्द रहता है, कि छुआ नहीं जाता। टाइफायडके साथ भी यह अवस्था उत्पन्न होती है, ऐपेण्डिसाइटिसमें भी आर्निकाके लक्षणोंको न भूल जाइये। यदि आप **ब्रायोनिया, रसटक्स, बेलेडोना,** आर्निका तथा अन्य सदृश दवाओंसे परिचित हैं तो ऐपेण्डिसाइटिस (उपाङ्ग प्रदाह) के हरेक रोगीके लिये आपको शस्त्र चिकित्सकके पास दौड़नेकी आवश्यकता नहीं है, होमियो-पैथिक दवाएँ इन रोगियोंको आरोग्य कर देंगी और यदि आप इसे जानते हैं, तो ऐपेण्डिसाइटिसके लिये शस्त्र-चिकित्सकके पास दौड़नेकी कभी

जरूरत नहीं पड़ेगी, सिवा इसके कि बीमारी बार-बार दोहराती हो। "यदि आप अपनी दवाओंको नहीं जानते, तो आप इस प्रचलित भावनामें ही डूबे रहेंगे, कि पेट फाड़कर, ऐपेण्डिक्सको (उपाङ्ग) निकाल बाहर करना ही आवश्यक है। यह तो एक निन्दनीय अज्ञान है, जिससे ऐपेण्डिसाइटिसको छुरीके हवाले कर देना पड़ता है।

बदबू आर्निकाका एक रूप है, डकार और निकली हुई अधोवायुमें बदबू रहती है। पाखाना भी बहुत बदबूदार होता है, "रातके समय पतले दस्त आते हैं", "नींदमें, अनजानमें पाखाना हो जाता है।" अनपचके दस्त, बदबूदार, खून-मिले, चिकने, आम, काला रक्त, बहुत बदबूदार मल। यहाँ हमें श्लैष्मिक-झिल्लीसे रस चूनेकी प्रवृत्ति दिखाई देती है। काली कैके साथ काले पानीकी तरह दस्त। 'परिश्रमसे पेशाबका रोध होना।" बहुत ज्यादा काम करनेके कारण, चोटके कारण, मस्तिष्कमें विकम्पनके कारण, कोई तेज़ दुर्घटनाके कारण, पेशाब भूरा या स्याहीकी तरह काला होता है। "गुर्देमें तेज़ वेधनेकी तरह दर्द, मानो गुर्देमें छुरियाँ घुसायी गई हैं।" बहुत ही अम्ल पेशाब, साथ ही आपेक्षिक गुरुत्व बढ़ा रहता है।"

गर्भवती स्त्रियोंमें आर्निकाका एक दूसरा स्वरूप प्रकट होता है। बहुत ही ज्यादा अनुभवाधिक्य, समूचे शरीरमें यन्त्रणा या स्पर्शका सहन न होना, यह खासकर उदर-यन्त्रोंमें, जरायुमें और वस्ति-गह्वर-प्रदेशमें अधिक अनुभव होता है। भ्रूणका हिलना-डोलना अधिक अनुभव होता है। यन्त्रणा, कुचल जानेकी तरह दर्द। भ्रूणका हिलना-डोलना बहुत ही कष्टदायक होता है और उसे रातभर जगाये रखता है। आर्निका इस यन्त्रणाको दूर कर देगा और उसे भ्रूणका हिलना-डोलना न मालूम होगा। यह भ्रूणकी बढ़ी हुई गति नहीं है, बल्कि उसे इसका अनुभव ही बहुत ज्यादा होता है। "प्रसवके बाद लगातार पेशाब बूंद-बूंद टपकते रहना।"

इस बीमारीका एक साधारण रूप यह भी है, कि सारा शरीर ठण्डा और माथा गरम रहता है, समूचा शरीर और हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं, पर सर गर्म मालूम होता है। रक्त-सञ्चय-जनित शीत और रक्त-सञ्चय-पूर्ण सविराम ज्वरमें एकाएक जो रक्त सञ्चयका आक्रमण होता है, उसकी यह प्रत्यक्ष अवस्था रहती है। कभी-कभी तो वह भयङ्कर आक्रमण इससे आरम्भ होता है, जब कि और किसी तरहकी सतर्क करनेवाली सूचना, सिवा इसके नहीं

मिलती कि एक या दो रातोंमें बुरे स्वप्न दीखते हैं, कुछ कष्ट होता है, डर मालूम होता है, शरीरमें यन्त्रणाके साथ कुछ बेहोशी-सी आती है। यदि यह इससे बच जाता है, तो शरीरमें बढ़ी हुई यन्त्रणा आती है, जो बराबर बदतर-से-बदतर होती जाती है, जबतक कि यह दर्द-भरा और कुचलेकी तरह नहीं हो जाता। बच्चोंको जो तेज़ बोखार हो जाता है और अकड़नकी सम्भावना हो जाती है, उसमें माथा गर्म और शरीर ठण्ढा रहता है। इस समय कितने ही चिकित्सकोंका ध्यान बेलेडोनापर जायगा, क्योंकि इसमें भी इसी तरह हाथ पैर ठण्ढे तथा माथा गर्म रहता है। आर्निकाको न भूलिये। खासकर उनके लिये जो छूना पसन्द नहीं करते और जब-जब माता उनके हाथ-पैर पकड़ती है, तभी तभी चिल्लाने लगते हैं। उनके इतिहासपर जरा ध्यान दीजिये और आप देखेंगे कि यह घावकी तरह एक यन्त्रणा है और यदि आप बच्चेको नङ्गाकर देखेंगे तो आपको उनके शरीरपर धुमैले दाग दिखाई देंगे, जो आर्निकाके एक अन्य निर्देशक लक्षण हैं।

यह हूपिङ्ग खाँसीको भी एक दवा है, हूपिङ्ग खाँसीके क्या निर्देशक लक्षण हैं, उन्हें आप आसानीसे संग्रह कर सकते हैं। छूनेपर रोगका बढ़ना, घावकी तरह यन्त्रणा और कुचल जानेवाली अवस्था, आक्षेपिक खाँसी, जिसके साथ खून आता है या गहरे रङ्गकी रक्तकी रेखा पड़ा बलगम अथवा छोटे-छोटे आल्पीनकी नोककी तरह समस्त बलगममें दाग। काले श्लेष्माके साथ खायी हुई चीजोंका कै। बच्चेकी मानसिक अवस्थाका सहजमें ही अनुमान लगाया जा सकता है। बच्चा जिद्दी और चिड़चिड़ा हो जाता है क्रोध तथा चिड़-चिड़ापनके साथ बच्चोंके रोनेसे खाँसीका बढ़ना। "रातमें खाँसीका दौरा होना।" "कुकुर खाँसी (हूपिङ्ग खाँसी), खाँसीका दौरा होनेके पहले बच्चा रोता है, मानो यन्त्रणासे डर रहा हो।" इसमें होनेवाली बहुत-सी बीमारियोंमें, जो कुछ इस दवाके सम्बन्धमें आपने देखा है, उसीका इसमें प्रयोग कर सकते हैं। हृप खाँसीमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द वक्षकी सर्दीके साथ वक्षावरक-झिल्ली प्रदाहवाला दर्द अथवा नियुमोनिया (फुसफुस-प्रदाह) या प्लुरिसी (वक्षावरक-झिल्ली-प्रदाह) के साथ डङ्क मारनेकी तरह दर्द, प्रादाहिक अवस्था। इसमें बहुत-सी "झड़ानेवाली बीमारियाँ हैं—"हृदपिण्डका मेदापकर्ष (Fatty degeneration of the heart)," हृदपिण्डकी जगहपर सुई गड़नेकी तरह दर्द, दाहिनेसे बायीं ओर सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है। "आन्त,

बहुत ज्यादा मात्रामें देर-देरसे पानी पीनेकी प्यास रहती हैं, पर आर्सेनिकमें थोड़ी मात्रामें जल्दी-जल्दी तृप्त न होनेवाली प्यास बनी रहती है।

"मृत्यु और रोग आरोग्य न होनेकी धारणा।" उसपर विचारोंका झुण्ड इकट्ठा हो जाता है, वह उन्हें हटा नहीं सकता या एक विचारमें नहीं उलझा रह सकता।" अर्थात वह दिन रात कमजोर करनेवाला विचार तथा कष्टप्रद चिन्ताओंसे क्षत-विक्षत हुआ पलङ्गपर पड़ा रहता है। उसकी घबड़ाहटका यह एक रूप हुआ, जब विचारोंसे वह तकलीफ़ पाता रहता है, तो वह घबड़ाता है, प्रलापावस्थामें वह सब तरहके कीट-पतङ्ग पलङ्गपर देखता है। "बिछावन नोचता है", 'नींदके समय प्रलाप, अचेतन उन्माद।" 'बुदबुदाता है और दाँत कड़मड़ाता है।" "जोरसे कराहता है, गोंगियाता और रोता है।" "परिताप करता है और जीवनसे निराश रहता है," "दर्दसे चीखता, चिल्लाता है।" "भयसे वह पलङ्गसे भागता है और निर्जन स्थानमें छिपता है।" यह उस उन्मादके उदाहरण हैं, जो पहले घबड़ाहट, बेचैनी और भयकी अवस्था ग्रहण करता है। इस विचारके साथ कि धर्मोन्मादको रोगिनीने अपना सुअवसर पापमें बिता दिया। अब मुक्तिका आश्वासन उसपर लागू नहीं हो सकता, अब उसके लिये कोई उपाय नहीं है, उसे अवश्य ही सजा भोगनी होगी। तबतक वह धर्म-सम्बन्धी बातें सोचती रहती है, जबतक उन्मत्त नहीं हो उठती। अन्तमें परिपूर्ण पागलोंकी अवस्थामें, एक शान्तिकी अवस्थामें जा पहुँचती है, चुप हो जाती है, बोलनेकी इच्छा नहीं होती। इस तरह यह देखनेमें आता है, कि एक दशा दूसरीमें परिवर्त्तित होती है। हमलोगोंको सम्पूर्ण रोगोंपर एक साथ ही विचार करना पड़ता है। उसे स्पष्ट रूपसे समझनेके लिये यह लिख लेना पड़ता है, कि रोगने कैसी-कैसी राह ग्रहण की है और यह भी लिख लेना पड़ता है, कि एक अवस्थामें क्या लक्षण थे और दूसरीमें क्या हुए। उदाहरणार्थ—आर्सेनिककी बीमारीकी नयी अवस्थामें तो बरफकी तरह ठण्डे पानीकी प्यास रहती है या केवल कण्ठ तर रखनेके लिये थोड़े पानीकी या ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी प्यास रहती है और इतनेपर भी प्यास नहीं बुझती, पर यह प्यासवाली अवस्था उस दूसरी दशामें परिवर्त्तित हो जाती है, जिसमें पानीसे घृणा रहती है और इसीलिये ऐसा देखनेमें आता है, कि पुरानी बीमारियोंका आर्सेनिकका रोगी पिपासा-रहित होता है। यह अवस्था पागलपनके रोगीकी भी रहती है;

पुरानी अवस्थामें वह शान्त रहता है, पर आरम्भिक अवस्थामें, आर्सेनिकका रोगी होनेके लिये, उसे आर्सेनिककी बेचैनी, घबडाहट और भय होना ही चाहिये।

भय मानसिक अवस्थाका एक सुदृढ लक्षण है। अकेले रहनेका भय, डरता है, कि अकेलेमें रहनेपर कोई उसे आघात पहुँचायगा, भयङ्कर भयसे डरा रहता है। वह एकान्तसे डरता है और किसीके साथ रहना चाहता है, क्योंकि साथमें रहनेपर वह बातें कर, भयको भगाये रह सकता है, पर ज्यों-ज्यों यह उन्माद बढता जाता है, वह किसीका साथ नापसन्द करता जाता है और इतनेपर भी भय उसे मालूम होता ही है। अन्धेरेमें उसे बहुत ज्यादा भय और आशङ्का होती है और शामको ज्यों ज्यो अन्धेरा बढता जाता है, त्यो-त्यों उसे कितने ही उपसर्ग पैदा होते जाते हैं। किसी बँधे समयपर कितने ही मानसिक और शारीरिक उपसर्ग उत्पन्न होते हैं। यद्यपि कुछ दर्द तथा यन्त्रणाएँ सवेरेके वक्त बढी रहती है, पर आर्सेनिकमकी बहुत-सी तकलीफे दोपहर—१ से २ बजे तथा रातके १ से २ बजेतक बढकर बदतर हो जाती है। आधी रातके बाद, कभी कभी तो आधी रातके बाद तुरन्त ही इसकी बीमारियाँ आरम्भ होती है तथा १ से २ बजेके बीचमे बहुत ज्यादा बढ जाती हैं। शामको बिछावनपर रहनेपर अत्यधिक घबडाहट रहती है।

"परिचित व्यक्तियोंसे मिलने-जुलनेसे घृणा, क्योंकि वह सोचता है, कि उसने पहलेसे ही उन्हें नाराज़ कर रखा है।' बहुत अधिक मानसिक अवसन्नता, बहुत ज्यादा उदासी, उदासीन, निराश, अपने आरोग्यसे निराश। जब अकेला रहता है, तब अथवा सोनेको जानेके समय, घबडाहट और बेचैनीके साथ उसे मृत्यु-भय मालूम होता है। वह सोचता है, कि वह मर जायगा, इसीलिये कोई साथी चाहता है। घबडाहटके मारे रातमे वह पलङ्गसे उतर पडता है। यह वह घबडाहट है, जो हृत्पिण्डपर आक्रमण करती है और इसीलिये मानसिक घबडाहट और हार्दिकी घबडाहट करीब करीब मिलती-जुलती दिखाई देती है। उसे रातमे एकाएक घबडाहट-भरा भय मालूम होने लगता है। वह इस भयसे पलङ्गसे कूद पडता है, कि वह मरना ही चाहता है या उसका दम घुट जाना चाहता है। यह दवा श्वास-कष्ट, हार्दिक श्वास-कष्ट और बहुत तरहके दमाके दौरासे भरी है। इसका दौरा शामको पलङ्गपर रहनेपर या आधी रातके बाद होता है, रातके १ से २ बजेतक उसपर मानसिक

चिन्ता, श्वास-कष्ट, मृत्यु-भय और ठण्डापनका दौरा होता है और वह ठण्डे पसीनेसे भर जाता है। "हत्या करनेवालेकी तरह घबड़ाहट।" यह उसकी घबड़ाहटका एक रूप है। अन्तमें वह इस विचारमें उलझ जाता है कि पुलिसके अफसर आ रहे हैं और उन्हें घूर-घूरकर देखता है, कि वे उसे गिरफ्तार करने तो नहीं आ रहे हैं। कुछ अस्वाभाविक दुर्घटना उसपर घटा चाहती है, हमेशा यही देखता रहता है, कि कुछ भयानक घटना होनेवाली है।" 'चिड़चिड़ा, साहसहीन और बेचैन" बेचैनी, कहीं भी आराम नहीं मिलता।" 'भयके कारण, आत्महत्याकी प्रवृत्ति।"

इस मानसिक अवस्थाके साथ आर्सेनिकका रोगी **हमेशा ठण्डा या गलता** रहता है (always freezing), आगके चारों ओर घूमता है, इतना कपड़ा प्राप्त ही नहीं कर सकता, कि गरमा सके। सर्दीसे एक अजीब कष्ट पानेवाला आर्सेनिकका पुराना रोगी गरमा नहीं सकता, उसे हमेशा जाड़ा लगा करता है, पीला और मोमकी तरह रहता है और ऐसे पुराने रोगीको, कमजोरीके कई दौरे होनेके बाद शोथवाली अवस्था उत्पन्न हो जाती है। आर्सेनिकम सूजन और शोथसे भरा है, हाथ-पैरोंको शोथ-ग्रस्त अवस्था, रुद्ध-प्रणाली या गह्वरों (Cavities) का शोथ, आँखके पासका शोथ, चेहरेकी सूजन, जिसमें दबानेपर गड्ढा पड़ता है। इस तरहकी सूजनमें, ऊपरी पलककी अपेक्षा निचली पलककी सूजनमें आर्सेनिक विशेष उपयोगी होता है, पर **कैलि-कार्ब**में निचली पलककी अपेक्षा ऊपरी पलकमें ज्यादा सूजन होती है, भौंवें और पलकोंके बीचमें सूजन होती है। ऐसा भी अवसर आता है, जब **कैलि-कार्ब** आर्सेनिकके बहुत सदृश मालूम होता है और ऐसे ही बहुत ही सूक्ष्म लक्षणों द्वारा इनका प्रभेद किया जा सकता है। यदि सार्वाङ्गिक लक्षणोंमें ये दोनों ही एक साथ रहें, तो हमें इनकी खास विचित्रताओंपर ध्यान देना चाहिये।

आर्सेनिकमके **सर-दर्द**का एक आश्चर्यप्रद साधारण स्वरूप, बँधे समयपर उत्पन्न होनेमें प्रकट होता है। इस दवापर सम्पूर्ण-रूपसे विचार करनेपर हर जगह इसमें **सामयिकता** (Periodicity) दिखाई देती है और इसी वजहसे मलेरिया-जनित रोगोंमें यह ज्यादा फायदा करता है, क्योंकि उनकी चरित्रगत प्रकृतिमें सामयिकता रहती है। आर्सेनिककी सामयिक बीमारियाँ

एक दिन नागा देकर, चौथे दिन या प्रत्येक सातवें दिन या दो सप्ताहोंपर पैदा होती हैं। सर-दर्द भी इसी तरह सामयिक रूपसे, एक दिन नागा देकर या तीसरे, चौथे, सातवें और चौदहवें दिन होता है। जितनी ही पुरानी बीमारी रहती है, उतना ही लम्बा इसका फेरा होता है। इस तरह हम देखेंगे, कि वे ज्यादा नवीन और तेज़ बीमारियाँ, जिनमें आर्सेनिक उपयोगी होता है प्रत्येक दूसरे दिन बढ़ेंगी या चौथे दिन उनको वृद्धि होगी, पर ज्यों-ज्यों बीमारी पुरानी और बद्धमूल होती जाती है, त्यों-त्यों सातवें दिन उसकी रोग-वृद्धि होती है तथा सोराके पुराने लँभड़ानेवाले और बद्धमूल प्रकारके प्रदर्शनोंमें चौदहवें दिन रोग वृद्धि होती है। नागा देकर इस तरह रोग-वृद्धिका लक्षण यद्यपि बहुत-सी दवाओंमें है, पर यह खासकर **चायना** और आर्सेनिकममें विशेष दिखाई देता है। बहुत से विषयोंमें ये दवाएँ आपसमें सदृश हैं तथा मलेरिया-सम्बन्धी प्रदर्शनोंके सार्वाङ्गिक स्वरूप भी उनके बहुत-कुछ सदृश हो होते हैं। यह सत्य है, कि **चायना** आर्सेनिकको अपेक्षा अधिक व्यवहृत होता है। मलेरिया ज्वरके प्रत्येक बहुव्यापक रूपमें, जिससे मुझे काम पड़ा है, **चायना**की अपेक्षा आर्सेनिकमके लक्षण अधिक प्रकट होते हुए मुझे दिखाई दिये हैं।

हमने ऊपर जो बातें बतायी हैं वे बातें इसके सर-दर्दमें बहुत मिलती हैं। आर्सेनिकको प्रकृतिमें **अवस्था पर्यायक्रमसे** पैदा होनेका लक्षण है और इसके साथ ही कितने ही साधारण लक्षण रहते हैं। समस्त शारीरिक रोगोंमें आर्सेनिक एक शीतलताकी दवा है। रोगी आगके पास बैठ जाता है और काँपता है, बहुत-से कपड़े पहने रहना चाहता है और गर्म कमरेमें रहना चाहता है। जबतक रोग शरीरमें रहता है, यही अवस्था रहती है, पर जब रोग माथेमें पहुँच जाता है, तो शरीर तो गर्म रखना चाहता है, पर माथा ठण्डे पानीसे धोना चाहता है या सरपर खुली हवा लगाना चाहता है। माथेकी बीमारियोंमें, माथेके साधारण लक्षण रहने चाहिये और शरीरकी बीमारियोंमें, शरीरमें लागू होनेवाले साधारण लक्षण होने चाहिये। यह कहना कठिन है, कि इन दोनोंमेंसे कौन सी परिस्थिति सबसे अधिक साधारण है और कभी-कभी यह कहना कठिन होता है, कि रोगीके लिये इन दोनोंमेंसे कौन-सा साधारण है, क्योंकि वह यह कहकर आपको चक्कर बना देता है, कि—"मेरी बीमारी सर्दीसे बढ़ जाती है," पर जब उसके सरमें दर्द होता

है, तो वह कहता है—"मैं ठण्डेमें अच्छा रहता हूँ, मैं ठण्डेमें रहना चाहता हूँ।" यह वास्तवमें केवल सरका लक्षण है, आपको इन्हें छाँटकर अलग करना होगा और रोगवाले अंशके हिसाबसे अध्ययन करना होगा। जब ऐसी अद्भुत बातें हों, तो आपको यह देखनेके लिये, उनकी परीक्षा जरूर करनी चाहिये, कि किस कारणसे यह आकार तैयार हुआ है। **फास्फोरसमें** भी आपको ऐसी ही अवस्था रहती दिखाई देगी, पाकाशय तथा सरकी बीमारियाँ ठण्डेसे अच्छी रहती हैं अर्थात सरकी बीमारीमें इसका रोगी माथेपर ठण्डी चीजें लगाना चाहता है तथा पाकाशयकी बीमारीमें ठण्डी चीजें खाना चाहता है, पर उसमें शरीरके सभी उपसर्ग तापसे घटते हैं। यदि वह ठण्डी हवामें चला जाता है, तो छातीकी कोई बीमारी रहनेपर खाँसने लगेगा। इसीलिये, हमें मालूम होता है, कि रोगवाले स्थानके आकारगत लक्षणोंको भी अवश्य ही सम्मिलित कर लेना चाहिये। उदाहरणार्थ, मान लीजिये कि आपका कोई स्नायु-शूल या वातका रोगी है और उसका यह दर्द सरतक चला जाता है, जिससे वह सरको कपड़ेसे लपेट रखना चाहता है, क्योंकि दर्द गर्मीसे घटता है। पर यह दर्द जब रक्त-सञ्चयवाली अवस्थावालोंको होता है, तब माथा खूब ठण्डा रहनेपर वह अच्छा रहता है। अब जैसा मैंने कहा है, आर्सेनिकममें अवस्थाएँ पर्यायक्रमसे उत्पन्न होती हैं। एक रोगीका हवाला देकर मैं इसको स्पष्ट करूँगा। एक बार एक रोगीको समय बाँधकर वमनके साथ सर-दर्द होता था। सम्भवत. यह सर-दर्द ठण्डे पानीसे, माथेमें ठण्डी चीजोंके लगानेसे अच्छा रहता था। वह इसे भरपूर ठण्डा कर ही न सकता था, जितना ही ठण्डा करवाता था, उतना ही अच्छा रहता था। यह सर-दर्द हरेक दो हफ्तोंपर होता था और जबतक दर्द रहता था, वह माथेपर ठण्डा प्रयोग करना चाहता था। इसके बाद यह सामयिक दर्द अच्छा रहता था, बहुत दिनोंतक वह अच्छा रहता, पर उस समय उसे सन्धियोंमें वातका दर्द हो जाता था। वह भी समय बाँधकर होता था तथा कुछ-न-कुछ एक ही ढङ्गका होता था और जब सन्धियों और हाथ-पैरोंकी कुछ सूजन और शोथके साथ यह बात मौजूद रहता था, तो उसे काफी गर्मी नहीं मिलती थी। वह आगके पास बैठा रहता और कपड़ा लपेटे रहता था। उसे गर्मीसे आराम मिलता था और गर्म हवा तथा गर्म कमरा चाहता था। यह कुछ दिनोंतक रहता और फिर दब जाता था, फिर वमनके

साथ सर-दर्द पैदा हो जाता था और वह कुछ समयतक रहता था। पर्यायक्रमसे अवस्थाके बदलनेसे मेरा यही मतलब है। आर्सेनिकमने इस मनुष्यको अच्छा कर दिया और फिर वह रोग इसे कभी न हुआ। पर्यायक्रमसे अवस्था बदलनेका कभी कभी यह भी मतलब होता है, कि शरीरमें दो बीमारियाँ हैं और कभी-कभी पर्यायक्रमसे दशा बदलनेका समूचा ढङ्ग ही दवा बदल देती है। एक दूसरा रोगी भी मुझे याद है, जो इस अद्भुत पर्यायक्रमी उपसर्गोंके आनेका अच्छा उदाहरण है और जिसमें आर्सेनिकके अतिरिक्त अन्य औषधिकी जरूरत पड़ी थी। एक रोगिनीको माथेकी चांदीमें दबाव मालूम होनेकी वैसी ही बीमारी थी, जैसा कि मैं ऐल्यूमेनमें आपको बता चुका हूँ। यहाँतक उसे इसी तरह सरकी चांदीपर दबावकी तकलीफ़ भोगनी पड़ती थी। यदि उसे कुछ आराम मिलता था, तो खूब जोरसे उस स्थानको दबानेसे, जोरसे दबाते दबाते वह क्लान्त हो पड़ी थी और सब तरहका भार अपने माथेपर रख लेती थी। यह रातमें अच्छा हो जाता था और दूसरे दिन सवेरे जब वह सोकर उठती तो बार-बार पेशाबका वेग होता था। एक बार मूत्राशयमें उपदाह होता था, एक बार माथेकी चांदीमें दर्द, इसी तरह पर्यायक्रमसे होता था। ऐल्यूमेनने उसे आरोग्य कर दिया। बहुत-सी सोरा नाशक दवाएँ भी, इसी तरह पर्यायक्रमसे लक्षण बदला करते हैं। इस उदाहरणसे यह मालूम होता है, कि पूरी तरह आरोग्य करनेके लिये जो कुछ लक्षण प्रकट हों, उन सब लक्षणोंको ग्रहण करनेकी जरूरत है, नहीं तो सोराकी प्रकृतिकी पुरानी बीमारियोंको आप बहुत बार ऐसी दवा देंगे, जिससे उसे स्थायी रूपसे आरोग्य न कर सकेंगे, फिर उसका दूसरा रूप आपके सामने आ जायगा। यदि आप उसे छोड़ देंगे, तो बीमारी और भी तेजीसे बढ़ेगी, यह होमियोपैथिक ढङ्गसे दवाका चुनाव नहीं है। जब कोई दवा एक प्रकारकी अवस्था उत्पन्न करती है, तो निश्चय कर लीजिये, कि दूसरी दशामें भी यह उतनी ही ठीक है, नहीं तो वह दवा सदृश गुण-सम्पन्न नहीं है। आपको तबतक खोजना चाहिये जबतक आपको ऐसी दवा न मिल जाये, जिसमें दोनों ही अवस्थाएँ हों, नहीं तो आपको निराश होना पड़ेगा। जबतक हमलोग दो तीन बार गलत दवा नहीं दे लेते, तबतक हमलोगोंको इस पर्यायक्रमसे पैदा होनेवाली अवस्थाका कभी-कभी पता ही नहीं लगता। कितने ही मनुष्य इतने चुप्पे और मौनी होते हैं और उनमें लक्षणोंका

संग्रह करना इतना कठिन होता है, कि सदा ये सब लक्षण प्राप्त नहीं होते, पर आपने जो उनका इतिहास लिख रखा है, उसकी परीक्षा कीजिये और पता लगाइये कि आपने दवा देनेमें कहाँ भूल की है, जिससे आपने नयी पैदा हुई अवस्थाको तो हटा दिया है, पर पहलेवाली तकलीफ़ फिरसे लौट आयी है और आप केवल देखे-सुने कारबारमें हैं। आप याद रखें, कि ऐसा करनेके कारण आपका रोगी उन्नति नहीं कर रहा है और फिरसे आपको सम्पूर्ण रोगका अध्ययन करना चाहिये, जिसमें पर्यायक्रमसे पैदा होनेवाले उपसर्ग भी शामिल कर लेने चाहियें। आर्सेनिकमें मस्तक और शरीरके लक्षण पर्यायक्रमसे उत्पन्न होते है। कितनी ही अन्य दवाओंमें आप देखेंगे, कि यह उनकी प्रकृतिका एक अङ्ग है, कि मानसिक लक्षण और शारीरिक लक्षण पर्यायक्रमसे उत्पन्न होते है। जब शारीरिक लक्षण वर्त्तमान रहते हैं, तब मानसिक लक्षण प्रत्यक्ष नहीं रहते, निश्चय ही सभी अवस्थाओंके लक्षण ग्रहण करना, बहुत बढ़िया बात है, पर कभी-कभी आपको ठीक दवा नहीं मिलती, क्योंकि हमारी कितनी ही दवाओंका पूरा पूरा इतिहास तैयार नहीं हुआ है। अभीतक उनकी पर्यायक्रमसे उत्पन्न होनेवाली अवस्थाओंपर ध्यान नहीं दिया गया है। पोडोफाइलममें यह अद्भुत लक्षण मिलता है, कि सर-दर्द और पतले दस्त पर्यायक्रमसे आते हैं। रोगीको वमनके साथ सर-दर्द और अतिसार रहता है। इनमें एक या दूसरा तैयार ही रहता है। आर्निकामें मानसिक लक्षण पर्यायक्रमसे जरायुके लक्षणमें परिवर्त्तित होते हैं। जब ध्यान दिया जाता है, तो जरायुके लक्षण आर्निकाकी तरह मालूम होते हैं, पर रातभरमें ही वे लक्षण गायब हो जाते हैं और मानसिक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। मन भारी, उदास और मेघाच्छन्न-सा हो जाता है। जब हमें ऐसी दवाएँ प्राप्त हैं, जिनमें ऐसे दिखावे हैं तो अवस्थाओंका पर्यायक्रमसे उत्पन्न होना देखनेके लिये बहुत ही गहरी दृष्टिकी जरूरत है, क्योंकि ये चीजें सदा परीक्षा-कालमें प्रकट नहीं होती हैं, क्योंकि एक परीक्षकमें एक प्रकारके लक्षण उत्पन्न होते हैं और दूसरेमें दूसरे। इतनेपर भी जो दवाएँ दो प्रकारके लक्षण-स्वरूप उत्पन्न कर सकती हैं, वे पर्यायक्रमसे उत्पन्न होनेवाली अवस्थाकी भरपूर आरोग्य कर सकती हैं।

आर्सेनिकका समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द माथेके सभी भागोंमें होता है। यह रक्त-सञ्चय-जनित सर-दर्द है, जिसमें घबड़ाहट और बेचैनीके

साथ टपक और जलन होती है, माथा गर्म रहता है और शीतल प्रयोगसे आराम मिलता है। ललाटमें सर-दर्द होता है, यह टपककी तरह होता है, रोशनीसे बढ जाता है तथा चलने-फिरनेसे बहुत ही तेज़ हो जाता है, इसमें अकसर बहुत बेचैनी रहती है, जिससे बाध्य होकर रोगीको इधर-उधर हटना पडता है, साथ ही बहुत घबडाहट रहती है, अधिकांश सर-दर्दके साथ मिचली और वमन भी होता है। वमनके साथवाला सर-दर्द तो सबसे बदतर ढङ्गका होता है। खासकर वह जो दो सप्ताहके अन्तरसे होता है। कुछ वृद्ध भग्न स्वास्थ्य प्रकृतिवालोंमें आप देखेंगे, कि वे काहिल, चीण रोगियल रहते हैं, सर-दर्द रहनेवाली अवस्थाके अलावा वे हमेशा शीतकातर और ठिठुरे रहते हैं, सर दर्दके समय ठण्डे प्रयोगसे वे अच्छे रहते हैं। चेहरा झुर्रियोंसे बहुत भरा रहता है, बहुत घबडाहट रहती है और पानी पीनेकी इच्छा नहीं होती। याद कीजिये, यह कहा गया था, कि आर्सेनिकको बीमारीकी नयी अवस्थामें प्यास रहती है। थोडे और बार-बार पानी पीनेकी प्यास, मुँह सूखा और केवल ओंठ तर करनेके लिये पानी पीनेकी अभिलाषा, पर आर्सेनिकके रोगीको पुरानी अवस्थामें साधारणत प्यास नहीं रहती। ठण्डे सरके एक पार्श्वमें खोपडीतक दर्द होता है, आधा माथा दर्द करता है, हिलने-डोलनेसे दर्द बढता है, ठण्डे से धोनेपर अच्छा रहता है और हवामें घूमनेपर आराम मिलता है। यद्यपि अकसर झटका लगने या चलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो दर्दकी एक लहर आ गयी, हिलना, स्पन्दन या मस्तिष्कका ढीलापन मालूम होता है ऐसी ही टपककी अवस्थाकी अनुभूति होती है। इसके बाद आँखके ऊपरका भयङ्कर सर-दर्द होता है, यह इतना तेज़ होता है, कि रोगी चकरा जाता है और हतबुद्धि हो पडता है। यह आधी रातके बाद उत्तेजनासे या परिश्रमसे होता है, चलनेके कारण गर्म हो जानेपर होता है, जिससे माथेपर खूनका दबाव हो जाता है। दूरकी सामयिकता तथा बहुत से उपसर्गों मे **नेट्रम-म्यूर** इसके सदृश दवा है। इसमें भी चलने और गर्म हो जानेपर रक्त-सञ्चयी सर दर्द पैदा हो जाता है खासकर जब धूपमें चलना पडता है। आर्सेनिकमका सर-दर्द रोशनी और शोर-गुलसे बढ जाता है, अन्धेरे कमरेमें, दो तकियोंपर सर रखकर पडे रहनेपर अच्छा रहता है। कितने ही सर-दर्द तीसरे पहर १ बजेसे ३ बजेके बीचमें और दोपहरके भोजनके बाद पैदा हो जाते हैं ये तीसरे पहर बेतरह बढ

जाते हैं और रातभर बने रहते हैं। अकसर इनके साथ बहुत पीलापन, मिचली, सुस्ती और मृत्युकी तरह कमजोरी शामिल रहती है। दर्द आक्षेपिक ढङ्गका होता है। सविराम ज्वरके शीतके समय तेज़ सर-दर्द, सविराम ज्वरके समय ऐसा सर-दर्द, मानो खोपड़ी फट जायगी। स्वल्प-विराम ज्वरमें आर्सेनिकके रोगीको इस ढङ्गका सर-दर्द होता है, मानो माथा फट जायगा। इसकी प्यासका भी यह एक विचित्र रूप है, कि जाड़ेके समय गर्म पानीके सिवा और किसी तरहकी प्यास नहीं रहती, तापके समय प्यास, थोड़े और बार-बार पानी पीनेकी प्यास रहती है अर्थात् मुँह तर हो जाये, यह करीब-करीब प्यास न रहनेके समय और जिस समय पसीना होता है, उस समय ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी प्यास रहती है। ताप आरम्भ होनेके साथ-ही-साथ प्यास आरम्भ होती है और ज्यों-ज्यों मुँहका सूखापन बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों प्यास बढ़ती जाती है। वह तबतक केवल मुँह तर किये रखना चाहता है, जबतक पसीना नहीं आरम्भ हो जाता और तबतक बहुत ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी प्यास लगती है। उसे जितना ही ज्यादा पसीना होता है, उतनी ही ज्यादा पानी पीनेकी इच्छा होती है। शीतके समय ही सर-दर्द भी होता है, यह बढ़ता है, यहाँतक कि यह रक्त-सञ्चय-जनित सर-दर्द हो जाता है। ताप और शीतके समय टपककी तरह सर-दर्द, तापके अन्त-कालमें जब पसीना होना आरम्भ हो जाता है तब यह अच्छा होने लगता है और पसीना होनेपर उपशम हो जाता है।

पुराना सर-दर्द, रक्त-सञ्चय-जनित सर-दर्द तथा मलेरिया-जनित उपसर्गों में शरीरपर **सिकुड़न होनेकी प्रवृत्ति** दिखाई देती है। असमयमें ही दुर्बल-प्राप्त झुर्रीभरी शरीरकी त्वचाकी अवस्था हो जाती है। ओठोंकी और मुँहकी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ अकसर कुञ्चित हो जाती हैं और झुर्रियोंकी तरह बन जाती हैं। आर्सेनिकके अद्भुत लक्षणोंमें कण्ठकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी भी डिफ्थेरियामें यही अवस्था हो जाती है। जहाँतक मैं जानता हूँ, ऐसा किसी भी दूसरी दवामें नहीं होता। कण्ठका रस-स्राव भी चमड़ेकी तरह तथा कुञ्चित रहता है। केवल कुञ्चित झिल्ली ही आर्सेनिकका निर्देशक लक्षण नहीं होती, पर जब आर्सेनिकका निर्देश होता है, तो आपको इस तरहकी झिल्ली प्राप्त हो सकती है। ऐसे रोगी जिनकी बीमारी बहुत ही सांघातिक प्रकृतिकी होती है, उन्हें बहुत बदबू निकलती है। सड़े तथा जिनमें सड़नेवाली गन्ध आती है।

जब शरीरमें बीमारी रहती है, तो समय-समयपर सर बराबर हिला करता है, क्योंकि शरीरके कितने ही भागोंमें इतना दर्द रहता है, कि उन्हें हिलाया नहीं जा सकता। इसके अलावा बेचैनी और अस्थिरताके कारण भी सर हिला करता है और उसमें तकलीफ न घटनेपर भी रोगी माथा हिलाया ही करता है। चेहरा और माथेमें शोथ हो जा सकता है, खोपड़ीका शोथ और चेहरे तथा माथेमें विसर्पके आकारका प्रदाह, खोपड़ीके दबानेपर गड्ढा पड़ता है और दबानेपर उसके भीतर सुरसुरी अनुभव होती है। खोपड़ीपर उद्भेद निकलते हैं और वह बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहती है। खोपड़ी इतनी स्पर्श-कातर रहती है, कि केशोंमें कँघी नहीं फेरी जा सकती, ऐसा मालूम होता है, कि ब्रुश या कँघीके स्पर्शने जब खोपड़ीसे रगड़ खायी, तो वह मस्तिष्कमें प्रवेश कर गयी।

अनुभवाधिक्य आर्सेनिकका एक स्वरूप है, स्पर्श और गन्धका अधिक अनुभव होना, सभी इन्द्रियानुभूतियोंका बहुत ज्यादा अनुभव होना। एक विचित्र लक्षण और भी है, जिसका शायद मैंने जिक्र नहीं किया है। वह यह कि जिस कमरेमें रोगी रहता है, उसके व्यापार और परिस्थितियोंका उसको बहुत अधिक अनुभव होता है। आर्सेनिकका रोगी बहुत ही नाजुक-मिजाज रहता है। हेरिङ्गने एक जगह ऐसे रोगीको "सुनहली मूठवाली बेतका रोगी बताया है।" यदि बीमार कोई रोगिनी होती है, तो दीवारपर लगी कोई तस्वीर ठीक सीधी नहीं टँगी रहनेपर उसे बहुत तकलीफ होती है। अनियमता तथा गड़बड़ीका जिन्हें बहुत अधिक अनुभव होता है, वे उस अवस्थामें बहुत विचलित और बदतर हो जाते हैं। यदि हरेक चीज ठीक-ठिकाने नहीं रहती, तो उन्हें एक रोगात्मक नाजुक-मिजाजी हो जाती है, जो आर्सेनिकके सदृश हैं।

इस दवाके आँखके लक्षण बहुत ही विख्यात हैं। दबे हुए मलेरियाके पुराने रोगियोंमें, भग्न-स्वास्थ्यवाले पीले दुबले मनुष्योंमें, जिन्हें साधारणतः सर्दी हो जाया करती है और जिन्हें खासकर नाक तथा आँखोंमें घर बनानेवाली सर्दी होती है, उनके आँखके लक्षण बहुत ही कष्टदायक होते हैं। आँखोंसे स्राव होता है, यह पलकों और चक्षुगोलकमें होनेवाला चक्षु प्रदाह हो सकता है। यह आगे बढ़कर ऐसे जखममें भी परिणत हो जा सकता है, जिससे पतला खून-मिला स्राव होता है और जो बढ़कर गाढ़ा कटु स्राव हो जाता है,

जिससे आँखकी खाल उधड़ जाती है, चक्षुपटल लाल हो जाती है
जलनके साथ दाने पड़ते हैं। ठण्डे पानीसे धोनेपर तथा सूखे तापसे
जलन अच्छी रहती है। बहुतकर तो चक्षुगोलकपर ही जखम होते हैं
अकसर कनीनिका (Cornea) पर भी हो जाते हैं। इसमें बहुत तरह
विह्वति भी होती है, यह दागोंके रूपमें आरम्भ होती है और फिर क्षत
बना देती है तथा पुराने जखमके दागोंमें नाखूनी (अनुपक्ष—Pteryg
की तरह छोटे-छोटे प्रवर्द्धन, आँखके केन्द्रकी तरफ उत्पन्न हो जाते हैं, जि
अन्धापन पैदा हो जानेकी सम्भावना रहती है। प्रदाहके साथ कभी-क
सूजन रहती है, जलन करने और खाल उधेड़नेवाला स्राव होता है,
सूजनकी प्रकृति थैलीकी तरह रहती है और इसीलिये हमलोगोंको थैली
तरह पलकें देखनेमें आती हैं और आँखके नीचे छोटी-छोटी थैलियाँ
रहती हैं।

कण्ठ तथा नाकपर भी श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहकी अवस्था जा पहुँच
है और कभी-कभी तो नाकके लक्षणोंसे कण्ठके लक्षणोंका अलग क
कठिन हो जाता है। आर्सेनिकके रोगीको अकसर नाककी सर्दी हो जा
करती है, प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनके कारण हमेशा छींका करता है,
हमेशा सर्दीला रहता है और झोंकको हवा लगकर बीमार हो जाया कर
है तथा ठण्डी और तर ऋतुमें उसकी हालत बदतर रहा करती है।
पीले, मोमकी तरह, नाकसे सर्दीका स्राव होनेवाले, भग्न-स्वास्थ्य पु
चमकीली रोशनीकी तरफ देखनेपर अन्धे हो जाते हैं। सम्पूर्ण नासा-गह्व
कण्ठ, स्वर-यन्त्र और वक्षमें प्रादाहिक अवस्था रहनेके साथ सर्दीका स्र
और छींक। सर्दी नाकसे आरम्भ होती है और कण्ठमें चली जाती है
अकसर सूखी, सुरसुरीवाली, कड़ी तथा तङ्ग करनेवाली खाँसी आने लगती है
उस सर्दीकी दवा खोज निकालना कठिन है, जो नाकसे तो आरम्भ होती
तथा श्वासोपनलियोंके उपसर्गके साथ वक्षमें फैल जाती है। बहुत बार आप
दवा बदलनी पड़ती है, क्योंकि वक्षके लक्षण अकसर दूसरी दवाओं
निर्देश करने लगते हैं। नाक और छाती दोनोंके लक्षणोंसे पूरी तरह मिलने
वाले लक्षणोंकी दवा खोज निकालना बहुत ही कठिन है।

आर्सेनिक, वृद्धोंकी तथा पुरानी नाककी सर्दीकी बीमारियोंकी द
है। जहाँ नाकसे सहजमें ही खून निकलने लगता है, रोगी हमेशा छी

करता है और उसे सर्दी लगा करती है, हमेशा सर्दीसे भरा और पीला, थका, बेचैन तथा रातमें घबड़ाहटसे भरा रहता है, कष्टदायक सपने देखा करता है, श्लैष्मिक-झिल्ली सहजमें ही प्रदाहित हो जाती है, उसपर लाल और सहज ही में खून बहनेवाले जखमके दाग रहते हैं, नाकमें पीछेकी ओर बड़ी-बड़ी पपड़ियाँ जमती हैं, उसमें यह लाभ करता है। आर्सेनिकमें जखमकी प्रवणता बहुत अधिक है। यदि कण्ठमें दर्द होता है, तो जखम हो जाता है, यदि आँखोंमें सर्दी बैठ जाती है, तो अन्तमें जखम हो सकता है, नाककी सर्दीकी तकलीफें जखमोंमें अन्त होती हैं और यह जखम हो जानेकी प्रवृत्ति—बीमारी चाहे जहाँ हो, आर्सेनिकका एक सुदृढ़ निर्देशक है। उपदंश या मलेरिया अथवा मलेरियासे जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है अथवा जिस धातु-प्रकृतिमें किसी तरहका ज़हर फैल गया है या तो मुर्दा चीरनेके समय कोई स्थान कट गया या विसर्प अथवा टाइफायड ज्वर या रस-रक्त-बिगड़नेकी बीमारी, जिसकी दुश्चिकित्सा हुई है या क्विनाइन तथा इसी तरहके अन्य पदार्थका किसी तरह ज़हर फैल गया है, जो रक्तको नष्ट कर देता है और रक्त हीनताकी अवस्था उत्पन्न करता है उनकी नाक या अन्य स्थानोंकी सर्दीकी यह दवा है। यदि पैरमें जखम हो जाता है, श्वेत-प्रदर हो जाता है या किसी तरहका स्राव जारी हो जाता है, तो उससे रोगीको आराम पहुँचता है। अब इन स्रावोंको जरा घटने दीजिये। रुके हुए स्रावोंके कारण आपमें प्राचीन अवस्था आ जायगी, पर यह खूनमें ज़हर फैल जानेका एक रूप है। कानका स्राव रुक जानेपर, रुके हुए कण्ठके स्रावमें, श्वेत-प्रदरमें और जखमके स्रावमें भी ऐसा ही होता है। प्रत्येक स्राव रोधके बाद जो रक्त-स्वल्पता पैदा हो जाती है, उसकी सुधारनेवाली दवाओंमेंसे आर्सेनिक भी एक है। आजकल श्वेत-प्रदरका स्राव तथा अन्य स्राव रोकनेके लिये तथा जखम आराम करनेके लिये बाहरी व्यवहार करनेकी अथवा मलहम लगानेकी चाल चल गयी है। अब जब ये बाहरी तकलीफें चली जाती हैं, तो स्वास्थ्य-विधानमें रक्त स्वल्पताकी अवस्था पैदा हो जाती है। रोगी मोमकी तरह तथा पीला हो जाता है, देखनेमें रोगीकी तरह रहता है और कुछ दूसरी अवस्थाओंके दब जानेके कारण, ये सर्दीके स्राव आरम्भके कारण रूपमें आते हैं। उदाहरणार्थ,—श्वेत-प्रदरका स्राव दब जानेके बाद उस स्त्रीको गाढ़ा, खून-भरा या पानीकी तरह

स्राव नाकसे होने लगा। जब मलहम लगाकर कोई जखम सुखा दिया जाता है या कोई चूर्ण डालकर कानका स्राव रोक दिया जाता है, डाक्टर समझता है, कि उसने यह स्राव रोककर बहुत बढ़िया काम किया है, पर उसने केवल उस स्रावको बिगाड़ डाला है, जिससे रोगीको वास्तवमें आराम पहुँचता था। भग्न-स्वास्थ्यवाले व्यक्तियोंको इस तरह रोग दबा देनेके कारण जो सर्दीका स्राव होता है, उसमें सलफर, कैल्केरिया और आर्सेनिक लाभ करता है। जैव-विषके आघ्रोपणके कारण जो अवस्था हो जाती है, उसमें भी आर्सेनिकम लाभ करता है। यह रोगकी जड़तक जा पहुँचता है, क्योंकि मुर्दा चीरनेके समय लग जानेवाले घावके कारण जो लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, यह उनके सदृशतम हैं। आर्सेनिक और लेकेसिस ऐसी दवाएँ हैं, जो तुरन्त ही रोगकी जड़तक जा पहुँचती हैं और जो ज़हर है, उसके लिये प्रतिविषका काम करती हैं। इस तरह समता स्थापितकर सब चीज़ोंको कायदेमें ले आती हैं।

आर्सेनिकके नाकके लक्षण बहुत ही कष्टदायक हैं और उसमें आर्सेनिकके रोगीकी लक्षण-मूर्त्तिका बहुत-कुछ अंश सामने आ जाता है। आर्सेनिकके रोगियोंको सहजमें ही सर्दी लग जाती है, उन्हें हमेशा सर्दीका बहुत अधिक अनुभव होता है और जरा भी उत्तेजना मिलनेसे (कोई छोटा-सा भी कारण होनेपर) सर्दी हो जाती है। आर्सेनिकका रोगी जब सबसे अच्छा रहता है, तो उस समय भी कुछ-न-कुछ गाढ़ा स्राव होता है, पर जब उसे कुछ सर्दी लग जाती है, तो यह स्राव पतला हो जाता है। वह गाढ़ा स्राव, जिससे उसे कुछ आराम पहुँचता है, सूख जाता है, उसे सर-दर्द, प्यास, बेचैनी, घबड़ाहट और तकलीफें पैदा हो जाती हैं। इसके बाद फिर दो-तीन दिनोंके लिये सर्दीका बोखार आ जाता है और इसके बाद फिर गाढ़ा स्राव जारी हो जाता है और उसे अच्छा मालूम होने लगता है, उसके सब दर्द और कष्ट गायब हो जाते हैं। नाक और ओठोंके त्वचार्बुदमें यह बहुत लाभदायक प्रमाणित हुआ है।

जलनके साथ कण्ठ और तालुमूलका प्रदाह, यह सर्दीसे बढ़ता और गर्म चीजें पीनेसे अच्छा होता है। श्लैष्मिक-झिल्लीमें सिकुड़न और लाली रहती है। डिफ्थीरियाकी भाँति जब रक्तमें ज़हर फैला रहता है, तो श्लैष्मिक-

झिल्लीमें भीतरी रस स्राव दिखाई देता है। यह स्राव भी खाकी और सिकुड़ा-सा दिखाई देती है, खाकी रङ्गका और यह कभी-कभी समूचे कोमल तालु और उसकी महरावपर अपना अधिकार जमा लेता है। यह फटा-फटा दिखाई देता है। रोगी सुस्त, चिन्तित, धँसा हुआ, कमजोर दिखाई देता है, ज्यादा ज्वर नहीं रहता, पर मुँह बहुत सूखा रहता है।

यह श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहवाली अवस्था, स्वर-यन्त्रतक चली जाती है और स्वर-भङ्ग पैदा हो जाता है तथा टेटुआमें जानेपर जलन होती है, खाँसनेपर बढ़ जाती है। इसके बाद वक्षका सकोचन, दमाका श्वास-कष्ट और सूखी तथा बिना बलगमकी खुसखुसी खाँसी पैदा हो जाती है। इस तङ्ग करनेवाली खाँसीके साथ घबड़ाहट, सुस्ती, बेचैनी, क्लान्ति और पसीना रहता है और खाँसी आनेपर किसी तरहका आराम पहुँचता नहीं दिखाई देता। खाँसी इसका पहलेका भाग है और यह सूखी, तङ्ग करनेवाली कड़ी खाँसी कई दिनोंतक जारी रहती है, पर इससे कोई फायदा नहीं होता और इसके बाद दमाके लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, तब रोगी बहुत-बहुत सा पतला, पानीकी तरह बलगम निकालने लगता है। वक्षमें सङ्कोचन मालूम होता है, बहुत कसावट और साँय-साँयकी आवाज़ आती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसका दम घुट जायगा। कभी-कभी खून मिला बलगम निकलता है, पर लक्षण अमूमन सर्दीकी प्रकृतिके रहते हैं। कभी-कभी सुरखीकी तरह बलगमके साथ निमोनियाके लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। बलगम खाल उधेड़नेवाला निकलता है, वक्षमें जलनकी अनुभूति होती है, मानो अङ्गारे छातीमें रखे हैं और रोगीको रक्त-स्राव होता है तथा यकृतकी रङ्गका बलगम निकलता है।

आर्सेनिकम एक रक्त-स्रावी ओषधि है, ऐसी है, कि पहलेसे ही रक्त-स्रावकी प्रवृत्ति उत्पन्न कर देती है और सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे रक्त स्राव होता है। यह साधारणतः चमकीले लाल रङ्गका होता है, पर इस सम्बन्धमें जब वे अग्र पचनशील अवस्थामें आ जाते हैं, तब रक्त-स्राव काला होता है तथा यकृतके अग्रकी तरह उसमें छोटे-छोटे थक्के होते हैं। ऐसा ही मल तथा वमन हुए पदार्थमें भी मिलता है। बलगममें बहुत भयङ्कर बदबू रहती है। इससे ज्यादा कि आपको जल्द ही मालूम हो जाता है, कि वहाँ सड़नेवाली अवस्था आ गयी है। रोगी इस समय एक ऐसी दशामें जा पहुँचता है, कि

स्याहीकी तरह होते हैं, उनमें मुर्देकी तरह गन्ध रहती है, बहुत सुस्ती, बेचैनी तथा शरीरकी विवर्णता रहती है। आँतोंकी बीमारियोंमें, निम्नश्रेणीकी बीमारियोंमें, मल आप-से-आप ही निकला करता है। यह मलनालीकी एक अवस्था है, मलान्त्रकी शिथिलता और बहुत अवसन्नता है। अनैच्छिक रूपसे दस्त आनेपर प्रकट होता है, कि या तो स्थानिक अथवा सार्वाङ्गिक क्षय हो गया है तथा इस दवामें भयानक सुस्तीका भी लक्षण है। जिससे टाइफायडमें तथा रस-रक्त बिगड़नेवाली निम्न-श्रेणीकी अन्य बीमारियोंमें आप-से-आप दस्त आते रहते हैं, आप-से-आप पेशाब होते हैं।

आर्सेनिकमें कभी-कभी दस्त आनेका भी लक्षण है, पर यह उतना ज्यादा नहीं, जितना **पोडोफाइलम** और **फास-एसिड**में। आम-तौरसे थोड़े, बार-बार वेगसे दस्त आते हैं, वायुके साथ थोड़ा-सा पतला मल निकल जाता है, श्लेष्माके साथ थोड़ा-सा पतला मल निकलता है और कालेरामें जो सुस्ती रहती है, वैसी सुस्ती आ जाती है, चिकना, सफेदी लिये मल निकलता है। आर्सेनिकका साधारणतः हैज़ामें प्रयोग नहीं होता अर्थात् उस अवस्थामें जब झोंकसे दस्त आते हैं, पर कभी-कभी जब झोंकसे दस्त आना बन्द हो जाता है और वमन तथा दस्त नहीं आते, रोगी अवसन्न पड़ा रहता है। उस अवस्थामें वह बेहोशकी तरह मालूम होता, बिलकुल मरे, मुर्देकी तरह दिखाई देता है, केवल साँस चलती रहती है। इस समय आर्सेनिकम प्रतिक्रिया करता मिलता है। बहुत सुस्ती, धसा हुआ तथा मुर्देकी तरह चेहरा, बहुत ठण्ढक, ठण्ढे पसीनेसे भरा हाथ-पैर ठण्ढे, मुर्देकी तरह ठण्ढा, इन लक्षणोंवाले शिशु-हैज़ाके रोगी, वे बच्चे रोगी, जो मुर्देकी तरह क्षीण, बुरी सड़ी बदबूसे भरे रहते हैं, तथा मल-मूत्र तथा वमनसे भी इसी तरह तीक्ष्ण दुर्गन्ध निकलकर कमरा भरा रहता है, उनके लिये उपयोगी है। समूचा अन्त्र, कटु, खाल उधेड़नेवाला रहता है, जिनसे लाली और जलन पैदा हो जाती है। बहुत बार यह जलन तलपेटतक चली जाती है, मलान्त्र तथा मल-द्वारमें जलन होती है, मल-द्वारके पास बहुत यन्त्रणा होती है। इसमें ऐंठन, दर्द-भरा तथा असह्य मल-वेग होता है। निम्न तलपेटमें, मलनाली और मल-द्वारमें बहुत तकलीफ़ रहती है, रोगी बहुत घबड़ाया रहता है और दर्द इतना तीव्र होता है तथा उपसर्ग इतने कष्टकर होते हैं और मनो-वेदना इतनी प्रबल रहती है, कि रोगी मृत्युके सिवा और कुछ सोच ही नहीं सकता, उसमें

इतना भय और आशङ्का रहती है, जैसी उसने जीवनभरमें कभी अनुभव ही नहीं की थी और इनकी वजहसे उसे विश्वास हो जाता है, कि वह मरना ही चाहता है। अन्य उपसर्गों की भाँति इसके साथ ही बेचैनी रहती है और जब वह पाखाना नहीं फिरता रहता है, तो सहनपर टहला करता है, कुर्सीसे बिछावनपर जाता है और बिछावनसे कुर्सीपर। वह पाखाना जाता है और फिर बिछावनपर जाता है, इसके बाद वह फिर पाखाने जाता है, कभी-कभी तो कपड़ा भी खराब हो जाता है। कभी-कभी तो जलनके साथ पुरानी बवासीरकी अवस्था रहती है तथा पाखाना फिरनेके समय मसे निकल आते हैं। पाखाना फिरनेके बाद, पलङ्गपर जाकर वह बहुत क्लान्त हो पड़ता है, बवासीरका निकला हुआ मसा अंगूरकी तरह रहता है और अङ्गारेकी तरह उनमें जलन मालूम होती है। वे गर्म सूखे और खून निकलनेवाले रहते हैं। जलनके साथ सरलान्त्रके फटे घाव, जिनसे प्रत्येक बार पाखानेके समय रक्त-स्राव होता है। मल-द्वारके चारों ओर जलनके साथ खुजली और अकौताकी तरह उद्भेद।

इस ढङ्गका दर्द शरीरमें कहीं भी हो सकता है, जलन आर्सेनिकका चरित्रगत लक्षण है, सुई बेधनेकी तरह दर्द आर्सेनिकका चरित्रगत लक्षण है। अब इन सबको एक साथ मिलाइये और अकसर इस अवस्थामें रोगी कहता है, कि मानो उसके समूचे शरीरमें गर्म सुइयाँ घुसायी जा रही हैं। यह खूब गर्मीकी अनुभूति है, जो सभी स्थानोंका एक सार्वाङ्गिक स्वरूप है। यह मल-द्वारमें और खासकर बवासीरकी अवस्थामें अनुभव होती है, मानो बवासीरमें जलन और गर्म सुइयाँ घुसायी जा रही हैं।

जब किसी भयानक आक्रमणकी आरम्भिक अवस्थामें रोगी धीरे-धीरे दुर्बल होता जाता है उसे सब तरहका वह जाड़ा और सर्दी मालूम होती है, जो मेटिरिया-मेडिकामें तथा रोगोंमें प्राप्त हो सकती हैं। बहुत ही तेज़ प्रकृतिका जाड़ा और शीत, जिन्हें कभी-कभी रोगी इस तरह बयान करता है, कि मानो नसोंमें जो रक्त बहता है, वह बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है। उसे अपने समूचे शरीरपर बरफकी भाँति ठण्डी लहरें आती-जाती मालूम होती हैं। जब बोखार चढ़ता हो तथा रोगी सरसे पैरतक बहुत तेज़ गर्म रहता हो, तो पसीना होनेके पहले उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो रक्त-वाहिनियोंमें खौलता पानी बह रहा है। इसके बाद पसीना, श्वास-कष्ट तथा

और सब दूसरी तकलीफें पैदा होती हैं, जिनसे वह अवसन्न हो जाता है और ठण्डा पड़ जाता है। यद्यपि कभी-कभी पसीनेसे बोखार और दर्द घटता है, तथापि यह बहुत देरतक बना रहता है तथा क्लान्ति भी साथ ही बनी रहती है और उसकी क्लान्तिको पसीना दूर नहीं करता। उसके कितने ही उपसर्ग पसीना होनेपर बढ़ जाते हैं। उदाहरणार्थ,—प्यास बढ़ जाती है, बहुत ज्यादा पानी पीता है और उससे तृप्ति नहीं होती, ऐसा मालूम होता है, उसे काफी पानी नहीं मिलता है और रोगी कहेगा—"मैं पीकर कूआँ सुखा दे सकता हूँ" या "मुझे पानीका एक घड़ा दो।" ऐसी बातोंसे प्यासकी अवस्थाका पता लगता है। बोखार चढ़े रहनेके समय रोगी थोड़ा-थोड़ा, पर बार-बार पानी पीना चाहता है और शीतके समय वह गरम पानी पीना चाहता है।

जलनके साथ जननेन्द्रियपर जो उद्भेद निकलते हैं, उनमें आर्सेनिक बहुत फायदा करता है। जलन होनेवाले छोटे-छोटे जखमोंमें यहाँतक कि अगर वे उपदंशके भी हों तथा विसर्पिकाके दाने, जो अग्रचर्म तथा भगोष्ठोंपर होते हैं, जलन, यन्त्रणा और डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ उपदंश-क्षत या जलनके साथ कठिन उपदंश क्षत (Chancroid), पर खासकर जो दुर्बल हैं, जो अच्छे होना ही नहीं चाहते, बल्कि इसके विपरीत ही करते हैं, फैलते हैं, जिन्हें हम गलित (Phagedemc) कहते हैं, जो जखम अपने बाहरी किनारे खाते और दिनोंदिन बढ़ते ही जाते हैं। आर्सेनिक तथा मर्क्युरियस-कोर, दोनो ऐसे फैलने और सब तरहके किनारे खानेवाले जखमोंको जो बहुत बदबूदार रहते हैं प्रधान दवाएँ हैं। ऐसे जखम जो वंक्षण-प्रदेशको बाघीका मुँह खुल जानेके कारण हो जाते हैं, जिनके भरनेकी प्रवृत्ति ही नहीं दिखाई देती। थोड़ा-थोड़ा पानीकी तरह, बदबूदार स्राव होता और बढ़ता जाता है और बढ़नेवाले जखम उसके मुँहके चारों तरफ बढ़ते जाते हैं, उनके आरोग्यकी कोई प्रवृत्ति ही नहीं रहती अथवा रोगी किसी ऐसे अस्त्र-चिकित्सकके हाथमें है जिसने पीव होनेकी सम्भावनावाली बाघीपर अपनी छुरी चला दी है, जिससे उसकी शकल लाल तथा चिढ़े हुए विसर्पकी तरह हो गई है तथा आरोग्य होनेका कोई लक्षण नहीं दिखाई देता। जखमके कारण किनारे गायब हो गये हैं और अब जगह साफ हो गयी है, जो एक रुपयेसे भी कुछ बड़ी रह गयी है। यह कभी कभी तो दादकी तरहके आकारको हो जाती है। इन जखमोंमें स्पर्श सहन नहीं होता और आगकी तरह जलन होती है।

स्त्री तथा पुरुष जननेन्द्रियके भी बहुत-से आवश्यक लक्षण रहते हैं। पुं-जननेन्द्रियकी अवस्था तो शोथ-ग्रस्त-सी रहती है। लिङ्गेन्द्रियका शोथ, सूजी हुई दिखाई देती है, जिसमें लिङ्गेन्द्रिय बहुत फूल जाती है और पानीके थैलेकी तरह दिखाई देती है; मुष्क, खासकर मुष्क-त्वचा, चारों ओरके अंग बहुत सूजे और तर रहते हैं। स्त्रियोंके भगोष्ठ बहुत फूले रहते हैं और उनमें जलन, डङ्क मारनेकी तरह दर्द, कड़ापन और फूलन रहती है। इन यन्त्रोंका विसर्प-जनित प्रदाह, उपदंशकी प्रकृतिका जख्म, इनमें जब जलन, यन्त्रणा और डङ्क मारनेकी तरह दर्द मौजूद हो। स्त्रियोंमें सूजनके साथ या बिना सूजनके ही जननेन्द्रियमें भयानक जलनका दर्द रहता है। यह जलन योनि-पथतक फैल जाती है, साथ ही योनि पथमें बहुत सूखापन और खुजलाहट रहती है। श्वेत-प्रदरका स्राव उस अङ्गकी खाल उधेड़ देता है और बड़ी कष्टदायक खुजली और जलन पैदा कर देता है। सफेद, पानीकी तरह पतला स्राव जो खाल उधेड़ देता है। कभी-कभी तो यह इतना ज्यादा होता है, कि अचानक चू पड़ता है। आर्सेनिकका मासिक रज स्राव भी अकसर खाल उधेड़नेवाली प्रकृतिका ही होता है। बहुत ज्यादा श्वेत-प्रदरका स्राव, जिसमें मासिक रज-स्राव भी मिला रहता है, बहुत बदबूदार और कटु होता है। कई महीनोंसे रुका हुआ मासिक रज स्राव, अवनत, स्नायविक रोगियोंका रजोरोध, उनका चेहरा झुर्रियाँ पड़ा हुआ, सिकुड़ा और बदरङ्ग रहता है। इसमें सन्देह नहीं, कि एलोपैथीमें रक्त-स्वल्पताके लिये आर्सेनिककी बहुत ख्याति है तथा रक्त स्वल्पताके लिये यह **फेरम**की तरह तरह लाभदायक माना जाता है। **फेरम** तथा आर्सेनिकम रक्त स्वल्पताकी सुदृढ़ दवाएँ हैं। इसलिये इसमें आश्चर्य करनेकी कोई भी बात नहीं है, कि इन पीली मूर्त्तियोंको आर्सेनिकसे लाभ पहुँचता है। मासिक रज स्रावके समय मलान्त्रमें सुई गड़ने की तरह मालूम होना।" "श्वेत-प्रदरका स्राव कट, क्षय करनेवाला गाढ़ा और पीला प्रभृति " प्रसव होनेके बाद प्रसूताके पेशाब नहीं हुआ, मूत्राशयमें पेशाब है भी नहीं पेशाब रुका है या मूत्राशय पेशाबसे भरा है, पर पेशाब होता ही नहीं है। इस विषयमें आपको **कास्टिकम** ही अकसर प्रयुक्त होनेवाली औषधि मालूम होगी। यदि आप पिछले इतिहासपर ध्यान दें और उस औरतको पेशाब नहीं हुआ है और यह समय ऐसा है कि उसे पेशाब होना ही चाहिये, किन्तु जब आपको दूसरे लक्षण न मिले, तो

अकसर यही आपकी निर्देशित औषधि मालूम होगी। यदि बच्चेको पेशाब न हुआ रहे, तो ऐकोनाइट ही विशेष निर्देशित औषधि होगी। यह चिकित्साकी कुञ्जी है, पर यदि दवाको बतानेवाले अन्य लक्षण मौजूद हों, तो इनपर कभी ध्यान न देना चाहिये। यदि कोई दूसरा लक्षण वर्त्तमान न हो, तो ऐकोनाइट और कास्टिकमका अध्ययन कीजिये और जाँचिये, कि क्या ऐसा भी कोई कारण है, जिससे इनका प्रयोग नहीं हो सकता है। स्त्रियोंके सम्बन्धमें एक दूसरी बात यह है, कि उन कर्कटिका-सम्बन्धी रोगोंमें आर्सेनिक एक बहुत बड़ा आराम पहुँचानेवाला है, जो जरायु तथा स्तनमें उत्पन्न होते हैं। निश्चय ही दुरारोग्य रोगिनीकी जलन तथा डङ्क मारनेकी तरह दर्द एकदम गायब हो जाता है। यह एक उपशामक दवा हो जाती है।

आर्सेनिकमें तङ्ग करनेवाली सूखी खाँसीके साथ स्वर-रोध, स्वर-यन्त्र-प्रदाह भी है। इस ढङ्गकी खाँसी, जिससे कोई भी लाभ होता नहीं मालूम होता, लगातार खुसखुसाकर आया करती है, सूखी, खुसखुसी खाँसी। कष्टकर श्वास, श्वास-कष्ट तथा दमासे इसके सम्बन्धको अध्ययन कीजिये। स्नायविक प्रकृतिके बहुत पुराने दमाके रोगियोंको आर्सेनिकने आरोग्य कर दिया है। दमा, जिसका आधी रातके बाद दौरा होता है, उन रोगियोंका दमा, जिन्हें सर्दीकी तकलीफ़ होती है, जो पीले हो रहे हैं, सूखी तङ्ग करनेवाली खाँसी, बिछावनपर बैठकर अपना वक्ष पकड़ रखना पड़ता है, अवसन्नतासे घबड़ाये, बेचैन रोगी।

आर्सेनिककी तरह जब हृत्पिण्डके लक्षण हो जाते हैं, तब उनका सम्हालना मुश्किल हो जाता है, ये लक्षण बहुत कमजोरीके लक्षणसे मिलते हैं। जोरसे कलेजा धड़कना, थोड़ा भी परिश्रम या उत्तेजनासे कलेजा धड़कने लगना, बहुत चिन्ता, मन.कष्ट, कमजोरी, रोगी चल नहीं सकता, वह सीढ़ी नहीं चढ़ सकता, कलेजेकी धड़कन बढ़े बिना तो वह हिल नहीं सकता, प्रत्येक उत्तेजना उसमें कलेजेकी धड़कन उत्पन्न कर देती है। "कलेजेकी धड़कनका तीव्र आवेश या वक्षावरक-झिल्ली-प्रदाहमें मूर्च्छा या हृत्पिण्डकी अवसन्नताका दौरा होना।" आर्सेनिकम हृत्पिण्डकी भयानक बीमारियोंमें उपयोगी होता है तथा कितनी ही हृत्पिण्डकी दुरारोग्य बीमारियोंमें उपयोगी होता है अर्थात् जब इन प्रत्यक्ष हृत्पिण्डके रोगोंमें आप आर्सेनिकके सब लक्षण मिलते देखें, हृदावरक झिल्लीका शोथ प्रभृति, तो आपको समझना

चाहिये, कि आपका रोगी बहुत ही जटिल है। "हृत्शूल (Angina pectoris) प्रभृति।" 'हृत्पिण्डपर आक्रमण करनेवाला वात प्रभृति।" "बहुत अधिक उपदाहके साथ हृदावरक झिल्लीमें जल-सञ्चय (Hydro pericardium)।" "नाड़ो तेज़, क्षुद्र और काँपती हुई।" "समूचे शरीरमें फड़कन होना" प्रभृति प्रभृति। इसके अलावा यह एक दूसरी अवस्थामें भी चला जाता है, जब कि कलेजा कमजोर हो जाता है। नाड़ी सूतकी तरह हो जाती है। रोगी पीला और ठण्डा रहता है, पसीनेसे भरा रहता है, नाड़ो बहुत कमजोर रहती है। जब स्वयं हृत्पिण्डकी यह अवस्था नहीं रहती, तो आर्सेनिक एक आश्चर्यजनक दवा हो जाती है अर्थात् रोगी आरोग्य होने योग्य—साध्य रहता है।

कुछ सार-तत्वोंके सम्बन्धमें मैं कुछ कहना चाहता हूँ। कुछ ऐसी चीजें हैं, जो आर्सेनिकम श्रेणीके स्वल्प विराम ज्वरमें बहुत साधारण हैं। आप स्वल्प-विराम ज्वर तथा ज्वरोंकी साधारण अवस्था, जो आम तौरसे रहती है, उसे देख सकते और उसपर इसका प्रयोग कर सकते हैं। जैसा कहा गया है, आर्सेनिकका जाड़ा उतना ही बहुत तीव्र होता है, जितना आप किसी भी दवामें पा सकते हैं, साथ ही उत्तेजना, सर दर्द, सुस्ती, मुँह सूखा गर्म पानी पीने और गर्म वस्त्र ओढ़े रहनेकी इच्छा रहती है। इसके साथ ही किसी भी दवाकी चिन्ता-भरी बेचैनी और अवसन्नता भी रहती है, पर आर्सेनिकके रोगीका समय एक बहुत जरूरी चीज़ है। आर्सेनिकके समयके जाड़ेका एक विचित्र स्वरूप है, इसकी अनियमितता। दो बारका जाड़ा एक समान नहीं आता, किसी भी समय जाड़ेका दौरा हो जाता है। इसमें तीसरे पहर जाड़ा आता है, आधी रातके बाद जाड़ा आता है, कभी-कभी सवेरे भी आता है, कभी ३ या ४ बजे तीसरे पहर, कभी एक बजे दिनमें। इसकी प्रकृतिमें एक विचित्र सामयिकता है। इसीलिये यह स्वल्प-विराम प्रकृतिका होता है। इसमें प्यासका भी एक विचित्र लक्षण है। जाड़ेके समय, जब कि रोगीको कुछ ज्यादा प्यास रहती है, तो ठण्डी चीजें पीनेकी अभिलाषा नहीं रहती, इसीलिये वह केवल गर्म चीजें पी सकता है, गर्म चाय प्रभृति भी पी सकता है। बोखारके समय प्यास बढ़ जाती है, क्योंकि उसका मुँह सूखा रहता है और वह बार-बार थोड़ा-थोड़ा एक चायके चम्मचभर पानी केवल मुँह तर रखनेके लिये पीता है। पानी उसकी प्यास नहीं बुझाता, क्योंकि वह सिर्फ एक

चम्मचभर ही पानी पीता है, थोड़ा और बार-बार पीता है। इसके बाद सुस्तीके साथ पसीना होने लगता है, ठण्डापन बढ़ जाता है, बहुत ज्यादा ज्यादा पानी पीनेकी इच्छा होती है, ठण्डे पेयोंकी अदम्य प्यास हो जाती है। हड्डियोंमें बहुत दर्दके साथ जाड़ा आरम्भ होता है। बहुतकर हाथ-पैरोंसे आरम्भ होता है तथा जाड़ेके समय अंगुलियाँ और अंगूठे नीले हो जानेके साथ माथेमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय हो जाता है। इन चीजोंको एकत्र कीजिये तथा उसमें भयानक घबड़ाहटके साथ जो सुस्ती आती है, उसको मिलाइये, फिर आप प्रायः सदा ही आर्सेनिकके रोगीको छाँट ले सकेंगे। पर इसके जाड़ेमें, ज्वरमें और पसीनेमें, इतनी बारीकियाँ हैं, कि आप लक्षणोंकी इन बारीकियोंको संग्रह करें और इन सार्वाङ्गिक लक्षणोंको छोड़ दें, तो आप किसी भी जाड़ेके रोगीको शायद ही आरोग्य कर सकें अर्थात् आप सोच सकते हैं, कि आप करेंगे, पर जबतक कि ये साधारण अवस्थामें मौजूद नहीं रहेंगे, जो आर्सेनिकका निर्देश करती है, तबतक आप असफल हो जायँगे। आर्सेनिकके सम्पूर्ण रोगीका चित्र एक चीज़ है तथा ये आर्सेनिकके लक्षण हैं, यह कह देना दूसरी बात है। ऐसा ही **चायना** और **क्विनाइन**का भी है, उनमें अनगिनती खास लक्षण हैं। इतनेपर भी **चायना** या **क्विनाइन**का रोगी बनानेके लिये विचित्र सार्वाङ्गिक लक्षण रहने ही चाहिये।

आर्सेनिकम आयोडेटम।

(Arsenicum Iodatum)

इस दवाकी तैयारीके उपादानोंपर ध्यान देनेसे मालूम हो सकता है, कि यह गम्भीरतम प्रदेशात्मक क्रिया करनेवाली धातुगत दवा है। इसकी बीमारियाँ **सवेरेसे वक्त**, तीसरे पहर **शामको**, रातमें और **आधी रातके** बाद उत्पन्न होती हैं। बहुत-से फोड़ोंके साथ क्षयकी अवस्थामें, बहुत जोरोंकी रक्त-स्वल्पता, जैसा कि क्षय-ग्रस्त रोगियोंका होता है। जब बहुत सर्दी नहीं रहती है, तब रोगी ठण्डी हवाकी इच्छा करता है खिड़कियाँ खुली रखना चाहता है, बन्द कमरेमें उसे उत्तेजना अनुभव होता है। प्रत्यक्ष साधारण

शारीरिक चिन्ता। हाथ-पैर इस तरह सुन्न हो जाते है, मानो सो गये है और प्रत्यङ्ग सब ऐसे अनुभव होते है, मानो पट्टीसे बँधे हैं। स्नान करनेसे रोग बढ जाता है स्नानसे सर्दी लग जाती है। कर्कटिका-सम्बन्धी (Cancerous affections) रोगोंमें यह सबसे ज्यादा लाभदायक हुई है तथा इसने नकड़ा (Lupus) और त्वचार्बुद (Epithelioma) के रोगी आरोग्य किये है। हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त लडकियोंमें, इसके लक्षण मिलते हैं, इसने लडकियोंको नर्त्तन रोगको क्रिया आरोग्य कर दी है। कितने ही रोगी तो आर्सेनिककी तरह सर्दीसे बहुत हो स्पर्श-कातर रहते है और कितने ही आयोडिनकी तरह गर्मीसे, इसके रोगीको सर्दी गर्मी दोनोंका ही अनुभव होता है। ठण्डी हवा तथा ठण्डी तर ऋतुमें रोगीको हालत और भी खराब हो जाती है और कितने ही उपसर्ग प्रकट हो जाते हैं। उसे हमेशा सर्दी लगा करती है, जिससे नाककी सर्दी हो जाती है। उसको सर्दी सम्बन्धी तकलीफे बढ जाया करती हैं। कितने ही सङ्कोचन भीतरी और बाहरी सङ्कोचन उत्पन्न हो जाते हैं तथा शरीर-द्वारोंका सङ्कोचन भी इस दवामें मिलता है। प्रत्यङ्गोंकी टङ्कारकी तरह गति। आर्सेनिकको तरह बाहरी और भीतरी शोथ, भूखे रहनेपर उसकी हालत और भी खराब रहती है और आयोडिनकी भाँति खा लेनेपर अच्छा रहता है। क्षय-ग्रस्त रोगियोंकी मास और वजन घटता जाता है, बच्चोंका दुबलापन, थोडे ही शारीरिक परिश्रमसे बेतरह रोग बढ जाता है।

जिन स्त्रियोंको मूर्च्छा आती है या बेहोशीका दौरा होता है समूचे शरीरमें सुरसुरी मालूम होती है, किसी भी श्लैष्मिक-झिल्लीसे रक्त स्राव होता है, बहुत गर्म हो जानेकी एक अनुभूति, जरूर ही ताजी हवा चाहिये। समूचे शरीरमें भार मालूम होता है, कड़ापन (Induration) इसका एक सुदृढ स्वरूप है, कभी तो यह गाठोंमें, जखमोंमें तथा चर्म-रोगोंमें होता है। गांठे सूजो और कडी पड जाती है, बाहरी और भीतरी प्रदाह, यह कितने ही अङ्गोंमें, गांठोंमें, हड्डियोंमें और रस-स्रावी झिल्लियोंमें हो जाता है। इसमें ऐसे लक्षण रहते है, मानो उसके रस रक्तका क्षय हो गया है। बहुत आलस्य, प्रतिक्रियाका न होना, पलङ्गपर लेटे रहना तथा दर्दवाली करवट सोये रहना, उसके लक्षणोंको और भी बदतर

साथ दबावकी तरह दर्द, चक्षुके ऊपर और मस्तक-पार्श्व में दबावकी तरह दर्द; माथेमें यन्त्रणा और कुचल जानेकी तरह दर्द, माथेमें और कनपटीमें मानो सुई भोंकी जा रही है, माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द। सरका दर्द विह्वल कर देनेवाला होता है। ललाटमें पसीना होता है, माथेमें, कपालमें और कनपटीमें धमक मालूम होती है।

आँखोंके श्वेत-पटलका और चक्षुतारका (Iris) का प्रदाह, सोरा-दोष-ग्रस्त व्यक्तियोंकी आँखोंकी पुरानी श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी अवस्था, सहजमें ही आँखोंसे आँसू बहना, ठण्डी हवामें बदतर हो जाना, पढ़नेके समय आँखोंमें दर्द, चक्षु गोलकमें घावकी तरह दर्द, आँखोंमे सुई गड़नेकी तरह दर्द, चक्षु-गोलककी नसे उभड़ आना, पुतलियाँ फैली, आँखोंमें लाली, टकटकी लगी दृष्टि। आँखें धँसी हुई, आँखकी पलकें फूली और शोथ-ग्रस्त रहती हैं। पलकोंकी ऐंठन, आँखोंकी वहशत-भरी दृष्टि, आँखें पीली पड़ जाती हैं, दृष्टि-धुँधली, झिलमिलाती, कुहरेसे ढकी और कमजोर रहती हैं। आँखोंके सामने आगकी चिनगारियाँ।

कानसे खाल उधेड़नेवाला और बदबूदार पीब निकलता है, कानमें भनभनाहट, गुनगुनाहट, घण्टेकी आवाज़ और गरजकी तरह आवाज़ आती है। कण्ठकर्णी नली और कानके मध्य अंशकी सर्दी, कानका दर्द, यन्त्रणा-दायक सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह रहता है, कानमें अनुभूति रुकी हुई, श्रवण-शक्ति घट जाती है।

बड़ी ही तेज़ नाककी सर्दी, जिसमें खून-मिला, कटु, बहुत अधिक **खाल उधेड़नेवाला, हरापन लिये, बदबूदार,** *गाढ़ा पीला या पीलापन* लिये हरा स्राव होता है। शहदकी तरह नाकसे सर्दीका स्राव, पानी जैसे स्राववाली नाककी सर्दी, खाँसीके साथ खुली हवामें नाककी सर्दी। उद्भिज्ज्वर (Hay fever) को यह बहुत ही लाभदायक दवा है। नाकका सूखापन तथा **नकसीर फूटना** (Epistaxis), **नासा-रोध**, नाकमें दर्द, नाककी गन्ध-शक्ति गायब हो जाती है। बहुत छींकें आने लगती हैं, नाकके भीतर सूजन, नाकमें जखम।

चेहरा ठण्ढा हो जाता है, ओंठ नीले हो जाते हैं और आँखके चारों तरफ नीला घेरा पड़ जाता है, चेहरा भूरा, मिट्टीकी तरह या पीला चेहरा,

फिर चेहरा लाल भी रहता है और गालपर लाल चकत्ता रहता है, चेहरा पीला और फूला हुआ रहता है। नाक और चेहरेपर पीले दाग रहते हैं, चेहरा खिंचा और दुबलाया दिखाई देता है, नाक और चेहरेपर उद्भेद, मुँहासा, अकौता, फुन्सियाँ, दाने, चेहरेका भाव रोगी और बूढ़ोंकी तरह, चेहरेमें दर्द। निम्न हनुकी गाठोंका फूलना, हनु निम्नस्थ ग्रन्थियों (Submaxillary glands) का फूलना, चेहरेमें सुरसुरी।

मुँहके भीतर छाले निकल आते हैं, मसूढ़ोंसे आसानीसे रक्त-स्राव होता है और जीभ फटी रहती है। जीभपर भूरी या सफेद मैल चढ़ी रहती है, रातमें और नींदमें मुँह और जीभ सूख जाती हैं, जीभ बढ़ी हुई अनुभव होती है। मसूढ़ोंका फूलना। सवेरे मुँहमें श्लेष्मा एकत्र हो जाता है, मुँह बदबूसे भरा और सड़ा हुआ रहता है। मसूढ़ेमें दर्द होता है, यन्त्रणा, जलती हुई जीभ, लार बहना (Salivation), शीतादकी तरह मसूढ़े, बोली तोतलाती हुई, फूले हुए मसूढ़े। मुँहका स्वाद खराब, तीता, सड़ा हुआ, नमकीन, खट्टा, मीठा रहता है। दाँत ऊपर उठे मालूम होते हैं, खानेके बाद दाँतोंमें दर्द, दाँतोंमें फाड़नेकी तरह दर्द।

कण्ठमें कुछ फँसा रहनेका बहुत अधिक अनुभव होता है। कण्ठमें सूखापन, कण्ठमें झिल्लियाँ पैदा हो जाती हैं, कण्ठमें जलन, कण्ठमें बराबर खरोंचने-सा अनुभव होना। निगलनेमें तकलीफ होती है। फूला हुआ कण्ठ, उपदंशके कारण कण्ठमें जखम।

भूख बढ़ जाती है, यहाँतक कि राक्षसी भूख हो जाती है। खाद्य-पदार्थसे घृणा, पाकाशयका सङ्कोचन, पाकाशय फैला रहता है। वह ताकतकी चीजोंकी इच्छा करता है। खालीपनका भाव, खाली, खट्टी डकारें आती हैं, मुँहमें पानी भर आता है, पाकाशयमें भरापन मालूम होना। बार-बार कलेजेमें जलन हुआ करती है, खानेके बाद पेटमें भार हो जाता है, अजीर्ण और बहुत हिचकी आती है। पुराना पाकाशय प्रदाह भोजनसे घृणा, खानेके बाद मिचली पैदा हो जाना। खानेके बाद दर्द, जलन, ऐंठन, काटने चबाने, दबाने और सुई गड़नेकी तरह पाकाशयमें दर्द, खाँसनेपर धमक और खोंखाई, पाकाशयमें कसावट, प्यास, शामको बहुत ज्यादा हो जाती है। भोजनके समय प्यास, अदम्यकर प्यास, पाकाशयमें कम्पन, लगातार वमन, अतिसारके साथ वमन, कुछ पीनेके बाद, कुछ खानेके बाद। दूध

पीनेके बाद भयानक रूपसे वमन, पित्त, रक्त तथा खाद्यका वमन, पीले, पानी-जैसे पदार्थकी कै।

पेट वायुसे तना रहता है, वायु रुद्ध रहता है और बहुत गुडगुडाहट होती है। यकृत, प्लीहा, मध्यान्त्र त्वचाकी ग्रन्थिका बढना तथा वंक्षण-ग्रन्थिकी वृद्धि हो जाना। आँतें, यकृत और प्लीहाका प्रदाह। इसमें यकृतके बहुत से उपसर्ग रहते हैं। खानेके बाद तलपेटमें दर्द, ऋतु-कालमें, पाखाना होनेके समय दर्द, बाहरी गर्म प्रयोगसे घटता है। कुक्षि-प्रदेश (Hypogastrium) में दर्द। कोख, वक्षण-देश, यकृत, प्लीहा तथा नाभि-प्रदेशमें दर्द, तलपेटमें जलन, ऐंठन और खींचनकी तरह दर्द। पाखानेके समय तलपेटमें काटनेकी भाँति दर्द, यकृतमें काटनेकी तरह दर्द, यकृतमें दबावकी तरह दर्द और घावकी तरह यन्त्रणा। कुक्षि-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, तलपेटमें धमक मालूम होना, तलपेटमें बेचैनीका भाव, प्लीहामें दर्द और घावकी तरह यन्त्रणा।

बहुत ही कष्टदायक कलकी बीमारी, पर्यायक्रमसे अतिसार और कब्जियत, मल कड़ा, गाठ-गाठ और हलके रङ्गका। सवेरे और भोजनके बाद पतले दस्त आते हैं, वृद्ध पुरुषोंकी खाल उधेड़नेवाले दस्त, खून-मिले श्लेष्माका मल और कूथनके साथ रक्तामाशय, अतिसार, जिसमें भूरे रङ्गके, बहुत ज्यादा, बार-बार, बदबूदार, पीले या सफेद पानीकी तरह दस्त आते हैं। बार-बार वृथा ही पाखाना लगता है, पाखाना हो जानेके बाद भी वेग, बदबूदार वायु निकलना। बाहरी मसा, मल-द्वारमें खुजली, पाखाना होनेके बाद मल-द्वारमें जलन।

यह मूत्राशय तथा मूत्रपिण्ड (गुर्दा) पर गहरी क्रिया करता है। ऐडिसन डिजिज़ (कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह) में यह बहुत फायदा करता है। पेशाब रुकना, लगातार या बार बार पेशाब लगना, रातके समय ज्यादा, पेशाब बूंद-बूंद और आप-से-आप होता जाता है। पेशाब रुका, पेशाब अण्डलाल मिला, धुमैला, काला, लाल, बहुत ज्यादा या बहुत थोड़ा और बदबूदार होता है।

जननेन्द्रियके भी बहुत-से लक्षण और बीमारियाँ इसके अन्तर्गत हैं। सवेरेके वक्त भरपूर कड़ापन हो आना, इसके बाद असम्पूर्ण रहता है या लिङ्गोद्रेक होता ही नहीं, इससे अण्ड-वृद्धि रोग और अण्डोंका कड़ापन आरोग्य होता है। लिङ्गेन्द्रिय तथा लिङ्ग-मुण्डमें खुजली, जननेन्द्रियमें

पसीना होना, वीर्य-स्राव, अण्डोंकी सूजन, लिङ्गेन्द्रियपर जखम, बाघीके साथ कोमल या कठिन उपदंश क्षत।

स्त्रियोंकी कितनी ही बीमारियोंमें भी इससे बहुत लाभ पहुँचता है। इसने बहुत ही प्रत्यक्ष रूपसे जरायुका कर्कट (Cancer of the uterus) का बढ़ना रोक दिया है। जलन तथा गन्ध छूट जाती है और जखम घट जाता है। कितनी रोगिनियोंका जीवन-काल चार वर्षतक बढ गया है। कामेच्छा घट जाती है, इसने डिम्बकोषकी वृद्धि और कड़ापन आरोग्य कर दिया है, इसने डिम्बकोषका प्रदाह भी आरोग्य कर दिया है। **श्वेत-प्रदर, कटु, खून-मिला, जलता हुआ और बहुत ज्यादा** रहता है। ऋतु-स्रावके बाद गाढ़ा या पतला और पीला होता है, ऋतु-स्राव गायब या रुका हुआ, बहुत ज्यादा, बार-बार, देरसे, दर्द-भरा, थोड़ी देरतक। जरायुसे रक्त स्राव, डिम्बकोषमें, खासकर दाहिने डिम्बकोषमें दर्द, जननेन्द्रिय तथा डिम्बकोष यन्त्रणा-भरे कुचल जानेकी तरह दर्द। जरायुका अपनी जगहसे हट जाना, फूले हुए डिम्बकोष। इसने डिम्बकोषके अर्बुदकी वृद्धि रोक दी है।

स्वर-यन्त्रकी क्रूप खाँसीकी अवस्था। वायु-पथोंमें सूखापन, स्वर-यन्त्र तथा टेटुआका प्रदाह। स्वर-यन्त्र और टेटुआमें बहुत ज्यादा बलगम इकट्ठा होना, स्वर-यन्त्र प्रदाहकी तरह स्वर-यन्त्रकी आक्षेपिक अवस्था, स्वर-यन्त्र और टेटुआमें जलन, क्षत और यन्त्रणा, स्वर-यन्त्रका क्षय रोग (Phthisis), आवाज़ बिगड़ी, सूखी और कमजोर रहती है और अन्तमें एकदम रुक जाती है। श्वास प्रश्वास तेज़ और **दमाकी** तरह रहता है (Asthmatic), ऊँचे चढ़नेपर, परिश्रम करनेपर, हिलने-डोलनेपर कलेजेमें धड़कन होनेके साथ रातमें श्वास-कष्ट बढ़ जाता है, श्वास अनियमित रहता है, घरघराहटके साथ, धीमी, श्वासरोधक और **साँय-साँय** आवाज़ होती है। ११ बजे रातसे लेकर २ बजे राततक दमाका दौरा। सवेरे शामको और आधी रातके बाद खाँसी आती है। खाँसी दमाकी तरह, काली खाँसीकी भाँति गहरी, सूखी थकानेवाली, ज्वरके भोग-कालमें आती है, स्वर-यन्त्र और टेटुआमें सुरसुरी और उपदाहसे खाँसी, बलगम ढीला, आक्षेपिक, श्वास रोध करनेवाला होता है, गति और बातचीत करनेपर ज्यादा बदतर हो जाता है, गर्म कमरेमें भी ज्यादा खराब हो जाता है। यह कुकुर खाँसी (हूपिङ्ग खाँसी) को आरोग्य

उससे लाल लकीरें पड़ जाती हैं। "कटु, खुजलानेवाला स्राव, उससे नाकके भीतरी भागकी, नाककी दीवारकी और ऊपरी ओंठकी खाल उधड़ जाती है।" यह स्पष्ट है और डिफ्थीरिया, बहुत तरहके गलक्षत और आरक्त ज्वरमें होता है, जब इस दवाका निर्देश होता है।

नाकसे कटु-स्राव होनेके साथ-ही-साथ जीभका प्रदाह। जीभकी जड़, कण्ठ और कोमल तालु तथा तालुमूलका प्रदाह, गर्दनकी गांठें फूली रहती हैं। इस प्रादाहिक अवस्थाके बाद पाक्षाघातिक दुर्बलता आती है, जिससे उसे खाद्य-पदार्थ या तरल पदार्थोंका निगलना असम्भव हो जाता है और जब खाद्य-पदार्थ जोरसे, मुँहसे गलकोष (Pharynx) में जाते हैं, तो कण्ठनाली अपनी क्रिया नहीं करना चाहती, इस तरह तरल और खाद्य-पदार्थ जोरसे नाकमें भरने और नाकसे बाहर गिरने लगते हैं। डिफ्थीरिया तथा गलक्षत रोगमें बहुत बार मैंने रोगीके पास रहकर ऐसा होते देखा है। शरीरमें बार-बार जाड़ा मालूम होनेके साथ ही, साधारण सर्दीकी तरह बार-बार छींकें आती हैं और हड्डियोंमें इतना दर्द रहता है, मानो वे टूट जायँगी। यह **नक्स-वोमिका, इयुपेटोरियम, आर्निका, रसटक्स, ब्रायोनिया** और **आर्सेनिक**की तरह होता है, जिनमें 'सर्दीके समय सारे शरीरमें लगातार दर्द बना रहता है। यह कुञ्जीकी तरह लक्षण है अर्थात् जो एक ही लक्षणपर दवा देते हैं, उनके लिये यह बहुत ही आश्चर्यजनक दवा है। वे रोगीको नाकमें अंगुली डालते और ओंठ नोंचते देखकर ही इसका प्रयोग कर बैठते हैं। इसपर ध्यान नहीं देते, कि **सिना**में, नाकमें अंगुली डालने और ओंठ नोंचनेके लक्षण हैं। **सिना**में और भी ज्यादा रक्त-सञ्चयके तथा स्नायविक लक्षण हैं। नाकके भीतरके तरलोंकी कटुताके कारण वास्तवमें नासा-छिद्र इतने यन्त्रणा भरे रहते हैं, कि ऐसा मालूम होता है मानो नाक आगसे भरी है। अरम ट्राइफिलमके रोगी अपने लक्षणोंका इसी तरहकी भाषामें वर्णन करते हैं। वे घाव-भरी, उधड़ी, नाकसे आफिस जाते हैं, वह सुरसुराती और चुनचुनाती है और वे किसी तरह भी नाकमें अंगुली डाले बिना नहीं रह सकते। नाकका स्राव ओंठतक बह आता है और उसकी खाल उधेड़ देता है। अकसर गलेकी गांठें बढ़ी हुई रहती हैं। जब नाकमें सर्दी लग जाती है, तो कण्ठमें तथा कर्णमूल-ग्रन्थि (Parotid

gland) में घावको तरह यन्त्रणा हो जाती है। नाकमें अंगुली डालनेकी इच्छा। नाकके पार्श्व में अंगुली घुसानेका एक दूसरा लक्षण है तथा "नाकके भीतर अगुली डालने" से इसमें अन्तर है। आप बच्चोंको नाकके भीतर, नाकके भीतरी भागमें अंगुली डालते देखेंगे। यह नासा पथका प्रदाह है, उस प्रणाली (Duct) का प्रदाह है, जो नाकसे आंखतक जाती है। इसके साथ ही गालपर आंसू दुलक पड़ते हैं और वहांतक फैलनेवाली चुनचुनी पैदा हो जाती है, जहां वे पहुँच नहीं सकते, पर पहुँचनेकी चेष्टा करते हैं। नाकके पिछले भागमें श्लेष्मा रहनेके कारण मुश्किलसे बोल पाता है। वह नाकसे—नकियाकर बोलता है। नाक बलगमसे भरी रहती है और समस्त श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें बहुत अधिक अर्बुदकी तरहकी सूजन रहती है जिससे उसमें नाकको आवाज आ जाती है। "सूजा, चित्ती-चित्ती चेहरा।" यदि आप ध्यानसे नाक और चेहरा देखेंगे, आप यह देखकर आश्चर्यमें आ पड़ेंगे, कि ज्यादातर सबलोंके चेहरेको बायीं तरफ, बायें नासा गह्वरमें, बायीं अश्रु-स्रावी प्रणाली (Lachrymal duct) प्रभृतिमें उत्पन्न होती हैं। ओठ, ऊपरी और निचले दोनोंसे ही रक्त-स्राव होता है। खासकर नीचेवाला ओठ ज्यादातर उधड़ता है तथा इसपर खूनकी बूंदें जमी रहती हैं तथा रोगी लगातार ओठ नोंचता और खोंटता रहता है और जब आप उन बच्चोंको ऐसा करनेसे रोकते हैं या उसका हाथ हटा देते हैं, तो वह पिशाचकी तरह चीख उठता है। "बच्चे अकसर, उस खाल उधड़ी जगहको नोंचते और अगुली डालते हैं, यद्यपि इससे उन्हें दर्द होता है, वे चिल्लाते हैं, पर वे अगुली डालते ही जाते हैं।" यह एक विचित्र लक्षण है। तरल स्राव ओंठकी खाल उधेड़ देते हैं और फिर यह चुनचुनी पैदा होती है, वह उसे छोड़ नहीं सकता और नोंचता ही जाता है। "ओंठ, गल-गह्वर तथा नाक प्रभृतिकी खाल उधड़ी हुई।" बहुत खुजली और सुरसुरीसे ही इसका पता लग जाता है। टाइफायड ज्वरमें, जहां कर्णमूल-ग्रन्थिके इतने फूल जानेकी सम्भावना नहीं रहती, वहां भी ये ग्रन्थियां फूल जाती हैं। डिफ्थीरिया, आरक्त ज्वर, गल-क्षत (Sore-throat) में लाला-ग्रन्थि (Salivary glands) का फूलना, घावकी तरह यन्त्रणा तथा इन गांठोंकी सूजनकी प्रादाहिक अवस्था, गांठें फूली रहती हैं और छूनेपर स्पर्श सहन नहीं होता है। जीभ लाल रहती है, जीभके कांटे उठे हुए, जीभ करीब-करीब दागोंसे—लकीरोंसे भरी

रहती है। इसकी खाल उधड़ी रहती है और खून निकलता है, कभी-कभी तो कितने ही जगहोंसे रक्त-स्राव होता है और कभी-कभी तो कई दिनोंतक रक्त-स्राव जारी रहनेके बाद, जब जीभ आगे बढ़ आती है, तो यह एक बड़े लाल फलकी (छोटे-छोटे कांटोंकी तरह मांसांकुरसे ढँकी जीभ) तरह दिखाई देती है और इसी वजहसे इसे "लाल जिह्वा" कहते हैं। "जीभ फटी-फटी, खून निकलता है, जलती है, दर्दसे भरी रहती है, जीभ तथा गलकोषमें तीव्र यन्त्रणा।" मुँहमें सड़ी गन्ध, मुँह मैलसे भरा, इतनी यन्त्रणा कि रोगीको पानीतक पीनेकी इच्छा नहीं होती। इन सबसे, गालके गड्ढेसे लेकर पीछे कण्ठतक चुनचुनी और खाल उधड़ी रहना प्रकट होता है। यदि आप गालका पिछला भाग देखेंगे, तो यह अंश आपको खाल उधड़ा, कच्चा और खून बहता दिखाई देगा। बहुत ही ज्यादा कटु लार बहती है, मुँह जलता है और यन्त्रणासे भरा रहता है, कोई चीज खानेको दी जाती है, तो चिल्लाता है। गालका पिछला भाग डिफ्थीरियाके जखमोंसे भरा रहता है तथा मुँहमें छालेके घाव, जिनसे समूचा मुँह और जीभ भरी रहती है। इसको "डङ्क मारनेकी तरह कहते हैं," पर यह वास्तवमें कष्टदायक झुनझुनी है। मधुमक्खीकी तरह डङ्क मारनेकी तरह, कण्ठमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द, उन अंशोंमें जखम भरा रहता है, खाल उधड़ी रहती है और खून बहता है।

इसमें वैसे पतले दस्त भी आते हैं, जैसे आरम्भिक टाइफायडमें आते हैं। यदि आपने कभी कोई पीला उबाला हुआ शस्य, किसी तख्तेपर टपकते हुए देखा हो, तो आप जान सकते हैं, कि टाइफायडका पीला मल कैसा होता है। जब यह दवा उचित होती है, तो अतिसार, कै, दस्त, शस्य-रसकी तरह पीले होते हैं। दस्त बार-बार, विष्ठा-मिले, पतले, पानीमें सिझाये, मैदेकी तरह, पीले होते हैं—यही टाइफायडके मलका वर्णन है तथा दूसरे वक्त मल, गहरे भूरे, पानीकी तरह, पतले दस्त आते हैं। सदाकी तरह यह मल भी कटु होता है, मल-द्वारसे पतला मल टपक पड़ता है तथा उस स्थानकी खाल उधेड़ देता है तथा जलन होती है। अन्य बीमारियोंके साथ, खासकर टाइफायडमें, वक्षण प्रदेशमें जहाँ तलपेटपर जांघ झुकी है, वहांकी खाल कुछ उधड़ जाती है, जिससे कटु स्राव होता है। इसके अलावा गुदास्थिकी भी खाल उधड़ जाती है। मल-द्वारके पीछेवाले भागमें, कटे घावसे एक प्रकारका तरल निकलकर एक प्रकारकी तरी और खाल उधड़ी-सी रहती है, यहांतक

कि गुदास्थिके ऊपर और मल द्वारके पीछे और भी अपदरण और कटु स्राव होता है।

इन रोगोंमें बहुत से अर्थोंमें आवाज़पर भी धक्का लगता है। खासकर गवैयों और जन-साधारणमें गानेवालोंको ही ऐसा होता है। किसी-किसी समय जब किसी वकीलके पास कोई बहुत दिनोंका लम्बा मुकदमा होता है और जब वह आखिरी बार जोर लगाता है तथा तीन चार घण्टोंतक बोलता रहता है तथा पसीनेसे भरा रहनेपर जोरकी हवा लग जाती है या बाहर निकल जाता है, तो उसे स्वर-भङ्ग हो जाता है और अपना व्याख्यान वह समाप्त नहीं कर पाता, उस समय आरम ट्राइफिलमकी एक खुराक ही उसे स्पष्ट आवाज़में अपना व्याख्यान पूरा करने योग्य बना देगी। यह स्वर-भङ्गको साफ़ कर देता है। व्याख्यानदाता और गवैये—जिन्हें अपनी आवाज़पर बहुत जोर डालना ही पड़ता है और उन्हें देरतक परिश्रम करने बाद थोड़ी-सी सर्दी लगकर स्वर-भङ्ग हो जाता है, यह आरम ट्राइफिलमकी आवाज़का बहुत आश्चर्य-जनक स्वरूप है। "गाने या बोलनेके कारण स्वरसे बहुत ज्यादा काम लेनेकी वजहसे स्वर-भङ्ग।" "आवाज़ अनिश्चित, अपने वशमें नहीं रहती, बार-बार बदला करती है, कभी गहरी, कभी रुखड़ी प्रभृति रहती है।" यह इसी तरह प्रकट होती है। कोई मनुष्य एक ही रौमें कोई बात कहकर खतम नहीं करता, फिर वह दूसरे ढङ्गसे कहना आरम्भ करता है, तो बात कर सकता है। यह एक अद्भुत बात है, कि किसी-किसी समय वह स्वर-रहित हो जाता है, जिससे मालूम होता है, कि स्वर-रज्जुमें अनियमित और गड़बड़ीवाला प्रदाह हो गया है। यह कोई सम-रूप प्रदाह नहीं है। यदि सम-रूप प्रदाह होता, तो आवाज़पर भी सम भावसे प्रभाव पहुँचता। "पादरियोंका गल-क्षत" ठीक वचन नहीं है, क्योंकि इसका मतलब पादरियोंका स्वर-भङ्ग है। बोलनेके समय सार्वजनिक व्याख्यानदाताओंका स्वर-भङ्ग और गलेकी खाल उधड़ जाना। आप कह सकते हैं, कि इसमें सन्देह नहीं, कि कोई भी स्वर-भङ्ग जो बोलनेसे बढ़ता है, पर हमेशा ही ऐसा नहीं होता। **रसटक्स**के स्वर-भङ्गमें बोलनेसे आराम मिलता है, जो उसका चरित्रगत लक्षण है, तो स्वरका परिचालन गलकोषका गतिशील होना है।

रसटक्सका रोगी जब अपनी आवाज़से काम लेता है, तो वह देखता है, कि स्वर-भङ्ग हो गया है, पर कुछ देरतक बोलते रहनेके बाद आवाज़ ढीली

पड जाती है, खुल जाती है या दूसरे शब्दोंमें इस तरह कह सकते हैं, कि गतिसे यह अच्छा रहता है। यह नये या पुराने दोनों ही प्रकारके स्वर-भङ्गमें हो सकता है। अब इस दवामें तथा **फास्फोरस**में, स्वर-रज्जुपरसे थोड़ा सा बलगम निकाल फेंकनेपर आवाज़ खुल जाती है, पर **रसटक्स**में ऐसा नहीं होता, क्योंकि यह एक प्रकारकी कमजोरी तथा सर्दीके कारण पक्षाघात है। **रसटक्स**के सम्बन्धमें यह विख्यात है, कि जो वात-ग्रस्त कण्डराएँ और शिराएँ कमजोर रहती हैं, वे हिलाने-डोलानेके आरम्भमें अकड़ी रहती हैं और गरमानेपर उपशम हो जाता है ठीक यही बात आवाजके सम्बन्धमें भी लागू होती है।

खाँसनेके समय वक्षमें जलन और खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द मालूम होता है, यह पाकाशय-गह्वरतक फैल जाता है। "वक्षमें खाल उधड़नेका भाव", "फेफड़ोंमें यन्त्रणा", "फेफड़ोंमें घावकी तरह यन्त्रणा होती है।" आप देखेंगे कि कितनी ही बार रोगी तथा परीक्षक कहते हैं, कि फेफड़ेमें बीमारियाँ हैं, जो वास्तवमें रोगवाली जगह नहीं भी हो सकती है। दूसरे लक्षणोंसे जैसा मालूम हुआ है, यह जलन बहुतकर टेंटुआमें होती है, यद्यपि रोगी कहता है, कि फेफड़ेमें है। इस दवामें टेंटुआमें, समूची नलीमें, खाँसीके समय जलन रहती है तथा श्वासोपनलियोंकी-बृहत् शाखाओंमें भी जलन होती है। टेंटुआ, वायुनली प्रभृतिकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहवाली अवस्था, इन्हीं स्थानोंपर रहती है, पर इस दवाने निमोनिया आरोग्य कर दिया है। क्षय-रोग (Phthisis) में भी यह आरामदायक पायी गयी है। किसानोंमें यह खाँसी सर्दीके लिये मूल-रूपमें घरेलू दवाकी तरह व्यवहृत होती है तथा क्षयमें आराम पहुँचानेवालेके रूपमें, कितने ही किसानोंके घरमें डोरीके सहारे जङ्गली शलगम सूखनेके लिये लटका रहता है तथा चीनी और मलाईके साथ कुचलकर इसका व्यवहार किया जाता है।

मैं कह चुका हूँ, कि बायीं ओरसे, माथेका बायाँ पार्श्व, बायाँ नासा-रन्ध्र तथा चेहरेके बायें भागमें इसका ज्यादा काम होता है। इसी तरह बायाँ वक्ष और बायें फेफड़ेपर भी इसकी अधिक क्रिया होती है। वक्षकी बायीं ओर और बायीं बाँहमें इसमें घावकी तरह यन्त्रणा होती है। वक्ष-गह्वरमें भरापनका भाव और यन्त्रणा अनुभव होती है, जो नीचे उतर जाती है तथा बायें फेफड़ेपर आक्रमण करता है।

ज्वरका एक रोगी-पार्श्वका यह चित्र है —"टाइफायडके रूपका ज्वर, अंगुलोंकी नोक तथा सूखे ओंठ तबतक खोंटता रहता है, जबतक उनसे खून नहीं निकलता प्रभृति।"

इनमेंसे ज्यादातर बीमारियोंमें पेशाब बहुत थोड़ा होता है और कभी-कभी तो रुक जाता है। इन रोगोंमें यदि दवा देनेके बाद बहुत ज्यादा पेशाब होने लगे, तो इसकी सुन्दर क्रियाका पता बहुत कुछ लग सकता है। यह एक उपशमका चिन्ह है।

आरम्भ ज्वरमें निकलनेवाले सभी लाल चकत्ते इसमें निकल सकते हैं और इसमें सान्निपातिक दाने (Typhoid petechiæ) भी निकलते हैं।

ऐसाफिटिडा।

(Asafœtida)

प्राचीन-कालमें मनुष्य तथा जानवरोंमें इस दवाका बहुत अधिक अप-व्यवहार होता था। हमारे पूर्व-पुरुष समझते थे, कि यह एक रोग-प्रतिषेधक पदार्थ है और इसीलिये वे अस्तबलोंमें इसका व्यवहार करते थे। हींगके टुकड़े घोड़ेके दानेके साथ रख दिये जाते थे, उन्हें बदमिजाजीसे रोकनेके लिये। इससे क्या हुआ है, यह मैं नहीं कह सकता, पर यह निश्चित है, कि वे किसान ऐसाफिटिडाको रोगोंसे बहुत बड़ा रक्षा करनेवाला समझते थे। यह मूर्च्छा, हिस्टीरिया और सब तरहके स्नायविक लक्षण और बीमारियोंके लिये भी साधारण मनुष्यों द्वारा व्यवहार किया जाता था। परीक्षा द्वारा यह प्रयोग उचित ही प्रमाणित हुआ है। ये बातें, यद्यपि बहुत कम ध्यान देने योग्य होती हैं, पर इनसे जन-साधारणमें, घरेलू दवाके रूपमें इसका व्यवहार मूल-रूपमें होता दिखाई देता है। नियमानुकूल प्रणालीसे चिकित्सकों द्वारा चिकित्साके रूपमें इसका व्यवहार होनेके बदले इसका बहुत ज्यादा इसी रूपमें व्यवहार होता आया है।

एक ऐसी श्रेणीके रोगी मिलेंगे, जो आपको तकलीफ देंगे। जो रोगी आपके दवाखानेमें भराये, शिराओंसे भरे, बेंगनी चेहरे लेकर आते हैं,

सटकर चिपक जाता है। यह इतना कमजोर रहता है, कि जखम नहीं हो पाता, करीब-करीब प्रदाह भी नहीं होता, पर एक धीमी—अप्रबल अवस्था रहती है। शरीरकी सब जगहकी ग्रन्थियाँ गर्म और टपकती रहती हैं। साथ ही खोंचा मारने, झटका लगनेकी तरह दर्द उपदंश-जनित तथा पुराने सोरा-जनित और कण्ठमाला-जनित रोगोंमें होता है।

माथेकी हड्डीमें अनुभव होनेवाला दर्द तो कभी-कभी बहुत ही तकलीफ़-देह हो जाया करता है। सरमें पुराना उपदंश-जनित दर्द, सुई गड़ने, भेदनेकी तरह दर्द। जिस स्थानपर सरमें गूमड़ और बतौड़ी रहती है, वहाँ इस दवाकी ज्यादा क्रिया होती दिखाई देती है। बायें कपालके उभारके पास खोंचा मारने, सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। इस सुई गड़नेकी तरह दर्दको ही कभी-कभी ऐसा कहा जाता है, कि मानो नाखून या ठेपी माथेमें घुसायी जा रही है। ये स्नायविक सर-दर्द, उपदंश, हिस्टीरिया या कण्ठ-मालाके कारण होते हैं। हिस्टोरिया-जनित दर्द छेदने, फाड़ने या सुई गड़नेकी तरह कहा जाता है। समूचे माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, पर सामनेवाले उभार या कानपटीमें ऐसा अनुभव होता है, मानो नाखून या ठेपी घुसायी जा रही है और बहुत-से दर्द तो छेदनेकी तरह मालूम होते हैं, मानो वे हड्डीसे सतहतक आते हैं और इसीलिये ऐसा कहा जाता है, कि वे भीतरसे बाहरकी ओर आते हैं।

यह पुराने उपदंश-ग्रस्तोंके लिये, जिन्हें आँखकी बीमारियाँ हो जाया करती हैं, लाभदायक है। चक्षु-गोलकपर घाव, कनीनिकामें घाव, खुली हवामें घट जाता है, आँखोंमें सुन्नपनकी अनुभूति होती है। चक्षुतारका (Iris) का प्रदाह, चक्षुतारकाका धुँधला-सा दिखाई देना। इनमें तेज़, बहुत जोरका सुई गड़नेकी तरह दर्द भी हो सकता है, जो भीतरसे बाहरकी ओर आता है। यह दवा जलनसे भरी है, इसलिये आँखके गोलोंमें जलन होती है, खुली हवामें आराम मिलता है। चक्षुतारकाका प्रदाह (Iritis), परन्तु कभी-कभी प्रदाहका आक्रमण चक्षु क्षण पटल (Choroid), चक्षु-चित्र-पत्र (Retina) और श्लैष्मिक-झिल्लीपर भी हो जाता है। इससे उपदंशकी प्रकृतिकी एक साधारण प्रादाहिक अवस्था उत्पन्न हो जाती है। आँखोंमें चारों ओर कितने ही स्थानोंपर फाड़नेकी तरह दर्द होता है, आँख चिपकती है, सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है, जो रातमें बढ़ जाता है। जखम, जिसमें

सुई गड़नेकी तरह दर्द रहता है, रातमें बढ़ता है। आँखमें सूखेपनके साथ जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द, जिससे कि पलक चक्षु गोलकमें चिपक जाती हैं, दर्द रातमें बढ़ जाता है। आँखके सामने धुँधलापन छाया रहता है, धुन्धपन मानो कुहरेके भीतरसे देख रहा है। ऐसा भी मालूम होता है, मानो वायु-मण्डल छोटी-छोटी मक्खियोंसे भर गया है। "आँखके सामने मक्खीकी तरह पदार्थ उड़ता दिखाई देना (Muscæ volitantes)।" आपको हवामें देखनेपर मच्छड़ और फुनगे दिखाई देते हैं, पर इसके रोगियोंको उनके न रहनेपर भी वे सब दिखाई देते हैं। आँखोंसे निकला हुआ मवाद खाल उधेड़नेवाला, खून-मिला और अकसर बदबूदार होता है।

यही औपदंशिक कष्ट आँख तथा कानकी हड्डियोंपर भी आक्रमण कर सकता है। इन हड्डियोंका क्षय हो जा सकता है और बहरापन पैदा हो सकता है। बदबूदार पीब निकलनेके साथ ही कानमें जलन हो सकती है।" **भीतरसे बाहरकी ओर** सुई गड़नेकी तरह दर्द।

नाकसे बहुत ही बदबूदार स्राव होता है नाकमें ऊपरकी ओर जखम हो जाता है, नाककी हड्डीका जखम, उपदंश जनित नकसीर, सड़ा हुआ पुराना नाकका स्राव। "गाड़ीमें सवारी करते समय ऐसा भाव मानो नाक जकड़ गयी है, मानो रोगी साँस नहीं ले सकता माथा भरा मालूम होता है (आरम, आरम म्यूर)।

सुन्नपन इस दवाका एक बहुत बड़ा स्वरूप है। खोपड़ीका या माथेसे खूब भीतरकी ओर सुन्नपन, यहाँ-वहाँ सुन्नकी तरह अनुभव होना, सुन्न, दर्दके साथ मुर्देकी तरह अनुभूति, दर्दके बाद सुन्नपन, अकसर नींदके बाद भी सुन्नपन आ जाता है। हिस्टीरिया-जनित लक्षणोंके अलावा अन्य स्नायविक लक्षण भी प्रकट होते हैं। इसमें ताण्डव रोगकी जैसी गति रहती है। इसके स्नायविक लक्षणोंमें आप ऐसी ही सब कुछ होनेवाली स्नायविक धातु पानेकी आशा कर सकते हैं। "हमेशा चबाया करता है, मुँहसे फेन भरा थूक निकाला करता है। इसके साथ ही जीभ फूली रहती है।" "जड़ बोली, दाँत कड़कड़ाना, रातमें चौंक पड़ना।" ओठोंका फूलना और समूचे गालकी श्लैष्मिक-झिल्ली तथा खासकर निचला ओठ फूल जाता है, साथ ही मुँहके भीतर जलन होती है।

साधारण जलन, खोंचा मारने और जखममें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ कण्ठमें उपदंशके लक्षण दिखाई देते हैं। निगलनेमें दर्द होता है, हिस्टीरियाके

गोलेकी तरह कण्ठमें एक गोला चढ़नेकी तरह अनुभूति होती है। कण्ठ रोध होता है, हमेशा घूंट लेते रहना पड़ता है, कण्ठनली और टेंटुआके गुल्म-वायु-जनित और नर्त्तन रोगकी तरह लक्षण। कण्ठनलीको अकड़न, कण्ठमें यह ढेला रहनेका भाव या श्वास-रोधका भाव, एक प्रकारको कण्ठनलीकी हिस्टीरिया-जनित अकड़नकी भाँति अवस्था है। "कण्ठनलीमें सूखापन और जलन।'

पाकाशयकी बीमारियोंमें यदि आपने ऐसाफिटिडाके विशेष रोगी देखे होंगे, तो आपको आश्चर्य हुआ होगा, कि इतना वायु कहांसे आ जाता है, यह ढेर-का-ढेर होता है। "वक्षोदर मध्यस्थ-पेशीका हिचकीकी तरह सङ्कोचन।" वक्षोदर मध्यस्थ-पेशीका नर्त्तन रोगकी भाँति काँपना, साथ ही पोप-बन्दूक (छोटे लड़केकी बन्दूक) की आवाज़की तरह क्षण-क्षण भरपर वायुका निकलना। यह एक ऐसी अवस्था है, जिसपर रोगीका कोई भी अधिकार नहीं रहता, यह मानो छोटी बन्दूक छोड़नेकी भाँति जोरको गड़गड़ाहट तथा पाकाशयसे जोरकी आवाज़के साथ डकार आती है। पाठ्य-ग्रन्थमें कुछ ऐसे लक्षण लिखे हैं, जो ध्यान देने योग्य हैं। 'उदर-गह्वरमें स्पन्दन, यह दिखाई देता है और छूनेपर अनुभव होता है।" "दबाने, काटने और सुई गड़नेकी तरह दर्द।" यह स्पष्ट देखनेमें आया है, कि अधोवायु नहीं निकलता, बल्कि ऊपरसे निकलता है, डकार आती है। "डकार, इसमें लहसुनकी गन्ध आती है, स्वाद दुर्गन्धित तीव्र और सड़ा रहता है।" हमेशा बहुत ही ज्यादा बदबूदार, बदबू तो इस दवाका चरित्रगत लक्षण है और फिर "एकदम खालीपनका भाव पाकाशय-गह्वरमें आ जाता है," दर्द नहीं। "खानेके बाद स्पन्दन," पाकाशयका उदराध्मान।" इस दवामें बहुत-से पाकाशय और उदरकी शिकायतें हैं। पेट दर्दसे भरा रहता है, सुई गड़नेकी दर्द, शूलका दर्द। इसका अतिसार बहुत-कुछ कष्टदायक होता है। थोड़ा भी अनपच होनेपर, खाने-पीनेमें थोड़ी भी गड़बड़ी होनेपर अतिसार हो जाता है। दर्द-भरा पानीकी तरह अतिसार होता है। "बहुत ही बदबू-भरे पतले दस्त, कालापन लिये भूरा थलथला बदबूदार दस्त, जिससे आराम पहुँचता है।"

जननेन्द्रियमें नोचेकी ओर खिंचावका दर्द, गाड़ीकी सवारी करते समय बदतर हो जाता है। "जरायुका जखम, स्पर्श-असहिष्णु और दर्द-भरा रहता है।" जैसी धातु बतायी गयी है, उसमें यह जरायुके कर्कट-रोगकी घटानेमें

बहुत लाभदायक होता है। ये जिनका बैंगनी चेहरा रहता है, पीले चेहरेवाले नहीं, कमजोर, थुलथुली शैरिक प्रकृतिवाली स्त्रियोंकी ही रक्त-स्राव और गर्भ-पात हो जाया करता है। गर्भ न रहनेपर भी कभी-कभी स्त्रियोंके स्तनमें दूध आ जाता है। यह एक आश्चर्यजनक विरक्तिकर लक्षण है, कुछ दवाओंमें यह लक्षण है, उनमेंसे ही एक यह भी है। इसमें दूधकी कमी भी है। 'प्रसव होनेके दस दिन बाद ही दूध घट जाता है।"

इन रोगियोंकी कभी-कभी गुल्म वायु जनित दमा हो जाता है, श्वासकी सब तरहकी गड़बड़ियाँ, श्वास-कष्ट, "टे टुथाका दमा-जनित भाव।" जीवन-भरमें कम-से-कम दिनमें एक बार दमाका दौरा, प्रत्येक बार शारीरिक परिश्रम, सङ्गमके बाद, खासकर प्रत्येक तृप्तिकर भोजनके बाद दौरा हो जाता है।" ऐम्ब्रायोशियाकी तरह प्रत्येक बार सङ्गमके बाद श्वास-कष्ट। "सङ्ग करनेवाली खुसखुसी खाँसी, रातमें बढ़ जाती है।" इसकी बहुत-सी शिकायतें रातमें बढ़ जाती हैं, रातमें वृद्धि। उपदंशकी बीमारियाँ साधारणतः रातमें बढ़ जाया करती हैं और मर्क्यूरियस, स्टैफिसैग्रिया, हीपर, नाइट्रिक-एसिड प्रभृति उपदंश-निवारक दवाओंकी बीमारियाँ रातमें बढ़ जाया करती हैं। अन्य वक्षकी बीमारियोंमें जो बहुत प्रधान और निर्देशक हैं, उन्हें आगे बताता हूँ। "वक्षोस्थि (Sternum) में दबाव और जलन," "मानो किसी भारी बोझसे वक्ष दब रहा है।" "वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, थोड़ी-थोड़ी देरपर भीतरसे बाहरकी ओर एक बार सुई गड़नेकी तरह दर्द।"

यह दवा वात तथा गठियाके लक्षणोंसे भरी है, स्नायविक धातुवालोंकी साधारणतः गठियाकी बीमारी। जब ऐसे स्नायविक प्रकृतिवालोंको अन्तमें गठियाकी बीमारी होती है, तो अकसर स्नायविकता दूर हो जाती है, क्योंकि सन्धियोंमें जो तलछट जमता है, उससे इसमें आराम पहुँचता है, एक रूपान्तरका दृश्य हो जाता है।

वाहिनियोंमें फडकन होती है "करीब करीब सभी बीमारियोंके साथ स्नायविक उपदाहकी अधिकता (Erethism) या रक्तवाहिनियोंका भरापन दिखायी देता है।" हाथ-पैरोंकी नसोंका भरापन, यह तबतक होता रहता है, जबतक कमजोरीके साथ सूजन नही आ जाती, इस तरह इस दवामें स्वतंत्र शोथका भी लक्षण है। हाथ-पैरोंकी सूजन, दबानेपर गड्ढा पडता है, यह शोथ हृद्पिण्ड और यकृतके रोगोंके साथ होता है। समूचे शरीरमें रक्ताधिक्यकी एक झूठी अवस्था दिखायी देती है और अन्तमें गडबडी तथा उत्तेजना पैदा हो जाता है। शरीरमें भयंकर कामोत्तेजनका भाव रहता है, इसका पता कभी-कभी उस गर्मीसे लगता है जो उत्तेजनाके साथ तापकी झलकके रूपमें आती है। चचलता, समूचे शरीरमें ऐसा अनुभव होता है, मानो कोई भयकर बात होनेवाली है, फिर क्षणभरके लिये यह एक निश्चलताकी अवस्थामें जा पहुँचता है और फिर दुबारा अपने आप ही होने लगता है। यह भयकर कामोत्तेजन शरीर-विधानकी कोई गडबडी, किसी एक स्थानपर होने या दृढ हो जानेके पूर्व-रूपमें होती है। कभी-कभी तो यह हृद्पिण्डकी बीमारीके कारण होता है, जिसमें तेजीसे चलने या सीढीपर चढनेके समय श्वासकष्टके साथ वक्षोस्थिके पीछेकी ओर दर्द होता है। हृदावरक झिल्ली-प्रदाहकी वजहसे भी शरीरमें यह गडबडी हो सकती है। धीरे-धीरे पेशाबमें अण्डलालकी जाँच कीजिये, यकृतकी वृद्धिको देखिये, जरायुके कैन्सर तथा बद्धमूल रोगोंको देखिये।

"हड्डियोंमें छेदनेकी तरह दर्द," "दर्दसे रोगी हताश हो जाता है" दर्दके कारण रोगीको रातमें बिछावन त्यागकर टहलना पडता है। यह पुराने उपदंश-जनित हड्डियोंके दर्दमें दिखायी देता है तथा पुराने पारद सेवन करनेवाले रोगियोंको होता है। जीवनभर रोगी **पारद** सेवन करता रहा है, और उसका यकृत बढ गया है तथा उसकी सन्धियाँ भी बडी हो गयी हैं। अपने कष्टदायक रोगोंसे आराम पानेके लिये वह प्रत्येक चिकित्सकके पास जाता है। **पारद** और रोग इस तरह मिल गये हैं, कि आपके पहले ही नुस्खेसे एक भयकर गडबडी मच जायगी, वह इन्ही अत्याचारों और सामयिक आक्रमणोंके स्तरमें रहेगा आपकी आरम, **चेलिडोनियम** और **स्टैफि-सेग्रिया** जैसी दवाएँ रोगीको इन भयकर आक्रमणोंसे बचानेके लिये देनी होंगी, जिन्हें बाध्य होकर उसे भोगना पडता है।

इस औषधिका ग्रन्थियोंपर भी आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। कर्णमूल-ग्रन्थियाँ, वक्षण-प्रदेशकी ग्रन्थियाँ तथा तलपेटकी लसिका ग्रन्थियोंपर सचमुचमें सभी ग्रन्थियोंपर इसका आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ता है। स्तन-ग्रन्थि, अण्डकोष तथा डिम्बकोषकी बीमारियाँ होती हैं तथा इनमें कड़ापन और रस-स्राव होता है। अण्डकोषकी पुरानी अभिवृद्धिकी तथा स्तन-ग्रन्थिके गूमड़को आरम आरोग्य कर देता है। आरमसे इन ग्रन्थियोंके कौशिक-प्रकृतिके अर्बुद आरोग्य हुए हैं। हनिमैनने आरमकी शक्तिकृतकर, उससे थोड़ा-सा एक रोगीको दिया। इससे उसपर कोई क्रिया न हुई। लेकिन उन्होंने इसका इतना विचूर्ण किया, कि अन्तमें वह पन्द्रहवी शक्तितक पहुँच गया। तब इसने क्रिया की और उस रोगीको फिरसे जीवन प्रदान किया। हनिमैन कहते हैं, कि आरम्भिक विचूर्णों में माला इतनी अधिक थी कि रोगी आरोग्य न हो सकता था, अतएव वे उच्चतर चढ़ते गये, यहाँतक कि वह काफी रूपमें क्षुद्र हो गया और आरोग्य करने योग्य हो गया। यह इतना सूक्ष्म हो गया, कि शरीर-विधानके अन्तरतम प्रदेशमें मनुष्यके अनेकानेक आवरणोंके भीतरसे पहुँच सके।

आरमकी दशाका एक और भी विशद लक्षण है। यह वह तरीका है, जिसमें रोगी तापकी घटी-बढ़ी तथा ऋतु-परिवर्त्तनसे प्रभावित होता है, सम्पूर्ण मानवसे सम्बन्ध रखनेवाले कुछ लक्षण यहाँ बताये जाते हैं, जिनकी इस सम्बन्धमें परीक्षा करनी चाहिये। "खुली हवाकी इच्छा।' तापमानके सम्बन्धमें रोगी **पल्सेटिला**की श्रेणीमें आता है पर आरमका रोगी विनम्र कोमल प्रकृतिका, शरीफ और सहजमें ही मान जानेवाला नहीं होता, बल्कि वह **पल्सेटिला**के रोगीके ठीक विपरीत, जिद्दी और चिड़चिड़ा होता है। "अकसर गर्म हो जानेपर रोग बढ़ता है।" यह सर-दर्दके सम्बन्धमें है। "ठण्डे पानीसे आँखका दर्द घटता है, खुले रहनेकी इच्छा नहीं होती, पर **पल्सेटिला**की तरह वह ठण्डी हवाकी इच्छा करता है। गर्म हवामें, दमामें घटता है," बहुतसे लक्षण धोनेके बाद गायब हो जाते हैं। खासकर ठण्डे पानीसे शरीर धोनेपर, जब कभी रोगी तीव्र उत्तेजना, गड़बड़ी तथा रक्त-वाहिनियोंकी पूर्णता, प्रकृतिगत काम-भाव, स्पन्दन प्रभृतिसे कष्ट पाता रहता है, तो वह दरवाजे, खिड़कियाँ खुली रखना चाहता है तथा घरके बाहर ठण्डी हवामें जाना चाहता है, कपड़े उतार फेंकना चाहता है। खुली हवासे यह उत्तेजना और फड़कन घट जाती है। वय सन्धि कालमें यह

तापकी झलक स्त्रियोंमें बहुत साधारण है और इसके बाद ही पसीना और कभी-कभी सिहरावन पैदा हो जाता है।

जो कुछ अबतक मैंने इस दवाके सम्बन्धमें कहा है, वह इसके साधारण स्वरूपके सम्बन्धमें है, क्योंकि मनके सम्बन्धकी प्रत्येक बात साधारण है।

आरममें बहुत तेज़ सर-दर्द होता है, पागल बना देता है, अकसर इसके साथ ही एक ऐसी अनुभूति होती है, मानो उसपरसे हवा बह रही है। वह चारों तरफ देखता है, कि किसीके न रहनेपर भी यह हवाका झोंका कहाँसे आ रहा है। बहुत अधिक स्पर्श-कातर रहता है। यद्यपि उसे गर्मी मालूम होती है, पर अकसर सरमें कपड़ा लपेट लेता है, साथ ही सरमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय और खूनका दौरान हो जाया करता है। सरमें यन्त्रणा रहती है और कुचल जानेकी तरह मालूम होता है। माथेमें सुई गड़ने, जलन करने और फाड़नेकी तरह दर्द, माथेमें बहुत ज्यादा टपक, चित्ती-चित्ती, तमतमाया तथा माथेमें रक्त-सञ्चयके साथ चेहरा चमकीला रहता है। ऐसा सर-दर्द अकसर उपदंशके रोगियोंको होता है और इसके साथ ही अकसर हृत्पिण्डकी बीमारी भी सम्मिलित रहती है। हृत्पिण्डके रोगके साथ माथेके पिछले भागमें दर्द, खूनका दौरान शिथिल, चेहरा बैंगनी तथा चर्म मलिन रहता है। उपदंशकी तरह अस्थि-प्रवर्द्धन (Exostosis), खोपड़ीकी हड्डियोंको छूनेपर स्पर्श सहन नहीं होता, अस्थि-आवरण छूनेपर दर्द होता है। हड्डीके रोगके साथ पुराने पारद-दूषित रोगियोंमें तथा खोपड़ीके अस्थि-क्षत रोगमें, जैसा कि उपदंश और पारदमें होता है, केश बहुत ज्यादा झड़ जाते हैं, सिर खल्वाट हो जाता है। उपदंशके कारण खल्वाट हो जाना, खोपड़ी चमकती हुई रह जाती है और केश फिर नहीं उत्पन्न होंगे। नयी बीमारियोंमें केश झड़ जाते हैं, पर फिर निकल आते हैं, परन्तु उपदंश-ग्रसित छोटे बच्चोंके केश अकसर झड़ जाते हैं और वे जीवनभर खल्वाट ही बने रहते हैं।

श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी प्रकृतिवाली आँखकी बीमारियाँ भी हो जाती हैं, यहाँतक कि आँखोंके कितने ही आवरणोंका जख्म और भीतरी रस-स्राव भी होने लगता है। चक्षुतारकाका प्रदाह, समस्त दृष्टि-यन्त्रकी बहुत विशृं-खलता है। किताबसे मैं कुछ आश्चर्यजनक लक्षण पढ़ता हूँ, पर हमेशा रोगीकी धातुगत-प्रकृतिपर भी ध्यान रखना चाहिये। याद कीजिये, मानसिक अवस्था, पारद तथा उपदंशकी अवस्था, मांस-प्रवणता तथा सन्धियोंमें होनेवाले

रोग तथा हृत्पिण्डकी विशृङ्खलता। आँखके लक्षणोंकी आलोचना करते समय, हमें इसके रोगियोंमें इसी तरहकी धातुगत-प्रकृति सम्मिलित दिखाई देती है। "रोशनीका सहन न होना (Photophobia)।" आँखें तथा दृष्टि कमजोर। "गैसकी रोशनीमें कितने ही चमकीले, उतराते दाग और चकत्ते दिखाई देते हैं।" "चन्द्रमाकी चादनीमें आँखोंकी आराम मिलता है।" 'बड़े बड़े अक्षरोंका प्रभेद नहीं किया जा सकता।" "दृष्टि पथमें पीले अर्द्धचन्द्राकार पदार्थ टेढ़े-मेढ़े भावसे उड़ते दिखाई देते हैं।" 'दृष्टि-क्षेत्रके ऊपरी अधेरे किनारोंमें अकसर चमकीले तारोंकी तरह पदार्थ दिखाई देते हैं।" **कोल्कोरियामें** एक विचित्र लक्षण है। दृष्टि-क्षेत्रके निम्न अंशसे रोगीको एकाएक चमक उठते दिखाई देता है, यह ऊपर धक्का देती है और बँट जाती है और इसके बाद रोगीको हर तरफ तारे-ही-तारे दिखाई देते हैं। यह ठीक वैसा ही दिखाई देता है, जैसा आसमान तारा छोड़नेपर वह ऊपर जाकर फटता है और उसमेंसे फूलझड़ी निकलती है। यह **कोल्कोरियामें** देखा गया है।" बायी आँखका अर्द्ध दृष्टि दोष और इस तरह कितनी ही ऐसी विचित्र ढङ्गकी चीजें दिखाई देती हैं, जो पाठ्य-ग्रन्थकी भाषाके अलावा अन्य भाषामें मुश्किलसे वर्णन की जा सकती है। 'बहिरागत चक्षु (Protruding eyes) आँखका गोला बाहर निकला हुआ, जैसा कि उस घेघा (गलगण्ड) में दिखाई देता है। जिसमें आँखका गोला बाहरकी ओर निकल आता है, इसके साथ ही हृत्पिण्डकी अभिवृद्धि, आरमसे आरोग्य हुआ है। तीव्र तथा पूर्ण नाड़ीके साथ चुल्लिका ग्रन्थि (Thyroid gland) की अभिवृद्धि। आरम और **नेट्रम-म्यूरसे** आँखका गोला बाहर निकलनेके साथ गलगण्ड आरोग्य किया गया है। "टकटकी लगी विपन्न दृष्टि।" "आँखके चारों तरफ होनेवाले तेज दर्दके साथ चक्षुतारकाका प्रदाह, यह दर्द गहराईपर हड्डीमें मालूम होता है।" **मर्करीसे** चिकित्सा होनेवाले उपदंशके द्वारा ही ऐसी दशा उत्पन्न की जा सकती है तथा आरम उपदंश और **मर्करी** दोनोंके लिये ही प्रति-विषका काम करेगा। "पुतलियाँ असम भावसे फैलीं।" इसमें आँखोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहवाली अवस्था रहती है। इसमें चक्षु शुक्ल-मण्डल (Conjunctiva), कृष्ण-मण्डल (Choroid), चक्षुतारका (Iris) और चक्षु-चित्रपत्र (Retina) का प्रदाह है। हाँ, उपदंश ऐसा करता है। इसी तरह आँखोंकी पकड़ता है और उसमें भीतरी रस स्राव बहुत ज्यादा

उत्पन्न करता है। आँखके चारों ओर दर्द, पतली फलकास्थियाँ (Plate-bones) तथा करोटीकी अस्थियाँ (Skull-bones), सभीमें दबानेपर बहुत अधिक स्पर्श अनुभव होता है। हड्डियाँ दर्द-भरी मालूम होती हैं, अस्थि-आवरणका प्रदाह (Periostitis), कनीनिकाका धुँधलापन (Opacity of the cornea)।

उपदंशका आक्रमण अकसर कानोंपर भी होता है, इस यन्त्रकी हड्डियोंपर प्रभाव डालता है। "कनपटीकी हड्डीके पिछले उभारकी अस्थिका जखम (Caries of mastoid process), बहुत बदबूदार कानका मवाद बहना।" 'कानकी अस्थिका अस्थि-क्षत', "कर्णमूल-ग्रन्थि फूली, छूनेसे दर्द होता है।' "आवाजका बहुत अधिक अनुभव होता है, पर सङ्गीतसे आराम पहुँचता है।" "भनभनाने, गुनगुनाने, सरसरानेकी आवाज़ कानमें आती है।" पानी गिरने या हवा घुसनेकी तरह सो-सो आवाज़। "नाक और कानमें विरक्तिकर सूखापन।" यह सब कुछ उपदंशके उपसर्गकी तरह है, जो आरमसे आरोग्य कर दिया जाता है, पर आरम अकसर उपयोगी होता है और इसने कितनी ही बार आरक्त ज्वरके बाद होनेवाले कर्ण-स्रावको आरोग्य किया है, जिसमें कि समूचा कर्ण-पटल तथा हड्डियोंका क्षय हो गया था। अलबत्ता, इसने श्रवण-शक्ति फिरसे उत्पन्न नहीं की। कानकी तकलीफके रोगी आपके पास आयेंगे और आप देखेंगे, कि सम्पूर्ण कर्ण-यन्त्र नष्ट हो गया है, समस्त श्लैष्मिक-झिल्ली और कानकी हड्डीपर जखम और अस्थि-क्षत हो रहा है और उससे बदबूदार मवाद आता है। रोगी आपसे श्रवण-शक्ति वापस आ जानेके विषयमें पूछता है, पर यह सम्भव नहीं भी हो सकता है, कानका मवाद आना बन्द होना तथा सुननेकी ताकतका लौट आना, ये ही दो बातें वह सोचता है। यदि आज आप कर्ण-विशेषज्ञके पास जायें तथा रोगीके आरोग्यके विषयमें बातें करें, तो वे नहीं समझेंगे कि आप क्या कह रहे हैं, केवल यही बात सोची जायगी, कि जहाँतक जल्द सम्भव हो, यह कानसे मवाद आना रोक दिया जाये। वह यह देखनेके लिये कान देखेंगे, कि वह अक्षत है या नहीं, यदि नहीं है, तो श्रवण-शक्ति अवश्य ही चली गयी है, बस फिर स्राव रोकनेपर ही एकदम ध्यान दिया जाता है। होमियोपैथीकी यह शिक्षा है, कि रोगीकी चिकित्सा होनी चाहिये। केवल रोगीकी, इसके बाद यन्त्र

और तन्तु सब तो आप-से-आप स्वाभाविक अवस्थामें आ जायँगे। किसी चिकित्सकका सम्पूर्ण कर्त्तव्य यह है, कि रोगीको स्वस्थ अवस्थामें लावे। नाकके विशेषज्ञ हैं, पर वह स्थानिक लगानेकी दवा देंगे, इन चीजोंसे केवल अस्थि-रोग तथा गुटिका दोष सम्बन्धी तकलीफें उत्पन्न होती हैं, इनसे नाकसे स्राव आना बन्द हो जाता है और इसमें सन्देह नहीं, कि प्रकृतिको कोई-न-कोई निकासीका रास्ता चाहिये हो और इसीलिये वह वक्षका स्राव पैदा कर देती है। रोग श्लैष्मिक-झिल्लीसे फेफड़ेमें चला जाता है, फेफड़ेके जालकी तरहवाले उपादान (parenchyma) में जा पहुँचता है। यह अकसर गुटिका-दोषकी प्रकृतिका होता है। इसके बाद ये मनुष्य आपसे कहेंगे कि क्षयके कीटाणु उत्पन्न हो गये हैं, यह एक भ्रान्त विज्ञान है। साफ, स्वस्थ तन्तु ही एकमात्र रक्षक है।

आरम नाकके रोगोंसे भी भरा है। इसका स्राव बदबूदार होता है, नाककी हड्डियामें जखम हो जाता है, उपदंशकी वजहसे पैदा हुआ हड्डीका जखम नाकके नीचेकी ओर चिपटी हो जाती है, हड्डियाँ निकलने लगती है। आप चौड़ी नाकवाले मनुष्यको घूमते हुए देखे और उनके पास जाये, तो बदबू मालूम होगी। ये सभी उपदंश ग्रस्त हैं। कुछ दवाओंमें यह उपदंशज नाकको आरोग्य करनेकी शक्ति है। इनमें तीन है,—आरम, **मर्क्युरी** और **हीपर**। मैंने कितनी ही बार यह अवस्था **हीपर**से आरोग्य की है। मैंने एक बार एक मनुष्यको आरोग्य किया है, जब कि हड्डियाँतक कोमल हो गयी थी, इतनी कि जब नाक पकड़ी जाती थी तो दाहिनी ओर झुक जाती थी, केवल एक तरहकी उपास्थि जैसी बनावट नाकको अपनी जगहपर रखे हुए थी। मैंने उस रोगीको **हीपर** दिया। वृथा **मर्क्युरी** बहुत ज्यादा खानेपर भी उसका उपदंश रोग इसने आरोग्य कर दिया। "नाकसे सर्दीका स्राव, गाढ़ा स्राव, मानो अण्डेका सफेद अंश हो।" सवेरेके वक्त पश्चात् नासा-रन्ध्रसे श्लेष्माका स्राव।" नाककी नोंक गठीला, लाल **लेकिसिस**को तरह, लाल नाक। हृत्पिण्डके रोगोंमें नाकपर शिरा-स्फीतिसे उत्पन्न छोटी-छोटी गाँठ, इसके साथ हृत्पिण्डके दाहिनी ओरकी गड़बड़ी, यह कभी-कभी पुरानी शराबी और हृत्पिण्डके रोगवाले रोगियोंमें अमूमन दिखाई देती है। चेहरा लाल और फूला। आरमने नासा-प्राचीर तथा ओंठका त्वचार्बुद आरोग्य कर दिया है। याद रखिये नाकसे आनेवाली

इस दवामें दर्द एक सन्धिसे दूसरीपर इस तरह भ्रमण किया करता है और अन्तमें हृत्पिण्डमें जाकर ठहर जाता है। एक सन्धिसे दूसरी सन्धिपर घूमनेवाले वातका ही परिणाम हृदशूल (Angina pectoris) है। "कष्टकर श्वास-प्रश्वास।" यदि रोगी कुछ और भी आगे बढ़ जाता है, तो खूनके चकत्ते हो जाते हैं और यदि रोगी दाहिनी करवट सोता है, तो निम्न भागमें आघातनके समय ठोस आवाज़ आती है तथा ऊपरके अग्रमें खोखली आवाज़ मिलती है। बहुत घबड़ाहटके साथ कलेजेमें धड़कन, तेज़ चलनेके समय और सीढ़ीपर चढ़नेके समय निम्नाङ्गके शोथके साथ हृत्पिण्डके स्थानपर बहुत ज्यादा दबाव मालूम होता है।

आरम म्यूरियेटिकम।

(Aurum Muriaticum)

यह दवा मन और शरीरपर गहरी क्रिया किया करती है। जिन रोगियोंको प्रच्छन्न उपदंश रहता है, वे इसे सहन नहीं कर सकते तथा उनकी बीमारियोंमें इसकी अकसर जरूरत पड़ा करती है। इसमें हड्डी और दर्दोंके बहुत-से लक्षण हैं और ये लक्षण रातके समय ही बढ़ते हैं। इसकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाहवाली अवस्था बहुत कुछ पुराने उपदंश रोगियों जैसी ही होती है, जिसकी **मर्करी** और **आयोडाइड** द्वारा बहुत दिनोंतक चिकित्सा होती रही है। यह एक वातज प्रकृति भी है तथा नये और पुराने वातमें यह उपयोगिनी होती है। इसने उस वातज ज्वरको आरोग्य किया है, जिनमें सन्धियोंपर विशेष रोगका आक्रमण हुआ था, पर अब वे सन्धियाँ अच्छी हैं तथा रोगका घर अब हृत्पिण्ड बन गया है। बहुत-से उपसर्ग हृद्रोगसे सम्मिलित रहते हुए रोगके कारण, यकृतके कारण, स्वल्पविराम ज्वर या आरक्त ज्वरके बाद पेशाबमें अण्डलालके साथ शोथज अवस्था, जिस अवस्थामें पुराने गर्मी रोगवालोंका मांस क्षय होने लगता है, ग्रन्थियाँ तथा प्रादाहित अंश कड़े पड़ जाते हैं। कर्कटिकाकी ग्रन्थि (Cancerous glands) में भी यह लाभदायक होता है। अस्थि तथा अस्थि-आवरणका प्रदाह, अस्थि-क्षय,

छिपे उपदंशमें मर्क्यूरी सेवनके बाद अस्थिका बढ़ जाना। सन्धियोंका अस्थि-क्षत रोग, जिनमें रातमें छेदने और चबानेकी तरह दर्द होता है। इसमें बहुत से अंशोंमें जलनकी तरह दर्द होता है। दर्द फाड़ने, खींचने, दबाने और सुई गड़नेकी तरह होता है। कितने ही लक्षण आराम करनेके समय और कितने ही हिलने-डोलनेके समय उत्पन्न होते हैं। ठण्डी, तर हवामें लक्षण घटते हैं, गर्म हवा, गर्म बिछावन, गर्म कमरा, गर्म ओढ़ना, यहांतक कि खुली हवामें भी गर्म हो जाना और साधारणतः गर्मीसे साधारण भाव बढ़ जाते हैं। परिश्रम तथा चलना भी कितने ही लक्षणोंकी वृद्धि कर देता है। चलने और परिश्रम करनेपर कलेजेमें धड़कन, श्वासरोध और बहुत कमजोरी आ जाती है। यद्यपि खुली हवासे रोग-लक्षण घटते हैं, इतनेपर भी इसका रोगी खुली हवामें भी परिश्रम नहीं कर सकता, तेज़ चलना तो असम्भव ही है, स्नायविक लक्षण भी बहुत अधिक स्पष्ट रहते हैं। उत्तेजना, आवाजका सहन न होना, किसीके बोलनेपर चौंक उठना, नीदमें चौंक पड़ना। जब ये लक्षण हृत्पिण्ड तथा यकृत रोगके साथ आते हैं, तो यह दवा विशेषकर उपयोगी होती है। इस दवाका एक सुदृढ़ स्वरूप है—समूचे शरीरकी शिराओंका भर जाना। सूजाक और उपदंशके पुराने प्रभावोंसे कष्ट पानेवाले रोगियोंको यह बहुत ही लाभदायक दवा है। जहां मसे और उपदंशके जखम साथ ही-साथ मौजूद रहते हैं।

मानसिक लक्षण विशेषकर वैसे ही हैं, जैसे आरममें पाये जाते हैं। इसमें भी वही आत्मघातकी प्रवृत्ति रहती है। उसका मन उसके भग्न स्वास्थ्यपर इतना जमा रहता है, कि अन्तमें वह निरुत्साह हो जाता है और मृत्युकी कामना करता है। वह अपने जीवनपर घृणा करता है, रोता है और अपने व्यवसायसे अनिच्छा प्रकट करता है। शिथिल। पुराने उपदंश रोगियोंका चित्त-विभ्रम। कलेजेकी धड़कनके कारण अत्यन्त चिन्तित।

कहा जाता है, कि यह खाम-खयाल और भ्रमोंसे भरी है।" बहुत अधिक उत्तेजनाशील, उसे किसी तरह भी प्रसन्न नहीं किया जा सकता, हमेशा चिढ़ता रहता है, अत्यधिक मानसिक और शारीरिक बेचैनी, वह राहमें धीरे-धीरे चलता है, ठण्डी हवामें रहनेके लिये, जिससे उसकी तकलीफें घटती हैं। घर तथा बन्द कमरेमें उसकी हालत और भी बदतर होती है। अपने रोगके विषयमें सोचनेपर उसका कलेजा जोर-जोरसे और

तेजीसे धड़कने लगता है। डर जाने, विरक्त होने और इन्द्रिय-निग्रहपर उसके लक्षण और भी बदतर हो जाते हैं। जब ऊपरवाले साधारण लक्षण बहुत प्रधानता प्राप्त करते हैं, तो इससे नीचे लिखे कितने ही लक्षण आरोग्य हो जायेंगे।

इससे सरमें चक्करके साथ तेज़ सर-दर्द आरोग्य हो जाता है। बायें मस्तिष्कमें तेज़ सर-दर्द, कपालमें बहुत तेज़ यन्त्रणा रहती है, पश्चात् मस्तिष्कमें जलन, मधुमस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय, माथेमें धमक मालूम होना, सर्द प्रयोगसे दर्द घटता है, उसका ललाट गर्म रहता है, सरमें गर्मी और हाथ-पैर ठण्ढे, अस्थि-आवरणमें बहुत यन्त्रणा तथा करोटीका अस्थि-शोथ, करोटीमें फाड़नेकी तरह दर्द, रातमें बढ़ जाता है।

उपदंशके कारण पुरानी आंखकी बीमारियाँ यह आरोग्य करता है। चक्षु-गोलक तथा पलकोंकी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ लाल हो जाती हैं, मोटी पड़ जाती हैं और बहुत डोरोंसे भर जाती हैं। सवेरे पलकें आपसमें सट जाती हैं। शामको कृत्रिम रोशनीमें धुँधला दिखाई देता है। उपदंश और आरक्त ज्वरके बाद दृष्टि-शक्तिका लोप हो जाना, बहुत धीमी गतिसे दृष्टि ठहरती है। दृष्टि-क्षीणता, पलकोंके किनारेका पुराना प्रदाह, आँखोंमें जलनका दर्द।

बहरापनके बाद कानमें भनभनाहट, बाजा बजनेकी आवाज़ और गरजना। एक ऐसी अनुभूति, मानो कान बहुत खुले हुए हैं। सङ्गीतसे कानके लक्षणोंको आराम पहुँचता है। कानके पीछे अकौता, रातमें कानके पीछे जलन और खुजली।

जिन रोगियोंको गर्म कमरा सहन नहीं होता, उनकी नाककी सर्दीमें यह बहुत उपयोगी होता है। इस सम्बन्धमें यह **पल्सेटिला** और **कैलि-सल्फरिकम**की श्रेणीमें आती है, क्योंकि इन दोनोंमें ही खुली हवामें रोगी अच्छे रहते हैं। इस दवाका स्राव पतला या पीबकी तरह गाढ़ा, बहुत बदबूदार और कभी-कभी खून-भरा होता है तथा नाकमें बहुत-सी कड़ी खरोंटे जमती हैं। इन खरोंटोंको नाक छिड़ककर निकालनेके समय खून निकलता है। पीला, हरापन लिये स्राव। यह उपदंश-जनित कठिन सर्दीको आरोग्य करता है। नाककी हड्डियोंको दबानेसे स्पर्श बहुत अधिक अनुभव होता है। नाककी हड्डीका अस्थि-क्षत रोग, नाक लाल फूली हुई, नासा-प्राचीरमें

गहरे फटे घाव, नासा प्राचीरका गूमड रोग, वंशगत रूपसे उपदंश प्राप्त करनेवाले बच्चे, जिनके नाकसे सर्दीका स्राव होता है और नाक धँसी रहती है।

हृत्पिण्डकी बीमारियाँ, गर्दन और चेहरा पीला चकत्तेदार रहनेके साथ-ही-साथ ठीक फोडेकी तरह घेरा बँधा लाल चेहरा, थोडा सा भी परिश्रम करनेपर कलेजा धडकने लगना, चलनेके समय वक्षोस्थिके पिछले भागमें दर्द, बन्द कमरेमें दम घुटने लगता है, रोगी ठण्डी हवाकी इच्छा करता है, धीरे धीरे चलनेपर तकलीफ़ घटती है तथा हमें ऐसा-ऐसा सम्मिलन प्राप्त होता है जिसे यह दवा अकसर आरोग्य कर देती है। प्रत्येक गालपर लाल दागके साथ पीला चेहरा, यह वह नहीं है, जो यक्ष्मामें प्राप्त होता है, बल्कि हृत्पिण्डकी बीमारीमें। बच्चेका चेहरा बुड्ढोंकी तरह दिखाई देता है। चेहरेपर मुँहासे बहुत बीमार आदमीका चेहरा भी अकसर लाल और स्वास्थ्य-पूर्ण दिखाई देता है। शिराओंके अवरोधके कारण लाल चेहरा, यह एक झूठी रक्तपूर्णताकी अवस्था है, जैसी कि **आरम**में बतायी जा चुकी है। **फास्फोरस**की तरह निम्न-हनुका अस्थि-क्षत तथा दाहिनी कपोलास्थिका अस्वाभाविक रूपसे हड्डी बढना। ओंठोंमें जलन और सूजन, कड़े ओंठ, ओंठका कर्कटिका जखम। निम्न-हनुकी ग्रन्थिकी दर्द-भरी सूजन।

जीभके कर्कट-रोगमें भी यह फायदा करता है। जीभका प्रदाह और इसके बाद कड़ापन आ जाना। सूखी लाल तथा खाल उधडी जीभ, जीभपर मसे निकलना। धातुका स्वाद और लार बहना।

कण्ठमें दर्द और जखम, तालुमूल-ग्रन्थिका जखम, सूखेपनके साथ गलेका प्रदाह।

पाकाशय बहुत कमजोर तथा पाचन बहुत धीमा रहता है। मिचली, पेटका तन जाना तथा भोजनके बाद अतिसार। काफी, चाय और शराब नुकसान करती है। खट्टी डकारें आती हैं। सबेरेके वक्त मिचली, जलपानके बाद अच्छी रहती है। हरे तरल पदार्थका वमन। पाकाशयका प्रदाह तथा पाकाशयमें मरोड़। जलन तथा तेज़ प्यासके साथ पाकाशयमें तेज़ दर्द।

यकृत और प्लीहाकी विवृद्धि। यकृतका पुराना प्रदाह। यकृत बड़ा और कड़ा रहता है। यकृतमें जलन, यकृत प्रदेशमें कसावटका भाव। हृत्पिण्डके रोगके साथ और पेशाबमें अण्डलाल तथा प्रत्यङ्गमें शोथके साथ सम्मिलित यकृतकी बीमारियाँ।

औदरिक शोथ। वायुके कारण खींचनकी तरह दर्द तथा प्रसारण, तलपेटमें बहुत अधिक स्पर्श-असहिष्णुता।

बार बार पतले दस्त, भूरे, सफ़ेद, पित्त-रहित। यकृतकी बीमारीके साथ अतिसार या बाहरी रोगके साथ पतले दस्त आना। अतिसार रातमें बढ़ जाता है। दस्तके समय खून आनेवाली बवासीर, बहुत ज्यादा रस बहनेके समय मलद्वारके चारों ओर मानो मसोंका एक छल्ला बना रहता है। मलद्वारके चारों ओरकी बहुत-सी खाल उधड़ जाती है। इसने भगन्दरको आरोग्य किया है। ज़ख़मके साथ मलद्वारके मसे।

दिन-रात बार-बार पेशाब होता है, पर रातमें बहुत ज्यादा होता है। पेशाब टपका करता है। पेशाबका वेग बढ़ा हुआ। पेशाब गदला, लाल तली जमती है। कुचिकित्सित पुराने उपदंश-ग्रस्तोंका सूज़ाक, लिङ्गाग्र-चर्म और मुष्कमें कठिन घत उपदंशके घाव। लिङ्ग-मुष्क और मलद्वारमें फूलकोबीकी तरह मसे। बायें पुट्ठेमें बाघी। कामेच्छा घटी हुई, अण्डोंका कड़ापन।

जरायुकी विवृद्धि और बहुत कड़ापन। जरायु-ग्रीवा कठिन। जरायु तथा डिम्बकोषका पुराना प्रदाह। ऋतु स्राव बार-बार और बहुत ज्यादा। स्राव खाल उधेड़नेवाला। बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव, स्राव पीला होता है। जरायु अपनी जगहसे हटा और भारी। योनि और भगोष्ठका प्रदाह। सूज़ाक और पुट्ठेकी गांठोंका फूलना। योनि और भगोष्ठोंमें गर्मी, जलन और खुजलाहट।

गर्म कमरेमें, गर्म कपड़ेसे और सीढ़ी चढ़नेपर तथा तेज़ चलनेपर दम घुटने लगता है। रातमें श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है। रातमें सूखी आपेक्षिक खांसी आती है। हृत्पिण्डके दोषके कारण खांसी। ढीली खांसी, जिसमें गाढ़ा पीला बलगम निकलता है। तेज़ चलनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर या परिश्रम करनेपर कलेजेमें धड़कनके साथ वक्षोस्थिके नीचे बहुत ही कष्टदायक दबाव मानो वह फट जायगा। दबाव और उत्तेजनासे कलेजेमें धड़कन, एकाएक बोल उठनेपर कलेजेमें धड़कन। एक जगहसे दूसरी जगह हटनेवाला वक्षका तेज़ दर्द। हृत्पिण्डमें दर्द, हृत्पिण्डमें खींचने और काटनेकी तरह दर्द, हृत्पिण्ड-प्रदेशमें तीव्र दबाव, हृत्पिण्डकी यन्त्रणा, हृत्शूल, हृदावरक झिल्ली-प्रदाह, दाहिनी ओरका वर्द्धित हृत्पिण्ड। हृत्पिण्डकी धड़कनके कारण रोगिनीको रातमें नींद नहीं आती। वात-ग्रस्त हृत्पिण्ड। मानसिक

परिश्रमके कारण हृदस्पन्दन, नाड़ी क्षुद्र, कमजोर और तेज़, हृत्पिण्ड कामजोर रहता है, गर्दन और कनपटीमें धमक सबसे ज्यादा रहती है, तेज़ अनियमित हृत्पिण्ड।

सवेरे हाथका काँपना, हाथमें झटका लगना, जलन और अग्रबाहुमें धक्का देनेकी तरह दर्द। कन्धोंमें खींचन, गर्म बिछावन और आरामके समय बदतर हो जाता है। कन्धोंमें फाड़नेकी तरह दर्द, बाहु तथा अंगुलियोंमें कड़ापन।

निम्नाङ्गोंकी शोथज सूजन, जंघास्थिकी अस्वाभाविक वृद्धि, भगोष्ठकी आवरक-झिल्लीका प्रदाह, जंघास्थिमें बहुत अधिक स्पर्श-द्वेष रातमें पैरमें दर्द, पैरोंमें जलन, गर्मी और हिलने-डोलनेपर पैरका दर्द बदतर हो जाता है। चलनेके समय अंगूठेमें काटनेकी तरह दर्द, अंगूठेमें जलन, लाली तथा सूजन। प्रत्यङ्ग ठण्डे तथा ठण्डे पसीनेसे भरे, सभी प्रत्यङ्गोंमें खींचन और फाड़नेकी तरह दर्द। निम्न अङ्गका शैरिक रक्त-सञ्चय।

उत्तेजना और कलेजेकी धड़कनके कारण नींद न आना चिहुँककर जाग पड़ता है। भयङ्कर सपने, उदासीके कष्टदायक सपने।

बैप्टीशिया।

(*Baptisia*)

बैप्टीशिया नयी बीमारियोंके लिये लाभदायक है। यह वास्तवमें एक लघु-क्रियात्मक औषधि है, उन बीमारियोंमें लाभ करती है, जो दीर्घकालीन नहीं होतीं। जहाँतक हमें मालूम हुआ है, यह सोरा-नाशक नहीं है तथा जीवनपर गहराईतक क्रिया भी नहीं करती। इसकी सभी नयी बीमारियोंको और उपसर्गोंका रूप रस-रक्त बिगड़नेवाला रहता है, जैसे कि आरक्त ज्वर, डिफ्थीरिया, टाइफायड (सान्निपातिक) तथा सड़नेवाली बीमारियाँ। इसमें एक बात गैरमामूली है अर्थात् यह दूसरी दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा तेजीसे सड़नेवाली अवस्था लाती है। **आर्सेनिक, फास्फोरस, रसटक्स** और **ब्रायोनिया**के रस रक्त बिगाड़नेवाले उपसर्ग बहुत धीरे-धीरे उत्पन्न होते हैं, परन्तु बैप्टीशिया टाइफायड (सान्निपातिक) ज्वरोंके लिये उपयोगी है, जो

तेजीसे आते हैं और इसीलिये यह धीमी गतिसे बढनेवाले टाइफायडके लिये अकसर लाभदायक नहीं होती। जब कोई मनुष्य एकाएक सर्दी लगकर, मलेरियासे, जहरीला पानी पी लेनेके कारण बीमार हो जाता है तथा किसी रस रक्त विकार या पीव इत्यादिका विष फैलनेके कारण बीमार पडता है, तो चार-पाँच या छः सप्ताहतक भोगनेके बदले, वह कई दिनोंमें ही खाटमें सट जाता है। पुराने ढंगमें सान्निपातिक ज्वर धीमी गतिसे आते हैं। बेप्टीशिया इन विषैले रक्तोंके लिये उपयोगी है, जिनकी प्रकृति सडनेवाली रहती है, जैसे कि सूतिकावस्था, आरक्त ज्वर। रोगी एकाएक स्वल्प-विराम ज्वर (Remittent fever) से बीमार होता है, पर एकाएक इसका रूप बदलकर सविराम हो जाता है तथा पचनशील लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। यह तो इसकी तेजी और गति हुई। प्रत्येक औषधिकी तेजी, उसकी चाल, उसकी सामयिकता, उसकी गति और उसके वेगोंपर ध्यान देना चाहिये। लक्षणोंपर ध्यान देनेपर हमें यह पता लगता है। आप किसी ऐसे मनुष्यको देखिये, जो खानमें उतरा हो, दलदलमें हो, कीचडमें तथा नालेमें हो। जिसने गन्दी गैस सूंघी हो, जो बेहोशीकी अवस्थामें खाटमें पडा हो, जो आरम्भसे ही जड हो गया-सा मालूम होता हो, यह धीरे-धीरे नहीं, बल्कि वह एकाएक कमजोर हो जाता है, वह जड हो जाता है। वह अवसन्न हो रहा है, उसका चेहरा चितकबरा हो रहा है। नियमित सान्निपातिक ज्वरकी बनिस्बत बहुत पहलेसे ही उसके दाँतोंपर मैलकी कोट जमने लगती है। नियमित टाइफायडकी अपेक्षा इसमें पहलेसे ही तल्पेट तना रहता है अर्थात् जिन्हें इन बातोंपर लक्ष्य रखनेकी आदत है, वह जानता है कि वे कई दिनोंके लिये रुक गये हैं, पर इस दवामें तीसरे ही दिन तल्पेट तन जाता है, उसके मुँहसे खून आता है तथा बदबू निकलती है, उसमें भयानक बदबू आती है, वह प्रलापावस्थामें रहता है, जैसा प्रलाप बहुत दिनोंतक टाइफायड रोगके पहले हो नहीं सकता, इसीलिये यह तेजीसे बढनेवाली बीमारी है। इसमें तीव्रता है अर्थात् रोगी तेजीसे मृत्युकी ओर बढ रहा है। मामूलीकी अपेक्षा ज्यादा तेजीसे उसकी सुस्ती बढती जाती है। यह दिनों और सप्ताहोंका क्रमबद्ध क्षय नहीं है, वह तन्द्राकी अवस्थामें चला जाता है। जब जगाया जाता है, तो प्रलाप-ग्रस्त हो पडता है। इससे कोई मतलब नहीं, कि यह आरक्त ज्वर है या सान्निपातिक ज्वर या सडनेवाला नश्तरका ज्वर या

सूतिका ज्वर है। उसे ज्वर है और यदि आप उसको ओर देखेंगे उससे बातें करेंगे, उसे उलट देंगे, उसे जगायेंगे और उसे समझा देंगे कि आप उससे कुछ कहना चाहते हैं—जो कठिन है—तो आपमें यह विचार पैदा होगा, कि वह बहुत शराब पिये हुए है। यही पहला ख्याल बप्टोशियाके रोगोके सम्बन्धमें आपमें पैदा होगा। उसका चेहरा भराया रहता है, यह फूला-फूला, बैंगनी और चित्ती-चित्ती रहता है, मुँहसे खून चूता है। आपने शराबियोंका चित्ती-चित्ती दाग, दगोला चेहरा देखा होगा, इसका भी चेहरा पुराने शराबियोंको तरह रहता है।

उसका दिमाग गायब-सा रहता है। वह नहीं समझता, कि वह क्या बोल रहा है, वह घबडाया रहता है तथा जगानेपर वह कुछ कहनेको कोशिश करता है तथा एक-दो शब्द कहता है, यह सब गडबडा जाता है और वह फिर तन्द्राकी अवस्थामें जा पडता है। कोई भी बीमारी क्यों न हो, किसी तरहका प्रदाह क्यों न हो कोई भी यन्त्र प्रदाहित क्यों न हो, यदि रक्तकी वही अवस्था है, जो ऐसे लक्षण उत्पन्न कर सकता है तथा इस तरहका पचनशील लक्षण मौजूद है, यदि मनकी यह अवस्था उपस्थित है, तो यह बैप्टोशियाका रोगी है।

इसके सभी स्राव दुर्गन्धित होते हैं। गन्ध मुर्देकी तरह, सडी हुई, चुभनेवाली रहती है। यदि उसे थोडा-बहुत पसीना होता है, तो वह खट्टा, बदबूदार, सडी गन्धसे भरा और चुभनेवाला होता है। यदि पसीना नहीं भी होता, तो उसके शरीरसे बेहिसाब गन्ध निकलती है। गन्ध ऐसी चुभनेवाली होती है, कि सामनेवाले दरवाजेसे जानेपर समूचा मकान, यदि कमरा खुला है, तो गन्धसे भरा रहता है। मलसे भी बदबू निकलती है और वह इतनी चुभनेवाली होती है, कि उस घरमें जानेपर पहले ही पता लग जाता है।

अब इस दवाकी एक आश्चर्यजनक चीज है, एक विचित्र ढङ्गका चित्त-विभ्रम जिसमें वह बराबर अपने अङ्गोंके विषयमें तर्क-वितर्क किया करता है। उसे मानो ऐसा अनुभव होता है, कि वह एकका दो हो गया है। वह जब जगाया जाता है, तो वह अपनेको दो समझता है। उसके पलङ्गपर जो दूसरा है, उससे वह बातें करने लगता है। यह कहा जाता है, कि "उसका बडा अंगूठा अगुलियोंसे बातें करता है या एक पैर दूसरेसे बात करता है"

या एक शरीरांश दूसरे शरीरांशसे बातें करता है या बिछावनपर वह टुकड़े-टुकड़े बिखरा पड़ा है, फिजूल काम करता है और जब आप उससे पूछेंगे कि वह क्या करना चाहता है—"क्यों मैं उन टुकड़ोंको जोड़ना चाहता हूँ।" पर इसमें उसे कभी सफलता नहीं मिलती। वह वास्तवमें संग्राममें रहता है, ये सब केवल उदाहरण हैं, जितनी ही बार आप बेप्टीशियाके रोगीको देखेंगे, उतनी ही बार कोई-न-कोई नयी बात मिलेगी। जगाये जानेके सिवा अधिकांश समय वह बेहोश रहता है, कभी-कभी बुदबुदाता है। आप उसके ओठ हिलते देखेंगे, आप उसे यह देखनेके लिये जगाये, कि क्या कर रहा है, तो वह अपने टुकड़े जोड़नेकी चेष्टा कर रहा है। "शराब पिये रहनेकी तरह विशृङ्खलित चित्त रहता है।" ऐसे भी स्तर हैं, जिनमें वह इतना बेफ़िक्र नहीं रहता और वह निद्रा-रहित और बेचैन रहता है। यह एक अपवाद है। अमूमन आप उसे एक करवट या कुत्तेकी तरह पड़े हुए पायेंगे, वह चाहता है, कि कोई उसे तङ्ग न करे। इसके बाद जब इतनी अधिक बेहोशी नहीं रहती तो बेचैन रहता है तथा करवटें लेता है और छटपटाता है। इस अवस्थामें वह सो नहीं सकता, क्योंकि वह टुकड़ोंको जोड़ नहीं पाता उसे मालूम होता है, कि यदि एक बार वह जोड़ सके, तो वह सो सकेगा और वे अङ्ग जो आपसमें बातें किया करते हैं, उसे जगाये रहते हैं। आँखें बन्द करते ही उसका मन भटकने लगता है। सुस्ती, खासकर रातमें आती है। सोचनेमें अनिच्छा, दिमाग कमजोर मालूम होता है। यहाँ आपको सभी बीमारियोंमें—सभी नयी बीमारियोंमें, मानसिक दृश्यका पूरा पता लगता है, पर ये सभी बहुत जल्दी-जल्दी पैदा होते हैं। ये रस-रक्त बिगड़नेके कारण, आरक्त ज्वरकी तरह निम्न श्रेणीके, जैसी कि मारात्मक बीमारियाँ होती हैं, वैसे हैं और इतनेपर भी यह अविराम ज्वरका रूप ग्रहण कर लेता है। यदि इन रोगियोंका थोड़ी छोड़ दिया जाये, तो वे आठ-दस दिनोंमें ही मर जायेंगे। जब कि साधारण मियादी बोखार (Typhoid) हफ्तों चला करता है और रोगी चौथे सप्ताहके अन्तमें सङ्कट-कालके समय मरता है। रक्त-स्राव काला और बदबूदार होता है। बदबू प्रत्यन्त रहती है। मुँहसे, कण्ठ तथा नाकसे खून-मिला बलगम निकलता है, जो बदबूदार रहता है। इसमें पतले दस्त भी आते हैं। पतले, मन-खण्ड-मिले, पानीकी तरह पीले दस्त। इसमें टाइफायडका एक विशेष दस्त होता

है, टाइफायडका एक खास तरहका मल पीला पीसे इसको तरह होता है, दिनमें कई बार होता है पर कोमल, इन का ठीक कोमल भुट्टेको चूरको तरह। इस दवामें ऐसे दस्त आते हैं, पर यह साधारण स्वरूप नहीं है, बल्कि काला, भूरा और गहरा है। टाइफायड ज्वरके बहुत-से रोगियोंके इलाज करते समय मेरा यह सौभाग्य है, कि बहुत-से मियादी बोखारके इसके रोगी मुझे देखने को मिले, जिन्हें इस दवाने तुरन्त आरोग्य कर लिया। बैपटीशियाने सबसे ज्यादा उस मलमें लाभ किया जो पिसी हुई स्लेटको तरह या स्लेटके रङ्गका तथा भूरा था। गन्ध बहुत घुमनेवाली थी। इसके अलावा मैंने इस दवाको उस ढङ्गके पतले दस्त आरोग्य करते देखा है, जो मिलिटी रङ्गका था, यहांतक कि पानीको तरह पतला था। यह घोर बदबूदार बिगड़े मांसको तरह गन्ध थी। मुर्देको तरह गन्ध इसके साथ ही बहुत सुस्ती। मैंने इसे यह अतिसार आरोग्य करते देखा है जब टाइफायड ज्वरके कोई भी लक्षण वर्त्तमान न थे। अतिसारका एक सहज सुस्त करनेवाला प्रकार। सुस्ती, अवसन्नता बहुत जल्द आ जाती है, तीन दिनोंके भीतर ही रोगीमें मृत्युकी तरह अवसन्नता आ पहुंचती है।

इसका सर दर्द अद्भुत हो जाता है केवल रक्त-सञ्चयको प्रकृतिका आक्रमण, कपालका सर दर्द—सरमें तेज दर्द और खासकर माथेके पिछले भागमें, जैसा कि निम्न श्रेणीको बीमारियोंमें हुआ करता है। मैं इसके सर-दर्दके विवरणमें नहीं जाता। बैपटीशिया सर-दर्दको दवा नहीं है। यह ऐसी दवा नहीं है, जिससे सर दर्दमें बचाया की जाये, सिवा इसके कि निम्न-प्रकारके ज्वरोंमें जो रक्त-सञ्चयी तेज सर-दर्द होता है, उसमें यह उपयोगी होती है।

इसमें आँखोंके परिचायक लक्षण हैं। रक्त-सञ्चय, लाली, आँखोंमें तथा आँखोंके पिछले भागमें दर्द। यही दशा श्रवण-शक्तिके सम्बन्धमें भी है। ऐसा ही नाकके लक्षणोंमें भी होता है, पर बोखारके साथ सम्मिलित रहता है, पर ज्योंही हम चेहरेपर आते हैं, हमें बैपटीशियाके लक्षण अनुभवमें आने लगते हैं, वही इस-बुद्धिको तरह भर्राया चेहरा। मुखमण्डल इसे ही दिखाता है आंखें इसे ही बताती हैं और चेहरा भी इसे ही प्रकट करता है। आगे लिखे लक्षण मिलते हैं—"भर्राये चेहरेके साथ गहरी लाली गर्म तथा प्रत्यक्ष तमतमाया, धुमैला।" इससे ही समूची कथा मालूम हो जाती है। जलन, चेहरेमें लाली, "चेहरे तथा ललाटमें सङ्कटकालका पसीना। चिन्तित, डरी

हुई दृष्टि।" नीदसे जगानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो भयङ्कर स्वप्न देख रहा था।

इसके बाद आते हैं, मुँह, दाँत, कण्ठ और जीभ—सबमें ही प्रत्यक्ष बैप्टीशियाका स्वरूप दिखाई देता है। जीभ फूली रहती है, दर्द-भरी और बदबूदार रहती है। काले रक्तसे ढँकी रहती है। खाल उधड़ी, धारीदार, चमड़ेकी तरह कड़ी और सूखी, मानो काठकी बनी या जले चमड़ेकी बनी है। इस दशामें सर्वत्र जखमका भाव है। मुँहमें छालेकी तरह दाग। ये छोटे-छोटे जखम, जो आल्पीनके सिरेसे आरम्भमें बड़े नहीं होते काले ही जाते हैं तथा उनसे इस तरह बदबू निकलती है तथा इस तरह एक साथ मिले रहते हैं, कि समूचा मुख-गह्वर-पटल जखमकी अवस्थाकी तरह हो जाता है। खाल उधड़ी, आवरण-रहित, सड़ी गन्ध भरी गाढ़ी लार चुआ करती है। कण्ठमें भी जखम हो जाता है, कण्ठकी खाल उधड़ी रहती है और उससे रक्त बहता है, कण्ठमें डिफ्थीरियाका रोगात्मक रस-स्राव हो सकता है, पर इसके चारों ओर वे निम्न, काले बदबूदार स्थान रहते हैं और वह कठिनतासे निगल सकता है। मुख-क्षत (Sore mouth) और गल-क्षत (Sore throat) की बैप्टीशिया एक बहुत ही लाभदायक दवा है। मुँहको सड़न" (Cancrum oris), जखम बहुत तेजीसे फैलते और क्षय करते जाते हैं। वे वास्तवमें बहुत फैलने और गलानेवाले (Phagedenic) होते हैं। दाँतपर बहुत तेजीसे कीट जमने लगती है और जब कई घण्टोंकी तन्द्रासे वह नीदसे जगाया जाता है, तो ओंठ तथा मुँहके कोनेके चारों तरफ सूखे रक्तकी रेखा रहती है, बहुत बदबूदार रहती है। नाक, कण्ठ और मुँहसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है, गाढ़ा रक्त-स्राव, सड़ी हुई बदबू। "जीभ लाल तथा बीचमें सूखी रहती है। मुँहकी छत फूली तथा सुन्नकी तरह मालूम होती है, मुँहका स्वाद गन्दा या तीता, मिचली पैदा कर देनेवाला रहता है। काले रङ्गकी जीभ। जीभ सूखी, बीचमें नीचेकी ओर भूरी, एक मोटी भूरी पपड़ीसे जीभ ढँकी, जीभ पीलापन लिये सफेद, बहुत ज्यादा रोयें हो जाते हैं।" मुँहभर जखम। युवती माताओंका कण्ठका जखम बैप्टीशियाने आरोग्य कर दिया है तथा बच्चोंका दूध पीनेके समयका मुँहका जखम, जब कि वह अत्र धुमैला हो जाता है तथा जखम फैलने लगता है और बदबूदार हुआ रहता है तथा अवसन्नता तेजीसे बढ़ती जाती है, इसने आरोग्य किया है। बहुत शीघ्रतासे बच्चा या माता दुर्बल होती

जाती है, सुन्न पड़ती जाती है। यह सभी बोखारके बिना ही होता है। बैप्टीशियाकी कितनी ही अवसन्नतावाली अवस्थाएँ ज्वर-रहित ही रहती हैं। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है, कि रोगीमें इतना काफी जीवन ही नहीं कि ज्वर आये। सान्निपातिक ज्वरमें यह तथा माताओंकी सुखमें छालेका हुआ मुँहका घेंकर (मुँहमें छोटे छोटे जख्म समूह) जख्म। "समूचे गालके गड्ढेमें बदबूदार जख्म।" अब इन सभी तकलीफोंके साथ मुँहसे लार चुआ करती है, लार गाढ़ी और डोरीकी तरह रहती है और तकियेपर बहा करती है, जैसा कि मर्करीमें होता दिखाई देता है।

गलेका जख्म भी सड़नेवाला हो सकता है। इसका एक जबर्दस्त रूप यह है, कि जख्म तेजीसे बढ़नेवाले और दर्द-रहित होते हैं, मानो सुन्न रहते हैं, उनमें किसी तरहकी सनसनी नहीं होती, पर इसमें दर्द-भरा कण्ठका जख्म रहता है। 'गलकोष गहरा लाल, कालै, बदबूदार जख्म, तालुमूल और कर्णमूल ग्रन्थि फूली। सड़नेवाला गल-घात। तालुमूल और कोमल तालु फूला हुआ, पर इसमें दर्द नहीं होता।" बहुत सूजन, बहुत तनाव, बैंगनीपन। जितना ही काला होता जायगा, उतना ही ज्यादा ध्यान बैप्टीशियापर मेरा जायगा, पर कभी चमकीला लाल नहीं। मैंने कभी बैप्टीशियाकी मानसिक अवस्था लाल चमकीले चेहरेके साथ नहीं देखी है। मानसिक अवस्थाका यह निम्न रूप रक्तके बिगड़नेके साथ तथा चमड़े और श्लैष्मिक-झिल्लियोंके कालेपनके साथ रहता है। बेलेडोनाकी तरह न तो चमकीला लाल और न गुलाबी। बेलेडोनाका अधिकतर चमकीला लाल रहता है, यद्यपि उसमें धुमैलापन भी है, पर बैप्टीशियाकी तरह किसीमें भी नहीं है। बेलेडोनामें सड़नेकी तरह गन्ध जैसा कुछ नहीं है, पर बैप्टीशियामें है। "ऊपरसे नीचेकी ओर पाकाशयमें अन्नवहानली सिकुड़ी-सी मालूम होती है," अब इसके दूसरे स्वरूप हमें प्राप्त होते हैं। गल क्षतसे बीमारी बढ़कर अन्नवहानली फैल जाती है और अन्नवहानली एकाएक आक्षेपिक अवस्थामें आ पड़ती है। पीछे यह पक्षाघातग्रस्त हो पड़ती है। तरल पतले पदार्थ कण्ठमें जाते है, पर वह कड़ी चीजका एक ग्रास भी निगल नहीं सकता, खाद्य पदार्थका गोला अन्नवहानलीके ऊपरी सिरेमें जाता है, वहां यह उसका दम रोकता है और ढेलेकी तरह मालूम होता है और रोगीको श्वास रुकता है, वह जोर लगाता है, मुँह बन्द हो जाता है और वह फिर बाहर निकाल फेंकता है। इसके बाद रोगी

पानी या तरल पदार्थ पीता है। वह तरल पदार्थ निगल सकता है, पर कड़े पदार्थ नहीं, कड़े खाद्यका प्रत्येक कण उसके मुँहमें लौट आता है, पर वह तरल पदार्थ निगल सकता है। **नेट्रम-म्यूर** तथा कुछ दूसरी दवाओंमें अन्ननलीकी अकड़न है जो स्नायविक रोगोंके साथ पैदा होती है, पर इस निम्न अवस्थामें मैं ऐसी कोई दूसरी दवा नहीं जानता, जिसमें यह लक्षण हो। यह स्वरुप तथा अन्नवहानलीका पक्षाघात और आक्षेपिक अवस्था हो। 'अन्नवहानली ऊपरसे पाकाशयमें नीचेकी ओर सिकुड़ी सी मालूम होती है। सङ्कोचनका भाव, जिससे निगलनेमें बहुत चेष्टा करनी पड़ती है, कण्ठका जखम, सिकुड़ा हुआ अनुभव होता है। **केवल तरल पदार्थ निगल सकता है।** बच्चे ठोस पदार्थ नहीं निगल सकते, छोटे-से-छोटे ठोस खाद्यसे भी मुँह बन्द हो जाता है। इस तरह वह दूधके सिवा और कुछ भी खा नहीं सकता, कभी-कभी पतले, पानीकी तरह बदबूदार दस्त दिन और रातमें आते हैं, इनमें सड़नेकी गन्ध बदबू तथा धुमैलापन रहता है तथा सुस्ती भी आ जाती है। अब कुछ इससे ज्यादा जाननेकी जरूरत नहीं है। यदि यह डिफ्थीरिया है या आरक्त ज्वर है या सान्निपातिक (टाइफायड) ज्वर है, कुछ भी हो इतने ही से आप निश्चित दवापर पहुँच जायेंगे। 'निगलनेवाले यन्त्रोंका पक्षाघात।" प्रत्येक दवासे ठीक-ठीक यथार्थता निकाल लेना, सम्बन्ध खोजकर खास दवाको चुन लेना, यह प्रत्येक रोगी पार्श्वमें उपस्थित चिकित्सकका कर्त्तव्य है।

उदर तना रहता है, पाकाशय भी फैला रहता है। यकृतके प्रदाहमें जब यह दवा उपयोगी होती है, तो हमें ये लक्षण मिल सकते हैं। जिन रोगोंको मैंने बताया है उनके साथ तना फूला हुआ तलपेट, दाहिने कुक्षि-गह्वरमें बहुत यन्त्रणा, यह बहुत दर्द-भरा और स्पर्श-कातर रहता है, पर एक मुट्ठीसे बड़ा नहीं रहता, पर यह सड़ी बदबू मुझे विश्वास है, कि उस छोटे उपाङ्ग (Appendix) पर आपको छुरी न चलाने देगी।

"बदबूदार और चयकर अतिसार, मुँहके छालेके साथ अतिसार।" इसका मतलब यह है, कि मलद्वारके वे अंश जो चक्कर खाते हैं, उनमें जखम यदि हो गया है, छोटे छोटे छालोंकी तरह गड्ढे किनारोंके भीतरी तरफ हो गये हैं। "अनच्छिक अतिसार।" इन निम्न श्रेणीकी बीमारियोंमें आप-से-आप पाखाना पेशाब होता रहता है। "गहरी भूरी आम और खून-मिले दस्त। बदबूदार दस्त है।" इसमें रक्तामाशय है। प्रसवके बाद, प्रसवके बादवाला क्लेदका

स्राव रुक जाता है। तलपेटमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता, ये सभी सडनेके लक्षण खूनका नष्ट होना, चेहरेका दृश्य एकाएक सुस्त हो जाना, एकाएक बदमिजाज हो जाना और सभी तरहके मानसिक लक्षण—ये सभी सूतिका ज्वरमें बैप्टोशियाके चिन्ह हैं। अब, कुछ दिनोंतक इन लक्षणोंके साथ रोग भोगनेके बाद प्रत्यङ्ग सब जड हो जाते हैं और कांपते रहते हैं। जीभ जब बाहर निकाली जाती है, तो कांपती है, हाथ उठानेपर कांपता है और प्रत्यङ्ग भी कांपते रहते हैं। समूचे शरीरमें कम्पन, अवसन्नता बढ जाती है, जबड़े झूल पड़ते हैं और रोगी मुंह खोलकर पीठके बल बेसुध-सा पड़ा रहता है। वह धीरे धीरे पातानेकी ओर सरकता जाता है। एक विचित्र ढङ्गकी पाचाघातिक दुर्बलता है। इससे मालूम होता है कि किस तरह बीमारीके साथ-ही-साथ सुस्ती बढती जाती है, पर इतनेपर यदि यह इसके समान हो वर्त्तमान लक्षणोंके साथ निम्न श्रेणीका हो रहा है, बैप्टोशिया बोखारको तोड देगा। बैप्टोशिया टाइफायड ज्वरको उस अवस्थामें रोक देगा, यदि यह निर्देशित होगा। सुस्ती और कम्पन। बिछावनमें लोट पडता है, ऐसा मालूम होता है, मानो मर रहा है। अर्द्धचेतन अवस्थामें पड़ी रहती है, जब कि मालूम होता है, कि वह मर रहा है। बहुत ज्यादा औंघाई, मरणासन्नके साथ बेहोशी, अर्द्धचेतन अवस्थामें पड़ी रहती है। "स्राव और निकली हुई श्वास बदबूदार।' सांस, मल, मूत्र, जखम—सभी सड़ी गन्धसे भरे। त्र्यिक-झिल्लियोंमें जखम होना।

बेराइटा कार्बोनिका।

(Baryta Carbonica)

बेराइटा कार्बोनिका अध्ययन एक आनन्दकी सामग्री है, क्योंकि इसकी पूरी-पूरी परीक्षा हुई है और एक धातुगत औषधि है। लघु-क्रियाशील तथा बाह्य औषधियोंकी अपेक्षा ऐसी दवाएँ सदा चित्ताकर्षक होती हैं। वे बद्धमूल, बहुत दिनोंकी पुरानी तथा दूषित वायुसे उत्पन्न बीमारियोंको पकड़ रखती हैं। बच्चोंके बढानमें यह दवा विशेष काम करती है। पाच्य

ग्रन्थमें साधारणतः आपको यह लिखा मिलेगा—"बौनापन।" इसका हमेशा यही मतलब नहीं है, कि कदमें छोटा—जैसा कि इस दवाके विषयमें कहा जाता है, बल्कि मन और शरीरका बौनापन, मानसिक बौनापन तथा यन्त्रोंका बौनापन। आप समझते हैं, कि इस अकालपक्वताका क्या मतलब है, छोटे मनुष्य जो असाधारण तेज़ रहते हैं, जिनका मस्तिष्क बहुत उन्नत रहता है। हम कहते हैं, कि वे अपनी उम्रके बाहर हो रहे हैं, वे अकालपक्व हैं। इसे पहले मनमें बैठा लीजिये और तब सोचिये कि इसका क्या मतलब है और तब बैराइटा-कार्बकी प्रकृतिमें वही बिलकुल विपरीत अवस्था दिखाई देती है। बौनापनका यही मतलब है। बच्चे देरसे काम लायक होते हैं, देरसे पढ़ना सीखते हैं, जो कुछ जीवनसे सम्बन्ध रखता है, वह देरसे सीखते है, सोचना या किसी बातको देरसे भी समझते हैं, देरसे अपने कार्यमें लगते हैं या देरसे काम करते हैं। हमलोग कभी-कभी कहा करते हैं, कि कैल्केरिया-कार्बका रोगी बच्चा देरसे चलना सीखता है, पर बैराइटा-कार्बका रोगी भी देरसे चलना सीखता है, यद्यपि उसके बिलकुल भिन्न कारण रहते हैं। साधारणतः पुरानी रूढ़ीके अनुसार कहा करते हैं, कि बैराइटा कार्बके बच्चे चलना देरीसे सीखते हैं, यद्यपि उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग अच्छे रहते हैं। कैल्केरियाके बच्चेके प्रत्यङ्ग दूषित, कमजोर रहते हैं, पेशियाँ थुलथुली रहती हैं, हड्डियाँ दुर्बल रहती हैं और इसी कारणसे वह देरसे चलना सीखता है। "देरसे चलना" कैल्केरिया है, "देरसे चलना सीखना" बैराइटा कार्ब है। यह बोरैक्स और नेट्रम-म्यूरसे भी प्रतिस्पर्द्धा करता है। इन तीनों ही दवाओंमें मस्तिष्कके उन्नत होनेमें एक विचित्र प्रकारकी जड़ता रहती है, जिससे वे देरसे कुछ करना सीखते हैं, देरसे उन्नति होती है, पर बैराइटा-कार्ब, इसे देरसे कार्य-शक्ति तथा जीवनोपयोगी बनना सीखनेमें सबसे प्रधान दवा है।

आपको चिकित्साके लिये ऐसे रोगी मिलेंगे, कि जिनमें १८ से २५ वर्षकी लड़कियोंमें ही यह धीमा विकास दिखाई देता है, जो इस उमरमें भी बच्चोंकी तरह काम करती है और वैसा ही बोलती हैं, जैसा बचपनमें बोलती थीं। "काम करनेका बच्चोंका जैसा तरीका तथा बच्चोंकी तरह व्यवहार, खिलौने खेलती और बेवकूफोंकी बातें करती हैं।" उन्हें अबतक स्त्रीत्व

नहीं प्राप्त हुआ है। वे देरसे क्रियाशीलता और स्त्रियोंका व्यवहार सीखती हैं। स्त्रियोंकी विज्ञता उनमें नहीं रहती, वे अबतक सतर्क नहीं हुई हैं और वैसी ही बातें कहती हैं, जैसा कोई बच्चा या ठीक छोटी लड़की कहती है, यही मनका बौनापन है। इस विकासको समझना और बैराइटा-कार्बमें इसके सब लक्षण और विचित्र स्वरूपोंको देखना, दवाको ठीक-ठीक पकड़ना है। ग्रेफाइटिस, सल्फर और कैल्केरियामें इसके कुछ लक्षण मिलते हैं, पर इस दवाको तुलनामें किसीमें नहीं है। इससे मालूम होता है, कि वह विकास रुक गया है जो बच्चेको पुरुष या स्त्री बनाता है। ये छोटे मनुष्य नहीं हैं, जो बैराइटा-कार्बपर ध्यान दिलाते हैं बल्कि जो मानसिक बौने हैं और यह यन्त्र-सम्बन्धी बौनापन है। यन्त्र जैसे थे, वे या तो पक्षाघातग्रस्त हो जाते हैं या कोई एक यन्त्र विकास नहीं प्राप्त करता। यह रुक जाता है और दूसरे कार्य किया करते हैं, वही मुझे इस दवाको याद दिलाते हैं। कोई एक यन्त्र-विकास नहीं प्राप्त करता और दूसरे किया करते हैं। एतदर्थ, एक पार्श्वका विकास।

इस दवाका दूसरा विशद रूप है, समस्त शरीरकी लसिका-ग्रन्थियोंसे इसका सम्बन्ध। समस्त शरीरको ग्रन्थियोंकी वृद्धि हो जाती है और वे कड़ी पड़ जाती हैं। गलेकी ग्रन्थियाँ, वंक्षण प्रदेशकी ग्रन्थियाँ, उदरकी लसिका ग्रन्थियाँ सब ही आक्रान्त हो जाती हैं, गलेमें गाठोंकी जञ्जीर बन जाती है। आगे हम और कुछ दूसरी बातें जो बतायेंगे, उनको मिलानेपर इसके रोगीकी विचित्र ही मूर्त्ति हमें दिखाई देगी। इसमें क्षीणता है—मोटे-ताजे, भरपूर भोजन पोषण पानेवाले मनुष्य धीरे-धीरे दुबले होते जाते हैं। इसमें बढ़े हुए तलपेटका लक्षण है। इसीलिये बढ़े हुए तलपेट तथा बढ़ी हुई गाठोंवाले बच्चोंकी सुखण्डीकी बीमारीमें यह लाभदायक होती है। तन्तुओंकी क्षीणता, प्रत्यङ्ग सब क्षीण तथा मनका बौनापन। बेराइटा कार्बको सुखण्डीकी बीमारीमें यह सभी होता है।

क्षय रोगीको सर्दी लगा करती है, सर्दी सहन नहीं होती, अच्छी तरह कपड़ा लपेटे रहना चाहता है। कमजोर नाड़ीके साथ बढ़ी हुई दुर्बलता इसका एक खास लक्षण है और उसे लेटे रहना पड़ता है, बैठे रहने या खड़े रहनेपर उसकी दशा बदतर हो जाती है। भोजनके बाद कमजोरी और भी बढ़ जाती है। हिलने-डोलने और खुली हवामें उसके दर्द अच्छे रहते हैं।

सर्दीसे उसकी शिकायतें बढ़ जाती हैं, बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ खुली रहनेपर स्पर्श असहिष्णु हो जाती हैं और उनमें रक्त-सञ्चय हो जाता है। तालुमूल धीरे-धीरे बढ़ जाते हैं और प्रत्येक बार सर्दी लगने या सर्द हो जानेपर गलेकी ग्रन्थियोंका आकार और कड़ापन बढ़ जाता है।

"गाँठोंकी सूजन और कड़ापन, भीतरी रस-स्रावके साथ ग्रन्थियोंका प्रदाह, इस दवामें भीतरी रस-स्राव भी है। ग्रन्थियाँ धीरे-धीरे कड़ी होती जाती हैं, जखमोंकी तली कड़ी पड़ती जाती है, खुले स्थानोंकी प्राचीरें कड़ी हो जाती हैं। जब किसी बच्चेको ऐसी कोई बीमारी होती है,—छोटी माता, आरक्त ज्वर, तालुमूल-प्रदाह या बुरी सर्दी अथवा मलेरियाका आक्रमण, तो विकास रुक जाता है और बौनापन आ जाता है। एक वह अवस्था आ जाती है, जिसमें उसका जन्म नहीं हुआ था, बल्कि एक अवस्था, जिसे उसने हासिल कर लिया है, विकासका रुक जाना। यह समूचे शरीरमें क्षीणता और क्षय उत्पन्न कर देता है, पर पेटमें यह क्षीणता नहीं आती, पेट बढ़ता ही जाता है। ये ऐसी बातें हैं, जिनपर बहुत आरम्भसे ही ध्यान देना चाहिये, क्योंकि ये लक्षण ही इसकी जड़ जमानेमें सहायक होते हैं और ये सकल्लोफे और तन्तुके परिवर्त्तन अन्तमें आते हैं।

दूसरी बड़ी बात इस दवामें है, इन बातोंका बढ़ी हुई उमरमें पैदा होना। हम कहते हैं, कि यह बचपनकी अवस्था है, यह जवानीकी अवस्था और- रुके हुए विकासकी अवस्था है, पर इसपर ध्यान देनेकी कोई जरूरत नहीं है, कि जवानीमें, बचपनमें या पचास बरसकी उमरमें यह विकास रुका है। कुछ विचित्र परिस्थितिके कारण जिसकी तहमें हम नहीं पहुँच सकते, हम कहा करते हैं, कि यह मनुष्य बुड्ढोंकी तरह होता जा रहा है। हम इसे अकाल-पक्वता कहते हैं। बैराइटा-कार्बने मलेरिया, अत्यधिक परिश्रम, मानसिक या शारीरिक, बहुत दिनोंका मानसिक परिश्रम-जनित दोष आरोग्य कर दिया है, जब कि अकालपक्वताके दृश्यकी प्रधानता प्राप्त होती थी, उसपर बहुत जल्द बुढ़ापा आ जाता है। बचपन और बुढ़ापेमें बहुत थोड़ा फर्क है और इसीलिये बुढ़ापा दूसरा बचपन कहलाता है, पर हम हमेशा सत्तर वर्षके मनुष्यको बच्चेकी तरह देखकर अफसोस करते हैं और इतनेपर भी हम देखते हैं, कि बहुत-से सरल और लड़कों-से बन जाते हैं। इसका मतलब केवल शक्ति-हीनतासे नहीं है, बल्कि बच्चोंकी तरह व्यवहारसे है। बच्चोंकी तरह बोलते

और काम करते है, इसलिये, अकालपक्वतामें—समयके पहले ही आनेवाले बुढापेमें, ये लक्षण हमारा ध्यान बैराइटा-कार्बपर दिला देते है।

बैराइटा-कार्बने मेदमय अर्बुद (Fatty tumors) कोषाहृत्त अर्बुद (Encysted tumors), ह्रक्क रोग (Lupus) यक्ष्माको तरहके बाहरी प्रबर्द्धन, मांसार्बुद (Sarcoma) प्रभृति आरोग्य कर दिये हैं तथा दर्द और तकलीफोंको दूरकर, इसने कर्कट-रोग ग्रस्तोंका जीवन-काल बढ़ा दिया है।

मानसिक लक्षणोंमे तो यह बहुत ही सावधानतासे अध्ययन करनेकी चीज़ है और मानसिक लक्षणोंमें हमलोग तन्तु-परिवर्त्तनकी मिली हुई सभी बाते उत्पन्न होती हुई पायेंगे। किसी अपरिचितके आते ही बैराइटा कार्बका रोगी बच्चा सामानोंके पीछे छिप जायगा। इस तरह छिप जायगा, मानो शर्मा रहा है या डर गया है। वह सब तरहकी विचित्र चीज़ोंके विषयोंको सोचता है, जिसके विषयमें कहा या हँसा गया है। वह आगे बढता नहीं दिखाई देता है, उसे सिखानेका कुछ भी फायदा नही होता, क्योंकि वह एक ही ढङ्गके काम बराबर करता है और बराबर अशिक्षित ही रहता है। वे या तो बिलकुल ही नहीं अनुकरण करते या वे याद नहीं कर पाते अथवा वे किसी विचारको रख नही सकते और आप बार-बार उन्हें सिखाइये, माता आश्चर्य करती है, कि क्या बच्चा कभी कुछ सीखेगा तथा शिक्षक यह कहता है, कि बच्चेमें कुछ सीखनेकी शक्ति नही है। शिक्षक नहीं समझ सकता, माता नही अनुमान कर सकती पर होमियोपैथिक चिकित्सकको इसे तुरन्त जान लेना चाहिये। यदि वह मेटिरिया-मेडिका जानता है, तो उसे कमजोर बच्चेके विकासको लाना चाहिये, जिन्हें अस्थि-विकृति (Ricket) रोग हो रहा है, जो कमजोर है, जो हमेशा दूसरोंपर निर्भर किया करते हैं, सिर्फ क्षुद्र कार्यों के योग्य है। होमियोपैथिक चिकित्सक छोटे बच्चे-बच्चियोंको अपनी जंघापर बैठाकर खेलाता तथा जान लेता है, कि उनमें क्या योग्यता है और किस चीजका अभाव है और समझता है, कि इस अभावकी पूर्त्ति कैसे की जा सकती है? क्या यह खास कार्य करनेके लायक नही है? इसके लिये उन सभी क्रमोंकी जरूरत पडती है, जो प्रकृतिको अधिकार करनेके लिये बनाये गये हैं। कुछके लिये मध्यम क्रमको जरूरत होगी, कुछके लिये बहुत निम्न क्रम और किसीके लिये बहुत उच्च, बच्चोंको निन चीजोंकी

जरूरत है, उनसे उन्हें कभी वञ्चित न रखना चाहिये। केवल इसी तरह हम इनकी पूरी-पूरी शक्तिका विकास कर देनेके लिये सर्वोच्च व्यवहार अवलोकन करते हैं।

पाठ्य-ग्रन्थमें एक बात यह कही है—"स्पष्ट चेतनाका अभाव।" जो कुछ हमने कहा है, उससे हम क्या यह नहीं देख पाते, कि इस दवाके सम्बन्धमें इसका क्या मतलब है? और जो कुछ बहुत-सी अन्य दवाओंमें हैं, उससे कुछ अलग ही इस दवामें है और इतनेपर भी यदि आपने वह लक्षण पढ़ा होता, तो आपने इसे स्वीकार न किया होता। "स्पष्ट-चेतनाका अभाव", खासकर बुढ़ापेकी अवस्थामें यह लाभदायक होता है। यह मनका वह विभ्रम नहीं है, जिसे शिरोघूर्णन कहा जाता है, पर उसकी बुद्धि स्पष्ट नहीं है। हम देखते हैं, कि किस तरह यह दवा बुद्धिपर प्रभाव डालती है, यह उसकी स्मरण-शक्तिको ही पकड़ती है। यह कमजोर अवस्थासे आरम्भ होती है, धीरे-धीरे जड़-बुद्धिताकी ओर अग्रसर होती है। आप उसपर बहुत दबाव डालें, तो मालूम हो जायगा, कि उसमें जड़बुद्धिता है और आरम्भमें अबतक हमलोगोंको दर्जे-ब-दर्जे विचारोंकी अस्पष्टतासे लेकर जड़-बुद्धितातक प्राप्त हो जाती है।

जब बेराइटा-कार्बके बच्चे दवाखानेमें आते हैं, वे चेहरेपर हाथ रख लेते हैं और अंगुलीके दरारसे देखते हैं। सलज्ज, डरपोक, सहजमें ही डर जाते हैं, अपरिचितोंसे डरते हैं। दूसरी दवाओंमें भी यह लक्षण है, पर इस दवाका यह सुदृढ़ स्वरूप है। म्लान चेहरा, बीमार चेहरा। यह छिपनेका खयाल है, डरपोकपनका खयाल है, बच्चा खेलना नहीं चाहता और एक कोनेमें बैठा रहता है। यदि लड़का है, तो अपनी हथौड़ीपर ध्यान नहीं देता या लड़की है, तो अपनी गुड़ियाको नहीं देखती, बैठी रहती है, कुछ सोचता हुआ भी नहीं मालूम होता, सोचनेकी योग्यता ही नहीं रहती। बच्चे बिना किसी पार्थक्य या विशेषत्वके, बिना किसी पर्यवेक्षणकी योग्यताके बढ़ते जाते हैं और इसलिये विकासमें असफल हो जाते हैं। हमेशा कष्ट बटोरा करते हैं। **कास्टिकम**की तरह उनमें यह भय रहता है, कि कुछ घटना घटा चाहती है। खाम-खयालोंसे भरा, खयाली कष्ट और दुश्चिन्ताएँ। सब तरहके रोग और शोक, जो हो सकते हैं, उनकी कल्पना किया करते हैं। बहुत कुछ

आर्सनिककी तरह बच्चे हमेशा रे'रिंयाया करते हैं, उनका यही ढङ्ग रहता है। इसके उपसर्गों पर ध्यान देनेपर, शरीरके अङ्गोंके रोग या मानसिक लक्षण मालूम होते हैं। "जितना ही रोगी अपनी तकलीफोंके विषयमें सोचता है, उतनी ही वे बदतर होती जाती हैं।" यदि वह अपने कष्ट और अपने रोगके विषयमें सोचता है, वे तुरन्त बदतर हो जाते हैं। बहुत दिनोंतक मानसिक कार्य करनेके कारण असमयमें ही वार्द्धक्य आ जाना और मस्तिष्कका धुन्ध पड़ जाना।

कष्टदायक सर-दर्द, "मस्तिष्कमें तनाव", मस्तिष्कमें ढीलापनका भाव, मानो मस्तिष्क एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वमें ढुलकता या उठता और गिरता है, सर हिलाने या एकाएक झटका लगनेपर मस्तिष्कमें एक हलचल सी मालूम होना। ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क आगे-पीछे सरकी गतिके अनुसार हटता है, जब कि माथा एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वको चलाया जाता है। "दबावकी तरह सर दर्द," ताजी हवामें, खुली हवामें सर-दर्द घटता है और गर्मीसे बढ़ता है। यह इसकी सार्वाङ्गिक अवस्थाके विपरीत है। बेराइटा कार्बकी सार्वाङ्गीन अवस्था यह है कि सर्दीसे वृद्धि होती है, रोगीको सर्दी सहन नहीं होती और सर्द होनेपर उसकी बीमारियाँ लौट आती हैं, पर ठण्डी हवामें उसका सर दर्द उपशम होता है। बेराइटा-कार्बके रोगीको अकसर अत्यधिक गर्मी और सर्दी सहन नहीं होती। गर्म मौसममें बीमारी पैदा हो जाती है, गर्म मौसममें उसके माथेमें खून चढ़ जाता है और सन्यासकी तरह अवस्था उत्पन्न कर देता है। सन्यासकी बेहोशीकी तरह इसमें बहुत-से सरके उपसर्ग हैं। पुराने सन्यास रोग-ग्रस्तोंकी जैसी तकलीफें होती हैं, वैसी ही कितनी ही पाचाघातिक अवस्थाएँ इसमें भी हैं और यह स्नायुओंमें फिरसे स्नायविक शक्तिको भर देनेमें बहुत लाभदायक हुई है। यह **फास्फोरस**के समतुल्य है तथा उन पुरानी पाचाघातिक अवस्थाओंको बहुत ही उत्कृष्ट औषधि है, जो रक्तवाहिनियोंके फटनेसे उत्पन्न होती हैं और इसीलिये स्नायुओंमें दबाव होता है। इसका सर-दर्द रक्त सम्बन्धी प्रकृतिका, दबावकी तरह सर-दर्द होता है, मस्तिष्कमें एक प्रकारके दबावकी अनुभूति होती है।

जैसा ऊपर बताया है, वैसे छोटे दुर्बल बच्चोंके माथेमें उद्भेद निकलते हैं, माथेमें अकौता हो जाता है और जो और भी अच्छी चीजोंके लिये उत्पन्न हुए हैं, उनके उद्भेद, मलहम तथा मालिशोंसे आरोग्य कर दिये जाते हैं।

"करोटीपर तर, रस-स्रावी उद्भेद।" "करोटीपर सूखे उद्भेद, केशोंका झड़ना, खल्वाट हो जाना।" मस्तकके उपसर्ग और मनको बौनापनकी अवस्था तथा बुद्धि-सम्बन्धी दोष। ये दबाये हुए उद्भेदोंके परिणाम-स्वरूप हैं।

यह आँखके लक्षणोंसे भी भरी है। "दानेदार पलकें, पलकोंका मोटा पड़ जाना, आँखके पासकी सभी झिल्लियों और तन्तुओंका मोटा पड़ जाना, कनीनिकाका गदलापन। बहुतेरे आवरणोंसे रस-स्राव। इसने मोतियाबिन्द आरोग्य किया है। कितने ही प्रकारका धुन्ध-रोग भगाया है, पर खासकर उनका जिनकी कनोनिका धुँधली रहती है, कनोनिकाकी हल्की अस्वच्छता (**बैराइटा-आयोड**) जिससे चीजें धुँधली दिखायी देती हैं। "मानो कुहरेके भीतरसे या धुएँके भीतरसे देख रहा है।" कनोनिकामें घाव। छोटे सफेद दाग जिससे दृष्टिमें दोष आ जाता है। "सवेरे पलकें जुड़ जाती हैं।" अंजनी या गुहोरी। "पलकोंपर एक तरहका भार अनुभव होना।" सर-दर्दके साथ भौंवोंपर एक भार मालूम होना, मानो ललाट आँखोंपर नीचे दबाव डालता लटका आ रहा है। **कार्बो-वेज, कार्बो-ऐन** और **नेट्रम-म्यूर** की तरह। रोगी अकसर समूची पेशानी हाथसे पकड़ लेता और कहता है,— "मुझे ऐसा मालूम होता है, मानो पेशानी आँखोंपर लटकी आती है।"

इसमें कानमें बहुत तरहकी आवाजें आती हैं, पर खासकर फटने और फड़फड़ानेकी आवाज, साँस लेने, निगलने और चबानेके समय आती है। लेटे रहनेपर अच्छी रहती है। दाहिना कान इससे ज्यादा आक्रान्त होता है। साँस लेनेके समय कानमें सों-सोंकी आवाज़ होती है। "कानके पास उद्भेद। कानके पास दाने-भरी सूजन और उद्भेद।" कड़ापनके साथ, कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह। पहले यह सूजन कही जा सकती है, पर फिर यह एक स्थायी विवृद्धि और कड़ापन हो जाता है और कभी-कभी तो इसका मतलब बहुत बड़ा प्रवर्द्धन हो जाता है। कानकी तकलीफोंके साथ गलेकी अन्य ग्रन्थियाँ आक्रान्त हो जाती हैं। कानके नीचे गलेमें लसिका-ग्रन्थियोंकी गाठे पड़ जाती हैं (**बेरा-म्यूर, ट्युब**)। कभी-कभी कर्णमूलीय-ग्रन्थिपर भी रोगका आक्रमण हो जाता है, वह बढ़ जाती है और कड़ी पड़ जाती है। कभी तालुमूल बढ़ जाता है और कड़ा पड़ जाता है। ये सभी ग्रन्थियाँ प्रदाहित और स्पर्श-असहिष्णु हो पड़ती हैं तथा किसी तरहकी सर्दी लगनेपर

और मौसमका परिवर्त्तन होनेपर कुछ थोड़ी बड़ी हो जाती हैं। यह बढ़ी हुई ग्रन्थिकी एक आश्चर्य-जनक दवा है। किताबोंमें लिखा है,—इन गांठोंमें पीव हो जानेपर यह फायदा करती है, पर सारी जीवन चिकित्साकर भी मैं इसे पीव पैदा होनेकी अच्छी दवा न प्राप्त कर सका। प्रदाह बढ़े हुए भीतर रस स्रावमें अधिककर बदल जा सकता है। यहां पुस्तकोंमें लिखा है, कि तालुमूलमें पीव पैदा होनेकी यह दवा है, पर बहुत लम्बा अनुभवके अनुसार मैं इसे पीव पैदा होनेकी एक अन्तिम दवा समझता हूँ। सम्भव है, कि इसने इसको आरोग्य किया हो, पर मेरा यह अनुभव है, कि यह ऐसा नहीं करती। मुझे उस अनुभवकी अत्यधिक कीमत और उस निर्देशपर बहुत बड़ा सन्देह है, पर इसमें सन्देह नहीं कि इसमें भीतरी रस-स्राव है, जो सर्दी लगनेपर क्रमशः बढ़ जाता है। बढ़ा हुआ तालुमूल लाल हो जायगा, प्रदाहित हो पड़ेगा तथा उसमें दर्द होने लगेगा तथा नवीन प्रदाह और दर्द दब जायगा, पर गत बारकी सर्दीकी अपेक्षा इस बार तालुमूल कुछ बड़ा रह जायगा। इसी तरह तालुमूल बढ़ता जाता है। बच्चोंका तालुमूल तो अक्सर काट दिया जाता है। ऐसे भी कुछ अवसर आये हैं, जिसमें कि मैं स्वीकार करता हूँ, कि उनको कटवा देना आवश्यक था, यह भी उस अवस्थामें जब वे आश्चर्य-जनक रूपसे बढ़े हों, निगलनेमें और बोलनेमें बहुत तकलीफ होती हो। अपनी योग्यताके अनुसार दो या तीन बार खूब चुनी हुई दवा देनेपर भी मैं असफल रहा हूँ, उनको अस्त्र-चिकित्सकके पास जाना पड़ा है और उसने काट दिया है, पर मुझे विश्वास है, कि ये तालुमूल आरोग्य होने ही चाहिये। हैनिमैनके आर्गेननके द्वारा होमियोपैथीको एक शिक्षा यह मिलती है कि जबतक औषधिको बतानेवाले लक्षण नहीं प्राप्त होते, तबतक दवा खिलानेसे कुछ विशेष लाभ नहीं हो सकता। केवल तालुमूलका बढ़ जाना, कोई ऐसा लक्षण नहीं है, जिसपर किसी दवाका चुनाव हो सके। जरूरत इस बातकी है कि उसे दस-बारह बार देखे और उसपर किसी तरह आघात न करे। यह चिकित्साका सबसे बुरा तरीका है, किसी दवाको तजवीजनेका, इतनेपर भी बढ़े हुए तालुमूलके कितने ही ऐसे बच्चे दिखाई देते हैं, जिनमें ऐसा कोई भी लक्षण नहीं मिलता, जिनके सहारे दवा चुनी जा सके। दवा देनेके लक्षण तो ऐसे होने चाहिये, जो रोगीको ही बताये। केवल ग्रन्थियोंको नहीं या परिवर्त्तित तन्तुओंको नहीं। अस्त्र-चिकित्सककी

बुलानेका हमें हमेशा अफसोस रहना चाहिये, क्योंकि किसी चीज़को काट डालनेसे उस रोगीकी प्रकृतिगत अनिष्ट हो जाती है। इतनेपर भी ऐसी कुछ चीजें हैं, जिन्हें करना ही पड़ता है। यद्यपि हम जानते हैं, कि इससे रोगीको प्रकृतिगत अनिष्ट होता है। अपना खर्च पैदा करनेके लिये हमें नौकरोंके पैरोंपर खड़ा रहना ही पड़ता है, उन्हें नश्तर लगवाना ही पड़ता है, क्योंकि वे आरोग्य होनेके लिये बरस दो बरसतक पड़े नहीं रह सकते। अस्त्र-चिकित्सकका स्थान तो हमेशा ही हमारे साथ रहेगा, पर चिकित्सकके रूपमें हमें अपना काम पहले करना चाहिये।

चेहरेपर उद्भेद, चेहरा बीमारकी तरह, अकसर बैंगनी, लाल और धब्बा-धब्बा या पतला और चीण हो गया-सा रहता है। देखनेमें बूढ़ों-सा, झुर्रियाँ-भरा दिखाई देता है, बच्चा छोटे-से बूढ़की तरह, उस अवस्थाको भाँति दिखाई देता है, जैसी **नेट्रम-म्यूर** और **कोल्चीरिया**में दिखाई देती है। उसे चेहरेकी तकलीफें, दाँतोंकी तकलीफें खासकर कण्ठकी तकलीफें रहती हैं, जबड़ेकी और गलेके नीचेकी ग्रन्थियाँ बढ़ी रहती हैं। आरक्त ज्वरके बाद कानकी बीमारियाँ। आरक्त ज्वर (Scarlet fever) के बाद कर्णमूल-ग्रन्थि और निम्न-हन्वस्थ-ग्रन्थियाँ बड़ी हो जाती हैं और कड़ी पड़ जाती हैं। स्वास्थ्य-विधानमें आरक्त ज्वर अकसर बहुत गड़बड़ी पैदा कर देता है, खासकर जब उसका ठीक-ठीक इलाज नहीं होता या ऐलोपैथों द्वारा चिकित्सा होती है या किसी सायविक होमियोपैथके द्वारा जब उनका इलाज होता है। सायविक होमियोपैथ वह है, जो अपने विचारोंको प्रतिफलित नहीं होने देता, अपनी दवाकी क्रियाकी राह नहीं देखता और एक-पर-एक दवा देता ही जाता है और जितने दिन आरक्त ज्वर जारी रहता है, उतने दिनोंमें रोगी बहुत भयानक रूपसे बीमार रहता है, अन्तमें वतौर जानकी तकलीफें, मूत्राशयकी बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ और कभी-कभी गुर्देकी बीमारीमें अन्त होता है। जब कानके रोगोंमें तथा गलेकी बढ़ी हुई ग्रन्थियोंमें आरक्त ज्वरका अन्त होता है, उस समयकी अध्ययन योग्य कितनी ही औषधियोंमेंसे एक यह भी है।

"वृद्ध पुरुषोंकी जिह्वाका पक्षाघात, वृद्ध पुरुषोंकी जिह्वाकी कमजोरी, वृद्ध पुरुषोंकी जीभका कड़ापन।" समयके पहले ही बुढ़ापा आ जाना तथा पेशियाँ ढीली पड़ जाना।

इस दवामें श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह (सर्दीकी अवस्था) है। नाकमें, कण्ठमें, स्वरयन्त्र तथा टेंटुआमें बलगम इकट्ठा होता है। टेंटुआ (Trachea) में घरघराहट होनेवाले वृद्ध पुरुषोंकी यह बहुत उपयोगिनी दवा है। मौसमके प्रत्येक सर्द-परिवर्त्तनके समय तथा प्रत्येक बार सर्दी लग जानेपर उनकी यह घरघराहट और भी बढ़ जाती है। घरघराता हुआ श्वास प्रश्वास। ऐसी कुछ दवाएँ हैं, जिनमें इतने ऊँचे दर्जेको वृद्ध पुरुषोंकी छातीमें घरघराहट होती है, जिनमें उनका निर्देश होता है। बैराइटा-कार्ब भी उनमेंसे ही एक है। **सेनेगा, ऐमोनियेकम** और **बेराइटा म्युरियेटिकम**की तुलना करनी चाहिये। जब किसी वृद्ध पुरुषको किसी अच्छी बरसकी उमरवालेको, जो गर्मियोंमें अच्छा रहता है, पर जाड़ेभर छातीको घरघराहटसे तकलीफ़ पाता हो, उसकी छातीमें घरघराहट हो जाये और कोई दूसरा लक्षण न मिले, **ऐमोनियेकम** उसे आराममें रखेगा।

इस दवाके गल-क्षत (Sore throat) के भी बहुत-से लक्षण हैं। "मुख गह्वर तथा तालुमूलके कौषिक-तन्तु (Cellular tissues) का प्रदाह कण्ठके साधारण सर्दीके लक्षणोंवाली दवाओंमेंसे यह एक है। कण्ठमें दाने पड़ जाना, जिसमें कि गलकोष चमकीला दिखाई देता है सूखे दानोंसे भरा रहता है, प्रत्येक सर्दीको लहरसे प्रदाहित हो जाता है या ठण्ढा हो जानेपर प्रादाहित हो उठता है। प्रत्येक बार सर्दीका परिवर्त्तन तालुमूलको प्रादाहित बना देता है और बच्चोंके तालुमूल तो बहुत ही जल्द बढ़ जाते हैं। जिन बच्चोंका तालुमूल बढ़ा रहता है, दूसरे स्थानोंकी भी ग्रन्थियाँ बढ़ी रहती हैं, बुद्धिके कुछ बौने रहते हैं, बहुत धीमी गतिसे सीखते हैं,—उनका वर्द्धित तालु-मूल बैराइटा-कार्ब आरोग्य कर देगा। पर आप देखिये,—ये सभी धातुगत लक्षण हैं। आप केवल बढ़े हुए तालुमूलकी दवा ही नहीं चुन रहे हैं। "तालुमूलका प्रदाह।" यह प्रदाह **बेलेडोना**की तरह तेज़ नहीं है। यह हर रातमें नहीं होता, बहुत तेजीसे पीब पैदा होनेकी ओर यह नहीं बढ़ता है, पर यह वही गल-क्षत (Sore-throat) है। कई दिनोंतक खुली हवा लगनेपर यह धीरे-धीरे उत्पन्न हुआ, यह क्रमश पैदा हुआ है और धीरे-धीरे ही इसका विकास हुआ है। बैराइटा-कार्बके तालुमूल-प्रदाह (Tonsilitis) की यही प्रकृति होती है। जब कि **बेलेडोना**का तालुमूल

प्रदाह बड़ी तेजीसे आता है, हीपरकी तरह तेज़ होता है तथा पीब होनेकी सम्भावना रहती है। एक ऐसी भी तालुमूल-प्रदाहकी दवा है, जिसमें कान भी आक्रान्त हो जाता है, यह गर्मीसे घटता है, उसका बहुत कम व्यवहार होता है; पर है बड़े कामकी, यह कैमोमिला है और खासकर यह उसी समय उपयोगिनी होती है, जब रोगी चिड़चिड़ा रहता है। दर्द बहुत वेगसे पैदा होता है और गर्म प्रयोगसे घटता है। बेलेडोनाके प्रदाहसे उसका भ्रम हो सकता है, पर कैमोमिला इसे जड़से आरोग्य कर देता है। "कण्ठमें ठेपी रहनेकी तरह अनुभूति" अर्थात् तालुमूल इतने बढ़ गये हैं, कि वे एक बड़ी गाठ या ढेलेकी तरह कण्ठमें अनुभव होते हैं। उनसे आवाज़की प्रकृति बदल जाती है, बोलनेमें तकलीफ़ होती है। "कण्ठमें बहुत जलन।" तरलके सिवा और कोई भी चीज़ निगलनेकी शक्ति नहीं रह जाती। इस उपदाह (Irritation) की वजहसे लगातार श्वास रोधका भाव और कण्ठमें आक्षेपिक सङ्कोचन बना रहता है, तनाव, खिंचाव और कण्ठमें ऐंठन। इसमें निगलनेके समय खासकर पुराने स्नायविक या अकाल स्वास्थ्य भग्न मनुष्योंकी कण्ठनलीमें भी अकड़न होती है। "अन्ननली (Œsophagus) में ऐंठन, निगलनेमें कष्ट।" खाद्यका ग्रास कुछ दूरतक तो नीचे उतर जाता है, इसके बाद अकड़न पैदा हो जाती है, रोगीका मुँह बन्द हो जाता है और उसका श्वास बन्द होने लगता है। थोड़े-से खाद्यसे भी मुँह बन्द हो जाना और श्वास-रोध कलि-कार्ब, ग्रेफाइटिस और मर्क-कोरका एक जबर्दस्त स्वरूप है। यह बैराइटा-कार्बका भी एक जबर्दस्त लक्षण है, पर मर्क-कोरमें और भी ज्यादा जबर्दस्त होता है।

खाने-पीने, भूख और पाकाशयकी तकलीफें एक साथ ही जारी रह सकती हैं। "पाचनकी कमजोरी रहती है।" भोजन करनेके बाद सब तरहकी गड़बड़ियाँ तथा पाकाशयमें सब तरहकी अरुचिकर अनुभूतियाँ होती हैं। कभी पाकाशयका प्रदाह और कभी पाकाशयका प्रसारण। "भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द होता है।" भोजनके बाद बहुत कमजोरी मालूम होती है, तलपेट कड़ा और तना रहता है। "मध्यान्त्रत्वच् ग्रन्थियाँ (Mesenteric glands) फूली और कड़ी रहती हैं, तलपेट बड़ा रहता है और औदरिक

पेशियोंमें छूनेपर यन्त्रणा होती है।" इसने आरम्भिक अवस्थाका मध्यान्त्रिक क्षय-रोग (Tabes mesenterica) आरोग्य कर दिया है। इसने बच्चोंका उस अवस्थाका बढ़ा हुआ पेट आरोग्य कर दिया है, जब उसके हाथ-पैर दुबले हो रहे थे, सभी जगह क्षीणता थी, बढ़ी हुई ग्रन्थियोंकी गाँठें थीं और बुद्धि क्षीण हो रही थी।

बैराइटा कार्बमें दीर्घकाल स्थायी कब्ज रहती है, कष्टकर, गाँठ-गाँठ पाखाना होता है, पाखाना कड़ा होता है और खुलासा नहीं होता। मल-नालीकी ठीक-ठीक क्रिया नहीं होती तथा मल और मूत्रके समय अर्शकी बलि निकल पड़ती है।

लिङ्गेन्द्रियकी भी विचित्र शक्ल रहती है। यह दवा समस्त कामेच्छा और काम-शक्तिको हरण कर लेती है, जननेन्द्रियको शिथिल बना देती है और नपुंसक बना देती है। लिङ्गेन्द्रिय शिथिल, नामर्द, कामेच्छा घटी, मूत्राशय-मुखग्रन्थि-ग्रन्थि बढ़ी हुई, अण्डकोष क्षीण।" मूत्रनलीसे होनेवाला पुराना सूजाकका स्राव, यह आरोग्य कर देता है। पुराना, दर्द-रहित, सफेद, सूजाकका स्राव, जो बहुत दिनोंसे होता आ रहा था, इसने आरोग्य किया है। यह एक बदबूदार स्राव रहता है और प्रदाह नहीं रहता। "जननेन्द्रियका सुस्तपन।"

स्त्रियोंकी भी बहुत-सी तकलीफें इसमें शामिल हैं। बन्ध्यात्व डिम्ब-कोषकी क्षय-प्राप्ति। स्तन-ग्रन्थिका क्षय हो जाना, इतनेपर भी लसिका-ग्रन्थियाँ बढ़ी रहती हैं और रस-भरी रहती हैं। धीमा श्वेत-प्रदरका स्राव होता है। स्राव सफेद, गाढ़ा, लगातार होनेवाला, अकसर बहुत ज्यादा, मासिक रज-स्रावके एक सप्ताह पहले बहुत बुरी हालत रहती है।

धातुगत कमजोरी स्वर-यन्त्रपर जा पहुंचती है, एक पाक्षाघातिक दुर्बलता, आवाज एकदम रुक जाती है या "स्वर-भङ्ग या रूखी आवाज हो जाती है।" धीमी, फुसफुसाहटकी तरह आवाज, धातुगत दुर्बलता और पक्षाघातके कारण स्वर-भङ्ग। स्वर-यन्त्रमें हमेशा ऐसा ही अनुभव हुआ करता है, मानो धुआँ, अलकतरेका गन्ध या गन्धकीका गन्ध या धूल जा रही है। स्वर-भङ्गके साथ पुरानी सूखी, रूखी, कुत्ते भूकनेकी तरह खाँसी रहती है, कभी खाँसी नहीं, पर यह रोज रातमें आती है। बूढ़ोंकी श्वासरोधक खाँसी। यहाँ कहा है—"फेफड़ोंका आसन्न पक्षाघात।" यह तो इस दवाकी साधारण प्रकृतिसे

अन्तर्गत ही है। वह बलगमसे भरा रहता है, पर रोगी उसे निकाल नहीं सकता। खाँसनेके समय रोगी जो चेष्टा करता है, उसीसे मालूम हो जाता है, कि कहो दुर्बलता—शक्तिका अभाव है। यह जबर्दस्त चेष्टा नहीं है। "दमाकी तरह श्वासके साथ रातमें खाँसी।" स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें उपदाहकी वजहसे खाँसी उत्तेजित होती है। बैराइटा-कार्बमें एक तरहकी खाँसी आती है, जिसमें रोगी तबतक बराबर खाँसता ही जाता है और तबतक उसे आराम नहीं मिलता, जबतक वह पेटके बल लेट नहीं जाता। जबतक वह तलपेटके बल लेटा रहता है, खाँसी नहीं आती। बायीं करवट लेटे रहनेपर इसके बारेमें सोचने, चिन्ता करने और खूनका चढ़ाव, माथेमें तेज़ धमक, तेज़ नाडीके साथ थोड़ा भी परिश्रम करनेपर कलेजेमें धड़कन होने लगना। हरित्पाण्डु रोग-ग्रस्त लड़कियोंका कलेजा धड़कना।

"पीठकी पेशियोंमें तनाव होना, गर्दनके पिछले भागकी गाठोंका फूलना।" ग्रैवेयी ग्रन्थि (Cervical glands) की सूजन। "पीठपर मेदमय अर्बुद (Fatty tumours)।" एक रोगीने कितने ही बार कहा है—"डाक्टर! क्या आप मेरी पीठका मेदमय अर्बुद निकाल दे सकते हैं?" सम्भावना है, पर मैं नहीं जानता, कि उसे एक था। होमियोपैथिक चिकित्सकके चिकित्सा-कालमें अनुमन इस ढङ्गसे चीजें आती हैं, क्योंकि वह अर्बुदके लिये दवा नहीं देता और मौका रहनेपर भी वह अर्बुदपर नुस्खा लिखते समय बहुत कम ध्यान देता है। वह सार्वाङ्गिक औषधि देता है। अर्बुद कुछ दिन बाद आप ही गायब हो जाते हैं और तब वह रोगी सोचता है, कि चिकित्सकने आश्चर्यजनक काम किया है। वह सम्पूर्ण रोगीको आरोग्य कर देनेकी अपेक्षा मसा आरोग्य कर देनेपर विशेष कृतित्व प्राप्त करता है। ठीक तौरसे दवा देनेवाला चिकित्सक समस्त जीवनी-शक्तिको नियमबद्ध बना देता है। वह रोगीको आरोग्य करता है और वह रोगी सुशृङ्खलित अवस्थामें रहनेके कारण अपने शरीरका सुधार करना आरम्भ कर देता है और तब सब साधारण घरकी सफाईकी क्रिया करने लगती हैं तथा अनावश्यक पदार्थ निकाल दिये जाते हैं और चिकित्सक एक असाध्य-साधन करनेवाला समझा जाता है। इस तरह यह दवा अर्बुद और मसे आरोग्य करती है। प्रत्यङ्गोंपर, पीठपर और हाथोंपर मसे।

इसका दर्द गठिया या वात प्रकृतिका होता है। ठण्डे हो जानेपर और ठण्डे घरमें बदतर हो जाता है। पक्षाघातिक दुर्बलता, कम्पन तथा पैरोंका

सुन्नपन। पैरमें बदबूदार पसीना, जिससे तलवेमें यन्त्रणा हो जाती है, पैरमें जखम हो जाता है, पैरका रुखा हुआ पसीना। चलनेके समय पैर लड़खड़ाना और खड़े रहनेके समय कांपना, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें फाड़ने और खींचनेकी तरह दर्द। घुटनोंमें एकाएक तेज़ दर्द।

बैराइटा म्युरियेटिका।

(Baryta Muriatica)

यह गहराईतक काम करनेवाली धातुगत औषधियोंमेंसे एक है और एक ऐसी दवा है, जिसपर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया जाता। हमारी प्रणालीके मनुष्यों द्वारा आरम्भकालमें बहुत लाभके साथ इसका व्यवहार होता है। मानसिक दुर्बलता, उन्माद, वर्द्धित ग्रन्थियाँ और कामोत्तेजन—ये सब कितने ही ऐसे लक्षण-समूह हैं, जिनका बैराइटा म्युरियेटिकाके बिना आरोग्य करना कभी-कभी मुश्किल हो जाता है। इसके साथ ही गहरी मांस पैशिक दुर्बलता सम्मिलित कर दीजिये और कभी-कभी रोगीमें यह दशा जरूर ही मिलेगी या आरोग्य धीमी गतिसे होगा। इसकी शिकायतोंका प्राधान्य **सवेरे**के वक्त, दोपहरके पहले, तीसरे पहर, शामको, **रातमें** और आधी रातके बाद रहता है। इस दवासे सम्बन्ध रहनेवाली बहुत-सी बीमारियोंमें लसिका ग्रन्थि तथा अन्य ग्रन्थियोंकी बीमारियाँ ही विशेष हैं। रोगी खुली हवाकी इच्छा करता है, पर खुली हवामें उसके रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं। इससे धमन्यर्बुद (Aneurism) के बहुत-से रोगी आरोग्य हुए हैं। इसका एक सुदृढ़ स्वरूप है—सार्वाङ्गिक शारीरिक चिन्ता। श्वास कष्ट, धड़कन और कमजोरियाँ सीढ़ी चढ़नेपर बदतर हो जाती हैं। **सलफर**की तरह नहानेसे भय होता है। सर्दी हो जाने या ठण्डी हवामें अकसर रोग-लक्षण बदतर हो जाते हैं। इसका एक आवश्यक स्वरूप है—अकड़न प्रवणता। सर-दर्दके साथ अकड़न, बड़बड़ाना, पेटमें जलन और वमन, पूर्ण-चेतना तथा बिजलीके झटकेके साथ अकड़न, कभी अकड़न, कभी शिथिलता। इसने मृगीके कितने ही कष्टसाध्य रोगी आरोग्य किये हैं। रक्तवाहिनियोंका प्रसारण,

जाना, पलकोंका लाल होना, शिराएँ टूटीं, आँखोंका कड़ापन, कनीनिकाका जखम, पलकें फूलीं, बहुत-कुछ कोनियमकी तरह दृष्टिसे अत्यधिक काम लेनेके कारण आँखकी बीमारियाँ, झिलमिलाहटके साथ धुँधली दृष्टि।

दोनों कानोंके पीछे फोड़े, दोनों कानोंसे पीव बहना, बहुत ज्यादा, बदबूदार, नष्ट हुए पनीरकी तरह, सड़ी बदबूसे भरा पीव, आरक्त ज्वरके बादका पीवका स्राव। कानपर उद्भेद, श्रवण-पथका कानका पुनरावर्त्ति-प्रदाह, कानमें खुजलाहट, चबाने या निगलनेके समय कानमें आवाज़, कण्ठ-कर्णी-नली (Eustachian tube) की श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह, भनभनाहट, बजने और गरजकी सी आवाज़ कानमें आती है। दोनों कानोंमें दर्द, बहुत गहराईमें दर्द, दाहिने कानमें दर्द ज्यादा रहता है। गल-क्षतके साथ कानमें दर्द, गल-क्षतके साथ दर्दवाली करवट लेटनेपर दर्द और भी बढ़ जाता है। ठण्डे पेयोंसे अच्छा रहता है, खोंचने, सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह कानका दर्द, कानके पीछे फाड़नेकी तरह दर्द, कानमें स्पन्दन, कानमें सुरसुरी, ऐंठन, श्रवण-शक्ति विकृत, अन्तमें नष्ट हो जाती है।

बहुत ज्यादा, गाढ़े पीले स्रावके साथ नाककी सर्दी, ज्वरके साथ पानीकी तरह पतली सर्दी, नाकमें सूखापन, नाकसे रक्त-स्राव। नाकमें खुजलाहट, नाक रुकी रहती है, नाककी खाल उधड़ जाना, नाकको ठोरके बगलमें एक लाल बतौड़ी। नाकमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। बारम्बार छींके आना, बिना नोंद खुले हो नोंदमें छींकना।

ज्वर रहनेपर चेहरा लाल, नहीं तो पीला रहता है। चेहरेमें खींचन और ऐंठन। ओठोंका सूखापन। कानसे पीवका स्राव होनेके साथ निम्न-हन्वस्थ-ग्रन्थि (Sub-maxillary gland) बढ़ी और कड़ी रहती है। नाक और पेशानीपर उद्भेद, पपड़ी, फुन्सियाँ, चिन्ताजनक भाव और चेहरा गर्म रहता है। आरक्त ज्वरके बाद दाहिनी कर्णमूलीय ग्रन्थिका प्रदाह, गर्दन और जबड़ेकी गाठोंका फलना, बहुत कड़ी रहती हैं, दाहिनी कर्णमूलीय-ग्रन्थि, निम्न-हन्वस्थ-ग्रन्थि (Sub-maxillary gland) का कड़ापन। मिचली और अतिसारके साथ चेहरेका तनाव।

मसूढ़ोंसे खून बहता है, जीभ फटी, जीभ सफेद। सवेरे मुँह और जीभका सूखापन, लेप-चढ़ी जीभ, लसदार श्लेष्मासे मुँह भरा रहता है और जीभ ढँकी रहती है, मैल-चढ़ी जीभ, मुँहसे बदबू आती है, सड़ी गन्ध,

पारद सेवन किये रहनेकी तरह मुख-गह्वरमें जलन, मसूढ़ोंमें जखम, जीभका पक्षाघात। प्रत्येक आवेगके साथ मुँहसे लार बहना। बोलनेमें कष्ट, मसूढ़े और तालु फूले। स्वाद तीता, भद्दा, खट्टा, मीठापन लिये, खाद्य-पदार्थ बदबूदार मालूम होते हैं। जीभपर जखम, लार बहनेके साथ दाँतोंका ढीलापन, दाँतोंमें धमककी तरह दर्द। बाध्य होकर बिछावनपर बैठे रहना पड़ता है, आधी रातके बाद और नींदके बाद बहुत बढ़ जाता है। झटका, सुई बेधने और फाड़नेकी तरह दर्द।

कण्ठ और तालुमूलका प्रदाह, सर्दी लगनेपर बार-बार तालुमूलका बढ़ना, कण्ठमें सूखापन। बढ़ी हुई तालुमूल-ग्रन्थि, गल-क्षतके साथ उप-जिह्वाका बढ़ना, कण्ठमें लसदार बलगम, कान और कण्ठमें दर्द, दाहिने पार्श्वमें बहुत अधिक लार बहनेके साथ, निगलनेके समय बदतर होना, कण्ठमें जलन। तालुमूलका पकना। निगलनेमें बहुत तकलीफ होती है, फूली हुई तालुमूल-ग्रन्थि। कण्ठमें शिरा-स्फीति। ग्रैवेयी-ग्रन्थि (Cervical gland) की सूजन और कड़ापन।

राक्षसी भूख, भूख न लगना, खाद्यमें अनिच्छा। गेहूँकी सूखी रोटी खाना चाहता है। पाकाशय तना रहना। पाकाशयमें खालीपनका भाव। भोजनके बाद डकार, तीता पानीका।

पाकाशयसे माथेपर गर्मीकी लहर चढ़ती है। कड़ा भोजन करनेपर पाकाशयमें भरापन और भार मालूम होना, कलेजेमें जलन, हिचकी। वह केवल सरल-से सरल भोजन खा सकता है, क्योंकि पाचन धीमा और पाकाशय कमजोर रहता है। पाकाशयका प्रदाह, खाद्य-पदार्थसे घृणा, मिचली। पाकाशयमें दर्द, ऐंठन, भोजनके बाद दबाव मालूम होना, यन्त्रणा, सुई गड़नेकी तरह दर्द। ओकाई, तनाव, सूखी जीभके साथ प्यास। शीतके समय बहुत ज्यादा। सवेरेके वक्त वमन, सर-दर्दके साथ, लगातार पित्त, रक्त, श्लेष्मा, पानीकी तरह वमन, बहुत घबड़ाहट और विरेचनके साथ सवेरेके वक्त वमन।

तलपेटका प्रसारण। मध्यान्त्र लघु ग्रन्थि (Mesenteric glands) और यकृत कड़े तथा बड़े। पेट फूलना, भरापन, तलपेट कड़ा। सवेरेके वक्त, खानेके बाद, पाखाना होनेके पहले, पेटमें दर्द, कोखकी जगहपर जलन,

मरोड़, काटनेकी तरह दर्द, कुक्षि-प्रदेशमें और वंक्षण-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। औदरिक धमन्यर्बुद (Abdominal aneurism) में यह बहुत लाभदायक प्रमाणित हुआ है। फूला हुआ यकृत, दबे हुए सूजाकके बाद फूली हुई वंक्षण-ग्रन्थि (बाघी), उदर तना रहना, वंक्षण-प्रदेशमें जखम।

कब्ज, मल कठिन, पाखानेकी इच्छा ही नहीं होती, मल कड़ा और श्लेष्मासे ढँका रहता है, अधिकतर दर्द नहीं होता। अतिसार भी अमूमन दर्द-रहित ही होता है। रक्तामाशय, खून-मिली आम, चाशनीकी तरह मल, बार-बार साधारणतः दर्द-रहित ही होता है। बहुत बदबूदार अधोवायु, आँतोंसे तथा सरलान्त्रसे रक्त-स्राव, बाहरी अर्श, बहुत देरतक पेशाब होना, मलद्वारमें खुजली, आप-ही-आप दस्त हो जाना, मलद्वार चिपचिपा, पाखानेके समय सरलान्त्रमें थोड़ा-सा दर्द, पाखानेके समय और बाद जलन, दबावकी तरह दर्द, जखमकी तरह यन्त्रणा, सुई गड़नेकी तरह दर्द, अकड़न। मलनालीका और मल-द्वारावरोधिनी पेशीका पक्षाघात। मल खून-मिला, चाशनीकी तरह, कड़ा हरा, बदबूदार, कोमल, पतला, पानीकी तरह, सफेद और कड़ा, पीला और चिकना, मलके साथ क्रिमि।

मूत्राशयका प्रदाह। पेशाब रुकना, पेशाबका वेग होना, लगातार, बार-म्बार, बहुत तेज़ पेशाबका वेग होता है, पर पेशाब नहीं होता है। पेशाबमें कष्ट होता है, रातमें बार-बार होता है, पसीना होनेके समय बार-बार पेशाब होता है, रातमें आप-से-आप पेशाब हो जाता है। पुराने सूजाककी तरह मूत्रनलीसे स्राव। इसने पुराना सूजाक आरोग्य कर दिया है। पेशाब करनेके समय मूत्रनलीमें दर्द, पेशाब गर्म, बहुत ज्यादा, बदबूदार होता है। उसमें सफेद तली जमती है, पानीकी तरह, पीला, बहुत दुर्गन्धके साथ।

अण्ड बढ़े हुए। अण्डोंका कड़ापन, दबे हुए सूजाकके कारण अण्डोंका प्रदाह, स्वप्न-दोष, कामेच्छा बहुत बढ़ी हुई बहुत भयानक। डिम्बकोषोंका कड़ापन। श्वेत-प्रदर। ऋतु-स्राव बहुत ज्यादा, बहुत जल्दी-जल्दी, दर्द-भरा, जरायुमें दर्द, बाँझपन।

स्वर-यन्त्र तथा टेंटुआकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह, स्वर-यन्त्र तथा टेंटुआमें उपदाह, स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी। आवाज़ सूखी, खसखसी और कमजोर रहती है। चिन्तित, दमाकी तरह, गहरी, कठिन, खाँसीके साथ साँस तेज़ रहती है, रोगिनीको बाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है, घरघराहट, लघुश्वास।

दिनके समय, सवेरे, शामको, सामने और आधी रातके पहले खाँसी आती है। दमाकी तरह, सूखी, कण्ठमाला-ग्रस्त बच्चोंकी पुरानी सूखी खाँसी, स्वर-यन्त्र और टेटुआमें उपदाहकी वजहसे खाँसी, घरघराहट, हपिङ्ग खाँसी, सवेरे बलगम निकलता है। बलगम बहुत ज्यादा, श्लेष्मा पीव-मिला बलगम श्वासोपनलियोंसे (Bronchial tubes) निकलता है। बलगम पीला रहता है। इरटिका उद्भेद (दद्रु-रोग) और काठिन्य-प्राप्त अण्डोंके साथ वच्चकी यक्ष्माको अवस्था इसने आरोग्य की है। स्पष्ट कलेजेकी धड़कन, मेरुदण्ड टेढ़ा पड़ जाने (Spinal curvature) की यह बहुत ही उपयोगिनी औषधि है।

हाथ-पैर ठण्ढे, अगूठेमें मरोड़, प्रत्यङ्गोंके खींचनसे तकलीफ़ घटती है। प्रत्यङ्गोंपर उद्भेद, फुन्सियाँ, हाथ गर्म, समूचे शरीरमें भार, बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है। प्रत्यङ्गोंमें खुजली, जघामें खुजली, रातमें बाहुओंमें दर्द-रहित झटका लगता है। अकड़नके साथ तीव्र सामयिक झटकेके प्रत्यङ्गोंमें लगते हैं। आलस्य, अगुलियोंका सुन्न पड़ जाना, ऊपरी प्रत्यङ्ग तथा जांघोंमें दर्द। बायीं ओरका पक्षाघात, निम्न-प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात। तलवेमें पसीना होना, पैरका पसीना दबा हुआ, कन्धा फड़क उठना। हाथ, निम्न-प्रत्यङ्ग घुटने और पैरोंका फूलना, घुटनेमें तनाव प्रत्यङ्गोंका काँपना। ऊपरी प्रत्यङ्ग जघा तथा पैरोंमें ऐंठन। पैरोंमें जखम, प्रत्यङ्गोंकी दुर्बलता।

स्वप्न, काम-भाव-भरे, चिन्ता-जनक, डरावने, दुर्भाग्य-सम्बन्धी, आनन्ददायक, जीवितकी तरह। बेचैन नींद, औंघाई, तीसरे पहर, शामको, भोजनके बाद, आधी रातके पहले नींद नहीं आती, बार-बार जागना पड़ता है।

सवेरेके वक्त, शामको, बिछावनमें ठण्ढापन, जाड़ा लगना, बाहरी शीत, प्रत्येक तीसरे दिवस हिला देनेवाला जाड़ा मालूम होता है। रातमें और शामको ज्वर, जलनकी तरह ताप, जाड़ाके साथ ताप, दिनभर शुष्क ताप, रातके समय शुष्क ताप।

चर्ममें सुखापन, काटनेकी तरह दर्द और जलन, त्वचा ठण्ढी, उद्भेद, अकौता, समूचे शरीरमें भैंसिया दादकी तरह उद्भेद, फुन्सियाँ, खरोंट, पीले खरोंट, डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ शीतपित्त, विसर्प, सुरसुरी, रोमाच होना। चर्मका प्रदाह, खुजली, सूजन और तनाव। समूचा शरीर छोटे-छोटे जखमोंसे भरा रहता है। अस्वस्थ्य चर्म। जलता हुआ जखम।

बेलेडोना।

(Belladonna)

बेलेडोना एक ऐसी दवा है, जो बहुत तेज़ीसे शरीरपर अधिकार जमाती है। यह खासकर रक्त-पूर्ण, बलशाली व्यक्तियों और बुद्धिमान मनुष्योंके लिये उपयोगी है। दिमागवाले पुरुषोंकी बीमारियाँ एकाएक ही पैदा होती हैं, जब वे पूर्ण सुदृढ स्वास्थ्यवाली अवस्थामें रहते है तथा वास्तवमें रक्त-पूर्ण और नाड़ीमय रहते है। बेलेडोनाकी बीमारियाँ एकाएक आती है, नियमित-पथसे चलती हैं और एकाएक ही गायब हो जाती हैं। दर्द तथा कष्ट भी एकाएक ही और बहुत वेगसे आते है और एकाएक दब जाते हैं। सर्दी बहुत तेज़ीसे आती है, तेज़ीसे ही चलती है, बहुत जोरकी बनी रहती है और एकाएक गायब हो जाती है। बेलेडोना वास्तवमें समस्त नाड़ी-मण्डलपर, हृत्पिण्डपर, फ़ेफड़ेपर, दिमागमें और स्नायु-विधानपर आक्रमण करता है।

जाँचकी सबसे पहली अवस्था ताप है। इसमें सभी यन्त्रोंका प्रदाह रहता है, खासकर मस्तिष्क, फेफड़े और यकृतमें। अन्य यन्त्रोंकी तरह आँते भी आक्रान्त हो जाती हैं। इन प्रदाहोंके साथ हमेशा तीव्र ताप रहता है, ताप कुछ गैरमामूली चीज़ है। यह किसी भी दूसरी दवाके अपेक्षा बेले-डोनामें अधिक स्पष्ट रहता है। जब आप बेलेडोनाके किसी रोगीके शरीरपर हाथ रखेंगे, तो इतनी ज्यादा गर्मी रहती है, कि तुरन्त खींच लेंगे। हाथ और अंगुलियोंमें कुछ देरतक तापकी याद बनी रहती है। दर्द, प्रदाह और कष्ट, प्रलापका रातके समय आक्रमण तथा इस तरहके तापके साथ प्रादाहिक प्रकृतिका तीव्र आक्रमण होता है। कहीं भी प्रदाह क्यों न हो, वहाँ वही अति तीव्र ताप रहता है। ऐसा भी अवसर है, जब इस ढङ्गकी गर्मी तो मौजूद रहती है, पर यह बेलेडोनाकी नहीं रहती, यह तब होता है, जब अविराम श्रेणीका ज्वर रहता है। बेलेडोनामें अविराम ज्वर नहीं आता। यह सत्य है, कि प्राचीन पुस्तकोंमें, टाइफायडकी तथा अन्य ज्वरोंकी इस भयानक गर्मीके लिये बेलेडोनाका उल्लेख किया गया है, पर यदि आप आदिसे अन्ततक बेलेडोनाकी परीक्षा करेंगे, तो आप इसके ज्वरोंमें अविराम रूप कभी न पायेंगे। इसका ज्वर स्वल्प-विराम (Remittent) रहता है। इसकी

बीमारियाँ कभी भी टाइफायडको तरह धीरे-धीरे नहीं उत्पन्न होतीं। अविराम ज्वरको तरह इसका ज्वर कभी भी धीरे-धीरे चढ़ता उतरता नही है। मैं यह केवल इसीलिये कह रहा हूँ, कि आप भ्रममें न पड़ जायें। हमारे पूज्य हेरिङ्ग, ससारके सबसे योग्य चिकित्सक, जब प्रलाप और ताप बेलेडोनाकी तरह टाइफायड ज्वरमें रहे, तो इसका प्रयोग बताते हैं, पर मुझे बताने दीजिये, कि वास्तवमें होता क्या है? जब टाइफायड ज्वरमे आप प्रलापमें बेलेडोना दे गे, उस प्रलापमें जो बेलेडोनाकी भाँति दिखाई देता है, तो आप प्रलापको तो दबा दे गे पर इस ज्वरमें अन्य प्रदर्शन उत्पन्न हो जाये गे। आप ज्वरको नहीं दबा सके गे, बल्कि रोगीको ही दबा दे गे, रोगी और भी ज्यादा बीमार हो जायगा। प्रलापावस्थामें रहनेकी अपेक्षा उसकी सुस्ती और भी ज्यादा बढ़ जायगी, पर जिस रोगीका वर्णन देते हुए हेरिङ्गने बेल बताया है, उसमे **स्ट्रेमोनियम,** सबसे ज्यादा ठीक बैठता है। उस गर्मीका अन्दाज़ा बैठा लेना चाहिये। **ताप, बहुत तेज ताप, भयङ्कर ताप।**

इन प्रादाहित उपसर्गोंमें और ज्वरोंमें जारी रहनेवाला बेलेडोनाका एक और भी स्वर है। प्रादाहिक स्थान और बहुत साधारणत चर्म, **बहुत** लाल रहता है और ज्यों-ज्यों प्रदाह बढ़ता जाता है, वह धुमैला होता जाता है, ज्यों ज्यों बीखार बढ़ता जाता है, चेहरा मलिन होता जाता है, पर पहला निदर्शन बेलका चमकीला लाल है और चर्म भी चमकीला रहता है। कोई भी दिखाई देनेवाला प्रादाहित स्थान लाल रहेगा। ग्रन्थियोंका प्रदाह होनेपर गाँठके ऊपरका चमड़ा उस जगहपर चमकीला लाल रहेगा। इसीलिये प्रादाहित ग्रन्थियोंके गलेपर लाल दाग रहते हैं। कर्णमूलीय-ग्रन्थिका प्रदाह, निम्न-हन्वस्थ-ग्रन्थिका प्रदाह, ग्रैवेयी ग्रन्थिका प्रदाह—इनमेंसे प्रत्येकपर आगकी तरह लाल दाग रहेगा। कण्ठ आरक्तकी तरह लाल रहता है। श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाहित रहती है और आरक्तकी तरह लाल रहती है। थोड़ी देर बाद यह धुमैली हो जाती है और अन्तमें मलिन। यह बेलेडोनाकी प्रकृति और चरित्रको बताती है। यह धीरे-धीरे रस रक्त बिगड़नेकी ओर बढ़ती जाती है, जैसा कि हम आरक्त ज्वरमें तथा निम्न प्रादाहिक अवस्थाओंमें देखते है। पहले बहुत अधिक रक्त-सञ्चय रहता है, पर इसके बाद हो सङ्कोचन-प्रसारणशील शिराओं तथा धमनियोंका (Vaso-motor) पक्षाघात होता है। बहुत ज्यादा रक्त-सञ्चय और पीलापन या बैंगनी और मलिन।

बेलेडोनाका दूसरा वृहत् रूप इसके प्रादाहिक स्थानोंमें तथा दर्द-भरी जगहोंमें रहता है। जब कभी अपनी निश्चित क्रियाके अनुसार बेलेडोना कुछ उत्पन्न करता है, तो उसमें **जलन** रहती है, तेज़ जलन होती है। बेले-डोनाके गलक्षतमें कण्ठमें अङ्गारेकी तरह जलन होती है। तालुमूलका प्रदाह, आगकी तरह जलन रहती है। चमड़ा मानो जलता है, रोगी इसे आगकी तरह गर्म अनुभव करता है और चिकित्सकको भी अत्यधिक गर्म मालूम होता है। आरक्त ज्वरमें, त्वचामें जलन होती है। वह कहता है—"डाक्टर! इसमें इतनी जलन होती है, इसमें बेतरह जलन होती है।" पित्तज या स्वल्प-विराम ज्वरमें, यन्त्रोंमें प्रदाह हो जानेपर, त्वचा जलती है, जलता हुआ बोखार रहता है और स्वयं उस स्थानमें भी जलन होती है। जलनके साथ मूत्राशयमें प्रदाह। मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय और माथेमें जलन होती है। कण्ठमें रक्त-सञ्चय होनेपर, कण्ठमें जलन होती है। उस स्थानपर तो यह गर्मी रहता है, पर उस रोगीको भी ज्वाला होती है। पाकाशय-प्रदाह हो जानेपर (*Gastritis*) जलन होती हैं, यकृतका प्रदाह हो जानेपर यकृतमें जलन होती है। कामला रोगके साथ यकृतमें रक्त-सञ्चय और यकृतमें ज्वाला होती है। अब इसके तीन निर्देशक स्वरूप प्राप्त होते है, इन्हें कुञ्जी न समझिये। मेरा यह मतलब नहीं है, बल्कि **गर्मी, लाली और जलन।** हम देखेंगे, कि वे किस तरह रोगके समस्त स्वरूपको बता देते हैं, वे किस तरह भीतर प्रवेश करते हैं और किस तरह शाखाओंमें विभक्त करते हैं और उनका क्या अर्थ होता है?

पर, यही सब कुछ नहीं है। बेलेडोनामें बहुत **सूजन** भी होती है। प्रादाहित स्थान बहुत तेजीसे फूल जाते हैं, उनमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता, बहुत दर्द होता है और ऐसी अनुभूति होती है, मानो फट जायगा। दबावकी तरह, डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन होती है। इन प्रादाहित स्थानोंमें गर्मी, लाली, जलन रहती है और सूजन भी। सूजन, डङ्क मारनेकी तरह, जलन, टपक। उसे सभी स्थानोंपर **टपक** होती है। सब तरहके रक्त-सञ्चय और प्रदाहोंमें टपक होती है। उस स्थानमें तो टपक होती ही है, साथ ही स्कन्ध-देशकी दोनों धमनियोंमें भी टपक होती है। बच्चोंको जब मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयकी बीमारी होती है, तो उनका माथा बहुत गर्म रहता है। यदि वे इतने बड़े रहते है, कि बोल सकें तो कहते हैं,—

"यह जल रहा है।" पर उसी समय हमलोगोंको टपक भी लक्ष्यमें आयगी। कनपटीकी धमनियोंमें और कपालिका धमनीमें बड़े जोरोंकी टपक होती है, कुछ गोलमाल जारी है, भूमि कम्प हो रहा है। जब रोगीको बेलेडोनाकी जरूरत रहती है, तो मानो सभी चीजें हिलती हैं। दवाओंमें, यह बहुत ही दर्द-भरी दवा है। इसमें दर्दका बहुत अधिक अनुभव होता है। यह इतना स्पर्श-असहिष्णु रहता है, कि दर्दसे साधारण मनुष्योंको जितनी तकलीफ होती है, उससे कहीं ज्यादा दर्दकी तकलीफ होती है। और भी याद रखिये,—**दर्द एकाएक पैदा होता है**, वह ज्यादा देरतक या थोड़ी देरतक रहता है और वह **एकाएक ही आराम भी हो जाता है**। स्नायु-शूलमें ऐसा ही होता है, प्रादाहिक अवस्थाओंमें ऐसा ही होता है। यन्त्रोंका प्रदाह हो जानेपर ऐसा ही होता है और जहाँ कहीं बेलकी बीमारी होती है, वहाँ ऐसा ही होता है। दर्द, फाड़ने, धक्का देने, जलने, डङ्क मारने, दबाने और खोंचा मारनेकी तरह—सब—तुरन्त एक साथ होता है। ये सभी चरित्रगत लक्षण एक गठरीमें, मानो इस तरह इकट्ठे हो जाते हैं, कि उसे तकलीफ होती है। उसके सभी दर्द हिलने-डोलनेसे बदतर हो जाते हैं, रोशनीसे बढ़ते हैं, गतिसे बढ़ते हैं और सर्दीसे बढ़ते हैं। रोगी कपड़ा लपेटकर गरमाये रहना चाहता है, जरा भी खुली हवा या हवाका झोंका लगनेपर उसकी बीमारी बढ़ जाती है। अन्य दर्दों की भांति ही इसका सर-दर्द भी होता है। रोगीको ऐसा अनुभव होता है, मानो मस्तिष्क ऊपर-नीचे चढ़-उतर रहा है। प्रत्येक कदमपर फाड़ने और जलनेकी तरह दर्द होता है और प्रत्येक बार आँख हिलाने या चक्षु-गोलक फेरने अथवा सीढ़ी चढ़ने, अपनी जगहसे उठने या बैठनेपर दर्द होता है। सब तरहकी गतियोंसे उसे भयङ्कर दर्द होने लगता है। ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा, मानो आँखें दबकर बाहर निकल पड़ेंगी। यदि वह हिलता-डोलता है, तो यन्त्रणा-भरे स्थानोंपर उसका कलेजा धड़कने लगता है। वह इसे "हथौड़ेसे मारनेकी तरह दर्द" कहता है। जहाँ कहीं यह दर्द होता है, वहाँ उसे छूने नहीं देता, छूनेसे ही उसमें टपक होने लगती है। यदि खुल जाता है, तो और भी बदतर हो जाता है। यदि कोई सड़कपर चलता है, तो कम्पन उसकी बीमारी बढ़ा देता है। पलङ्गका

हिलना, यदि वह पलङ्गपर रहता है, तो बेलकी एक साधारण रोग-वृद्धि है। यदि वह इतना बीमार है, कि खाटपर पड़ा है, तो **खाटका हिलना,** उसकी सभी बीमारियोंको बदतर बना देता है। यकृत-प्रदाहके किसी रोगीके पलङ्गके पास आप जाइये, वह आपको पलङ्गपर हाथ न रखने देगा, क्योंकि हिलनेसे उसकी बीमारी बढ़ जाती है। यदि यह दर्द पक्वाशयमें है, उपदाहित गर्भाशयमें है, वही प्रकृति रहती है। हिलनेसे रोग-वृद्धि इतना स्पष्ट लक्षण है, कि यह केवल प्रदाहतक ही सीमित नहीं रहता। स्नायविक अतिरिक्त अनुभूति (Nervous hyperæsthesia) की अवस्थामें यह अकसर एक परिवर्त्तन-रूपमें रहता है। सूतिका-गृहकी कोई स्त्रीको प्रदाह और भय न रहनेपर भी इस तरहकी अतिरिक्त स्नायविक अनुभूतिकी अवस्था रहती है, कि वह हवा न निकलने देनेके लिये खिड़कियाँ बन्द किये रहती है। वह किसीको छूने नहीं देना चाहती, वह नहीं चाहती कि उसकी पलङ्ग हिले, क्योंकि जरा-से भी हिलनेसे रोग-वृद्धि हो जाती है। कोई स्पर्श-असहिष्णु अङ्ग न रहनेपर भी हिलना उसे बिलकुल ही सहन नहीं होता। आप किसी ऐसे रोगिनीको देखने जाइये और आपको समयपर मालूम हो जायगा, कि यदि आप बेलेडोना नहीं देंगे, तो आपको कष्टप्रद प्रसवका सामना करना पड़ेगा, पर बेलेडोनाकी एक खुराकसे ही ये सभी तकलीफें तेजीसे दूर हो जायेंगी, ऐसी ही इस दवाकी तीव्र क्रिया है। बिछावनका हिलना ही अकसर आपको दवाकी प्रकृति बता देगा। यदि पित्त-पथरी शूलके रोगीके पलङ्गके पास आप जायेंगे, जिसे तेज़ दर्द होगा, तो वह बिछावनको छूने न देगा। उसका चेहरा गर्म है, उसकी त्वचा जलती है, वह छुआ नहीं जा सकता, वह बेतरह घबड़ाहटमें है और कमरा पार करनेके पहले ही वह आपके सामने कह देगा। आप यह सब देखते हैं। वह कहता है,—"डाक्टर! बिछावनको न छुइये।" यह एक खास लक्षण है, हिलनेसे रोग-वृद्धि एक स्पष्ट लक्षण है।

ऐंठन—सार्वाङ्गिक ऐंठन और स्नायविक ऐंठन। छोटी-छोटी प्रणालियोंका, चक्करदार तन्तुका, नलाकार यन्त्रोंका, जैसा कि मैंने पित्त-पथरीके शूलमें बताया है। साधारण पित्त-प्रणालीमें (Ductus communis choledochus) कसकर पकड़ रखनेका भाव रहता है या कौषिक-प्रणालीके चक्राकार तन्तुओंमें यह पकड़ रखनेका भाव रह सकता है, कि वे चक्राकार

तन्तु पत्थरके छोटे टुकड़ेको पकड़ रखते हैं और उसे निकलने नहीं देते। इसके निकल जानेके लिये रास्ता भी काफी बड़ा है और इसने निकलनेकी ओर बढ़ना आरम्भ भी किया है पर उस स्थानके उपदाहके कारण ऐंठन होती है और यह उस छोटी पथरीको पकड़ रखता है। आप रोगीकी जीभपर बेलकी एक खुराक रख दीजिये,—ऐंठन दूर हो जायगी, पत्थर निकल जायगा और फिर कोई तकलीफ न रह जायगी, पन्द्रह मिनटके भीतर ही पित्त-पथरीका शूल गायब हो जायगा। पित्त-पथरीके शूलमें होमियोपैथिक नुस्खा कभी भी असफल नहीं रहा है। लक्षण हमेशा बेलके ही नहीं रहते, पर इस अवसरपर, जहां बहुत अधिक अनुभवाधिक्य मौजूद है, वहां बेल ही उसकी दवा है।

"बच्चोंकी अकड़न।" यह बहुत ही तीव्र होती है और अकसर इसके साथ लघु-मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय रहता है। त्वचा हमेशा ज्वरकी अवस्थामें रहती है। ये रोगनी, ठण्डी हवाका झटका तथा बच्चेके सर्द हो जानेसे उत्पन्न हुई हैं। स्नायविक दिमागवाले लड़के, जिनका भले आकारका मस्तक रहता है, गोलगाल सरवाला, बड़े सरवाले लड़के, खासकर लड़कोंको, पर लड़कोंका माथा रखनेवाली लड़कियोंको भी जब सर्दी लग जाती है, तो उन्हें अकड़न (टङ्कार) की बीमारी हो जाती है। रोगनी, गति और सर्दीसे ये टङ्कार उत्पन्न होते हैं। **ब्रायोनिया**की तरह बेलेडोनाके रोगीको भी सभी तकलीफें हिलने-डोलनेपर बढ़ती हैं। हिलने-डोलनेसे ही टङ्कार होता है और हिलने-डोलनेसे ही दर्द होता है, हिलने-डोलनेपर हृदपिण्डकी गति बढ़ जाती है और धमक पैदा हो जाती है, हिलने-डोलनेसे बहुत-सी शिकायतें पैदा हो जाती हैं और बीमारी बढ़ जाती है। जब कभी आप बेलेडोनाको देने जाइये, तो इन सब साधारण लक्षणोंको ध्यानमें रखिये। बेलेडोनाका विचार अवश्य जारी रहना चाहिये। कुछ परवाह नहीं, कितने ही छोटे लक्षण आप एकत्र कर सकें, इनपर पहले पहुँचिये।

बेलेडोनाके मानसिक लक्षण अध्ययन करनेमें आनन्द आता है, पर उनको देखनेसे भय लगता है। मानसिक लक्षण वैसे ही हैं, जैसे तेज़ बोखारमें आते हैं, जैसे उन्मादकी उत्तेजनामें, प्रलापमें दिखाई देते हैं। बराबर उत्तेजना बनी रहती है समस्त मानसिक लक्षणोंके साथ तीव्रता बनी रहती है, सभी मानसिक लक्षण तीव्र रहते हैं कभी भी धीमे नहीं रहते। बेलेडोनामें

धीमा प्रलाप कभी नहीं होता। यह एक वहशतकी हालत है। वह वहशी हो जाता है, मारता है, दाँत काटता है, चीजोंको फोड़ता है, गैरमामूली काम करता है, अद्भुत कार्य करता है, अचिन्तित कार्य करता है। वह उत्तेजनाकी हालतमें रहता है। ज्वरमें पैदा होनेवाले ये मानसिक लक्षण, प्रलाप और उत्तेजना कुछ थोड़ी हलकी चीज़ खा लेनेसे ही दब जाते हैं। बेलमें यह साधारण नहीं मालूम हुआ है, पर यह एक बहुत ही सुदृढ़ लक्षण है, पर साथ ही उस तीव्रताको याद रखिये और इसके साथ ही यदि आप रोगीके पलङ्गके पास जायें, जिसे भयानक सरशाम हो रहा है, तो **गर्मी, लाली** और **जलन**को याद रखिये।

खाम-खयालोंसे भरा। भूत-प्रेत, अफसर और जङ्गली चीजें देखता है। ज्वरकी आरम्भिक अवस्थामें बहुत ही तेज़ प्रलाप और उत्तेजना रहती है, पर ज्योंही यह बन्द होता है, रोगी सो जाता है, एक प्रकारकी अर्द्ध-निद्रित अवस्था—अर्द्धचेतन अवस्थामें जा पड़ता है। एक तरहके सपनेमें रहता है और वह चिल्ला उठता है। सपनेमें भयङ्कर चीजे देखता है। सपनेमें वे ही चीजें देखता है, जिनके विषयमें बातें करता है। जब उसे सच्ची नींद या आराम मिलता है, उतना आराम जितना उसके लिये सम्भव है, तो भयङ्कर स्वप्न देखने लगता है, कलेजा दबानेके स्वप्न। आगपर चीजें देखता है। यह सरेशाम और मानसिक यातनामें है। कभी-कभी वह मूर्ख हो जाता है, ऐसा मालूम होता है, कि उसने ज्ञान खो दिया है। सब चीजोंको याद भूल जाता है और फिर बहशी हो जाता है। जब ऐसा मालूम होता है, कि वह सो रहा है, उस समय भी उसका प्रलाप जारी रहता है। ये लक्षण अकसर मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयके कारण उत्पन्न होते हैं। बच्चोंका भयानक लघु-मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय। यदि वे बोल सकते हैं, तो कहते हैं, कि माथेमें कोई हथौड़ीसे चोट पहुँचा रहा है। बेलेडोनामें बच्चा भी साधारणतः गहरी तन्द्रामें पड़ा रहता है। वह गहरी तन्द्रा मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयके साथ रहती है। पुतलियाँ फैली रहती हैं, त्वचा गर्म और सूखी रहती है, चेहरा लाल तथा गलेकी नसोंमें टपक हुआ करती है। अन्तमें ज्यों-ज्यों बेहोशी बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों बच्चा पीला पड़ता जाता है तथा गर्दन पीछेकी ओर खिंच जाती है, क्योंकि ज्यों-ज्यों यह बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों मस्तिष्कका तलदेश और मेरुदण्ड आक्रान्त होता जाता है। गलेकी मांस-पेशियाँ सिकुड़ जाती हैं,

जिससे माथा पीछेकी ओर खिचता है और वह सर लुढकाता है। आँखोमें टकटकी लगी रहती है, पुतलियाँ फैली रहती हैं। मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह (Cerebro-spinal meningitis) और आरक्त ज्वरके साथ मानसिक अवस्था सम्मिलित रहती है।

इसके अलावा, ये मानसिक अवस्थाएँ, तेज़ उन्मादका आकार धारण कर लेती हैं। इस समय रोगी दाँतसे चम्मचको काटता है, कुत्तेको तरह भूँकता है और सभी तरहके भयङ्कर कार्य करता है, यहाँतक कि खिडकीसे भी कूद पडता है। उसे रोक रखना पडता है, पकडे रहना पडता है। चेहरा लाल रहता है और शरीर गर्म, कभी-कभी रोगी कहता है, कि उसके सारे शरीरमें जलन हो रही है या माथा जलता है और माथा बहुत गर्म रहता है। इन सब समयोंमें पैर ठण्डे रहते हैं, सर गर्म, पैर ठण्डे या पैर और हाथ बरफकी तरह ठण्डे। ऐसा मालूम होता है, कि सम्पूर्ण रक्त माथेकी ओर दौड गया है। सब तरहके भ्रम-विचार और खाम-खयाल इस नवीन उन्मादके साथ सम्मिलित रहते हैं। भूत-प्रेत, विकटाकार राक्षस, अद्भुत पदार्थ और अपरूप चीजे देखता है। खयाली पदार्थोंका भय लगता है और भागना चाहता है। बेलके सरसाममें वह खिडकीसे कूद पडना चाहता है, दौडना चाहता है, अपने सुश्रूषाकारियोंके पाससे भाग जाना चाहता है। वह सोचता है, कि वे इसे हानि पहुँचा रहे हैं। समस्त नवीन उन्मत्तावस्था तथा समस्त प्रलापावस्थामें सभी प्रदर्शन प्रचण्डताके ही रहते हैं। नाश करनेकी ओर प्रवृत्ति रहती है। नवीन अवस्थामें बेलेडोनाके रोगीपर खयाल रखना पडता है, नियन्त्रण रखना, पकडे रखना और कभी-कभी बाँध रखना पडता है। पाठ्य ग्रन्थोंमें इस अवस्थाको "क्रोध, प्रचण्डता" लिखा है। वह दौरात्म्य करना चाहता है। "कराहता है, खानेके बदले काठके चम्मचको दाँतसे काटकर दो टुकडे कर डालता है तश्तरीको चबाता है और कुत्तेकी तरह गुर्राता और भूँकता है। भयानक रूपसे एक रुग्न बच्चा बेतहाश ठहाका मारता हुआ कमरेमें दौड गया।" इसमें अचैतन्य हँसीका भाव है। एक जोरकी आवाज़के साथ ठहाकेकी हँसी, "एक रोटीके टुकडेको उसने पत्थर समझकर दूर फेंक दिया। एकदम क्रोधमें पलङ्गपर इधर-से-उधर लोटता है, आवाज़ या किसीके सङ्गसे घृणा।" रोशनीसे घृणा, अन्धेरेमें अच्छा रहता है। इन प्रचण्डताओंके आक्रमणके बीचमें समय-समयपर बहुत ज्यादा शान्त अवस्था आती है ,पर

क्रियाशील समय सदा दौरात्म्यसे भरा रहता है, पर कभी-कभी बहुत ज्यादा अक्रिय अवस्था-सी रहती है, जब रोगिनी पलङ्गपर लेट या बैठ जाती है और बिछावनकी चादर फाडती है या कोई भी चीज़ जो उसके हाथमें पडती है, तोड डालती है। यदि यह कोई छडी होगी, तो उसे भी वह तोड डालेगी।

इसके सभी उपसर्गों में, वह प्रलाप हो, ज्वर हो या दर्द हो, सबमें ही **हिल उठनेका** भाव है। नींदमें बिजलीके झटकेकी तरह हिल उठता है। ज्योंही उसे नींद लगती है, बिजलीके झटकेकी तरह उसे एक अनुभूति समूचे शरीरमें होती है। "दूसरोंके आते ही भयसे चौंक पडता है। खयाली चीजोंका भय, उससे भागना चाहता है।" "यह दवा **बहुत व्याकुलतासे** भरी है" ज्योंही रोगी प्रलापके इन आक्रमणोंसे छुटकारा पाता है, ज्योंही वह टङ्कारसे छूटता है, उसके चेहरेपर भय छा जाता है। रोगी बहुत उत्तेजनामें रहता है, रक्तका दौरान बहुत उत्तेजनामय रहता है, हृत्पिण्ड बहुत उत्तेजित रहता है, हिलना-डोलना और भावोद्रेक हृत्पिण्डकी धडकनको बढा देता है।

अब यह समझमें आ गया होगा, कि बेलेडोना एक वह दवा है, जिसमें **बहुत ज्यादा अनुभव होता है** (Over-sensitive), एक अतिरिक्त अनुभूतिवाली अवस्था, तन्तुओंका असीम उपदाह। यही स्नायु-केन्द्रोंका अत्यधिक उपदाह कहलाता है। यही बढकर स्वाद, गन्ध, स्पर्शकी अधिक योग्यतावाली अवस्थामें जा पहुँचता है, ज्ञान-केन्द्रोंकी उत्तेजना, खयालोंका अत्यधिक अनुभव होना, **रोशनी, आवाज, स्पर्श, झटका सबका बहुत ज्यादा अनुभव होना।** ज्ञान केन्द्र बहुत ज्यादा उत्तेजित रहता है, स्नायविक उपदाह बहुत अधिक हो जाता है, यह शायद बेलेडोनाका सबसे प्रधान स्वरूप है। **ओपियम** ठीक इसके विपरीत है, क्योंकि इससे रोगीकी समस्त अनुभव शक्ति गायब हो जाती है। बेलमें जितना ही रक्त-सञ्चय है, उतनी ही उत्तेजना है। **ओपियममें** जितना ही ज्यादा रक्त-सञ्चय रहता है, उतनी ही कम उत्तेजना रहती है। इतनेपर भी बहुत-से लक्षणोंमें ये दोनों अत्यन्त सदृश हैं। आकृतिमें बहुत सदृश है, चेहरा तथा आँखोंके दृश्यमें बहुत सदृश हैं तथा रोग-तत्वकी अवस्थाके सम्बन्धमें भी सदृश हैं। यदि रोग निदानके अनुसार ही हमें भी नुसखा लिखना

पड़ता, तो मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय, चेहरा एक या दूसरेकी तीव्रतापर विचार किये बिना ही यदि दवा देनी होती तो मैं **ओपियम** और बेलेडोनाका प्रभेद निर्णय नहीं कर सकता। अक्सर ये दोनों आपसमें प्रतिविषका कार्य करती है, पर हमलोग निदान-तत्वके अनुसार दवा नहीं देते, पर लक्षणोंपर देते हैं और सावधानीसे प्रभेद निर्णयकर दवा देते हैं।

इस अत्यधिक उत्तेजनाके साथ "सरमें चक्कर।" बिस्तरपर करवट बदलने या हिलने-डोलनेसे ही रोगीके सरमें चक्कर आने लगता है। "चीजें चक्कर खाती हैं।" "धमकके साथ सरमें चक्कर।" सरको हिलाना धमकको और सरके चक्करको बढा देता है। रोगी बिछावनपर लेट जाता है, माथा उठाये नहीं रह सकता। यह बढा हुआ अनुभवाधिक्य खासकर खोपडीसे सम्बन्ध रखता है। यह खासकर स्त्रियोंमें दिखाई देता है। अपनी चोटी वह नहीं गूँथ सकती। अक्सर बेलेडोनाके रोगी अपने केशोंपर ब्रश या कंघी नहीं फेर सकते। "केशको पीठपर खुले लटकने देते हैं।" खोपडी इतनी स्पर्श-असहिष्णु रहती है। "ऐसा मालूम होता है केश खींचे गये हैं, केशको छूने नहीं देना चाहती।" ऐसी बहुत-सी दवाएँ हैं, जो अत्यधिक अनुभववाली प्रकृतिके असीम उपदाहसे सम्बन्ध रखती हैं, जैसे कि **हीपर,** जिसमें कि रोगिनी दर्दसे बेहोश हो जाती है। **नाइट्रिक-एसिड**की तरह, जिसमें राहमें चलती गाडियोंकी आवाज़ सहन नहीं होती, क्योंकि इससे तेज़ उपसर्ग पैदा हो जाते है। **काफिया**की भाँति, जिसमें पैरकी धमकसे सब रोग-लक्षणोंकी वृद्धि हो जाती है। वह दर्दसे इतना स्पर्श-कातर हो रहा था, कि तीसरी मंजिलपर रहनेपर भी दरवाजेमें घुसनेकी किसीके पैरोंकी आवाज़ने उसकी तकलीफें बहुत बढा दीं, यद्यपि कोई दूसरा उस आवाज़को न सुन सका। **नक्स-वोमिका**में भी पद-ध्वनि समूचे शरीरके दर्दको बढा देता है। बेलकी प्रकृतिमें भी दर्दका यह सब अनुभवाधिक्य है। यह सार्वाङ्गिक ज्ञान-केन्द्रोंका एक अंश है, सम्पूर्ण शारीरिक अवस्था अधिक उग्र हो जाती है। **कैमोमिला**के रोगीको भी दर्दका बहुत अधिक अनुभव होता है, पर हम **कैमोमिला**के रोगीसे सहानुभूति प्रकट किया नहीं चाहते, वह स्वयं इससे लड-झगड लेगा, पर आपको बेलेडोनाके रोगीपर दया आ जायगी। **पल्सेटिला** और **नाइट्रिक-एसिड**के रोगोसे आप रहम खा जायेंगे।

इसका एक विचित्र अंश है, प्रतिक्रियाशील उत्तेजना (Reactive excitability)। इस दवाकी प्रतिक्रिया इतनी जल्दी होती है और इतनी आकस्मिक रूपसे होती है, कि कितनी ही बार मैंने रोगीको कहते सुना है, कि करवट बदलते-बदलते "इस दवाने मुझे आराम पहुँचा दिया है—इतनी तेज़ इसकी प्रतिक्रिया होती है।" बहुत-सी दवाओंमें प्रतिक्रिया धीमी होती है, पर बेलेडोनामें यह उग्र हो जाती है। **जिङ्कम** और **नक्स-वोमिकामें** भी ऐसा ही होता है। जब कि बीमारी बिलकुल नयी होती है, पर कभी-कभी जब बीमारी कुछ पुरानी भी होती है, तो यह अनुभूति दिखाई देती है। **कूप्रममें** सब जगह ही बहुत स्पर्श-कातरता है। इसमें स्पर्श सहन न होनेवाले मसे उत्पन्न होते हैं, इसका चर्म स्पर्श-असहिष्णु रहता है, बत्तीडियाँ स्पर्श सहन नहीं करती, हर चीज़ स्पर्श-कातर होती है और इसकी प्रतिक्रिया भी इतनी स्पर्श-असहिष्णु होती है, कि जब इसकी जरूरत होती है, तो आंशिक-रूपसे निर्देशित औषधियाँ कोई काम न करेंगी, क्योंकि रोगी हर चीजका इतना स्पर्श-कातर है, कि प्रत्येक चीज़ ही प्रयोजनसे अधिक कार्य करती है। छोटी-से-छोटी खुराक, धीमी-से-धीमी खुराक, सबसे सरल खुराक भी अतिरिक्त क्रिया करती है और सभी लक्षण बढ जाते हैं। गन्धोंसे बीमारी बढती है, अच्छी तरह चुनी हुई दवा भी आरोग्य करनेके बदले गड़बड़ा देती है। **कूप्रम** इसमें ताकत देता है, इस अनुभवाधिक्यको हटाता है और तब अच्छी प्रकार चुनी हुई दवाएँ बहुत समयतक और आरोग्यदायिनी होकर कार्य करती हैं, पर **कूप्रममें** उतना ज्यादा रक्त-सञ्चयकी अवस्था नहीं है।—इस विषयमें यह **बेलेडोनाके** समान नहीं है। **कूप्रममें** क्रियाशील ज्वर तथा रक्त-सञ्चयके साथ धमक तथा रक्तकी गड़बड़ीके साथ वह अनुभव-शक्ति नहीं है, पर यह इसमें पुरानी अवस्थामें है। स्त्रियाँ तथा बच्चे इतने स्पर्श कातर रहते हैं, कि वे सहानुभूति नहीं प्राप्त करते और यह किसी भी हिस्टीरिया-ग्रस्तके लिये भी उपयोगी नहीं है, पर उनके लिये उपयोगी है, जो पूरी तरह अपना संयम नहीं रख सकते। **कूप्रम** ऐसा ही है। हमारे पास ऐसी औषधियाँ हैं, जो अनुभवाधिक्यवाले रोगियोंके लिये उपयोगी हैं और खासकर अनुभवाधिक्यवाली स्त्रियोंके लिये। गन्धोंका अधिक अनुभव होना, प्रत्येक बोधगम्य पदार्थका अधिक अनुभव

होना। वैसा चिकित्सक, जो बाहर निकलकर इन गरीब छोटे नन्हरोंकी खबर लेता है, जो इनकी प्रकृति समझता है, उनके गुणोंको देखता है और उनके कष्टोंसे उनको छुड़ाता है, वह सम्पूर्ण समाजपर, भले ही वहाँ पहलेसे कोई डाक्टर कीर्त्ति प्राप्त किये बैठा हो, अपना अधिकार जमा लेगा। उसे ऐसा न होना चाहिये, जो अपने ज्ञानसे सबको तौलता है, बल्कि वह स्थूलकर्मी हो सकता है, पर उसे अनुभवाधिक्यवाले रोगी मिलेंगे।

बेलेडोनाके अधिकांश सर-दर्दों में भी यह अनुभवाधिक्य मौजूद रहता है। दर्द छुरी मारनेकी तरह धमकका दर्द, खोंचा मारनेकी तरह दर्द,—सभी दर्द रक्त-सञ्चयसे सम्बन्ध रखनेवाले होते हैं। हिलने-डोलने, प्रत्येक झटके, रोशनी, यहाँतक कि आँख मटकानेसे, हवा लगनेपर भी दर्दका अधिक अनुभव होता है। जब माथा लुढकता रहता है, उस समय बेलेडोना उपयोगी होता है। रोगी माथा लुढकाता रहता है, क्योंकि दर्द इतना ज्यादा रहता है, कि वह शान्त नहीं रह सकता, यद्यपि हिलाने-डोलानेसे सर-दर्द बढता है। बच्चा लेट जाता है और मस्तिष्कमें रक्त सञ्चयके कारण अपने माथेको इधर-उधर लुढकाता है, चिल्लार करता है, एक अचानक चिल्लार, कुछ देर बाद वह जाग पड़ता है और अपने सरको हिलाने लगता है, बीच-बीचमें चीखता है, वह बेहोश हो जाना चाहता है। गर्दन पीछे खिची रहती है, चेहरा तमतमाया रहता है यह अब पीला हुआ जाता है। बेहोशीका भी समय है और उस बेहोशीमें बच्चा चिल्ला उठता है। सभी मस्तिष्क-रोगोंमें बहुत ज्यादा खिलानेपर या पेट भर लेनेपर हमलोगोंको बहुत सावधान रहना चाहिये, क्योंकि पाकाशय बहुत दुर्बल रहता है। यह ज्यादा न पचा सकेगा और भोजन खूब चुना हुआ और हलका होना चाहिये।

सरमें बहुत ज्यादा भार। माथा एक भारकी तरह मालूम होता है और पीछेकी ओर खिचा रहता है। जब मेरुदण्डके ऊपरी भागकी झिल्लियाँ आक्रान्त रहती हैं, तो कभी कभी गर्दनकी पेशियोंके खिचे रहनेके कारण इसमें माथा पीछेकी ओर खिचा मालूम होता है। इसके अलावा हम बेलेडोनाके रोगीको स्वयं भी अपना माथा पीछेकी ओर खिचा देखते हैं, क्योंकि माथा पीछेको ओर खिचनेपर अकसर सर-दर्दकी तेजी घट जाती है। यह तेजी तभीतक घटी रहती है जबतक वह सर पीछेको ओर खिचे रहता है, पर बैठे रहनेके समय, आगेकी ओर सर झुकानेपर, झुकने या खड़े रहनेके

समय सामनेकी ओर सर झुकानेपर बीमारी बढ जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क बाहर निकल पडेगा या आगेकी ओर धक्का देगा। यह कभी-कभी सर-दर्दको इतना बढा देता है, कि कभी-कभी यह छुरीकी तरह या हथौडीसे मारनेकी तरह दर्द हो जाता है। ये ही बातें कही जाती हैं। काँटी चुभने या हथौडीसे मारनेकी तरह अनुभूति, खोदने या फाडनेकी तरह मालूम होता है, लेकिन इन सबके ही साथ दबाव और धमक या टपक रहती है। अपनी जगहसे उठनेपर ये सब अनुभूतियाँ बहुत बढ जाती हैं। धमक, टपक, यन्त्रणा-भरी करोटीमें हथौडीसे भीतरकी ओर मारनेकी तरह दर्द। इसके रोगी इस तरह कहते हैं, मानो खोपडीका भीतरी भाग एक फोडा है और प्रत्येक स्पन्दनके साथ मानो उसे हथौडीसे मारा जा रहा है। कभी-कभी तो यह चुपचाप बैठ जाने या लेट जानेके समय दब जायगा, पर कुर्सीसे उठते ही हथौडी चलना आरम्भ हो जायगा। "फैलनेवाला" एक बात है, जिसे रोगी अकसर कहा करते हैं और परीक्षकोंने भी यही बात कही है। फैलनेकी अनुभूति, मानो माथा बडा हो गया है, भीतरसे बाहरकी ओर दबाव। ये सभी सर-दर्दों में बाहरसे दबानेपर आराम पहुँचता है। एकाएक छूना या दबाना तो दर्दको बढा देगा, पर धीरे-धीरे बढता हुआ दबाव तथा सावधानतासे सरपर दिया हुआ दबाव, घटा देगा। जैसे कि किसी पट्टी बाँधनेका दबाव या कसकर बैठी हुई टेपीका दबाव। इसके अलावा, ये सभी सर-दर्द ठण्डी हवा लगनेपर उत्पन्न होते हैं, खुले सरसे खुली हवामें खडे होनेपर होते हैं। कभी-कभी तो केवल केश कटवा लेनेसे भयानक सर-दर्द पैदा हो जायगा। केश कटवानेपर कई दिनोंतक यह मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय बना रहता है, साथ ही धमक और टपक होती है। केश कटवानेसे कानकी बीमारियाँ, वक्षकी बीमारियाँ, वातकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं या ये टोपी उतारकर ठण्डी हवामें खडे हो जानेपर हो जाती है। सर इतनी भी सर्दीको सहन नहीं कर सकता। इस दवाके सम्बन्धमें यह भी कहा जा सकता है, कि शरीरके कितने ही भागोंके रोग सरके भीतरसे पैदा होते हैं और नीचेकी ओर उतरते हैं। निम्नाङ्गोंकी बीमारियाँ, सन्धियोंके वातज रोग, बहुत लाली तथा सूजनके साथ सर खोलनेपर उत्पन्न होते हैं, सरमें हवा लगनेपर होते हैं या सरको भिंगोनेपर या पानी बरसनेमें भींगनेपर होते हैं। एक ऐसी भी बीमारी है, जिसके

पाले यदि आप पढ़ें तो चकरा जायँगे और आप समझ भी नहीं सकते, कि मैं क्या कहना चाहता हूँ। साधारणतः बेलेडोनाकी तकलीफें आराम करनेपर घट जाती हैं और हिलने-डोलनेपर बढ़ती हैं, पर एक तरहका फन्देसे लेकर नीचेकी ओर फाड़नेकी तरह ऐसा बेचैन करनेवाला दर्द होता है—देखनेमें बहुत ही कष्टदायक, जो रोगीको बराबर चलाता रहता है। ज्योंही वह आराम करने जाता है, त्योंही दर्द पैदा हो जाता है। यह दर्द कभी-कभी नीचेकी ओर धक्का देता है, कभी नीचेसे ऊपरतक स्नायुओंको फाड़ता है, पर यह खुला रहनेपर, सरमें हवा लगनेपर होता है, न कि पैर भींगनेपर। **ऐकोनाइट** और **पल्सेटिला**की बीमारियाँ पैर भिगोये रखनेपर उत्पन्न होती हैं और ये बीमारियाँ ऊपरकी ओर चढ़ती हैं, पैरसे उत्पन्न होती हैं तथा ऊपर चढ़कर माथेपर प्रभाव पहुँचाती हैं। बेलेडोनाकी बीमारियाँ सरमें हवा लगनेपर होती हैं और नीचेकी ओर उतरती हैं, कभी माथेको आक्रान्त करती हैं, कभी वक्षको, कभी पाकाशयको, कभी तलपेटमें अपना केन्द्र बनाती हैं और जरायु और डिम्बकोषको अपना केन्द्र बनाती हैं। **रसटक्स**की बीमारियाँ भींगनेपर उत्पन्न होती हैं, पर बीमारी उसी स्थानपर होती है, जो भीगता है। यदि उसका पैर भीगता है, तो उसे पैरमें वात होता है। इसमें बहुत बड़ा प्रभेद—अन्तर है और इस अन्तरपर हरेक बार नुस्खा लिखते समय ख्याल रखना चाहिये। होमियोपैथी एक प्रभेद-निर्णयका विषय है, कि किस तरह बीमारी फैलती है। कितनी ही शिकायतें तो दाहिनी ओर पैदा होतीं और बायीं ओर फैल जाती हैं। कितनी ही शिकायतें शरीरके शिखर देशमें उत्पन्न होती हैं और नीचे उतरती हैं। इसी तरीकेसे यह दवा काम करती है। कितनी ही दवाओंमें बर्फीली ठण्ड पैरमें लगनेपर सर-दर्द पैदा हो जायगा। (**सिलिका**) पर बेलेडोनामें खुली हवा लगनेपर सर-दर्द या निम्नाङ्गका स्नायु-शूल उत्पन्न हो जायगा। अब वह दर्द, जो आराम करनेसे उत्पन्न होता है, बेलेडोनाका एक अपवाद है। यह यही बताता है, कि साधारण तथा विशेष लक्षणोंमें ठीक ठीक प्रभेद करना कितना आवश्यक है। जबतक आप "साधारण" और 'विशेष" को नहीं समझते, तबतक आप ठीक-ठीक दवा ही नहीं चुन सकते। यहाँ निम्नाङ्ग विशेष हैं। रोगी तथा रोगीकी सार्वाङ्गिक अवस्था आराम करनेपर घटती है, आराम करनेपर रोगीके रोग-लक्षणोंका ह्रास होता है। वे सभी लक्षण जो रोगी

स्वयं बता सकता है, आराम करनेपर घटते हैं, पर निम्न-प्रत्यङ्गोंका दर्द, जैसा कि बताया गया है तथा वे स्नायुशूलके दर्द हिलने-डोलनेसे घटते हैं और आराम करनेपर आ जाते हैं। इसका यह मतलब कदापि नहीं है, कि निम्नाङ्गके **सभी दर्द** हिलने-डोलनेपर घटते हैं, क्योंकि वातका दर्द तो आप-से-आप आराम करनेपर घटता है तथा हिलने-डोलनेपर बढ़ता है। ये फाड़नेकी तरह दर्द, जो कूल्हेसे लेकर नीचेकी ओर, बिना सूजनके होते हैं, आरामके समय ही पैदा होते हैं। सभी दवाएँ विचित्रताओंसे भरी हैं और इन विचित्रताओंको खोज निकालनेपर ही बढ़िया नुस्खा लिखा जा सकता है।

बेलेडोनाके सभी उपसर्गोंके साथ, ऊपरको ओरके रक्त-सञ्चयको न भूल जाइये। "माथेकी ओर खूनका दौरान, हाथ-पैर ठण्डे।" पैर ठण्डा, हाथ ठण्डे, सर गर्म।"

आँखकी प्रादाहिक अवस्था। "चमकती आँखें, फैली हुई पुतलियाँ, तमतमाया चेहरा, प्रादाहित स्थानोंमें बेतरह लाली।" आँखके सभी तन्तुओंका, पलकोंका, चक्षुगोलकके सभी अंशोंका, बहुत तेज़ दर्दके साथ प्रदाह। ताप, लाली और जलन। इस दवाके ये तीन सुदृढ़ रूप हैं, जो इस दवामें सर्वत्र पाये जाते हैं और आँखकी बीमारियोंमें भी ये ही दिखाई देते हैं। टपक, सूजन और आँखसे आँसू बहना, बहुत तेज़ दर्द, हिलने-डोलने और रोशनीसे सभी बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। बहुत ही तेज़ आलोकातङ्क। 'आँखके सामने चिनगारियाँ और झिलमिलाहट।" पढ़नेके समय सतरें टेढ़ी मालूम होती हैं। "धुँधली दृष्टि या वास्तविक अन्धापन।" अत्यधिक रक्त-सञ्चय तथा सभी अंगोंकी पूर्णता। "चक्षु-चित्रपत्र (Retina) का सन्यास।" "अधखुली, बाहर निकली आँख, टकटकी लगी दृष्टि।" आपको यह बच्चोंमें तब दिखाई देगा, जब बच्चा बेहोशीमें पड़ा रहता है। आँखें अध-खुली, मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय, चेहरा तमतमाया और बेतरह गर्म, अगल-बगल सरको लुढ़काता है। यदि ऐसा कई दिनोंसे होता आ रहा है, तो चेहरा पीला हो जायगा और गर्दन पीछेकी ओर खिंच जायगी। इन रक्त-सञ्चयकी बीमारियोंमें, रोगी अधखुली आँखोंसे पड़ा रहता है। पलकें झपकती नहीं हैं। "चक्षुपुटका स्नायु-शूल, पुतलियाँ फैली रहनेके साथ बाहर निकली हुई आँखें, चाक्षुषी-नाड़ीका और चित्रपत्रका प्रदाह, आँखें रक्त-सञ्चयसे भरी और

लाल।" आँखका दूसरा लक्षण है, तिर्यक-दृष्टि—ढेरा देखना। वे रोगी नहीं, जिनमें धीरे-धीरे बीमारी पैदा होती है, जिनके लिये अस्त्र चिकित्सककी जरूरत होती है, बल्कि वे बीमारियाँ, जो मस्तिष्कके रक्त सञ्चयके साथ उत्पन्न होती हैं। यह रक्त-सञ्चयकी अवस्था, पुतलियोंका फैलना और इधर से-उधर सरका लुढ़काना, इनके साथ चेहरा लाल रहता है। गलेकी धमनी फड़का करती है और तेज़ गर्मी मालूम होती है। एक या दो दिनोंके बाद आँख भीतरकी ओर घूमने लगती है और बच्चा टेढ़ी आँखोंवाला हो जाता है। यह बेलका एक आनुषङ्गिक निर्देशक लक्षण है। कभी-कभी तेज रक्त सञ्चय आराम हो जानेपर यह तिर्यक-दृष्टि (Strabismus) की बीमारी रह जाती है और कभी कभी बेलेडोना ही उसकी उपयुक्त औषधि होती है। रक्तके दौरानकी गड़बड़ीके कारण पैदा होनेवाली ये सभी बीमारियाँ दवाओं द्वारा आरोग्य होनी चाहिये। ऐसे रोगियोंको कभी अस्त्र-चिकित्सकके पास न भेजना चाहिये। यद्यपि ये कभी-कभी कुछ दिनोंतक—यहाँतक कि महीनोंतक रह जाती हैं, पर वे चुनी हुई दवासे आरोग्य होंगी, पर वे जो धीरे धीरे उत्पन्न होती हैं और वे जो जन्मसे ही होती हैं, दवाओंसे आरोग्य न होंगी। केवल वे ही अकाड़नवाली बीमारियाँ आरोग्य होंगी, जो मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयसे उत्पन्न और सम्मिलित रहती हैं। यकृतमें रक्त-सञ्चय तथा द्वादशांगुल यन्त्रको श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाह (Duodenal catarrh) के साथ आँखोंमें पीलापन रहता है।

आँखके उस प्रदाहमें जो पक जाना चाहता है, उसमें बेलेडोना शायद ही कभी, उपयोगी होता है। इनके लिये गहराईतक काम करनेवाली औषधि खोजना होगा। इमें दर्द स्पर्श कातरता, अत्यधिक अनुभवशीलता तथा समस्त प्रादाहिक अवस्थाएँ प्राप्त हो सकती है, पर बेलेडोनाकी आवश्यकता रहनेवाले रोगीको शायद ही कभी पीब होता है।

अब हम श्लैष्मिक झिल्लीपर आते हैं,—नाक, मुँह, कण्ठ, स्वर-यन्त्र, वक्षण, कण्ठकर्णी-नली (Eustachian tube) की राहसे भीतर जानेवाली श्लैष्मिक-झिल्ली प्रभृति और इनपर भी हमें बेलेडोनाका एक-जबर्दस्त-स्वरूप प्राप्त होता है, जो हमको बहुत-सी अवस्थाओंका चरित्रगत लक्षण बता देता है। **बहुत सूखापन**, सूखेपनका भाव। नाकमें सूखापन, मुँहमें सूखापन, जीभका, कण्ठका, वक्षका सूखापन और ऐसे प्रभाव कि खाँसी भी सूखी और

आक्षेपिक अवस्थामें रहती है। ये इतने साधारण लक्षण हैं। नाकके लक्षणोंके साथ नाककी सर्दी, कण्ठके लक्षण, खांसी—यह बढ़ जाती है। इन सबमें श्लैष्मिक-झिल्लीका सूखापन प्राप्त होगा। यही अवस्था **फास्फोरस**में भी होती है। जब **फास्फोरस**के रोगीको गलक्षत होता है, तो रोगीका मुँह, जीभ और वायु-पथोंमें सूखापन रहता है। यही श्वास-पथोंमें भी होता है। इसके बाद नाककी सर्दी है, जिसमें बहुत छींक आती हैं। "नाकमें जलन तथा कांटा गड़नेकी तरह दर्द होता है।" नाकमें गर्मी मालूम होती है। साधारण अवस्थामें चेहरा बहुत लाल रहता है, नाककी सर्दीके साथ बहुत गर्मी मालूम होती है, माथा गर्म रहता है, हाथ-पैर ठण्डे, तेज़ सर-दर्द रहता है, क्योंकि वहाँ सूखापन रहता है। यह सूखापन ही कभी-कभी दर्द उत्पन्न करनेवाला कारण होता है, क्योंकि श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे होनेवाला स्वाभाविक स्राव सूख जाता है। जब कभी यह स्राव रुक जाता है, तो बोखार आ जाता है और यह बेलेडोनामें प्रत्यक्ष दिखाई देता है। ज्वरके साथ ताप, लाली और जलनके साथ स्रावका रोध हो जाना, चेहरा लाल, चेहरा मानो जलता हुआ, माथा और मुखमण्डलमें गर्मी तथा हाथ-पैर ठण्डे। पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है,—"रुकी हुई सर्दीके साथ पागल बना देनेवाला सर-दर्द।"

अब इस तरहके जलवायुके साथ बहुत-से मनुष्योंको शीत और ठण्डी ऋतुमें तथा ऋतु-परिवर्त्तनके समय, कुछ-न-कुछ आँखों, नाक तथा वायु पथोंसे पानीका स्राव होता ही है। ऐसा होनेपर वे अच्छे रहते हैं। यह एकाएक रुक जाता है, सभी अंश सूख जाते हैं, तब देखिये। एक भयानक कष्टदायक, पागल बना देनेवाला टपकका सर-दर्द पैदा हो जाता है। यह उन पुरानी सर्दियोंके लिये उपयोगी नहीं है, जिनमें बहुत ज्यादा गाढ़े, पीले बलगमका स्राव होता है। बल्कि श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह या सर्दीके उसी अवस्थामें, जिसमें बेलेडोना उपयोगी है, केवल सफेद श्लेष्माका ही स्राव अधिक है। जहाँ गाढ़ा और पीला स्राव होता है तथा सर्दीसे एकाएक रुक जाता है तथा नाककी सर्दी पैदा हो जाती है, वहाँ बेलेडोनासे फायदा नहीं होता। यह हमेशा खयाल रखें कि आप रुकी हुई सर्दीके लिये एक ऐसी दवा चुन रहे हैं, जो रुके हुए सर्दीके स्रावकी सीमाके अन्तर्गत हो। इसलिये गाढ़े पीलापन लिये हरे स्रावकी दवा **मर्क्युरियस, सलफर** या **पल्सेटिला** हो सकती है। अब आप उन

दवाओंकी श्रेणीमें आते हैं, जो फिरसे स्राव जारी कर सकती है और साथ ही तन्तुओंपर आरोग्य प्रभाव आरम्भकर, रोगीको सुधरी, बहुत अच्छी अवस्थामें ला देती हैं।

चेहरेमें भयङ्कर दर्द। चेहरेमें बेधने और फाड़नेकी तरह दर्द, चेहरेमें टपककी तरह दर्द, चेहरेमें दाहिनी ओर बहुत ज्यादा दर्द, झटका लगनेसे बढ़ता है, बहुत गर्मी मालूम होती है, गलेकी धमनीमें टपक होती है, माथा गर्म, ठण्डी हवा लगने तथा सर्द हवामें घुड़सवारी करनेपर चेहरेमें दर्द पैदा होना। बेलेडोनाने पाक्षाघातिक अवस्थाएँ आरोग्य की हैं, पर सर्द हवामें घुड़सवारी करनेपर जो चेहरेका पक्षाघात होता है, साधारणतः **कास्टिकम** ही उसकी दवा है। चेहरेकी पेशियोंकी अकड़न, चेहरेकी असाधारण ऐंठन, चेहरेका विसर्प, यदि इसके साथ ज्वर रहता है, तो चमकीला लाल चेहरा रहनेपर धीरे-धीरे बैंगनी हो जाता है। स्नायु-शूलके दर्दमें तेज दर्दके साथ कुछ-न-कुछ चेहरेमें रक्त-सञ्चय रहता ही है, इसके साथ ही भयानक दर्द रहता है। चेहरा भी चमकीला लाल रहेगा। रस-रक्त बिगड़नेवाली अवस्थाके साथ ज्यों-ज्यों ज्वरकी अवस्था गहरी होती जाती है और ज्यों-ज्यों रक्त बिगड़ता जाता है, त्यों-त्यों चेहरा धुमैलेसे मलीन होता जाता है, जैसा कि आपको **बैप्टीशियामें** दिखाई देगा। यह बेलेडोनाकी अपेक्षा **बैप्टीशियामें** ज्यादा प्रत्यक्ष रहता है। "जलते हुए तापके साथ लाल चेहरा।" दाँत दर्दसे भरे रहते हैं, रक्त सञ्चय हुआ रहता है और इसी ढङ्गका दर्द भी रहता है। बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु होते हैं।

जीभ भी सूखी रहनी चाहिये, क्योंकि इसकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी यही साधारण अवस्था है। सूखा मुँह सूखी जीभ, फूली जीभ, बाहर निकली जीभ, सूखी और कड़ी, चमड़ेकी तरह मालूम होती है। अनुभूतिका गायब हो जाना, स्वादका न रहना, जीभकी और बोलनेकी शक्ति चली जाना, ये सभी बेलेडोनाके ही रूप हैं। "जीभकी पाक्षाघातिक दुर्बलता, बाहर निकली हुई जीभका काँपना।" यह दुर्बल होकर निकलती है। बहुत ही कम दिनोंमें बेलेडोनाके ज्वरका रोगी बहुत दुबला होता जाता है, बहुत क्लान्त हो पड़ता है और उसमें करीब-करीब पाक्षाघातिक दुर्बलता आ जाती है। जब वह हाथ उठाता है और क्षणभरतक उसे पकड़े रहता है, तो वह इसी तरह काँपता है।

जीभकी जो अवस्था मिलती है, वह सार्वाङ्गिक अवस्थाका ही एक अंग है। वात-केन्द्रोंके (Nerve-centres) रक्त-सञ्चयके कारण कम्पन। जीभके कांटे सीधे खड़े हो जाते हैं और जीभ चमकीली लाल रहती है। आरक्त ज्वरमें चमकीली लाल जीभ। उठे हुए जीभके कांटोंके साथ मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयमें चमकीली लाल जीभ। **आरम ट्राइफाइलम**पर विचार करते समय मैंने आपको बताया है, कि इसे स्ट्राबेरीकी तरह जीभ कहते हैं। बेलमें भी ठीक ऐसी ही जीभ रहती है। जीभ इसमें भी स्ट्राबेरीकी तरह ही लाल दिखाई देती है और जीभके कांटे उसमें बीजकी तरह चिपके रहते हैं। "जीभके बीचमें लाल धारी, यह नोंककी तरह चौड़ी और ज्यादा फैली रहती है। जीभ, लाल किनारोंके साथ बीचमें सफेद।" मस्तिष्कके रोगोंके साथ जीभपर सफेदी कुछ असाधारण बात नहीं है। इसमें गाढ़ा, इसमें दूधकी तरह सफेद, जीभपर कोमल रोएँ, मस्तिष्कके रोगोंमें रहता है। "प्यासके साथ मुँहका सूखापन।" "बिना प्यासके साथ मुँहका सूखापन।" *बेलेडोना प्याससे भरा है, यह हमें तब मालूम होगा, जब हम पाकाशयके लक्षणोंपर आयेंगे।* कभी-कभी बेलेडोनाका रोगी बड़ी मात्रामें पानी पीना चाहता है और कभी-कभी मुँह तर रखनेके लिये **आर्सेनिक**की *तरह लगातार पानी मांगता है।* बेलेडोनाका **आर्सेनिक**की तरह यह एक साधारण लक्षण है, कि थोड़ा-थोड़ा और बारम्बार पानी पीते रहना। केवल सूखी जीभ, मुँह और कण्ठको तर कर रखनेके लिये। पश्चात् नासा-रन्ध्र (Posterior nares) में सूखापन तथा नाकके पिछले भागसे रोगी जो श्लेष्मा खींच निकालता है, वह कड़ा और डोरीकी तरह रहता है और बहुत थोड़ा निकलता है। यह सफेद रहता है और अगर सफेदीसे कुछ परिवर्त्तन होता है, तो खून मिला हो जाता है। अबतक मैंने इसके रक्त-स्राव या खून-मिले स्रावके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कहा है। वर्णन समाप्त करनेके पहले *ही हमें मालूम हो जायगा, कि यह एक रक्त-स्रावी औषधि है,* किसी भी अंगसे सहजमें ही रक्त-स्राव होता है। आँखसे रक्त-स्राव होता है, नाकसे रक्त-स्राव होता है, कण्ठसे खून आता है, स्वर-यन्त्रसे रक्त आता है, वक्षसे तथा मूत्राशयसे खूनका स्राव होता है तथा जरायुसे भी रक्त-स्राव होता है। इसमें जखमोंसे खून बहता है। आर्णीनके मरके मुकाबलेकी छोटे-छोटे महीन जखमोंसे खून आता है। मुँहके छोटे-छोटे छालोंसे खून निकलता है।

कण्ठका छाले-भरा प्रदाह, पर कण्ठकी अधिकांश बीमारियाँ सूखी रहती हैं और कण्ठ लाल रहता है। बहुत सूजन, बहुत ही स्पर्श-कातर, बहुत ज्यादा सूजन, निगल नहीं सकता, कुछ निगलनेपर बहुत दर्द होता है तथा उसके आस-पासके अंगोंमें बहुत स्पर्श-असहिष्णुता रहती है, गलक्षत रहता है और कण्ठ प्रदाहित रहता है। म्लान चेहरा, तेज़ ताप, गलेकी धमनियोंमें टपक ऊँचे बोखारके साथ तालुमूलका प्रदाह और सूजन सर्दी लगकर उत्पन्न होता है। गलकोष और स्वरयन्त्र गहरे लाल रहते हैं। कोमल तालु और तालुमूल फूला रहता है। किसी चीज़का निगलना, खासकर पतली चीजोंका, कष्टकर हो जाता है। आवाज़ भर्रायी रहती है। 'कण्ठमें एक ढेलेकी तरह अनुभव होता है।"— यह फूले हुए तालुमूलके कारण होता है। बराबर खखारता और खाक-खाककर श्लेष्मा निकालता है। स्वर-यन्त्र और गलकोष साधारणतः आक्षेपकी अवस्थामें रहते हैं, कुछ तो सूखेपनकी वजहसे और कुछ उस अंगकी अत्यधिक प्रादाहिक अवस्थाके कारण। सोने जानेके समय हाथसे कण्ठ पकड़ रखता है, खाँसनेके समय कण्ठको पकड़ रखता है। कण्ठनलीकी अकड़न। 'कण्ठका आक्षेपिक सङ्कोचन।" आक्षेपिक रूपका सङ्कोचन। स्वर यन्त्र, गल-कोष तथा कण्ठका सङ्कोचन। बेलेडोनामें उस अंगमें सङ्कोचनका दर्द होता है, जो अंगुलीसे पकड़ रखनेकी तरह मालूम होता है। यह पकड़ रखनेकी अनुभूति जरायुमें भी होती है, यह एक अकड़न है। यह यकृतमें भी मालूम होती है, यह मस्तिष्कमें अनुभव होती है, यह कण्ठमें मालूम होती है। दर्द-भरे स्थानोंमें, तेज़ दर्दके साथ पेशियोंमें झटका और ऐंठन। यह बेलका एक सुदृढ़ स्वरूप है। कभी-कभी अपने भाव व्यक्त करनेकी शक्ति न रहनेके कारण रोगी कहते हैं,—"मुझे वहाँ कसकर पकड़ रखनेकी तरह मालूम होता है।"

गलक्षतका सङ्कोचन ठीक कोई तरल या कड़ी चीज़ निगलनेकी क्रियाके समय पैदा होता है और यह क्रिया उस तरलको जबर्दस्ती नाकमें घुसा देती है और कभी-कभी नाकसे बाहर निकाल देती है। कितनी ही दवाओंमें यह पाक्षाघातिक अवस्थाकी तरह होता है, क्योंकि निगलनेवाली पेशियाँ पक्षाघात-ग्रस्त हो जाती हैं और उनमें वह स्वाभाविक सङ्कोचन नहीं होता, जिससे अन्ननलीकी राहसे खाद्य-पदार्थ नीचे उतरते हैं और इस तरह खाद्य जबर्दस्ती नाकमें चढ़ जाता है और गल रोध पैदा कर देता है। बेलेडोनामें इसकी नयी

अवस्थामें इसके प्रादाहिक लक्षण और इसकी अकाडन लेसैसिससे इसका अन्तर बता देंगे, जिसमें डिफ्थीरियाके बाद पाचाघातिक अवस्थाके रूपमें आती है और ऐल्यूमिनासे भी इसका अन्तर प्रकट कर देगी, जिसमें अन्न-नलीमें आक्षेप रहता है। इनकी बीमारियाँ धीरे-धीरे आती हैं। बैलकी तेजीसे, इसके उपदाहका समय है, ज्वरका आरम्भिक भाग। ज्वरका पिछला भाग इसकी शिथिलताका काल है। तालुमूलपर बहुत तेजीसे छाले उत्पन्न हो जाते हैं, जैसा कि गलक्षत हमने बताया है। आपको करीब-करीब सदा ही विवृद्धि प्रदाह गर्दन या हनुकी या ग्रन्थियोंमें घावकी तरह यन्त्रणा प्राप्त होगी। बेलेडोनाके गलक्षतके साथ स्पर्श-असहिष्णुता एक स्वाभाविक सहचर है।

बेलेडोनाके सब तरहके ज्वरोंके साथ एक अदम्य लक्षण यह दिखाई देता है, कि नेबू, नेबूका रस प्रभृतिकी अदम्य इच्छा रहती है। कभी-कभी तो लेमोनेडसे फायदा होता दिखाई देता है। नयी बीमारियोंमें जब रोगीको नेबूकी इच्छा होती है, तो यह उन्हें आराम पहुँचाता है। वे अकसर खानेकी चीजें माँगते हैं। आप इतने भयङ्कर भयभीत न हो जायेंगे, कि यदि किसी नयी बीमारीमें रोगी बियर नामकी शराब मांगेगा, तो आप न देंगे। "पानीकी प्यास बदलकर बियर शराबकी प्यासमें परिवर्त्तित हो जाना।" यहाँतक कि उन चीजोंकी प्यास जो स्वस्थ शरीरमें सहन नहीं हो सकतीं। "ठण्डा पानी पीनेकी बहुत तेज़ प्यास।"

पाकाशय और आँतोंमें प्रादाहिक अवस्था रहती है, इन सबको एक दलमें मान लेना चाहिये। दर्द, जलन, तकलीफ़, तनाव, झटका तथा थोड़ा भी हिलना-डोलना सहन न होना तथा थोड़ा भी दबावका सहन न होना। "झटका तथा हिलने-डोलनेसे स्पर्श-असहिष्णु, "पाकाशयमें दर्द, जो फैलकर मेरुदण्डमें चला जाता है।" बहुत ठण्डा हो जानेके कारण, तेज तापके साथ पाकाशयका प्रदाह, साथ ही बहुत ज्वाला। इसमें भयानक शूलका दर्द, लड़कोंको तेज मरोड़का दर्द होता है। चेहरा लाल और गर्म रहता है, केवल सामनेकी ओर झुक जानेपर दर्दमें आराम पहुँचता है। ऐसे भी अपवाद-सूचक उदाहरण हैं, जहाँ पीछेकी ओर झुकनेपर दर्द घटा है, जब कि यह डायस्कोरियाके सदृश है। माताको पता लगता है, कि बच्चेको हाथके

ऊपर उठा रखनेपर शूलका दर्द घटता है। यह **कालोसिन्थ**के सदृश है, पर **कालोसिन्थ**में ज्यादा ज्वर नहीं होता, प्यास भी ज्यादा नहीं होती, एक ही स्थानपर दर्द होता, तलपेटमें एक प्रकारका तेज़ शूलका दर्द होता है, जो दुहरा जानेपर घटता है या किसी कड़ी चीज़के सहारे झुकनेपर घटता है **कालोसिन्थ** है। इस अवसरपर, इस एक दलके लक्षणोंमें **कालोसिन्थ**का प्रयोग किया जा सकता है।

"जठिलान्त्र-प्रदेशमें बहुत दर्द, ज़रा भी स्पर्श, यहाँतक कि बिछावनके चादरका भी स्पर्श सहन नहीं होता।" उपाङ्ग-प्रदाहमें, ऐसे कितने ही अवसर आते हैं, जहाँ बेलेडोना ही दवा होती है।

बेलेडोनामें रक्तामाशयकी तकलीफें हैं, अतिसार, जिसमें थोड़ा-सा पतला दस्त आता है। वेग रहता है, पर इसके साथ ही चेहरा तमतमाया रहता है। माथा और चेहरेमें गर्मी, लाली और जलन। गर्म माथेके साथ हाथ-पैर ठण्डे। वेग बहुत रहता है, पर पाखाना बहुत थोड़ा होता है। "मल-द्वारावरोधिनी पेशी (Sphincter ani) की आक्षेपिक सङ्कोचन, दर्दके साथ।" बहुत दर्द-भरी बवासीर या बहुत लाल रहनेवाली बवासीर, जो बहुत सूजी और प्रादाहित रहती है तथा बहुत ऊँचे दर्जेका प्रदाह रहता है। उसे छुआ नहीं जाता, पैर अलग-अलगकर लेटे रहना पड़ता है, बवासीरका मसा दर्द-भरा रहता है और उसमें बहुत जलन होती है।

बेलसे बढ़कर और किसी भी दवामें मूत्राशय तथा मूत्र-पथमें इतना ज्यादा प्रदाह नहीं रहता, लगातार पेशाब करनेकी इच्छा बनी रहती है। पेशाब टपका करता है और समूची मूत्रनलीमें तीव्र जलन होती रहती है। समूचा मूत्र-पथ उपदाहकी अवस्थामें रहता है। बेलेडोनाने मूत्राशयका प्रदाह आरोग्य कर दिया है। इस उपदाह और रक्त-सञ्चयके साथ दबावकी सब तरहकी वह स्पर्श-असहिष्णुता वर्त्तमान रहती है, जो अन्य अङ्गोंमें प्राप्त होती है, जिसमें बेलेडोना उपयोगी होता है। झटकेका सहन न होना। **मनकी** उपदाहित अवस्था, समस्त स्नायु-सस्थान (Nervous system) की उपदाहित अवस्था। "मूत्राशयमें ऐंठन। पेशाब हो जानेपर भी बैठा रहता और यातनामें वेग देता है," पेशाब घट जाता है, खून-मिला, कभी-कभी केवल रक्त या छोटे खूनके थक्कोंका पेशाब होता है। मूत्राशयमें काफी मात्रामें

रक्त छोटे थक्कोंके रूपमें आता है। "पेशाब ईंटका चूर-मिला दिखाई देता है या खूनकी रेखा। बहुत ही ज्यादा अम्ल रहता है।" पेशाबका अनैच्छिक रोध और अनैच्छिक पेशाब भी होता रहता है। मस्तिष्क रोगोंमें पेशाबका टपकते रहना, नींदके समय पेशाबका टपकना। स्वप्न देखता है, कि वह पेशाब कर रहा है और पेशाब कर देता है। किसी तरहका मनपर आघात या मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय या प्रसवके बाद पेशाबका रुकना। मूत्राशय भरा रहता है, बहुत दर्द होता है, बहुत स्पर्श-असहिष्णुता रहती है। खड़े रहने और चलनेके समय आप-ही-आप पेशाब चूता रहता है या कभी-कभी केवल हिलने-डोलनेसे पेशाब होने लगता है। एकाएक और बहुत ही प्रचण्ड वेग होता है, थोड़ा-सा भी पेशाब मूत्राशयमें एकत्र होते ही रोगीको एकाएक दर्द-भरा वेग होता है, बहुत-सी तकलीफें मूत्राशय-ग्रीवा (Neck of the bladder) में होती हैं और वे आक्षेपिक प्रकृतिकी (Spasmodic) होती हैं। उसे आक्षेपिक पकड़ मालूम होती है। पेशाबका वेग होनेके समय तथा अन्य समय, उसे मूत्राशय-ग्रीवामें अकड़न होती है। यह अकड़न मनपर आघातसे, सर्दीसे, चिन्तासे या मानसिक गड़बड़ियोंसे होती है। पुराना हो जानेपर, ठण्ड लग जानेपर या बहुत ठण्ढी हवामें, **डालकामारा** और **कास्टिकम**की तरह स्त्रियोंको पेशाब हो जाता है। नींदमें चौंक पड़ती है और बिस्तरको तर कर देती है। भयके सपने, जिससे चौंककर स्त्रियाँ बिछावनमें पेशाब कर देती हैं। "सोनेके समय, एक तरहकी बिजलीकी लहर समूचे शरीरमें चली जाती है और रोगिनीको बिछावनमें पेशाब हो जाता है। बेलेडोनामें ऐसी विचित्रताएँ भरी पड़ी हैं, पर इससे केवल सार्वाङ्गिक आक्षेपिक अवस्था प्रकट होती है तथा प्रकट न होती है, समस्त बेलेडोनाकी धातुगत प्रकृतिका सार्वाङ्गिक उपदाह। हम ये अद्भुत अवस्थाएँ और दशाएँ देखते हैं। शरीरके सभी भागोंके उपदाह, खासकर जहाँ सङ्कोचक पेशियाँ हैं, जहाँ मूत्राशय-ग्रीवामें पकड़े हुए गोल तन्तु रहते हैं, योनि-मुखपर कसकर पकड़े रहनेका भाव, नलियोंका सङ्कोचन। जरायुका सङ्कोचन। यहाँ मूत्राशय-ग्रीवामें, इसका एक खास स्पष्ट स्वरूप दिखाई देता है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको इसके रोग अधिक होते हैं। इसका यह मतलब है, कि स्त्रियोंके यन्त्र, प्रसव, स्तन तथा दूध पिलानेके समय कितने ही ऐसे लक्षण और ऐसी अवस्थाएँ आ जाती हैं, जिनमें बेलेडोनाकी जरूरत

पड़ती है। स्नायविक अनुभवाधिक्यवाली स्त्रियाँ तथा उपदाहित तन्तुओंवाली स्त्रियोंको यह वास्तवमें एक जरूरी दवा है।

पु-जननेन्द्रियके सम्बन्धमें इसका बहुत ही कम कोई आवश्यक लक्षण प्राप्त होता है, पर स्त्री जननेन्द्रियके इसमें बहुतसे और बड़े ही कष्टदायक लक्षण हैं। उनमें बहुत-से दु:खदायी और बहुत उत्तेजनाके लक्षण रहते हैं। सभी अंग बहुत ही स्पर्श असहिष्णु रहते हैं, जरायु और डिम्बकोषमें रक्त-सञ्चय होता है, छूनेपर घावकी तरह दर्द होता है तथा खिंचना या झटका बहुत अधिक अनुभव होता है। उपदाहित जरायु, जबतक कि यह बड़ा और दर्द-भरा नहीं हो जाता है और छूनेपर घावकी तरह यन्त्रणाजनक नहीं हो जाता। कभी-कभी तो यह प्रसवके बाद इस अवस्थामें रहता है या प्रत्येक मासिक समयके बाद यह कुछ बड़ा हो जाता है और वैसा ही रहता है। यह अपनी स्वाभाविक अवस्थामें नहीं आता, बल्कि रक्त सञ्चयपूर्ण रहता है और स्त्रीको अपने भीतर ठीक ऐसा मालूम होता है, मानो उसे मासिक रज स्राव हो रहा है। कुचल जानेकी तरह अनुभूति, झटकेका सहन न होना, स्राव बहुत ज्यादा और थक्का-थक्का होता है, पर यहाँ इसका सबसे अद्भुत रूप है—जरायुसे रक्त-स्राव। रक्त-सञ्चयके कारण आक्षेपके साथ तथा बहुत अधिक अनुभवाधिक्यके साथ जरायुसे रक्त-स्राव। बड़े वेगसे जरायु सङ्कुचित होता है। इसलिये एक आक्षेपिक सङ्कोचन। **बहुत ज्यादा, चमकीले थक्का-मिले लाल रक्तके साथ बहुत यन्त्रणा। बेलेडोनाके स्रावका चरित्रगत लक्षण है।** इस सम्बन्धमें यह **सेबाइना**की तरह है। इन दोनों ही दवाओंमें यह बहुत जोरोंका होता है। जरायु छोटे-छोटे रक्तके थक्केसे भरता है। इसके बाद प्रसवके दर्दकी तरह सङ्कोचन आरम्भ होता है और इसको निकाल बाहर करता है, क्षणभरके लिये बहुत ज्यादा तरलका स्राव होता है और इसके बाद फिर प्रसवके दर्दकी तरह सङ्कोचन आरम्भ होता है। जमे रक्तके थक्कोंको निकालता है और फिर स्राव जारी हो जाता है। रक्त बहुत जल्द जमने लगता है और रक्त-स्रावके साथ बहुत सुस्ती आती है। यह करीब-करीब किसी तरहके उत्तेजक कारणके बिना ही होने लगता है। गर्भ-स्राव होनेपर भी इस तरहका रक्त स्राव होता है। गर्भ-स्राव या कोई दूसरा ही कारण क्यों न हो, यदि स्पर्श असहिष्णुताका लक्षण मौजूद है, तो बेलेडोना इस तरहके रक्त-स्रावके लिये सर्वोत्कृष्ट दवा है। स्पर्शका सहन न

कभी शरीरमें दाहिनी तरफ होता है। "*ऋतु-स्राव होनेके समय डिम्बाशयमें* दर्द, वस्ति-गह्वर-प्रदेशमें दर्द, जो एकाएक उत्पन्न होता और एकाएक ही रुक जाता है।" बेलेडोनाका चरित्रगत दर्द एकाएक पैदा होता है, कभी-कभी तो क्षणभर ही ठहरता है, कभी कई मिनटोंतक ठहरता है और फिर एकाएक छूट जाता है। जरायुमें रक्त-सञ्चयके कारण दर्द जरायुका नया प्रदाह। "*जरायुकी विवृद्धि और समय बाँधकर होनेवाला आवेगिक नीचेकी ओर* खिंचावका दर्द।" इसमें उस स्थानमें ढीलापन भी रहता है। जरायुमें रक्त-सञ्चय हो जाता है और वह बढ़ जाता है और भारी रहता है और उसका जो छोटा-सा उत्तोलक *बन्धन रहता है, वह ढीला पड़ जाता है, क्लान्त हो पड़ता* है और कमजोर हो जाता है, वह फैला और सूजा रहता है और पहलेसे ही प्रसारित तथा भारी, जरायु उसको खींचता रहता है और यही वह अनुभूति है, जिसे स्त्रियाँ कहा करती हैं। एक नीचेकी ओर खिंचावकी तरह अनुभूति, मानो जरायु बाहर निकल पड़ेगा। यह कभी-कभी बोंगाकी *तरह अनुभूति भी कहलाता है। जब जरायुकी स्थान-च्युतिकी बीमारी रहती* है, तब स्त्रियाँ इसी तरहकी अनुभूतियोंका वर्णन करती हैं। अरगटका ज़हर जिनमें फैल जाता है, उनमें यह शिथिलता साधारण है। जरायु नीचे उतर आता है तथा भगोष्ठोंके बीचमें खुला रहता है, मानो समूचा भीतरी भाग बाहर निकला आ रहा है। यह स्थान च्युतिका एक साधारण स्वरूप है और *झटका लगनेपर उसे बहुत तकलीफ होती है। इन अङ्गोंमें बहुत अधिक* स्पर्श कातरता रहती है, *जरायुमें बहुत यन्त्रणा और एक तरहका भार मालूम* होता है। मैंने स्त्रियोंको अपने प्रत्यंग फैलाये बैठे रहते देखा है। इतना ही नहीं, योनि पथसे निकली रहनेवाली जरायु ग्रीवा स्पर्श-असहिष्णु रहती है। 'उसे बैठे रहना पड़ता है, लेट नहीं सकती।' बेलेडोनाकी बहुत-सी *रोगिनियाँ लेट नहीं सकती*, क्योंकि उनकी औदरिक पेशियाँ फैली रहती हैं। जब वे लेटती हैं, तो उन पेशियोंको ढीला रखनेके लिये प्रत्यङ्गोंको ऊपर खींचे रहना पड़ता है। बैठे रहना पड़ता है या ढीले होकर बैठना पड़ता है। उन अंगोंमें बहुत स्पर्श कातरता रहती है। जननेन्द्रियमें दबाव और बाहर निकले जानेका भाव।' बेलेडोनामें सब तरहके अवस्थान, रोग-वृद्धि और ह्रासके लक्षण उन *विशेष पेशियोंके अनुसार होते हैं,* जिनपर रोगका आक्रमण हुआ करता है। कितनी ही रोगिनियाँ बैठनेकी अपेक्षा उत्तमतासे **लेट** सकती हैं।

करीब-करीब सबकी ही बीमारी खड़े रहनेपर बदतर हो जाती है। कितनी ही पैर अलगअलग बैठनेपर अच्छी रहती हैं। कितनोंको ही सामनेकी ओर अधिक झुकनेपर बीमारी बढ़ जाती है। कुर्सीपर बैठे रहनेपर रोग-वृद्धि हुए बिना न वह पीछेकी ओर झुक सकती है और न आगेकी ओर। इन अङ्गोंमें इतनी ही सूजन और स्पर्श-कातरता रहती है। हिलने-डोलनेसे उसकी हालत बदतर हो जाती है, झटका लगनेपर बिगड़ती है, उत्तेजना होनेपर खराब हो जाती है, दरवाजेकी भड़भड़ाहटसे उसके लक्षण बढ़ जाते हैं, क्योंकि इनसे पेशियोंमें ऐंठन होने लगती है। इन सबसे ही पता लगता है, कि ये उपदाहित अङ्ग कितने स्पर्श-असहिष्णु हो रहे हैं। इसके अलावा, वाह्य तथा अन्तर जननेन्द्रियोंमें तथा डिम्बाशयमें जलन, ऐंठन और बहुत अधिक गर्मी रहती है। अकसर फाड़नेकी तरह दर्द होता है, ये फाड़नेकी तरह दर्द अकसर उन पकड़ रखनेके भावकी और सङ्कोचनकी अत्युक्ति है और ये आक्षेप और खासकर गोल सूत्रमय तन्तुओंके आक्षेपके कारण होते हैं।

अत्यधिक स्पर्श-कातर, रक्त-पूर्ण तथा जिन्हें सर्दी लगकर रक्त सञ्चय हो जाता है, जिन्हें यन्त्रणा रहती है तथा जिन्हें गर्भ-स्रावका भय रहता है या जिन्हें गर्भ-स्रावके समय या बाद बहुत अधिक रक्त-स्राव होता है ऐसी गर्भवती स्त्रियोंके लिये बेलेडोना अधिक उपयोगी है। इसके अलावा लाल चेहरेवाली रक्त-पूर्ण, बलशालिनी स्त्रियाँ, जिनका विवाह देरसे हुआ है और गर्भवती हो गयी है, उन्हें जब प्रसवका दिन आता है, मांस-पैशिक तन्तुओंका तनाव या ऐंठनकी अवस्था हो जाती है, जरायु ढीला नहीं होता। उसका चेहरा तमतमा उठता है और गर्मी मालूम होती है और एक प्रकारकी उत्तेजनाकी अवस्थामें रहती है, स्पर्श सहन नहीं होता, किसी प्रकारका झटका सहन नहीं होता, जल्द ही जरायुमें शिथिलता पैदा होगी। इस

प्रसवान्तिक स्राव भी गर्म हो मालूम होता है। दबाना भी सहन न होना, सूतिकावस्थामें स्तनकी भी प्रादाहिक अवस्था रहती है। दुग्ध ज्वर (Milk-fever)। जब स्तन लाल हो जाता है, तो बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहता है। यह बिछावनपर करवट नहीं बदल सकती, वह अपनी पलङ्ग हिलने नहीं दे सकती चेहरा तमतमाया रहता है और गलेकी नसोंमें टपक होती है, ज्वर रहता है, समस्त स्वास्थ्य-विधानमें स्पर्श-असहिष्णुता छा जाती है। बहुत कड़ापन, पत्थरकी तरह सख्त। बेलेडोना कई घण्टोंमें ही स्तनका दर्द रोक देगा। यह उस रक्त सञ्चयको भी बन्द कर देगा और सब कष्टोंको दूर भगा देगा।

जब स्तन-ग्रन्थि बिना किसी सार्वाङ्गिक लक्षणके ही प्रादाहित हो जाती है, पर सिर्फ ग्रन्थियां प्रदाहित रहती हैं, तो फाइटोलेक्का दीजिये।

स्वर-यन्त्रका प्रदाह। फिर कसकर जकड़ जाने और श्वास-रोधका भाव आ जाता है। यह कण्ठकी खाल उधड़ जानेके साथ आता है। एक तरहका तीव्र दर्द, खरोंचनेका भाव और थोड़ा-सा बलगम होता है। बहुत कुछ खखारने और खाक-खाक करनेपर यह कण्ठसे थोड़ा सा हटता है, पर खांसना आरम्भ करनेके पहले ही यह बिलकुल सूख जाता है। इसमें यन्त्रणा और आवाज़ बन्द हो जाना भी है। ज्योंही रोगी सोनेकी चेष्टा करता है, त्योंही जकड़ जानेका भाव आकर उसे जगा देता है। कण्ठमें रूखापन खाल उधड़ जाने और कसकर जकड़ जानेका भाव। स्पर्श-असहिष्णुताके साथ स्वर-यन्त्रका प्रदाह (Laryngitis), "स्वर-भङ्गका एकाएक आक्रमण", प्रत्येक बारके हिलने-डोलनेसे या बोलनेकी थोड़ी-सी चेष्टा करनेपर, स्वर-यन्त्रको चालनाकी थोड़ी भी कोशिश करनेपर या उसको छूनेकी चेष्टा करनेपर तकलीफ़ होने लगती है। माथेका पीछेकी ओर हिलाना या अगल बगल माथेको हिलाना, दर्द पैदा कर देता है और खांसी आने लगती है। कुछ निगलनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है। ज्योंही ग्रास स्वर-यन्त्रके पीछेकी ओर उतरता है, उसे एक बहुत बड़ी घाव-भरी जगह अनुभव होती है। यह स्वर-यन्त्र है। आवाज़ बदल जाती है एक मिनट एक तरहका स्वर रहता है और दूसरे ही मिनटमें बदल जाता है। कभी आवाज़ सूखी हो जाती है और कभी चोखकी तरह हो जाती है और इसके बाद, एकदम आवाज़ रुद्ध हो जाती है, एक भी शब्द बोल नहीं सकता। [illegible] तरह) तरह ऐंठन

स्वर-यन्त्र मुखका प्रदाह। सभी लक्षण क्रूपके रहते हैं," पर प्रदाह नहीं रहता यह केवल एक सूखा और नग्न (झिल्ली-रहित) स्वर-यन्त्र रहता है। साथ ही खाल उधड़ जाती है और खरोंच-सी रहती है, एक प्रादाहित अवस्था और यही नये स्वर-यन्त्र-प्रदाह (Laryngitis) का रूप है। यह एकाएक पैदा हो जाता है, उसके श्वास-प्रश्वासकी क्रिया छोटी होती है, तेज़ होती है और दर्द-भरी रहती है। अक्सर दमाकी तरह होती है। दमाकी अवस्था, इसके साथ ही आक्षेपिक श्वास-प्रश्वास और फिर, ये लक्षण समस्त वक्षको आक्रान्त करते मालूम होते हैं। वक्षमें दमाका दौरात्य, गर्म तर मौसममें दमाका प्रकोप।

स्वर-यन्त्रमें कसकर पकड़ रखनेके भावकी वजहसे खाँसी आती है, मानो किसी चीज़का एक छोटा-सा अंश स्वर-यन्त्रमें चला गया है, या थोड़ी-सी धूल, खाद्य या एक बूंद पानी स्वर-यन्त्रमें चला गया है और रोगी खाँसता है। "सूखी, आक्षेपिक खाँसी (Spasmodic cough)", एक तेज खाँसी। रातमें खाँसी। दिनकी अपेक्षा रातमें, लेटनेपर, खाँसी आने लगती है। खाँसी आक्षेपिक, कुत्ता भूँकनेकी तरह तथा छोटी आती है। यह उस हूपिङ्ग खाँसीकी एक दशा है, जिसमें स्वर-यन्त्रमें ऐंठन रहती है, जिससे कुक्कुर-खाँसी आती है और साँस लेनेमें तकलीफ होती है। अन्तमें बहुत देरतक खाँसनेके बाद, कुछ खून-मिला बलगम या थोड़ा-सा पतला बलगम निकल पड़ता है। यह खाँसीके कारण उत्पन्न वायु-पथोंकी भयानक गड़बड़ी है। बेलेडोनाकी खाँसी भी विचित्र ही होती है। ज्योंही इसकी तेजी और इसकी चेष्टाओंसे थोड़ा-सा बलगम निकल जाता है, त्यों ही रोगीको थोड़ी देरके लिये आराम मिलता है और खाँसी रुक जाती है, पर इस आरामके कालमें स्वर-यन्त्र, टेटुआ और वायु-पथ सूखते जाते हैं और अन्तमें उनमें सुरसुरी होने लगती है और फिर ऐंठन उत्पन्न हो जाती है, मानो सभी वायु-पथ इसमें भाग ले रहे हैं तथा कुक्कुर खाँसी, गलरोध और कभी-कभी वमन भी होने लगता है। इसके बाद थोड़ा-सा बलगम निकलता है और खाँसी दब जाती है। थोड़ी देर रुककर फिर खाँसीका दौरा होने लगता है। इसी तरह यह हूपिङ्ग खाँसीकी तरह जारी रहता है, पर समस्त विराम-कालके समय बराबर सूखापन। इसीलिये, इसे आवेगिक खाँसी कहते हैं।

वक्षमें कसावट। वक्षमें दर्द-भरा रहना, वक्षमें घावकी तरह यन्त्रणा। बेलेडोनामें ज्योंही बच्चेको यह मालूम होगा, कि खाँसी आयगी, वह चिल्लाने लगेगा, क्योंकि वह जानता है, कि कैसी तकलीफ होनेवाली है। वक्ष इतना दर्द-भरा रहता है, कि बच्चा खाँसीसे डरता और चीखता है। बच्चेके रोनेसे हमलोग समझ जाते हैं, कि खाँसीका दौरान होनेवाला है। ठीक **ब्रायोनिया, हीपर और फास्फोरस** इनमें अन्य दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा लक्षण है। वक्षमें जलन होती है, वक्षमें भयङ्कर रक्त सञ्चय रहता है। इन सभी शिकायतोंके साथ सूखी, तङ्ग करनेवाली, आक्षेपिक खाँसी होती है, यह रातमें बढ़ जाती है।

यह दवा न्युमोनिया (फुसफुस प्रदाह) और प्लुरिसी (वक्षावरक झिल्ली-प्रदाह) को आरोग्य करती है। मुझे विश्वास है, कि हर शख्स बेलेडोनाका न्युमोनिया और प्लुरिसीका चित्र अङ्कित कर सकता है। मुझे विश्वास है, कि आप **रोगीको** इतनी अच्छी तरह जानते हैं, कि मुझे रोगीका वर्णन देने, उसके माथे, उसका रक्त-सञ्चय, उसका लाल चेहरा या जलन बतानेकी जरूरत नहीं है, पर प्लुरिसीमें इसका रहस्य आपको बताऊँगा। बेलेडोनाकी बीमारी दाहिने पार्श्वमें होती है। बहुत दर्द, उस अङ्गमें बहुत अधिक यन्त्रणा, **उस पार्श्वको दबाकर सो नहीं सकता, पलङ्गमें हिलनेसे तकलीफ बदतर हो जाता है**—यह बेलेडोनाकी प्लुरिसीका लक्षण है। **ब्रायोनियाकी** बीमारी भी दाहिनी ओर होती है, पर **ब्रायोनियाका** रोगी, रोगवाला पार्श्व दबाकर ही लेटता है, दबाव जरूर पसन्द करता है तथा हिलनेसे स्पर्श-असहिष्णु नहीं रहता, उसमें अत्यधिक ताप नहीं रहता, उसमें इतनी टपक नहीं रहती और न इतनी जलन ही रहती है। प्रत्येक रोगीमें, जिसको आप देखने जायें, इसी तरह प्रभेद करना चाहिये। होमियोपैथिक चिकित्सा करनेका दूसरा कोई उपाय नहीं है।

याद रखिये, कि सभी प्रादाहिक अवस्थाओंके साथ टपक, लाली, ताप, जलन स्पर्श करनेपर यन्त्रणा तथा झटकेके सहन न होनेका लक्षण रहता है। बेलेडोनाका यह मतलब है, कि प्रादाहित अङ्गपर भार टेकर लेट नहीं सकता, पर **ब्रायोनियामें** प्रादाहित अङ्गपर भार टेकर लेटनेपर उसकी तकलीफ घटती है।

सभी धमनियोंमें टपक। बहुत ज्यादा रक्त-सञ्चय ; नस-नाड़ियोंकी उत्तेजना, ये सभी रक्त-सञ्चय और प्रदाहोंके साथ वर्त्तमान रहते हैं।

बेलेडोना प्रादाहित वातको उस अवस्थामें आरोग्य करता है, जब सब सन्धियां फूली रहती हैं या उनमेंसे बहुत-सी फूली रहती हैं। वे गर्म, लाल और जलन-भरी रहती हैं। वातमें गर्मी, लाली और जलन बराबर रहती है तथा समूचे रोगीमें वही अनुभवाधिक्य और सन्धियोंमें झटकेका सहन न होनेका लक्षण है। वह चुपचाप पड़े रहना चाहता है, हिलने-डोलनेपर उसकी बीमारी बढ़ती है और खासा बोखार भी रहता है। कभी-कभी जब प्रदाह-वाला बोखार बहुत बढ़ जाता है, तो सरसाम पैदा हो जाता है, पर निर्देशक स्वरूपमें लालीके साथ सन्धियोंकी सूजन और हिलने-डोलने तथा झटकेकी बहुत स्पर्श-असहिष्णुता रहती है। यह खासकर उनके लिये बहुत उपयोगी है, जिन्हें सर्दी बिल्कुल सहन नहीं होती, जो जरा भी खुले रहना सहन नहीं कर सकते, हवाका झोंका बर्दाश्त नहीं कर सकते, ओढनेका हिलना-डोलना उन्हें बहुत सहन नहीं होता और जिनकी तकलीफें गर्मीसे घटती हैं। वातवाली अवस्थामें भी बेलेडोनाकी वही प्रकृति और ढङ्ग रहता है, जैसा कि अन्य बीमारियोंमें रहता है। **रोगीने** ही बेलेडोनाका यह चरित्र परीक्षा-कालमें बताया है और **रोगी** ही रोगमें वह चरित्र प्रदान करता है,—जब उसे वह हो जाता है और यह तो केवल सदृशके नियमकी पूर्त्ति है, जब वे एक साथ पैदा होते हैं और दवा रोगको आरोग्य कर देती है।

किसी खास सन्धिमें एकाएक हवा लगकर उस सन्धिमें प्रदाह हो जाना या सर्दीका जोरका आक्रमण होकर कोई एक सन्धि प्रादाहित हो उठती है। एक रोग जो आप ही स्थानिक हो जाता है, यह शरीरकी किसी भी सन्धिमें हो सकता है, क्योंकि बेलेडोना सभी सन्धियोंको आक्रान्त करता है। रक्त-पूर्ण मोटे-ताजे मनुष्योंको एकाएक सर्दी लग जाना, बेलेडोनाकी बीमारियोंका अति-प्रधान कारण होता है। बीमारी, पुरानी बीमारियोंमें, सर्दी साधारणतः बैठ जाती है या कोई गड़बड़ी मचा देती है और विशृङ्खलता बढ़ा देती है। इसका दौरा दुर्बल रोगियोंपर होता है। बलवान मनुष्योंको नाककी सर्दी होती है, जहांसे वे उसे सरलता-पूर्वक निकाल फेंकते हैं। आप रोगी मनुष्योंको अक्सर कह सकते हैं, कि "तुम्हारी सर्दी अब तुम्हारे सबसे दुर्बल स्थानको आक्रान्त करती है। यदि आपको यकृतकी बीमारी है, तो आपकी सर्दी वहीं

बैठ जायगी।" इसी तरह होता है, 'पर जब आप अच्छे हो जायेंगे, तो अन्य व्यक्तियोंकी भांति आपको नाकको ही सर्दी होगी।" खूब स्वस्थ पुरुषोंको शायद ही कभी सर्दी होती है, पर ऐसे मनुष्य अधिक नहीं मिलते, वे इतने कम हैं, कि जल्दी दिखाई नहीं देते और छींक, नाक छिड़कना, नाकसे स्राव होना, यह सब साधारण स्वस्थ व्यक्तियोंमें नाककी राहसे सर्दी निकाल डालता है।

फिर प्रत्यङ्गोंमें भी अकड़न प्राप्त होती है, जो सार्वाङ्गिक लक्षणोंका ही एक अङ्ग है। प्रत्यङ्गोंकी सभी पेशियोंमें और समूचे शरीरमें अकड़न। माथेकी बीमारियाँ, मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय, मस्तिष्कका उपदाह, इन सबके साथ बच्चोंको अकड़न हो जाया करती है। रक्त-पूर्ण बच्चोंको सर्दी लग जानेके कारण अकड़न और प्रत्यङ्ग ही ज्यादाकर पेशियोंकी यह अकड़नकी चेष्टा प्रकट करती हैं। बहुत तेज़ ऐंठन। सभी प्रत्यङ्ग एक प्रकारकी अकड़नकी गतिमें रहते हैं। कभी अकड़न लगातार होती रहती है और कभी एक बार होती है, फिर शिथिल पड़ती है, फिर होती है। कभी-कभी प्रत्यङ्गोंकी अकड़न, इस ढङ्गकी होती है, जो उन्हें एकाएक खींच लेती है, एकाएक उन्हें फेंक देती है, जब धड़को पीछेकी ओर फेंकती है, तो बहिरायाम आक्षेप (Opisthotonos) कहलाती है और जब धड़को सामनेकी ओर फेंकती है, तो सम्मुख वक्र-टङ्कार (Emprosthotonos) कही जाती है। बेलेडोनाकी बहुत-सी तकलीफें चुपचाप रहनेपर घट जाती हैं। खींचनका दर्द, स्पन्दन और प्रादाहिक अवस्थाएँ रोगीमें पूरी तरह आराम करनेकी इच्छा उत्पन्न कर देती हैं और ये हिलने-डोलनेपर बढ़ जाती हैं। ज़रा भी हिलने-डोलनेसे अनिच्छा और घृणा बेलेडोनाका साधारण लक्षण है तथा बेल और **ब्रायोनिया**का सुदृढ़ लक्षण है। बेलेडोनामें अङ्ग इतने स्पर्श-असहिष्णु हो जाते हैं, कि बोलनेके समय हिलना-डोलना भी दर्द पैदा कर देता है। यह इतना स्पर्श-असहिष्णु है कि दर्दवाली जगहपर आवाज़की धमक तकलीफ़ देती है। कड़ी आवाज़वाला, सङ्गीतकी आवाज़वाला मनुष्य, उस विकम्पनके बारेमें कठिनतासे सोचता है और स्त्रीके आवाज़के बारेमें तो बहुत ही कम और इतनेपर भी मैंने देखा है, कि हिलने-डोलनेसे वृद्धि और झटकेसे वृद्धिका लक्षण स्त्रियोंमें इतना अधिक रहता है, कि उसकी आवाज़ हथौड़ेकी चोटकी तरह मालूम होती है। जरायुके और

डिम्बाशयके प्रदाहमें तथा आँतोंके प्रदाहमें, रोगिनी बोलना नहीं चाहती, क्योंकि उसकी आवाज़ यन्त्रणा भरे अङ्गोंमें विकम्पन उत्पन्न कर देती है। हिलने-डोलने तथा झटकेसे स्पर्श असहिष्णुताका ही पता इससे लगता है। झटका तो हिलने-डोलनेका ही एक बढ़ा हुआ रूप है, जिससे यह स्पर्श-कातरता आ जाती है।

यदि आप स्नायुओंका अध्ययन करें, तो आपको विचित्र स्नायविक प्रदर्शनोंका एक समूह दिखाई देगा, जैसे स्नायुओंकी स्पर्श-असहिष्णुता, जो आघातसे बढ़ जाती है। ऐंठन, सम्पूर्ण स्नायु-संस्थान (Nervous system) की बहुत-सी विशृङ्खलताएँ, ऐंठन, झटका, कम्पन, पेशियोंका काँपना या शून्यमें हाथ उठाना प्रभृति। मरोड़ और ऐंठन तथा बच्चोंका टङ्कार। एकाएक यह टङ्कार पैदा हो जाता है। एकदम आशा-रहित अवस्थामें इनका दौरा हो जाता है। देरसे क्रिया करनेवाली तथा अन्तरुत्सेक्य श्रेणीकी दवाओंमें, अकड़नके अधिकांश अवसरोंपर, गर्भ-धारणके अन्तिम दिनोंमें रोगिनी अच्छी होती नही दिखाई देती, पर बेलेडोनामें वह प्रसवका अनेक पथ पार कर जाती है या प्रसव ही कर देती है, जब कि इसकी बिलकुल ही आशा न थी। शायद उसका चेहरा कुछ लाल है, पर एकाएक उसपर अकड़नका दौरा हो जाता है, सरसे पैरतक एक तेज़ टङ्कार हो जाता है। उत्तेजनाके साथ मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय, तेज़ ताप, सभी चीजे अति तीव्र, प्रचण्ड, आकस्मिक और प्रत्याशा-रहित भावसे होती हैं। सूतिका-गृहमें दर्द एकाएक बन्द हो जाता है और अकड़न पैदा हो जाती है, पर देखिये और समझिये,—जो सब स्पर्श-असहिष्णुताएँ मैंने बतायी हैं, रोगीमें मौजूद हैं। दर्द एकाएक रुक जाता है, सरपर रक्त चढ़ गया-सा मालूम होता है, **चेहरा लाल हो जाता है।** एकाएक रक्त-सञ्चय हो जाता है। यह अकड़न मृगीकी तरहकी होती है। बेलेडोना, उन अनगिनती बार-बार दुहरानेवाली बीमारियोंमें उपयोगी नहीं होता, यद्यपि एक आक्रमण बेलेडोनासे हटा देना चाहिये। इन आक्रमणोंमेंसे किसी एकको लीजिये,—ये या तो टङ्कार हों या सर-दर्द, अथवा मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय हों, वे रोगीको कमजोर बना देते हैं और वह उत्तेजित हो जाता है। सरका रक्त-सञ्चयी आक्रमण ही लीजिये,—सीधे पलङ्गपर रोगी चला जाता है और सरको लुढ़काता है। आप इनकी चिकित्सा बेलेडोनासे कीजिये, आक्रमण बन्द हो जायगा। ध्यान रखिये,—मैं

यह कहकर आरम्भ करता हूँ, कि यह केवल एक श्रेणीमेंसे है। आप इसे नहीं जान सकते हैं, यह पहला ही हो सकता है। आप इस एकको घटा दीजिये और फिर जब वही खुली हवा लगती है, तो वही आक्रमण फिर हो जाता है, पर बेलेडोनाने पहली बार जितना फ़ायदा किया था, उतना इस बार नहीं करता। दो या तीन आक्रमणोंके बाद बेलेडोनासे फिर कोई फ़ायदा न होगा और पहलेकी अपेक्षा और भी बदतर हो जायगा। जब इसने पहली बार लाभ किया है, तो चिकित्सकको समझना चाहिये, कि यह इस श्रेणीमें एक है और बेलेडोना उपयोगी नहीं है। अकसर ऐसे रोगियोंको **केल्केरिया**की जरूरत है। मैं कहता हूँ,—अकसर—हमेशा नहीं। दो आक्रमणोंके बीचके सब लक्षणोंकी परीक्षा करनी चाहिये, जिसमें कि बच्चा इन आक्रमणोंसे बचा लिया जा सके, क्योंकि नयी दवा इससे कोई ज्यादा काम न करेगी, कि एक, दो या ज्यादा-से-ज्यादा तीन आक्रमणोंसे रक्षा कर सके। इसकी क्रिया गहरी नहीं होती, इसकी क्रिया अधिक दिनोंतक नहीं चलती। यह काफी तौरसे समस्त स्वास्थ्य-विधानपर प्रभाव नहीं पहुँचाता, कई दिन बाद ही इसका प्रभाव चला जाता है, बार-बार दुहराना पड़ता है। दुहरानेवाली आक्षेपिक और सामयिक बीमारियोंमें रोगीकी निगरानी करते रहना और देखते रहना चाहिये। दुहरानेवाली बीमारियोंकी बेलेडोना अच्छी दवा नहीं है, क्योंकि इसमें सामयिकता नहीं है। ठीक उसी तरह जिसमें बीमारीका पुछल्ला लगा नहीं रहता है। यदि पहला आक्रमण बेलेडोनाकी तरह दिखाई दिया है, तो दूसरा भी ठीक वैसा ही होगा। बेलेडोना उन्हीं रोगोंमें उपयोगी होता है, जिनको यदि आरोग्य कर दिया गया, तो फिर होनेकी सम्भावना नहीं रहती। वे बीमारियाँ, जो मृत्यु या आरोग्यमें ही समाप्त होती हैं। यह उन रोगोंमें **काम न करेगा**, जो समय बाँधकर होते हैं।

नींद भी रक्त-सञ्चयी नींद होती है, तन्द्रा, सपनोंसे भरी रहती है, प्रचण्डतासे भरी रहती है भयानक सपने, गला दबानेके सपनेसे डरकर जाग पड़ता है, नींदमें काँपता और ऐंठता है, "नींदमें बेचैनी (Restless sleep)।" नींदमें कष्टरता और गों गों करता है, सब तरहकी प्रचण्डता करता है, नींदमें प्रलाप, "डरे हुएकी तरह नींदमें चौंक उठता है।" रोगी कभी-कभी नींदमें बातचीत करना आरम्भ कर देता है, तेजीसे और जोरसे बातचीत करता है, माया

गर्म हो जाता है और पैर ठण्डे, चिल्लाकर इसका अन्त हो जाता है। "नींदमें बेचैनीसे छटपटाता है, नींदमें पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं, नींदमें सर गर्म हो जाता है, उत्तेजना और ज्वरमें नींद खुलती है।"

इसके लक्षण बहुत कुछ पुराने ढङ्गके आरक्त ज्वरकी तरह होते हैं, जिससे कि आरक्त ज्वरमें लाभदायक होती है, शायद यह बीमारीकी सबसे उपयोगिनी दवा है। किसी-किसी ऋतुमें कम-से-कम यह सबको ही दी जायगी। अधिकांश रोगी बेलेडोनाके ही होंगे, इनका चेहरा लाल होगा और त्वचा देखनेमें चमकीली होगी। चमकीली लाल, तेज़ ताप, बहुत अधिक रक्त-सञ्चय, कुछ देर बाद यदि बेलेडोनाका प्रयोग नहीं किया, तो यह काला हो जायगा, पर इन सबपर विचार करनेपर भी वे ही तीन शब्द **गर्मी लाली और जलन** सामने आते हैं। हर जगह जलन। साधारण लक्षणोंमें जो ताप मैंने बताया है, वह इतना स्पष्ट, इतना तीव्र रहता है, कि बेलेडोनाके आरक्त ज्वरके रोगीको छूनेपर घण्टोंतक आपके अंगुलियोंकी नोकपर वह अनुभव होता रहेगा। यह **एपिस**के रोगियोंसे बिलकुल ही अलग है, उसपर रूखे दाने निकलते हैं। बेलेडोनाके उद्भेद, चिकने और चमकीले होते हैं। **एपिस**का रोगी ठण्डा रहना चाहती है, ओढ़ना उतार देना चाहता है। बेलका रोगी गर्म रहना चाहता है, गर्म कमरा चाहता है, सच तो यह है, कि **एपिस**के रोगीमें प्यास नहीं रहती, बेलमें प्यास न रहना एक अपवाद है, साधारणत. पानीको बहुत प्यास रहती है, थोड़ा-थोड़ा और बार-बार पानी माँगता है, श्लैष्मिक-झिल्ली और त्वचामें बहुत सूखापन। माथा गर्म रहनेके साथ हाथ-पैर ठण्डे। **आरम ट्राइफाइलम**का रोगी लगातार मुँह खूँटा करता है या तो, पेशाब रुका रहता है या थोड़ा होता है, त्वचा पीली रहती है और इधर-उधर फोड़ेसे उद्भेद निकलते हैं। अंगुलियाँ, अंगूठे, नाक तथा ओठोंकी खुजलाहट आपको **आरम**का प्रयोग करनेकी सिफारिश करेगी। आपको उस मानसिक अवस्थावाला **बेप्टीशिया**का रोगी याद होगा, जिसमें वह बिछावनपर अपने टुकड़े जोड़नेकी चेष्टा करता है।" दूसरी ओर जहाँ उद्भेद नहीं होते, निदानके लिये इधर-उधर कुछ दागसे निकलते हैं या परिवारमें किसी दूसरेको बीमारी रहनेके सहारे निदान किया जाता है। बच्चा बर्फीला पानी पीता है, पर पेटमें उसके गर्म होते ही

कैं कर देता है, उसको कौन फास्फोरस नहीं देगा? इसलिये प्रभेद करनेवाली बातें तो रोगोके बिस्तरके पास ही मिलती हैं और हम देखते हैं, कि यह सब दवाएँ एक समान नहीं हैं। बेलेडोना, अपने ताप अपनी लाली और अपनी गड़बड़ीके साथ अलग ही खड़ा रहता है। याद रखिये, इसमें अविराम ज्वर नहीं है। टाइफायडमें यह उपयोगी नहीं होता। बेलेडोना एक रातमें बोखार उतार देगा, प्रलापको दूर भगा देगा, पर दूसरी रातमें क्या होगा? बोखार फिर आता है, रोगी पहलेकी बनिस्बत बदतर हो जाता है, सिर्फ इसी वजहसे कि बेलेडोना जैसा आरम्भ करता है, वैसा सम्हाल नहीं सकता। यह उपयोगी नहीं है। इसमें वह अविराम स्वरूप नहीं है। हमलोगोंको उस दवापर पहुँचना चाहिये, जिसमें अविराम ज्वर हो और जब हम टाइफायड अवस्थामें पहुँचे तो वैसी ही दवा चुननी चाहिये, जिसमें टाइफायड हो। हमारे पूर्व चिकित्सकोंने अकसर वही सोचा, जो उन्होंने उस समय देखा। यह तो हमारे श्रेणीके चिकित्सकोंको जब काफी अनुभव हुआ, तब यह पता लगा कि सामयिकता भी लक्षणोंमेंसे एक है। प्रत्येक दवाका एक स्थान होता है, इसकी ह्रास-वृद्धिका समय होता है। ऐसा ही बेलेडोनामें भी है। साधारणतः इसकी बीमारी तीसरे पहर ३ बजे होती है। इसकी शिकायतें साधारणतः रातमें बदतर हो जाती हैं। इसके रोग साधारणतः तीसरे पहर तीन बजे उत्पन्न होते हैं और तीन बजे सबेरेतक रहते हैं या आधी रातके बादतक, इस तरह इसका ज्वर रातमें सबसे ऊँचा रहता है, बोखार आता है और बहुत तेजीसे बढ जाता है। तापमान यन्त्रमें ताप कभी कभी १०४ या १०५ डिग्रीतक चढता है और फिर स्वाभाविक तापतक उतर आता है। लेकिन ज्वर बिल्कुल ही नहीं छुट जाता। जिस बीमारीमें ज्वर बिलकुल ही छूट जाता है, उसमें यह उपयोगी नहीं है, क्योंकि उससे सम्पूर्ण सामयिकता प्रकट होती है जो बेलेडोनामें नहीं है।

ताप, लाली और जलन, त्वचाके बहुतसे लक्षणोंको बतलाते हैं। इसमें बहुत महीन उद्भेद निकलते हैं, रूखे उद्भेद नहीं हैं, बल्कि खूब महीन, लाल और चिकने उद्भेद निकलते हैं। इसमें चर्मका प्रदाह होता है। दाहक प्रदाह,—एक गहरा प्रदाह। त्वचा पहले, चमकीली लाल रहती है, फिर धीरे-धीरे नीली बैंगनी या चित्ती-चित्ती हो जाती है और इसमें ताप लाली और जलन रहती है। यह चर्मके और गहराईपरके

तन्तुओंके फुन्सी-भरे प्रदाहमें, विसर्पकी भाँतिके चर्मके प्रदाहमें, **रसटक्स**की भाँति, साधारणतः उपयोगी नहीं होता। कभी-कभी जल-भरी फुन्सियाँ होती हैं, लेकिन यह अपवाद है। पर **रसटक्स**की यह सार्वाङ्गिक प्रकृति ही होती है। **रसटक्स**की बीमारी प्रदाहसे आरम्भ होती है। इसमें भी ताप, लाली और जलन रहती है, पर जब कभी **रसटक्स**का प्रदाह आरम्भ होता है, ठीक उसी समय एक बड़ा छाला निकल आता है और यह रक्ताम्बु (Serum) से भर जाता है। कोई भी बेलेडोनाके प्रादाहिक स्थानमें लाल दाने निकल सकते हैं। तेज़ बोखारमें जहाँ किसी तरहका आरक्त ज्वर या कोई साधारण उद्भेद नहीं है, वहाँ भी एक लाल, महीन, चमकीला उद्भेद निकल आ सकता है। मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय होनेपर और पित्तज ज्वरमें यह कोई असाधारण बात नहीं है और कभी-कभी इससे चिकित्सकको उद्भेदज रोग हो जानेका धोखा हो जाता है, जब कि यह सङ्कर रोग (Hybrid) रहता है। बेलकी त्वचा, जब यह लाल होती है, तो ऐसी अप्रबल लाली रहती है, कि आप करीब-करीब त्वचापर अपना नाम लिख सकते हैं। जैसे कि आप अपनी अंगुलीसे त्वचापर एक लकीर खींच दें, तो आपकी अंगुलीके पीछे एक सफेद लकीर बनती चली जायगी। आरक्त ज्वरके निदानका यह एक पुराना तरीका था और इससे मालूम होता है, कि बेलेडोनासे आरक्त ज्वरकी तरह शरीर-पटलपर वह विचित्र रक्त-सञ्चय उत्पन्न होता है। इसलिये बेलेडोनाके परीक्षा लक्षणोंमें हमें ऐसे लक्षण प्राप्त होते हैं, जो आरक्त ज्वरके नैदानिक लक्षण हैं, पर हमलोग एक लक्षणपर दवा नहीं देते। बहुत वर्षों से केवल नाड़ीकी चाल कम करने या बोखार उतारनेके उद्देश्यसे दवा देनेकी बात भी कोई भी होमियोपैथिक चिकित्सक नहीं सोचता, वह सम्पूर्ण **रोगी**के लिये दवा देता है। यह सत्य है, कि ताप नीचे उतर आता है, यदि दवा ठीक-ठीक पड़े, पर केवल नाड़ीकी चाल कम कर देनेके लिये दवा देना, तो एक गलत सीमापर जाना है। जो होमियोपैथिक ढङ्गसे सोचता है, वह एक लक्षण दूर करनेके लिये दवा नहीं देता, बल्कि लक्षणोंसे परिचालित होकर वह दवा चुनता है। इसके बाद चाहे जो हो। यह सत्य है, कि लक्षण दब जाते हैं, दूसरे यह कह सकते हैं कि इसने लक्षणोंको दूर करनेके लिये दवा दी है, क्योंकि वे दब जाते हैं। मनमें होमियोपैथीके आदर्शकी

रचा करना सीखिये और वैज्ञानिक ढङ्गसे सोचिये। ऐसा करनेके लिये वसीयतमें आपने जो बहुत बड़ी रकम पायी है, उससे अपनेको छुड़ाना होगा। हमलोगोंने गलत रास्तेसे सोचना वसीयतमें पाया है।

"यकृतमें रक्त सञ्चयके कारण चमड़ा पीला हो जाना" और हादयाँगुल अन्चकी सर्दी। जब क्रिनाइनसे मनुष्य बहुत भर जाते हैं, तो उन्हें हर अवसरपर सर्दी लग जाया करती है और एकाएक यकृतमें रक्त सञ्चय हो जाता है। साथ ही बहुत यन्त्रणा रहती है तथा इस दशाको समस्त स्पर्श-असहिष्णुताके साथ-ही-साथ त्वचा पीली पड़ जाती है। बेलेडोना ऐसे रोगियोंको आरोग्य कर देगा।

ऐसी भी अवस्थाएँ हैं, जो बेलेडोनाके बाद होती हैं, जो इसकी पुरानी अवस्थाको बताती हैं। जहाँ बेलेडोना, रोगकी नयी दशामें रक्त सञ्चयमें, उपयोगी होता है, पर वहाँ वही सामयिकता रहती है, जो मैंने बतायी है। इसके स्वाभाविक पश्चाद्गामी—इसकी क्रियाके अनुपूरक भी हैं और यह कैल्केरिया उनमेंसे एक है। बड़े माथेवाले लड़के, थलथुले, रक्त पूर्ण, अकालपक्व, जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है तथा सर-दर्द और माथेमें रक्त सञ्चय हो जाता है, विद्यार्थी जिन्हें सर-दर्द हो जाता है, जिसपर बेलने पहले लाभ किया था। यदि आप साधारणतः बहुत सावधानतासे उन रोगियोंकी परीक्षा करेंगे तो कैल्केरियाके रोगी निकलेंगे। इस तरह बेलेडोनासे कैल्केरियाका सम्बन्ध रहना एक साधारण बात है। आजकल हमलोगोंको चिकित्सकोंके पास सूखी, खुसखुसी खाँसीके बहुत रोगी दिखाई देते हैं, जिन्होंने बहुत अधिक लैकेसिसका प्रयोग किया है। साधारणतः लैकेसिस अत्यधिक स्पर्श-कातर स्त्रियोंको दिया जाता है और यह उनमें बहुत सी दशायें उत्पन्न करता है। यह कभी-कभी गहरी बीमारियाँ आरोग्य कर देता है, पर इसके बाद कई हफ़्तोंतक सूखी खाँसी बनी रहती है जो रोगिनीको सोने नहीं देती। कभी-कभी तो यह पहली नींदके बाद ही आने लगती है, जो साधारणतः रातके ११ बजेके समय आती है। लेटनेके कारण एक सूखी खुसखुसी खाँसी। लैकेसिसका पुराना प्रभाव, स्नायविक अवस्था और उत्तेजनशीलता, बेलेडोना आरोग्य कर देगा। बेलेडोना लैकेसिसके प्रतिविषका काम करेगा अर्थात् नये लक्षणोंके लिये। लैकेसिसके बहुत पुराने प्रभावोंके लिये

कौष्टीरियम प्रतिविष होता है। बेलेडोनाके अपथ्यव्यवहारके बाद कौष्टीरियम एक स्वाभाविक प्रतिविषके उपयोगमें आता है।

बेंझोयिक एसिड।

(Benzoic Acid)

जब किसी औषधिकी प्रकृतिमें हम कितने ही स्पष्ट लक्षण-समूहों द्वारा प्रदर्शित मानव-शरीरकी सुप्रकट अवस्था और दशा देखते हैं, तो हम जान सकते हैं, कि मानव परिवारमें एक ऐसी रोगात्मक अवस्था है। जबतक पहलेसे ही सम्पूर्ण मानव-जातिके स्वास्थ्य-विधानमें कोई ऐसी अवस्था न हो, जो जागरित कर दी जा सके, जबतक उनमें यह शक्ति नहीं रहती, कि किसी रोगात्मक दशाकी सृष्टि कर सके। वे केवल एक व्यक्तिमें कुछ चीज बताते हैं, जो उस व्यक्तिमें है और जो मानव-जातिमें होता है और इसीलिये जब किसी दवामें हम रोगात्मक अवस्था देखते हैं, तो हम समझते हैं, कि मानव-जातिमें भी इसीके जैसा है। चीजें ऐसी ठीक मिलती हैं, कि प्रत्येक पदार्थ ही कामका प्राप्त होता है। मानव-जातिमें ऐसी भी अवस्था हो सकती है, जिसको अबतक हम कोई भी दवा नहीं जानते। हमें विचित्र लक्षण समूह बारम्बार लौट आते दीखते हैं और हम जानते हैं, कि वे स्वास्थ्य-विधानकी किसी दशाके प्रतिनिधि स्वरूप हैं, पर हमलोगोंने अबतक उनका प्रतिरूप मेटिरिया-मेडिकामें नहीं देखा है। दवाओंमें मानव-जातिके रोगोंका ठीक-ठीक अनुरूप मिलता है।

अब इस दवामें एक ऐसी अवस्था और दशा है, जिसे कभी-कभी गठियाकी प्रकृति, मूत्रचय-विकारी रक्तमें मूत्रक्षारकी वृद्धिकी प्रकृति कहते हैं। इन रोगियोंका सम्हालना बहुत मुश्किल होता; क्योंकि अवस्था इतनी ही बद्धमूल रहती है। यह एक सोरा (Psora) का प्रदर्शन है। इन रोगियोंमें कुछ-न-कुछ गुर्देकी क्रियाकी गड़बड़ी रहती ही है, कभी पेशाब बहुत थोड़ा होता है और इस अवस्थामें शारीरिक उपसर्गोंकी तकलीफें उन्हें भोगनी पड़ती हैं। इसके बाद जब खूब ज्यादा पेशाब होने लगता है, तो उनके

उपसर्ग दूर हो जाते हैं। उनकी सन्धियोंमें वातका आक्रमण और दर्द हो सकता है, जिससे उनको गठियाकी प्रकृतिका पता लगता है और इसके बाद तब उन्हें आराम मिलता है, जब पेशाब बहुत ज्यादा और तलछटसे बहुत लदा होता है, पर फिर उस ढङ्गका आक्रमण उनपर होता है, जब उन्हें कुछ-न-कुछ पेशाब होता है, पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व (Specific gravity) बहुत कम होता है। इस समय ये रोगी दर्दसे भरे रहते हैं, इस तरह उन्हें रोग घटा-बढ़ा करता है। अब नया चिकित्सक, जब रोगीको उस अवस्थामें देखेगा, जब उसके पेशाबमें मूत्राम्ल (Uric acid) बहुत ज्यादा निकलता है, जिससे कि लाल सुर्खीकी तरह तली जमती है, तो यह सोचेगा, कि इसे रोक देना चाहिये। इसका प्रधान लक्ष्य होगा, इस एकरवास पदार्थको रोकना, पर रोगीको जब इस ढङ्गका पेशाब होता रहता है, तो यह बहुत अच्छा रहता है। इसका रोकना शरीरके उद्वेगोंको रोक देनेकी तरह ही है या किसी दूसरे रोगके बाहरी प्रदर्शनको दबा देनेकी भाँति।

इस दवाके सर्वप्रधान प्रदर्शनोंमें यह देखनेमें आयगा, कि इसके पेशाबमें तेज़-गन्ध रहती है पेशाब दुर्गन्धसे भरा रहता है और यह दुर्गन्ध कभी कभी इतनी जबर्दस्त हो जाती है, कि हिपुरिक एसिड (Hippuric acid)— घोड़ेके मूत्राम्लकी तरह गन्ध आती है और इसीलिये यह कहा जाता है, कि **पेशाबसे घोड़ेके पेशाबकी तरह तेज गन्ध निकलती है।** इस दवामें गन्ध करीब करीब हिपुरिक एसिडकी जैसी ही आती है।

इसके अतिरिक्त बेञ्जोयिक एसिडकी बीमारियाँ परिवर्त्तनशील होती हैं और हम जानते हैं, कि वे परिवर्त्तनशील क्यों होती हैं? जब पेशाब बहुत ज्यादा होता है और उसमें मूत्राम्ल (Uric acid) बहुतायतसे निकलता है तथा पेशाबमें बहुत अधिक तलछट पड़ता है, तब रोगी बहुत अच्छा रहता है, पर जब पेशाब थोड़ा या थोड़े आपेक्षिक गुरुत्ववाला (Low specific gravity) होता है तो उसे पीठमें और सन्धियोंमें दर्द होने लगता है, वह ऋतु परिवर्त्तनसे बीमार हो जाता है। सर्दी तथा सर्द-हवा सहन नहीं होती, पर फिर पेशाब भारी हो जाने दीजिये जो थोड़े-पर्यायक्रमकी प्रणालीसे होने लगेगा। हलका पेशाब पर्यायक्रमसे भारी पेशाबमें परिवर्त्तित हो जाता है और रोगीको फिर आराम पहुँचने लगेगा। फिर ऐसी भी बीमारियाँ हैं, जिनमें पेशाबमें तेज़ और सड़ी बदबू आती है। यह अकसर बच्चोंको होती

है। यह एक आश्चर्यको बात है, कि इन छोटे-छोटे बच्चोंको आरम्भकालसे ही मूत्राम्लको प्रकृति हो जाती है। माता अकसर कहती है, कि इसको बहुत ज्यादा पेशाब होता ही है। उसके बर्द्धित पेशाबमें गन्ध आती है; इसमें इतना ज्यादा बिगड़े पेशाब या बदबूदार पेशाबमें गन्ध नहीं रहती, बल्कि बर्द्धित पेशाबकी गन्ध रहती है। इसने कितनी ही बार बिछावनपर पेशाब कर देनेकी बीमारी आरोग्य कर दी है। नींदमें आप ही-आप पेशाब हो जाना, जब कि कई बार पेशाब किया हुआ बिछावन ऐसा हो जाता है, कि साफ़ नहीं किया जा सकता। आप ज्योंही कमरेमें जायँगे, त्योंही इसकी गन्ध आपको मालूम हो जायगी, बच्चे और सब चीजोंमें पेशाब जैसी गन्ध। कडे पेशाब जैसी गन्ध आने लगती है, घरसे पेशाब जैसी गन्ध आती है। यदि ऐसे दो या तीन बच्चे रातमें बिछावनपर पेशाब कर देते हैं, तो पेशाब इतना बदबूदार होता है, कि अपनी कहानी आप ही तुरन्त कह देता है।

इस दवाकी दुबारा परीक्षा होनेकी जरूरत है, क्योंकि इसका विवरण पूरा पूरा नहीं प्रकट हुआ है, तथापि इसकी प्रकृति मालूम हो गयी है, इस प्रकृतिकी और भी बहुत सी औषधियाँ हैं, पर यह भी शायद उतनी ही बर्द्धित है, जितना दूसरी। अलबत्ता, यह दवा इन सभी रोगियोंको लाभ नहीं करती, क्योंकि इसका मेल इनके विशेष लक्षणोंसे नहीं होता, पर इसकी प्रकृति या सार्वाङ्गिक दशा ऐसी है, जो निःसन्देह सबसे आगे बढ़ जाती है और जब इससे सभी विशेषताएँ मेल खा जाती हैं, तो यह आश्चर्यजनक परिवर्त्तन उत्पन्न कर देती है।

इसके बहुत कम मानसिक लक्षण हैं। "असुखकर बातोंको ही सोचा करता है। यदि वह किसीको कुरूप हो जाते देखता है, तो उसके भयसे काँप उठता है।" पर्यायक्रमसे बहुत देरतक जागना और फिर बहुत देरतक गहरी नींद। जागरण कालमें, रातके समय वह उन सभी असुखकर विषयोंमें लगा रहता है, जिन्हें वह सोच सकता है। यह अवस्था इक्कीतक घोर निद्रामें परिवर्त्तित हो जाती है और उसकी पेशाबकी दशा ज्यों ज्यों घटती-बढ़ती है, त्यों-त्यों यह घटता-बढ़ता है। "उदासी।" "पसीना होनेके समय चिन्ता।" "बच्चा चिड़चिड़ा रहता है।"

बहुत तरहके सर-दर्द होते हैं। ये प्रकृतिमें पेशाब-सम्बन्धी होते हैं तथा बहुतसे स्थानोंमें अनेक विवरणोंके साथ उत्पन्न होते हैं। "लघुमस्तिष्क या

पश्चात् मस्तिष्कमें भयङ्कर दर्द।" "मस्तकमें वातज दर्द।" यह सुवर्णित है क्योंकि मूत्रक्षार-विकारकी प्रकृतिके सर-दर्द, वातज दर्दके उद्गम ही होते हैं। "यहां तथा हृदयावाले यन्त्रोंके प्रदेशमें दर्द और गर्मी।" "मूर्द्धा-देशमें फाड़नेकी तरह दर्द।" बहुत तरहका सर-दर्द होता है। यह दवा पश्चात् मस्तिष्कमें, धीमें, यन्त्रणादायक दर्दसे भरी है, यह ऋतु-परिवर्त्तनके कारण रातमें पैदा होता है। सन्धियोंमें कुछ टेराक दर्द होनेके बाद मस्तिष्कके तल-देशमें दर्द स्थिर हो जाता है और रोगीको बहुत थोड़ा पेशाब होता है। जितनी ही बार उसे सर्दी लगती है, प्रत्येक बार पेशाबकी मात्रा घट जाती है और उसे सबमें और खासकर पश्चात् मस्तिष्कमें धीमा यन्त्रणादायक दर्द होता है।

गन्धका गड़बड़ा जाना। "गन्धकी अनुभूति घटी हुई।" "नाककी अस्थिमें दर्द।"

इस दवामें एक दूसरे प्रकारके रूप परिवर्त्तनका दृश्य दिखाई देता है। जब शरीरके गठियाके सभी लक्षण रुक जाते हैं तथा जीभमें प्रदाह हो जाता है सर्दी लगकर या तूफानी हवा लगकर सन्धियोंका दर्द एकाएक रुक जाता है और एकाएक जीभ फूल जाती है। मर्क्युरियसमें भी यह अवस्था है। "गहरी फटी-फटी या छत्रकाकार (Fungoid) पटलके साथ जीभपर बहुत ज्यादा घाव" और इसी कारणसे विचित्र ढङ्गके गल-क्षत उत्पन्न होते हैं। एकाएक पेशाब रुक जाना या उसकी मात्राका घट जाना, पेशाब थोड़ा होने लगता है, रङ्ग गहरा हो जाता है, बदबूदार हो जाता है और घोड़ेके पेशाबकी तरह उसमेंसे गन्ध आती है (नाइट्रिक एसिड)। इसके साथ ही तालुमूल या कण्ठमें नया प्रदाह और सूजन रहती है। थोड़ा कड़ा तथा घोड़ेके पेशाबकी तरह बदबूदार पेशाबके साथ तालुमूलका प्रदाह। इसका दूसरा स्वरूप ठीक रोगका स्थान परिवर्त्तनके रूपमें दिखाई देता है। मान लीजिये, कि जिसको सन्धियोंमें कुछ-न कुछ वातका दर्द है, उसे सर्दी लग जाती है और यह सब बन्द हो जाता है, पर दूसरे ही दिन या तो उसकी जीभमें प्रदाह या गलक्षत हो जाता है या पाकाशयका प्रदाह हो जाता है, जिसमें कि जो कुछ यह खाता है, वह सब वमन हो जाता है। गठिया भिन्न-भिन्न अंगोंमें चला जाता है और इस अवसरपर यह पाकाशयमें चला जाता है और

कि किस ढङ्गके रोगीके लिये वेञ्जोयिक एसिडकी जरूरत होती है। वातके लक्षणके साथ हृद्पिण्डके लक्षण श्वास-कष्ट, हृद्पिण्डमें दर्द। इस दवाकी प्रकृति तुरन्त ध्यानमें आ जाती है। "सो नहीं सकता।" अनिद्रा और नींदका पर्यायक्रमसे होना सोचिये, कड़े पेशाब, घटने-बढ़नेवाले उपसर्ग और भ्रमणशील धातुपर विचार कीजिये। "रातमें कलेजेकी धड़कन बदतर हो जाती है।" "हाथ-पैरका वातज दर्द, जिसके होनेपर हृद्पिण्डको आराम पहुँचता है।" यहाँ हमें आराम मिलता है हाथ-पैरोंमें रोग हो जानेपर हृत्पिण्डको आराम मिलेगा। बहुत ज्यादा पेशाब होनेपर या हाथ-पैरोंमें, अंगुलियां और घुटने में, खासकर वेञ्जोयिक एसिडमें, घुटनोंमें वात हो जानेपर हृत्पिण्डको आराम पहुँचेगा। हाथ-पैरोंमें और हृत्पिण्डमें पर्यायक्रमसे वात, जब हाथ-पैरोंका वात बहुत दिन हुए छोड़ गया है और तबसे ही हृत्पिण्डकी तकलीफ़ हो गयी है, तो इस दवाने हृत्पिण्डके रोग आरोग्य कर दिये हैं। वेञ्जोयिक एसिडका प्रयोग होनेपर इसकी क्रियाका सर्वोत्तम चिन्ह यह प्राप्त होता है, कि हाथ-पैरोंमें दर्द होने लगता है और पेशाब ज्यादा होने लगता है। खुलासा पेशाब और उसका तलछट बढ़ जाता है, पेशाब भारी हो जाता है, पहले यह हलका होता था। 'कड़ी और तेज़ नाड़ी।"

हाथ-पैर वातज रोगोंसे भरे रहते हैं। "निम्न-प्रत्यङ्गोंमें आलस्य।" "घुटनेका फूलना", सब तरहके गठियाके उपसर्ग इस दवामें है। "गठियाका पिण्ड (Concretions)", "सन्धियोंमें सन्धियां गुल्म (Nodes) पुरानी गठियावाली धातु-प्रकृतिकी वेञ्जोयिक एसिड अकसर सर्वश्रेष्ठ उपशामक दवा होती है। रोगी चाहते हैं, कि उनके अंगुलियोंका दर्द तथा अस्थि-गुल्म और सन्धियोंका दर्द आराम रहे। अंगुलियां फटती है टेढ़ी-मेढ़ी और दर्द-भरी रहती हैं, पर अकसर दर्द छूट जाता है और दूसरे भागमें चला जाता है। यह उन दवाओंमेंसे एक है, जो भीतरी यन्त्रोंसे रोगको खींचकर बाहर निकाल देती है तथा साधारणतः हाथ पैरोंके दर्दको बढ़ा देती है, जिसकी, इसके रोगी शिकायत किया करते हैं। "हृत्पिण्डका कांपना और धड़कना।" बहुत ज्यादा कमजोरी।" "पसीना और विह्वल अचेतन अवस्था (Comatose condition)।" ध्यान दीजिये,—पसीनेके साथ अचेतनवाली अवस्था, वेञ्जोयिक एसिडके रोगीको बिना किसी तरहका आराम पहुँचे पसीना हुआ करता है। बहुत ज्यादा क्लान्त कर देनेवाला पसीना और गहरी नींद, पर

इनसे भी आराम नहीं पहुँचता। "श्वास-कष्टके साथ जागता है।" सब जगह स्पन्दन अनुभव होता है।

"सब तरहकी श्लैष्मिक झिल्लीकी प्रदाहवाली अवस्था, गठिया धातु-दोष, ग्रन्थि वात सम्बन्धी अस्थि गुल्म (Arthritic nodosites) के साथ गठिया, उपदंशज वात प्रभृति।" जीवन यात्रामें ये रोगी दबते हो जाते हैं, तन्तु सब कमजोर हो पड़ते हैं। श्लैष्मिक झिल्ली तथा चर्मपर जलन होती है।

बार्बेरिस।

(Berberis)

जब हम बार्बेरिसका अध्ययन समाप्त करेंगे, तो देखेंगे, कि यह कोई बहुव्यापक औषधि नहीं है, पर है यह एक बहुत ही जरूरी औषधि। बेञ्जोयिक एसिडकी भांति यह गठिया तथा वातज रोगोंमें उपयुक्त होती है। यह उन गठियाकी दशाओंके लिये उपयोगी है, जो अपने योग्य स्थानपर नहीं रहतीं। सम्पूर्ण स्वास्थ्य विधान बहुत निम्न अवस्थापर रहता है, कमजोर प्रकृति रहती है, पीला और दुबला, वृद्ध और भग्न-स्वास्थ्य, असमयमें ही वृद्ध और झुर्री-भरे मनुष्य तथा स्त्रियोंके लिये यह उपयोगी है। वे इतने कमजोर रहते हैं, कि गठियाका तलछट अंगुलियोंके जोड़ोंमें नहीं रोक रख सकते, जहां स्वाभाविक रूपसे उन्हें रहना चाहिये और पहले ही की तरह तकलीफ समूचे शरीरमें चक्कर लगाया करती है। स्नायुओंमें तथा स्नायु पर्वोंमें भ्रमणकारी दर्द। बार्बेरिसका इधर उधर घूमनेवाला, सुई गड़नेकी तरह, फाड़नेकी तरह और ऐंठनकी तरह दर्द, पुरानी गठियाकी प्रकृतिवाले व्यक्तियोंमें ही पाया जाता है और ऐसे ही स्थानोंपर बार्बेरिस सबसे ज्यादा फायदा करता दिखाई देता है। इसकी परीक्षाके परिणामसे हमें पता लगेगा, कि पुरानी गठियाकी प्रकृतिवालोंके तथा उन व्यक्तियोंके जो पीले, रोगी, सर्दीले तथा जिनकी सन्धियोंमें खूब तलछट जमता है, उनके भ्रमणकारी और ऐंठनके तथा फाड़नेकी तरह दर्दके यह सदृश है। लेकिन उसके सदृश नहीं है, जहाँ अंगुलियोंकी तथा अंगूठेकी ऐंठन बनी रहती हैं, जैसी तलछट (Deposit)

रहनेपर होती है। इसमें सन्देह नहीं, कि सब तरहके गठियाकी दशाओंके लिये, दर्द तथा अन्य कष्टोंके लिये हमें यकृत और गुर्दों पर ध्यान देना चाहिये। ये ध्यान देनेके केन्द्र हैं, क्योंकि ये ही यन्त्र कुछ-न-कुछ विश्रृङ्खलित हो जाते हैं और अकसर हृत्पिण्डकी बीमारियाँ इनके साथ लगी रहती हैं। गुर्दे, यकृत और हृद्पिण्डकी क्रिया कुछ-न-कुछ विश्रृङ्खलित हो जाती है और हम देखते हैं, कि बार्बेरिस इन यन्त्रोंपर ही अपना प्रभाव जमाता है। हमें मूत्र-क्षार-विकारकी अवस्था प्राप्त होती है और विश्रृङ्खलताकी वह दशा मिलती है, जिनका अन्त इसी अवस्थामें आकर होता है। गुर्देकी गड़बड़ोके साथ हमें ऐंठनकी तरह दर्द मिलेगा।

पेशाबकी अनियमितता। बहुत ज्यादा पेशाब और पर्यायक्रमसे थोड़ा पेशाब। हलका पेशाब, भारी पेशाब, मूत्राम्ल तथा मूत्राम्ल लवणका बहुत ज्यादा तलछट। यह भी **बेञ्जोयिक एसिड**की तरह परिवर्त्तनशील होता है। ये दोनों दवाएँ बहुत मिलती-जुलती हैं, तथापि इनके लक्षण सर्वथा भिन्न हैं। इनमें हमें यह अनुभूति प्राप्त होती है, कि प्रायः समस्त शरीरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द प्राप्त होता है और ये सभी समय बदला करते हैं। इधर-उधर घूमनेवाला और सुई गड़नेकी तरह दर्द, छोटी ऐंठनें। आप गठियाके रोगीको बगलमें बैठ जाये और उससे बातें करें—वह कहेगा—"ओह!" इससे उसका क्या मतलब है? उसको उन ऐंठनके दर्दों मेंसे एक हो गया। दूसरी बात वह यह जानता है, कि यह उसके घुटनेमें है, फिर यह अंगूठेमें है, फिर यह उसके सरमें और उसके समूचे अङ्गमें है। अन्तमें गठियाका तलछट अंगुलियोंमें प्रधानतः जम जाता है और गठियाके जड़ जमा लेनेके बाद अंगुलियोंमें यन्त्रणा होती है, पर ये विशेषकर **लीडम** और **सलफर, इस्कुलस** और **लाइकोपोडियम**से मिलते हैं, जिसमें कि रोग स्पष्ट रहता है और सन्धियोंमें स्थान बना लेता है। बार्बेरिसमें ये ऐंठन, फाड़नेकी तरह, सुई गड़नेकी तरह या जलनका दर्द सर्वत्र ही रहता है। यह कभी एक स्थानमें नहीं रहता है, बल्कि हमेशा हटता रहता है और इनपर हिलने-डोलनेका प्रभाव अकसर नहीं पहुँचता है। वह हिलता-डोलता रहे या चुपचाप बैठा रहे, दर्द हुआ ही करता है। कुछ अवसरोंपर हिलने-डोलनेसे दर्द बढ़ता भी है, पर बार्बेरिसके बहुत-से दर्दों की तुलनामें बहुत कम। वह

कितनी ही बार इधर-उधर हटता है, क्योंकि वह चुपचाप बैठा नहीं रह सकता, वह इधर-उधर इसलिये हटता है, कि उसे कष्ट होता है। इसमें बहुतसे दबावके भी दर्द हैं, पर जलनकी तरह, डङ्क मारनेकी तरह, फाड़नेकी तरह, सुई गड़नेकी तरह भ्रमणकारी वेदना बार्बेरिसका एक बहुत बड़ा स्वरूप है। यदि आप उन्हें कई स्थानोंमें, किसी खास सन्धिमें ही रखें, तो उसी सन्धिसे वे सभी दिशाओंमें अपनी लहरें फेकेंगे। यदि वह घुटनेकी सन्धि है, तो दर्द ऊपर चढ़ेगा, नीचे उतरेगा और सब तरफ जायगा। यदि अगुलीकी सन्धिमें है, तो वहाँसे सभी दिशाओंमें जायगा। यदि यह गुर्दोंमें है, तो वहाँसे मूत्र पथमें आयगा। यदि यकृतमें है तो तलपेटमें हर दिशामें जायगा। "किसी खास जगहसे लहर फेकना" इसका एक प्रभेदक रूप है और केवल बार्बेरिसमें ही यह विकीर्णकार दर्द (Radiating pains) होता है। यह एक ऐसा जबर्दस्त स्वरूप है, कि बहुत से अवसरोंपर बार्बेरिसने दर्द गुर्दों—मूत्र पथरो-शूल (Renal colic) आरोग्य किया है, क्योंकि इसमें यह शक्ति है, कि सभी दिशाओंमें आघात कर सकता है। यह पित्त-पथरीका शूल (Gall-stone-colic) को भी आरोग्य करता है, जब उस स्थानसे ये छोटी ऐंठने चारों ओर बिखरती हैं। हम देखते हैं, कि गठियाकी धातुवालोंमें ये ऐंठन और खोंचा मारनेकी तरह दर्द पेशाबकी तकलीफों तथा यकृतके उपसर्गों के साथ सम्मिलित रहते हैं और यही हम बार्बेरिसकी अध्ययनकी एक नीव डालना आरम्भ करते हैं।

कभी-कभी सन्धियोंमें सूजन हो जाती है। "सन्धियोंकी विवृद्धि," पर सूजन इतनी प्रचलित नहीं है, जितनी बिना सूजनके ही दर्द। यन्त्रणा। सन्धियोंमें खञ्जता इन विकीर्णित दर्दों के साथ। जलन, सुई गड़नेकी तरह, फाड़नेकी तरह दर्द होगा और दर्द विकीर्ण होगा तथा कभी शरीरके एक अंगमें होगा और फिर दूसरेमें। "एँड़ीमें ऐसा दर्द, मानो जखम हो रहा है" और फिर यह दर्द चारों तरफ फैलता है। सुन्नपन, खञ्जता।

हृत्पिण्डके सम्बन्धमें, नाड़ी धीमी पड़ जाती है। बहुत बार तो आश्चर्य-जनक रूपसे धीमी पड़ जाती है।

इसके मानसिक लक्षण बहुत ही दोषावह होते हैं अर्थात् हम मानसिक लक्षण नहीं जानते। ये बहुत कम हैं। हम यह जानते हैं, कि मन दुर्बल रहता है, वह मानसिक परिश्रम सहन नहीं कर सकता और इसका रोगी

भुलक्कड़ रहता है। 'दोषावह याददाश्त और कमजोर स्मरण शक्ति, चन्द्रमाकी रोशनीमें भयावने विचार पैदा होना।" किसी बच्चेको अन्धकारमें सब तरहकी चीजोंका भ्रम होना, कोई विचित्र बात नहीं है, क्योंकि श्मशानकी कहानियाँ उन्होंने वृद्ध पुरुषोंसे सुनी है। पर इस दवामें, रोगी दिनकी रोशनी और अन्धकारके बीचमें भूत, प्रेत तथा कल्पित मूर्त्तियाँ अपने चारों ओर देखता है। इसमें मनकी सुस्ती, उदासीनता और वैराग्यका भाव रहता है। थोड़ा-सा सरका चक्कर। मूत्र-विकारवाले रोगियोंको, जिनके पेशाबमें बहुत बालू निकलता है, लाल तली जमती है, वैसे ही पेशाबके विकारवाले रोगियोंको जैसा सर-दर्द होता है, वैसा ही दर्द इसमें भी होता है। माथेको भी इन भ्रमणकारी वेदनाओंका कुछ साझा ग्रहण करना पड़ता है। खोपड़ीमें, करोटीमें, आँखमें, कानमें, माथेके पिछले भागमें, सुई गड़ने, फाड़ने या ऐंठनकी तरह दर्द। जलनकी तरह दर्द। "माथेमें एक ऐसी अनुभूति होना, कि यह बड़ा होता जा रहा है।—यह एक अद्भुत लक्षण है, एक सूजनकी भाँति अनुभूति। रोगी हमेशा अपने माथेपर हाथ रखता है। ऐसा मालूम होता है, कि करोटीको टोपी पहने हुए है। यह भौंवोंपर कसकर बैठ जाती है। इसलिये, ऐसे रोगियोंका उस टोपीको उतार लेनेके लिये माथेपर हाथ रखना कोई असाधारण बात नहीं है। "ऐसा अनुभव करता है, मानो टोपी पहने हुए है।" जब कि वहाँ कुछ भी नहीं रहता। यह लक्षण हमेशा माथेमें टोपीको तरह नहीं वर्णित हुआ है, यह खोपड़ीके सुन्नपनमें बदल जानेवाला है। बहुतसे रोगी माथेमें सुन्नपनकी अनुभूति बताते हैं, मानो माथेमें वे एक टोपी पहने हुए हैं। कभी-कभी तो रोगी इससे इनकार कर जायेंगे, कि यह सुन्नपनकी अनुभूति है और कहेंगे, कि यह ठीक एक टोपीकी तरह है। एक बार मैंने पूरी तरह विश्वास कर लिया कि इन दोनों अनुभूतियोंमें "टोपी" है। यदि इसमें दर्द रहता, तो मैं इसे दबावके अन्तर्गत रख देता था, यदि दर्द नहीं रहता तो "सुन्नपन" मान लिया जाता था, पर मैंने—एक नयी व्यवस्था बनायी है। "खोपड़ीकी टोपीकी अनुभूति", जो अब मैं समझता हूँ, कि सुन्नपनसे एकदम प्रभेद-प्रकाशक है, पर इन दोनोंकी ही तुलना करनी चाहिये।

फिर आँखोंमें भी वही गठियाकी दशा हो जाती है और सुई गड़नेकी तरह दर्द, ऐंठनका दर्द और खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है। कितनी ही

दिशाओंमें यह धक्का देनेकी तरह दर्द हुआ करता है। बार्बेरिसका एक बहुत ही बड़ा स्वरूप यह है, कि इसमें किसी खास दिशामें दर्दका दौरा नहीं होता, बल्कि सभी दिशाओंमें होता है। बहुत-सी दवाएँ ऐसी हैं, जिसमें दर्द एक दिशाकी ओर एक भागसे दूसरे भागपर होता है। दर्द आँखसे कनपटीमें जाता है प्रभृति, परन्तु बार्बेरिसमें यह नहीं कहा जा सकता, कि दर्द किसी विशेष दिशाको ओर जाता है। यह भ्रमणकारी वेदना होती है और इधर-उधर विकीर्ण होती है। कानमें भी इसी प्रकृतिका दर्द। शरीरके सभी भागोंमें यही ऐंठन, फाड़नेकी तरह, जलनकी तरह, खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है, जिससे रोगीको कराहना और तेज़ आवाज़से चीखना पड़ता है।

रोगीका चेहरा बीमारकी तरह रहता है। चेहरा पीला, मिट्टीकी तरह चेहरा, गाल धँसे हुए और खोखले, आँखके चारों ओर नीला घेरा। रोगी चेहरेका यही एक वर्णन है। यक्ष्मावाली अवस्थाओंमें बार्बेरिस बहुत लाभदायक होता है और जिनके भगन्दरमें नश्तर लगा है (Operated on for fistula in ano), उनके दर्द, ऐंठन और तकलीफोंमें। भगन्दरके बन्द हो जानेपर यह दर्द आ जाये, तो यह बार्बेरिसका रोगी है। गुर्देकी बीमारी पैदा हो जायगी अथवा यकृत या हृत्पिण्ड कमजोर हो जायगा या ये भ्रमणकारी दर्द पैदा हो जायें गे। एक बार हरारत हो जाती है, रोगी दर्दसे भर जाता है, साथ ही तेज़ प्यास रहती है, यह ठीक विपरीत अवस्थामें पर्यायक्रमसे हुआ करता है। सुस्ती और पानी पीनेकी इच्छा न होना। एक बार भूख रहती है, दूसरे बार अत्यधिक भूख, पेट गड़बड़ाया रहता है, पाचन धीमा और कमजोर रहता है और इमलोगोंको ऐसे लक्षण मिलते हैं जिसे "पित्तज" रोगी कहते हैं। पित्तके और तीते डकार आते हैं।

यकृत तकलीफोंसे भरा रहता है। यकृतमें इसी ढङ्गका दर्द होता है और इसके साथ ही एकाएक छुरा मारनेकी तरह, मानो यकृतमें छुरी भोंक दी गयी है, ऐसा दर्द होता है। एक जगहसे दूसरी जगह घूमनेवाला, खोंचा मारने, फाड़ने, जलन करने, सुई वेधने या ऐंठनकी तरह दर्द। "पित्त-पथरीका शूल।" कामला रोगके साथ ये दर्द। यकृतकी क्रिया धीमी पड़ती मालूम होती है और रोगी कामला रोग-ग्रस्त हो जाता है। मल सफेद और पित्त-रहित हो जाता है। यकृतमें तेज़ चिकोटी काटनेकी तरह दर्द, यह

पिण्डको तकलीफोंके बाद, एक बदबूदार तीता स्वाद, कण्ठमें खून चढ़ आता है। "मूत्राशयकी ग्रीवामें दर्दके साथ जलन और थोड़े पेशाबके साथ, बहुत पेशाबका वेग होना। काटनेकी तरह प्रचण्ड, तनावका दर्द, यह मूत्राशयके दाहिनी ओर बद्धमूल रहता है, अन्तमें यह चिपक जानेवाला हो जाता है। स्त्री-मूत्रनलीमें तिर्यक-भावसे होता है, मानो यह उसे मुख-द्वारपर हो रहा है और कई मिनटोंतक हो रहता है।" अब हम यह देखते हैं, कि इन लक्षणोंका विकास किस तरह होता है। एक या दोनों ही गुर्दे दर्द-भरे, प्रदाहित, स्पर्श सहन न होनेवाले। इसके बाद गुर्देके क्षुद्र गह्वरोंमें छोटी-छोटी पथरियोंका पैदा होना—आल्पोनके माथेकी तरह छोटे-छोटे पत्थर और प्रत्येक बार रह-रहकर, उनमेंसे एक-एक उतरकर मूत्र-पथकी राहसे मूत्राशयमें जाता है और ओह! रोगीको कितनी तकलीफ़ होती है। फिर ऐसा होता है, कि गुर्देका दर्द हरएक दशामें वहांसे विकीर्णित होता है। दर्द ऊपर गुर्देके भीतर होता है और नीचे मूत्राशयमें। पुरुषोंमें तो ऐसा मालूम होता है, मानो वे नीचे उतरकर शुक्ररज्जुकी राहसे मुष्कमें चले जाते हैं और रोगीको बहुत ज्यादा तकलीफ होती है। आपको यह देखकर आश्चर्य होगा, कि बार्बेरिस किस तेज़ीसे इस ढङ्गका पित्त-पथरी शूल (Renal colic) आरोग्य कर देता है। मूत्राशयमें जलनकी तरह दर्द, मूत्रपिण्डमें जलनकी तरह दर्द। "पेशाब काला, गदला रहता है और उसमें बहुत ज्यादा तलछट जमता है, पेशाब बहुत धीमी धारमें होता है, लगातार पेशाबका वेग होता रहता है।" मूत्राशय बहुत उपदाहित हो जाता है। मूत्राशयकी सर्दीकी अवस्था। खोंचा मारने, जलने और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। शुक्ररज्जुमें तथा गठिया प्रकृतिवालोंके वातमें बहुत-सी तकलीफें, दर्द और अनवरत यन्त्रणा। इन प्रदेशोंमें जलनका दर्द।

गठियाकी प्रकृतिवाली उस स्त्रीके लिये बार्बेरिस खासकर उपयोगी है, जो क्लान्त हो पड़ी है, यद्यपि उसकी उमर ज्यादा नहीं है, पर उसका शरीर क्लान्त हो पड़ा है, इतना कि उसके सभी घरेलू काम उसे कष्टकर मालूम होते और क्लान्त बना देते हैं। उसे सङ्गम-कालमें दर्द होता है और पुरुष-सङ्गकी इच्छा नहीं होती। कामोत्तेजन या तो देरसे होता है या होता ही नहीं है और इससे उसे अवसन्नता आ जाती है। अपने आन्तरिक जीवनके सभी कामोंमें वह अति परिश्रमी रहती है, उसके सभी स्नायुओंमें ऐंठनका

दर्द होता है। "स्त्री-मूत्रनलीमें जलन, योनि पथमें जलनका दर्द।" स्त्रीके इन अङ्गोंको स्वाभाविक सनसनीका न रहना।

बोरैक्स।

(Borax)

बोरैक्स उन घरेलू दवाओंमें है, जो स्थानिक रोगोंके लिये घाव भरने और शान्त करनेवाले पदार्थके रूपमें बहुत दिनोंसे व्यवहृत हो रहा है। दूध पिलानेके समय माता या बच्चेके मुँहमें घाव होनेपर पुराने परिवारोंमें शहदमें मिलाकर धोवनके रूपमें व्यवहृत होता आ रहा है। इसका जो अत्यधिक व्यवहार होता है, उसे देखकर होमियोपैथोंको आश्चर्य होगा। यदि मनुष्य किसी चीज़का उद्भावन न किये होते और यह एक सत्य बात है, कि बोरैक्ससे मुँहका घाव भर जायगा। इसका ऐसा कहना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि बोरैक्स अपने परीक्षा कालमें मुँहके छालेकी अवस्था प्रकट करता है, जो कण्ठ, यहाँतक कि पाकाशयतक फैल जाता है। जहाँ जननेन्द्रिय और मलद्वारतक छालोंसे भर जाता है, उसको भी यह आरोग्य करता है।

बोरैक्समें चिन्ता, घबड़ाहट और स्पर्श-असहिष्णुताकी ही प्रधानता है। छोटी-छोटी बातोंपर इसका रोगी चिन्तित हो पड़ता है। हरेक आवाज़पर अचिन्तित समाचारपर, सङ्गीतसे तथा उत्तेजनासे चौंक पड़ता है। यह घबड़ाहट और स्नायविकता, यह अवर्णनीय भाव जो उसके भीतर है, यह ऊपरकी ओरकी अथवा नीचेकी ओरकी गतिसे बढ़ जाता है। ऐसी गति कि ऊपर उठानेवाले यन्त्रके सहारे ऊपर चढ़नेपर करीब-करीब हतबुद्धि हो जाता है, पर नीचे जानेके समय उसकी हालत और भी खराब हो जाती है। उसके सभी उपसर्ग नीचेकी ओरकी गतिसे बढ़ जाते हैं। बँधी गतके चिकित्सामें कहा गया है, कि बच्चोंके मुँहके घावके सभी रोगियोंमें, जब बच्चोंकी बीमारी नीचेकी ओरकी गतिसे और भी बढ़ जाती है, तो बोरैक्स ही उसकी दवा है। जब माता बच्चेको पलङ्गपर सुलाने लगती है, तो वह अकसर नींदसे जाग उठता है और भयसे चिल्ला उठता है। इसकी घबड़ाहटका पता और भी

अच्छी तरह उस समय लग सकता है, कि आप किसी ऊँची इमारतके सबसे ऊँचे तल्लेपर चले जायें और फिर एलिवेटरसे नीचे उतरें। सबके लिये ही यह बिलकुल स्वाभाविक है। उसकी तेज़ गतिके कारण, पाकाशयमें एक घबड़ाहटका भाव,—गिरनेका एक भाव अनुभव हो। यह स्वस्थ मनुष्यके लिये भी स्वाभाविक है, पर यदि आप उसको बहुत ही ज्यादा अनुभव करें, तो आपमें बोरैक्सकी अवस्था है, जिसमें थोड़ी-सी भी नीचेकी ओरकी गति अथवा किसी पहाड़ीसे नीचे उतरना या सीढ़ीसे उतरना या बच्चोंमें, माताकी गोदमें रहकर ही नीचे उतरना, एक प्रचण्ड रोग-वृद्धि उत्पन्न कर देता है। सभी स्नायु नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

हम देखते हैं, कि बोरैक्समें समस्त शरीरमें बहुत बढ़ी हुई कार्यशीलता रहती है, उसकी सभी इन्द्रियाँ अति तीव्र हो जाती है। उसकी श्रवण-शक्ति बढ़ जाती है, अपने चारों ओरकी परिस्थितिका उसे बहुत अधिक अनुभव होता और वह अतिरिक्त चिन्तित रहता है। उसमें बराबर एक उत्तेजनाशील भाव रहता है। पहाड़ीसे नीचे उतरनेपर सरमें चक्कर आता है। स्नायविक उत्तेजनापर, भय और आशङ्का। यह बोरैक्सका एक जबर्दस्त लक्षण है। इसमें ऐसे कितने ही लक्षण हैं, पर स्नायविक तत्व इसी ढङ्गके होते हैं। ज्यों-ज्यों इस दवापर विचार करते जायँगे, त्यों-त्यो बहुत-सी बातें आती जायँगी, पर यह इसकी मानसिक अवस्थाका प्रधान रूप कहा जा सकता है और यही बहुत कुछ बोरैक्सके रोगीके चुनावकी कुञ्जी है। "नीचेकी ओर गति या झुलानेपर घबड़ाहटका भाव।" यदि यह अवस्था रहे, तो अतिसार इससे आरोग्य हो जायगा। यदि यह अवस्था रहे, तो मुँहके छाले आरोग्य हो जायेंगे। वात, मासिक रज स्रावकी तकलीफें तथा अनेकानेक दूसरे-दूसरे उपसर्ग, यदि यह कुञ्जी तैयार है, तो बोरैक्सका प्रयोग करनेपर आरोग्य हो जायँगे।

इसमें हिस्टीरियाके प्रदर्शन भी है। "एक कामसे दूसरेपर बदल जाती है।" उसके समूचे शरीरमें बेचैनी, स्नायविकता, घबड़ाहट-पूर्ण और उत्तेजनाशील अवस्था रहती है। बच्चा खेलाने तथा ऊपर-नीचे कुदानेसे चीखता-चिल्लाता है। मस्तिष्ककी गति। ऊपर और नीचेकी ओर गति, जैसी कि डोलने, पालनेपर झूलने प्रभृतिके समय होती है, उसमें रोगी बेहोश-सा हो जाता है। उसे मुश्किलसे मालूम होता है, कि वह कहाँ है, चित्त-विभ्रम और सरमें

चक्कर उसे आने लगता है। यदि कोई बच्चेको झुलाता है, तो उसके चेहरेपर घबड़ाहट छा जाती है। 'तेजीसे पहाड़ीसे उतरनेके समय बहुत घबड़ाया।" "रातके ११ बजेतक घबड़ाहट बढ़ी रहती है।" घबड़ाहट बढ़नेका यह विचित्र समय मैंने बोरैक्समें लक्ष्य किया है। मैंने यह उन स्त्रियोंमें होते देखा है, जिन्हें उन्मादका बँधे समयपर दौरा होता है, जिनकी स्नायविक सनसनीकी और मानसिक दशा रातके ११ बजेतक बनी रहती है। कभी-कभी आप उन्मत्त पुरुषोंमें देखेंगे, कि ऐसा मालूम होता है मानो उनपर भूत सवार है और तुरन्त एक ऐसा विराम-काल आ पहुँचेगा, जब वे उस ढङ्गसे बातें करेंगे, मानो कुछ हुआ ही न था। ऐसा ही बोरैक्समें भी होता है। एक बहुत बड़ा परिवर्त्तन रातके ११ बजे हो सकता है, उसी समय घबड़ाहटकी यह दशा और स्नायविक उत्तेजना बन्द हो जायगी। "चिड़चिड़ापन, बदमिज़ाजी, आलसीकी" अवस्था तबतक बढ़ी रहती है, जबतक एक पाखाना नहीं हो जाता और पाखाना हो जानेपर आराम हो जाता है। "कोई घबड़ाहट-भरी चिल्लाहट सुनते ही वह चौंक पड़ता है।" कोई चिन्तित आवाज़ सुनते ही, कुर्सीसे कोई चीज़ जमीनपर गिरनेकी आवाज़ सुनकर या एकाएक दरवाजा खुल जानेपर वह चौंक पड़ता है। यह सब बोरैक्सकी प्रकृतिमें शामिल है। यदि आप बोरक्सकी अन्य **नेट्रमों**से तुलना करें, तो आपको स्नायविक उत्तेजनशीलतामें बहुत समानता प्राप्त होगी। **नेट्रम-कार्बोनिकम, नेट्रम-म्यूरियेटिकम**में आवाज़से रोग-वृद्धि, आवाज़का अत्यधिक अनुभव होना तथा स्नायुओंकी अत्यधिक उत्तेजना सभी **सोडियम** परिवारमें पाया जाता है। ये आश्चर्यजनक-रूपसे तीव्र मनुष्य होते हैं।

"अपने कामपर सोचनेमें उलझे रहनेके समय, बहुत मिचली।" बोरैक्सने कितनी ही बार इस ढङ्गकी तकलीफ आरोग्य कर दी है। मैंने इसे इस ढङ्गसे आते देखा है, किसी तरहकी भी चिन्तनासे उसे मिचली और उत्तेजना पैदा हो जाती है, उसे बाध्य होकर अपना काम छोड़कर कुछ देर आराम करना पड़ता है और फिर वह तबतक काम करता रहता है, जबतक उसका पेट नहीं बिगड़ जाता और इसीलिये फिर आराम करना पड़ता है। मानसिक परिश्रमसे, आवाज़से, उत्तेजनासे, नीचेकी ओर गतिसे रोग-वृद्धि, बोरैक्सका मानसिक दृश्य है।

ज्ञान-केन्द्रोंकी ओर भी परीक्षा करनेपर मालूम होता है,—"पहाड़ या सीढ़ीसे उतरनेके समय माथेमें भरापन और चक्कर आना।" यह भी उसी घबड़ाहटके भावका एक रूप है। इस दवामें बहुत अधिक शिरोघूर्णन है। कभी कभी तो लगातार सरमें चक्कर आया करता है, जो नीचेकी ओरकी गतिसे इतना अधिक बढ़ जाता है, कि उसे शान्त बैठ जाना पड़ता है और सब काम छोड़ देने पड़ते हैं। इसमें बहुत तरहका रक्त-सम्बन्धी सर-दर्द होता है। दबावकी तरह सर-दर्द तथा माथेमें बहुत ज्यादा गर्मी।

आँखके भी बहुत-से लक्षण हैं। "दानेदार पलकें।" "बरुनियाँ भीतर आँखकी तरफ घूम जाती है और आँखमें प्रदाह पैदा कर देती है। पलकोंके किनारेका भीतरकी ओर मुड़ जाना (Entropion)", पलकोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीका मोटा पड़ जाना तथा उनमें दाने हो जाना। सङ्कोचन, जखमका दाग और भीतरकी ओर खिंचना। "निचली पलकें एकदम भीतरकी ओर पलटी।" "पलकोंका खोलना कष्टकर।"

सोडियमके सभी नमकोंकी तरह, नाककी श्लैष्मिक-झिल्लीका पुराना प्रदाह रहता है। एक सर्दीकी अवस्था, जिसमें बहुत ज्यादा स्राव होता है और नाकमें पपड़ी जमती है। नाकका रुकना। सभी **नेट्रम** परिवारमें नाकमें यह सूखी खरोंट जमती है और नाकसे बहुत ज्यादा स्राव होता है। **नेट्रम-म्यूर**में प्रधानतः **सफेद** स्राव होता है और ऐसा ही बोरेक्समें भी होता है। **नेट्रम-सल्फ**का स्राव **पीला** होता है और ऐसा ही बोरेक्समें भी होता है। **नेट्रम-सल्फ**में नाकसे **पीला** स्राव निकलता है, यहाँतक, कि पीलापन लिये हरा। बोरेक्सके बारेमें भी कहा गया है, कि हरापन लिये इसका स्राव होता है, पर इसका चरित्रगत स्राव, जो इस दवाका साधारण रूप है, सफेद स्राव ही है।

बच्चेका चेहरा पीला रहता है या मिट्टीके रङ्गका। "बच्चोंके मुँहके चारों तरफ और कपालपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती हैं।" **नेट्रम-म्यूर**में विसर्पिकाकी तरह उद्भेद (Herpetic eruptions)। इसकी सभी ज्वरकी अवस्थाओंमें और जब रोगीको सर्दी लग जाती है, तो मुँहके चारों ओर फुन्सियाँ निकलती हैं। ऐसे अवसरपर कभी-कभी बोरेक्स भूल जानेमें आता है और **नेट्रम-म्यूर**पर ही ध्यान जाता है, क्योंकि यह और भी अच्छी तरह जानी

हुई दवा है। जब नेट्रमकी धातु-प्रकृति रहती है, तब यह मौजूद प्रभेद निर्णय करनेकी एक प्रणाली है कि नेट्रमोंमें कौन सा निर्देशित है, किसके लक्षण प्राप्त होते हैं।

"मुँह और जीभपर घाव।" "जीभ और गालके भीतरकी ओर छाले।" केवल यही बोरैक्सका निदर्शन नहीं है। यद्यपि बहुत सी दवाओंमें बोरैक्स ही एक है, जब मुँहमें ऐसे घाव हो जाते हैं, कि बच्चा स्तन-वृन्त या बोतलसे मुँह खींच लेता है। बहुत-से चिकित्सक केवल इसी लक्षणपर बोरैक्सका प्रयोग कर बैठते हैं, लेकिन धातुगत अवस्थाकी खोज करनी चाहिये, जिससे कि दवाके लिये प्रकृतिगत आधार प्राप्त हो। सल्फ्युरिक एसिड और भी ज्यादा निर्देशित रहता है। "जीभपर लाल छाले।" "कुछ पीनेपर वमन हो जाना।" इससे यह धारणा हो जाती है, कि यह छालोंवाली अवस्था अन्ननलीकी राहसे पाकाशयमें चली गयी है। पाकाशयके ऐसे कितने ही लक्षण वर्त्तमान रहते हैं, जो ऐसी ही अवस्थाके परिणाम होते हैं। "गालके भीतरकी श्लैष्मिक-झिल्ली बेतरह लाल हो जाती है।" मुँहका पकना, जैसा माताओं और बच्चोंको हो जाया करता है, बोरैक्ससे आरोग्य कर दिया जा सकता है। "प्रत्येक बारके भोजनके बाद पाकाशयमें आध्मानका तनाव," "लगातार वमन," खट्टी लारकी कै," पाकाशयके छालोंवाले बोरैक्सके रोगीके मुँहमें पानी भर आयगा, ओकाई और खाँसी आयगी, यही "पाकाशयिक खाँसी" कहलाती है। माताएँ कहती हैं —"यह पाकाशयिक खाँसी है, क्योंकि बच्चा इसके साथ मुँहमें जल भर लाता है और ओकता है। "दर्दके साथ पाकाशयिक खाँसी, यह प्लीहा प्रदेशमें फैल जाती है।"

बच्चोंको अकसर गर्मीके दिनोंकी बीमारियाँ हो जाया करती हैं जब उन्हें बोरैक्सकी जरूरत रहती है। उनके मलद्वारके चारों ओरके स्थानकी शकल सफेद जखमोंकी तरह हो जाती है। दिन-रात बहुत ज्यादा लसदार दस्त आते हैं, बच्चा दर्दनाक अवस्थामें रहता है, मुँहमें भी घाव भरा रहता है, बच्चा दुबला होता जाता है, अपना सर पीछे लटका देता है। "दस्त, बार-बार, कोमल, हल्के पीले और चिकने।' मलद्वारसे बहुत सा उबाले हुए स्टार्च (मांड़) की तरह बहता है, यह लक्षण बोरैक्स और आर्जेण्टम नाइ-

ट्रिकाममें है। मलनालीको भी ऐसी अवस्था पैदा हो जाती है, कि सङ्कोचन (Stricture) के साथ श्लैष्मिक-झिल्ली मोटी पड़ जाती है, मलनाली पतली होती जाती है, यहाँतक कि अन्तमें एक लम्बा पतला पाखाना, पेन्सिलसे ज्यादा मोटा नहीं होता। प्रादाहिक सङ्कोचन (Inflammatory stricture) बोरैक्ससे आरोग्य किया गया है।

इस अनुभवाधिक्यवाले बच्चोंमें, जब सर्दीकी अवस्था सार्वाङ्गिक रहती है, तो पेशाब होते समय इतनी जलन होती है, कि पहले वेगके साथ (जिससे बच्चेको मालूम हो जाता है, कि जल्द ही पेशाब होगा) वह चीख उठता है, पेशाबकी इच्छासे ही चीखता है। इसीका यह मतलब है,—जब वह कहता है—"पेशाब करनेके पहले बदतर।" यह बात नहीं है, कि पेशाब होनेके पहले मूत्र यन्त्रकी अवस्था खराब हो जाती है, पर बच्चा यह अनुभवकर चीखता चिल्लाता है, कि अब पेशाब करना होगा। "चिल्लाहटके बाद बार-बार पेशाब।" पेशाबमें जलन होती है और आप जान सकते हैं, कि बच्चेने चिल्लाना आरम्भ किया है। इसलिये, जल्द ही वह पेशाब करेगा। "मूत्रनलीके मुखपर घावकी तरह दर्द होता है, पेशाब करनेके बाद।" "एक बूंद पेशाब हुए बिना भी पेशाब करनेकी इच्छा।"

इस दवाने सूजाक आरोग्य किया है। जहाँ कहीं श्लैष्मिक-झिल्लियाँ हैं, वहीं आप घावके गड्ढेको आशा कर सकते हैं। **नेट्रम-म्यूर** और **नेट्रम-कार्ब**की तरह इसका एक दूसरा स्वरूप भी है। पुरुष और स्त्रियोंकी कामेच्छा यह हरण कर लेता है, यह रोगीको सुस्त बना देता है और इसीलिये, मन और काम-यन्त्र उदासीन अवस्थामें आ पड़ते हैं।

अब हम बोरैक्सके स्त्री-कामाङ्गके आश्चर्यमय लक्षणोंपर आते हैं। मासिक ऋतु-स्रावमें **झिल्ली** प्राप्त होती है। प्रचण्ड झिल्लीमय रज-शूल (Membranous dysmenorrhœa) बोरैक्स आरोग्य कर देता है, जब स्राव होनेके समय और पहले प्रचण्ड प्रसवकी तरह दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु ही योनि-पथसे बाहर निकल पड़ेगा। स्राव धीरे-धीरे आरम्भ होता है, पर वह प्रचण्ड दर्द जारी रहता है, जबतक कि झिल्ली नहीं निकल जाती। जब जरायुकी झिल्ली तलछटके रूपमें आती है, तो बोरैक्सको हमने आरोग्य करते देखा है। ऐसे रोगी निम्न मुखी गतिसे सहजमें ही चौंक पड़ते हैं, यह *झिल्लीमय कष्टरज में बोरैक्स आपका परिचायक लक्षण है।*

उसे नीचेकी ओरकी गतिसे तथा डोलने और हिलनेसे भय होता है। "ऋतु-कालमें, मस्तकमें टपक और कानमें सरसराहट।" "तलपेटमें चिकोटी काटने और पीसनेकी तरह दर्द।" इस शब्दसे ठीक-ठीक मतलब नहीं निकलता, क्योंकि यह दर्द प्रसव-वेदनाकी तरह "पाकाशयसे दर्द फैलता है। वंक्षणमें छुरी घुसा देनेकी तरह दर्द, यह या तो रज स्रावके समय या पहले हो सकता है। "क्लान्त, आधी रातके बाद पसीना होना।" पर याद रखिये, *ऐसी बातोंके साथ मानसिक अवस्था,* स्नायविक, उत्तेजनशील अवस्था रहनी ही चाहिये और तब बोरैक्स कष्टरज को आरोग्य कर देगा। बोरैक्सका दूसरा प्रशस्त लक्षण मैं अगले वाक्यमें बताता हूँ। "अण्डेके सफेद अंशकी तरह श्वेत-प्रदर।" इसमें अण्डलालीय श्वेत-प्रदरका लक्षण है, जो गर्म तरलकी तरह मालूम होता है और पैरोंतक चू पड़ता है। सफेद अण्डलालीय या *श्वेतसारीय प्रदरका स्राव।" "क्षयकर श्वेत-प्रदरका स्राव, जो दो सप्ताहतक* होता रहता है।" "प्रदरका स्राव श्लेष्माकी तरह सफेद, पर किसी तरहके उपसर्ग नहीं दिखाई देते।" अब इस कटु श्वेत-प्रदरके कारण मासिक रज स्रावकी अवस्थाके कारण, इस नकली झिल्लीके बनने और निकलनेके कारण, यदि स्त्री बन्ध्या हो जाये तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। ये सभी स्त्रियाँ बन्ध्या रहती हैं, जिनमें यह लक्षण रहते हैं और जब ये ही लक्षण बन्ध्यत्वके कारण थे, तो बोरैक्सने बन्ध्यत्व आरोग्य कर दिया है। बँधी गतसे काम करनेवाले सभी बन्ध्याओंको बोरैक्स देते हैं, उनकी दशापर विचार नहीं करते। जब बन्ध्यत्वके लिये कोई दवा दी जाये, तो उस **दशापर** अवश्य ध्यान देना चाहिये। जो दवामें विशेषता रहती है,—एक वैसी अवस्था जो वह दवा स्वस्थ शरीरपर उत्पन्न कर सकती है।

दूसरा स्वरूप। मैंने बहुत बार उस अवस्थामें बोरैक्सका प्रयोग किया है, जब माता बच्चेको स्तन-दूध न पिला सकती है। वह हमेशा कहा करती है, कि स्तनका दूध गाढ़ा और थोड़ा होता है। "दूध बहुत गाढ़ा रहता है और उसका स्वाद भी खराब रहता है।" दूधकी यह अवस्था माताको स्तन-दुग्ध पिलानेसे रोकती है। यह एक धातुगत अवस्था है और यदि गर्भावस्थाके आरम्भकालमें बोरैक्सका बोरैक्सकी रोगिनीको प्रयोग किया जाता है, तो वह रोगिनीका दूध ऐसा बदल देगा तथा रोगिनीके धातुको ही ऐसा परिवर्त्तित कर देगा, कि माता बच्चेका मजेमें परिपोषण कर सकेगी। मैंने कितनी ही

बार, जब किसी माताको कई बच्चे हो चुके हैं और वह उनको स्तन्य नहीं पिला सकती, बोरैक्स दिया है और इसने उनपर इतना अच्छा प्रभाव डाला है, कि वह अगली सन्तानका मजेमें परिपोषण कर सकी है। इस दवामें यह लक्षण भी है, कि बच्चे स्तनका दूध नहीं पीना चाहते, यह इस वजहसे कि दूधका स्वाद बिगड़ा रहता है, न कि बच्चेमें किसी तरहकी गड़बड़ी रहती है। आप बच्चेको दवा देनेका विचार कर सकते हैं, पर आप यदि रोगीको परीक्षा करें, तो आपको यह पता लग जायगा, कि बच्चा इसीलिये दूध नहीं पीता, कि वह छुण्ण हो रहा है। माताको एक खुराक बोरक्सकी जरूरत है, जो बच्चेका अतिसार और यह स्तनके दूधकी छुणा भी दूर कर देगा। "बच्चा पीला हो जाता है, करीब-करीब मिट्टीके रङ्गका।" "बच्चा अपना हाथ फेंकता है, जब-जब उसे नीचा रखनेकी चेष्टा की जाती है।" यदि माता बोरैक्सके लक्षणवाली है, तो बच्चा भी अवश्य ही बोरैक्सके लक्षणवाला होगा। माता और बच्चा दोनोंको ही एक ही दवाकी जरूरत होना कोई असाधारण बात नहीं है। बहुत बार मैंने माताके दूधसे ही बच्चेको आरोग्य किया है, जब दोनोंको एक ही दवाकी जरूरत थी। इसका एक विचित्र स्वरूप है, कि जब बच्चा दूध पीता रहता है, तो **विपरीत ओरके स्तनमें दर्द** होता है। केवल सूतिकावस्थामें ही बोरैक्सकी जरूरत नहीं पड़ती, बल्कि जीवनकी सभी दशाओंमें स्नायविक स्त्रियोंपर इसका व्यवहार हो सकता है।

इसने प्लुरिसी (फुसफुसावरक झिल्ली प्रदाह) आरोग्य कर दिया है, जो **ब्रायोनिया**की तरह था, खासकर **ब्रायोनिया**की तरह दाहिनी ओर था। बाहरसे भीतरकी ओर सुई गड़ने या खोंचा मारनेकी तरह दर्द, मानो यह दर्द सामनेकी ओर दाहिने फेफड़ेके ऊपरी भागमें हो रहा है। सुई गड़नेकी तरह दर्द देखकर आपका खयाल **ब्रायोनिया**पर जा सकता है।

"झूला, झुर्री-भरा चमड़ा।" "चमड़ा पीला या बदरङ्ग।" क्षीण, मोटा थलथुला बच्चा दुबला हो जाता है। इस मुँहके घाववाली अवस्थाके साथ-ही-साथ बच्चे सुखण्डी रोगकी तरह क्षीण हो जाते हैं; वे पचा नहीं सकते, उन्हें या तो कै होती है या पतले दस्त आते हैं। घावोंवाली अवस्था जो सम्पूर्ण आँतोंतक फैल जाती है, सभी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ इससे आक्रान्त हो पड़ती हैं। अत्यधिक स्पर्श-कातर बच्चा, नीचेकी ओरकी गतिसे चिल्लाता है।

इस मुँहके घावके साथ बहुत-से लक्षण उत्पन्न होते हैं। पेशाबके पहले चिल्लाना, क्योंकि मूत्राशय आक्रान्त हो जाता है। मुँहके घावोंवाली अवस्था तथा निम्न-गामी गतिसे भय, आमाशयका अत्यधिक अनुभव होना, सहजमें ही चौंक पड़ता है, घबड़ाकर भोजन प्रभृति, इसके अत्यन्त निर्देशक और चरित्रगत लक्षण हैं।

ब्रोमियम।

(Bromium)

ब्रोमियम बँधी गतसे काम करनेवाली दवाओंमेंसे एक है। यह एक ऐसी दवा है, जिसका नवीन चिकित्सक डिफ्थीरिया (झिल्लीक प्रदाह) और क्रूप (कान्ही खाँसी) तथा स्वर-यन्त्र प्रदाहके जितने रोगी मिलते हैं, सबपर ही प्रयोग करेंगे और जब इससे फायदा न होगा, तब "दूसरी दवाकी तलाश करेंगे।" रोगके नामके अनुसार जो दवा देते हैं, वे ब्रोमियमको अपनी बँधी दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं, पर ब्रोमियमका इतना कम निर्देश पाया जाता है, कि अधिकांश होमियोपैथ वृथाकी दवाके रूपमें इसका व्यवहार करते हैं। इसका कारण यह है, कि वे रोगीका सम्पूर्ण लक्षण ग्रहण नहीं करते और व्यक्तिगत तरीकेसे औषधिका व्यवहार कर देते हैं। वे **रोगी**के लिये दवा नहीं देते, बल्कि **रोग**के लिये। डिफ्थीरियाके ऐसे बहुत कम रोगी मिलेंगे, जिन्हें ब्रोमियमकी जरूरत रहती है। जब आपको ब्रोमियमका रोगी मिलता है, तब आप ब्रोमियमको जानना चाहते हैं। ब्रोमियमकी अवस्थाका एक छिपा स्वरूप है,—गर्म होनेपर बीमार हो जाते हैं। यदि डिफ्थीरिया बहुव्यापक रूपसे फैला हुआ है और माता अपने बच्चेको इस तरह कपड़ेसे ढँके रहती है, कि वह बहुत गरम हो जाता है और उसे गर्म कमरेमें रखती है और यदि बच्चा ऐसा रहता है, जिसे कपड़ा लपेटे रहना सहन नहीं होता और जिसकी बीमारी बहुत वस्त्र पहने रहनेपर बढ़ जाती है, तो उसे ध्यानसे देखिये। आपके सामने यह ब्रोमियमका रोगी है। गर्मीमें दिनभरकी कड़ी गर्मीके बाद रातके समय जो बीमारियाँ हो जाती हैं, उसको भी यह निर्देशित औषधि है।

अब आप क्रूप और डिफ्थीरियाकी बँधी गरमकी दवाके बहुत पास पहुँच जाते हैं। यदि माता अपने बच्चेको भयङ्कर सर्दीमें बाहर छोड़ देती हैं, सूखे दिनोंमें और आधी रातके समय वह क्रूप रोगके साथ जाग उठता है, तो आप जानते हैं, कि इसे किसी दूसरी दवाकी अपेक्षा **एकोनाइट**की ही विशेष जरूरत है, पर यदि माता गर्मीकी ऋतुमें गर्म दिनोंमें बच्चेको लेकर बाहर निकलती है और बच्चा बहुत गरमा गया है, बहुत अधिक कपड़ा पहना रहनेके कारण और यदि वह रक्त-पूर्ण बालक है और आपको आधी रातके समय बुलाहट आयी है, उस लड़केका चेहरा लाल हो रहा है तथा परीक्षा करनेपर आपको कण्ठमें झिल्ली मिलती है, तो इस दवाकी अध्ययन करनेपर हम देखेंगे, कि यह ब्रोमियमका रोगी हो सकता है।

"बहुत अधिक गरमा जानेके कारण स्वर-भङ्गका हो जाना। बहुत गर्म हो जानेके कारण आवाज़का बैठ जाना।" सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानमें एक प्रकारकी गड़बड़ी आ जाती है, साथ ही बहुत गरमा जानेके कारण सर-दर्द पैदा हो जाता है। यह ब्रोमियमके अन्तर्गत है। ऐसा ही गर्म मौसममें, गर्म कमरेमें बन्द रहनेपर तथा गर्मीसे ठण्डमें जानेपर हो जाता है, पर बीमारी पैदा हो जानेके बाद, यह किसी भी स्थानमें क्यों न हो, उसे सर्दी इतनी सहन नहीं होती, कि ठण्डी हवाका एक झोंका, उसे मानो जगा देता है, पर बीमार हुए बिना वह अधिक गरमा भी नहीं सकता।

इसमें ग्रन्थियोंमें रस-स्राव होनेकी प्रवणता भी है। ग्रन्थियाँ कड़ी पड़ जाती हैं, पर उनमें पीब जल्दी नहीं होता। वे अमूमन कड़ी ही रहती हैं। गलेकी गाठ, कर्णमूल-ग्रन्थि (Parotid gland), जीभके नीचेकी ग्रन्थि (Sub-lingual gland), निम्न-हन्वस्थि-ग्रन्थि (Sub-maxillary gland),—ये सब बहुत बड़ी और कड़ी हो जाती हैं। प्रदाह धीरे-धीरे बढ़ता है, तेज़ीसे नहीं, वैसा प्रचण्ड नहीं, जैसा **बेलेडोना** और **मर्क्युरियस**में प्राप्त होता है। "कड़े पड़कर प्रदाहित अङ्गोंसे भीतरी रस-स्राव होता है।" धारणा यह है, कि कड़ापनके साथ प्रदाह रहता है। भीतरी स्राव न होनेवाले जख्मोंमें भी यह बहुत लाभदायक हुई है। बहुत कड़ापनके साथ बढ़ी हुई ग्रन्थियोंमें, जिनमें पीब-प्रवणता नहीं रहती, यह बहुत लाभ करता है। ग्रन्थियोंमें गुटिका-दोष (Tuberculosis) हो जाता

है तथा तन्तु भी गुटिका दोष ग्रहण कर लेते हैं। प्रदाहित होनेवाली ग्रन्थि कुछ देरके लिये आखर्य भावसे निम्न-रूप धारण कर लेती है। तन्तु निर्माणका एक निम्न आकार। यह उन बड़ी, कड़ी, गण्डमाला-ग्रस्त ग्रन्थियोंके बहुत सदृश हैं, जो गलेमें होती है। कर्णमूल और निम्न हन्वस्थ ग्रन्थिकी विवृद्धि। इसने चुल्लिका-ग्रन्थि (Thyroid gland) की विवृद्धि तथा बहुत कड़ापन आरोग्य कर दिया है।

इसके अलावा, इसमें क्षीणता—दुबलापन भी प्राप्त होता है और जब इसमें भीतरी रस-स्रावकी प्रबलता दिखाई दे, तो यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि यह कर्कट रोग (Cancer) और गुटिका दोष (Tuberculosis) की आरोग्यदायक औषधि बन जाती है। इस दवामें कमजोरी भी है। पैर कमजोर पड़ जाते हैं, बढ़ती हुई सुस्ती, इसके साथ ही प्रत्यङ्गोंका काँपना। ऐंठन, कम्पनशील दुर्बलता, मूर्च्छा। सर्दीके रोगोंमें कुछ न-कुछ झिल्लियोंका निर्माण हो ही जाता है। झिल्लीका निकलना ऐसी घटनाओंका तो एक स्वाभाविक पथ है। श्लैष्मिक झिल्लीका स्वाभाविक स्वरूप है, रस-स्राव, जिसमें श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे ऐसा मालूम होता है। खाकीपन लिये सफेद मांसार्बुद उत्पन्न होता है और उनके नीचे कड़ापन रहता है। यह जखमोंमें भी होता है और श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें भी। श्लैष्मिक-झिल्लीपर जखम उत्पन्न होकर, उसे भीतरकी ओर क्षय करेगा और उसके नीचे तन्तुओंका स्तर कड़ा बना देगा। सर्दीकी इन अवस्थाओंके साथ इसमें ज्वर भाव भी रहता है। बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना। "प्रत्यङ्गोंका बरफकी तरह ठण्डा पड़ जाना।" "माथेमें गर्मी।" "श्वास कष्ट, बहुत पसीनेके साथ।" "क्रूप रोगके प्रदर्शन।"

इसके बहुत-से उपसर्गों के साथ कलेजेकी धड़कन होती है। मिचलीके साथ कलेजा धड़कना, सर-दर्दके साथ कलेजा धड़कना, अनेक प्रकारकी स्नायविक उत्तेजनाओंके साथ कलेजेमें धड़कन। रोगी क्रमश इतना दुर्बल हो जाता है, कि उसे "सभी कार्यों से अनिच्छा हो जाती है, पढ़नेसे घरेलू कार्यों में बिलकुल ही मन नहीं लगता।" उदासीन हो जाता है, बहुत ही क्लान्त। "बहुत निराश हो रहता है, हतोत्साह, उदास और उत्साह-हीन।" बहुत-से उपसर्गों के साथ घबड़ाहट रहती है, बहुत गर्म हो जानेके साथ सर-दर्द। "कानमें आवाज, कानमें धमक और जलन," और कानसे सम्बद्ध रहनेवाली ग्रन्थियोंके उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। कानकी बीमारियोंके साथ

ग्रन्थियोंका बढना, कर्णमूल-ग्रन्थि बढी और कडी हो जाती है। आरक्त ज्वरके बादकी कानकी बीमारियाँ, जिनमें कानसे मवाद आता है। दर्द और यन्त्रणा रहती है, प्रदाह रहता है, कानमें फोडा। समय-समयपर कर्णमूल-ग्रन्थिमें पीव हो जाता है, पर यह एक अपवाद है। 'बायीं कर्णमूल-ग्रन्थिकी सूजन और कडापन।" डिम्बकोष, मुष्क प्रभृति सभी ब्रोमियमसे आक्रान्त होते हैं।

नाकसे रक्त-स्राव, नाकमें घाव, नाककी सर्दीकी बीमारियाँ, बहुत छींकें आना, नाककी नयी सर्दी। बहुत ही प्रचण्ड सर्दी, नाकमें बहुत जलन तथा ठण्डेपनकी एक अनुभूति, मानो साँसके द्वारा खींची हुई हवासे नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली सर्द हो जाती है। जनके महीनेकी सर्दी, जूनके प्रथम गर्म मौसम या पहली बार जुलाईमें गर्मी पड जाती है, तो उस समय यह उपयोगी होता है। सालमें एक बार गर्म ऋतुमें प्रचण्ड नाककी सर्दी। सर-दर्दके साथ, नाकसे बहुत पानी बहनेवाली सर्दी हो जाना। 'नाक जखमसे भरी और नासा-प्राचीर फूली रहती है। इसपर पपडी जमती है और उसे निकालनेपर दर्द होता है और खून बहता है।" नासा-छिद्रके चारों ओरकी खाल उधड जाती है। ब्रोमियमके रोगीका चेहरा तमतमाया रहता है; खासकर उनका, जिनमें ब्रोमियमकी नयी बीमारी रहती है। "तमतमाया चेहरा।" वह सहजमें ही गरमा जाता है, पर यह ब्रोमियमकी पुरानी धातु-गत अवस्थाके बिलकुल ही विपरीत है। ऐसी ही बहुत-सी अन्य दवाओंमें भी खासकर बहुत-सी सोरा-नाशक दवाओंमें है। पुराने भग्न-स्वास्थ्यवाले रोगी, जिन्हें पुरानी बढी ग्रन्थिकी बीमारीमें ब्रोमियमकी जरूरत रहती है या घेघा, कर्कटके रोग रहते हैं, उनका चेहरा "खाकी, मिट्टीके रङ्गका रहता है। वृद्धोंकी तरह चेहरा।" यह एक रोगीकी तरह चेहरा है, एक खाकी रङ्गका चेहरा। "चेहरा खाकी भूरा।" इसके अलावा रक्त-पूर्ण बच्चे हैं, जिनका चेहरा लाल रहता है और जो सहजमें ही गरमा जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि जब रोगकी नयी अवस्था जारी रहती है और कई घण्टे या कई दिनोंतक श्वास-कष्ट (Dyspnœa) की तरह साँसकी तकलीफ रहती है, तो रोगी नीलपाण्डु रोग ग्रस्त (Cyanotic) हो जाता है, साँसके लिये हाँफता है, श्वास-रोध हो जाता है, चेहरा खाकी पीला पड जाता है, जैसा कि डिफ्थीरिया, क्रूप तथा स्वर-यन्त्रके रोगोंमें होता है।

"ग्रन्थियोंकी पत्थरकी भाँति कड़ी सूजन, खासकर निम्न-हनु और कण्ठकी ग्रन्थियोंकी।" हम इसे रोगके कितने ही विभागोंमें होते देखते हैं। ब्रोमियमकी कितनी ही कण्ठकी बीमारियाँ स्वर-यन्त्रमें उत्पन्न होती हैं और कण्ठमें चली जाती हैं। कितनी ही कण्ठमें उत्पन्न होती हैं और स्वर-यन्त्रमें जाती हैं, पर ब्रोमियममें इन दोनोंका इतना निकटस्थ सम्बन्ध है, कि दोनों ही आक्रान्त हो सकते हैं। इस तरह डिफ्थीरिया एकसे दूसरे स्थानपर फैल जाता है। डिफ्थीरिया कण्ठसे आरम्भ होकर स्वर-यन्त्रमें चला जाता है, बहुत ही मारात्मक श्रेणीकी डिफ्थीरियामें ब्रोमियम एकदम ठीक उपयोगी होता है। झिल्ली सिगारकी तरह बढ़ती है, श्वास बन्द हो जाता है स्वर-यन्त्र बन्द हो जाता, इसकी बीमारी इतनी जटिल होती है, कि यद्यपि रोगी दो ही तीन दिनोंसे बीमार रहता है और ब्रोमियमके रोगपर अधिकार कर लेनेपर भी रोगीको बहुत ही अवसन्नता रह जाती है। ब्रोमियमके सभी रोग इसी श्रेणीके होते हैं। बहुत प्रचण्डता बहुत अवसन्नता, बहुत बीमार और इसके साथ ही मृत्युकी भाँति दुर्बलता। बहुत-सी आरोग्य हुई बीमारियाँ, कण्ठमें बायीं तरफ डिफ्थीरिया ही थी, पर इसने दोनों ओरकी डिफ्थीरिया आरोग्य की है। सर्द सूखी ऋतुमें ब्रोमियमकी बीमारी होती बहुत कम देखनेमें आयगी, पर गर्म तर ऋतुमें ब्रोमियमकी बीमारी होती है। बसन्त ऋतुके रोग, बरफ गिरनेके समय तथा गर्मीकी ऋतुके रोग।

पुरानी बीमारियाँ, जिनमें ब्रोमियमकी जरूरत होती है, ऐसी होती हैं, जैसे पाकाशयका जख्म पाकाशयका सन्देहजनक जख्म तथा पाकाशयके सन्देहजनक लक्षण। काफीके चूरकी तरह वमन तथा जख्म हो जानेके चिह्नके साथ वमन। खानेपर रोगका बढ़ना, या तो कै होती है या दस्त आते हैं, अम्ल-पदार्थ खा नहीं सकता। भोजन या अम्ल खानेके बाद अतिसार या खाँसी बढ़ जाती है। "खानेके बाद पतले दस्त, अतिसार और पाकाशयमें गड़बड़ी। थोड़ा तम्बाकूका धुआँ साँसके साथ जानेपर बीमारीका बदतर हो जाना। खून-मिले श्लेष्माका वमन, डकार।" बिगड़ा हुआ पेट। गर्म चीजोंसे, गर्म चायसे, गर्म पेयोंसे पाकाशयमें दर्द हो जाता है। पाकाशयमें जब जख्म हो जाता है या जब श्लैष्मिक-झिल्लीमें जख्म होनेको होता है, तब यह एक साधारण लक्षण रहता है, कि गर्म पेय सहन नहीं होते। 'गर्म भोजन करनेपर दर्द।"

मल तथा मलनालीके लक्षणोंका अध्ययन करनेपर इसमें रस-स्राव प्राप्त होता है। मलके साथ झिल्लीके अंश निकलते हैं। झिल्लीके साथ अतिसारके पतले दस्त। "काला, विष्ठापूर्ण दस्त।" अतिसार, भोजनके बाद जरूर ही पाखाने जाना पड़ता है।

इस समूची दवामें वर्द्धित शिराओंके लक्षण भी हैं। यह मलनालीमें भी प्राप्त होता है। मलनालीसे बवासीरका मसा निकलता है, उसमें जलन रहती है, दिन-रात तेज़ दर्द हुआ करता है। "अन्ध, बहुत ही दर्द-भरी बलियाँ, इसके साथ ही काला, अतिसारकी तरह दस्त। दर्द-भरी अन्ध बवासीर", और बवासीरके वे मसे जो बाहर निकल आते हैं। "पाखाना होनेके समय और बादमें बवासीरका तकलीफ़।" पाखाना होनेके समय, बवासीरके अर्बुदकी वजहसे मलनालीमें दर्द होता है।

इसका वामत्व देखिये। बायें अण्डकोषमें सूजन और कड़ापन। कण्ठका बायाँ अंश, अण्डकोषके बायें भागपर ध्यान दीजिये। इसके बाद **वाम** डिम्ब-प्रदेशमें दर्द। "सूजन और कड़ापनके साथ डिम्बकोषमें बराबर धीमा-धीमा दर्द हुआ करता है।" बायें डिम्बकोषमें भी वही कड़ापन है। यह आश्चर्यमय मालूम होता है, कि कुछ दवाएँ विशेषकर बायीं ओरके यन्त्र और शरीरके **बायें** अंशपर ही क्रिया करती हैं। **लैकेसिस**की तरह यह बहुत बार केवल शरीरके बायें अंशको ही पकड़ता है। बहुत-सी दवाएँ शरीरके एक पार्श्वपर विशेष क्रिया करती हैं। शरीरकी दाहिनी ग्रन्थियोंकी अपेक्षा इसमें बायीं ओरकी ग्रन्थियाँ विशेष आक्रान्त होती हैं। "डिम्बाशय-प्रदेशकी मासिक ऋतु-स्रावके पहले और समय सूजन।" आर्त्तव-स्रावका रोध हो जाना। योनिसे जोरकी आवाज़के साथ वायु निकलना।

शरीरके अन्य अंशोंकी अपेक्षा इसने स्वर-यन्त्रमें विशेष लक्षण प्रकट किये हैं। स्वर-यन्त्रमें यह साँसमें खींची हुई हवासे एक खाल उधड़ जानेकी तरह यन्त्रणाप्रद भाव पैदा करता है। "स्वर-यन्त्रमें खाल उधड़ जानेका भाव, आवाजका बैठ जाना, बहुत गर्म हो जानेके कारण स्वर-भङ्ग।" गर्मीके दिनोंमें बहुत ज्यादा कपड़ा पहन लेनेके कारण या गरमाये हुए कमरेमें ओवर कोट पहने रहनेपर, जब कोई बाहर निकलता है, तो ठण्ड लग जाती है। उसे स्वर-यन्त्र-प्रदाह हो जाता है। "स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी।" बराबर खाँसा करता है, स्वर-यन्त्रकी खाल उधड़ जाना और खरोंच। खखार-खखारकर स्वर-यन्त्रसे

श्लेष्मा निकालता है, खखारता है और खाँसता है। यह खखारना भी ठीक नहीं है, क्योंकि यह आवाज कण्ठको साफ कर देती है। दूसरोंकी किसी तरहकी आवाजपर भी चिकित्सा-शास्त्रके विद्यार्थीको ध्यान देना चाहिये और जहाँतक सम्भव हो समझनेकी चेष्टा करनी चाहिये कि इस आवाजके साथ क्या भाव मिला हुआ है, जिसमें कि दूसरोंकी जगहपर वह अपनेको रख सके। हरएक तरहकी अपनी ही आवाज होती है और जिस क्षण आप उसे सुनते हैं, आपको ठीक वह जगह मालूम होती है, जहाँसे रोगी श्लेष्माको खींच रहा है और जहाँ उपदाह है। यदि आप रोगीसे इसे वर्णन करने कहेंगे, तो वह हमेशा इसका नाम गलत बतायगा। इस प्रसंगके विषयमें, सिवा इसके रोगी कुछ भी नहीं जानता, कि यह कण्ठ है और यदि यह कण्ठसे श्लेष्मा खींच रहा है या स्वर-यन्त्रसे खरोंचकर निकाल रहा है, तो भी इसे कण्ठ ही कहता है, लेकिन चिकित्सकको इन सबपर ध्यान न देकर आवाजको देखना चाहिये। इस तरह हरएकको एकान्तमें जाकर स्वयं ही दूसरोंकी तरह आवाज निकालकर स्वयं अनुभव करना चाहिये, कि किस स्थानको वह खरोंच रहा है। यह हास्योद्दीपक अवश्य मालूम होगा, पर फिर किस दूसरे तरीकेसे आप इसे सीखेंगे? इन आवाजोंको छाँट लेना उतना ही जरूरी है, जितना कि इस बातका ज्ञान लेना, कि बच्चा अपनी आवाजों और भाव भङ्गियोंसे क्या चाहता है। क्योंकि हाव भावको समझनेके सिवा उनके लक्षणोंको और उनकी जरूरतोंको जान लेना असम्भव है। प्रत्येक गतिसे वह कुछ निर्देश करता है। एक तीक्ष्ण बुद्धि पर्यवेक्षक, जो कई बरसोंतक बच्चोंका पर्यवेक्षण कर रहा है, बच्चेको समझ सकेगा और उसे शायद ही कभी उसकी मातासे एक भी बात पूछनेकी जरूरत पड़े। बच्चा जो कुछ करता है, उसीसे उसे मालूम हो जायगा, कि उसको बीमारी कहाँ है। बच्चा तो एक पशुकी तरह रहता है। आप किसी कुत्ते या घोड़ेसे कभी नहीं पूछते, कि बीमारी कहाँ है? क्योंकि वह हमेशा अपनी भाव-भङ्गियोंसे बता देता है। ऐसा ही बच्चा भी करता है।

बहुत गरमी आनेपर स्वर-भङ्ग पैदा हो जाता है। याद रखिये, कि "रूखी, सूखी खाँसी, स्वर-यन्त्रमें दर्द।" साँसके लिये छटपटाना। "साँसके लिये हाँफना और कष्ट, इसके साथ ही स्वर-यन्त्रमें सीटी-जैसी आवाज और घरघराहट, ऐसी अनुभूति, मानो वायु-पथ धुएँसे भर रहा है।" अब हमें ये सभी रूखी आवाजें प्राप्त होती हैं। रूखा श्वास, क्रूपकी तरह श्वास,

घर्षणकी आवाज़ जैसा श्वास,—यह विभिन्न प्रकारके क्रूपोंके वर्णनका विभिन्न तरीका है। आप इनसे किसी औषधिका प्रभेद नहीं कर सकते, क्योंकि एक बच्चा एक स्वरमें खाँसेगा तो दूसरा दूसरेमें, पर बच्चा और माताकी धातुको समझ लेना जरूरी है। "आवाज़ मुश्किलसे सुन पड़ती।" "श्वासनली-द्वारमें अकड़न।" क्रूपकी बीमारीमें वास्तवमें प्रादाहित पटलपर एक झिल्लीका निर्माण हो जाता है। बहुत बार यह नीचेकी ओर फैलती हुई टेंटुआकी राहसे श्वासोपनलियोंमें (Bronchial tubes) उतर आती है और झिल्लीमय फुसफुस-प्रदाह (Croupous pneumonia) हो जाता है। ब्रोमियमकी प्रकृतिमें ऐसा होता है, पर बिना किसी तरहके झिल्ली निर्माणके भी ब्रोमियम स्वर-यन्त्रमें सङ्कोचन उत्पन्न करता है। इसमें स्वर-यन्त्रका सङ्कोचन कसकर पकड़ रखनेकी तरह या अकड़नकी तरह होता है। "खाँसीमें उत्तेजनाके साथ स्वर-यन्त्रमें सुरसुरी, स्वर-यन्त्रमें खरोंच और खाल उधड़नेका भाव, स्वर-यन्त्रमें ठण्डककी अनुभूति।" ब्रोमियमका यह एक बहुत ही विचित्र लक्षण है। स्वर-यन्त्र प्रदाहमें जब रोगी कहता है, कि ऐसा अनुभव होता है, मानो यह **कोमल परसे ढका है।** मैंने उन्हें यह कहते भी सुना है, कि मानो यह मखमलसे ढका है, पर यह बहुत ठण्डा मालूम होता है। साँसके साथ खींची हुई हवा ठण्डी मालूम होती है, मानो बरफमें लगकर यह हवा आ रही है। स्वर-यन्त्रमें ठण्डककी अनुभूति। "स्वर-यन्त्रमें हमेशा घावकी तरह दर्द।" इसका यह मतलब है, कि छूनेपर स्वर-यन्त्रमें दर्द होता है। **फास्फोरस, बेलेडोना** और **रियुमेक्स**में भी स्वर-यन्त्रमें घावकी तरह दर्द होता है, छूनेपर यन्त्रणा होती है, पर ब्रोमियमकी यह यन्त्रणा साधारणतः स्वर-यन्त्रके नीचे तथा कण्ठ-गह्वरमें रहती है। "ऐसा अनुभव होता है, मानो वायुनलियाँ धुएँसे भरी हैं।" कुछ रोगी कहेंगे, जैसा गन्धकका धुआँ या अलकतरेका धुआँ। पहले कुछ घण्टोंके बाद स्वर-यन्त्रमें और टेंटुआमें श्लेष्मा जमना आरम्भ हो जाता है और लगातार सफेदी लिये गाढ़ा श्लेष्मा निकला करता है। रोगी बराबर खाँसता और स्वर-यन्त्रको छीला करता है और उसे किसी तरह शान्ति नहीं मिलती। बिना झिल्लीवाले स्वर-यन्त्र-प्रदाहमें भी अकसर ऐसा हुआ करता है। आवाज़का रुक जाना, स्वर-यन्त्रका उपदाह, स्वर-यन्त्रकी खाल उधड़ जाना प्रभृतिमें ब्रोमियमका अकसर उतना प्रयोग नहीं होता, जितना वह निर्देशित रहता है, क्योंकि बहुत ज्यादा गरमी

जानेपर स्वर-यन्त्र-प्रदाह या स्वर-भङ्गका होना, असाधारण घटना है। ब्रोमियमसे ऐसे बहुत-से रोगी बहुत जल्द आरोग्य हो सकते हैं, पर बँधी गतकी चिकित्सा करनेवाले तो इसे क्रूप या डिफ्थीरियामें भी प्रयोग करते हैं। यह हैनिमैनके द्वारा नहीं सिखाया गया है। "स्वर-यन्त्रमें श्लेष्माकी बहुत अधिक घरघराहट, साँस लेनेमें तकलीफ होती है। स्वर-यन्त्र नीचेकी ओर खिंच जाता है।" यह झिल्ली बन जानेके बाद, क्रूपमें होता है। "खाँसी रूखी, कौएकी आवाज़की तरह, श्वास रोध करनेवाली, श्वासके समय आरीसे काटने या सीटीकी तरह आवाज़। स्वर-यन्त्रको ऐंठन, श्वास रोध करनेवाली खाँसी, स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें झिल्लीका पैदा हो जाना। क्रूपका प्रदाह जो छत्तेके बाहरकी ओर पैदा हो जानेके कारण हो जाता है। "किनारेपर पहुँचते ही हो जानेवाला जहाज़ियोंका दमा।" ज्योंही वे फिर समुद्रमें जहाज़पर जा पहुँचते हैं, यह अच्छा हो जाता है। समूचे वक्षमें घरघराहटके साथ श्वासमें तकलीफ। ब्राङ्काइटिस और न्युमोनिया। वसन्त ऋतुमें, गर्मीकी ऋतु आनेके समय और स्वर-यन्त्रमें झिल्ली बननेके समय होनेवाले हूपिङ्ग खाँसी (कुकुर खाँसी) की दवा अक्सर ब्रोमियम ही होती है। धूलसे तुरन्त ही खाँसी बढ जाती है। पुरानी किताबें पटरे (self) से उतारनेपर बीमारी बढ जाती है। छींक, स्वर-भङ्ग, श्वास-पथका प्रदाह, धूल-भरी चीजोंको उठाने और इधर-उधर करनेके कारण रोग। "कुछ निगलनेपर एकाएक श्वास-रोध करनेवाले आवेगके साथ खाँसी।" ब्रोमियम श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी बीमारीसे भरा है, खासकर श्वास-यन्त्रोंको। इसमें फेफड़ोंकी यकृद्-भाव प्राप्ति (Hepatization) है और भीतरी रस स्राव इसका एक स्वाभाविक स्वरूप है।

ब्रायोनिया।

(Bryonia)

हरेक दवाका एक अलग ही क्रिया-क्षेत्र, एक विचित्र ही प्रकृति रहती है जिससे वह अन्य सभी दवाओंसे अलग हो जाती है और यही वजह है, कि यह एक श्रेणीके रोगियोंके लिये उपयोगी होती है, दूसरोंके लिये नहीं यह उस मानव प्रकृतिके अनुसार ही है, क्योंकि वे भी एक दूसरेसे अलग ही होते हैं और रोगकी प्रकृति भी ऐसी ही होती है। वे भी अपने चरित्रमें एक दूसरेसे नहीं मिलतीं। हम किसी औषधिका उसकी तेजी, उसका क्रियाकाल, उसका विराम तथा मध्य-विरामकाल लेकर अध्ययन करते है। किसी दवाके लक्षण बहुत आकस्मिक रूपसे आते हैं। बहुत वेगसे आते हैं, बहुत तेजीसे आते हैं, बहुत थोड़े समय ठहरते हैं और इस तरह चले जाते हैं, मानो कुछ हुआ ही नहीं है। दूसरे धीरे-धीरे आते हैं, स्थायी रूपसे लगातार क्रियाशील रहते हैं। जैसे, अविराम ज्वर **इग्नेशिया**की बीमारियोंमें हम देखते हैं, कि किस तरह तेजीसे वह आती है और स्वल्प-विराम रहती है ? सभी बातें अप्रत्याशित-सी रहती है। **ऐकोनाइट**में हम देखते हैं, कि कितनी प्रचण्डतासे रोगाक्रमण होता है और **बेलेडोना**में किस आकस्मिक रूपसे रोग पैदा हो जाता है ? जब हम ब्रायोनियाका अध्ययन करने लगते है, तो हम देखते हैं, कि यह एक अत्यन्त बद्धमूल औषधि है। इसके उपसर्ग धीरे-धीरे उत्पन्न होते हैं अर्थात **नयी बीमारियोंसे धीरे-धीरे आते हैं।** इसके उपसर्ग बराबर बने रहते हैं, विराम होता है और बहुत कम अवसरोंपर ही स्वल्प-विरामशील रहते हैं। वे बढ़कर प्रचण्ड हो जाते हैं, पर यह प्रचण्डता **ऐकोनाइट** और **बेलेडोना**की तरह प्रथम आक्रमणकी नहीं है और इसीलिये यह **अविराम ज्वर** (Continued fever) के साथ होनेवाली एक श्रेणीकी बीमारीमें, **वात** जो क्रमश बढ़कर जटिल हो जाता है, क्रमश बढ़ता जाता है और एकके बाद दूसरी सन्धिपर आक्रमण करता जाता है। यहांतक कि अन्तमें सभी **सफेद सूत्रमय-तन्तु** (White fibrous tissues) प्रदाह-ग्रस्तावस्थामें हो जाते हैं, दर्द और कष्ट उत्पन्न हो जाता है।

इसमें शरीरमें किसी जगह भी प्रादाहिक अवस्था हो जा सकती है, पर यह विशेषकर श्लैष्मिक तन्तुओंमें होती है। रस-स्रावी झिल्लियोंमें, सन्धि बन्धनियोंमें और कण्डरा-प्रसारणों (Aponeuroses) में हो जाती है। यह अपने रक्त-सञ्चयके साथ स्नायु-आवरणोंको भी आक्रान्त करता है और ये धीरे-धीरे बढ़कर जटिल हो जाते हैं।

आरम्भमें ही चरित्रगत लक्षण मौजूद रहते हैं और यह देखा जा सकता है, कि यह रोगी ब्रायोनियाकी बीमारीसे बीमार पड़ता जा रहा है। रोगीको इसके लिये कई दिन पहलेसे तैयार होना पड़ा है। उसे अच्छा नहीं मालूम होता, वह आलस्यपूर्ण तथा क्लान्त हो रहा है। किसीसे बात करना नहीं चाहता, हिलना-डोलना नहीं चाहता और यह अवस्था उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। दर्द शरीरमें इधर-से उधर हुआ करता है। दर्द यहां-से-वहां सूत्रमय तन्तुओंपर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर हटता है और प्रत्येक बार उसके हिलने-डोलनेपर दर्द बढ़ता है और यहांतक कि फिर सुदृढ़ और लगातार दर्द बना रहता है। रोगवाली जगह गर्म और प्रादाहित हो जाती है और अन्तमें रोगी वात-ग्रस्त हो पड़ता है। **सर्दी लगनेके बाद** बीमारी उत्पन्न होगी। पहले कई घण्टोंमें ही **ऐकोनाइट** या **बेलेडोना**की तरह नहीं, पर खुली हवा लगनेके दूसरे दिन उसे बेचैनी मालूम होने लगती है, उसे छींक आती है, नाकसे स्राव होता है, वक्षमें दर्द होता है और एक दो दिनमें उसे जाड़ा मालूम होने लगता है और वह किसी-न-किसी प्रादाहिक रोग, न्युमोनिया या प्लुरिसी रोगसे बीमार हो जाता है। इसकी प्रादाहिक बीमारियोंमें मस्तिष्ककी झिल्लीमें प्रदाह हो जाता है, कभी कभी तो यह नाभी-रज्जु तक, फुसफुसावरक झिल्लीतक या गुह्य द्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थान (Peritoneum) तथा हृदावरकतक—ये बहुत साधारण स्थान इसके आक्रमणके हैं—फैल जाता है। इसमें अन्त्रोंमें भी प्रदाह हो जाता है। जब यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है, तो इन रोगोंके बहुत आरम्भकालमें ही, यहांतक कि दर्द आरम्भ होनेके भी पहले, यह देखनेमें आता है, कि रोगीको हिलने-डोलनेसे अनिच्छा हो जाती है, पर रोगी नहीं जानता, कि ऐसा क्यों हो रहा है? पर अन्तमें वह देखता है, कि यदि वह हिलता-डोलता या हटता है, तो उसके लक्षण बदतर हो जाते हैं। इस तरह ज़रा भी इधर-उधर यदि हट पड़ता है, तो

उसे क्रोधका भाव पैदा हो जाता है और जब वह हिलता-डोलता है, तो यह देखता है, कि उसे बहुत तकलीफ़ हो रही है और शरीरमें सब तरहका दर्द और यन्त्रणा पैदा हो जाती है, इसी तरह ब्रायोनियाकी विख्यात हिलने-डोलनेपर रोग-वृद्धि होती है। यह इस दवामें हर जगह पाया जाता है।

यह दवा बहुत-सी बीमारियोंमें उपयोगिनी होती है। **सान्निपातिक प्रकृति**की बीमारियाँ, वे रोग जो लक्षणानुगत टाइफायडका आकार धारण करते हैं, वे रोग जो सविराम रूपमें तो उत्पन्न होते हैं, पर फिर अविराम ज्वरमें परिणत हो जाते हैं। जैसा कि न्युमोनिया, प्लुरिसी या यकृतके ग्रन्थियोंका और आँतोंके प्रदाह प्रभृतिमें होता है। यह पाकाशय, अन्त्राशय-प्रदाह (Gastro-enteritis) या अन्त्रावरक झिल्ली-प्रदाह (Peritonitis) या अन्त्र-प्रदाह, स्पर्श-असहिष्णुताके साथ हो सकता है। इन सबमें हिलने-डोलनेपर रोग-वृद्धि और एकदम शान्त चुपचाप बैठे रहनेकी इच्छा रहेगी। सन्धियोंका प्रदाह, यह वात-प्रकृतिका हो या न हो, सर्दी लगकर हो या खुली हवा अथवा चोट लग कर हो। **आर्निका**से लाभ न होनेपर, सन्धियोंकी चोटमें, कितनी ही बार ब्रायोनिया लाभदायक होता है।

ब्रायोनियामें **उपदाहकी** बहुत ही असीम दशा रहती है। बाध्य होकर जवाब देने या सोचनेके समयका एक भी शब्द उसकी तकलीफ़को बढ़ा देता है। बोलनेकी चेष्टा करते ही डर मालूम होता है। रोगके आरम्भमें उस रोगीके पलङ्गके पास जायें, जो कई दिनोंसे लटपटा रहा था, आप देखेंगे कुछ स्पष्ट रूपसे होना चाहता है, घरके आदमी आपसे दरवाजेपर ही मिलते हैं और कहते हैं,—"रोगी तो करीब-करीब बेहोश है।" आप रोगीकी ओर देखें, उसका चेहरा भर्राया और बैंगनी है, वह हतबुद्धि-सा मालूम होता है और समूचे शरीरमें शिराओंके रोधका लक्षण दिखाई देता है, लेकिन खासकर चेहरेमें अधिक है। इसका मुख-मण्डल करीब-करीब जड़बुद्धिकी तरह हो रहा है, इतनेपर भी वह पूरी तरह बातें कर सकता है। यद्यपि उसको बातें करनेकी इच्छा नहीं होती तथा बाहरवालोंको ऐसा मालूम होता है, कि जो कुछ उसे कहा जाता है, उसपर ध्यान नहीं देता। यह कभी-कभी बहुत कम समयमें ही हो जाता है। रोगी सवेरेके वक्त धीमा, रक्त-सञ्चयी सर-दर्द और माथेमें जड़ताके भावसे भरा जागता है, मन इतना सुस्त रहता है.

कि वह काम नहीं कर सकता और यह भाव क्रमश बढता हो जाता है। यह अवस्था कभी-कभी किसी भयङ्कर बीमारीकी पूर्व सूचना रहती है। जब न्युमोनिया या यक्ष्मका प्रदाह या कोई निम्न दुष्ट-प्रदाह शरीरमें होनेवाला रहता है, पर अभी हुआ नहीं है, तो सवेरेके वक्त यह अवस्था रहती है। ब्रायोनियाकी रोग-वृद्धिके सम्बन्धमें यह विचित्र बात है,—बहुत बार इसकी तकलीफें खूब सवेरे हो पैदा होती हैं। नींद खुलनेके बाद, पहली बार हिलते डोलते ही, वह समझता है, कि आज लक्षण ठीक नहीं है, एक ऐसी जड़ता आ रही है, जो बेहोशीके किनारे-किनारेपर है। एक सप्ताह या दस दिनोंसे जो लटपटा रहे हैं, सवेरे तकलीफके साथ जागते हैं, कभी-कभी तो उसी दिन या दूसरे ही दिन उन्हें चिकित्सककी बुलाना पड़ता है। यदि कई दिनोंतक राह देखी जाती है तो अविराम ज्वर होने लगता है या रातके समय एक बार जाड़ा लगेगा। साथ ही वक्षमें बहुत दर्द होगा, जङ्गकी तरह बलगम निकलेगा, छोटी, सूखी खाँसी और ब्रायोनियाके कुछ वे लक्षण जो आगे बताये जायँगे,—यह दिखाते हुए कि बीमारी सीनेकी ओर जा रही है, पैदा हो जायँगे या यह अवस्था क्रमश बढकर रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, धीमे सर-दर्दमें परिणत होगी। मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय होनेकी सम्भावना होनेपर यह दिखाई देगा। ब्रायोनियाकी बीमारी अकसर **रक्त पूर्ण** मनुष्योंको ही होती है जो अपने निर्माणमें गैरिक हो रहे हैं या वे जिन्हें जब सर्दी हो जाती है तथा सर्दी-जनित रक्त-सञ्चयसे बीमार होते हैं। ब्रायोनियामें **सर्दीका बोखार** आरोग्य किया जा सकता है। तब मनकी यह **शिथिल** अवस्था ब्रायोनियाकी एक दशा है। उत्तेजना पूर्ण दशा नहीं, जैसी कि **काफिया, नक्स-वोमिका, इग्नेशियामें** रहती है, पर शिथिल अवस्था, हिलने-डोलनेसे तकलीफ बढती है, बात करनेसे रोग बढता है। रोगी चुपचाप बिछावनपर पड़ा रहना चाहता है। बहुत ज्यादा चिड़चिड़ापन, यह इतनी असीम रहती है, जितनी कि **नक्स-वोमिका** और **कैमोमिलामें** रहता है। इसमें क्रोधसे, जगानेपर, विशृङ्खलित किये जानेपर तथा विरोधसे पैदा होनेवाली नयी बढनेवाली बीमारियाँ भी हैं। पहलेका ही ढीलापनके बाद, ब्रायोनियामें एकदम शक्ति-हीनताकी एक अवस्था आ जाती है, जिससे रोगी एकदम उसी तरह बेहोश हो जाता है, जिस तरह टाइफायडमें। वह आंशिक अचेतनतासे सम्पूर्ण

अचेतनतामें चला जाता है, जैसा कि मस्तिष्कमें जल-सञ्चयवाले बच्चोंको होता है (Hydro-cephalic children)।

वातज रोगोंमें, न्युमोनियामें तथा सान्निपातिक (टाइफायड) अवस्थाओंमें, जब इस अर्द्ध-चेतनताकी अवस्थामें रोगी जगाया जाता है, तो वह घबड़ाया रहता है, मूर्त्तियां देखता है, **सोचता है, कि वह घरसे बाहर है और घर ले चलनेके लिये कहता है।** कभी-कभी तो वह लेट जायगा और इसके सिवा कुछ न कहेगा, कि "घर ले चलो।" प्रलाप धीमी श्रेणीका रहता है, यह **बेलेडोना** या **स्ट्रैमोनियम**की तरह वहशत-भरा सरशाम नहीं रहता। यह उसके बिलकुल विपरीत है, वह आप-ही-आप बातें करता है और घूमता है और जबतक तङ्ग नहीं किया जाता, अधिक नहीं कहता। आप उसे विरक्त करें और वह कहता है—"हट जाओ और मुझे घर जाने दो।" यदि आप उसे अकेले छोड़ देंगे, तो वह एकदम शान्त अवस्थामें जा पड़ेगा और शायद ही कुछ बोलेगा। अयौक्तिक बातें या **अपने काम-काज-सम्बन्धी बकवादें** यह तीसरे पहर ३ बजेके बाद बढ़ जाता है।" अकसर आपको यह **प्रलाप** करीब ८ बजे रातमें आरम्भ होता मिलेगा और ज्वरकी तरह रातभर जारी रहेगा। **ऐसी मानसिक अवस्था** तो आपको **सवेरे सोकर उठनेपर मिलेगी,** पर ज्यों-ज्यों ज्वरकी अवस्था बढ़ती जाती है और उसपर अधिकार जमाती जाती है, त्यों-त्यों रातके ८ बजे लक्षणोंकी वृद्धि होती है। जिनपर जाड़ेका दौरा होता है, उन्हें भी रातके ८ बजे ही होता है, जिन्हें ज्वर आता है, उन्हें ज्वर भी रातके ८ बजे ही आता है। यदि मानसिक लक्षण प्रधान रहते हैं, तो वे रातमें ही बढ़ते और फैलते हैं, इसमें तीसरे पहर ३ बजे भी रोग-वृद्धि होती है। **बेलेडोना**की बीमारी तीन बजे आरम्भ होगी और आधी राततक रहेगी, पर ब्रायोनियाकी बीमारी ८ बजे रातमें आरम्भ होगी और रातभर भोग होती रहेगी। **कैमोमिला**के रोगियोंकी रोग-वृद्धि, जो बहुत ज्यादा चिड़चिड़े होते हैं, ८ बजे सवेरे होती है। कभी-कभी रोगीके पलङ्गके पास आकर यह निर्णय करना कठिन हो जाता है, कि यह ब्रायोनियाका है या **कैमोमिला**का रोगी, क्योंकि ये दोनों ही अत्यन्त तेजस्वी होते हैं, पर **कैमोमिला**का बच्चा सवेरे ८ बजे बदतर हो जाता है और ब्रायोनियाका रातके ८ बजे।

ब्रायोनियाकी एक कुञ्जी है, जो बारह या उससे भी अधिक दवाध
वास्तवमें लगती है—"वह कुछ चाहता है, पर नहीं जानता कि क्या चाह
है।" यह ब्रायोनियाका एक अत्यन्त आवश्यक लक्षण है। जब अन्य लक्ष
मिलें तो यह एक ऐसा लक्षण है, जो ब्रायोनिया ही मांगता है। किसी
बच्चेके पास जाये, जो धायकी गोदमें हो और एकके बाद दूसरा खिलौना माग
हो, जो खिलौना वह मांगता है, वह दें वह उसे नहीं लेगा और
आपकी ओर वापस फेंक देगा। इस रोगीकी अच्छी तरह परीक्षा करने
मालूम होगा, कि यह क्रियोजोटसे आरोग्य हो सकता है। दूसरे कि
भी चीज़में कभी सन्तुष्ट नहीं रहता और जो कुछ वह मांगता है, देने
लेना नहीं चाहता। आप इस रोगीको जाँचिये, यह कैमोमिलासे आरोग्य
सकता है।

"उन चीजोंकी इच्छा जो प्राप्त नहीं हो सकतीं, जो इनकार कर दी गयीं
हैं या जब दी गयी हैं, तो नहीं ली गयीं।" "शङ्कित, भय पूर्ण।" "समस्
शरीरमें घबड़ाहट रहनेके कारण उसे बाध्य होकर कुछ-न-कुछ करते ही रहना
पड़ता है।" यह एक ध्यान देने योग्य लक्षण है, क्योंकि यह कभी-कभी
किसी रोगीको असङ्गत बना देता है। यह उस घबड़ाहटके कारण होता है
जो उसके समूचे शरीरमें भरा रहता है। ब्रायोनिया और आर्सेनिकममें एक
ऐसी घबड़ाहट-भरी और बेचैनीका भाव पैदा हो जाता है जो रोगीको हिलने-
डोलनेके लिये बाध्य करता है, पर हिलने-डोलनेपर उसकी बीमारी बढ़त
हो जाती है, पर इतनेपर भी वह इतना घबड़ाया और बेचैन रहता है कि
उसे हिलना-डोलना पड़ता ही है। इतना तेज़ दर्द होता है, कि वह शान्त
नहीं रह सकता और इतनेपर भी जब हिलता डोलता है, तो दर्दसे चीख
उठता है। वास्तवमें यह असहज नहीं है, पर तेज दर्दके कारण ऐसा होता
है। यद्यपि वह जानता है, कि हिलने-डोलनेसे उसकी तकलीफ़ बढ़
जायगी, तथापि वह शान्त नहीं रह सकता, क्योंकि दर्द बहुत प्रचण्ड रहता
है। रोगके आरम्भमें वह शान्त रह सकता था और उसे मालूम होता था,
कि शान्त रहनेपर वह अच्छा रहता है और शान्त रहनेसे मानसिक अवस्था
भी अच्छी रहती थी और जितना ही ज्यादा वह हिलता-डोलता था
उतनी घबड़ाहट-भरी बेचैनी बढ़ती थी, अन्तमें एक प्रतिक्रिया आती है और
उसे बाध्य होकर हिलना-डोलना पड़ता है। ऊपर ऐसे रोगीको देखनेपर,

आपको मालूम होगा, कि **रसटक्स**की तरह हिलने-डोलनेपर रोगी अच्छा रहता है, पर **रसटक्स**में आप देखते हैं, कि रोगी इधर-उधर छटता तो है और इस छटनेमें वह कमजोर होता जाता है और जब वह बैठ जाता है, तो दर्द फिरसे उत्पन्न हो जाता है। इन दोनोंमें प्रभेद है, पर इतनेपर भी यदि सावधानता-पूर्वक परीक्षा नहीं की जाती, तो वे एक समान मालूम होती हैं। **ठण्ढी हवासे और ठण्डी मालिशसे** घटना ब्रायोनियाका साधारण लक्षण है। अब यदि वह हिलता है, वह गरमा जाता है, दर्द बढ़ जाता है, पर ब्रायोनियाके ऐसे वातज उपसर्ग भी हैं, जो तापसे अच्छे रहते हैं और इन्हीं अवस्थाओंमें वह लगातार हिलने-डोलनेपर अच्छा रहता है। यह एक आराम मिलनेका दूसरा स्वरूप, एक दूसरा आकार है। मैं कभी-कभी सोचता हूँ, कि ब्रायोनियाके रोगीको गर्मीसे ज्यादा आराम मिलता है या ठण्डेसे। बहुत-से **सर्दी रोग**, जो **रक्त-सञ्चयी** प्रकृतिके होते हैं, वे ठण्डे प्रयोगसे, ठण्डी हवा प्रभृतिसे अच्छे रहते हैं, पर ऐसे भी ब्रायोनियाके माथेके उपसर्ग हैं, जिनमें गर्म प्रयोगसे आराम मिलता है और इसके साथ मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय नहीं रहता। इसलिये ब्रायोनियाके दो विपरीत आकारगत लक्षण हैं, पर इसकी सभी विपरीत दशाओंमें, इतनेपर एक वृहत् **प्रकृति** सदा रहती है, जिससे कि पूरी तरह इसका पता पाया जा सकता है।

तर, सीड-भरी ऋतुमें ब्रायोनिया अधिकांश निर्देशित औषधि होती है, पर साफ मौसममें, जिसमें तापमान-यन्त्र नीचे उतर आता है। **ऐकोनाइट**, ब्रायोनियाकी अपेक्षा विशेष उपयोगी होगा। और भी दक्षिणमें, प्रादाहिक अवस्थाओंमें, रोग **जेलसिमियम**की प्रकृतिगत दशा धारण करते हैं। हम जानते हैं, कि बहुत उत्तरमें, आकस्मिक, तेज ठण्ड, **ऐकोनाइट**की तरह प्रचण्ड सर्दी पैदा कर देती है, जब कि यहाँ तथा और भी दक्षिणमें ब्रायोनियाकी भाँति बीमारियाँ विशेष छिपी रहती हैं। हमारी मेटिरिया-मेडिकामें ये वायु-मण्डल-सम्बन्धी परिवर्त्तनोंपर भरपूर विचार करना चाहिये।

ब्रायोनियाकी मानसिक अवस्थामें ठण्डी हवासे अमूमन आराम पहुँचता है, रोगी खिड़की खुली रखना चाहता है। चिन्ता, घबड़ाहट, चित्त-विभ्रम, भय प्रभृति ठण्डे होनेपर घट जाते हैं। कभी-कभी प्रलाप और मनको आक्रान्त करनेवाली माथेकी रक्त-सञ्चयी पूर्णता, यदि कमरा गर्म हो जाता

है, तो बढ जायगी या चूल्हेकी गर्मीसे गरमा जानेपर अथवा गर्म ओढना ओढ लेनेपर बढ जायगी। बच्चोंमें यह देखनेमें आता है। यदि कमरेकी बद्धताको दूर करनेके लिये खिडको खोल दी जायगी, तो बच्चा शान्तिसे सो जायगा। ब्रायोनिया, **एपिस, पलसेटिला** तथा कितनी ही अन्य दवाओंमें यह लक्षण है। यदि आप कमरेमें जाकर यह देखें, कि बच्चा प्रलाप में क्रोधित हो रहा है, करवट बदलता है, छटपटाता है और माता कमरा गर्म रखनेकी चेष्टा करती है, क्योंकि वह सर्दीली हो रही है और आप कहते हैं—'क्यों यह जगह कितनी बद्ध हो रही है।" आप खिडको खोल दीजिये और तब देखिये कि बच्चा सो जाता है। इसको लक्ष्य किये बिना न छोडिये, क्योंकि यह आराम किस चीज़से पहुँचा है। *सम्भव है, कि रोगीको होनेवाला कुछ* न हो, पर इसका मतलब आपको वह कमरा छोडनेके पहले हल कर लेना चाहिये। अपने मनमें बैठा लीजिये कि वह क्यों था जिसने ऐसा किया।

"मृत्युका भय।" भय, चिन्ता, आरोग्यसे निराशा, बहुत उदासीनतासे भरा रहता है। एकदम मानसिक और शारीरिक शान्तिकी जरूरत है अर्थात वह एकदम चुपचाप पडे रहना चाहता है, अकसर वह अन्धेरे कमरेकी इच्छा करता है। इसमें उत्तेजित हो जानेके कारण उपसर्ग भी उत्पन्न होते हैं। *ब्रायोनियाके रोगीसे कोई मिलने आता है, तो बदतर हो जाते है।* "विषादग्रस्त" ब्रायोनियाके रोगीसे तर्क-वितर्क न कीजिये, यह उसकी बीमारी बढा देता है। "सडनका दुष्परिणाम।" 'विरक्तिके कारण उत्पन्न उपसर्ग।" अमूमन सर दर्द होता है। प्रचण्ड रक्त-सञ्चयी सर-दर्द जो कई घण्टोंके वाद-विवाद या तर्क-वितर्कके बाद होता है या किसीके साथ कुछ मतभेद हो जाता है, जिससे यह फिर बात नहीं कर सकता। यह **स्टैफिसैग्रियासे** आरोग्य हो जायगा, पर ब्रायोनियामें भी यह लक्षण है। चिडचिडे प्रचण्ड स्नायविक उत्तेजनशील मनुष्य, जो भयानक तर्क-वितर्क या झगडा करने लगते है, उनके लिये **स्टैफिसैग्रिया** उपयोगी है। यदि सरमें दर्द होने लगे तो ऐसे रोगीके लिये ब्रायोनियाकी जरूरत पड सकती है। पुरानी दशामें कोई रोगी कहता है—"डाक्टर साहब! यदि किसी विषयपर मेरा किसीसे मतभेद हो जाता है, तो मुझे स्नायविक उत्तेजना, अनिद्रा और सर-दर्द पैदा हो जाता है।" आपको ऐसे रोगीके लिये ज्यादा सर-पच्ची न करनी पडेगी, क्योंकि **स्टैफिसैग्रिया** इसमें आशासे अधिक उपयोगी होगी।

ब्रायोनियामें सरमें चक्कर भी है। गर्म कमरेमें यह सरका चक्कर और भी बढ़ जाता है। जैसा मैं समझता हूँ, आप भी देखेंगे, कि स्नायविक प्रकृतिकी सभी बातोंमें स्नायविक उत्तेजना और साधारणतः शारीरिक अवस्थामें रोगीकी हालत गर्म कमरेमें, बहुत कपड़े पहन लेनेपर तथा बिछावनकी गर्मीसे बदतर हो जाती है। खिड़कियाँ खुली रखना चाहता है, ताजी ठण्डी हवाकी साँस लेना चाहता है, बन्द कमरेमें, साधारण मनुष्योंकी अपेक्षा उसकी तकलीफ़ ज्यादा बढ़ जाती है। ब्रायोनियाकी अवस्थावाले रोगी गिर्जा, नाच-घर, बन्द कमरे वगैरहमें **लाइकोपोडियम**की तरह तकलीफ़ पाते हैं। प्रत्येक बार गिर्जामें जानेपर जो लड़कियाँ बेहोश हो जाती हैं, वे **इग्नेशिया**से आराम हो जाती हैं।

अब हम मस्तकका अध्ययन आरम्भ करते हैं। इस दवाकी सरकी बीमारियाँ इसका आश्चर्यमय स्वरूप समझा जा सकता है, क्योंकि इसकी प्रत्येक बीमारीके साथ सर-दर्द रहता है। प्रादाहिक तथा रक्त-सञ्चय-सम्बन्धी उपसर्गों में सर-दर्द शामिल रहता है। मानसिक सुस्ती और चित्त-विभ्रम रक्त-सञ्चय-जनित सर-दर्द तथा फट जानेकी तरह सर-दर्दमें पहले ही बताया जा चुका है। माथा इतना भरा मालूम होता है, कि रोगिनी उसे हाथसे दबाये रखना चाहती है या बाँध देना चाहती है, कसा हुआ दबाव, समूची खोपड़ीपर फ़ायदा करता है। गर्म कमरेमें और साधारणतः तापसे सर-दर्द बदतर हो जाता है। कभी-कभी बाहरी स्नायु-शूलमें स्थानिक तापसे आराम पहुँचता है, पर गर्म या बन्द कमरा ब्रायोनियाके रोगीके लिये बहुत ही कष्टदायक होता है। ऐसा सर-दर्द मानो खोपड़ी फटकर खुल जायगी। प्रत्येक बार हिलने-डोलनेसे दर्द बदतर हो जाता है, यहाँतक कि आँख मींचने और खोलनेकी गति भी। बोलनेमें जो गति होती है और सोचनेमें जो गति होती है, इस तरह मन और शरीरके सभी श्रम सर-दर्दके कारण असम्भव हो जाते हैं। एकदम पूरी तरह शान्त रहना पड़ता है। कभी-कभी लेटे रहना और अन्धेरे कमरेमें चुपचाप पड़े रहना कुछ आराम पहुँचायगा। रोशनीसे बीमारी बढ़ती है। यदि आप क्षणभरतक सोचें, तो देखेंगे, कि कमरेकी रोशनी और छायासे भी एक प्रकारकी गति होती है। यह कहा गया है, कि रोशनीसे रोग-वृद्धि होती है, पर यहाँ भी यह गति पायी जाती है, जो नियामक पेशियों द्वारा ले जायी जाती है। ब्रायोनियाका सर-दर्द अकसर

सब बीमारियोंमें, फिफड़ेमें रक्त-सञ्चय, आह्लाइटिस या शरीरके किसी भागमें रक्त-सञ्चयके साथ आगे आगे चलता है। वह सवेरे सर-दर्दके साथ जागता है। यदि उसे सर्दी होनेवाली रहती है, तो उसे सवेरे सर-दर्द होता है और दिनभर वह छींका करता है अथवा बीमारी यदि शरीरके किसी अन्य भागमें होती है, तो लक्षण प्रकट होनेके पहले ही आँखके ऊपर या सरके पिछले भागमें या दोनोंमें, रक्त-सञ्चयी सर-दर्दके साथ वह जागेगा। ऐसा मालूम होता है, कि माथा फट जायगा, दबावसे अच्छा रहता है, गर्म कमरेमें खराब हो जाता है और प्रत्येक गतिसे बदतर हो जाता है। आँखोंके ऊपरका सर-दर्द कभी-कभी तो यह छुरी घुसेड़ देनेकी तरह होता है, पहली बार हिलने-डोलने-पर बहुत बढ़ जाता है। सोकर उठनेके समय आँखके गोलेमें यन्त्रणाके साथ तथा समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्दके साथ जागनेपर, आँख हिलानेपर वह इसे अनुभव करता है। बाहुओंका हिलाना, बाहुओंसे काम करना, बहुत तरहके वे काम जिनमें बाहु और हाथका प्रयोग करना पड़ता है। इसमें शरीरके ऊर्द्ध भागकी बीमारियाँ शामिल रहती हैं और खासकर माथेकी। इस तरह हेरिङ्गके पुराने समयमें इसकी एक कुञ्जी हो रही थी—"इस्त्री करने-पर बीमारियाँ।" आप जानते हैं कि गर्म कमरेमें ही इस्त्री की जाती है, यह बाहुओंकी गतिको जड़ कर देता है और इस तरह ब्रायोनियाके दो प्रधान स्वरूप सामने आ जाते हैं। इस तरह यह कुञ्जीवाली बात अब संक्षिप्त वर्णन नहीं रह जाती। इसे सार्वाङ्गिक प्रकृतिसे अलग न समझना चाहिये, बल्कि इससे बाहरी विकासका काम निकलता है। फाड़नेकी तरह, प्रचण्ड रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, इस तरहका सर-दर्द, मानो सब चीजें कपालकी राहसे बाहर निकल पड़ेंगी। ललाटमें दबावकी तरह दर्द, भरापन और पेशानीमें इतना भार, मानो मस्तिष्क दबाया जा रहा है। यह भरापन या माथेमें रक्त-सञ्चय मनकी शिथिलताके साथ रहता है और यह अकसर देखा जायगा, कि उसका चेहरा भी कुछ चितकबरा हो रहा है। रोगीको देखनेमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह जड़ हो रहा है। ब्रायोनियाकी प्रत्यक्ष दशामें रक्त-सञ्चयके साथ चेहरा दाग भरा और नीला रहता है। आँखें लाल रहती हैं और उनमें रक्त-सञ्चय हुआ रहता है, वह अमनोयोगी-सा रहता है। हटना नहीं चाहता, बोलना या कोई काम करना नहीं चाहता, क्योंकि इन सबमें गतियाँ होती हैं, चेष्टाएँ होती हैं और इनसे उसको तकलीफ

होगा। इससे चेहरेका दृश्य ऐसा बन जाता है, मानो शराब पिये हो। यह **बैप्टीशियाकी** तरह इतना स्पष्ट नहीं रहता और न इसके साथ उतनी निम्न-अवस्था, इतनी बढ़ी हुई तन्द्रा रहती है, जैसी कि **बैप्टीशियामें** रहती है। ओठोंका बहुत सूखापन, ओंठ चमड़ेकी तरह और सूखे रहते हैं। "बच्चे ओंठ खूटते हैं।" "ओंठ फटे-फटे और उनसे खून बहता है।" "ओंठ चमड़ेकी तरह, सूखे और रक्त बहते हुए, जैसा कि सान्निपातिक (टाइफायड) अवस्थामें दिखाई देते हैं जिसमें समूचा मुँह सूखा, भूरा, फटा-फटा, सूखे चमड़ेकी तरह और रक्त बहता हुआ रहता है। सूखी, भूरी जीभ। दाँतपर मैलकी तह। **आरम ट्राइफाइलममें** नाक और ओंठ खूटना बहुत स्पष्ट रहता है। इसके रोगी बराबर खूँटते और नाकमें अंगुली घुसेड़ते रहते हैं।

ब्रायोनियामें दाँतमें दर्द होता है। गर्मीसे बदतर, "खानेके समय फाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दाँतका दर्द।" गर्म पेय, गर्म खाद्य तथा गर्म कमरेमें बढ़ जाता है। मुँहमें ठण्डा भोजन रखना चाहता है, ठण्डी हवामें रहना चाहता है, पर हिलने-डोलनेसे बदतर हो जाता है। "दाँतका दर्द ठण्डे पानी या दर्दवाली करवट लेटनेसे घटता है।" दर्द-भरे दाँतको कसकर दबानेसे घटता है। "धूम्रपान करनेपर दाँतका दर्द बढ़ना।" आप देखिये, कि किस तरह ठण्डेसे बराबर आराम पहुँचता है और गर्मीसे तकलीफ बढ़ती है। हमलोगोंको यह आकारगत लक्षण जो रोगीकी सार्वाङ्गिक अवस्थाको प्रकट करते हैं, सदा ध्यानमें रखना चाहिये। ज्यों-ज्यों हमलोग इसके भीतर प्रवेश करेंगे, त्यों-त्यों देखते जायेंगे, कि रोगीके करीब-करीब सभी लक्षण हिलने-डोलनेसे बदतर होते हैं, तापसे बदतर हो जाते हैं प्रभृति। रोगी बराबर कहता है, कि प्रत्येक स्थानपर, जिसपर हम पहुँचते हैं, दबावसे आराम पहुँचता है। अन्तमें हम इस निर्णयपर पहुँचते हैं, कि ये सार्वाङ्गिक लक्षण हैं। हमें दो दवाओंमें, इस श्रेणीके लक्षण प्राप्त होते हैं और इतनेपर भी वे सभी विपरीत पदार्थोंसे बदतर होते हैं। इस तरह आप देखते हैं, कि आकारगत लक्षण निर्देश धारते हैं और दवाओंका विपरीत निर्देश करते हैं। यही आकारगत लक्षणोंसे दवाओंका अध्ययन है, क्योंकि आकारगत लक्षणोंमें कभी-कभी सुदृढ़ सार्वाङ्गिक लक्षण रहते हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य न होगा, कि ब्रायोनियामें स्वादकी अनुभूति नष्ट हो जाती है। इस तरह यदि उसे नाककी सर्दी हो जाती है, तो किसी

चीज़का भी स्वाभाविक स्वाद नहीं मिलता, केवल मानसिक शिथिलता ही नहीं रहती, बल्कि उसकी अनुभव शक्ति भी शिथिल पड जाती है। सम्पूर्ण दशा सुन्न पड जाती है। "स्वाद बिगडा, बेस्वाद और लसदार रहता है।" उसकी मानसिक शक्ति इतनी आक्रान्त हो जाती है, कि वह इतना भी नही समझ पाता कि वह वहाँ है, सोचता है, कि वह घरके बाहर है। यहाँतक कि उसकी जीभ भी भरपूर काम नही देती, जिससे कि कोई खट्टी चीज़ तीती अनुभव होती है, उसकी अनुभव शक्ति उसे धोखा देती है। "जीभपर गाढा सफेद आवरण चढा रहता है।" टाइफायडमें, लघु-मस्तिष्कको बीमारीमें, गल-क्षतमें, न्युमोनियामें तथा श्वास-यन्त्रकी सभी बीमारियोंमें, वात रोगोंमें जीभपर मोटा आवरण रहता है। "सूखी, रक्त बहती हुई तथा पपडियोंसे ढँकी।" टाइफायड ज्वरमें ऐसी ही जीभ मिलती है। सूखी, भूरी, फटी, रक्त बहती हुई जीभ। जब उसे सर्दी लग जाती है, तो मुँह सूख जाता है। ब्रायोनियाके रोगीको तेज़ प्यास रहना बहुत साधारण बात है, उसे अधिक-अधिक अन्तरपर बहुत सा पानी पीना पडता है। इस सूखी, भूरी जीभके साथ, यद्यपि उसे पानीका स्वाद नही मिलता और उसे पीना नही चाहता, **नक्स-मस्कैटा**की तरह सूखा मुँह, पर प्यास नही रहती है। "मुँहके घाव, "मुँहसे दुर्गन्ध।"

सुई गडनेकी तरह दर्द, कण्ठ सूखे चमडेकी तरह दिखाई देना और देर-देरतक बहुत ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी प्यासके साथ ब्रायोनियामें अस्पष्ट मुख-क्षत भी होता है। 'कण्ठमें क्षत होनेकी धातुगत प्रवणता", कण्ठमें छोटे-छोटे सफेद दाग।

अब हम पाकाशय-सम्बन्धी इच्छा, अनिच्छापर आते हैं। ये भी बहुत परिवर्त्तित हो जाती हैं। खानेके बाद वह बदतर हो जाता है, पाकाशयकी पाचन-शक्ति नष्ट हो जाती है और इसीलिये उसकी खानेकी इच्छा नही होती। "तुरन्त चीजोंकी इच्छा करता है, पर जब वे दी जाती हैं, तो इनकार कर जाता है।" वह परिवर्त्तनशील रहता है, नही जानता, कि वह क्या चाहता है। पाकाशयको जो चीजे अरुचिकर होती हैं, उसकी ही मनमें लालसा किया करता है, पर जब वह उन्हें देखता है, तो उनसे इनकार कर जाता है। इसकी बुद्धि विचलित हुई रहती है। वह खट्टे पदार्थों की इच्छा करता है। "दिन-रात तेज़ प्यास बनी रहती है," वह ठण्डा पानी पीना

चाहता है। 'देर-देरपर ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी प्यास।" बहुत-सी दवाओंमें सभी समय पानी ओठसे लगाये रहनेका लक्षण है, पर ब्रायोनियामें अधिक मात्रामें पानी पीनेपर प्यास तुरन्त बुझ जाती है। **आर्सेनिकमें** पानी पीनेसे प्यास नहीं बुझती, रोगी अक्सर थोड़ी मात्रामें पानी पीनेकी इच्छा करता है।

ब्रायोनियाकी पाकाशय-सम्बन्धी बीमारियाँ गर्म पेयसे घटती हैं। यह एक खास बात है, कि रोगी ठण्ढा पेय चाहता है, किन्तु उसका पाकाशय गर्म पेयसे ही ठीक रहता है। ज्वर, सरकी बीमारियाँ तथा ज्वरकी दशामें वह ठण्ढी चीजें चाहता है, जिनसे अक्सर खाँसी और दर्द बढ जाते हैं, पर गर्म पेय, जिसकी उसे इच्छा नहीं रहती, पाकाशय और आँतोंकी तकलीफोंमें आराम पहुँचाते हैं। जाड़ा लगनेके समय ब्रायोनियामें अक्सर बरफ-मिले पानीकी इच्छा होती है, जिससे उसका जाड़ा भयानक रूपमें बढ जाता है और गर्म पानीसे आराम पहुँचता है। "ठण्ढे और खट्टे पेयोंकी इच्छा।" गरिष्ट चर्बी-मिले पदार्थोंसे अनिच्छा, सभी तेलही चीजोंसे। "उन चीजोंकी इच्छा, जो मिल नहीं सकती।"

जब कोई रोगी धातुगत दवाओंकी क्रियाके अन्तर्गत रहता है, तो उन्हें कितने ही खाद्योंसे अपनेको बचाना पड़ता है, जो उनकी धातुगत दवाओंकी क्रियाके विपरीत पड़ती हैं। जैसे ब्रायोनियाके रोगीको अक्सर जर्मन देशके बाधा कोबीका अचार (Sauber kraut), उद्भिज्जोंकी कच्ची तरकारियाँ, मुर्गीके बच्चेका सलाद प्रभृति। इसमें आपको उस अवस्थामें आश्चर्य न होना चाहिये, जब धातुगत अवस्थाके लिये ब्रायोनियाकी एक खुराक देनेके बाद आपकी रोगिनी आपसे आकर यह कहे, कि इनमें कुछ चीजें खानेके कारण आपकी रोगिनीकी बीमारी बहुत बढ गयी है। **पल्सेटिलाके** प्रभावमें रहनेवाले व्यक्तियोंके लिये यह आवश्यक है, कि चर्बी-मिले पदार्थ त्याग दें, क्योंकि बहुत-कर वे औषधिकी क्रियाको गड़बड़ा देते हैं। **लाइकोपोडियमके** रोगीको यह बता देना अच्छा रहता है, कि—"देखो! तुम आयस्टर (शुक्तिका) मत खाना, जबतक यह दवा खाते रहोगे।" ये दवाएँ पाकाशयमें कितनी ही शत्रुभावापन्न (Inimical) अवस्था उत्पन्न करती मानी जाती हैं। कितनी ही दवाओंका तो अम्ल तथा नेबुओंसे बहुत ज्यादा शत्रुभावापन्न सम्बन्ध है।

यदि आप विशेषकर यह बात न बताकर, कहे—"आपको विनिगर (अम्ल पदार्थ) या नेबू स्पर्श न करना चाहिये तथा यह दवा खाते समय नेबूका रस न पीना चाहिये, नहीं तो आपको दवा नष्ट हो जायगी और तब देखे, कि ऐसा क्यों हुआ। दवाएँ अकसर क्रिया करना बन्द कर देती है तथा रोगीके पाकाशय और आँतोंको अवस्था बिगड जाती है। जिस दवाको बहुत दिनोंतक क्रिया करना चाहता था, वह अपनी क्रिया बन्द कर देती है। आप नहीं जानते, कि क्या तकलीफ़ है। होमियोपैथी ऐसी चीजोंको हटा देगी, जो दवाओंसे शत्रुभावापन्न हैं और साधारणत रोगोसे शत्रुभावापन्न रहती है या किसी विशेष प्रकृतिवालोंसे समता नहीं खाती। एक कठोर शासन अच्छी चिकित्सा-पद्धति नहीं है। कठोर शासन-नियम तो यह होना चाहिये, कि इस बातका विश्वास हो, कि जो दवा आप दे रहे हैं, वह रोगीके सदृश है और जो चीजे वह खाता है, वे इस दवाकी समतामें हैं। **रसटक्स**के प्रभावमें रहनेवाले किसी रोगीके लिये तथा जो इससे कुछ दिनोंतक फायदा भी हुआ है, यह कोई असाधारण बात नहीं है, कि नहा लेनेके बाद **रसटक्स**को दशामें उसके लक्षण वापस लौट आते है। दवाको क्रिया इस स्थानपर आकर ठीक रुक जाती है। इसमें सन्देह नहीं, कि उसे स्नान करना चाहिये, पर इतनेपर भी यह सत्य है, कि **रसटक्स**के कुछ धातुगत रोगीको उनका साधारण स्नान बन्द कर देना चाहिये, जिसमें कि वे **रसटक्स**के प्रभावमें ठीक-ठीक रह सकें। **कैल्केरिया**में भी यही बाते हैं—स्नान दवाके प्रभावको रोक देगा। मैं ये बातें आपको यही दिखानेके लिये कह रहा हूँ, कि दवाको क्रियाके अनुसार रोगीको खिलाना-पिलाना और चिकित्सा करना कितना आवश्यक है। यह सिद्धान्तके अनुसार होना चाहिये, न कोई नियम ही बना लिया जाये अपने रोगीके लिये एक प्रकारके खाद्यको कोई सूची न तैयार कर लीजिये, हर मनुष्यके लिये एक ही सूची न रखिये। होमियोपैथीमें ऐसी कोई बात नहो है।

सबसे आश्चर्य और विचित्र बात तो यह है, कि भोजनके बाद स्वय रोगी ही बदतर हो जाता है। भोजनके बाद खाँसी बढ जाती है, सरकी शिकायतें, सर-दर्द, भोजनके बाद बढ जाता है, भोजनके बाद श्वासको तकलीफ बढ़ जाती है। भोजनके बाद वायुसे पाकाशय तना रहता है, पर खासकर आयस्टर (शुक्तिका) खानेके बाद। नियमानुसार आयस्टर शुक्तिका कोई घातक खाद्य नहीं है, पर इतनेपर भी यह कितनोंको विषकी तरह क्रिया करता

है। "खाने-पीनेके बाद बदतर।" जब हूपिङ्ग खाँसीका कोई रोगी रहता है, तो भोजनके बाद कुछ देरतक उसकी खाँसी बदतर हुई रहती है। आवेश बहुत ही प्रचण्ड रहता है और सभी लक्षण खानेके कुछ देर बाद बदतर हो जाते हैं, पर इसके बाद, जब उनका पाचन हो जाता है और पाकाशय खाली हो जाता है, तो उसे बहुत कुछ आराम पहुँचता है। ब्रायोनियाका रोगी साधारणतः पीनेके बाद अच्छा रहता है, पर यदि खूब गरमाये रहनेपर, वह ठण्डा पानी पी लेता है, तो उसके सभी वातके लक्षण बदतर हो जाते हैं, खाँसी बदतर हो जाती है और सर-दर्द भी बदतर हो जाता है। गरमाये रहनेकी अवस्थामें ठण्डा पानी पी लेनेपर उसे प्रचण्ड सर-दर्द हो जायगा। **रसटक्स**का रोगी जब गरमाया रहता है, उस समय यदि ठण्डा पानी पी लेता है, तो उसकी बीमारी बढ़ जाया करती है। सर-दर्द बढ़कर धमक और फाड़नेकी तरह दर्दमें उससे दसगुना बढ़ जाता है, जितना कि पानी पीनेके पहले था।

ब्रायोनियाके रोगीको हिचकी, ओकाई, मिचली, वमन सभी हो सकता है। इस तरह विकृत पाकाशय तो साधारण बात है। तीती डकारें, तीता, जी मिचलानेवाला स्वाद। उसे पित्तजी के होती है। खा लेनेके बाद ये सभी बातें बढ़ जाती हैं। पाकाशय तथा उदरमें विकृत पाकाशयके बहुत-से लक्षण प्राप्त होते हैं या सर्दी लग जानेके कारण या बहुत गरमा जानेके कारण या गरमाये रहनेपर बरफ मिला पानी पीनेके कारण बहुत-से लक्षण पैदा हो जाते हैं। बिगड़ा हुआ पाकाशय, पाकाशयका उपदाह, जिससे बिना असीम वेदना हुए वह कुछ खा नहीं सकता और ऐसा तबतक बढ़ता रहता है, जबतक प्रादाहिक अवस्था समस्त पाकाशय तथा उदरको आक्रान्त नहीं कर लेती, दबानेपर स्पर्श सहन नहीं होता है, यह पाकाशय अन्त्राशय प्रदाहके रूपमें निदान किया जा सकता है। इसके साथ घावकी तरह यन्त्रणा, स्पर्श-कातरता, सुई गड़नेकी तरह, जलनकी तरह दर्द—ये सभी हिलने-डोलनेपर बढ़ जाते हैं। मिचली, वमन, अतिसार, फूला हुआ तलपेट, चल-फिर नहीं सकता, क्योंकि यह दर्दको बहुत बढ़ा देते हैं।

उदर तथा पाकाशयके दर्दों के सिवा, ब्रायोनियासे अन्य दर्द **दबानेपर अच्छे रहते हैं।** इन प्रादाहिक अवस्थाओंवाला ब्रायोनियाका रोगी अकसर चुपचाप पलङ्गपर घुटने ऊपरको ओर मोड़े पड़ा दिखाई देगा।

औदरिक पेशियोंको शिथिल रखनेके लिये प्रत्यङ्ग फैलाये पड़ा दिखाई देगा, वह बोलना या कुछ सोचना नहीं चाहता, हर क्षण वह दर्दसे भरा रहता है और ज्वरको बढ़ा देता है और अकसर पर्यायक्रमसे शीत और ताप होता है, खाँसी बोखार।

ब्रायोनियाके रोगीको एकदम चुपचाप पड़े रहनेके समय, कभी-कभी मिचली बिल्कुल नहीं होती पर ज्योंही वह तकियेसे सर उठाता है, भयानक मिचली पैदा हो जाती है, इससे वह बैठ नहीं सकता। वह मिचलीके कारण बिछावनपर बैठ नहीं सकता और यदि बैठ जाता है, तो ज्यादासे अधिक मिचली पैदा हो जाती है, साथ ही पाकाशयमें जलन होती है। प्रत्येक बार गतिके साथ उसे थोड़ा-सा श्लेष्मा और लार निकलती है, जिसमें सड़ी गन्ध रहती है।

प्रत्येक प्रकारका दर्द पाकाशय और आँतोंमें अनुभव होता है, पर विशेषकर सुई गड़ने और जलनकी तरह दर्द, उसे ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशय फट जायगा, मानो तलपेट फट जायगा। अन्त्रावरक-झिल्लीसे निकलना। भयङ्कर घावकी तरह यन्त्रणा। पाकाशय-गह्वरमें स्पर्श-असहिष्णुता और समस्त तलपेटमें अत्यधिक स्पर्श-कातरता। इससे साधारण गर्मीसे आराम पहुँचता है, यद्यपि रोगी स्वयं ठण्ढे कमरेमें पड़ा रहना चाहता है। कमरेकी गर्मी उसे कष्टदायक प्रतीत होती है, पर गर्म प्रयोग उसे रुचिकर मालूम होता है। प्रत्येक बार खींची हुई साँस, वक्षकी प्रत्येक गति उसके दर्दको बहुत बढ़ा देते हैं, जिससे आप ब्रायोनियाके रोगीको गहरी साँसके बदले छोटी श्वास लेते देखेंगे। ऐसा वह तबतक करता रहता है, जबतक इसे सहन कर सकता है और इसके बाद फिर लम्बी साँसें लेने लगता है जिससे कराहनेकी आवाज़ पैदा हो जाती है। पाकाशयिक प्रादाहिक रोग और विक्षत पाकाशय। जवान लड़कियोंमें मासिक रज'-स्राव रुक जानेके कारण पाकाशयिक रोग, पाकाशय प्रदाह, पाकाशय अन्त्राशय-प्रदाह।

ब्रायोनियामें यकृतका प्रदाह तथा यकृतके अन्य लक्षण भी हैं। यकृत, खासकर उसका दाहिना खण्ड, एक भारकी तरह कुक्षिदेशमें पड़ा रहता है। दबानेपर यन्त्रणा और स्पर्श-असहिष्णुता रहती है और वह चल-फिर नहीं सकता। प्रत्येक गति, प्रत्येक स्पर्श, प्रत्येक गहरा श्वास, उस यन्त्रमें दर्द पैदा

कर देता है, जैसा कि औदरिक गह्वरमें। श्वास लघु-तीव्र रहता है और इसके बाद जब गहरी साँस ली जाती है, तो इससे यकृतमें दर्द पैदा हो जाता है। यह दर्द जलनकी तरह, सुई गड़नेकी तरह होता है। इसके साथ ही उसका पेट गड़बड़ाया रहता है, मिचली और ओकाई हिलने-डोलनेपर बढ़ जाती है, पित्तकी कै होती है। सुई गड़नेकी तरह दर्द, सीखें गड़ने और जलनकी तरह यकृतमें दर्द। "दाहिने कुचिदेशमें नोंकदार सीखें गड़नेकी तरह अनुभव होना।" यह सब यकृतमें होता है। जब रोगी खाँसता है, तो ऐसा मालूम होता है, मानो यकृत और कुचिदेश फट जायगा। खाँसनेके समय बहुत तेज़ दर्द।

ब्रायोनियामें मल तथा मलान्त्रके भी बहुत से लक्षण प्रकट होते हैं। इसमें कब्ज और रक्तामाशय भी रहता है। रोग-तत्व इन अवस्थाओंसे भरा रहता है तथा उन रोगी अंशोंके भी बहुत-से लक्षण शामिल रहते हैं। कब्जमें मल सूखा और कड़ा, जले हुएकी तरह रहता है। पाखाना लगता ही नहीं, पर कई दिनोंतक कब्ज रहनेपर, कुछ कड़ा मल इस तरहका निकलता है, मानो वह जल गया है। उन अंशोंमें जरा भी रस नहीं रहता, कड़े मलको कोमल करनेके लिये जरा भी श्लेष्मा नहीं रहता। यदि थोड़ा-सा श्लेष्मा रहेगा भी तो वह अलग ही निकल पड़ेगा। कभी तो मल कुछ छोटे कड़े टुकड़ोंसे भरा रहता, जो जले हुएकी तरह दीखते हैं। कभी-कभी तो थोड़ा मल निकलता है, फिर बहुत-सा निकल पड़ता है और इसके बाद श्लेष्मा निकलता है, मानो मलके पास ही बहुत-सा श्लेष्मा भी पड़ा हुआ था। बहुत ही अदम्य कब्जमें ब्रायोनिया कभी-कभी उपयोगी होता है। इसमें पतले दस्त भी आते हैं, जिससे रोगीको सवेरे ही पाखाने जाना पड़ता है अर्थात पहली बार ही बिछावनमें हिलना-डोलना आरम्भ करनेपर उसे मिचली मालूम होने लगती है। उदर-शूलसे वह घबड़ाया और तना रहता है और उसे पाखाना लग आता है या उठने और आँतोंको इधर-उधर हिलानेपर, उसे तनाव-भरा उदर-शूल उत्पन्न हो जाता है और उसे दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है। कभी-कभी तो बहुत ज्यादा दस्त होता है, बार-बार होता है और ज्योंही रोगीको दस्त हो जाता है, त्योंही वह क्लान्त हो पड़ता है, मुर्देकी तरह पड़ जाता है, पसीनोंसे भर जाता है। वह इतना अधिक क्लान्त हो जाता है, कि वह मुश्किलसे दूसरी बार पाखानेकी जगहतक पहुँच सकता है और फिर

बहुत झोंकसे, बहुत ज्यादा पित्त-मिला दस्त होता है। यदि लेटनेके समय यह जरा भी हिलता डोलता है, तो उसे दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है। ब्रायोनियासे भयानक से-भयानक कष्ट तथा मरोड़ तथा तलपेटमें दर्द तथा खून और श्लेष्माका स्राव भरा रक्तामाशय आरोग्य होता है। कब्जके समय कांखनेपर कोई लाभ नहीं होता. उसे कई बार पाखाना लगता है, जाता भी है, पर बेकार होता कुछ भी नहीं है। ऐसा मालूम होता है कि मल मलान्त्रमें रहता है, यद्यपि उसे बाध्य होकर कांखना पड़ता है। जोर लगानेकी शक्ति नहीं रहती और क्रिया भी नहीं होती। साधारणत उसमें भरपूर शक्ति रहती है और मल निकल भी सकता है, पर मल सूखा रहता है। ब्रायोनियामें एक दूसरी तरहका अतिसार भी रहता है। यह पीले भुट्टेकी चूरकी तरह होता है। टाइफायडके रोगियोंको ऐसा पाखाना होता आप देखेंगे। पीला, भुट्टेके आटेकी तरह पाखाना। इसमें कभी-कभी आम और लार-मिली रहती है, कभी खून। चिकित्सकके लिये, यह जान रखना लाभ-दायक है, कि यह टाइफायड अवस्थामें होता है या पुराने अतिसारके रूपमें हो रहा है। ब्रायोनियाने संग्रहणी (Chronic diarrhoea) के बहुत-से रोगी आरोग्य किये हैं, जब बार-बार पीले भुट्टेके आटेकी तरह दस्त आते थे। दिनमें कई बार, पर खासकर सवेरेके वक्त। कभी कभी रोगीको कई दस्त सवेरे हो जाते हैं, जो २४ घण्टोंके लिये काफी होते हैं या तीसरे पहर एक या दो दस्त आते है और पाँच या छ बार सवेरे। रातके समय बिलकुल ही दस्त नही आते क्योंकि जब वह बिछावनपर शान्त आरामसे पड़ा रहता है, तो उसे बहुत पाखाना नही लगता, प्रत्येक बारका हिलना-डोलना या पैरोंके बल खड़े होना, पाखानेका वेग बढा देता है। इस तरह कोई-कोई इसे केवल दिनके समयका अतिसार सोचेंगे और इसे **पेट्रोलियम** ही से सम्बन्ध करेंगे, पर **पेट्रोलियममें** रातमें रोगी कितना ही क्यों न चले-फिरे, उसे पाखाना न लगेगा, बल्कि सभी दस्त दिनके समय ही होंगे। यहाँ कहा है—"अतिसार बदबूदार, पुराने पनीरकी तरह उससे गन्ध आती है।" 'बहुत बदबूदार।" "भूरे, पतले मल भरे दस्त।" कभी ब्रायोनियाके पुराने रोगी स्वय ही अपने खाद्यका प्रबन्ध करते हैं, केवल पतले तरल पदार्थ पीते हैं, कड़ी चीजें प्रभृति त्याग देते हैं और इतनेपर भी वह खाद्य ज्यों-का-त्यों बिना पचा दूसरे दिन निकल आता है। खाये हुए पदार्थ-मिले दस्त

(Lienteric stool)। "पाखाना लगनेपर बहुत-सा लेईकी तरह दस्त हो जाता है।" "नीदके समय आप-ही-आप पाखाना हो जाना।" "प्रत्येक बार दस्तके समय मलद्वारमें जलन।" यह खासकर रातमें होता है। यदि रोगी इधर-उधर हटता है, पर ज्यादाकर दिनके समय ही दस्त आते हैं और प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर दस्त लग आयगा।

इस दवामें बहुत-से पेशाब-सम्बन्धी लक्षण भी हैं। मूत्रपिण्डकी प्रादाहिक अवस्था, गुलाबी रङ्गकी पेशाबमें तली जमना, यूरिक एसिडके दाने, पेशाब बहुत ज्यादा। जब कभी वह अपनेको उठानेकी चेष्टा करता है या कोई गैरमामूली गति होती है, तो मूत्रपिण्डमें दर्द होता है। रक्त-सञ्चयी और बहुत देरतक रहनेवाला दर्द हो जाता है। यह गुर्देकी बीमारीके साथ गठियाकी प्रकृति है, जिससे कि बहुत गरमा जाने या ज्यादा परिश्रम करनेपर उसकी पीठमें दर्द हो जाता है। "पेशाब करनेके समय दबाव और आप-ही-आप पेशाब होते जाना।' "मूत्रनलीमें जलन, जब पेशाब नहीं होता रहता है।" पेशाब हो जानेपर अच्छा हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रियके भी बहुत-से भयङ्कर लक्षण हैं। दर्द-भरा मासिक रज-स्राव, बाधक, रज'-स्रावके समय डिम्बाशयमें दर्द, प्रत्येक ऋतु-कालमें डिम्बकोषमें स्पष्ट रक्त-सञ्चय रहता है तथा छूनेपर स्पर्श सहन नहीं होता। रोगिनी बतायेगी, कि मासिक ऋतु-स्रावका समय आनेपर दोनों वंक्षणोंमें स्पर्श-कातरता पैदा हो जाती है, ज्यों-ज्यो महीना होनेका समय पास आता जाता है, त्यों-त्यों यह बढ़ता जाता है, यहाँतक कि यह स्पर्श-कातरता उदरको पारकर चली जाती है और मिल जाती है और फिर सम्पूर्ण तलपेटमें मासिक ऋतु-स्रावके समय दर्द होता है। जरायु भी यन्त्रणा-पूर्ण रहता है और कुक्षि-प्रदेश स्पर्श-असहिष्णु, जरायुका प्रदाह, जरायु-गात्र या जरायु-मूलमें अधिककर जलनकी तरह दर्द होता है। व्रायोनियाकी रोगिनीको (ऐमो-नोरिया) रज.स्वल्पता हो जा सकती है या जरा भी उत्तेजना प्राप्त होनेपर स्राव रुक जा सकता है। मासिक ऋतु-स्रावके कुछ दिन पहले यदि परिश्रमसे वह ज्यादा गरमा जायगी जैसे कि कुछ दिनोंतक कपड़ा धोने और उसपर इस्त्री करनेपर होता है तो उसे हमेशासे बहुत ज्यादा तकलीफ होगी, स्राव रुक जायगा और दूसरे महीनेमें पहलेकी अपेक्षा अधिक तकलीफ होगी। जवान रक्त-पूर्ण स्त्रियोंकी कड़े परिश्रमके बाद, ये शिकायतें इसी तरह उत्पन्न होती हैं।

अचण्ड परिश्रम और फिर थोड़ा पेशाब। तलपेटमें घावकी तरह यन्त्रणा, पर स्राव जारी नहीं होता या घोर परिश्रमके बाद कई दिनोंतक रुका रह जाता है। राज पूर्ण लड़कियोंको थोड़ा पेशाब और मासिक ऋतु स्राव रुका हुआ।

अधिक परिश्रम और गरमा जानेपर गर्भपात हो जानेकी सम्भावना। स्तन-प्रदाहमें तथा सूतिकावस्थामें दूधका रुक जाना, इनमें भी ब्रायोनियापर ध्यान देना चाहिये। दुग्ध ज्वर, दर्द तथा स्तनकी सूजनमें ब्रायोनियाका अध्ययन कीजिये। सूतिका कालमें गरमा जानेपर किसी स्त्रीको स्वभावतः ही पसीना होने लगता है। ठीक प्रसव होनेके बाद, यदि दाई और डाक्टर खयाल नहीं करते और उसे बहुत वस्त्र ओढ़ा देते हैं या कमरा बहुत गर्म रखते हैं, तो एकाएक पसीना रुक जाता है और इससे दुग्ध-ज्वर पैदा हो जाता है या दूसरे ज्वरके लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, जिनके लिये ब्रायोनियाकी ही जरूरत पड़ती है। ऐसे ही कारणोंसे अन्त्रावरण-प्रदाह, सूजाककी तकलीफें, पुराने वातज कष्ट, दर्द तथा यन्त्रणाएं आदिका डर रहता है, यदि थोड़े ही हिलने डोलनेसे बदतर हो जाती है। पसीना रुकनेकी अपेक्षा पूयज ज्वरके कारण, साधारणतः गहराईतक काम करनेवाली औषधिकी जरूरत पड़ेगी। स्तनकी प्रादाहिक अवस्थामें सबसे ज्यादा ध्यान देनेकी चीज है। स्तनका पत्थरकी तरह कड़ापन, उसका कड़ापन और भारीपन। दूसरे समय भी ब्रायोनिया अक्सर स्तनके प्रदाहके लिये उपयोगिनी होती है। ऋतु स्रावके पहले स्तनका भार और कड़ापन।

अब हम फिर श्वास-पथपर आते हैं, जिसपर अबतक हमने सकेत कर लिया था और अब यहां उसका भरपूर अध्ययन करना चाहते हैं। अमूमन ब्रायोनियाकी बीमारियां सर्दी लगकर उत्पन्न होती हैं। पहले यह आवाजका बन्द होना हो सकता है, साथ ही टेंटुआमें खाल उधड़नेका भाव और वक्षमें बहुत यन्त्रणा, सूखी खुसखुसी खांसी मानो खांसनेपर वक्ष फट जायगा। ब्रायोनियाका रोगी बैठकर माथा पकड़ लेता है या वक्षको पकड़ लेता है, खांसनेके समय दोनों हाथोंसे छातीको दबाता है। ऐसा अनुभव करता है मानो खांसनेके समय वक्ष टुकड़े टुकड़े होकर उड़ जायगा। वक्षमें दोनों ही तरफ दर्द, पर ज्यादातर दाहिनी तरफ। ब्रायोनिया दाहिने पार्श्वको ज्यादा पसन्द करता है जब **न्युमोनियाकी** बीमारी रहती है। हम पहले एक सर्दी लगा रोगी देखते हैं, सर्दी वायु-पथोंमें उतर गयी है, स्वर-भङ्ग,

वक्षमें खाल उधडनेका भाव और खाँसी आती है, खाँसी समूचे शरीरको हिला देती है। इसके बाद जोरोंका जाडा लगता है, अब रोगी खाटपर पड जाता है और जब चिकित्सक रोगीको देखता है, तो वह मदाइकी अवस्था देखता है और उसका मतलब समझ जाता है और सुननेपर न्युमोनियाका निदान मान लेता है। रोगी हाथ या पैर नहीं हिला सकता, दर्द अधिककर दाहिने फेफडेमें होता है और उसे बाध्य होकर दाहिनी करवट लेटना पड़ता है या पीठके बल और हिलने-डोलनेसे डरता है। कभी-कभी फुसफुसावरक-झिल्ली आक्रान्त हो जाती है और तेज़ दर्द होता है। प्रत्येक बार श्वास छोडनेके साथ तेज़ दर्द होता है, यह प्लुरो न्युमोनिया हो या सरल न्युमोनिया, पर हम यह देखते हैं, कि ब्रायोनियाका रोगी तकलीफ़वाली करवट ही लेटता है। दर्दवाली करवट, श्वाससे पैदा हुई गतिको घटाये रहनेके लिये और यदि वह उसे पकड नहीं सकता, तो उसका हाथ ही देखनेके लिये उसके नीचे रहेगा। ब्रायोनियाका बलगम लाल आभा लिये निकलता है, जङ्गकी तरह होता है और यदि आपका यह लक्षण मिले और दाहिनी ओर बीमारी हो, तो यह बहुत ही सुदृढ ब्रायोनियाका रोगी है। बहुत-सी ऐसी दवाएँ हैं, जो करीब-करीब ब्रायोनियाकी तरह ही हैं। उदाहरणार्थ—किसी रोगीको जोरका ज्वर, अत्यधिक ताप, बहुत उत्तेजना है और जिस तेजीसे बीमारीका दौरा हुआ है, उसपर भी ध्यान दीजिये। **बायीं** ओर आक्रमण हुआ है, बर्त्तनमें आपको लाल चमकीले रक्तके साथ बलगम मिलता है, तो उसकी दवा **ऐकोनाइट** होगी। यदि यकृत आक्रान्त हो रहा है उस पार्श्वमें भरापन है, यकृतमें सुई गडनेकी तरह दर्द है और चेहरा पीला हो रहा है, तो ब्रायोनियाका उपयोगी होना असम्भव नहीं है, क्योंकि इसमें ऐसी बातें हैं, पर बहुत ही तेज़ दर्दके साथ, जो लगातार सामनेसे पीठकी तरफ दाहिने कन्धेकी राहसे जाता है, बीमारी है, तो ब्रायोनियाकी अपेक्षा **चेलिडोनियमसे** आरोग्य होनेकी विशेष सम्भावना है। ये तुलनाएँ सदा करते रहना चाहिये, पर ब्रायोनियाका अध्ययन, श्वास-यन्त्रके सम्बन्धमें एक अद्भुत चीज़ है। उन सर्दियोंमें, जिनका अन्त स्वर-भङ्गमें होता है। स्वर-यन्त्रमें जलन और सुरसुरी होती है, लगातार खाँसी आती है। गवैयोंका स्वर-भङ्ग और स्वर-रोध। टेटुआमें बहुत यन्त्रणा, टेटुआमें कचावट और खाल

उधड़ना, यहांतक कि फास्फोरसकी भांति श्वास-रोध। ब्रायोनियाका श्वास हांफनेकी तरह और बहुत तेज़ होता है। श्वास लघु पर तीव्र श्वास, इस वजहसे गहरी सांससे तकलीफ़ बढ़ जाती है। ब्रायोनियाका रोगी गहरी सांस लेना चाहता है, गहरी सांसकी इच्छा करता है, गहरी सांसकी उसे जरूरत रहती है, पर इससे उसे बहुत ज्यादा आघात पहुँचता है। "हमेशा उसासें लेनेकी इच्छा," पर ले नहीं सकता, क्योंकि इससे उसे चोट पहुँचती है। श्वासका लघु होना—श्वास-रोध, दमा। अत्यधिक गर्म हो जानेके कारण दमाका दौरा, गर्म कमरेमें दमा बहुत बढ़ जाता है, रोगी ठण्डी हवाकी इच्छा करता है। "सूखी, आक्षेपिक खाँसी, क्रुप खाँसी, सारे शरीरको हिला देती है।" खाँसीके कारण, उसे इच्छा न रहनेपर भी पलङ्गपर उछल जाना पड़ता है। कष्टकर श्वासके साथ दर्द-भरी खाँसी, खाँसी, जो सारे शरीरको हिला देती है। कड़ा, कष्टकर बलगम, 'रातमें और शामके वक्त खाँसी, सूखी खाँसी।"

अब इससे ज्यादा ब्रायोनियाके विषयमें कुछ कहना दुहराना होगा। यदि आप सावधानता-पूर्वक पाठ्य विषयको पढ़ेंगे और जो कुछ कहा गया है, उसका प्रयोग करेंगे, तो इस दवाकी सार्वाङ्गिक प्रकृति और धारणा आपमें आ जायगी। आप इसकी मूर्त्ति देखेंगे और आप इसे अपने कामके योग्य बना लेंगे यदि आपके पास पूरा पाठ्य-ग्रन्थ है।

ब्यूफो।

(Bufo)

मेंढककी गर्दनके पीछे जो छोटी गाँठें रहती हैं, उन्हें यदि छुरीसे छेद दिया जाये, तो एक प्रकारका रस चूने लगता है, जो अलकोहलमें मिश्रित हो जाता है। इसीकी परीक्षा की गयी है और इसी विषयपर आज हम विचार करेंगे। हम ब्यूफो सैटिह्यियेनिसका ही व्यवहार करते हैं। ब्यूफो एक आश्चर्यजनक दवा है, यह मन और खासकर बुद्धि-शक्तिपर गहरी क्रिया करती है। इसमें चित्त-विभ्रम और याददाश्तकी कमी भी शामिल हो जाती है,

पर वह पूरी तरह आरोग्य भी नहीं होता। पुरानी बीमारियाँ फिरसे उत्पन्न हो जायँगी, पुराना सूजाक उभड़ पड़ेगा और पुराना उपदंश फिरसे प्रकट हो जायगा तथा श्लैष्मिक-झिल्लियोंपर जखमोंका आक्रमण हो जायगा प्रभृति। गहरी क्रिया करनेवाली औषधि देनेपर ऐसी गड़बड़ियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, जो भीतर छिपी सभी बीमारियाँ निकाल दे।

"नाककी ठोरमें झटका लगकर आक्रमण रुकना।" "तलवेकी हड्डीके आकारकी सूजन।" "आक्रमणके पहले बाहु कड़े पड़ जाते हैं।" "बायें बाहुका सुन्नपन।" "हाथमें छाले, जो प्रत्येक वर्ष उत्पन्न होते हैं।" "अंगुली या अंगूठेका शोथ (Panaritium), हाथ-पैरोंमें बहुत-सी तकलीफें पैदा हो जाती हैं, पाक्षाघातिक रोग प्रभृति।

गर्म कमरा सहन नहीं होता, गर्म कमरेमें या स्टोवके पास रहनेपर सर-दर्द पैदा होता है और चेहरा और भी तमतमा उठता है, नहानेपर या ठण्डी हवामें अच्छा रहता है। गर्म पानीमें पैर रखनेपर बीमारियाँ अच्छी रहती हैं।

कँपकँपी, नियमसे बँधे समयपर कितने ही मृगीके आक्रमण आरम्भ होते हैं। दूसरे अनियमित समयमें आरम्भ होते हैं। हमारे पास मृगीकी कोई भी दवा नहीं है। इसका क्या यह मतलब है, कि हम मानव-जातिको मृगी भोगते ही पड़े रहने दें? हमारे पास मृगी रोगवाले मनुष्योंकी बहुत-सी दवाएँ हैं, अधिकांश-सम्यक रोगी आरोग्य हो सकते हैं।

इस दवाकी प्रकृतिके सम्बन्धमें जो कुछ कहा जा चुका है, मुझे विश्वास है, कि आप बड़े चावसे इस दवाके लक्षणोंको पढ़ेंगे। जब आप लक्षणोंको पढ़ेंगे, तो ऐसे व्यक्तियोंकी धातु और प्रकृतिके चारों ओर एकत्र हो जायँगी और ऐसी अवस्थाएँ पहले ही बतायी जा चुकी हैं। ऐंठन या अकड़न हो या नहीं, यह एक ऐसी दवा है, जो कमजोर मनुष्यके बच्चोंके विकासके लिये आवश्यक है।

केक्टस ग्रैण्डिफ्लोरस।

(Cactus Grandiflorus)

केक्टसमें सङ्कोचन, खिंचाव और रक्त-सञ्चय सर्वत्र ही है। हाथ-पैरोंमें ठण्डक और माथेपर रक्तका चढ़ जाना या किसी यन्त्रमें रक्तका भर जाना या वक्षमें या हृद्पिण्डमें रक्तका भरना, समूचे शरीरमें खूनका दौरान सम भावसे नहीं होता, यह आक्षेपिक और अनियमित रहता है। सब जगहके गोल-तन्तुओंके सङ्कोचनके कारण यह बिगड़ा रहता है। जब यह ऐसे स्थानमें आता है, जहां इसका अनुभव किया जा सकता है तथा इन्द्रियोंसे अनुभूत हो सकता है तो यह सङ्कोचनकी तरह अनुभव होता है, मानो तारोंके पींजड़ेमें बन्द है और यही केक्टसकी कुञ्जी है। जहां सङ्कोचन अनुभवमें नहीं आता, जहां अनुभूति-इन्द्रियां नहीं हैं, वहां हम जानते हैं, कि गोल सूत्रमय तन्तुओंमें अकड़नकी अवस्था उत्पन्न हो जाती है, पर ये सङ्कोचन, जो अनुभवमें आते हैं, शरीर-पटलपर ही ज्यादा अनुभवमें आते हैं तथा उन स्थानोंमें जहां गोल सूत्रमय तन्तु, नलियां तथा प्रणालियां हैं। ये सिकुड़ते हैं और यह सङ्कोचन ऐंठनकी तरह अनुभवमें आता है। इसमें माथेमें, सीनेमें, वक्षोदर मध्यस्थ पेशीके पास समूचे तलपेटमें एक प्रकारकी कसावट और खिंचाव मालूम होता है। हृत्पिण्डके पासका सङ्कोचन लगातार होनेवाली प्रकृतिका रहता है, मानो कसकर मुट्ठीमें पकड़ रखा है, सङ्कोचन। "हृत्पिण्डके पास सङ्कोचन मालूम होना।" ये सङ्कोचन कण्ठमें, अन्नवहा-नलीमें अनुभवमें आते हैं, जिनसे अकड़न उत्पन्न हो जाती है। जब योनिमें होती है, तो अपत्य-पथमें अकड़न हो जाती है, जो सङ्गमको बन्द कर देती है। जरायुमें इससे बहुत प्रचण्ड मरोड़ पैदा हो जाता है। कसकर पकड़ना और संकोचन, मानो गर्भाशय कसकर पकड़ लिया गया है, ऐंठनकी तरह, परन्तु इन समयोंमें, जब ये संकोचन उत्पन्न होते हैं, रक्त-सञ्चय हो जाता है। "किसी अङ्गमें सङ्कोचनके साथ खून बढ़ जाना।" "जरायुका प्रचण्ड रक्त-सञ्चय, सङ्कोचनके साथ।" वक्षमें खून भर जाना मानो वक्ष रक्तके गर्म झोंकोंसे भर रहा है। इसके साथ ही संकोचन और हृद्पिण्डका संकोचन। ये विशेषताएँ, किसी अन्य औषधिकी अपेक्षा केक्टसमें अधिक दिखाई देती

है। बहुत-सी दवाओंमें ऐसी बातें, जभी-तभी हुआ करती हैं, पर कैक्टसमें यह साधारण बात है। कैक्टसकी प्रकृति ही संकोचनशील है, उन स्थानोंमें संकोचन पैदा करना, जहाँ यह पहले कभी अनुभवमें नहीं आया था और न कभी सोचा ही गया था। समूचे शरीरमें संकोचन, मानो शरीर किसी तारके बने पींजड़ेमें जकड़ दिया गया है। खोपड़ीका संकोचन, चर्मका सङ्कोचन, यह बराबर कसता ही जाता है। एकाएक होनेवाला प्रचण्ड रक्त-सञ्चय, गर्म सर और तमतमाये चेहरेके साथ मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय। रोग आरम्भ होनेके पहले, न्युमोनियाके पहले। शरीर ठण्डा तथा माथा गर्म रहनेके साथ रक्त-सञ्चय-जनित शोत (आर्निकाकी तरह)। इसके साथ ही प्रचण्ड संकोचन और कसावट, मानो माथा दबा दिया गया है, मानो माथेकी झिल्लियाँ बहुत कसी हुई हैं, मानो मस्तिष्क कसकर कपड़ेसे बांध दिया गया है और कस-कसकर पेंच घुमायी जा रही है। किसी यन्त्रका बराबर कसावट, मानो यह कस-कसकर बांध दिया गया है, पर नलियों और प्रणालियोंमें यह विशेष आंशिक-सङ्कोचन है। बहुत बार ऐसा होता है, मानो डोरोसे बँधा है। सङ्कोचन, जरायुमें मानो डामरिक संकोचन (Hour-glass contraction)। इसमें प्रदाह, रक्त सञ्चय, किसी अंशमें खूनका बढ़ जाना, जो धोरे-धोरे बढ़कर प्रदाह और भीतरी रस-स्रावमें जा पहुँचता है। बहुत-से अंशोंका प्रदाह।

इसमें वात रोग है। यह गठिया वात-प्रकृतिवालोंकी एक बहुत ही लाभदायक दवा है, नये प्रादाहिक वातमें बहुत लाभ करती है और इस अवसरपर यह रक्त सञ्चय आक्रान्त होनेवाली सन्धियोंमें होता है और फिर संकोचन, मानो फीतेसे बँधा है या मानो पट्टीसे बँधी है। कसावट, तनाव, दबाव, इस विचारमें सम्मिलित है। इसमें इतने अधिक समयतक हृद्‌पिण्डमें रक्त भरा रहता है, कि हृद्‌पिण्डकी क्रिया गड़बड़ा जाती है, तन्तुओंकी क्रिया बिगड़ जाती है। इसकी हृत्पिण्डपर बहुत ज्यादा आरोग्यदायिनी क्रिया होती है, यहाँतक कि हृद्‌पिण्डके यन्त्र-सम्बन्धी रोग भी आरोग्य कर देती है। जो इस कारणसे उत्पन्न होते हैं अर्थात रक्त सञ्चयसे, वात-जनित संकोचनमें रक्त-सञ्चयकी राहसे होनेमें, जहाँ कि वातने आंशिक रूपसे सन्धियोंको तो छोड़ दिया है तथा हृद्‌पिण्ड आक्रान्त हो गया है तथा हृद्‌पिण्डमें संकोचन है। इसके परीक्षकों और रोगियोंने इस हृद्‌पिण्डके संकोचनका वर्णन देनेकी बहुत-सी

चेष्टाएं की हैं। कभी कभी यह कहा है, कि "मानो हृत्पिण्ड लोहेके पञ्जेसे पकड़ लिया गया है।" यह केवल संकोचनके तनावको बतानेके लिये कहा गया है। इन खास रोगोंमें, जब सन्धियाँ आक्रान्त नहीं होती हैं और हृत्पिण्ड इन पुराने रक्त सञ्चय और विवृद्धिसे आक्रान्त हो जाता है, इसमें फिर विशेषकर विवृद्धि प्राप्त होती है, मरमर शब्द सुन पड़ता है, माथा गर्म रहता है और रोगी क्रमशः दुबला होता जाता है। गुर्देकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, हृत्पिण्ड कमजोर होता जाता है, इसके बाद शोथज अवस्था उत्पन्न हो जाती है, यही कैक्टसका पथ है। अन्तमें गुर्देकी बीमारियोंके साथ, क्षीणताके साथ हृत्पिण्डकी बीमारियाँ हो जाती हैं और हाथ पैरोंमें सूजन आ जाती है। यह कैक्टसकी ठीक ठीक प्रकृति है। इसके अलावा, समूची मेटिरिया-मेडिकामेंसे किसीमें भी आपको ये लक्षण न मिलेंगे। इन लक्षणोंकी तेज़ीके सम्बन्धमें किसीसे भी तुलना करनेका कुछ नहीं है। जो कुछ बातें मैंने कही हैं, वे इन्हीं तीन शब्दोंमें आती दिखाई देती हैं—रक्त सञ्चय, संकोचन और खींचन।

कहीं भी दर्द हो, कैक्टसका दर्द प्रचण्ड होता है, उनसे बाध्य होकर रोगीको चिल्लाना पड़ता है और यह दर्द कसकर पकड़ रखनेकी तरह, संकोचनका दर्द होता है। यह दर्द अकसर फाड़नेकी तरह दर्दकी भांति मालूम होता है, पर कसकर पकड़ रखनेका खयाल हमेशा ही बना रहता है। मान लीजिये, कि किसी प्रचण्ड रूपसे रक्त सञ्चय हुए यन्त्रमें आपको एक फीता बांधना पड़े, इसे खूब कसते जाइये। मुझे ऐसा मालूम होता है, कि इसी ढङ्गकी तकलीफ़ रोगीको किसी रक्त-पूर्ण यन्त्रके संकोचनके साथ होती है। रक्त-सञ्चय हुए अङ्गोंमें दर्द, जखमवाले अङ्गोंमें दर्द, फाड़ने, सिकुड़ने, ऐंठनकी तरह दर्द, पर जब आंतोंमें दर्द होता है, तो सङ्कोचनकी तरह होता है, पर जब लम्बी मांस पेशियोंमें दर्द होता है, तो संकोचनकी तरह नहीं होता है, क्योंकि यहाँ गोल सूत्रमय तन्तु नहीं हैं, बल्कि लम्बे सूत्रमय तन्तु खिंचते हैं और इसीको हम मरोड़ कहते हैं। लम्बी पेशियोंमें कैक्टस कुछ आक्षेपिक अवस्थाएँ उत्पन्न करता है, पर बहुत ज्यादा नहीं। **बेलेडोनामें** और खासकर उन बहुत सी दवाओंमें, जिनमें मरोड़की यह प्रकृति है और गोल तन्तुओंका संकोचन और तनाव है, वहाँ टङ्कारकी प्रबलता रहती है। **बेलेडोनामें** मस्तिष्कके भयानक रक्त-सञ्चयके साथ साधारणतः हाथ पैरोंमें मरोड़का दर्द रहेगा और समूचे शरीरमें या कुछ अङ्गमें पेशियोंके टङ्कारको

अवस्था रहेगी , पर कैक्टसमें ऐसा नहीं होता। प्रचण्ड रक्त-सञ्चय और इसी वजहसे रोगी जड़की तरह हो जाता है। मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय, पहले तो चेहरा लाल रहता है, फिर शिरावरोधनके कारण काला पड़ जाता है और फिर पीला हो जाता है। वह लघुमस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयके कारण शिथिल हो पड़ता है।

रोगकी तीव्रताके कारण मानसिक अवस्था भय और कष्टसे पूर्ण रहती है। रोगीको कभी भी ऐसी तकलीफ अनुभव न हुई थी और वह इसका मतलब कुछ भी समझ नहीं पाता। इतनी तकलीफ, इतना प्रचण्ड कष्ट, इतना आकस्मिक रोग, ऐसा मरोड़का दर्द, इस तरह फाड़नेकी तरह दर्द, ऐसा भयानक संकोचन। जब यह संकोचन हृदपिण्डमें और वक्षके पास आता है, तो रोगी सोचने लगता है, कि वह मर रहा है और उसपर तुरन्त भय छा जाता है और यह भय चेहरेपर भी प्रकट हो जाता है। वह मृत्युसे डरता है और ऐसा मालूम होता है, कि वह मर रहा है, उसका दर्द इतना ज्यादा रहता है, पर इस तेज़ दर्दके साथ, उसमें **ऐकोनाइट**में रहनेवाली घबड़ाहट-जैसी कोई घबड़ाहट नहीं रहती, क्योंकि **ऐकोनाइट**में भी इसी प्रकारका वक्षका और गर्दनका सङ्कोचन है। **ऐकोनाइट**के प्रचण्ड श्वास-रोधके कारण रोगीको भय होता है, कि श्वास-रोध होकर वह मर जायगा और उसमें भयानक घबड़ाहट पैदा हो जाती है, पर कैक्टसमें यह इतनी ज्यादा नहीं होती। कैक्टसमें दर्दके कारण चीखना, चिल्लाना एक साधारण बात है। "मौनी, एक शब्द बोलने या जवाब देनेकी इच्छा नहीं होती।" यह अकसर कैक्टसकी दशाके साथ रहता है, जो ऐसा प्रचण्ड दर्द रहनेवाली बहुत-सी दवाओंके विपरीत है। "उदासी, मौनावस्था और रोनेकी अदम्य इच्छा, मृत्यु-भय।" अर्थात वह सोचता है, कि दर्दकी तेजीके कारण उसके प्राण निकलना चाहते हैं। "उसे विश्वास रहता है, कि उसकी बीमारी दुरारोग्य है।" उसे ऐसा मालूम होता है, कि ऐसी तकलीफोंका अन्त मृत्युमें ही होता है। यह प्रचण्ड, हृदपिण्डकी अनियमित क्रिया समस्त रक्तवाहिनियोंमें होती है, क्योंकि खूनका दौरान इतना अनियमित, इतना ज्यादा आक्षेपिक रहता है। वह किसी जगह गर्म, किसी जगह ठण्डा रहता है। माथेमें या वक्षमें गर्मी। किसी खास अङ्गमें रुक जानेवाला खूनका दौरान। हृदपिण्डकी सभी

बीमारियोंमें भयङ्कर सपने दिखाई देते हैं, नींदके समय मस्तिष्कको बहुत अधिक उत्तेजना, डर और चौंककर जागता है, बहुतकर गिर जानेके एक भावके साथ गिर पड़नेके सपने। उत्तेजनामें पूर्ण स्वप्न। कैक्टसमें सर्वत्र यह रूप है और विशेषकर हृदपिण्डके लक्षणोंके साथ तो यह रहता ही है।

"रक्त सञ्चयके कारण सरमें चक्कर आना, चेहरा लाल, दाग-दगोला, मस्तिष्कमें स्पन्दन। उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो पागल हो जायगा। सरका चक्कर, शारीरिक परिश्रम करनेपर बदतर हो जाता है।" बहुत-सी हृदपिण्डकी दवाओंमें या उन दवाओंमें जिनमें रक्तका दौरान और हृदपिण्ड बहुत कुछ आक्रान्त रहता है, सरमें चक्करका लक्षण स्पष्ट रहता है। "सरका चक्कर, शारीरिक परिश्रमसे, बिछावनमें करवट बदलनेपर, झुकनेपर, झुकी हुई अवस्थासे उठनेपर और गहरी साँस लेनेपर बदतर हो जाता है।" कैक्टसकी बहुत-सी बीमारियाँ, श्वासकी अनियमितताके कारण विशृङ्खलित हो जाती हैं। यहाँ हम देखते हैं, कि गहरी साँस लेनेपर सरमें चक्कर आता है। यदि रोगी अपनी साँस रोक लेता है, तो ऐसा मालूम होता है, कि कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो जायगा, इसकी चाल इतनी तेज़ हो जाती है। साँस रोकनेपर समूचे शरीरमें स्पन्दन बढ़ जाता है।

सर-दर्द सङ्कोचनशील, दबावकी तरह होता है, दर्द प्रचण्ड होता है, साथ ही माथेमें बहुत ताप रहता है, क्योंकि दर्द रक्त-सञ्चयकी वजहसे होता है। माथेकी चाँदीमें इस तरहका दबाव मालूम होता है, मानो माथेकी चाँदी जबर्दस्ती भीतर दबायी जा रही है, पर यह **दर्दवाली जगहपर जोरसे दबानेपर घट** जाता है। "भारी दर्द, मानो ब्रह्मरन्ध्रपर एक भार रखा हुआ है, दबानेपर अच्छा रहता है।" अकसर रोगीका माथेपर दबाव मालूम होनेका खयाल गलत भी हो सकता है। वे अकसर इसे स्पष्ट रक्त-सञ्चयके रूपमें वर्णन करते हैं, मानो माथा कुचल जायगा, जब कि मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय बहुत ही प्रचण्ड दिखाई दे सकता है, जिससे भीतरसे बाहरकी ओर दबाव पड़ता है और हमलोग सोचेंगे कि बाहरसे यदि कोई सहारा पहुँचाया जायगा, तो वह अच्छा रहेगा, पर इतनेपर भी रोगीको बहुत अधिक यन्त्रणा मालूम होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा भीतरकी ओर कुचला जा रहा है। दूसरोंको सर-दर्दके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो माथा दबाकर बाहर निकाला जा रहा है। "शिखर-देशपर

भारकी तरह दर्द, मानो भार रखा हुआ है, दबावसे अच्छा रहता है, पर आवाज़से, सुनने, बोलने या तेज़ रोशनीसे बदतर हो जाता है।" ऐसा ही सर-दर्दमें होता है। आवाज़ सुननेपर दर्द बहुत बढ़ जाता है। आवाज़ मानो माथेके भीतर प्रवेश कर जाती है, मस्तिष्क बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु मालूम होता है, मानो आवाज़ कोई भौतिक पदार्थ हो, जो मस्तिष्कसे टकराती है। दाहिनी ओरका सर-दर्द, टपककी तरह सर-दर्द, भारी, टपककी तरह सरका दर्द, सरमें तनावकी तरह दर्द, मस्तक-शिखरमें तनावकी तरह दर्द। मस्तक-शिखरमें एक कसावट मालूम होना, मानो खोपड़ीका चमड़ा क्रमशः करोटीपर कसता जा रहा है। इन लक्षणोंके साथ लघु-मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय होनेके सम्बन्धमें तो कोई संशय ही नहीं रह सकता। आँखोंसे यह प्रकट होता है, चेहरेसे यह मालूम होता है और माथेकी गर्मीसे यही प्रकट होता है। जब रक्त-सञ्चय बहुत प्रचण्ड रहता है और चेहरा तमतमाया और बैंगनी या बहुत लाल रहता है तथा मस्तिष्क तथा समूचे शरीरमें स्पन्दन अनुभव होता है, उस समय सन्यास रोग होनेकी सम्भावना रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

बेलेडोनामें प्राप्त होनेवाला प्रचण्ड रक्त-सञ्चय इस दवामें भी है, पर **बेलेडोना**में शरीरमें बहुत ही ज्यादा गर्मी रहती है, ज्वरका ताप कैक्टसमें नहीं है। कैक्टसमें बहुत साधारण ज्वर रहता है। गर्मी, शरीरके ऊपरी भागमें, माथे और गर्दनमें रहती है। गर्दनका भरापन, गर्दनका फूल जाना, ऐसा मालूम होता है, कि माथेमें रक्तका दबाव होनेके कारण माथा फेल जायगा, पर तापमान ज्यादा नहीं चढ़ता। इसमें ज्वर है, पर यह सब बिना ज्वरके ही होता है, पर **बेलेडोना**में जब आपको ये स्पन्दन प्राप्त होंगे, तो रोगी बेतरह गर्म रहता है और उसके समूचे शरीरमें जलन होती है। कैक्टसमें भी कुछ जलन है, पर इसकी **बेलेडोना**से तुलना नहीं करनी चाहिये। मानसिक परिश्रमसे माथेमें गर्मी कैक्टसका एक जबर्दस्त लक्षण है। यह लक्षण उन व्यक्तियोंमें प्राप्त होता है, जो काफी बहुत पीते हैं और कैक्टस ही अकसर इसकी दवा होती है।

रोगीके गलेमें दम घुटनेका भाव रहता है, जैसे कसे कालरसे। संकोचन, प्रत्येक स्थानकी पेशियों और चर्मोंका तनाव। हृत्पिण्डके संकोचनके साथ

गलेमें श्वास-रोधका भाव। हिस्टीरियामें गर्दनके पास दम घुटनेका भाव, **ग्लोवस हिस्टिरिकस** (गोला चढ़कर मूर्च्छा), कण्ठमें एक ढेला या गोला चढ़ा आता है और यह घूँट लिया करती है और श्वास-रोध हुआ करता है और बायें वायुमें सुस्पन्दन होकर उसमें मरोड़, ऐंठन पैदा कर देता है।

खासकर बायें वायुमें मरोड़। वातका इतिहास, हिस्टीरियामें हृत्पिण्डकी अवस्थाके साथ बायें वायुमें सुस्पन्दन। वातका इतिहास कैक्टसके रोगीको पूरा ठीक कर देता है। चेहरा तमतमाकर चमकीला लाल हो जाता है, नीला हो जाता है। हृद्पिण्डकी कमजोरीके साथ यह नीला रहता है, नीले ओंठ, माथेमें रक्त-सञ्चय, नीला चेहरा और चितकबरे ओंठके साथ, गर्दनके चारों ओर सङ्कोचनके रोगीके लिये, इसमें कैक्टसकी जरूरत होती है। बायां हाथ रहस्यमय रूपसे कमजोर या सुन्न हो जाता है, सुस्पन्दन और रेंगना सुरसुरीकी तरह।

दूसरी चीज़ जो इस दवामें सर्वत्र प्राप्त होती है, वह रक्त-स्राव है। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। जिस किसी दवामें ऐसी हार्दिकी अवस्था और ऐसी रक्तवाहिनियोंकी अवस्था रहती है, उसमें समय पाकर कुछ-न कुछ रक्त-वाहिनियोंकी शिथिलता पैदा ही हो जायगी और इससे रक्त-स्राव होना स्वाभाविक बात ही होगी। इसमें दो तरहका रक्त-स्राव होता है। एक तो *रक्त-वाहिनियोंकी शिथिलताके कारण*, जिसके *साथ हृत्पिण्ड* और रक्त वाहिनियोंकी अवस्था सम्मिलित रहती है और दूसरा किसी भागमें अत्यधिक रक्त-सञ्चय हो जानेके कारण। साधारण रक्त पूर्ण रोगीके माथेमें इतनी तेजीसे रक्त चढ़ जाता है, कि उसकी नाकसे रक्त-स्राव होने लगता है तथा कण्ठसे खखारके साथ खून आता है। वक्षमें इतना प्रचण्ड रक्त-सञ्चय होता है, कि उसके वक्षसे खमगमके साथ खून निकलता है। रक्त-सञ्चयके कारण रक्त-स्राव, न कि टियुबर क्युलोसिसके (यक्ष्मा) कारण। रक्त-स्रावके साथ गर्भाशयमें रक्त-सञ्चय। पेशाबमें खून आनेके साथ और प्रचण्ड रक्त-सञ्चयके कारण रक्त स्रावके साथ *मूत्राशय और मूत्रपिण्डमें रक्त-सञ्चय*। पुरानी हृद्पिण्डकी बीमारीमें जहाँ कि बहुत अधिक शिथिलता स्पष्ट रूपसे वर्त्तमान रहती है, इसी *शिथिलताके कारण रक्त-स्राव होता है*।

बहुत स्थानोंमें, उदरमें, आँतोंका जोरका स्पन्दन अनुभव होता है, कभी-कभी हाथ-पैरोंमें तथा माथेमें भी। समूचे शरीरमें धमक। वक्षोदर

मध्यस्थ-पेशीके बन्धनके चारों तरफ़ ऐसा मालूम होता है, मानो खूब कस-कसकर डोरी बाँध दी गयी है। वक्षके निम्न-भागके चारों तरफ, यह एक अद्भुत लक्षण है। यह कटि-रेखाके चारो ओर इस तरह कसकर पकड़ लेता है, कि उसकी साँस रोक देता है और रोगी श्वासके लिये जोर लगाता है और कुछ करना चाहता है। वह इसे कस कसकर पकड़ता है। कैक्टससे आँतोंका रक्त-सञ्चय उत्पन्न होता है, जरायुका प्रदाह, पाकाशयका प्रदाह और इसके साथ ही कसकर पकड़ रखनेका भाव।

यह बवासीरको आरोग्य करनेवाली दवा है। यकृत सस्थान (Portal system) की तथा मलनालीकी निम्नस्थ धमनियोंकी शिथिलता, बवासीरकी शिराओंकी शिथिलता. शिराएँ इतनी शिथिल अवस्थामें रहती हैं, कि अर्बुद बन जायगा और उससे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होगा, खूनी बवासीर। मल-द्वारका सकोचन, इसमें बहुत ही कष्टदायक कब्ज रहता है। बवासीरके साथ कब्ज, इसमें मूत्राशयकी पाक्षाघातिक अवस्था रहती है। इसमें मूत्र-रोध है। मूत्राशय-ग्रीवा (Neck of the bladder) का इस तरहका सकोचन, कि पेशाब बहुत देरतक नहीं उतरता और मूत्र-रोध हो जाता है। गुर्देमें इस तरहका सकोचन हो जाता है, कि जिससे मूत्र-रोध हो जाता है। खून-मिला पेशाब, खूनके थक्के। यह वह दवा है, जो तेजीसे थक्के बननेमें सहायता पहुँचाती है। निकलनेवाला रक्त इतनी तेजीसे थक्के बाँधता है और इतना घना हो जाता है, कि राह रोक देता है। मूत्राशयमें रक्त स्राव होकर राह रोक देता है। योनिमें रक्त-स्राव होकर ऐसा थक्का बाँधता है, कि निकलना मुश्किल होता है और स्त्री मूत्र-पथपर इतना दबाव मालूम होता है, कि उसके लिये पेशाब करना दुष्कर हो जाता है। यह एक वृहत् कपड़ेकी तहोंकी भाँति होता है और इसीलिये कहा है—"थक्कोंके कारण पेशाब रुका हुआ" योनिमें तथा मूत्राशयमें थक्के। डिम्बाशयका प्रदाह, गर्भाशयका प्रदाह। किसी रक्त-पूर्ण बलवान युवती स्त्रीको मासिक रज स्रावके समय जरायुमें रक्त-सञ्चय हो जाता है और वह चिल्लाती है, क्योंकि जरायुमें बहुत ही प्रचण्ड मरोड़ और कसकर पकड़ रखनेकी तरह दर्द होता है। रज-स्राव जारी होनेके पहले या ठीक आरम्भ होनेके समय, बहुत जोरकी धकड़न होती है। गोल सूत्र-तन्तु सब सङ्कुचित होते हैं और वह ठीक इस तरह इसका वर्णन करती है, कि मानो यन्त्रणा-पूर्ण और रक्त-सञ्चय हुए जरायुके चारों ओर कसकर

एक फीता बाँधा जा रहा है। जरायु रक्तके थक्कोंसे भर जाता है और इस रक्तको निकालनेके लिये जो ऐंठन होती है, वह प्रसवके दर्दकी तरह होती है और फिर वह चीखने लगती है तथा यह कभी कभी खुलासा स्राव जारी होनेके पहले होता है, जिससे उसे आराम पहुँचे। यदि वात प्रकृतिवालोंको यह अवस्था होती है, जिसे कुछ-न कुछ सन्धियोंका वात रहता है दूसरे स्थानोंमें कसकर पकड़ रखनेकी तरह दर्द और सकोचन होता है, तो इसको दवा कैक्टस है। उसकी चिल्लाहट और उत्तेजना, पड़ोसी भी सुन सकते हैं, इन सब दर्दोंके साथ श्वास-रोधका आक्रमण, क्योंकि हृद्पिण्डकी तकलीफ़ रहती है और हृद्पिण्डका सकोचन भी साधारणतया जरायुके सकोचनके साथ रहता है। हृद्पिण्डके रोगोंमें तो ऐसा मालूम होता है, मानो वह श्वासके बिना मर जायगा। वक्षका सकोचन, दबाव, *मानो छातीपर एक भारी बोझ* रखा हुआ है, उसका प्राण निकल रहा है, इतना ज्यादा सकोचन और रक्त सञ्चय रहता है। आकस्मिक सकोचन और कितने ही अवसरोंपर तो बिना प्रदाहके ही यह आता और चला जाता है। भयङ्कर श्वास-कष्ट और हृत्पिण्डके सकोचनके साथ वक्षमें जोरोंका रक्तका दौरान,—पर यह बिना प्रदाहके ही छोड़ जाता है। दूसरे वक्त कैक्टसमें न्युमोनिया,— फेफड़ोंका प्रदाह तथा प्रदाहमें अन्त होनेवाला प्रदाह हो जाता है, जिसमें मामूलके अनुसार बलगम, खून-मिला या खूनकी रेखाएँ पड़ा निकलता है कैक्टस फेफड़ोंके हाइपोस्टेटिक रक्त सञ्चयकी भी दवा है। रोगी लेट नहीं सकता, बिछावनपर बैठे रहना पड़ता है और प्रत्येक फेफड़ेके निम्न-भागमें धीमापन रहता है यह फेफड़ेके नीचेवाले भागमें रक्तामयुक्त रस स्राव होनेके कारण क्रमशः बढ़ता ही जाता है। हृद्पिण्डकी कमजोरीके कारण ही हाइपोस्टेटिक रक्त-सञ्चय हो जाता है। ब्राइट्स डिज़िज (कोरण्ड-घटित मूत्र ग्रन्थि-प्रदाह) के तथा ग्रीष्म रोग और हृत्पिण्डकी तकलीफ़ोंके अन्तमें पुराने भग्न-स्वास्थ्य व्यक्तियोंको कितनी ही बार जब ऐसा हो जाता है, तो अकसर कैक्टससे आराम पहुँचता है। यह मृत्युको रोक देता है। 'पीठके बल लेटकर और उठे हुए कन्धोंके सहारे ही साँस ले सकता है।" पीठके बल लेटा रहता है या सीधा तनकर बैठता है। श्वास-रोधका बँधे समयपर मूर्च्छाके साथ आक्रमण, ठण्डा पसीना।"

"ऐसा अनुभव होना, मानो हृद्पिण्ड निचोड़ दिया गया है या हाथसे कसकर पकड़ लिया गया है। हृद्पिण्डका वात। कई घण्टोंतक ऐसा

मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड लोहेके बने हाथसे पकड़ लिया गया है। हृदुपिण्ड-प्रदेशमें दर्द। हृदुपिण्ड-प्रदेशमें बहुत अधिक दबाव, यह घूमकर बायें बगलके नीचेसे पीठमें चला जाता है।" अकसर यह दर्द बायें हाथमें आघात करता है, इसके साथ ही सुन्नपन और कभी-कभी सूजन भी रहती है। सुन्नपन, सुरसुरी, सूजन। "हृदुपिण्डमें धीमा-धीमा दर्द, हृदुपिण्डमें भारका दर्द, दबानेपर बढ़ जाता है। हृदुपिण्ड-प्रदेशमें खिंचावका दर्द, यह तलपेटके बायें भागमें उतर जाता है। कभी-कभी तो ऐसा अनुभव होता है, मानो कोई कसकर हृदुपिण्डको पकड़े हुए है। 'हृत्पिण्डके दर्दका आवेश" अर्थात् इस ढङ्गका सकोचन प्रचण्ड आवेशके समय उत्पन्न होता है। "हृदुपिण्डका नया प्रदाह, हृदुपिण्डका पुराना प्रदाह, दिन-रात हृदुपिण्डमें धड़कन हुआ करती है, चलनेके समय और रातमें बायीं करवट लेटनेके समय।"

इस दवामें रहनेवाली दूसरी बात यह है, कि बचकी बीमारियाँ अकसर ११ बजे उत्पन्न होती या बढ़ती हैं, दिनके ११ बजे या रातके ११ बजे। इसका स्वल्प-विराम ज्वर, मस्तकमें भयानक रक्त-सञ्चयके साथ शीत ठीक ११ बजे उत्पन्न करेगा। ठीक ११ बजे दिन और ११ बजे रातमें नियमित आवेश या कभी ११ बजे दिनमें और कभी ११ बजे रातमें। ठीक ११ बजे दिनमें दैनिक शीत। रक्त-सञ्चयी ढङ्गके स्वल्प-विराम ज्वर इसने आरोग्य किये हैं, जब कि यहाँ-वहाँ रक्त-सञ्चय होता है, पर खासकर सकोचन, रक्त-सञ्चय और खिंचावके साथ मस्तकमें होता है।

कैडमियम सल्फरिकम।

(Cadmium Sulphuricum)

कैडमियम सल्फको अभी केवल आंशिक परीक्षा हुई है। इसलिये इसके सम्बन्धमें थोड़ी ही बातें बतायी जा सकती हैं। कोई दवा पूरी तरह तभी परीक्षित कही जा सकती है, जब वह मनुष्यके सभी तत्वोंपर प्रकाश डालती है, जब इसने उसकी स्मरण-शक्ति, उसकी बुद्धिपर प्रभाव डाला है और जब इसने उसके यन्त्र तथा अन्य समस्त क्रियाओं प्रभृतिपर अपना प्रभाव पहुँचाया

है अर्थात् जब किसी स्वस्थ मनुष्यने कोई दवा ली, तो इन सभी चीजोंपर प्रभाव पहुँचा तथा इस दवाके प्रभावका परिणाम मालूम हो गया। हरेक दवा मनुष्यके इन सभी तत्वोंपर अपना प्रभाव पहुँचाती है और किसी भी दवाकी जबतक पूरी परीक्षा नहीं हुई, जबतक यह नहीं मालूम हुआ कि इन सब विषयोंपर उसका क्या प्रभाव पहुँचा है? इसमें काम करनेसे भय रहता है, कोई भी काम करनेकी इच्छा नहीं होती, वह मानसिक हो या शारीरिक। निदानोंकी अपेक्षा आरोग्योंसे इसकी घबड़ाहटका पता विशेष लगा है, जिससे कि यह अच्छी तरह मालूम हो गया है, कि घबड़ाहटमें यह दवा **आर्सेनिकम**की श्रेणीमें रखी जा सकती है, सुस्तीके लिये भी यह **आर्सेनिकम**की श्रेणीमें रखी जा सकती है। इसमें बहुत कमजोरी है इसलिये भी यह आर्सेनिकमकी श्रेणीमें रखी जा सकती है, क्योंकि जो यन्त्र आक्रान्त हो जाते हैं, खासकर पाकाशयपर जो इसकी क्रिया होती है, वह कुछ-न-कुछ **आर्सेनिकम**की तरह होती है। बहुत अधिक सुस्ती, उपदाहित पाकाशय और वमन। इसमें इतना वमन होता है, जैसा कि निम्न-श्रेणीके ज्वरोंमें पाया जाता है। ऐसा उपदाहित पाकाशय जैसा कि पीत ज्वरमें पाया जाता है, काले वमनके साथ और ठीक इसी केन्द्रपर वह जगह है, जहाँ कि निम्न-श्रेणीके ज्वरमें **आर्सेनिकम**से इसकी समता रहती है, पर **आर्सेनिकम**की ही भाँति इस दवामें सर्वत्र रोगी चुपचाप शान्त रहना चाहता है। इसका अंश है, निस्तेजताकी अवस्था और कुछ अंश है, हिलने-डोलनेसे अनिच्छा। हिलने-डोलनेपर उसकी अवस्था बदतर हो जाती है, जो इसे **ब्रायोनिया**की समतामें ला देता है। इस तरह हमें इस दवामें सर्वत्र **आर्सेनिकम**की तरह सुस्ती और गतिसे घृणा **ब्रायोनिया**की तरह मिलती है।

और भी इसपर विचार करनेपर मालूम होता है, कि आक्षेपिक और स्नायविक है। यह **जिङ्कम**की तरह पेशियोंको आक्रान्त करता है। यह **जिङ्कम**के साथ मूल अवस्थामें मिला हुआ पाया जाता है। हेरिङ्गने बहुत बार इसपर ध्यान दिया है, जिससे उन्होंने यह प्रमाणित करनेकी चेष्टा की है, कि जो पदार्थ एक साथ पाये जाते हैं, उनमें आपसमें सम्बन्ध रहता है और इसे **टेलुरियम**की तरह बताया है, जो सोनेके टेलुराइडके रूपमें रहता है। यह सत्य हो सकता है। साथ मिलनेवाले पदार्थ कुछ विषयोंमें सदृश रह सकते हैं,

पर यह तो एक आस-पासकी बात हुई, क्योंकि प्रत्येक पदार्थका अध्ययन उसके गुणके अनुसार करना चाहिये। परीक्षाके अध्ययनमें अनुमानका काम न रहना चाहिये। प्रत्येक दवाका प्रयोग अपने लक्षणोंके लिये ही होना चाहिये और इनके लिये दूसरेका प्रयोग नहीं हो सकता। यदि कोई दवा काम नहीं करती, तो होमियोपैथका सिर्फ यही काम है, कि अपने रोगोकी नये सिरेसे परीक्षा करे और नये लक्षण तथा नयी दवा खोजे।

कमरेके भीतर रहनेपर सरमें चक्कर आना, पलङ्ग चक्कर खाने लगता है। मस्तकके लक्षण, घबड़ाहट और सरमें चक्कर ऐसे लक्षण हैं, जो निम्न-श्रेणीके पाकाशय, अन्त्राशय-प्रदाहके उपदाहमें पाये जाते हैं, जैसे कि बृहसूल, धीमे और शिथिल अविराम ज्वरमें, सुस्ती, रक्तकी कै, काले वमनके साथ पीत ज्वर (Yellow fever) में। माथेमें भालेसे छेदनेकी तरह मालूम होना, कान-पटियोंमें टपक। इसका अकसर साधारण ज्वरमें प्रयोग नहीं होता, बल्कि निम्न-श्रेणीके ज्वरमें होनेवाले सर-दर्दमें होता है, साथ ही माथेमें बहुत अधिक रक्त चढ जाता है। छुरीसे काटनेकी तरह, जैसा कि पीत ज्वरमें होता है।

इसके आँखके भी बहुत-से लक्षण हैं। स्थानिक प्रक्षालिका प्रदाह, स्रावके साथ चक्षु श्वेत-पटलका प्रदाह, बहुत दिनोंकी पुरानी आँख उठनेकी बीमारी। पुराना "आँखका घाव" प्रत्येक सर्दी और ऋतु-परिवर्त्तनसे उभड़ पड़ता है। चक्षु श्वेत-पटलका मोटा पड़ जाना, कण्ठमाला-ग्रस्तोंका आँखका घाव, जखमके कण, पुराने दाग, जो फिरसे उभड़ते और भरते हैं। पुरानी आँखकी बीमारियाँ, धीमे प्रदाहके साथ आँखोंकी अस्वच्छताकी आरोग्य करनेमें यह आश्चर्यजनक लाभ दिखाती है। आँखके ऊपर दबाव, पलकोंका पक्षाघात, पलकोंका गिरना। इसका साधारणतः चेहरेके एक भागपर और एक आँखपर प्रभाव होता है। इसमें **कास्टिकम**की तरह पाक्षाघातिक अवस्था है। एक अङ्गका पक्षाघात या शरीरके एक भागका। सन्यास रोगका आक्रमण होनेके बाद जब रोगी आरोग्य होता है, पर एक बाहु और पैरकी कमजोरी रह जाती है, तो यह **फास्फोरस**के मुकाबले काम करता है।

अनुभूतियोंका यहाँ-वहाँ परिवर्त्तन, चमड़ेमें तथा गहरायीपरके तन्तुओंमें सुरसुरी। "सो जाने" जैसा मालूम होना या हाथ पैरोंमें मानो चींटी रेंग रही है, गहरायीपरकी पेशियोंमें और चर्ममें। अतिरिक्त अनुभूति (Hyponæsthesia) या स्पर्श-ज्ञान लोप (Anæsthesia)। किसी अङ्गका नाक, एक

हाथका सुन्न हो जाना, जगह-जगहपर सुन्न हो जाना। इस सम्बन्धमें यह **कास्टिकम**के सदृश है। पक्षाघातग्रस्त अङ्गोंमें कभी-कभी दर्द होता है। पक्षाघातग्रस्त अङ्गोंमें रेंगनेकी तरह अनुभव होना।

पुरानी नाककी सर्दी जो यहांतक बढ़ जाती है, कि अस्थिमें घाव होकर नाकका क्षय होने लगता है। जख्म हो जाना, हड्डियोंमें दर्द, छींक आना, नाककी सर्दी, फोड़े, घाव।

स्वादमें गड़बड़ी, यह धीमी गतिवाले अविराम ज्वरमें उपयोगी है। इसमें दांतोंपर कीट जमती है, जीभ काली, खून निकलती जीभ और मोह ज्वर (Typhus), सान्निपातिक ज्वर (Typhoid) या पीत ज्वर (Yellow fever) की तरह मुँह भी सूखा रहता है। लटकी हुई जीभ, उसको हिलानेमें तकलीफ होती है, निगलनेमें कष्ट, कण्ठकी पेशियाँ आक्रान्त हो जाती हैं, जिससे निगरणकृच्छ्रता (Dysphagia) उत्पन्न हो जाती है। कण्ठनलीका सङ्कोचन। प्रचण्ड प्यास। जितनी ही बार वह पानी पीता है, जिसकी उसे लालसा रहती है, गूमड़ सा निकल आता है, और **कैप्सिकम**की तरह सुरसुरी या क्लेश रहनेका भाव रहता है।

पाकाशयके सबसे जबर्दस्त और जरूरी लक्षण प्रकट होते हैं। पाकाशय अपनी क्रिया करना छोड़ देता है, पाचन बिलकुल नहीं होता, सभी चीजें अम्ल हो जाती हैं, तरल तथा सरल-से-सरल खाया हुआ पदार्थ भी परिवर्त्तित होकर अम्ल हो जाते, रक्त या पित्तसे मिल जाते हैं। खट्टी डकारें, बहुत अधिक सुस्ती, बहुत ही कष्टदायक मिचली होती है, नीचे तलपेटतक मिचली होती है—**इपिकाक, एण्टिम-टार्ट** और **आर्सेनिक**की तरह बहुत ज्यादा मिचली, ठण्डा पसीना पीली आभा लिये हरे श्लेष्माका वमन। ओंठका छूना, मिचली उत्पन्न कर देता है। यहाँ बताये हुए लक्षणोंका वर्णन देखकर कोई तजुर्बेकार चिकित्सक सोचेगा, कि पाकाशय प्रदाह (Gastritis) हो गया है—सरल-से-सरल पदार्थका वमन हो जाता है। जटिल रोगके बाद जैसे मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह, सान्निपातिक ज्वर, पीत ज्वर वगैरहके बाद पाकाशयका उपदाह। पाकाशयकी क्रिया एकदम बन्द हो जाती है, पाचन नहीं होता और सभी चीजें कै हो जाती हैं। वह रोगसे आरोग्य हो रहा है, पर उसका पाकाशय उपदाह-शील है, वह चुपचाप रहना चाहता है।

आर्सेनिकको सुस्ती और उपदाहित पाकाशय ज्वरकी आरम्भावस्थामें होते हैं, इसके साथ ही ताप और बेचैनी रहती है, पर इस दवाका प्रयोग बीखारके बादवाली अवस्थामें होता है और रोगी अपनी घबड़ाहटके कारण चुपचाप रहना चाहता है। **आर्सेनिक**में घबड़ाहट है और रोगी एक पलङ्गसे दूसरी पलङ्गपर तथा एक कुर्सीसे दूसरीपर जाना चाहता है, वह मृत्युसे डरता है। इस दवामें वह यह कहता मालूम होता है—'मुझसे मत बोलो, मुझे तङ्ग न करो,—मुझे शान्तिसे मरने दो।" वह एकदम शान्त रहना चाहता है और यह दशा ज्वर-सयुक्त रोगके अन्तमें होती है। इनमेंसे बहुत-से रोगी इस वजहसे मर जाते हैं, कि वे खा नहीं सकते, पर यह दवा उनकी जान बचा देगी। जब आपको जलन, सुस्ती, वमनके साथ कोई कर्कट रोग (Cancer) का रोगी मिले, तो कैडमियम सल्फ कई सप्ताहोंतक इन लक्षणोंमें आराम पहुँचाता रहेगा। जहाँ अफीम मिली दवा देकर उनका दर्द रोक दिया गया है, उसके पाकाशयमें कुछ भी नहीं ठहरता तो यह दवा उनको आराम पहुँचायगी। **यह कोषार्बुद (Carcinoma) में पाकाशयके उपदाहकी** एक बहुत बड़ी दवा, एक बहुत बड़ा उपशामक है। **काफीकी** चूरको तरह वमन।

- पाकाशयमें जलन और काटनेकी तरह दर्द। पाकाशयके वे लक्षण, जो गर्भावस्थामें और पुराने शराबियोंको उत्पन्न होते हैं। पाकाशयमें जलन जो अन्ननलीतक फैल जाती है, तरल ऊपर कण्ठ और मुँहतक चढता हुआ जला करता है। खट्टे, अम्ल तरल। पाकाशयमें सर्दी अनुभव होना, पाकाशयके उपदाहके साथ बच्चोंका हैज़ा।

वमनके साथ तलपेटमें दर्द, तलपेटमें नश्तरकी तरह दर्द। इन दर्दोंसे हम देखते हैं, कि यह ऐसी दवा है, जो यकृत, प्लीहा, उदर और तलपेटके अन्य यन्त्रोंपर गहरा प्रभाव डालती है। सड़न हो जानेकी सम्भावना रहती है, अच्छे औषधि प्रयोग-कर्त्ताओंकी प्रधान दवा है।

वमन, अतिसार और बहुत सुस्तीके साथ ज्वरका बार-बार दोहराना, किसी-किसी समय पीत ज्वर अच्छा हो जाता है, पर हवा लगकर थोड़ी-सी सर्दी आ जाती है। इसके बाद एकाएक अवसाद आता है, काली कै होती है और रोगीको मृत्यु हो जाती है। उस अवस्थामें यह **कार्बो-वेज**की समता करती है, जो अच्छे चिकित्सकोंकी इस अवस्थाकी प्रधान दवा है।

कैलेडियम।

(Caladium)

कैलेडियम एक आश्चर्यजनक दवा है। सम्भव है, कि आपलोगोंने इसे पढ़ा होगा, समझनेकी चेष्टा की होगी, इस दवाका समझना जरा मुश्किल है, क्योंकि परीक्षाओंसे यह अच्छी तरह प्रकट हुआ है, कि परीक्षक स्वयं ही नहीं समझ सका, कि वह कैसे वर्णन करे और लक्षणोंको बताये। वह नहीं जानता था, कि अपनी अनुभूतियोंको कैसे कहे, क्योंकि वे ऐसी ही अद्भुत थीं, वह अपनी मानसिक दशा नहीं बता सका।

कोई व्यक्ति दिनके समय हुई घटनाओंपर मन लगाकर सोचना चाहता है, पर उसे इसका पूरा विश्वास नहीं है, कि ये घटनाएँ हुई थी या नहीं। वह इन घटनाओंको खूब सोचता है, फिर भी वास्तवमें उसे विश्वास नहीं होता, कि ये घटी थी या नहीं, जबतक कि वह स्वयं जाकर उस पदार्थपर हाथ नहीं रखता, जिसके विषयमें वह सोच रहा था। स्वयं देख और सम्बन्ध स्थापितकर अपने सामने प्रमाणित करना चाहता, कि उसका क्याया खयाल ऐसा था, यह सत्य था, तब वह चला जाता है और फिर वह अनिश्चित हो जाता है, कि यह ऐसा था या नहीं। यह इन बातोंके सम्बन्धमें है, जो वास्तवमें हुई हैं। "बहुत भुलक्कड़, वह याद नहीं रख सकता प्रभृति।" इसीसे ही कैलेडियमका, बहुत-से मानसिक रोगोंमें, स्मरण-शक्तिका क्षयमें, जहाँ कि मनकी ऐसी विश्रृङ्खलित अवस्था रहती है, इसका प्रयोग हुआ है। यह जड़बुद्धित्वकी सीमा अथवा उन्मादकी सीमा हो सकती है। दिनभर उसे जो काम करना चाहिये था, उसपर विचार किया करता है, वे केवल उसके मनमें निकल गये हैं, वह उन्हें भूल गया है। इसलिये कितने ही स्थानोंमें मन जीर्ण हो जाता है। एक भुलक्कड़वाली अवस्था। यह नयी अवस्थामें, बेहोशीके साथ भी आ सकती है। मस्तिष्कमें बहुत कुछ रक्त सञ्चय रहता है, कुछ-न-कुछ उत्तेजना, पर बहुत ज्यादा ध्यान देने योग्य है—मनकी अवसन्नता, मनकी दुर्बलता, दुर्बलमना, बुद्धि लगानेवाले काम कर ही नहीं सकता, यह असम्भव है। वह सोच नहीं सकता, जितना ही ज्यादा वह किसी विषयको सोचता है, उतना ही थकता जाता है और वह चीज़ उतनी ही दूर उसको दिखाई

देती है। जितना ही किसी विषयपर मन लगानेकी वह चेष्टा करता है, उतना ही कम उस विषयपर उनका मन.-संयोग होता है। इसलिये यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि स्वयं परीक्षक ही इन विचारोंको वाक्यमें परिणत न कर सके, जिसमें कि परीक्षाका पूरा पूरा विवरण हमें प्राप्त हो। इन बातोंको पढकर, दवाका व्यवहारकर और इसे अध्ययनकर हमलोग आभास निकाल सके है। "बहुत विचारशील, भूल जानेवाला।" पहली अवस्थाओंमें प्रलाप, मनकी उत्तेजना, अचेतनता तथा मनकी जडता रहती है। जिस तरह ज्वरावस्था जारी रहती है, उसी तरह मानसिक दशा भी हमें प्राप्त होती है। यह दवा अविराम ज्वरोंमें लाभदायक है।

किसी मानसिक दशाका अध्ययन करते समय एक बहुत जरूरी बात यह है, कि इस दवाका हम गुल्म-वायु (Hysteria) में, ज्वरके कितने ही स्तरोंके प्रलापमें या उन्मादमें इसका व्यवहार हो सकता है या नहीं और इसको समझनेके लिये, हमें परीक्षाके उस अंशपर जाना पडता है, जो हमें दवाकी गति बताता है। यदि हम **बेलेडोना** और **ब्रायोनिया**के प्रलापको समझना और किसी रोगीमें यह देखना चाहें, कि कौन सा उपयोगी होगा, तो उस दवाके ज्वर-भावपर हमें पलटना और यह देखना पडता है, कि इसकी प्रकृति क्या है। उसकी चाल ही हमें बहुत कुछ बता देती है, कि किस ढङ्गका यह प्रलाप है। यदि हम इस प्रलापसे ही नहीं समझ पाते है। इस तरह हम देखेंगे, कि **बेलेडोना**में अविराम ज्वर नहीं है और जैसा कि दवाकी प्रकृतिमें रहना चाहिये, वैसा ही रोगकी प्रकृतिमें भी होना चाहिये। उन बहुत-सी बातोंके पीछे पडना, जो हमारी पुस्तकोंमें लिखा हैं, टाइफायडके नये प्रलापमें **बेलेडोना**का प्रयोग करना चाहिये, वृथा है, पर **ब्रायोनिया**में ठीक ऐसी ही अवस्था है। इसीलिये हम देखेंगे, कि **ब्रायोनिया** उन रोगोंमें उपयोगी होगा, जो सदृश लक्षण उत्पन्न करते हैं, क्योंकि रोगकी चाल **ब्रायोनिया**की चालके समान है। उसमें अविराम ज्वर है। **बेलेडोना**में स्वल्प-विराम और सविराम ज्वर है, खासकर सविराम और इसीलिये **बेलेडोना**का नवीन प्रलाप सविराम ज्वरके नये प्रलापके सदृश रहता है। अब इस बातको समझनेके लिये इस दवाका ज्वर अविराम रहता है, बहुत जोरका या ज्यादा बोखार नहीं रहता, पर अविराम ज्वर रहता है। हम देखेंगे, कि इस ज्वरके साथ

बेहोशी और तन्द्रा है। "प्रलाप, धीरे-धीरे बुदबुदाना" मानसिक अवसन्नता। यह दवा धीमें, बुदबुदानेवाले प्रलापमें, क्षय हुए टाइफायड ज्वर, जो रोग धीमी गतिसे बढ़ रहा है, बहुत तीव्र प्रलाप नहीं, पर बुदबुदाहटवाला, एक अर्द्ध चेतनताका निम्न रूप, बहुतकर बेहोशी **एसिड-फास**की तरह जड़-बुद्धित्व एक विभ्रमशील मन रहता है आदिमें लाभदायक है।

अत्यधिक काम-चरितार्थ या **तम्बाकूमें ज़हर**के कारण जो शारीरिक और मानसिक अवसन्न हो पड़े हैं उन मनुष्योंमें भूल जानेकी बीमारी। कुछ पुराने व्यभिचारी, जो अब सङ्गममें असमर्थ हो पड़े हैं, उनके लिये यह उपयोगी है। उनमें स्त्री-सम्भोगकी बहुत अधिक वासना रहती है, पर सङ्गम-शक्ति नहीं रहती। कामुक विचार, ऐसे व्यक्ति गलीके कोनेमें खड़े हो जाते हैं और इधर उधर जाती हुई लड़कियोंको देखा करते हैं और उनका वीर्य टपका करता है। यह अवस्था **पिकरिक एसिड** और **सेलिनियम**में भी दिखाई देती है। आप उन रोगियोंको तभी आरोग्य कर सकते हैं, यदि वे अपना सुधार करना चाहें और यदि आप उन्हें उत्तम जीवन व्यतीत करनेमें लगा सकें। इसके बिना आप उनकी रक्षा नहीं कर सकते और उन्हें जिनको इन बातोंमें आनन्द मिलता है, बचाने योग्य भी नहीं हैं और दवा उनपर क्रिया न करेगी। आरोग्य होनेके लिये रोगीको अवश्य ही दवाकी सहायता देनेके लिये अपनी इच्छा-शक्ति लगानी पड़ेगी।

बहुत अधिक स्नायविक, अपनी छायासे भी डरता है, कामुक भावोंके साथ रातभर जागता रहता है, वही सोचता है। खासकर सोनेके पहले, भविष्यके विषयमें भयातुर। बीमारी चारों ओर न रहनेपर भी बीमारी लग जानेका भय, यह विपरीत अवस्थाके साथ पर्यायक्रमसे होता है। समय-समयपर वह खतरेको समझनेमें एकदम असमर्थ रहता है। बिना विचारे किसी भी खतरेमें वह कूद जा सकता है। बेवकूफी-भरा साहस। हम मानसिक लक्षणोंको इस तरह एकत्र कर कह सकते हैं कि वह अत्यधिक उत्तेजनशील रहता है।

आँखें बन्द करनेपर सरमें चक्कर आना, आँखें बन्दकर न तो वह खड़ा रह सकता है, न चल सकता है, पर इसका पूरी तरह गति शक्ति राहित्य (Locomotor ataxia) से सम्बन्ध नहीं है, जिससे कि उसमें भी इसका

कैल्केरिया कार्बोनिका।

(Calcarea Carbonica)

यदि आप कैल्केरियाके किसी रोगीको सुश्रृङ्खलित बनाना चाहते हैं, तो उसे आपको चूना या चूनेका पानी पिलाते जाना पडेगा, फिर पाचन यन्त्र इतने कमजोर पड जायँगे, कि वे चूना पचा न सकेंगे, इस समय तन्तुओंकी आवश्यकताकी पूर्त्ति नहीं होगी और दीजिये इसमें चूनेवाले विषय, अस्थि-लवण-हीनता (Bone salt inanition) के रोगी, क्योंकि वह वास्तवमें वही है, जो यह है। वे बच्चे जिन्हें दूधके साथ चूनेका पानी पिलाया जाता है, कुछ दिन बाद चूनेवाले विषयके रोगी हो जायेंगे, वे बहुत जल्द ऐसी अवस्थामें जा पहुँचेंगे, किवे अपने स्वाभाविक खाद्यमें लवण न ले सकेंगे और परिणाम कैल्केरियाका वह विषय होगा, जिसका हम वर्णन किया चाहते हैं, पर चूनेके स्वाभाविक रोगी वे हैं, जिन्हें स्वाभाविक बीमारी होती है। ऐसे जन्म ही ग्रहण किये हैं, उनके स्वाभाविक खाद्यसे चूना पचानेकी योग्यता न रहनेके साथ ही उनका जन्म हुआ है, वे मोटे और थुलथुले होते जाते हैं और उन्हें अस्थि-विकृत पैदा होती है। अस्थियोंमें चूनेकी अपेक्षा उपास्थिमय भौतिक उपादान अधिक रहते हैं और हड्डियाँ झुक जाती हैं तथा रोग और क्षयकारी तकलीफें पैदा हो जाती हैं। दोषावह दाँत या दाँत बिलकुल ही नहीं निकलते; हड्डियोंका उत्पन्न होना बन्द हो जाता है और रोगीको सुखण्डी (Marasmus) की बीमारी हो जाती है। ऐसे बच्चेको चूनेका पानी पिलाना कितना मूर्खतापूर्ण विचार है, क्योंकि वह चूना नहीं पचा सकता। यह भी क्या वैसा ही उचित नहीं है, जैसा कि एलोपैथीका सब कुछ होता है और इतनेपर भी हमारे होमियोपैथ एलोपैथिक दवाएँ व्यवहार करते हैं, वे निम्न-से-निम्न शक्तिकी जो दवा प्राप्त कर सकते हैं, उसका व्यवहार करते हैं और यह आश्चर्यजनक मालूम होगा, कि इन पदार्थोंको होमियोपैथोंने एलोपैथोंके हाथकी अपेक्षा कहीं अच्छा आरोग्य किया है। अब यह भी आश्चर्यकी बात है, कि गडबडीको दशाके सदृश होनेवाली शक्तिकी केवल एक खुराक, उस बच्चेको ऐसा बना देगी, कि वह भोजन पचाने लगेगा और उस खाद्यमें उचित मात्रामें, उतना चूना ग्रहण करेगा, जितना उसकी हड्डियोंको जरूरत है या किसी अन्य स्थानमें आवश्यक

है। तुरन्त ही दाँत निकलने लगते हैं, हड्डियाँ बढ़ने लगती हैं और पैरोंमें इतना कड़ापन आ जाता है, कि वह चलने लगता है और वे उसका भार सहन करने लगते हैं। विभिन्न औषधियोंसे होनेवाले ये परिवर्त्तन आश्चर्य-जनक हैं, जो केशोंकी, हड्डियों और नाखूनोंकी गड़बड़ोमें उपयोगिनी होती हैं। गड़बड़ीसे ममता खानेके लिये दवा पूरी तरह शक्तिकृत होनी चाहिये। यह मूल-रूपमें न होनी चाहिये, क्योंकि बच्चा पहलेसे ही मूल पदार्थोंसे जकड़ गया है। एक महीना या छ सप्ताहोंके भीतर ही आपको मालूम होगा, कि काफी शक्तिकृत दवाकी एक ही खुराक देनेपर टेढ़े-मेढ़े क्षय हुए, दाग-दगीले और अनियमित नाखनोंमें किनारा बनने लगा और वे सरलतासे बढ़ने लगेंगे। दाँतोंपरके टेढ़े-मेढ़े कुरूप दन्त-शिखर, मैढगे और काली चीजें, मसूढ़ेसे उनके निकलते ही आपको दिखायी देंगे, पर जब उचित होमियोपैथिक दवा पड़ जाती है। तो आपको सीमा-रेखा बनती दिखाई देगी और वहाँसे लेकर दाँत स्वस्थ दिखायी देता है तथा वहाँसे लेकर दन्त गात्रतक चिकनाहट और गोलाई आ जाती है। ठीक इस तरह, मानो उस बच्चेमें उत्तम दाँत पैदा करनेकी ताकत आ गयी है। शायद यही बात हड्डीवाले स्थानोंमें भी होती है। अस्थि गात्रावरण स्वस्थ्य कार्य करने लगता है, यही कैल्केरियाकी दशा है। जब रोगीको चूनेकी जरूरत रहती है और वह परिवृप्त रहनेके कारण इसे प्राप्त नहीं कर सकता या उसे अनपच रहता है, वह खाद्य पदार्थमें रहनेवाले चूनेका समीकरण नहीं कर पाता। यह उसके भीतर जाता है, पर उसपर प्रभाव नहीं पहुँचाता। ऐसा ही हमें प्राप्त होनेवाली बहुत-सी बीमारियोंमें होता है, खाद्यमें उसका भार ग्रहण करने और शरीरकी आवश्यकताके अनुसार समीकरणकी योग्यता नहीं रहती। क्या कोई इसे सरलता-पूर्वक मान लेगा, कि वही दन्त-निर्माणका कारण हुआ है। आप हमारी उच्च शक्तियोंसे पहाड़ियोंमें छेद नहीं करते, वे केवल नियमको सुश्रृङ्खलित दशामें ला देती हैं, जिससे कि पाचन और समीकरण जारी हो जाता है, सुश्रृङ्खलता स्थापित हो जाती है और मांस-तन्तुओंकी उन्नति हो जाती है। स्वास्थ्य आ जाता है सौन्दय, केशोंकी अभिवृद्धि, उत्तम चर्म, बढ़िया नाखून पैदा होने लगते हैं।

हम यह जानना चाहते हैं, कि कैल्केरियाकी धातुगत प्रकृति क्या है? हम यह जानना नहीं चाहते हैं, कि इस व्यक्तिको चूनेका ज़हर फैला है, इसके

जाननेकी कोई कीमत नहीं है, क्योंकि यह दवाकी कुछ्रो नहीं है। यदि चूनेका न पचना चूनेसे ही पैदा किया गया है, तो उसके लिये दूसरी दस दवाओंमेंसे चूनेका यह अनपच दूर करनेके लिये एककी जरूरत पड सकती है। सदा केवल कैल्केरियामें ही यह लक्षण नहीं है। लक्षणोंकी समतावाली दवा वह है, जो समस्त स्वास्थ्य-विधानको अस्वाभाविकसे स्वाभाविक अवस्थामें ला देगी तथा सुश्रृङ्खलित पाचन होने लगेगा तथा स्वास्थ्य-विधानमें उन्नति और अभिवृद्धि होगी। कैल्केरियाका रोगी लक्षणोंसे पहचाना जाता है, न कि इस बातसे कि रोगीको चूना खिलाया गया है। ऐसे भी मौके है, कि जिनकी हमें चिकित्सा करनी पडती है, उन्होंने कभी भी चूना नहीं खाया है, उनमेंसे बहुतोंको चूनाका ज़हर नहीं फैला है, पर जन्मसे वे चूना हज़म नहीं कर सकते।

कैल्केरिया **रक्त-सञ्चयों**से भरी है। सरमें खूनका चढना, हाथ-पैर ठण्डे, माथा गर्म, वक्षमें रक्त-सञ्चय, हरित्पाण्डु और रक्त स्वल्प पीले मोमकी तरह, इतने मोटे-ताजे रहनेपर भी, ऐसे रोगियोंसे कैल्केरिया बहुत अधिक मेल खाती है। इसमें मोटे-ताजे, थुलथुले और पीले तथा दुबले-पतले क्षीण, दोनों ही तरहके रोगी आते हैं। मास-पेशियाँ क्षीण पड जाती है, गला पतला पड जाता है। गलेके पास और वहाँसे नीचेकी ओर क्षीण, रक्त-स्वल्पतावाली अवस्था। पीला मोमकी तरह, रोगी, पीले ओंठ, पीले कान, पीली अगुलियाँ, पीला और पीलापन लिये। हरित्पाण्डु रोग (Chlorosis), खासकर रक्त-हीन लडकियोंके सम्बन्धमें व्यवहृत होता है। इस अवस्थाकी बहुत-सी दवाएँ है, पर कैल्केरिया,जिस ढङ्गकी रक्त-हीनता उत्पन्न करता है, जिसे हरित्पाण्डु (Chlorosis) रोग कहते हैं। इससे उत्पन्न मारात्मक रक्त-हीनता पैदा हो जाती है। हर जगहके मास-तन्तुओंमें बहुत **शिथिलता** आ जाती है, मास पेशियोंका ढीलापन, शिराओंका ढीलापन, रक्तवाहिनियोंकी प्राचीरोंकी बहुत ज्यादा शिथिलता, खासकर निम्न प्रत्यङ्ग और मलद्वारकी, कि वहाँ स्पष्ट बवासीरके दिखावे पैदा हो जाते है और पैरोंमें स्पष्ट शिरा-स्फीति (Varicose veins) हो जाता है। तनी हुई शिराएँ, इन शिरा-स्फीतियोंमें जलन। जलन और दाह, रक्त निकलना और चूना, सन्धियोंमें प्रदाह और दर्द-भरी सूजन।

दूसरा प्रत्यक्ष स्वरूप इस दवाका है, **ग्रन्थियोंपर** आक्रमण करना। गले की ग्रन्थियाँ, समस्त शरीरकी ग्रन्थियाँ, खासकर लसिका ग्रन्थियाँ, तलपेटकी

लसिका ग्रन्थियाँ कड़ी पड़ जाती हैं। प्रदाहित और यन्त्रणा-पूर्ण बड़े-बड़े गुल्मकी तरह हो जाती हैं सुपारीकी तरह हो जाती हैं, गुटिका दोषयुक्त। गुटिका दोषके प्रवर्द्धनोंके लिये कैल्केरिया फायदेमन्द है। किसी अंशमें चूना एकत्र होना (Calcareous degeneration), चूना भरनेवाली गाँठ (Calcareous glands), ग्रन्थियोंका कड़ापन। यह जखमोंके कड़ापनमें भी उपयोगी है तथा जखमोंकी तलीका कड़ापन, जखमके चारों ओरका कड़ापन। इसीलिये मारात्मक जखमोंका बढ़ना रोकने और उनको आराम पहुँचानेके लिये इसका आश्चर्यमय प्रयोग होता है, क्योंकि मारात्मक जखमोंकी तली हमेशा कड़ी रहती है। पुराने कर्कटवाले जखम (Old cancerous ulcers) की अभिवृद्धि इससे बहुत रुक जाती है अर्थात धातुगत प्रकृतिकी अवस्था उन्नत हो जाती है। स्वयं रोगीमें बहुत अधिक सहनशीलता आ जाती है और जखम भी भरने लगता है। कर्कटके रोग, जो रोगीको सोलह महीनोंमें मार डालता, वह रोगी कैल्केरिया सेवनकर पाँच वर्ष जीवित रह सकता है, यदि कैल्केरिया ही उसकी निर्देशित औषधि होती है। कैन्सरके उत्पन्न होनेपर, यही कुछ और बहुत बार यह सब कुछ है, जिसकी आशा की जा सकती है। ग्रन्थियोंकी बीमारीमें, जहाँकी ग्रन्थियाँ चारों तरफ कड़ी हैं और भीतरी रस-स्राव होता है। जहाँ बहुत जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है, जहाँकी वृद्धिने आस-पासके तन्तुपर आक्रमण किया और खा डालता है, जिससे कि वहाँ संयोजन (Adhesion) हो जाता है, वहाँ अवस्था जटिल है। करीब-करीब इन सब रोगियोंमें मारात्मकता है। वे उन ग्रन्थियोंसे एकदम भिन्न हैं, जो चर्मसे ढीले हैं, जो ग्रन्थियाँ चर्मके नीचे लुढ़कती हैं तथा उनका तन्तुमय संयोग या बन्धन नहीं रहता। कैन्सरके रोगोंमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है। कैल्केरिया बहुत-से अर्बुद, मेदमय, कोषमय अर्बुदके लक्षण मिलनेपर आरोग्य कर देता है। इतना ही अधिक यह ग्रन्थियोंकी निर्माण प्रणालीसे सम्बद्ध होता है। यह ग्रन्थियों और अस्थियोंका निर्माण करता है।

इस दवामें दूसरी बात है, खूनका **पीबदार** हो जानेवाली दशा (Pyæmic state), जिसमें गहराईपरकी मांस-पेशियोंमें फोड़े हो जाते हैं। गर्दनमें गहराईपर फोड़े, जांघमें भीतर गहराईमें और तलपेटमें। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, कि कैल्केरिया इन फोड़ोंकी लक्षण मिलनेपर खबर लेगा और

यह नहीं फूटेगा। मैंने कितनी ही बार स्पन्दन, टपक बहुत स्पष्ट रहनेपर भी फोडेको गायब हो जाते देखा है। मैंने उन फोडोंको उस समय भी आरोग्य हो जाते देखा है, जब सुई डालनेपर पीब मिला था। मैंने केवल फोडोंको गायब हो जाते ही नही देखा है, बल्कि इसके पहले जो पीबवाली अवस्था रक्तमें थी, उसे भी अच्छा हो जाते देखा है। इस ढङ्गकी कुछ ही ऐसी दवाइयाँ हमें मिलती हैं, जो ऐसा करती हैं। इसकी कुछ खास बातें हैं। कैल्केरिया उस तरलके आशोषण और उस स्थानके चुर्णमय होनेमें सहारा क्यों पहुँचाता है? इसका बताना मेरे लिये मुश्किल है, पर यह ऐसा करता है—जब लक्षण मिलते हैं, पर लक्षण मिलनेपर **सल्फर** और **साइलिसिया** जल्दीसे पीब पैदा कर देते हैं, पर कैल्केरियामें सकोचन करने और खींच लेनेकी अद्भुत क्रिया है। एक रोगीके लिये एक निर्देशित हो सकती है, दूसरेके लिये दूसरी। ऐसा भी अवसर होता है, जब **साइलिसिया** निर्देशित औषधि रहती है और फोडा ऐसे भयङ्कर स्थानमें रहता है, कि यदि **साइलिसिया**का प्रयोग कर दिया जाये, तो उसका परिणाम यह होगा, कि फोडा फैलेगा, जो खतरनाक होगा। ऐसी अवस्थामें अस्त्र-चिकित्सकको बुलवाकर सुरक्षित भावसे फोडेसे पीब निकलवा देना चाहिये। यह जाननेपर भी कि यदि वह फोडा सुरक्षित स्थानमें होता, तो आवश्यक दवा रोगीको देना ही कहीं अच्छा होता। कभी हथौडेकी चोट हड्डीके ऊपरकी झिल्लीपर लग जाती है। पेशियोंकी राहसे इसपर चोट पहुँचकर उसपर चोट पहुँच जाती है या अस्थि-आवरक-झिल्ली कुचल जाती है। इससे प्रदाह हो जायगा, तेजीसे पीब आ जायगा और यदि रोगीकी धातुके अनुसार कैल्केरिया निर्देशित होगा, तो अस्त्र-चिकित्सककी छुरीकी कोई भी जरूरत नहीं है और वह बड़ा ही हानि-जनक कार्य होगा। पर प्राचीन आधारसे सोचनेपर, वह चिकित्सक जो होमियोपैथीके विषयमें तथा होमियोपैथिक दवाओंके आश्चर्य-जनक कार्यों के विषयमें कुछ नहीं जानता, वह भयसे अपने हाथ मलने लगेगा, "क्योंकि यदि आप उस पीबको शरीरमें आशोषण हो जाने देंगे, तो रक्त विषाक्त होकर मृत्यु हो जायगी।" पर कैल्केरियामें यह आशोषण किसी ढङ्गसे हो जाता है और प्रत्येक क्षण उसकी उन्नति होती जाती है, उसका पसीना, उसकी तकलीफें घट जाती हैं, उसे भरपूर आराम मिलने लगता है, उसकी भूख बढ जाती है। वह रोगके समयकी

अपेक्षा बलवान हो जाता है और अच्छा रहता है। पुराने आधारसे विचार करनेपर उस मसलको जो होमियोपैथीसे पैदा होता है, किसी तरह हल नहीं कर सकते। हमलोग तो अपने ही दृष्टि-कोणसे और जो कुछ हम जानते हैं, उससे निर्णय करेंगे और यदि आप यह सुनें, कि किसीने उसकी बिना किसी सफलताके परीक्षा की है, तो याद रखिये, कि किसीने केवल अपनी असफलता ही प्रदर्शित की है। सभी बुद्धिमान हाथों द्वारा होमियोपैथी स्वय अपना प्रदर्शन कर लेती है। यदि चिकित्सकमें बुद्धि है, वह नियमका पालन करता है तथा लक्षणके अनुसार औषधिका प्रयोग करता है, तो वह देखेगा, कि ऊपर वर्णन किये अनुसार रोगीमें परिवर्त्तन हो गया।

इस दवाका दूसरा बृहत् स्वरूप है, इसकी **अर्बुद** (Polypi) पैदा करनेकी योग्यता। कैल्केरियाकी जरूरतवालेको नाक, कान, योनि-पथ और मूत्राशयमें तथा इधर-उधर अर्बुद निकला करते हैं। कोषमय प्रवर्धन (Cystic growth) भी होते हैं तथा अद्भुत बतौड़ियाँ (Papillomata)।

दूसरी विचित्र चीज़ जो यह बनाती है, वह है, **अस्थि-वृद्धि** (अस्थ्यर्बुद Exostoses)। विशृङ्खलताकी यह दशा चूनेके विभाजनकी गड़बड़ीके कारण होती है। आप सोचते होंगे, कि प्रकृति ही इसे सब जगह बाटनेकी चेष्टा करेगी, जहाँ इससे फायदा होगा, पर जब इस अस्थि लवणका संग्रह आरम्भ हो जाता है तो चूनेकी ढेर एक जगह हो जा सकती है और दूसरी जगह बिलकुल ही नहीं रह सकता। एक अस्थि तो उपास्थिमय होगी और दूसरेमें अस्थि-प्रवर्द्धन निकलेंगे। हड्डियोंका कोमल पड़ जाना। विकृत अस्थि-निर्माण। इससे इस दवाकी एक कुञ्जी प्रकट हुई है अर्थात् "चलना देरसे सीखता है," क्योंकि पैर बहुत कमजोर रहते हैं। यह देरसे चलना सीखता नहीं है, बल्कि देरसे चलता है, वह चलना जानता है, पर चल नहीं सकता। **नेट्रम-म्यूर**में मस्तिष्कमें बीमारी रहती है, जिससे देरसे बच्चा कोई काम करना **सीखता** है। "अस्थि-तन्तुओंका विलम्बसे विकास, टेढ़ी-मेढ़ी अस्थि।" मांस-पेशियाँ थुलथुली, सन्धियोंके रोग, ऊरु-सन्धिके रोगोंकी तरह। यह **वातसे** परिपूर्ण है। सन्धियोंका वात और गठियाकी दशा।

कैल्केरियाका रोगी **सर्दीला** (Chilly) रोगी रहता है। उसे ठण्डी हवा सहन नहीं होती, कभी हवा सहन नहीं होती, तूफान आनेकी सम्भावना

सहन नहीं होती तथा ठण्डी ऋतुका आना भी सहन नहीं होता और जब गर्मसे ठण्डा मौसम बदलता है, तो उसे अपनेको गर्म रखना मुश्किल हो जाता है। वह शरीरको गर्म रखना चाहता है। माथेमें कभी-कभी रक्त-सञ्चय हो जाता है, छूनेसे गर्म मालूम होता है, पर यह उसे अकसर सर्द मालूम होता है। उसे खोपड़ी सर्द मालूम पड़ती है, पर शरीर छूनेपर ठण्डा मालूम होता है और उसे ठण्डा मालूम होता है और वह बहुत कपड़ा ओढ़ना चाहता है। पैर ठण्डे रहते हैं, बहुत-से स्थानोंमें उसे पसीना होता है, जगह-जगहपर पसीना, पेशानीपर पसीना, चेहरेपर, गर्दनके पिछले भागमें या छातीके सम्मुख भागमें या उसके पैरोंमें पसीना होता है। ठण्ड सहन नहीं होती और इस दवामें सर्वत्र **कमजोरी** दिखाई देती है। पैरोंमें कमजोरी, सहन करनेकी योग्यता नहीं रहती, हर तरहके परिश्रमसे अवस्था बदतर हो जाती है। साँस नहीं ले सकता, मोटा, थुलथुला, रक्त-हीन रोगी, कभी-कभी वे हृष्ट-पुष्ट दिखाई देते हैं, अकसर चेहरा तमतमाया रहता है, पर उनमें सहन करनेकी शक्ति नहीं रहती और यदि ऐसा रोगी थोड़ा भी परिश्रम करता है, तो उसे बोखार आ जाता है या सर-दर्द पैदा हो जाता है। कैल्केरिया उठानेसे, परिश्रमसे, चलनेमें, इतना चलनेसे कि पसीना हो जाये, हो जानेवाली बीमारियोंसे भरा है और ये बीमारियाँ बिलकुल एकाएक पैदा हो जाती हैं, क्योंकि बिना बीमार हुए शान्त रहकर वह पसीना रोक नहीं सकता। यदि उसे पसीना होने लगता है तथा आराम करनेके लिये बहुत देरतक शान्त रह जाता है, तो पसीना इस तरह एकाएक रुक जायगा, कि उसे जाड़ा मालूम होने लगेगा या उसे सर-दर्द पैदा हो जायगा। कमजोर, थका और चिन्तित। श्वासकी तकलीफें, कमजोर हृत्पिण्ड। समूचा शरीर कमजोर। मांस-पेशियोंमें देरतकका परिश्रम सहन करनेकी शक्ति नहीं रहती और यही अवस्था मनकी भी रहती है। मनमें भी बहुत देरतक मानसिक परिश्रम सहन करनेकी शक्ति नहीं रहती। कैल्केरियाका रोगी एक **क्लान्त रोगी** रहता है, वह चूनेकी कमीसे कष्ट पाता रहता है। वह चूना हजम नहीं कर सकता, उसकी गाठें बढ़ जाती हैं। गर्दनका पतला पड़ जाना और प्रत्यङ्गोंका क्षीण पड़ जाना जब कि पेटकी ग्रन्थियाँ और चर्बी बढ़ी रहती हैं। यह खासकर बालकोंमें देखा जाता है। बड़े पेटका बच्चा, जिसके हाथ-पैर क्षीण और गर्दन भी क्षीण रहते हैं। बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ, मोटा, थुलथुला और

रोगी, जिन्हें बिना ताकत बढ़े ही मांस बढ़ता जाता है, उनमें मांस बढ़ता जाता है और थुलथुले होते जाते हैं, कमजोर बने रहते हैं। वे जो बीमारीसे उठते हैं, उनका मांस थुलथुला हो जाता है और थोड़े ही दिन बाद वे शोथ-ग्रस्त हो पड़ते हैं। कैल्केरियाका रोगी सीढ़ी नहीं चढ़ सकता, उसके पैर क्लान्त रहते हैं और वक्षमें भी बहुत क्लान्ति रहती है। सीढ़ी चढ़नेके समय वह हाँफता है और दम घुटता है, उसमें मांस-पैशिक दुर्बलता और थुलथुलापनका प्रत्येक प्रमाण मौजूद रहता है। हर जगह परिपोषणमें गड़बड़ी रहती है। ऐसी ही श्रेणीके रोगी कण्ठमाला-ग्रस्त कहलाते हैं और अब हमलोग इसे सोराकी अवस्था कहते हैं। कैल्केरिया हमारी सबसे गहरी सोरा-विष-नाशक (*Anti-psoric*) दवा है। यह ऐसी दवा है, जो जीवनपर गहरायीतक जा पहुँचती है और स्वास्थ्य विधानके प्रत्येक अंशपर अपना प्रभाव पहुँचाती है।

अब हम **मानसिक लक्षणों**को लेते हैं। कैल्केरिया बतानेवाले सभी मानसिक लक्षणोंसे एक गहरी **दुर्बलताकी** दशा प्रकट होती है, देरतक मानसिक कार्य करनेकी योग्यता नहीं रहती, मानसिक कार्यों से बहुत क्लान्त हो पड़ता है। उत्तेजनासे भरा मानसिक परिश्रमसे वह मानसिक क्लान्त रहता है और शारीरिक भी, और उसे पसीना होने लगता है तथा उत्तेजित, उपद्राहित और विचलित हो जाता है। भावोंकी बहुत अधिक गड़बड़ी, भावोंकी उत्तेजनासे, कष्टसे और विरक्तिसे कई दिन, बल्कि कई सप्ताहतक तकलीफें बनी रहती है या एक सार्वाङ्गिक भाव-सम्बन्धी गड़बड़ी पैदा हो जाती है। "अपना प्रयोग करनेकी योग्यताका न रहना।" ऐसी उत्तेजना, गड़बड़ी या क्लान्तिके बाद कुछ देरतक अच्छी तरह सोचनेकी शक्तिका न रहना। बहुत दिनोंके उद्वेग, बहुत दिनोंतक कारबारमें लगी रहना और उत्तेजनासे पैदा होनेवाली बीमारियोंमें बहुत उपयोगी है। यह अद्भुत ढङ्गके मानसिक भावोंसे भरी है, जिससे अन्य बहुत-सी दवाओंसे यह अलग हो जाती है उसे अपने मनका क्षय अनुभव होता है और उसे मालूम होता है, कि यह कमजोरी, यह काम कर सकनेकी और सोचनेकी अयोग्यता सम्मिलित रूपसे उन्मादकी ओर जा रही है। वह इसपर विचार करता है, उसे विश्वास हो जाता है, कि यह उन्मत्त है या उन्माद-ग्रस्त होना ही चाहता है, वह दुर्बलमना होता जाता है और इसपर भी ध्यान देता है, क्योंकि उसके मनमें जो कुछ है, वह यही है,

कि वह उन्माद-ग्रस्त या दुर्बलमना होता जाता है और वह सोचता है, कि लोग यह बात समझ जायँगे। वह सोचता है, कि लोग उसको ओर सन्देहसे देखता है और वह उन्हें सन्देहसे देखता है और उसे ताज्जुब होता है, कि लोग इस विषयमें उसे कुछ कहते क्यो नही? वह सोचता है, कि वह उन्मत्त हुआ जाता है और दूसरे मनुष्य, उसको इस मानसिक अवस्थापर ध्यान दे रहे हैं। अधिकांश समय वह यही अपने मनमें रखे रहता है। वह दिनके समय इसके विषयमें सोचता है और यह सोचता-सोचता उत्तेजित हो उठता है, वह रातभर इसे सोचता रहता है और यह सोचना ही उसे जगाये रखता है। वह सोचता हुआ रातमें देरतक लेटा रहता है। कैल्केरिया छोटे विचारोंकी ओर ले जाता है अर्थात यह मनको छोटेपनकी तरफ, छोटे विचारोकी तरफ और छोटी बातोंमें लगे रहनेको तरफ बाध्य करता है, पर उसका मन, जैसा कि ऐसी चीजोंपर विचार करनेके लिये बाध्य करता है, जिन्हें वह हटा नहीं सकता। जब कैल्केरियाका रोगी अपने दोस्तोंसे अपना भाव कहने लगता है, तो वे स्वभावत' उससे कहते हैं,—"क्यों? इन भावोंको तुम हटा क्यो नहीं देते, यह तो कुछ भी नहीं है," पर उसके लिये यह एक बहुत बड़ी चीज़ है और वह इन्हें हटा नही सकता। ये सभी चीजे मिलकर उसे विश्वास दिला देती हैं, कि वह उन्मत्त हुआ जाता है। वह हिसाब नहीं लगा सकता, वह दूरतक सोच नही सकता, वह गहरी बातोंपर विचार नही कर सकता, वह एक दार्शनिक रह सकता है, पर उसने दर्शन-शास्त्रकी बातें सोचनेकी योग्यता खो दी है। उसने अपनी मानसिक गहरायी खो दी है। वह अपनी बुद्धिके बजाय अपने भावोद्रेकोसे सिद्धान्त निकालता है। वह चीजोंके बारेमें वैसा ही सिद्धान्त बनाता है, जैसा कि उन्हें देखना चाहता है। आप भी यही सोचेंगे, कि वह उन्मत्त हो जाना चाहता है, वह इसके बारेमें इतनी ही ज्यादा बातें करता है। किसी प्रकारका भी तर्क वह स्वीकार नही कर सकता है और बदतर-से-बदतर होता जाता है। उसे अपने चिकित्सकके विश्वास दिलानेपर विश्वास नही होता, जिसपर कि उसे पहले सदासे विश्वास था। ऐसा मालूम होता है, कि उससे तर्क करना वृथा है, पर उसकी अवस्था इतनी खराब नहीं है और अपनी मानसिक अवस्थाके सिवा सभी विषयोंपर वह तर्क-वितर्क कर सकता है। वह चीजोंकी कल्पना करता है और जिन चीजोंपर वह कल्पना करता है, आपको वास्तवमें आश्चर्य होगा,

कि वह किस तरह उनपर विचार करता रहता है, क्योंकि वे बहुत ही छोटी चीजें होती हैं और ऐसा ही सब हो जाता है, जब उसे उन्मत्तता, जड़-बुद्धित्व या सार्वाङ्गिक स्वास्थ्य भङ्ग हो जाता है। यह एक निश्चेष्ट अवस्था है, जिससे वह बैठा रहता है और अपने छोटे-छोटे कामोंके सम्बन्धमें सोचा करता है और उसको छोटी चीजें जो वास्तवमें कुछ नहींके बराबर होती हैं उनपर ही वह बैठा रहता है और सोचा करता है। पाठ्य-ग्रन्थमें कहा है, —"वह बैठा रहता है और काठियाँ तोड़ा करता है या दिनभर आल्पीन अपनी अङ्गुलियोंसे झुकाता रहता है।" तुच्छ काम करता है और इस तरह उसमें अपनेको दिनभर उलझाये रहता है, ज्यादा-से-ज्यादा अपनेको लगाये रहता है। उसके लिये कुछ भी सोचना असम्भव हो जाता है उसके लिये किसी निर्णयपर आना भी असम्भव है, क्योंकि वह कभी ठीक उसी तरह दुबारा नहीं कर सकता। वह सरल-से-सरल जोड़, घटावको भी हल नहीं कर सकता। अब वह इस विषयमें बहुत ज्यादा सोचता है और सोचता है, कि प्रत्येक मनुष्य उसको देख रहा है, यहाँतक कि अन्तमें वह ज्योंही अपनी आँख बन्द करता है, त्योंही उसे कल्पित वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं। ज्योंही वह कुछ शान्त होता है और "सोनेका विचार करता है, इन सबसे मेरा छुटकारा हो जायगा" और वह सोनेके लिये अपनी आँख बन्द करता है, त्योंही उसे जल्दी से जल्दी आँखें खोल देनी पड़ती हैं। वह एक उत्तेजनाकी दशामें हो जाता है, क्योंकि उसे छोटे-छोटे भयङ्कर भूत दिखाई देने लगते हैं। वह अपना मन साफ नहीं रख सकता, वह इसीलिये सो नहीं सकता, कि उसके विचार उसे कष्ट पहुँचाते हैं और वह सब तरहकी चीजें देखता है। उसके मनमें सङ्गति नहीं रहती। हम जानते हैं, कि दृढ़ बुद्धि-शक्ति ऐसी बातोंको दूर भगा देती है, पर ये ही वे चीजें हैं, जिनपर कोल्केरियाका रोगी उलझा रहता है। आप-ही आप बातें करता है। वह पलङ्गपर लेट जाता है या जब अकेला रहता है, बैठ जाता है तथा ख्याली मनुष्योंसे प्रत्येक खयाली विषयपर, जिनसे काम पड़ा है, बातें किया करता है। वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाता है और कल्पना करता है, कि यह सब सत्य है। हम देखते हैं, कि स्वस्थ मनसे वह कितनी दूर है, पर इतनेपर भी, इन अद्भुत बातोंके रहनेपर भी वह पागलखानेके योग्य नहीं है, क्योंकि जब वह जगाया जाता है, तो वह बातचीत करता है और उसी तरह करता है, जिस तरह साधारण मनुष्य करते

हैं। जब वह अकेला रहता है और कोई उससे बातें करनेवाला नहीं रहता, तब वह ये अद्भुत कार्य करता है। जब वह किसीके साथ रहता है, तो उसपर बहुत कुछ शासन रहता है और इसीलिये ये चीजें नहीं प्रकट होती हैं। जब वह प्रलाप-ग्रस्त या उन्मत्त रहता है, तो यही विचार उसमें बना रहता है। अपनी अंगुलियाँ नोंचता है और सब तरहके विचित्र छोटे-छोटे काम करता है। दृश्य और मनुष्योंका चेहरा देखता है, जब आँखें बन्द रहती हैं। "सोचती है, कि कोई उसकी बगलमें चल रहा है।" **साइलिसिया**की परीक्षामें यह दृढ़तासे देखा गया था। यह **पेट्रोलियम** और **केल्केरिया**में भी पाया गया है। पूर्ण स्वस्थावस्थामें, सुदृढ़, जबर्दस्त बुद्धिवालोंको यह नहीं मालूम हो सकता, पर स्नायविक मनुष्य और खासकर स्त्रियोंमें यह साधारण रूपसे देखा जाता है। "भयङ्कर दृश्योंके साथ मानसिक विशृङ्खलता, कुत्तेसे चारों ओर अपनेको घिरा हुआ देखता है, उनको लड़कर भगाता है।" स्नायविक स्त्रियोंमें होनेवाली एक अनुभूति यह है,—"उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उसे ऊपर-नीचे दौड़ना और चिल्लाना पसन्द है।" ऐसा अनुभव करती है, कि वह इससे अपनेको रोक नहीं सकती, उसे चीखना ही पड़ेगा। यह स्वास्थ्य-भग्न व्यक्तिको होता है, घरके किसी मनुष्यकी मृत्युसे भयानक उत्तेजित हो पड़ता है। यदि माताका पुत्र या पति मर जाता है या कोई युवती अपना प्रिय-पात्र खो देती है, तो वह भग्न-हृदय और बहुत उत्तेजित रहती है। यह एक हिस्टोरियाकी अवस्था है और इतनेपर भी मनुष्योंको ऐसा होते हमने देखा है। मुझे एक रोगी याद है, यह उसे व्यापारिक खराबियोंसे उत्पन्न हो गया था। उसमें यही भाव था, वह घरमें ऊपर-नीचे चला करता था। उसने कहा था, कि उसको ऐसी इच्छा होती है, कि वह उड़ जाये या खिड़कीसे कूद पड़े या इसी तरहका कुछ करे। यह हिस्टोरियाकी दशासे भी समता रखता है या स्नायविक उत्तेजनाकी बढ़ी हुई दशामें। "वह किसीकी हत्या, चूहा, आग प्रभृतिके सिवा न तो कुछ सोचती है और न किसी दूसरे विषयमें बातचीत करती है।" यह भी वही छोटी और मूर्खता-पूर्ण बातोंपर बातें करनेका खयाल है। वे चीजें जो किसी दूसरेको आनन्द नहीं देती और इतनेपर भी ये बातें मैंने रोगियोंमें होती देखी हैं और मैं उनसे पूछता था, कि तुम ऐसा क्यों करते हो? यह साधारणतः कहा गया है, कि—"मैंने इसे रोकनेकी बहुत चेष्टा की, पर जब न कर सका, तो

जारी रहने दिया, क्योंकि इससे मुझे लाभ होता दिखाई दिया।" "वह हत्या, आग तथा चूहे प्रभृतिके विषयमें सोचती और बातें करती है।" आपकी रोगिनी अन्य मूर्खता-पूर्ण विषयोंपर बातें कर सकती है, पर यह उस विचारको प्रदर्शन करनेके लिये कहा गया है, कि वह बैठी-बैठी निरर्थक विषयोंपर बातें किया करती है और अपनेको रोक नहीं सकती। सोचती है, फिर सोचती है और प्रकट करती है, लगातार उसी विषयपर बातें करती रहती है। भयङ्कर रूपसे चीख उठना और फिर कैल्केरियाका रोगी बात करनेसे इनकार कर देगा, कुछ भी न बोलेगा। अकेली रहनेपर आप-ही-आप बातें कर सकती है, पर किसीसे बातचीत करना न चाहेगी और एकदम चुपचाप बैठी रहेगी। कैल्केरियाके रोगीमें कभी-कभी काम-काजसे घृणा पैदा हो जाती है, काम-काज छोड बैठता है, वह एक बहुत ही लाभजनक कारबार छोड देगा और घर जा बैठेगा तथा कुछ न करेगा। व्यवसाय करके क्लान्त हो जाने बाद, जब कि वह एक बहुत ही उन्नत अवस्थामें जा पहुँचा है, वह कहता है, कि व्यापार उसके लिये लाभदायक नहीं है। वह व्यापारसे क्लान्त हो पडा है और जब फिर अपने कारबारमें लगता है, तो ऐसा मालूम होता है, कि वह उसे पागल बना देगा। वह उसकी ओर देखना भी नहीं चाहता, वह उसके विषयमें कुछ जानना भी नहीं चाहता। इसमें सन्देह नहीं कि आप यह तुरन्त देख सकते हैं, कि कैल्केरियाका रोगी व्यापारकी गडबडीसे कमजोर और क्लान्त नहीं हो पडा है, परन्तु इसमें ऐसा है। पर जिस विषयमें मैं कह रहा हूँ, वह यह है, कि इसने यहाँतक अत्यधिक कार्य किया है, जबतक कि उसका स्वास्थ्य-भङ्ग नहीं हो गया और ठीक अपनी सफलताके मध्यमें ही वह अपना व्यवसाय छोड देता है और घर चला जाता है और सब छोड देता है,—ठीक ऐसा मालूम होता है, मानो वह आलसी हो गया है। यदि आप उसकी ओर देखेंगे, तो आप भी इसी निर्णयपर पहुँचेंगे, कि वह आलसी है। इतनेपर भी यह एक प्रकारका उन्माद है, यह आलस्य नहीं है, जो आलसी प्रकृतिवालोंको होता है, यद्यपि वह भी बहुत बार आरोग्य कर दिया जा सकता है। वह शिल्प-कार्यशील था, पर एकाएक बदल गया है। मनमें एक बहुत बडा परिवर्त्तन हो जाता है और उसमें ये लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। ये वैसे मनुष्य नहीं होते, जो वैसे ही जन्म ग्रहण करते हैं, आलसी जन्म ग्रहण करते, कभी काम नहीं करते, बल्कि वे हैं, जो

आलसी हो जाते हैं। यह धार्मिक सुनिश्चित प्रकृतिके मनुष्योंके लक्षणकी तरह है, जिनकी चाल और बातें ठीक होती थी, पर एकाएक उनमें परिवर्त्तन हो जाता है और वह कसम खाने लगता है। इसमें सन्देह नहीं, कि हम जानते हैं, कि वह उन्मत्त मनुष्य है। दूसरी ओर, हमें ऐसे रोगी मिलते हैं, जो साधारणत' परिश्रमशील थे, उनमें कामके लिये उन्मत्तता उत्पन्न हो गयी है। और ऐसा मालूम होता है, कि उनमें इस उन्मत्त शिल्पमें दिन-रात काम करनेकी योग्यता आ जाती है, वे तड़के उठते हैं और देरसे सोते हैं। यह एक रोगीकी दशा है। इसीलिये, जब हम "रेपर्टरीमें" "शिल्प-शास्त्र" देखते हैं, तो इसका मतलब साधारणत. शिल्प-कार्य करनेवाली अवस्था नहीं है, बल्कि जो लक्षणोंमें अति-वृद्धि रहती है। वह इतना कार्यशील हो गया है, कि उसे कामके लिये उन्माद पैदा हो गया है।

'रें'रिआया करता है, निराश और उदास।" किसी ८-९ बरसकी उज्वल बालिकाको उदास और निराश तथा भविष्य जगतकी बातें करते तथा देव-दूतोंका जिक्र करती तथा यह कहते देखना कि वह मरना चाहती है, वह वहाँ जाना चाहती, वह उदास है और दिनभर बाइबिल पढ़ना चाहती है, अद्भुत बात है। यह एक विचित्र बात अवश्य है और इतनेपर भी कैल्केरियाने इसे आरोग्य किया है। **आर्सेनिक**ने भी यह दशा आरोग्य की है और **लेकेसिस** ने भी। उनकी कुछ-कुछ अकालपक्व होनेकी इच्छा है, उन्होंने रविवारके स्कूलमें भी पढ़ा है और जो कुछ उन्होंने सीखा है, उसे गम्भीरता-पूर्वक ग्रहण किया है। बच्चे जो उदास और असुखी रहते हैं तथा वृद्ध-पुरुष, जिन्हें जीवनसे घृणा हो जाती है, अपने जीवनसे ऊब उठते हैं। यह बहुत कुछ **आरम**की तरह है। **आरम**पर विचार करते समय मैंने बताया है और इसपर विचार किया है, कि सबसे बड़ा प्रेम जीवनका प्रेम होता है और जब किसी मनुष्यका अपने जीवनपर प्रेम नहीं रहता, उससे ऊब उठता है, उसे घृणा करता है और मर जाना चाहता है, तो वह उन्मादकी सीमापर पहुँचा हुआ रहता है। वास्तवमें यह इच्छा-शक्तिका उन्माद है। आपको केवल पर्यवेक्षण करनेवाली आँखोंसे दीखता है, कि एक आदमी प्रेममें उन्मत्त हो सकता है, बुद्धिमें पागल। एक तो ठीक सङ्गतिमें रह जायगा और दूसरा नष्ट हो जायगा। कैल्केरियामें हम दोनोंको ही विशृङ्खलित होते देखते हैं। एक रोगी अपने ऐच्छिक संस्थान (Voluntary system) में उन्मत्त रहता है, जिससे

उसका समस्त प्रेम परिवर्त्तित हो गया है। उसमें वैसा स्नेह नहीं है, जैसा होना चाहिये या जैसा बीमार होनेके पहले था। उसे अपने समस्त परिवार या परिवारके कुछ मनुष्योंसे विराग हो जाता है या उसमें ठीक-ठीक सम्बन्धके अनुसार स्नेह रह सकता है, पर बुद्धि नहीं और इसीलिये वह अद्भुत कार्य किया करता है।

वह भयसे भरा है। जीवनसे क्षोभित, निराश, चिन्तित, उसके लिये संसार अन्धकारमय हो रहा है। 'कुछ शोकजनक या भीषण घटना घटनेका भय, डरती है, कि उसकी तर्क-शक्ति चली जायगी या लोग उसका चित्त-विभ्रम समझ जायेंगे।" "मृत्युका भय, यक्ष्मा हो जानेका, दुर्भाग्यका या अकेले रहनेका भय।" जब इच्छा-सस्थान गड़बड़ा जाता है, तो भय छा जाता है, प्रत्येक आवाज़पर वह चौंक पड़ती है, वह सो नहीं सकती, जिससे मन और शरीरको शान्ति प्राप्त हो। भयङ्कर स्वप्न देखकर नींदमें भी वह विचलित हो पड़ता है, उसकी नींद बेचैन नींद होती है। "बहुत घबड़ाहट और दबाव, बेचैनी और कलेजा धड़कना, हताश, निराश।" इन लक्षणोंको हटाकर और रस-प्रधान धातु, पीले, थुलथुले रोगी व्यक्तिसे सम्मिलित कीजिये। "बच्चा जिद्दी और चिड़चिड़ा, जरा सामें हो डर जाता है।" मानसिक परिश्रम करनेपर बहुत-सी तकलीफें बढ़ जाती हैं, बहुत-सी तकलीफें, उत्तेजना, विरक्ति या भयसे बढ़ती हैं।

उसका खूनका दौरान इतना कमजोर, हृदपिण्ड इतना विशृङ्खलित रहता है, कि हरेक उत्तेजनासे वह धड़कने लगता है। हरेक शारीरिक परिश्रमके बाद उसका दम फूलने लगता है और ये खूनके दौरानमें इतना अधिक भाग लेते हैं तथा मस्तिष्कके खूनके दौरानको इतना गड़बड़ा देते हैं तथा बुद्धिपर तथा ज्ञान तन्तुओंपर इतना प्रभाव डाल देते हैं, कि प्राय सभी अवसरोंपर सब लक्षणोंके साथ सम्मिलित रूपमें हमें सरका चक्कर दिखाई देता है। भय, घबड़ाहट और सरमें चक्कर। यदि उसके भावोद्रेक उसे विचलित कर देते हैं, तो उसके सरमें चक्कर आने लगता है। सीढ़ी चढ़नेपर रक्त माथेमें चढ़ने लगता है जिससे सरमें चक्कर पैदा हो जाता है, मानसिक परिश्रमसे चित्त-विभ्रम और सरमें चक्कर आना। यदि उसे किसी विषयका आघात पहुँचता है या कोई बुरा समाचार सुनता है या मानसिक उत्तेजना अथवा विरक्ति हो जाती है, तो सरमें चक्कर आ जाता है। चित्त-विभ्रम, माथेमें खून ज्यादा चढ़ना, हाथ-पैर

ठण्डे, पसीनेसे तर, इसके साथ ही सरमें चक्कर। "ऊँची जगहपर चढनेके समय सरमें चक्कर आना" अर्थात् ऊँची जगहपर चढनेकी चेष्टा। उसके माथेमें खून दौड जाता है और उसके सरमें चक्कर आने लगता है। "सीढी चढने या पहाडीपर चढनेपर सरमें चक्कर। एकाएक बैठे-बैठे उठनेपर या सर घुमानेपर, यहाँतक कि आरामके समय भी सरमें चक्कर।"

कैल्केरियाके रोगीके **माथेका** एक सबसे अद्भुत लक्षण है पसीना, जरा भी परिश्रम करनेपर माथेमें पसीना होने लगना। जब किसी भी स्थानपर पसीना न होगा, तब भी उसके चेहरेपर पसीना होगा और उसका माथा ठण्डे पसीनेसे भरा रहता है, जब शरीरके अन्य भागमें कोई तकलीफ नहीं रहती। पैरोंके सम्बन्धमें भी यही बात सत्य है। जब उसके पैर बहुत ठण्डे हो जाते हैं, तो उनसे पसीना छूटने लगता है, जब वे गर्म रहते हैं, तब भी उनसे पसीना होता है। आप स्वभावत: ही सोच सकते हैं, कि जब कोई आदमी ठण्डे कमरेमें जायगा, तो उसका पसीना बन्द हो जायगा, पर कभी-कभी कैल्केरियाके रोगीके ललाटमें और पैरोंमें ठण्डे कमरेमें पसीना होता है। उसके ललाटपर पसीना होता है, जिससे हवाके प्रत्येक झटकेसे उसे सर्दी लगती है और इससे उसे सर-दर्द हो जाता है। समूची खोपडीके चमडेकी ठण्डक, इसीलिये उसे सरपर कपडा लपेट देना पडता है, इतनेपर भी रक्त-सञ्चयके समय माथा गर्म रहता है। इस तरह समय-समय माथेमें बहुत गर्मी मालूम होती है। कैल्केरियाका सर-दर्द "कि कर्त्तव्य विमूढ" बना देता है, वह सुन्न कर देता है, उससे चित्त-विभ्रम उत्पन्न हो जाता है। कैल्केरियाके रोगीको नाककी सर्दी हो जाती है, उसमें कुछ-न-कुछ स्राव होता है। जब वह अच्छा रहता है, तो बहुत अधिक स्राव होता है, पर वह ठण्डी जगहपर चला जाता है, स्राव रुक जाता है और उसे सर-दर्द हो जाता है। आँखपर सर-दर्द। मस्तकमें, माथेके पिछले भागमें रक्त-सञ्चय। "आँखोंके ऊपर-नीचे नाकतक फाडनेकी तरह दर्द" कैल्केरियाका एक सुदृढ लक्षण है। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, कि मानो वहाँ भीतरकी ओर एक बहुत बडा ढेला है। यह खूब गर्म प्रयोगसे आराम हो जाता है। अन्धेरेमें भी इसमें आराम पहुँचता है और दिनकी रोशनीमें इसकी वृद्धि हो जाती है। आराम पानेके लिये उसे बाध्य होकर अन्धेरे कमरेमें जाकर लेट जाना पडता है। अन्धेरेमें लेटनेपर कभी-कभी उसका सर-दर्द घट जाता है। दिनमें यह सर-दर्द बदतर हो

जाता है और सन्ध्यामें तो यह इतना तेज़ हो जाता है, कि इसके साथ ही मिचली और वमन भी होने लगता है। यह धातुगत सर-दर्दका एक रूप है। यह वह सर-दर्द है, जो कभी-कभी दो हफ्तेमें एक बार होता है। हर सातवें दिन सर-दर्द या दो सप्ताह बाद सर-दर्द, समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द, वमनके साथ सर-दर्द, पुराने ढङ्गका अमेरिकन सर दर्द। इसमें साधारणतः सातवें या पन्द्रहवें दिन होनेकी सामयिकता रहती है, पर इसके अलावा जब कभी उसे हवा लग जाती है, यह तब भी हो जाता है। हवामें घुड़सवारी करनेपर होता है, क्योंकि यह एक सर्दीला रोगी रहता है। उसे बहुत सर्दी लग जाती है या ठण्डा हो जाता है, तो उसके माथेमें यह दर्द हो जाता है, वमनके साथ सर-दर्द हो जाता है। इसके अलावा इसमें सरके बायें भागमें भी दर्द होता है। एक पार्श्वका सर-दर्द, सर-दर्द आवाज़से, बातचीतसे बढ़ जाता है, पर शामको तथा अन्धेरेमें लेटे रहनेपर घट जाता है। इसमें कनपटीमें भी दर्द है और यह दर्द नाककी जड़के भीतरसे होता हुआ अनुभव होता है। भौंवोंके ऊपर होनेवाला सर दर्द नाकतक हो जाता है, कनपटीमें होनेवाला सर-दर्द एक कसावटका भाव पैदा करता अनुभव होता है, ललाटमें ज़ोरके तनावका भाव। हिलने-डोलने चलने या बातचीत करनेपर सर-दर्द बदतर हो जाता है। कैल्केरियाके बहुत-से सर-दर्द, ज्योंही वे बहुत तीव्र होते हैं, त्योंही उनमें धमक होने लगती है। इतने ज़ोरकी धमक होती है, कि रोगी केवल इतना ही कहकर सन्तुष्ट नहीं होता, कि टपक होती है। वह कहता है, कि मानो हथौड़ीसे ठोंका जाता है। बहुत-सा दर्द तो दबाव या फाड़नेकी तरह होता है। 'सधान-जनित सर दर्द।' माथेमें सुई गड़नेकी तरह या टपककी तरह दर्द, मानो यह फट जायगा। चलनेसे और झटका लगनेसे सर-दर्द बदतर हो जाता है। कभी-कभी उसे माथेमें सर्दी मालूम होती है, ऐसा मालूम होता है, कि ठण्डा माथा सुन्न है और इतना ठण्डा है, मानो काठका बना है। वह कभी-कभी यह सुन्नपन अनुभव करता है और इसका वर्णन इस तरह करता है, कि मानो वह माथेमें टोपी पहने हुए हैं, मानो माथेमें शिरस्त्राण पहने हुए हैं। अब इन सब अनुभूतियोंका वर्णन करना दुस्तर है, पर कभी-कभी ये सब एक और वही बात होती है। कैल्केरियाके सभी सर-दर्द कुछ-न-कुछ रक्त-सञ्चयी प्रकृतिके होते हैं। यह कैल्केरियाका एक विचित्र स्वरूप है, कि भीतरी अङ्गोंका रक्त-सञ्चय जितना

ही स्पष्ट रहता है, उतना ही वह स्थान शीतल रहता है। बच्चेकी बीमारियोंमें पाकाशयके कष्टोंमें तथा आँतोंकी बीमारियोंमें, हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं और पसीनेसे भर जाते हैं। वह कभी-कभी ज्वरसे भरा बिछावनपर पड़ा रहता है तथा खोपड़ीकी त्वचा ठण्डे पसीनेसे भरी रहती है। यह एक अद्भुत बात है। आप निदान-तत्वसे तर्क लड़ाकर इसको हल नहीं कर सकते और जब कोई चीज़ इतनी अद्भुत रहती है, कि उसका कारण नहीं खोज निकाला जा सकता, तो दवाके विवरणमें वह बहुत ही कीमती हो जाती है और एक वह चीज़ होती है, जो रोगीको दवाका चुनाव करते समय साधारणतया छोड़ी नहीं जा सकती। यह एक सार्वाङ्गिक अवस्था है, यह इतनी ज्यादा प्रत्यक्ष है। इसमें सिरके शिखर-देशमें जलन होती है और यह ललाटके ठण्ढकके साथ अकसर मौजूद रहती है या समूचा माथा ठण्डा मालूम हो सकता है, सिवा इसके कि मस्तक-शिखरपर एक जलती हुई जगह हो। ठण्डी हवामें या बहुत ठण्डी ऋतुमें चलनेके समय कैल्केरियाके रोगीका माथा ठण्डा और पैर बरफकी तरह ठण्डे रह सकते हैं, पर ज्योंही पैर गरमा जाते हैं, त्योंही वे दूसरी सीमापर जा पहुँचते हैं और उनमें इतनी जलन होने लगती है, कि रोगी उन्हें बिछावनके बाहर निकाल रखता है। तजुर्बा न रहनेवाले चिकित्सक यह देखकर **सलफर** दे देते हैं, क्योंकि यह **सलफर**के प्रयोगकी कुञ्जी है। इस कुञ्जीके सहारे नुसखा लिखनेवाले सभी **सलफर** देते हैं, जब कभी रोगी बिछावनके बाहर पैर निकाल रखता है, पर कितनी ही ऐसी दवाएँ हैं, जिनमें पैरोंमें जलन होती है, पैर गर्म रहते हैं। इसलिये हमलोग **सलफर**तक ही सीमित नहीं हैं। कैल्केरियामें खोपड़ीकी हड्डीकी भी बीमारी है, सरका बाहरी भाग। हड्डीका धीमी गतिसे निर्माण। बहुत दिनोंतक ब्रह्मरन्ध्र खुला रह जाता है। इसके मस्तकमें जल-सञ्चयवाली अवस्था रहती है, झिल्लियोंसे रस-स्राव और हड्डियाँ नहीं बढ़ती तथा माथेकी अभिवृद्धिसे समता नहीं रखती, इसीलिये सीवन अलग होने लगती है, और माथा चौड़ा और बड़ा बराबर जल-सञ्चयके साथ होता जाता है। मस्तिष्कमें जल-सञ्चयवाले बच्चोंका तो यह पसीना बहनेवाला माथा एक साधारण स्वरूप है। बच्चा रातमें तकियेपर सर रखकर सोता है, उसके माथेसे पसीना चू-चूकर तकियेको चारों तरफ गीला कर देता है, खासकर रातके समय पसीना होना। जिन व्यक्तियोंकी मस्तिष्ककी कोमलता (Softening of

the brain) की बीमारी रहती है, उनका तकिया भी सरके चारों तरफ गीला हो जाता है। जिन बच्चोंको कष्टकर दाँत निकलने (Difficult dentition) की बीमारी रहती है, उन्हें भयङ्कर सपने दिखायी देते हैं, वे रातमें उल्लूकी तरह चिल्ला उठते हैं और उनके सरके चारों तरफ तकिया तर रहता है। पुराने रक्त पूर्ण रोगी, भग्न-स्वास्थ्य प्रकृतिवाले, मोटे थुलथुले, लसिका-प्रधान रोगी, जिनकी ग्रन्थियाँ बढ़ी रहती हैं। माथेमें पसीना होता है, माथेमें ठण्डा पसीना होता है। वृद्धावस्थामें जैसे होता है, उसी तरह नियमित रूपसे केश नहीं झड़ जाते, बल्कि इधर-उधर चकत्तेकी तरह झड़कर निकल जाता है। आप माथेके पार्श्वमें या सरके पिछले भागमें, खल्वाट स्थान देखते हैं, केशका एक गुच्छा एक जगह या दो-तीन जगहका निकल गया है। इसके अलावा इसमें माथा और चेहरेपर उद्भेद निकलते हैं, बच्चे और बालकोंको होनेवाला अकौता। "पीले पीवके साथ माथेमें मोटी पपड़ी जमना," बदबूदार उद्भेद।

आँखोंमें भी बहुत-सी तकलीफें होती हैं तथा कैल्केरिया चक्षु चिकित्सकोंका बहुत बड़ा दोस्त हो सकता है, यदि वे इसका प्रयोग जानें। यह खासकर प्रदाहोंमें उपयोगी नहीं होता, पर उन मोटे-ताजे, थलथुले प्रकृतिवालोंके लिये, जिनमें प्रत्येक बार सर्दी आँखोंमें बैठ जाती है और प्रदाह पैदा कर देता है और यह कई दिनोंतक होते रहता है तथा जखम होना आरम्भ हो जाता है। कैल्केरियाका अध्ययन कीजिये। फुन्सियाँ पैदा होती हैं, टूटती हैं और जखम हो जाता है। पानीमें पैर डूबा रहनेसे, झोंककी हवामें घुड़सवारी करनेसे, सर्दीसे, तर मौसमसे, उसे आँखोंकी तकलीफें पैदा हो जाती हैं। कनीनिकाका जखम। आँखकी और सरकी सभी बीमारियों में, आँखमें रोशनीका सहन न होना (Photophobia) इतना अधिक रहता है, कि कैल्केरियाका रोगी, जब वह विचलित रहता है, साधारण रोशनी भी सहन नहीं कर सकता तथा सूर्यकी रोशनीमें उसका बाहर निकलना बहुत ही मुश्किल हो जाता है और कितनी ही बार तो चमकीली रोशनीमें जानेसे, ताककर देखनेपर तथा आँखपर जोर पड़नेसे ही प्रदाह हो जाता है। सब तरहके परिश्रमोंसे सर-दर्द हो जाता है और आँखकी बीमारियाँ हो जाती हैं। तनाव क्योंकि एक पेशी कमजोर रहती है, उसमें दृष्टि-स्थिरताकी गड़बड़ी रहती है। आँखके थोड़े भी परिश्रमसे अवस्था बदतर हो जाती है। आप देखिये, कि यह

इसके सार्वाङ्गिक लक्षणोंकी तरह है, जो परिश्रमसे बढ जाते हैं। वह ज्यादा देरतकका परिश्रम सहन नहीं कर सकता। आप देखें, कि यह उसके शरीरांश तथा समस्त शरीरके सम्बन्धमें एक समान सत्य है। आप देखें, कि पढना, लिखना और किसी चीज़को ओर देखना, सब प्रत्यक्ष परिश्रम है। कैल्केरियामें रोगवाला अंश परिश्रमसे बदतर हो जाता है तथा सम्पूर्ण शरीरकी अवस्था भी परिश्रमसे बिगड जाती है, कैल्केरियाने मोतियाबिन्द (Cataract) आरोग्य कर दिया है। सरके रोगोंके साथ, ज्वरके साथ तथा बहुत अधिक परिश्रमसे जब वह थक जाता है, तब आँखकी भी कितनी ही तकलीफें कैल्केरियाके रोगीमें उत्पन्न हो जाती हैं। इसीलिये, वह आसानीसे विचलित हो जाता है, प्रलापकी भाँतिका चित्त-विभ्रम हो जाता है और आँखें बन्द करनेपर वह भयङ्कर दृश्य देखता है, भूत-प्रेत वगैरह देखता है। तन्तुओंमें किसी तरहकी गडबडी या चक्षु-तारका (Retina) में दबाव, चक्षु-परीक्षा यन्त्रसे (Ophthalmoscope) आँखका कोई दोष दिखाई देनेके पहले ही, वह धुआँकी तरह दिखाई देनेके तकलीफका वर्णन करेगा या उसके दृष्टि-क्षेत्रके सामने भाफ दिखाई देनेकी बात कहेगा, मानो वह पर्देके भीतरसे देख रहा है या मानो बादलोंके भीतरसे देख रहा है। इन सब बातोंका मतलब एक ही है,—"धुँधली दृष्टि।" उसकी दृष्टि-शक्ति कमजोर रहती है, पेशियाँ कमजोर रहती हैं, उसे धुन्ध-दृष्टिकी बीमारी रहती है, जो धीरे-धीरे बढकर अन्धेपनकी ओर जाती है और उसकी कमजोरी बढती जाती है। उसके समस्त लक्षण और उसका सर-दर्द और उसके स्नायविक लक्षण, पढने, लिखने या किसी एक ही चीज़पर दृष्टि जमाकर देखनेसे बढ जाते हैं। इस तरहका परिश्रम करनेपर वह बहुत थक जाता है और उसकी आँखोंमें तथा आँखके पीछे सरमें फाडनेकी तरह दर्द होता है। यह एक विचित्र ढङ्गका सर-दर्द होता है, जैसा कि उसके कहनेकी आदत होती है। यह सरके किसी भागमें भी हो सकता है। इसे आँखपर जोर पडना कहते हैं। यह आँखपर जोर बढ जाने (Eye-strain) की एक अद्भुत दवा है (ओनोस्मोडियम)। कनीनिकाके धुँधलापन (Opacity) के कितने ही रोगोंको कैल्केरियाने आरोग्य कर दिया है (बेराइटा आयोड)। पुराने रोगके जडसे आरोग्य हो जानेकी प्रतिज्ञा नहीं की जा सकती। यह रोगका परिणाम है और जब हम रोगका परिणाम हटाया चाहते हैं, तो हम कभी नहीं जान पाते, क्योंकि

बुद्धिमान होमियोपैथ किसी रोग-परिणामपर कभी विचार नहीं करता। वह तो रोगीके लिये दवा देता है। धुन्ध रोग जब रहता है, तो यह कोई लक्षण नहीं है, बल्कि रोगका परिणाम है। अकसर जब रोगीकी सार्वाङ्गिक अवस्थाके लिये दवा दी जाती है, तो कनीनिकाके यह धुन्धकी दशा, कुछ दिनोंके बाद गायब होनी आरम्भ हो जाती है। रोगी अच्छा होने लगता है, उसको अच्छा मालूम होता है, उसके लक्षण दबने आरम्भ हो जाते हैं और लक्षण सब दब जाने बाद रोग-निदानकी अवस्थाएँ भी दबनी आरम्भ हो जाती हैं। यदि निदान सम्बन्धी लक्षण न जाये तो दवा देनेसे हताश न हों, पर यदि रोगीके सभी लक्षण चले गये हैं, रोगी अच्छी तरह खा रहा है, सो रहा है और अच्छी तरह काम कर रहा है, तो ऐसा कभी न सोचे, कि कनीनिकाका धुन्ध गायब न होगा, कुछ दिनोंके बाद यह भी जायगा। मैंने रोगीको बरसभरके बाद, यहाँतक कि आरोग्य कहकर उसे छोड़ देनेपर भी लौट आते देखा है, क्योंकि उसके लक्षण सब गायब हो गये थे और मैंने मूर्खतावश रोगीसे कह दिया था—'मैं नहीं समझता कि यह अवस्था कभी दूर होगी, पर तुम सब तरहसे अच्छे हो। अब दवा देनेकी कोई बात नहीं, अब दवा खानेका कोई लाभ भी नहीं है," पर इसके छ महीने बाद, रोगी मेरे पास आता और कहता है—"डाक्टर साहब! क्या आप समझते हैं, कि आपने मेरा जो इलाज किया था, उससे वह बीमारी जा सकती थी? वह करीब करीब एकदम आरोग्य हो गयी है।" मैंने यह बात केवल इस खयालसे आपसे कही है, कि आपमें एक यह विचार भर दूँ, कि शृङ्खला कितने दिनोंके बाद आती है, क्योंकि स्वत प्रकृतिको खराब तन्तुओंको हटाकर उनके स्थानपर स्वस्थ्य तन्तु रखना पड़ता है, जिसमें कि कोई यन्त्र ठीक-ठीक कार्य कर सके। यह समय लेता है और यह सर्वोत्तम है कि इससे हमलोगोंको आश्चर्य न हो। यह सम्भव है, कि दवाको जितना फायदा करना था कर चुकी है। यहाँ एक दूसरी चीज़ हमने देखी है, जब कि कोई भी लक्षण न बचे थे और काफी समयतक राह देखनेपर भी जब कोई लक्षण न पैदा हुए, मैंने वही दवा जो आखिरी लक्षणपर दी गयी थी, देकर रोगीको बहुत फायदा होते देखा है और निदान सम्बन्धी अवस्थाका भी जाना आरम्भ होते देखा है। इसलिये चक्षु चिकित्सकोंका कैल्केरिया एक बहुत बड़ा दोस्त है और प्रत्येक चिकित्सकको वैसा ही उत्तम दवा लिखनेवाला होना चाहिये, जैसा

चक्षु-चिकित्सक हो सकता है, क्योंकि वह रोगीके लिये दवा देता है। ऐसा ही चक्षु-चिकित्सकको भी जरूर होना चाहिये। मुझे सन्देह है, कि नुस्खा लिखनेमें विशेषता कोई चीज़ हो सकती है या नहीं, क्योंकि होमियोपैथिक चिकित्सक तो सम्पूर्ण रोगीके लिये दवा देता है। वह रोगीके लिये दवा देता है, चाहे उसे आँखकी बीमारी हो या कानकी या कण्ठकी बीमारी हो या फेफड़ेकी अथवा यकृतकी बीमारी प्रभृति।

कानकी भी बहुत-सी बीमारियाँ इसमें हैं। यह कानसे पीला गाढ़ा स्राव पैदा करता है। सर्द, जाड़ेका मौसम कानकी तकलीफें पैदा कर देता है, बहुत कुछ सर्द या ठिठुर जानेके कारण हवासे या एकाएक सर्द तर ऋतुके परिवर्त्तनके कारण उसे कानकी और भी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। जब वह बहुत अच्छा रहता है, तो यहाँ एक विचार ठीक बैठता है, कि सर्दीकी दशामें बहुत ज्यादा स्राव होता है, पर खुली हवा लगने और सर्दीसे यह कुछ सूख जाता है और जब यह सूखता है, तो थोड़ा-सा प्रदाह हो जाता है और भरपूर टपक और सर-दर्द होने लगता है। यह प्रत्येक बार खुली हवा लगनेपर होता है। सर्दी, नाकमें, कानमें या आँखमें कहीं भी हो, सर-दर्द होगा ही। ठण्डी ऋतु और खुली हवासे कैल्केरियाका रोगी इतना आसानीसे विचलित हो जाता है, उसे सर्दी इतनी अधिक सहन नहीं होती, कि उसके लिये पोशाक पहनना और अपनी रक्षा करना मुश्किल हो जाता है। वह थुलथुला और कोमल रहता है, सहजमें ही विचलित हो जाता है और अपने पारिपार्श्विकोंसे स्पर्श-कातर रहता है। यदि कानकी तकलीफ़ रहती है, तो उसे सुननेमें तकलीफ़ हो सकती है। मध्य-कर्णका फोड़ा, कण्ठकर्णी-नली (Eustachian tubes) की सर्दी प्रभृतिपर। इन सबसे सर-दर्द हो जाता है और कानके पासकी चारों ओरकी ग्रन्थियाँ आक्रान्त हो जाती हैं।

नाककी सर्दी बहुत ज्यादा कष्टदायक होती है। पीले गाढ़े स्रावके साथ पुरानी लँभड़ानेवाली जटिल नाककी सर्दी, नाकसे बड़ी-बड़ी पपड़ियाँ निकलती हैं। सवेरे नाक छिड़कनेपर बहुत ज्यादा कालापन लिये, खून-मिला चिप्पड़ निकलता है। रातके अधिकांश भागमें रोगी नाकसे ही साँस लेता है, इसके बाद उसकी नाक बन्द हो जाती है, जिससे उसे मुँहसे साँस लेनी पड़ती है। इसने बहुत बार नासार्बुद (Polypi of the nose) आरोग्य किया है। होमियोपैथिक चिकित्सक अपने सामनेके लक्षणोंपर

विश्राम रहे तथा रोगीको अध्ययनकर दवाको इतनी अच्छी तरह जान जाता है, कि वह बहुतकर अक्सरोंपर ही रोगीको दवा देगा। वह कहता है,—इसमें कोई भी सन्देह नहीं है, कि रोगीके लिये कैल्केरियाकी जरूरत है, वह नुसखा लिखता है और भेज देता है। तीन या चार सप्ताहके बाद रूमालमें एक कड़ी ममदार चीज़ लिये रोगी आता है और कहता है—"डाक्टर, यह देखिये, मेरी नाकसे क्या निकला है? क्या आप समझते हैं, कि आपकी दवाने इसमें कुछ किया है?" शायद आप नहीं जानते थे कि उसे नासार्बुद है, इससे कुछ भी अन्तर नहीं पड़ता। यदि उसे नाकमें नासार्बुद भी रहता है, तो आपके नुस्खेमें कोई अन्तर नहीं पड़ता और आप जानते भी नहीं, कि क्या है। आप किसी प्रणाली या उपायसे नुसखे देनेके पहले परिणाम निकाल भी नहीं सकते, इसलिये यह उपाय तो आपको उनके लिये ही छोड़ देना पड़ेगा, जो होमियोपैथी नहीं जानते और इसीलिये परीक्षा भी उतनी आवश्यक नहीं है, जितनी उनके लिये, जो नासार्बुदके लिये ही दवा देते हैं और रोगीको भूल जाते हैं। नाककी हड्डियोंकी बीमारी। अर्थात सर्दी इतने अधिक दिनोंतक जारी रहती है और वह इतनी बद्धमूल रहती है, कि नाककी हड्डियाँ और उपास्थियोंमें छिद्र हो जाता है और वे टूट जाती हैं। इसके बाद अस्त्र-चिकित्सक हड्डियोंको काटता है, उपास्थियोंको हटाता है और इतना ज्यादा नश्तर देता है, कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता और हरेकको इसी तरह नश्तर लेना पड़ता है, पर एकदम जड़से आरोग्य होनेके लिये उसको इसके बाद भी होमियोपैथिक चिकित्सकके पास जाना पड़ेगा। उसे पहले आरोग्य होना चाहिये और इसके बाद यदि कुछ बच जाये, तो उसे कटवाना चाहिये।

चेहरा रोगीको तरह, ठण्ढा, पसीनेसे भरा रहता है। जरा भी परिश्रम करनेपर पसीना होने लगता है और कभी-कभी चेहरे और ललाटपर रातमें भी पसीना होता है। "चेहरेपर ठण्ढा पसीना, चेहरा पीला और धातु विकृति विशिष्ट (Cachectic)", जैसा कि हमें कैन्सर या यक्ष्माकी बढ़ी हुई अवस्थामें देखनेमें आता है। चेहरा पीली आभा लिये, रोगियल, शोथ-पूर्ण, चेहरेपर दाने, ओठोंपर उद्भेद तथा ओठ फटे और मुँहको खाल उधड़ी, ओठ फटे रहते हैं और उनसे रक्त बहता है। कर्णमूल-ग्रन्थिकी दर्द-भरी सूजन, हनु-निम्नस्थ (Sub-maxillary) और जिह्वा अधोवर्त्तिनी (Sub-

lingual) ग्रन्थियोंमें दर्द-भरी सूजन। कैल्केरियाकी बीमारीमें सभी ग्रन्थियाँ भाग लेती हैं।

पुराने गल-क्षत (Chronic sore throats) की कैल्केरिया दवा है। केवल कण्ठकी शकल देखकर ही हमेशा दवा नहीं दी जा सकती, पर यह कण्ठकी तकलीफें वे हैं, जो उनको होती हैं, जिन्हें बार-बार सर्दी लगती है। रोगीको एकसे आराम होनेका अवसर ही नहीं मिलता, कि दूसरीका दौरा हो जाता है और यही उसमें पुराना गल-क्षत उत्पन्न कर देता है। आरम्भमें यह **बेलेडोना**का कण्ठ रह सकता है, जो बहुत कुछ इसके समान ही होता है, पर इसके आराम होनेके पहले ही उसे दूसरी बार सर्दी लग जाती है। याद रखिये, कि यह कैल्केरियाके रोगीका एक अङ्ग है, कि उसे इस तरह सहजमें सर्दी लग जाती है। **प्रत्येक** हवाके झोंकसे उसे सर्दी लगती है, प्रत्येक बार हवामें खुले रहनेपर तथा तर मौसमसे। **बेलेडोना**के गलक्षतका वर्णन करते समय—उस समय जब कि वह यह सोचता है, कि यह अच्छा हो गया, उसे एक नयी सर्दी लग जाती है। शायद यह दो-तीन बारमें **बेलेडोना**से आरोग्य हो चुका है, पर इसके बाद सर्दी पुरानी अवस्थामें बैठ जाती है, कण्ठमें छोटे-छोटे लाल चकत्ते पड जाते हैं। शायद छोटे छोटे जखमोंकी तरह, यह सर्वत्र फैल जाता है। यह जखम-भरी जीभके साथ मुँहकी छततक चला जाता है, लगातार सूखापन तथा गलकोषमें श्वास-रोधका भाव रहता है, यह तालुमूलको ढँक लेता है और पश्चात् नासारन्ध्र (Posterior nares) तक फैल जाता है और इसमें गाढा, पीला बलगम भरा रहता है। पुराना प्रदाह। पुराने प्रदाहमें, उपजिह्वा फूली, सूजी हुई रह सकती है। "उसके अग्र फूले, लाल, उमडे," पर उसमें दाग रहता है। कण्ठमें निगलनेके समय बहुत दर्द होता है, सूखा, श्वास-रोधक भाव।

कैल्केरियाके **पाकाशयकी** क्रिया धीमी होती है "पाकाशयमें गया हुआ खाद्य पड़ा रह जाता है।" इसका पाचन नहीं होता। यह अम्ल हो जाता है। "खट्टी कै।" दूध खट्टा हो जाता है। दूध सहन नहीं होता, पाचन धीमा रहता है, कमजोर रहता है, उसमें सूजन और भरापन रहता है, भोजनके बाद बढ जाता है और पाकाशयमें जाकर सभी चीजें अम्ल हो जाती हैं, सभी पदार्थ पाकाशयमें गडबडी कर देते हैं। कमजोर पाचन। कैल्केरियाके रोगीको

अण्डे खानेकी बहुत अधिक इच्छा होती है। छोटे-छोटे बच्चे अण्डे मांगते हैं, प्रत्येक भोजन कालमें वे अण्डे खायेंगे तथा किसी भी दूसरी चीज़की अपेक्षा अण्डा ज्यादा हज़म होगा। स्वाभाविक रूपसे छोटे बच्चोंको अण्डे खानेकी इच्छा बहुत कम होती है, ठण्डे पैर दुबले हाथ-पैर, बड़ा सर, बढ़ा हुआ तलपेटवाले बच्चे, उलटी तश्तरीकी तरह पेट तना रहता है, बाहरकी ओर गोल-सा उतरा रहता है, चकत्तेदार पेट और कोमल हाथ-पैर, ठण्डे और सर्दी सहन नहीं होती, पीला शरीर, पीला चर्म, मोमकी तरह शरीर पटल। उसके बाद उसे बिलकुल ही भूख नहीं लगती, किसी तरहके खाद्यकी भी इच्छा नहीं होती। यदि किसी चीज़की इच्छा भी होती है तो अण्डेकी। गोश्तसे अनिच्छा गर्म भोजनसे अरुचि। यह बढ़ी हुई ग्रन्थि या घेघाके साथ होता है। आध्मान वायु, खट्टी कै, खट्टी दस्त अर्थात इसमें भाल खट्टी बदबू खासकर बच्चोंमें होती है। दूधपर ही रहनेवाले बच्चोंका दूध अनपचकी अवस्थामें मलके साथ निकल जाता है, मल इतना खट्टा होता है, कि वह कटु रहता है। यह उन अंगोंकी खाल उधेड देता है तथा बच्चोंकी उस स्थानकी खाल उधेड़े रहता है, जहांका कपडा उस अंगसे लगा रहता है। ऐसा भी अवसर रहता है, जब तलपेट चीण हो जाता है, गैस बाहर निकल जाती है और किसी-किसी समय पाकाशय थुलथुला हो जाता है, पर अधिकांश समय यह वायुसे तना रहता है। जब यह थुलथुला ठीक रहता है, तो यह देखनेमें आता है, कि तलपेट छोटी ग्रन्थियोंसे भरा है। लसिका ग्रन्थियाँ कड़ी हो जाती हैं तथा कभी-कभी चीण हुए तलपेटमें अनुभव की जा सकती है। एक गुटिका दोष प्रवणता (Tubercul ır tendency) रहती है तथा चूनेकी धातुवालोंकी मध्यान्त्र त्वचाका क्षय रोग (Tabes mesenterica) हो जाना तो स्वाभाविक अन्त है। इसके साथ ही अन्त्र-ग्रन्थिमें प्रदाह होता है। मध्यान्त्र त्वचाकी ग्रन्थिमें गुटिकाकी तलोंका सञ्चय होना। अतिसार हो जाता है, खट्टे पानीकी तरह दस्त। धीरे-धीरे दुबलाते जाना, खासकर हाथ-पैरोंका। प्रत्येक बारकी सर्दीसे अनपच ज्यादा हो जाता है और ज्यादा खट्टी कै होती है। न रोका जा सकनेवाला अतिसार, क्योंकि जितनी ही बार उसे सर्दी लगती है, उतनी ही बार उसका अतिसार नये सिरेसे जारी हो जाता है। नया आक्रमण रहनेपर **डलकामारा**से अकसर आरोग्य हो जाता है, पर जब यह पलट-पलटकर कई बार होता है, तो फिर

साधारणको विशेषसे, जब दवा भीतरसे बाहर ठीक न बैठेगी, साधारण और विशेष रूपसे, तबतक आरोग्यकी आशा न करनी चाहिये। इसीलिये मैं कहता हूँ, कि प्रधान सूत्रोंपर ही दवाका व्यवहार न करें, बल्कि रोगीके लक्षणोंपर।

शिथिलताकी वह अतिवर्द्धित अवस्था जो कैल्केरियाके रोगीमें सर्वत्र दिखाई देती है, वह **श्वेत-प्रदर** (Leucorrhœa) में भी दिखाई देती है। बहुत ज्यादा गाढा लगातार होनेवाला श्वेत-प्रदर, दिन-रात स्राव हुआ करता है श्वेत-प्रदरका स्राव कटु, खुजलाहट पैदा करनेवाला, यन्त्रणादायक और जलन करनेवाला होता है, "श्वेत-प्रदर गाढा और पीला" एक मासिक स्राव-कालसे दूसरे कालतक जारी रहता है और कभी-कभी तो यह आर्त्तवसे मिलकर निकलता है। "योनिका अर्बुद, श्वेत-प्रदरके कारण जननेन्द्रियमें जलनकी तरह यन्त्रणा", श्वेत-प्रदरके कारण "खुजलाहट और खाल उधेडनेका भाव" कुछ ऊपर उठानेके कारण, उत्तेजनासे। मानसिक आघातसे, किसी भी अत्यन्त विचलित कारणसे, भयसे, किसी भावोद्रेकसे या पेशियोंपर जोर पडनेके कारण रक्त-स्राव। शिथिलता और कमजोरीकी वैसी ही अवस्थाएँ रहती हैं, पेशियोंमें जोर डालनेकी शक्तिका न रहना या मानसिक अथवा शारीरिक परिश्रम करनेका।

गर्भावस्थाके उपसर्ग भी वे ही शिथिलता और कमजोरीके साधारणत होते हैं। गर्भ-स्रावकी आशंका, प्रसवके बाद कमजोरी और सुस्ती, पसीना, स्तनका दूध पिलानेके कारण कमजोरी।

कैल्केरियाकी आवाज **दर्द-रहित स्वरभङ्ग**की भांति होती है। स्वर-रज्जु क्लान्त हो पडते हैं तथा दबाव सहन नहीं कर पाते, करीब-करीब पाक्षाघातिक दुर्बलता। कभी-कभी स्वर-यन्त्रसे बहुत ज्यादा बलगम निकलता है। स्वर-यन्त्रमें बहुत ज्यादा उपदाह और कमजोरी रहती है। वह जलन और खाल उधडना नहीं रहता जो **बेलेडोना** और **फास्फोरसमें** रहते हैं, पर दर्द-रहित स्वर-भङ्ग, **फासमें** दर्द रहता है, **बेलेडोनामें** बहुत ज्यादा दर्द। बिना दर्द हुए तो रोगी बोल ही नहीं सकता, पर कैल्केरियामें रोगीको ताज्जुब होता है, कि उसके स्वर-यन्त्रमें इतनी तकलीफ क्यों है, क्योंकि उसमें किसी प्रकारकी अनुभूति नहीं रहती, यह बुरेसे बदतर हो होता जाता है और गुटिका-दोष-प्रवणता (Tubercular tendency), गुटिका-दोष-

युक्त स्वर-यन्त्र-प्रदाह (Tubercular laryngitis) को देखिये यदि जल्द ही प्रयोग हो जाये, तो यह गुटिका दोष प्रवणताको दूर रखेगा। इसने गुटिका दोषयुक्त स्वर-यन्त्र-प्रदाह (Tubercular laryngitis) आरोग्य किया है। श्लेष्माकी बहुत ही अधिक घरघराहट, घरघराहटयुक्त श्वास प्रश्वास, रूखड़ी घरघराहट अर्थात टेटुआमें, स्वरयन्त्रमें, श्वासोपनलियोंमें और वक्षमें बहुत अधिक बलगम रहता है। बहुत अधिक श्वास-कष्ट। हवाके विपरीत चलने और **सीढ़ी चढ़नेपर** श्वास कष्ट पैदा हो जाता है, कोई भी परिश्रम सापेक्ष कार्यमें भी श्वास-कष्ट पैदा हो जायगा। दमा दुर्बल हृत्पिण्ड, दुर्बल वक्ष और यक्ष्माकी सम्भावनामें ऐसा होता है। फेफड़ेकी यह अवस्था अकसर आपको श्वाससे ही मालूम हो जायगी क्योंकि यक्ष्माकी ओर अग्रसर होनेवाले सभी क्लान्त और दुर्बल रहते हैं। वह इतना क्लान्त रहता है कि श्वासके समय कोई चेष्टा नहीं कर पाता और वह सहजमें ही क्लान्त हो पड़ता है, इसीलिये उसे सीढ़ी चढ़नेमें, पहाड़ी चढ़नेमें और हवाके विपरीत जानेमें तकलीफ होती है।

वक्षकी बीमारियाँ भी कैल्केरियाका सर्वोत्तम क्षेत्र है। बलगमके साथ खून आता है, बहुत देरतक खाँसी आती रहती है, बहुत ज्यादा गाढ़ा पीला बलगम निकलता है, यहाँतक कि पीब भी आता है, जखम और फोड़ा हो जाता है। लसदार बलगम। डरावनी वक्षकी बीमारियोंमें आरम्भिक क्षीणता, पीलापन, सर्दीका सहन न होना, ऋतु परिवर्त्तन और ठण्डी हवा तथा तर मौसम और झोंककी हवाका सहन न होनेका लक्षण प्राप्त होता है। रोगीको सर्दी लगती है, यह सर्दी वक्षमें बैठ जाती है, धीरे-धीरे प्रत्यङ्ग दुबले होते जाते हैं। रोगी हमेशा बहुत ही क्लान्त रहता है। यह उस धातुगत दुर्बलतासे सम्बन्ध रखता है, जो पहले आती है या यक्ष्माकी प्रथम अवस्थामें जो मौजूद रहती है। यह रोगीको सर्दी लगना रोक देती है, जो इसकी आरम्भिक क्रिया है। कैल्केरिया सेवन करने बाद रोगीको अच्छा मालूम होने लगेगा और यह इसकी सार्वाङ्गिक अवस्थाकी उन्नति कर देती है तथा गुटिका-दोषके कारण जो तली जमती है, उसे घेरकर दबा रखती है, यह उन्हें पनीरवत (Careous) अवस्थासे बदलकर चूनेकी अवस्थामें परिवर्त्तित कर देता है और बहुत दिन बाद वक्षमें इसके कोषार्बुद पाये गये हैं। रोगी बहुत दिनोंतक जीवित और उन्नत अवस्थामें रहता है, उसका साधारण

स्वास्थ्य अच्छा रहा, जब कि गुटिका-कोष बढ़ी हुई अवस्थामें था। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि जब कोई मनुष्य टियुबरक्युलर अवस्थामें भी अच्छा रहता है, तो यह आशा की जा सकती है, कि यह चलेगा। यक्ष्माके आरोग्यका विश्वास न कीजिये या उसमें आरोग्यकी आशा न कीजिये। थोड़े-थोड़े दिनोंपर कोई-न-कोई चीज़ यक्ष्माके आरोग्यकी बात लेकर आती है। एक नवीन आरोग्य। यक्ष्माकी दशाकी वास्तविक प्रकृतिके विषयमें जो जानता है, उसे ऐसी चीजोंपर विश्वास नहीं हो सकता और मैं निश्चय ही किसी व्यक्तिके सामने सर झुका सकता हूँ, जिसके पास यक्ष्माकी 'आरोग्य करनेवाली दवा हो। उसे या तो आलसी या उससे कुछ बदतर ही होना चाहिये। साधारणत उसका ध्यान धनपर है, जो इससे हो सकता है। जो इसके विषयमें जानता है, जो संसारको यक्ष्मा आरोग्य करनेवाली दवाकी विश्वास-पूर्वक प्रदान कर सके। इन बातोंको रोकनेके लिये ही हम कुछ करना चाहते हैं और यही कैल्केरियाका चित्र है। अकसर **फास्फोरस** और **स्टैनम**की तरह बलगम कुछ मीठा होता है। बलगम सफेद, पीला और गाढ़ा रहता है। हमलोगोंको समस्त सार्वाङ्गिक लक्षणोंपर यहाँ विचार करना चाहिये—यन्त्रणा, स्पर्श-असहिष्णुता, दर्दकी प्रकृति, आलस्य और इसी तरहके और भी बहुत-से लक्षण हैं। इतने ज्यादे हैं, कि उनका वर्णन बहुत हो सकता है, पर वे वर्णनीय नहीं हैं, क्योंकि आप थोड़ा कष्टकर उनका अध्ययन करें, आपको दूर ही रहनेसे लाभ न होगा। आपको कैल्केरियाका **धातु**, कैल्केरियाकी प्रकृति, उसका चरित्रगत लक्षण अवश्य अध्ययन करना चाहिये।

इसमें मेरुदण्डके भी बहुत ज्यादा लक्षण हैं। कमजोर, सभी ग्रंथियोंकी दुर्बलता। कैल्केरियाके रोगीकी पीठ इतनी कमजोर रहती है, कि वह कुर्सीपर बैठनेपर झुक जाता है, कुर्सीपर तनकर नहीं बैठ सकता। माथेके पिछले भागके सहारे आराम करना, कुर्सीकी पीठ और उसका माथा सट जाते हैं। एक दुर्बल मेरुदण्ड, एक स्पर्श-असहिष्णु मेरुदण्ड और गर्दनकी ग्रन्थियाँ फूली रहती हैं तथा मेरुदण्डका एक स्पष्ट लक्षण यह है, कि जहाँ चूनेके तत्वकी कमी रहती है, वहाँ कुरूपता प्रत्यक्ष रहती है, टेढ़ापन। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा, कि ऐसोंके लिये कैल्केरिया एक बहुत बड़ा साहाय्य

है तथा किसी तरहकी पट्टी या सहारेके भी इसने आरोग्य कर दिया है, यदि दवा जल्द ही पड गयी है। आपको मेरुदण्डकी कमजोरीवाले बच्चे मिलेंगे, उन्हें पीठके बल बिछावनपर पडे रहने दीजिये, उन्हे सुनिर्वाचित औषधि खिलाते जाइये—यह कभी-कभी कैल्केरिया ही होती है और थोडे ही दिनोंमें वह कुबडापन दूर हो जायगा तथा बच्चा सीधा बैठेगा। कैल्केरियाका व्यवहार करनेपर ऐसी ही आश्चर्यजनक बातें होती है, जब लक्षण सदृश रहते है।

वातकी जिन दशाओंका वर्णन सम्भव है, वे सभी हाथ-पैरोंमें दिखायी देती है। सन्धियोंकी गठियाकी बीमारी—साथ ही सन्धियाँ वर्द्धित, गठियाकी दशा, खासकर अंगूठा और अंगुलियोंकी क्षुद्र सन्धियोंकी। प्रत्येक बार खुली हवा लगने, प्रत्येक सर्दीके ऋतु परिवर्त्तनसे, खासकर यदि यह ठण्डी और तर हो, तो गठियाकी अवस्था उत्पन्न हो जाती है। पैर हमेशा ठण्डे रहते हैं या ठण्डे और तर रहते हैं, पर रातमें जब पलङ्गपर किसी अन्य अङ्गकी अपेक्षा पैरोंपर बहुत वस्त्र लाद दिये जाते है, तब पैर गरमाने लगते है और अकसर द्वितीय सीमापर जा पहुँचते है और जलन होने लगती है और इसीलिये रातमें बिछावनपर उनमें जलन होती है, पर पैर इतने ठण्डे रहते हैं, कि रोगीका शरीर जितना सहन कर सकता है, उससे ज्यादा वस्त्र पैरपर रखने पडते है। ठण्डे, तर पैर, देरसे चलना सीखना, कुरूपता, जडता, अकडन, वातकी दशा। कैल्केरियामें सर्वत्र ही अकडन—कडापन दिखाई देता है। हिलना-डोलना आरम्भ करनेपर अकडी, अपनी जगहसे रातमें उठनेपर अकडी। हिलना आरम्भ करनेपर सभी सन्धियोंमें कडापन और अगर सर्दी पड जाती है या ठण्डी वर्षा होती है, तो कैल्केरियाके रोगीकी तकलीफ हमेशा बढ जाती है, सर्दीसे, अकडनसे और वातसे हमेशा तकलीफ उठाता है। मौसममें प्रत्येक बार सर्दी बदलनेपर वात।

नींद बहुत गडबड रहती है, देरसे सोने जाता है, कभी-कभी तो २, ३ या ४ बजेतक नींद नहीं आती। विचारोंसे भरा, आँख बन्द करते ही भयङ्कर दृश्य दिखाई देने लगते है। दाँत पीसना, नींदमें बच्चा चबाता है, निगलता है और दाँत पीसता है। रातके अधिकांश भागमें नींद नहीं आती। रातमें बिछावनमें ठण्डे पैर।

कैल्केरिया आर्सेनिकोसा।

(Calcarea Arsenicosa)

खूब परीक्षित दो दवाओंके रासायनिक सम्मिलनसे बनी रहनेके कारण यह तुरन्त ही ध्यानमें आ जायगा, कि यह बहुत दिनोंतक काम करनेवाली और बहुत-सी पुरानी बीमारियोंके लिये उपयोगी दवा है। वास्तवमें यह इतनी गहराईतक काम करती है, कि मृगीके जटिल-से-जटिल रोग आरोग्य कर देती है। इस श्रेणीके रोगोंके लिये तो इसने अपना इतिहास छोड़ रखा है। अत्यधिक मानसिक और शारीरिक दुर्बलता, कम्पनशील और पक्षाघातिक दुर्बलता। शरीर इतना हलका मालूम होता है, मानो हवामें तैर रहा है। बेहोशीके दौरे। मृगीकी अकड़न, जिसमें हृत्पिण्ड-प्रदेशमें सुरसुरी मालूम होती है, बहुत अधिक कमजोरी। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें अकड़न होनेके पहले दर्द और डूबते जानेका भाव। कमजोरी, सरमें चक्कर या क्षणभरके लिये आँखें अन्धी हो जाना, हृद्पिण्डके कपाटकी बीमारीके साथ अकड़न। शामको और रातमें साधारणत रोग-वृद्धि होती है। रोगीको सर्दी सहन नहीं होती—जीवनप्रद गर्मीका अभाव। खुली हवाकी इच्छा न होना, सार्वाङ्गिक शारीरिक चिन्ता। बहुत-से लक्षण सीढ़ी चढ़नेपर आ जाते हैं। इसमें **आर्सेनिक**की तरह बहुत तरहका जलनका दर्द है। आरम्भिक अवस्थामें इसने बहुतसे अण्डलालीय मूत्र (Albuminurea) को आरोग्य कर दिया है। हरित्पाण्डु रोग (Chlorosis) की यह एक लाभदायक दवा है। शोथ तो इसका एक सुदृढ़ स्वरूप है, जैसा कि यह **आर्सेनिकम** और **कैल्केरिया** दोनोंमें ही है। **थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बीमारी बदतर हो जाती है,** बेहोशी, कलेजा धड़कना, श्वास-कष्ट और कमजोरी पैदा हो जाती है। शरीरके बायें अंशपर रोगका आक्रमण अधिक होता है।

आगे लिखे मानसिक लक्षण अकसर इसके प्रयोगके परिचालक होते हैं। क्रोध और विरक्तिके कारण क्रोध और बीमारियाँ। शामके वक्त, रातमें, पलङ्गपर, जाड़ेके समय और जागनेपर घबड़ाहट। श्रद्धा-पूर्णता, भविष्यके सम्बन्धमें, मुक्तिके सम्बन्धमें, रातमें। आलोचना करनेकी इच्छा, किसीके साथमें रहनेकी इच्छा, जागनेपर चित्त-विभ्रम। मन लगानेकी शक्तिका न रहना, मति

विभ्रम। मृत पुरुष, अजगर तथा मूर्त्तियाँ देखता है। भ्रम-भरी चीज़ोंकी धारणा। आगके दृश्य देखता है, रातमें बदतर हो जाता है तथा आँखें बन्द करनेपर वैसा ही देखता है। आरोग्य तथा मुक्तिसे निराश, असन्तुष्ट, उत्तेजनशील, रातमें मृत्युका भय, एकान्तका भय या उन्माद हो जानेका भय। आनन्दसे उदासीन हो जाता है। उन्माद। अस्थिर मति, चिड़चिड़ा, परितापकारी, अपने जीवनसे घृणा, जीवनसे ऊबा हुआ, याददाश्तकी कमी, बुराई करनेवाला, जिद्दी, स्पर्श-असहिष्णु—सहजमें ही चिढ़ उठता है। अत्यधिक बेचैन, खासकर रातमें, बिछावनपर छटपटाता है, *गर्मीके समय और ऋतु-कालके समय*, शामके वक्त और ज्वर-कालमें बहुत उदासी, सहजमें ही चौंक उठता है, डरपोकपन। रातमें रोता है।

सरमें चक्कर और सार्वाङ्गिक अकड़नके साथ माथेमें रक्त बहुत तेजीसे दौड़ जाता है। इसने पुराने सर-दर्द उत्पन्न और आरोग्य किये हैं। इसके सर-दर्दका एक बहुत ही विचित्र स्वरूप यह है, कि यह लेटनेवाले पार्श्वपर छूटकर चला जाता है और जिस पार्श्व रोगी सोया नहीं रहता है, उधर चला जाता है और अवस्थिति बदलनेके साथ ही-साथ स्थान बदलता जाता है। इसके सभी सर-दर्द ऐसा नहीं करते हैं। इसमें बहुत-से विचित्र छोटे-छोटे लक्षण हैं। मानसिक परिश्रम करते रहनेके समय तो सर-दर्द घट जाता है, पर उसके बाद ही बहुत बढ़ जाता है। चेहरेका शोथ, पलकोंका, कनपटीका और कानोंका, शिरो-चर्म तथा मुखमण्डलका अकौता। सरका ठण्ढापन। पीला, रोगियल, चित्ती चित्ती चेहरा। नाकसे पतली सर्दीका बहुत ज्यादा स्राव। छींक, भोजनसे एकदम अनिच्छा, पर ठण्ढे पानीकी प्यास। भोजनके बाद डकार और वमन सहजमें ही पेट गड़बड़ा जाता है, खासकर दूध और ठण्ढा भोजन करनेपर, ठण्ढा पानी पीने बाद पाकाशयमें दर्द। भोजनके बाद पाकाशयमें भार मालूम होना। शराब पीने बाद वंक्षण-प्रदेशमें दर्द। पाकाशय और मुँहमें खट्टा पानी भर आना। *पाकाशयमें उथल-पुथल और जलन*, पाकाशयमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द, पाकाशयमें चबानेकी तरह दर्द। तलपेट तथा पाकाशयका तन जाना। इसने पाकाशयके जख़म आरोग्य किये हैं।

मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें बहुत यन्त्रणा। थोड़ा, जलता हुआ पेशाब, इसमें अण्डलाल और तलछट रहता है, शुक्र-रज्जु (*Spermatic cords*) में परिश्रम और शराब पीनेके बाद दर्द।

खाल उधेड़ देनेवाला पीला श्वेत-प्रदर। बदबूदार, खून-मिला श्वेत-प्रदरका स्राव। बदबूदार श्वेत-प्रदरके लिये **कैलि-आर्स** और **कैलि-फासके** इसकी तुलना कीजिये, यह जरायुके कर्कट रोगके लिये उपयोगी है। जब उसमें जलन तथा कटु बदबूदार खून-मिला स्राव होता है। यह मासिक आर्त्तवको लक्षण मिलनेपर जारी कर देता है। आर्त्तव-स्राव बहुत ज्यादा या बहुत थोडा, रज:स्राव बहुत जल्दी-जल्दी और अवरुद्ध, रज:स्रावका समय आनेपर दर्द, अतिरज । जरायु तथा योनिमें जलनका दर्द।

स्वर-यन्त्रसे पोछेको ओर मानो सूतेसे खींचा जा रहा है। स्वर-यन्त्रमें सूखापन। मृगीको अकड़न होनेके पहले आवाज़ बैठ जाती है। रातमें बिछावनपर कलेजा धड़कना और श्वास-रोध। मृगीको अकड़न होनेके पहले वक्षणमें जलनकी तरह गर्मी तथा हृत्पिण्ड प्रदेशमें दर्द। हृत्पिण्ड प्रदेशमें खूनका दौरान, रक्त-वाहिनियोंमें टपक, खासकर माथा और पीठको रक्त-वाहिनियोंमें, उसको वजहसे उसे पलङ्गसे उतर जाना पड़ता है। धड़कनके साथ कलेजेमें दर्द। हृत्शूल (Angina pectoris), हृत्पिण्डमें पकड़ रखनेकी तरह दर्द। चेहरा गर्म हो जानेके साथ धड़कन। थोड़ी भी उत्तेजना या परिश्रम होनेपर कलेजेमें धड़कन होना। शामको और रातको बदतर हो जाना। नाड़ीका प्रत्येक चौथा स्पन्दन लोप हो जाता है। नाड़ीकी गति तीव्र।

कण्ठास्थि और त्रिकास्थिके बीच प्रचण्ड सर-दर्द। पीठका दर्द बाहुओंतक फैल जाता है। वक्षणका दर्द बाहुओंतक फैलता है, हाथ-पैरोंका शोथ, निम्न-प्रत्यङ्गोंकी कमजोरी।

भयङ्कर सपनोंके कारण नींद उखड़ी रहती है। कलेजा धड़कना और श्वास-रोध। रातके अन्तिम भागमें जागता है और पसीना होता है।

यदि **आर्सेनिक** और **कैल्केरिया**पर ध्यान रखकर इस आश्चर्य-जनक दवाका अध्ययन किया जायगा, तो इसका और भी विस्तृत विवरण प्राप्त होगा। इसकी विभिन्न क्रमोंमें और भी परीक्षा होनी चाहिये।

कैल्केरिया फ्लुयोरिका।

(Calcarea Fluorica)

फ्लुओरिक एसिड और चूनाके रासायनिक सम्मिश्रणसे इसमें एक दवा प्राप्त होती है, जिसकी नयी प्रकृति और नये ही गुण रहते हैं। किसीको इन दोनों तत्वोंका कितना भी ज्यादा ज्ञान क्यों न हो, वह दो सम्मिलित दवाओंकी आरोग्यकारिणी शक्ति पहलेसे ही नहीं बता सकता। मैं ग्रन्थियोंके कड़े रक्त-स्राव, कौषिक तन्तु तथा अस्थि निर्माणको आरोग्य करनेकी इसकी क्षमताको ओर लक्ष्य दिला रहा हूँ। कण्ठरापथमें अस्थिखण्ड, अस्थि प्रवर्द्धन, पत्थरकी तरह कड़ी गाठ, अस्थि आवरणमें अस्थिमय भीतरी रसस्राव, उपास्थिमें चावलकी तरह अग्र—ये सब इससे आश्चर्यजनक रूपसे उस अवस्थामें आरोग्य हुए हैं, जब लक्षण मिले हैं। इसमें सन्देह नहीं कि लक्षण मिलनेपर यह आरोग्य कर देगी, पर इसकी इस तरह परीक्षा आवश्यक है, कि अकसर प्रभेद निर्णय किया जा सके।

एक बार नश्तर देकर घुटनेके गह्वरमें बार-बार होनेवाला तन्तुमय अर्बुद आरोग्य किया गया, पर यह फिर हो गया और एक हड्डी जितना बड़ा हो गया। पैर पैंतालीस डिगरीतक खिंच गया तथा घुटना एकदम अचल हो गया। यह आश्चर्यजनक दवा अर्बुदका कड़ापन तथा रोगीके लक्षणोंपर दी गयी थी। अर्बुद धीरे-धीरे गायब हो गया, अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्वाभाविक हो गये और वैसे ही हो गये जैसे पहले थे। तबसे वह लड़की बिलकुल ही स्वस्थ्य रही—और उसे किसी तरहकी भी बीमारी न रही। उसकी आरोग्य हुए दस वर्ष हुए।

रोगीको सर्दी, जोरकी हवा, ऋतु-परिवर्त्तन और तर ऋतु सहन नहीं होती। लक्षण गर्मी और गर्म-प्रयोगसे घट जाते हैं और आराम करनेके समय लक्षण बदतर हो जाते हैं।

यह बहुत ज्यादा पीले पेशाबके साथ गठिया और अतिसारकी बहुत बढ़िया दवा है। रोगी उदास और कष्टमय रहता है, इसने शिर-रक्तार्बुद (Cephalœmatoma) नाम शिशुकी खोपड़ीका होनेवाला अर्बुद आरोग्य कर दिया है। दृष्टि-शक्तिसे काम लेनेपर आँखके सामने धुआँ दिखायी देने लगता है। मोतियाबिन्द (Cataract)। अगर किनारे कड़े रहते हैं, तो यह कनीनिकाका जख्म आरोग्य कर देता है। इसके अलावा कड़े छोटे दाग और

चक्षु-खेतपटलका प्रदाह। इसने ग्रन्थि और नाकसे गाढा पोलापन लिये रक्त-स्राव आरोग्य कर दिया है। बहुत दिनोंकी बदबूदार नाककी सर्दी। दन्तावरक (Enamel of the teeth) बहुत थोडा।

कण्ठमें दर्द जखम और दाने निकलना। सर्दीसे यह बढ जाता है और गर्म पेयोंसे अच्छा रहता है। दांतमें दर्द बहुत बढ जाता है, यदि **बेराइटा-कार्ब** आरोग्य न कर सका है तो बढे हुए कई तन्तुमूल इससे आरोग्य हो जायँगे।

रातमें यकृतमें दर्द, दर्दवाली करवट सोनेपर दर्द बदतर हो जाता है, हिलने-डोलनेपर अच्छा रहता है। यकृतमें काटनेकी तरह दर्द, चलनेपर अच्छा रहता है।

गठिया-वातवालोंका अतिसार। बवासीरका मसा तथा मलद्वारमें खुजली, दर्द और कडा रक्त-स्राव। मलद्वारमें कडा घाव। कब्ज।

बहुत ज्यादा पानीकी तरह पेशाब। बहुत कडी गन्धवाला पेशाब करनेके समय पेशाबमें चिलक मारता है।

अण्डकोष कडे। गाठ-गांठ अण्डकोष। योनिको शिराओंकी सूजन। जरायुका कोषार्बुद।

स्तनमें कडी गांठ।

स्वरयन्त्रमें सूखापन और चुनचुनी, स्वररज्जुको साफ करते रहनेकी इच्छा। जोरसे पढनेपर स्वरभङ्ग। भोजनके बाद, ठण्डी हवामें स्वरयन्त्रमें सुरसुरी रहनेके कारण खुसखुसी खांसी। आक्षेपिक खांसी।

आठवीं पसलीके कोनेकी अस्थित्व-झिल्लीकी बीमारी इसने आरोग्य कर दी है।

इसने एक कटिवात आरोग्य किया है, जो आराम करनेके समय बदतर हो जाता था, तापसे अच्छा रहता था और **रसटक्स** लाभ न दिखा सका था। त्रिकास्थितक फैलनेवाला पीठका दर्द।

कडी ग्रीवा-ग्रन्थि (Cervical gland)।

बहुत तरहके सपने और स्फूर्ति न लानेवाली नींद। सपनेमें पलङ्गसे कूद पडता है।

यह पीब पैदा होनेमें **सिलिका**के समतुल्य है।

कैल्केरिया फास्फोरिका।

(Calcarea Phosphorica)

बढ़नेके कालमें बहुतसे बच्चोंको इसकी जरूरत पड़ती है। यदि माथेकी हड्डियोंका निर्माण बहुत धीमी गतिसे हो तथा बच्चेकी अभिवृद्धिसे इसकी समता न हो तो यह दवा अक्सर लाभदायक होती है। मांसकी वृद्धि न होती हो, कामकी बातें बहुत धीमे सीखता हो, चलना भी धीमी गतिसे सीखे या पैर शरीरका भार सहन करनेमें समर्थ न हों अथवा उसकी मानसिक उन्नति न होती हो, तो इस दवाकी परीक्षा करनी चाहिये। (**बैराइटा-कार्ब, बोरैक्स, फास-एसिड, नेट्र-म्यूर, कैल्केरिया**की भांति)। मांसल। झुर्रियां भरे, क्षीण लड़के। टूटी हुई हड्डीमें जोड़ नहीं लगता, फूले हुए मसे। इस दवाके जबर्दस्त लक्षण सभी प्राच्य ग्रन्थोंमें माने गये हैं। इसने नाक, मलनाली और जरायुका अर्बुद आरोग्य कर दिया है। इसने नाक वंक्षण और तलपेटकी बढ़ी हुई गांठें अच्छी कर दी हैं। अस्थि-विकृति (Rachitis) जिसके साथ ही ब्रह्मरन्ध्र खुला रहता है तथा क्षीण हुए लड़कोंका अतिसार। सन्धियों और प्रत्यङ्गोंमें वातका दर्द, ठण्डी मौसम या सर्दीके मौसमके प्रत्येक परिवर्त्तनसे बदतर हो जायगा। पीली मोमकी तरह त्वचा, रक्त-स्वल्पता, जल्दी-जल्दी बढ़नेवाले बच्चोंका रात्रिकालीन बढ़ता हुआ दर्द। क्षयके रोगी, हड्डीकी बीमारियां, सहजमें ही जखम हो जाना। खुजली, जलनभरे उद्भेद। **सर्दी सह्य नहीं होती।** झटका सहन नहीं होता।

इसके दर्द खोंचा मारने, खींचने, लगातार यन्त्रणा देनेवाले, जलन और दबावकी तरह होते हैं। इसमें कँपा देनेवाला जाड़ा मालूम होता है, जो नीचेकी ओर उतरता है। शामके समय सूखी गर्मी। रातमें बहुत ज्यादा पसीना होना।

आराम करनेके समय, इस दवाके उपसर्ग साधारणतः अच्छे रहते हैं, हिलने-डोलनेके समय उत्पन्न होते हैं और परिश्रम करनेपर बहुत बढ़ जाते हैं, पलङ्गपर, हिलने-डोलनेपर थकावट-सी मालूम होना। साधारणतः शारीरिक कमजोरी, बहुत-से अङ्गोंका सुन्नपन, कम्पन। भयसे उपसर्ग पैदा हो जाते हैं, कलेजा धड़कना।

बिजलीकी तरह झटका, यह इतने जोरोंका लगता है, कि रोगी खड़ा नहीं रह सकता। मृगीकी अकड़न। बच्चोंकी टङ्कार, पर खूब फायदा होनेके लिये दवा उस समय देनी चाहिये, जब अकड़न न हो। मन, सबके ऊपर एक थका और दुर्बल मस्तिष्क दिखाता है। कमजोर याददाश्त, मानसिक चेष्टाकी अयोग्यता। मानसिक परिश्रमसे माथेकी तकलीफें उत्पन्न हो जाना। रोगी मानसिक परिश्रमसे भय खाता है। धीमा मन, जड़बुद्धित्व। दुर्बल-मना लड़के। बच्चा हाथोंसे सर पकड़ लेता है और चीखता है। रोगके विषयमें सोचनेपर बीमारी बढ़ती है। बहुत ही डरपोक, बुरी खबरसे ढङ्ग बदल जाना, न मिलनेवाला प्रेम, विरक्ति वगैरहसे उत्पन्न बीमारियाँ। अपने विचारोंपर ध्यान देनेके लिये वह एकान्त खोजती है और समाजके झंझटोंसे बचना चाहती है। अपने पारिपार्श्विकोंसे असन्तुष्ट रहती है और एक जगहसे दूसरी जगह जाना चाहती है।

ठण्डी हवामें, मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे, बैठे-बैठे उठनेपर तथा ठण्डी हवामें टहलनेपर सरमें चक्कर आना।

माथेके लक्षण तो और भी अद्भुत हैं। स्कूली बच्चोंके माथेका धीमा-धीमा दर्द—हमेशा स्कूलसे सर-दर्दके साथ ही घर लौटते हैं। सर-दर्दका झटका, दबाव या टोपी सहन नहीं होती, ठण्डे पानीसे सर धोना चाहता है, शान्त तथा एकान्तमें रहना चाहता है, माथेमें धमक और जलन। वातज सर-दर्द, समूचे माथेमें होता अनुभव होता है तथा सर्द मौसममें, ठण्डी हवामें और घरसे बाहर निकलनेपर होने लगता है। चलने-फिरनेसे, परिश्रमसे और रातके समय बढ़ जाता है। इसने कितनी ही बार मस्तिष्कका जल-सञ्चय (Hydrocephalus) रोक दिया है। ललाटका सर-दर्द और सम्मुख भागका सर-दर्द तथा आँखोंका दर्द, टोपीके भारसे बढ़ जाता है। मस्तक-त्वचामें पसीना, ललाट छूनेपर ठण्डा। माथेकी हड्डियोंमें फाड़नेकी तरह दर्द। मस्तिष्कका पिछला भाग ठण्डा। मस्तक त्वचाका अकौता। मस्तक त्वचाका जखम।

यदि मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयवाले बच्चोंके आरोग्य होनेपर डेरा देखनेका (तिर्यक—Strabismns) दोष रहे या अतिसार हो और मास घटता जाये, तो इससे लाभ होता है। आँखके सामने चमकीले आगके चक्कर, नकली रोशनीमें पढ़नेके कारण आँखोंमें दर्द। आँख धुँधली हो जाये। चक्षुगोलकमें घावकी

तरह यन्त्रणा। उनके विषयमें सोचनेपर दर्दका बढ़ना। कनीनिकामें जखम होना। आँखे गर्म मालूम होना।

जब सर्दीकी ओर ऋतु-परिवर्त्तन होता है, तो कानोंमें वातज फाड़नेकी तरह दर्द। कान बहुत ठण्डे। भीतरी कानमें बहुत दर्द। कर्णमूल ग्रन्थि बढ़ी, दर्दसे भरी। कानके पास उद्भेद। पाखाना होनेके बाद कानमें भिन्न-भिन्न आवाजें आना। मध्य कानकी सूखी सर्दी।

सार्वाङ्गिक लक्षण मिलनेपर पुरानी नाककी सर्दीमें यह दवा लाभ करती है। नाकमें अर्बुद। बरफकी तरह ठण्डी नाक। ठण्डे कमरेमें नाकसे खूब पानी बहता है, गर्म कमरेमें बन्द हो जाता है। नाकमें खूनका स्राव (Epistaxis)।

पीला, मोमकी तरह चेहरा गालपर मैली। मौसमके प्रत्येक सर्द झटकेसे चेहरेमें वातका दर्द। चेहरेपर ठण्डा पसीना। रातमें ठण्डी हवामें चेहरेका स्नायु शूल, परिश्रममें बढ़ना, गर्मी से घटना, दबाव सहन नहीं होता (**मैग-फास** तापसे और दबावसे अच्छा रहता है), चेहरेपर काले चकत्ते और फुन्सियाँ। ऊपरी ओंठ सूखा दर्द-भरा, कड़ा और जलन होता हुआ।

दाँत देरसे निकलते हैं या जल्द ही गिर जाते हैं। दाँतमें स्पर्श, दबाव या चबानेकी रगड़ सहन नहीं होती। दाँत निकलते हुए बच्चोंके उपसर्ग। मुँहमें बदबू। सवेरे मुँहका स्वाद तीता। सवेरे जीभ मैलसे ढँकी। जीभ फूली, सुन्न और अकड़ी।

बढ़ते हुए बच्चोंको पुरानी कण्ठकी तकलीफें होती हैं। तालुमूल (Tonsil) बढ़ा हुआ। प्रत्येक सर्दी उनके तालुमूलमें बैठ जाती है (**बेराइटा-कार्ब, ऐल्यूमेन**), कण्ठमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा हो जाता है। रातके समय कण्ठमें सूखापन।

नमकीन सूअरका मांस और धुँआया गोश्त खाना चाहता है। जबर्दस्त भूख। बच्चे दिन-रात स्तनका दूध पीते रहना चाहते हैं। सहजमें ही बिगड़ जानेवाला पाकाशय। ठण्डे पेय, मलाईका बरफ तथा फलोंसे पाकाशय बिगड़ जाता है, दर्द होने लगता है या दस्त आने लगते हैं। खानेके बाद ही पाकाशयमें दर्द, मिचली और डकार। पाकाशयमें घावकी तरह यन्त्रणा, खट्टी डकारें, मिचली और वमन। पाकाशयमें जलन। स्वर-यन्त्र या कण्ठकी

थोड़े भी परिश्रमसे या सीढ़ी चढ़नेपर श्वास-रोध होने लगता है, दुबले, ले बीमार मनुष्यकी सूखी खाँसी, दिन-रात होनेवाली खाँसीके साथ, ठण्डसे, ई मौसममें धातुगत वातका बदतर होना। पीला बलगम।

वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, वक्षका दुर्बल हो जाना, कष्टसे बलगम कलता है। यक्ष्मा और खून मिले बलगमकी यह बहुत ही लाभदायक ा है। वक्षमें बहुत अधिक पसीना होता है। कष्टसे निकलनेवाले लगमके साथ वक्षमें, **कास्टिकम**की तरह घरघराहट। छूनेपर वक्षमें घावकी रह यन्त्रणा, अङ्गोंके कम्पनके साथ कलेजा धड़कना।

ठण्डी और तूफानी ऋतुमें पीठका दर्द बदतर हो जाता है, इसके साथ ही कड़न रहती है और यह सवेरे बहुत बढ़ जाती है। पीठमें हवाका झोंका हन नहीं होता। कुछ उठाते या जोर लगाते ही पीठमें दर्द। मेरुदण्डका ड़ा हो जाना। फाड़नेकी तरह, खोंचा मारनेकी तरह दर्द, मेरुदण्डमें र्श-कातरता और यन्त्रणा, त्रिक श्रोणि उपास्थिसन्धि (Sacro-iliac ymphysis) में घावकी तरह यन्त्रणा। कटि-प्रदेशमें और त्रिकास्थिमें तस्राव कालमें दर्द।

सर्द ऋतुमें प्रत्यङ्गोंमें वातके दर्द, हिलने-डोलनेपर ये बढ़ जाते हैं था आराम करने और गर्म-प्रयोगपर अच्छे रहते हैं। सभी प्रत्यङ्गोंमें कम्पन। राम करनेके बाद और सवेरे अकड़ जाना। बढ़ते हुए दर्दकी तरह स्थियोंमें लगातार यन्त्रणा। गठियाग्रस्त अगुलियों और अंगूठे जो सर्द ौसममें दर्द-भरे हो जाते हैं। नाखूनकी जड़में जखमकी तरह दर्द।

सबसे ज्यादा धक्का देने और फाड़नेकी तरह दर्द निम्न प्रत्यङ्गोंमें होता ै। इसका कारण शायद यह है, कि निम्न प्रत्यङ्ग घुटनेतक प्रायः ठण्डे रहते ै और इस दवामें सर्द जगहपर ज्यादातर बीमारियाँ होती हैं। निम्न प्रत्यङ्गकी ण्डराओंमें तेज़ दर्द। घुटने और लम्बी हड्डियोंमें तेज़ छेदनेकी तरह दर्द। न्त्रणाके साथ जङ्घास्थि (Tibia) में दर्द। जङ्घास्थिमें खींचनेकी तरह दर्द। रकी पोटलीमें मरोड़। पैरोंकी पोटलियोंमें जखम्। कमजोर, पुरानी, टाने ही भरते। ऐड़ियोंका वात। पार्ष्णि-अस्थि (Os calcis) में अस्थि-क्षत हड्डीका घाव), अगूठेमें डक मारने और धक्का देनेकी तरह दर्द।

दिनमें और शामको औंघाई आती है। आधी रात या इसके बादतक भी थकावटपर सोनेपर नींद नहीं आती। *सवेरेके बाद बहुत नींद आती है।*

बहुत तरहके स्वप्न। बच्चे नींदमें चिल्ला उठते हैं। डरावने स्वप्नोंके कारण वह नींदसे चौंककर जाग पड़ता है।

कैल्केरिया सल्फरिका।

(Calcarea Sulphurica)

बहुत बरस हुए डाक्टर सुसलरने इस दवाको निकाला था तथा बायोकेमिक सिद्धान्तपर इसका बहुत अधिक प्रयोग होता है। इससे बहुतसे आरोग्य तो इस प्रणालीसे हुए कि उन्हें हम होमियोपैथिक आरोग्य मान सकते हैं, यद्यपि यह एक तरहकी अप्रत्यक्ष होमियोपैथी है। इन आरोग्योंका अध्ययन करनेपर बहुतसे ऐसे लक्षण जाने जा सकते हैं, जो इन विवरण दाताओंके लिये आवश्यक न समझे गये थे। ये ही लक्षण अकसर आगे सोचने या आगेकी चिकित्सा-सम्बन्धी अन्वेषणोंके आधार प्रकट करते हैं। बहुत सी असम्पूर्ण परीक्षाएँ भी तबसे हुई हैं। जिनसे इस लेखमें लिखे बहुतसे लक्षण प्रकट हुए हैं। ग्रन्थकारने ज्यादातर सुसलरकी १२ वीं शक्ति और फिर ३० वीं और २०० वीं शक्तिका प्रयोग किया है और अब तो बहुत ही उच्च शक्तिका प्रयोग करते हैं। इन सबसे बहुतसे कीमती लक्षण प्राप्त हुए हैं। उनमेंसे कितने ही लक्षण तो इस दवाके अधिकारमें रहनेवाले रोगियोंमें प्रकट हुए हैं और इस तरह निश्चित लक्षण माने गये हैं। इसलिये नीचे लिखे लक्षण इसके सर्वोत्तम आधार हैं, जिनके सहारे हम रोगीपर इसका प्रयोग कर सकते हैं। इस दवाके सम्बन्धमें सर्वोत्तम विचार जो कभी भी हो सकते थे, वे बोरिक और डियुईकी टीश्यु-रेमिडीजकी मैटेरिया मेडिकामें देखनेमें आयेंगे।

इस दवाका एक जबर्दस्त स्वरूप है, शरीरके किसी भी स्थानपर फोड़ा होनेकी प्रवणता और यह **पादूरोजन**के अत्यन्त सदृश है। कोई फोड़ा, जो फट गया है और जो जल्दी नहीं भरता और लगातार पीला पीब बहा करता है, यह इस दवाका एक जबर्दस्त निर्देशक लक्षण है। रोगी खुली हवाकी इच्छा करता है, हवाका झोंका सहन नहीं होता, सहजमें ही सर्दी लग जाती है। जखम हो जानेपर जो मारात्मक प्रवर्द्धन होते हैं, उनको वशमें लानेमें यह बहुत उपयोगिनी होती है। ऐसी अवस्थाओंका यह सर्वोत्तम उपशामक होता है।

यह एक गहराईतक काम करनेवाली धातु-शोधक औषधि है, सोरा-नाशक है; अगर आरम्भमें ही पड जाती है, तो साघातिक प्रवर्द्धनोंको रोककर स्वाभाविक अवस्थामें ला देती है। हड्डीकी बीमारी। अस्थि-क्षतमें यह लाभदायक है, जब साधारणत: रोगी ठण्डा रहता है, तो भी वह अकसर अपने विशेष अवस्थाके कारण खुला रहना चाहता है। उदाहरणार्थ,—क्रूप और सर-दर्दमें उसे बहुत ज्यादा गर्मी मालूम होती है, पर शरीरका दर्द अकसर गर्मीसे आराम पाया करता है। उसे गर्मी और सर्दी दोनों ही सहन नहीं होती। ठण्डे हो जानेपर उपसर्ग आ जाते हैं। हवाके झोंकमें सर्दीकी प्रबलता या वैसे ही हलके अवसरोंपर, वह सर्दी, तर मौसम सहन नहीं कर सकता। यह मृगी, मृगीकी तरहकी बीमारियाँ तथा हिस्टीरियाको अकाडनका गुप्त आधार ही आरोग्य कर देता है। परिश्रम करनेपर रोगीको तकलीफ़ बढ जाती है। उसकी पेशियाँ थुलथुली रहती हैं, उसकी रक्त-खराबी प्रकृति रहती है। जब खूब चुनी हुई दवा भी बहुत थोडे समयतक अपना प्रभाव दिखाती है और लक्षण मिलते हैं, तो यह एक ऐसी दवा है, जिसपर **सलफर, सोरिनम** और **टियुबरक्युलिनम**के साथ ही विचार करना चाहिये। मांस पेशियों और कण्डराओंपर जोर पडनेके कारण उपसर्ग—जैसे बोझा उठाना प्रभृति। इन्हीं कारणोंसे पीठ कुबडी हो जाना। समस्त वक्ष और कभी-कभी प्रत्यङ्गोंतक भी फैल जानेपर रक्तका दबाव प्रचण्डतासे बढ जाता है, तापके झोंके आते हैं और टपक होती है। कामोद्रेक और कामेन्द्रियके अतिरिक्त परिचालनके कारण समस्त शरीर एक ऐसी अवस्थामें जा पहुँचता है, जिससे रोगीके धातुगत गडबडी अनुभव होती है और यह भी एक ऐसी दवा है, जो ऐसी अवस्थामें शरीरको उन्नत बना देती है। दिन-रात हड्डियोंमें दर्द। समूचे शरीरमें स्पन्दन अनुभव होना। खडे होनेपर बहुतसे उपसर्ग बढ जाते हैं, खासकर सन्धियोंमें। फूली और उसमें कडी गांठे। समूचे शरीरकी पेशियोंमें ऐंठन। बहुतसे उपसर्ग जागनेपर बढ जाते हैं। बहुतसे लक्षण चलनेसे और खासकर तेज़ चलने और गरमा जानेपर बढ जाते हैं। अत्यधिक गर्म हो जानेके कारण रोग-वृद्धि। खुला रहना चाहता है। बिछावनकी गर्मीसे रोग-वृद्धि। गर्म कमरा रोग बढा देता है। गर्म कपडा लपेटे रहनेपर बीमारी बढती है। बहुत अधिक शारीरिक दुर्बलता। श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे गाढा पीला स्राव होना। गाढा खून-मिला स्राव। रक्ताम्बु गह्वरोंसे पीब-भरा रस-स्राव। फोडे जख्म

तथा श्लैष्मिक झिल्लियोंसे खून मिला पीब निकलना। बहुत दिनोंका पीब-सञ्चय। चुपचाप रहना चाहता है।

अब यह प्राप्त होगा कि ऊपर लिखे साधारण लक्षण बहुत अवसरोंपर समस्त विशेषणोंमें पाये जायँगे और यह मालूम होगा कि शारीरिक अवस्था कुछ-न-कुछ इन लक्षणोंसे सम्मिलित रहती है।

रोगी अव्यवस्थित चित्त रहता है। चिड़चिड़ा, सहजमें ही क्रोधित हो जाता है। क्रोध और विरक्तिके बाद वह कमजोर हो जाता है। प्रश्नोंका उत्तर नहीं देना चाहता। सहजमें ही वह घबड़ा उठता है, खासकर शामको बिछावनमें, रातके समय और लेटे रहनेपर। ज्वरके समय भयके साथ घबड़ाहट भविष्यके सम्बन्धमें आशङ्का। अपने हृत्पिण्ड तथा सार्वाङ्गिक अवस्थाके सम्बन्ध में चिन्ता। खुली हवामें उसकी घबड़ाहट घट जाती है। अपनी मुक्तिके सम्बन्धमें उसे चिन्ता रहती है। सवेरे सोकर उठनेपर उसे घबड़ाहट होती है। बहुत-सी परिवर्त्तनशील भाव-भङ्गियाँ तथा अव्यवस्थित चित्तताएँ। किसीके साथ रहनेकी इच्छा न होना। सवेरे सोकर उठनेपर और फिर शामको चिन्ता, विभ्रम। यह खुली हवामें घट जाता है। मानसिक परिश्रमके कारण चिन्ता, विभ्रम। विपरीत और खण्डनकारी भाव-भङ्गिया। उसमें बहुतसे छोटे छोटे खाम-खयाल, सन्देह और अद्भुत आकाङ्क्षाएँ रहती हैं। रातमें सोनेकी चेष्टा करनेपर डरावनी मूर्तियाँ दिखायी देती है, दृश्य देखता है। तापके समय आरोग्यसे घोर निराशा। अपनी कम्पनशील दुर्बलताको दूर करनेके लिये बलकारक औषधि खाना चाहता है। हमेशा असन्तुष्ट रहता है। मनकी बहुत ज्यादा शिथिलता। हमेशा एक सोच विचारकी अवस्थामें रहता है। मृत्युका भय, यह भय कि कोई आपदा आयगी। उन्माद, दुर्भाग्यका भय और यह रातमें उत्पन्न हो जाता है। भूलनेवाला, जिनसे मत नहीं मिलता, उनसे घृणा। हमेशा जल्दबाज, हिस्टीरिया-ग्रस्त। असन्तुष्ट। दुर्बल-मना, यहाँतक कि जड़-बुद्धि, अपने पारि पार्श्विकोंसे उदासीन। अस्थिर चित्तता। सन्ध्याके समय बहुत चिड़चिड़ापन। सङ्गमके बाद चिड़चिड़ा। परिताप करता है, क्यों कि वह ठीक-ठीक माना नहीं जाता। जीवनसे घृणा। बुरा, शराब पीनेके कारण स्वास्थ्यभङ्ग हो जानेकी यह उपयोगी दवा है। मन, स्मरण-शक्ति और शरीरकी दुर्बलता। कुछ मानसिक अवस्थायें जो उदासीके साथ सन्ध्यामें तथा जागनेपर बढ़ जाती हैं, शामको इतना प्रफुल्ल हो जाता है, मानो आनन्दो-

मत्त हो पड़ा हो। वह बोलनेमें भूल करता है और गलत शब्दोंका प्रयोग करता है। परिवर्त्तनशील भावभङ्गी। उदास। जिद्दी। सहजमें ही गाली देने लगता हैं, मनकी सुस्ती, झगड़ालू, बेचैन। सवेरे मानसिक जड़ता, शामको आनन्दोल्लास। पसीना होनेके साथ उदासी। ज्ञानेन्द्रियोंकी सुस्ती। शामको बैठा-बैठा खयाली दुर्भाग्यकी सोचा करता है। किसीसे बात नहीं करना चाहता। सहजमें चौंक पड़ता है। संज्ञाहीनता। सन्देह। सन्देही। बातचीतसे अनिच्छा। कष्टपूर्ण, लगातार विचार। जब खूब डूबकर सोचता रहता है, उसकी विचार-धारा गायब हो जाती है। डरपोक, लजालू और आक्षेपिक हो जाता है तथा बातचीतसे बहुत क्लान्त मालूम होता है। पसीना होनेके समय रोता है। मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे अनिच्छा। वास्तविक आलस्य।

इसके रोगीके लिये सरमें चक्कर तो इसका साधारण स्वरूप है। सवेरे सोकर उठनेपर या फिर शामके बाद सरमें चक्कर आता है, पर यह खुली हवामें घट जाता है। मिचलीके साथ सरमें चक्कर। गिर जानेकी सम्भावनाके साथ सरमें चक्कर। नशेका सरका चक्कर। जल्दीसे सर हिलानेपर, झुकनेपर तथा तेजीसे चलनेपर सरमें चक्कर आ जाना। माथेमें ठण्डक, खासकर शिखर-देशमें। मस्तिष्कमें बहुत ज्यादा रक्त हो जाना, यह रातमें तथा शामको बढ़ जाता है। बलकारक औषधि खानेपर बढ़ जाता है। खासकर खाँसनेपर, रज-स्रावके समय, रुके हुए रज:स्रावके साथ और गर्म कमरेमें। खुली हवामें घट जाता है। माथा सङ्कुचित मालूम होता है, खासकर सम्मुख और पश्चात् मस्तक। माथेकी त्वचापर बहुत रूसी जमती है। गाढ़ी, पीली, पपड़ीके साथ माथेकी त्वचापर बहुतसे उद्भेद। अकौता तथा फुन्सियाँ। माथेमें ठण्डक, खासकर ललाटमें। माथेकी त्वचामें सुरसुरी। केश झड़ जाते हैं। सवेरे और शामको माथेमें गर्मी मालूम होना। तापकी झलक। ललाट और शिखरदेशमें गर्मी। सम्मुख मस्तिष्क तथा माथेके पिछले भागमें ताप। माथेके सामनेवाले और पिछले भागमें भार। माथेकी त्वचामें खुजली और जलन। बहुत तरहका न छूटनेवाला पुराना सर-दर्द, समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द इससे आरोग्य किया गया है। सोकर उठनेपर सवेरे सर-दर्द। तीसरे पहर होनेवाला सर-दर्द, यह शामको और रातभर रहता है, खुली हवामें घट जाता है। सर्दी-जनित सर-दर्द, खाँसनेपर, भोजनके बाद या पेटकी गड़बड़ी रहनेपर सर-दर्द, गर्म

ही जानेके कारण सर-दर्द तथा झटका लगनेपर यह सर-दर्द बढ जाता है। उसे बाध्य होकर लेटे रहना पड़ता है। ऊपरकी ओर देखनेपर बढ जाता है। ऋतुके समय और पहले स्त्रियोंको सर-दर्द। यह सर-दर्द मानसिक परिश्रमसे, सर हिलानेपर, हिलने-डोलनेसे और आवाज़से बढ जाता है। मिचली और वमनके साथ समय बाँधकर होनेवाला सर-दर्द। दबावसे घट जाता है। सभी सर-दर्दके साथ टपक होती है, पढ़नेसे सर-दर्द बढ जाता है। पड़े रहनेके बाद उठनेपर सरमें धमक और दर्द हो जाता है। सर हिलानेपर दर्द बढता है, वह सर-दर्दके साथ ही जागता है। स्पिरिटवाली शराबोंसे, खड़े होनेपर, झुकनेपर, सूर्यके तापसे, बातचीतसे, चलने-फिरनेसे या धोनेसे सर-दर्द बढता है। ठण्डी हवासे सर दर्द बढता है। सर्द होनेपर ही माथेमें दर्द होने लगता है और इतनेपर भी वह सर-दर्द जब जारी हो जाता है, तो ठण्डी हवासे घटता है। बहुतसे सर-दर्द तो ललाटमें सवेरे या जागनेपर होते हैं या शामको भोजनके बाद होते हैं, ये झुकने और चलनेपर बढते है। आँखोंके ऊपर तेज़ दर्द, इसमें माथेके पिछले भागका सर-दर्द भी है। शिखर-देश और माथेके पार्श्वके स्थानोंमें दर्द। इनमेंसे बहुतसे दर्द दबावकी तरह होते हैं तथा मानसिक परिश्रमसे बढ जाते हैं। खाँसनेपर सुई गडनेकी तरह दर्द, कनपटी और पेशानीमें सुई गडनेकी तरह दर्द, समूचे माथेमें फाडनेकी तरह दर्द, माथेके चारों तरफ फाडनेकी तरह दर्द, लेटे रहनेपर घटता है। कनपटी और माथेमें टपक। ऐसी अनुभूति होती है, मानो ४ बजे तीसरे पहर वह टोपी पहने हुए है।

आँखोंके भी बहुतसे लक्षण है, सर्दी-जनित और सोरा रोग-जनित, सवेरे पलके सट जाती हैं। इसने कितने ही मोतियाबिन्दके रोगीको आंशिक रूपसे आरोग्य कर दिया है। इसने द्वित्व दृष्टि (Double vision) उत्पन्न और आरोग्य की है। आँखोंका पुराना प्रदाह, साथ ही पीला पीब, कनीनिकामें जखम, खुजली और जलन सवेरेके बाद बढ जाती है, शामको आँखोंमें दबावकी तरह दर्द। छूनेपर घावकी यन्त्रणा, आलोकातङ्क, आँखे कच्चे मांसकी तरह लाल, आँखके कोनोंकी लाली, आँखके कोनोंका फटना। पलकोंका अकड़ना, धुँधली, अक्सर कुहरे ढँकी दृष्टि, आँखके सामने चिनगारियाँ।

कानका स्राव बदबूदार, सड़ी गन्ध-भरा होता है। गाढ़े, खून-मिले पीब, यन्त्रणा और दाहिनी कर्णमूल-ग्रन्थिकी वृद्धिके साथ आरक्त ज्वरके पीछे पडे हुए

रोगी। कानके पीछे उद्भेद, कानमें और कानके पीछे खुजली। भनभनाहट, सीटीकी आवाज़, घण्टेकी आवाज़, गरज और कानमें गानेकी आवाज़। कानमें लगातार बना रहनेवाला दर्द। सुई गड़नेकी तरह दर्द, धमक तथा अनुभूतियोंका रुक जाना, लक्षण मिलनेपर यह कण्ठकर्णी नलीकी सर्दी आरोग्य कर देता है। कर्णमूल-ग्रन्थि फूली और कानके पीछे सूजन।

इस दवासे नाककी पुरानी सर्दी आरोग्य की गयी है। स्रावके साथ नाककी सर्दी, खुली हवामें घट जाती है। सूखी नाककी सर्दी, नाकसे होनेवाला स्राव खून-मिला, खाल उधेड़नेवाला, बदबूदार, क्लेद-रस मिला, गाढ़ा, पीला और हरापन लिये पीला। इसने एक पार्श्वके रोगी बहुत आरोग्य किये हैं। नाकमें पपड़ी जमती है, नाकके किनारोंपर पपड़ी जमती है, नाकमें बहुत सूखापनका भाव। सवेरे नाकसे रक्त-स्राव, नाकसे बदबू निकलना। नाकके भीतर और नाकके अन्तवाली जगहपर खुजली, नाक रुकना, जिससे रोगीके लिये नाकसे साँस लेना असम्भव हो जाता है। मुँह खुला रहता है नाककी हड्डियोंका अस्थि-क्षत, गन्धका नष्ट हो जाना, छींक, खुली हवामें घटना, नाककी सूजन।

ओठ फटे, चेहरेपर तापकी झलक, पीला, रोगीकी तरह चेहरा। चेहरेपर बहुतसे उद्भेद, फोड़े, अकौता, हार्पिस, खुजली, फुन्सियाँ, जलभरी फुन्सियाँ, शीतादके उद्भेद, छाले, चेहरेमें खुजली। ठण्डे हो जानेके कारण चेहरेमें दर्द। काटनेकी तरह दर्द, चेहरेपर ठण्डा पसीना, गाठोंका फूलना। निम्न-हन्वस्थ-ग्रन्थि (Sub maxillary gland) फूली।

जीभ और मुँहका सूखापन। गर्म मुख-गह्वर, मुँहकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। सूजनके साथ जीभका प्रदाह, सवेरे मुँहमें बहुत श्लेष्मा रहता है। मुँहसे बदबू आती है, ओठके भीतरी भागमे खाल उधड़ जाना और जलन, जीभका जलन, मुँहसे लार बहना, जीभकी अकड़न और सूजनके कारण बोलनेमें तकलीफ होती है। मुँहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी सूजन। मसूढ़े फूले। स्वाद बिगड़ा, तीता, धातुकी तरह, खट्टा, मीठा। मुँह, जीभ और कण्ठका जखम। मुँहमें छाले। जीभकी तलीमें गाढ़ा पीला मैलकी तह।

हिपरकी तरह श्वास-रोध इस दवाका भी एक चरित्रगत लक्षण है। कण्ठकी लाली और सूजन। कण्ठ और तालुमूलकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंका सूखापन और प्रदाह। कण्ठमें एक ठेपी गड़ी रहनेका भाव। कण्ठमें बलगम। पश्चात् नासारन्ध्रसे गाढ़ा पीला बलगम निकलना। निगलनेके समय कण्ठमें

दर्द, दबावकी तरह दर्द। कण्ठकी खाल उधड़ जाना, कण्ठमें घावकी तरह यन्त्रणा, कण्ठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। कण्ठसे खखार-खखारकर बलगम निकालना। निगलनेमें तकलीफ होती है। पीब होनेके साथ तालुमूलका फूलना, कण्ठमें जख्म, बाहरी कण्ठ फूला रहता है, ग्रन्थियाँ बढ़ी और दर्द-भरी रहती हैं।

भूख बढ़ी हुई, राक्षसी भूख या केवल भूखकी चाह, काफी, मांस और दूधसे घृणा। फल, ठण्डे पेय, एसिड, नमकीन चीजें, मिठाइयाँ आदिकी इच्छा, अत्यधिक प्यास, भोजनके बाद पाकाशयमें तनाव।

पेटमें खालीपनका भाव, भोजनके बाद डकार, खाली डकार, डकार कटु, तीती, गन्ध, खट्टी, खायी हुई चीजकी डकार। मुँहमें पानी भर आना, खानेके बाद पेटमें भरापन, कलेजेमें जलन। पाकाशयमें भार, मानो कोई बोझ रखा है। जरा भी उत्तेजना मिलनेपर अनपच हो जाता है, शामको मिचली होती है, सर-दर्द और सरमें चक्करके साथ मिचली, शामको पाकाशयमें दर्द, खानेके बाद पेटमें दर्द, जलनकी तरह दर्द, मरोड़, काटने, चबाने तथा दबानेकी तरह भोजनके बाद दर्द। दबावका सहन न होना, सुई गड़नेकी तरह दर्द, पाकाशयमें धमक, पाकाशयमें पत्थर रहनेकी तरह अनुभूति। रातमें भोजनके बाद सर-दर्दके साथ वमन। पित्त, तीता, रक्त, खाद्य, श्लेष्मा, खट्टा वमन।

भोजनके बाद पाकाशयमें बहुत सर्दी मालूम होती है, इसके साथ ही तनाव रहता है। खानेके बाद भरापन, भार, तलपेटके बहुतसे दर्द शूलकी तरह होते हैं और रातमें होते हैं। जलनकी तरह दर्द, मरोड़, काटने, खींचने, खरोंचनेकी तरह दर्द। घावकी तरह यन्त्रणा, सुई गड़नेकी तरह दर्द, यकृतमें दर्द, दबाव, घावकी तरह यन्त्रणा और सुई गड़नेकी तरह दर्द। तलपेटमें धमक गड़गड़ाहट और तनाव रहता है।

- गहरा कब्ज। कष्टकर मल, पाखाना खुलासा नहीं होता। भगन्दर, मल-द्वारका दर्द-रहित फोड़ा, सलफरकी भाँति इसने सवेरे आनेवाले पतले दस्त आरोग्य किये हैं। इसने शामको होनेवाला अतिसार तथा बच्चोंके उदरामयको भी आरोग्य किया है। थोड़ा भी खा लेनेपर रोग बढ़ जाता है। इसका अतिसार दर्द-रहित होता है, मलनालीमें बहुत सुरसुरी और तीव्र खुजली होती है, मलनाली तथा मलद्वारसे रक्त-स्राव। बाहरी बवासीरका मसा, मलनालीको

क्रिया न होना। आप-ही-आप पाखाना हो जाना, मलद्वार तर बना रहता है, जिससे खुजली और ज्वाला-यन्त्रणा होती है। पाखाना होनेके समय और बादमें दर्द, पाखाना होनेके समय जलनका दर्द। मलद्वारमें दबाव, सुई गड़नेकी तरह दर्द और घावकी तरह यन्त्रणा, पाखानेके समय अकड़न, मलान्त्रकी स्थान-च्युति, बार-बार वृथा ही पाखाना लगना। मल खून-मिला, सूखा, कड़ा, गांठ-गांठ, बड़ा, अनपचे पदार्थ मिला, कोमल, सफेद, पीला और पीवकी तरह।

यह बहुत ज्यादा पीवके साथ मूत्राशयकी सर्दीकी एक बहुमूल्य दवा है, इसने गुर्देका पुराना प्रदाह आरोग्य कर दिया है। यह मूत्रनलीके उस स्रावकी बहुत उपयोगी दवा है, जब स्राव पीला खून-मिला और अकसर क्लोटकी तरह होता है। पेशाब करनेके साथ मूत्रनलीमें जलन, यह नपुंसकताकी बहुत उत्तम दवा है, जब अन्य लक्षण सदृश रहते हैं। उन स्त्रियोंको जिन्हें कई बार गर्भ-स्राव हो गया है, जब लक्षण मिलते हैं, भगोष्ठोंकी खाल उधड़ जाना, पीव होनेके साथ भगोष्ठका प्रदाह। श्वेत-प्रदरके कारण जननेन्द्रियमें खुजली। गाढ़ा, पीला, खून-मिला प्रदरका स्राव। ऋतु-स्रावके समय भगोष्ठमें खुजली, ऋतु-स्रावके बाद खुजली, योनि-पथमें बहुत ऊपरतक खुजली। श्वेत-प्रदरका स्राव खाल उधेड़नेवाला, खून-मिला, जलन, बहुत ज्यादा गाढ़ा और पीला होता है। ऋतु-स्रावके पहले और बादमें होनेवाला श्वेत-प्रदर। ऋतु-स्रावका न होना। मासिक रजःस्राव बहुत ज्यादा, काला, बहुत जल्दी-जल्दी या बहुत देरसे होता है। अनियमित स्राव। कभी पीला, घटा, थोड़ा, रुका। लड़कियोंका प्रथम रजोदर्शन देरसे। जरायुसे रक्त-स्राव, ऋतु-स्रावके समय जरायुमें दर्द। ऋतु-स्रावके समय जरायुका नीचेकी ओर खिंचना, मानो जरायु अपने स्थानसे हट गया है। जननेन्द्रियमें जलन, जरायुका अपने स्थानसे हटना। भगोष्ठोंका फूलना। जरायुका तन्तुमय अर्बुद, जननेन्द्रिय तथा जरायुमुखका जखम।

स्वरयन्त्र तथा टेंटुआमें सर्दी। सूखापन और प्रदाह। बहुत ज्यादा बलगम निकलता है, जो कभी पीला और कभी खून मिला रहता है। खाल उधड़ जाना और घावकी तरह यन्त्रणा। रोगीको यक्ष्मा हो जानेकी सम्भावना, स्वर-यन्त्रकी बहुत खरोंचना। न छूटनेवाला स्वरभङ्ग, यह बहुत दिनोंसे क्रूपकी बड़ी ही उपयोगी दवा हो रही है। क्रूपकी तरह खांसी, जिसमें बहुत दम छूटनेका भाव रहता है—जब तजुर्बेकार चिकित्सक भी हीपरके विषयमें ही

सोच सकते हैं, पर यह याद रखना चाहिये, कि हीपरमें हाथका खोलना या वक्षसे ओढ़ना उतार देना, क्रूप प्रवणताको बढ़ा देता है और क्रूपको खाँसीको बढ़ा देता है तथा हीपरके रोगीको हवाका झोंका या हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती, पर इसके रोगीके लिये कपड़ा उतार देना तो आराम पहुँचाता है। रोगी सब ओढ़ना उतार फेंकता है तथा हवाकी इच्छा करता है तथा इससे श्वास लेने तथा क्रूपमें आराम मिलता है। यह भी एक आश्चर्यकी बात है, कि सल्फाइड और चूनेके सल्फेटमें इतना बड़ा प्रभेद उत्पन्न हो जाये।

शामको और रातमें श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है, सीढ़ी चढ़ने, लेटने और चलनेके समय बढ़ जाती है। श्वासमें घरघराहट होती है तथा लघु श्वास रहता है। श्वासरोधका भाव और हाँफनीका भाव रहता है। यदि लक्षण सदृश रहे तो यह दमाकी बहुत बढ़िया दवा है।

शामको और रातमें खाँसी बढ़ जाती है, ठण्डी हवामें—हीपरकी भाँति घट जाती है। दमाकी तरह खाँसी, क्रूपकी तरह खाँसी, सवेरे चलनेपर और भोजनके बाद सो जानेपर। रातमें सूखी खाँसी, खुसखुसी खाँसी, स्वर-भङ्गकी तरह खाँसी, ढीली घरघराहटके साथ खाँसी, खाँसी समूचे शरीरको हिला देती है, छोटी सूखी खाँसी। आक्षेपिक खाँसी और वह खाँसी जो आवेगिक रूपसे आती है, सवेरे खूब ज्यादा बलगम निकलता है। बलगम खून-मिला, हरा, पीबकी तरह गाढ़ा, लसदार और पीला होता है।

बगलका फोड़ा। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें घबड़ाहट, टेटुआ तथा श्वासोपनलियोंकी सर्दी। फेफड़ोंमें खून आना, कुचिकित्सित न्युमोनिया या न्युमोनियाका परिणाम। फेफड़ोंकी यकृद्-भाव प्राप्ति (Hepatization), वक्षमें दबाव, वक्षको खाल उधड़ जाना। वक्षमें घावकी तरह यन्त्रणा, खाँसनेपर या श्वास लेनेपर, वक्षमें जलनका दर्द, वक्षमें काटनेकी तरह दर्द। रातमें कलेजा धड़कना, चिन्तित, सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना तथा यक्ष्माकी ओर बढ़नेवाले मनुष्योंके वक्षमें पीब होना, वक्षमें कमजोरी मालूम होना, बाह्य वक्षमें खुजली और जलन पीठमें सर्दीकी अनुभूति। कटि-प्रदेशमें जब मेरुदण्ड टेढ़ा पड़ जाता है, जिससे बैठना मुश्किल हो जाता है। इसकी चिकित्साकी यह बहुत ही उपयोगिनी दवा है।

हाथ-पैरोंके लक्षण गठियाकी धातुको प्रकट करते हैं, सन्धियाँ गठिया-ग्रस्त, गठिया-ग्रस्त अंगुलि-सन्धिके कारण टेढी-मेढी, विक्षत अंगुलियाँ, हाथ-पैर, तलवे आदिमें सर्दी। पैरकी पोटलियोंमें मरोड, उद्भेद, फुन्सियाँ और छाले। हाथोंमें गर्मी, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें भार, ऊरु-सन्धि रोगके बहुत-सी रोगियोंके लिये यह बहुत लाभदायक हुई है। हाथ-पैरोंके चर्ममें खुजली, अकसर खुजली और जलन। हाथ-पैरोंमें जलन, तलहत्थी और तलवेमें जलन। हाथ, निम्न-प्रत्यङ्ग और पैरोंका सुन्नपन। जाडा लगनेके समय हाथ-पैरोंमें दर्द, वातज दर्द, सन्धियोंमें दर्द, गठियासे और वातज। ऊपरी प्रत्यङ्गोंमें रातमें दर्द, कन्धे, कोहनी, कलाई और अंगुलियोंमें दर्द, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें दर्द, गृध्रसी वात, (Scitica), वातज दर्द। कूल्हा, जङ्घा और घुटनेमें दर्द, पैरोंमें जलनका दर्द, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें दर्द, खींचन, सुई गडने और फाडनेकी तरह दर्द। ऊपरी और निम्न-प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात। हाथ-पैरोंमें पसीना, पैरका पसीना ठण्डा और बदबूदार होता है। बाहुओंका कडा पड जाना, पैरोंके फैलानेपर दर्द बढ जाता है। घुटने और पैरोंमें वातज सूजन, पैर और पञ्जोंमें शोथ रोग, सूजन। अंगुलियोंका इस तरह सुन्न पड जाना, मानो सो गयी हो। हाथ तथा निम्न-प्रत्यङ्गोंका कांपना, पैरमें जखम, जलन, खुजलानेवाले चकत्ते, शिरा-स्फीति रोग (Varicose veins), ऊपरी प्रत्यङ्ग—हाथोंकी कमजोरी, निम्न-प्रत्यगोंमें, घुटने, पैर और घुट्ठीमें कमजोरी।

बेचैन नींद, डरावने और घबडाहट-भरे सपने। शामके बाद औंघायी, आधी रातके पहले और ३ बजे सवेरेके बाद नींद नहीं आती, विचारोंके कारण निद्रा न आना। शामको शीतका दौरा होनेवाले बहुतसे पुराने सविराम ज्वरोंको इसने आरोग्य कर दिया है। जाडा पैरसे आरम्भ होता है, हिला देनेवाला जाडा, शामको और रातमें जाडा, शामके ज्वरके साथ जाडा रहता है, जाडा लगने बाद बोखार चढता है, पर बोखारके बाद पसीना नहीं होता है, साथ ही निम्न-प्रत्यङ्गोंमें दर्द रहता है, चलनेपर अच्छा रहता है। तापकी झलक, विलेपी ज्वर (Hectic fever), रातमें पसीना होना, ठण्ड, थोडे परिश्रमसे भी पसीना होने लगता है। पसीना बहुत ज्यादा और खट्टा होता है।

चर्मके भी बहुतसे लक्षण हैं, जैसे कि **सलफर** और **कैल्केरिया**का अध्ययन करनेपर जाने जा सकते हैं। जलन और खुजली, शरीरसे भूसी

निकलना, फटा चर्म। जाडेके दिनोंमें धोनेपर चमडा फट जाता है, खासकर हाथका, जैसा कि इसमें नमकीन रियुम नामक पौधेमें प्राप्त होता है। यकृतके दाग, पोला चर्म और पीली आभा लिये चमडा, यहाँतक कि कामला रोग (Jaundice) का प्रत्यक्ष रोगी, चर्मका सूखापन। उसमें जो उद्भेद होते है, वे फोडे, जलन करनेवाले होते हैं। सूखा या तर अकौता, भैसिया दादकी तरह पीव-भरी फुन्सियाँ, पपडी जमी गोल फुन्सियाँ, खुजलाने और जलन करनेवाले उद्भेद, लक्षण मिलनेपर यह दवा विचर्चिका (Psoriasis) रोग आरोग्य कर देती है। ददोरे, पीव पैदा होनेवाले उद्भेद गुटिकाएँ, आमवात, खाल उधडना और बच्चोंके मलद्वार, पुट्ठे वगैरहकी खाल उधडना (Intertrigo) सुरसुरी। बिछावनमें खुजली, खुजलाहट, जलन, रेंरिआना, बिछावनमें रहनेपर खुजली घट जाती है। स्पर्शकातर चर्म, चर्मपर जखम निकलना, घाव बहुत धीरे-धीरे भरते हैं। अस्वस्थ्य चर्म।- जखमोंसे खून बहता है, जलन होती है, उनपर पपडी जमती है, खरोंट पडती है और गहरे होते हैं।

जखमोंसे खून मिला पीव आता है। बदबूदार, गाढा, पीला, पीव। भगन्दरके जखम। दुष्ट, जल्द न भरनेवाले जखम। कडे जखम। टपका होनेवाले जखम। दर्द-भरे जखम, मसे।

कैम्फर।

(Camphor)

कपूरका बोतल घरमें रहनेपर बहुत हानि पहुँचती है, क्योंकि कैम्फर हमारी अधिकांश औषधियोंका प्रतिविष है। शक्तिकृत रूपमें कैम्फर बहुत-सी बीमारियोंको आरोग्य कर देगा। स्नायविक उत्तेजना मिली बहुत-सी नयी बीमारियोंमें कैम्फर उपयोगी होता है। यहाँतक कि रोगी यदि उन्मादग्रस्त (Frenzy) हो, साथ ही ऐंठन और डकार तथा अन्तमें क्षय भी हो तो भी यह उपयोगी होता है। कैम्फरकी दशा टङ्कार या सर्दीकी होती है, कैम्फरकी उत्तेजनाकी एकदम नयी अवस्थामें, रोगीकी उत्तेजना और उन्मत्तता असीम होती है या उसमें अनुभव शक्तिका क्षय हो जाता है और अचेतना सदा

रहती है। एक ही रोगीमें दो सीमायें दिखायी दे सकती हैं, एक जल्दी पहले और दूसरी अन्तमें। वह मानसिक उत्तेजना और प्रचण्डताकी बढ़ी हुई सीमासे सुस्ती और क्लान्तिकी अवस्थामें पहुँच जा सकता है, जिसमें शरीर नीला हो जाता है और ठण्डा पड़ जाता है, पर इतनेपर भी शरीर खुला ही रखना चाहिये। मानसिक दशामें घबड़ाहट और असीम भय भरा रहता है। मनुष्योंका भय, अद्भुत चीजोंका भय, अंधेरेका भय, अन्धकार, भ्रम-भरे दृश्यसे भरा रहता है। अंधेरेमें वह पलङ्गसे उतर नहीं सकता, प्रत्येक हिलने-डोलनेवाली चीज़ एक भूत है तथा कमरेकी जीवन-रहित चीजें जीवित हो जाती हैं और उसे डराती हैं, उन्मत्तता। इसके साथ ही गुर्दे और मूत्रकी तकलीफें मिली रहती हैं। **कैन्थरिस**की तरह और इस सादृश्यकी वजहसे दोनों ही दवाएँ आपसमें एक दूसरेकी अनुपूरक (Complementary) और शत्रु-भावापन्न (Antidotal) रहते हैं। यदि किसी स्त्रीने अपने भीतर **कैन्थरिस**का विष फैला लिया है तथा उसमें उन्मत्तता और उत्तेजना मौजूद है, तो कैम्फर प्रतिविषकी क्रिया करेगा।

मानसिक लक्षणोंका विवरण भी खूब विचार करने योग्य है। रोगीकी एक ऐसी दशा हो जाती है, जो मानसिक दुर्बलताकी तरह ही होती है और उसका चेहरा ऐसा हो जाता है मानो यह अवस्था धीरे-धीरे आयी है। दिमाग और स्मरण-शक्ति गायब हो जाती है, वह आँखें बन्द कर लेता है, ऐसा दिखायी देता है, मानो सोया है और किसी भी सवालका जवाब नहीं देता। ताप, क्रोध और पागलपनसे सन्निपातग्रस्त रहता है, पलङ्गसे या खिड़कीसे कूद पड़ना चाहता है। चीखता तथा सहायताके लिये बुलाता है, बिछावनपर घबड़ाहटसे छटपटाता है, अकड़न और करीब-करीब बेहोशी, सूतिका ज्वर, मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय तथा यन्त्रोंमें भयङ्कर प्रदाहके आघातमें ये लक्षण कैम्फरका निर्देश करते हैं। घबड़ाहट, धक्का देकर एकाएक आता है। जितना ही प्रचण्ड कष्ट रोगीको होता है, उतनी ही जल्दी वह ठण्डा पड़ता है और जब वह ठण्डा हो जाता है, तो ठण्डा कमरा रहनेपर भी उसे वस्त्र उतार देना पड़ता है। यह बहुत कुछ **सिकेलि**के सदृश है। **सिकेलि**में ठण्डा हो जानेपर रोगी ओढ़ना उतार फेंकना चाहता है तथा ठण्डे कमरेमें रहना चाहता है और उसमें उन्मत्तता भी रहती है, इसलिये ऐसा कुछ नहीं दिखायी देता जिससे **सिकेलि** और कैम्फरसे प्रभेद किया

जाये। पर कैम्फरमें एक दूसरी चीज भी है, जिससे यह प्रभेद किया जा सकता है। ठण्डक, प्रचण्ड उन्माद और ताप बहुतकर सम्मिलित रहते हैं। जब कैम्फरका रोगी ठण्डा होता जाता है, तो उसपर तापकी लहरें आती हैं, छेदने, फाड़ने, जलनेकी तरह दर्दके साथ तापकी झलक मिली रहती है, यह या तो प्रदाहित यन्त्रमें होता है या स्नायुओंमें होता है। रोगीको खिलाना या सुश्रूषा बहुत ही कष्टकर रहती है, न तो कोई मनुष्य न कोई चीज़ इसे ठीक बैठती है। यदि मूत्राशयका प्रदाह हो जाता है, तो तेज़ दर्द और अम्र्यकातरता रहती है तथा कष्टोंके आघातसे मन प्रचण्ड उन्माद-ग्रस्त हो जाता है। इसके बाद सर्दी—शीत आता है और रोगी खुला रहना चाहता है, ठण्डी हवा चाहता है, खिड़कियाँ खुली रखना चाहता है, पर यह सब किये जानेके पहले एक तापकी झलक आती है और इस समय वह ओढ़ना ओढ़ लेना चाहता है चूल्हेकी आँच अपनी ओर चाहता है तथा गर्म लोहा और गर्म बोतलकी इच्छा करता है, पर जब यह अवस्था गुजर जाती है और जब सुश्रूषा करनेवाला गर्म अंगीठी लाता है, तो वह उसे खिड़कियाँ खोल देनेके लिये कहता है और सब चीजें ठण्डी चाहता है। आप तुरन्त देखेंगे, कि ये सब जटिल रोगी हैं, यह वहिरायाम टङ्कार (पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाना—Opisthotonos), टङ्कार (Convulsion), मस्तिष्क, यकृत, मूत्रपिण्ड या मूत्राशयके प्रदाहके कारण होता है, जो कि प्रचण्ड मनो आघात और बहुत सुस्तीके साथ शीत आ जाता है। आप यह उसमें देख पायेंगे, जिसने अपने जीवनके लिये घण्टों जोर लगाया है और जब उत्तेजना चली जाती है, प्रतिक्रिया आती है और यह एक बवण्डरकी तरह होता है, उसने तबतक काम किया है, जबतक क्लान्त न हो गया है, पर अब वह अवसन्न हो पड़ा है, ठण्डा और नीला हो रहा है। यही वह काम है, जब कोई बूढ़ा कैम्फरकी शीशी लिये आती है और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर जाती है, पर शक्तिकृत कैम्फर, कपूरकी बोतलकी अपेक्षा उसे ज्यादा फायदा करेगा। यह उसे तरोताजा करनेवाली नींदमें सुला देगा।

वय सन्धिकालमें जब गर्म कमरेमें तापकी झलक और पसीना होता है, प्रत्यङ्ग और तलपेट बहुत ठण्डे रहते हैं, ओढ़ना उतारनेपर उसे बहुत तकलीफ़ होती है और जब ढँक दी जाती है, तो पसीना होने लगता है उस समय यह बहुत फायदा करती है। सर्दीसे कष्ट होनेपर भी वह अपने प्रत्यङ्गोंको गर्म करनेके लिये ओढ़ना सहन नहीं कर सकती।

माथा दर्दसे भरा रहता है, टपकका दर्द। खींचनकी अनुभूति मानो एक साथ लघुमस्तिष्कसे बाँध दिया गया है। माथेका सम्पूर्ण पिछला भाग और गर्दन हथौड़ीकी चोटकी तरह टपकती है, सामनेकी ओर सर झुकानेपर तकलीफ़ बहुत बढ़ जाती है, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द, सामने कपालका सर-दर्द।

हैजामें यह एक वह रोग है, जो बहुत जल्द रोगीको सुला देता है, हमलोगोंने कैम्फरके विषयमें सुना है। चेहरा ठण्डा, नीला और बिना पसीनेके ही सिकुड़ा रहता है, ऐसे ही रोगीके लिये कैम्फरके विषयमें सोचनेको जरूरत है। आँतोंसे बहुत स्राव (दस्त) नहीं होता, बहुत वमन भी नहीं होता और न बहुत ज्यादा पसीना ही होता है, पर रोगी एकाएक ठण्डा पड़ जाता है, नीला हो जाता है और शीत आ जाता है, मानो वह पक्षाघात-ग्रस्त और बेहोश हो गया हो।

मुँहमें फेन आनेके साथ अकड़न, ओठ नीले, जबड़े अटके, टङ्कार, वमनके साथ चेहरेपर ठण्डा पसीना, चेहरेका विसर्पको तरह दिखाई देना।

बिना प्यासके ही पानी पीनेकी इच्छा होती है। इसमें अदम्य प्यास भी रहती है, कितनी भी मात्रामें पानी पिला दीजिये, रोगी कभी तृप्त न होगा। उसे भरपूर ठण्डा नहीं मिलता, काफी मात्रामें भी नहीं मिलता, पर तुरन्त वमन कर देता है।

पाकाशयका उपदाह प्रत्यक्ष रहता है, सभी चीजोंका वमन हो जाता है। जीभ पीली और ठण्डी रहती है तथा साँस भी ठण्डी रहती है। जो कुछ शरीरसे निकलता है, सभी ठण्डा रहता है। वक्षसे निकलनेवाली हवा मानो भू-गर्भसे आती मालूम होती है। **कार्बो-वेज** और **वेरेट्रम**की तरह। जीभ ठण्डी और काँपती रहती है, हैजामें ऐसी ही अवस्था प्राप्त होती है। सभी ठण्डी अवस्थाओंके भीतर जलन मौजूद रहती है, शरीरका भीतरी भाग मानो जला जाता है अथवा खाल उधड़नेकी तरह भीतरी ज्वालाकी अनुभूति या बिना तापके जलनेकी तरहकी एक अनुभूति रहती है।

पाकाशयका प्रदाह (Gastritis) में इतने जोरका दर्द रहता है, कि चेहरेपर **आर्सेनिक**की भाँति कष्ट दिखाई देती है। उसके पाकाशयमें इतनी यन्त्रणा रहती है, कि उसे मृत्यु ही दिखाई देता है। पाकाशयमें जलन, छेदने, फाड़नेकी तरह दर्द, इसके साथ ही ओकाई और वमन।

पाकाशय और आँतोंमें मरोड़, यह शरीरके अन्य भागोंमें भी फैल जाता है, यहाँतक कि टङ्कार हो जाता है और शरीर पीछेकी ओर अकड़ जाता है (Opisthotonos)। पाकाशय-गह्वरकी यन्त्रणा उसे निराश बना देती है। पाकाशयमें गर्मी, पाकाशयमें ठण्डकका भाव, शूलका दर्द और जलनसे तलपेट भरा रहता है। तलपेटमें ठण्डक अनुभव होना।

हैज़ाकी तरह दस्त, चावलके धोवनकी तरह दस्तके साथ घबड़ाहट, बेचैनी, पेशियोंमें ऐंठन, वक्षमें मरोड़, सुस्ती, बढ़ती हुई सर्दी और नीलापन, खुले रहना चाहता है और शीत आ जाना चाहता है। एशियाटिक हैज़ामें अभी भी पुराना कैम्फर, **कूप्रम, वेरेट्रम** साथ-साथ चलते हैं। कैम्फरमें सुस्ती रहती है, पीलापन रहता है और ठण्डक रहती है और इतनेपर भी वह खुला रहना चाहता है और शरीर ठण्डा और सूखा रहता है।

अन्य दो दवाओंमें जो कुछ हैजामें रहता है, वह सब है, पर **कूप्रम**में इतनी ज्यादा सर्दी नहीं रहती। बहुत ज्यादा मरोड़, बहुत ज्यादा अकड़न होनेकी प्रवणता और इतनी ज्यादा अवसन्नता नहीं रहती, जितना ही ज्यादा मरोड़ रहता है, उतनी ही अधिक **कूप्रम**की जरूरत रहती है। आँतोंसे जितना ही अधिक स्राव होता है और जितना ही ज्यादा वमन और पसीना होता है, उतनी ही अधिक दृष्टि **वेरेट्रम**पर जाती है। ठण्डा और सूखा— कैम्फर। ठण्डा और बहुत ज्यादा स्राव—**वेरेट्रम**।

सर्दी लगनेके बाद काटनेकी तरह दर्द होता है, इसके साथ ही काफीके चूरकी तरह गहरा भूरा मल निकलता है। अकड़न। कितनी ही बार सर्दी और पीलापनके साथ हैजाके रोगोंकी ओकाई आती है। वमनके लिये वह जोर लगाता है और थोड़ा-सा पाखाना होनेके लिये बहुत जोरके मरोड़से छुटकारा पाना चाहता है तथा यहाँ-वहाँ अकड़न हुआ करती है। आँतोंके ये लक्षण धीरे-धीरे यहाँतक बढ़ जाते हैं कि पाखानेके समय जरा भी जोर लगानेकी ताकत नहीं रह जाती, एक पाक्षाघातिक अवस्था आ जाती है। मलान्त्र सिकुड़ी और दर्द-भरी मालूम होती है।

मूत्र यन्त्र तथा कामेन्द्रियमें भी तकलीफ़ रहती है। जलता हुआ पेशाब, मूत्र-कृच्छ्रता, बूँद-बूँद पेशाब होना, बार-बार पेशाब होना, बार-बार पेशाब लगता है, पर कष्टसे होता है। मलान्त्र-जैसी ही मूत्राशयकी अवस्था भी

हो जाती है तथा भयानक कष्टके साथ मूत्र-रोध हो जाता है। रोगी पाखानेकी जगहपर बैठकर पेशाब होनेके लिये जोर लगाता है, पर मूत्राशयकी पाक्षाघातिक अवस्था रहती है। पेशाब लाल, खून-मिला और **कैन्थरिस**की तरह बूंद-बूंद होता है। मूत्राशय-ग्रीवामें अकड़न।

केम्फर कामोत्तेजन असह्य-रूपसे बढ़ा देता है। बड़ी खुराकोंसे कितने ही स्थानपर यह अत्यधिक बढ़ा दिखाई देता है और कितनोंको ही ठीक विपरीत अवस्था हो जाती है। इसकी परीक्षामें कामोत्तेजन और नपुंसकता दोनों ही प्राप्त हुए हैं। एक बार फ्रान्सकी एक स्त्री मुझे दिखाई दी, जिसमें अपने लड़कोंको हमेशा अपने घरमें अपने साथ रखनेकी पागलों-जैसी प्रवृत्ति हो रही थी और वह सोचती थी, कि यदि उन्हें लड़कियोंसे वह अलग रख सकेगी, तो यह काम हो सकता है। उनकी कामेच्छाको नष्ट करनेके लिये वह उनके तकियोंके नीचे कपूरकी थैली रखती थी। वे सभी नपुंसक बना डाले गये, पर कुछ परीक्षकोंमें इसने वर्द्धित कामेच्छा भी प्रकट की है। इसमें यह **कैन्थरिस**की तरह होता है।

केम्फरमें एक प्रकारकी नाककी सर्दी होती है, जिसमें नाकसे तथा वायु-पथोंसे बहुत ज्यादा स्राव होता है। नाकसे श्वासोपनलियांतक, बच्चे तथा वृद्ध पुरुषोंका वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis), वृद्ध भग्न-स्वास्थ्य पुरुषोंको प्रत्येक बार खुली हवा लगनेपर सर्दी लग जाती है और वे ठण्डे तथा सर्दीले हो जाते हैं। वयोवृद्धोंके लिये **ऐण्टिम-क्रूड, ऐमोन-कार्ब** और केम्फर आश्चर्यजनक दवाएँ हैं। सभी सर्दियोंके लग जानेका भय रहता है। वृद्ध मनुष्य जवानोंकी तरह ही सर्दीसे बीमार नहीं पड़ते, वे सुस्त रहते हैं, धसते जाते हैं, छातीमें घरघराहट होती है, घरवाले समझते हैं, कि यह मृत्युकी घरघराहट है, यह बूढ़े दादाकी अन्तिम श्वास है। ये तीनों औषधियां रोगीको ठीक बैठती हैं, वे न्युमोनियाकी बढ़ी हुई दशाकी तरह हैं। **ऐण्टिम-टार्ट, ऐण्टिम-क्रूड, ऐमोनियम-कार्ब** और केम्फर उन रोगियोंको आरोग्य करते हैं, जिनकी गर्म दशा छूट गयी है। केम्फरमें बहुत थोड़ी गर्मी रहती हैं, इसमें गर्मीकी अनुभूति रहती है, पर प्रत्यक्ष गर्म अवस्था नहीं रहती। इसमें बहुत-से ऐसे लक्षण भी हैं, जैसे आपको वृद्ध पुरुषोंमें प्राप्त होंगे।

पेशियोंका हिल उठना, कांपना और फड़कना, कम्पनके साथ आक्षेपिक दशा। जीभका कांपना।

सार्वाङ्गिक धातुगत दशामें तो कैम्फरके रोगीको ठण्ड तथा सर्दीको अत्यधिक स्पर्श-असहनीयता रहती है। नयी प्रादाहिक दशामें वह ठण्डा रहता है और कपड़े उतार फेंकना चाहता है। नयी बीमारियोंमें तेज़ प्यास रहती है, पुरानी बीमारियोंमें प्यास नहीं रहती। ऐसा ही आर्सेनिकमें भी होता है, नयी बीमारीमें रोगीको प्यास रहती है, पुरानीमें प्यास नहीं रहती।

कैम्फरकी नयी बीमारीमें एक जरूरी बात ध्यान देनेकी यह है, कि तापके समय और जब दर्द जारी रहता है, तब वह ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है। ठण्डकसे ही सर्दी जाती है, वह ज्यादा ठण्डक चाहता है।

कैनाबिस इण्डिका।

(Cannabis Indica)

समस्त शरीर और ज्ञानेन्द्रियोंमें एक अद्भुत आनन्दकी अनुभूति रहती है। प्रत्यङ्ग तथा शरीरके अंश बढ़े हुए-से मालूम होते है, प्रत्यङ्गोंपरसे मानो स्वर्गीय-सुखकी लहर चली जाती है। प्रत्यङ्ग काँप उठते हैं, सारे शरीरपर गहरी दुर्बलता छा जाती है, लक्षण निस्पन्द-वायु (बेखुदी—Catalepsy) की तरह होते हैं। स्पर्श-ज्ञान-लोप (Anæsthesia) तथा मांस पैशिक अनुभवका लोप हो जाना। आराम करनेपर शिकायतें घट जाती हैं। प्रफुल्लताके साथ आत्माकी उन्नतावस्था। आश्चर्यजनक धारणाएँ और भ्रान्ति। समय और स्थानका आश्चर्यजनक रूपसे बढ़ा हुआ मालूम होना, वह मानो किसी दूर स्थानमें ले जाया जा रहा है। उसे दो अस्तित्व मालूम होते हैं अथवा दो दशायें अनुभव होती हैं या दो वातावरणमें रहना मालूम होता है मति-भ्रम, असलग्न बातचीत। गम्भीर विषयोंपर हँसता है, हँसता है और रोता है, आक्षेपिक हँसी, परिहास-विद्रूप, कराहता और रोता है। मृत्युका पागलपनका और अन्धेरेका भय, आशङ्का और उदासी। खुली हवामें घूमनेपर मानसिक लक्षण घट जाते हैं। उसकी कमजोरीके साथ एक विपरीत

दृश्य दिखाई देता है, उसकी चेतना चली जाती है और वह गिर पड़ता है। विश्रतासे अन्नतामें बहुत तेज़ीसे चला जाता है, पीछे हट जाता है। विचार और शब्द भूल जाता है। अपना वाक्य समाप्त नहीं कर सकता। एकके ऊपर एक भाव इस तरह आते-जाते हैं, कि गड़बड़ी पैदाकर उसकी विश्र वक्तृताको रोक देते हैं। उसका मन असम्पूर्ण खयालोंसे भरा रहता है और अपनी छायासे। उसके मनमें आश्चर्यजनक सिद्धान्त बना करते हैं। बकवादीपन। किसी विषयपर विश्रता-पूर्वक विचार करनेके लिये वह अपने मनको अधिकारमें नहीं रख सकता। तर्क करनेकी किसी तरहकी भी चेष्टा करनेपर असम्बद्ध विचार और सिद्धान्तोंकी छाया आ पड़ती है। अनुभूतिके सामने दृश्य-पर-दृश्य आते-जाते हैं। आनन्द-पूर्ण मति-भ्रमके समय आवाज़, घण्टेका शब्द और सङ्गीतकी आवाज़ सुनता है।

उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो करोटी (Calvarium) खुलती और बन्द होती है या अपने स्थानपर ही उठती और गिरती है, समस्त माथेमें टपककी तरह दर्द। पश्चात् मस्तकमें टपकके साथ भार। चेतना प्राप्त होनेपर मस्तिष्कमें आघात या नींदसे जागनेपर, कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। शिरकी त्वचामें तनाव, शिरकी त्वचामें स्पर्श सहन न होना। दृष्टिका धुन्धलापन, दृष्टि द्वारा अचिन्तनीय विषय देखना अक्षर सब आपसमें सट जाते हैं। श्रवण-शक्ति बहुत तीव्र हो जाती है, कानमें गानोंकी और भनभनाहटकी आवाज। टपक, चेहरा पीला और धसा हुआ, उन्मत्त दृष्टि, मूर्खों की तरह दृष्टि। रोगियल भाव, व्यञ्जनाहीन दृष्टि, नींदमें दाँत पीसता है। तोतलाना, धातुका स्वाद, पानीकी इच्छा तथा उससे भय।

आध्मानवायु, तना हुआ तलपेट, डकार आनेपर उपशम होता है।

मूत्र-यन्त्रके भी बहुतसे लक्षण हैं, गुर्देका प्रदाह साथ ही जलनका दर्द। गुर्देमें घावकी तरह यन्त्रणा और धीमा-धीमा दर्द। गुर्देमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, बार-बार या लगातार पेशाब होते रहना। पेशाब करनेके समय जलन होती है, पेशाब करनेके पहले, समय और बादमें मूत्राशयमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द इस दवासे सूज़ाकके बहुतसे रोगी आरोग्य किये गये हैं। यह पहली अवस्थामें लाभदायक है और **कैनाबिस सैटाइवा**के लिये आये हुए लक्षण आरोग्य कर देता है। पेशाब होना आरम्भ होनेके लिये बैठकर राह देखनी पड़ती है, पेशाब हो जाने बाद ही पेशाब टपका करता है पेशाबमें बहुत

ज्यादा होता। सुज़ाकमें होनेवाले कष्टकर लिङ्गोच्छ्वास (Chordee) में यह लाभदायक है। सुज़ाकका मवाद पीला आता है।

स्त्री पुरुष दोनोंमें ही कामेच्छा बढ़ी रहती है। दर्द-भरा तथा यान्त्रिक होता है, रजःस्राव बहुत ज्यादा और पतला होता है, दर्द-भरा, प्रसवके दर्दकी तरह आवेगिक दर्द। जरायुकी ऐंठन, गर्भ-स्राव हो जानेकी सम्भावना, सुज़ाकका भय, प्रत्येक दो सप्ताहोंपर ऋतु स्राव होता है।

श्वासरोधके साथ वक्षमें आक्षेपिक चाप।

निद्राके समय कलेजा धड़कना, रातभर श्वास रोधके साथ हृत्पिण्डमें दबावकी तरह दर्द, हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, नाड़ी धीमी या तेज़ और अनियमित, फड़कती हुई, एक स्नायविक नाड़ी।

मासिक रज स्रावके साथ पीठमें दर्द, पृष्ठ-प्रदेशमें दर्द, जिससे तनकर चल नहीं सकता।

कम्पन और झटकेके साथ प्रत्यङ्गोंकी पाचाघातिक दुर्बलता, प्रत्यङ्ग तथा तलवेमें सुन्नपन, तलवेमें कांटा गड़नेकी तरह दर्द। आराम करनेपर तकलीफ़ घटती है और हिलने-डोलनेपर बढ़ती है। चलनेपर निम्न-प्रत्यङ्गोंकी राहसे प्रचण्ड दर्द।

औंघाईसे भरा, पर सो नहीं सकता। नींदमें प्रत्यङ्ग फड़क उठते हैं, मुर्दोंके सपने, भविष्य बतानेवाले सपने, श्वास-रोधक सपने।

चर्ममें कांटा चुभनेकी तरह दर्द। समूचे शरीरमें सुरसुरी और खुजली, चमड़ा शरीरपर कसकर बँधा मालूम होता है, स्पर्श-लोप।

कैनाबिस सैटाइवा।

(Cannabis Sativa)

इस दवासे **कैनाबिस इण्डिका**की समानता एक ध्यान देने योग्य है और इसीने यह विश्वास दिला दिया है, कि ये दोनों अभिन्न हैं। एकका प्रयोग दूसरेके बदलेमें हो जाता है और दूसरेके उत्पन्न किये हुए लक्षण आरोग्य किये जाते हैं। इनके मानसिक तथा मूत्रयन्त्र सम्बन्धी लक्षण बहुत सदृश हैं, खुलने और बन्द होनेकी अनुभूति दोनों दवाओंसे ही आरोग्य की गयी हैं।

चीजें अद्भुत और अवास्तविक दिखाई देती हैं। वह मानो सपनेमें पड़ा-सा मालूम होता है, अपने निजी पहचानके समयमें मतिभ्रम। बोलने और लिखनेमें भूल करता है और जो कहा हुआ सुनता या पढ़ता है, उसे गलत समझता है, कमरेमें आवाज़ दूरसे आती मालूम होती है। जब वह बोलता है, तो उसे ऐसा अनुभव होता है, कि कोई दूसरा भी बोल रहा है। (**एलम**), ऐसा मालूम होता है, मानो उसका ध्यान लोप हो जायगा। दो पहरमें निराश, पर तीसरे पहर प्रफुल्ल, पलङ्गपर जानेसे भय, कण्ठमें हिस्टीरियाकी अनुभूति, पाकाशयमें घबड़ाहट, चित्त-विभ्रम तथा सरमें चक्कर आना।

माथेमें खूनका दौरा हो जाना, मानो यह पाकाशयसे आ गया हो, मस्तक शिखरदेशका खुलना और बन्द होना, यह जागनेपर आरम्भ होता है और दिनभर रहता है और आवाज़से बढ़ जाता है, खोपड़ीकी त्वचापर ठण्डे पानीकी बून्द टपकनेकी अनुभूति, सुरसुरी।

चक्षु-श्वेतपटलका प्रदाह और शिराकी स्फीति (Varicose veins), आँखमें बालू गिर जानेकी अनुभूति।

कानोंमें आवाज़।

नाक बड़ी हो जानेकी अनुभूति होना, नाकसे खून जाना, नाककी जड़में दबाव मालूम होना, नाकका सूखापन, एक गाल लाल, दूसरा पीला, बुरा स्वाद, बोलनेमें तकलीफ़, मुँह और कण्ठ सूखे, मांस खानेकी इच्छा न होना, डकार, तीता, खट्टा, खाली।

मूत्रपिण्डका प्रदाह, मूत्रपिण्डमें जखमकी तरह दर्द, सूज़ाकके साथ लिङ्गाग्र-चर्मका शोथ, सूज़ाकका मवाद गाढ़ा, पीला, पेशाब करनेके समय और बाद मूत्रनलीमें जलन, पेशाबकी धार निकलते रहनेके समय मूत्रनलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। मूत्रनली स्पर्श-असहिष्णु, फूली, कष्टकर लिङ्गोद्रेक, पेशाब होना आरम्भ होने और बन्द होनेके समय जलन, पेशाब न करते रहनेके कालमें भी मूत्रनलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, बहुत कष्टकर और दर्द-भरा मूत्र-स्राव। पेशाब होते रहनेके समय मूत्रनलीके पश्चात् द्वारसे समस्त मूत्रनलीमें दर्द फैल जाता है, मूत्रनली-मुखपर, स्त्रियोंकी पेशाब होनेके बाद दबानेकी तरह दर्द पेशाब करनेकी प्रचण्ड इच्छा, पेशाब करनेकी लगातार और बारम्बार इच्छा, आप-से-आप पेशाब होते रहना, पेशाब होना बन्द होनेपर प्रचण्ड दर्द, खून-मिला पेशाब, पेशाब होना बन्द होनेपर मूत्राशय-ग्रीवाका आक्षेपिक

रूपसे बन्द हो जाना, मूत्रनलीका प्रदाह, स्त्रियोंको पेशाब होनेके समय, जलनके दर्दके साथ मूत्रनली मुखपर बहुत सूजन और प्रदाह।

स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही अतिरिक्त कामोत्तेजन। लिङ्गाग्र-चर्मको बहुत ही शोथज सूजन, स्त्रियोंके लिये बन्ध्यत्व दूर करनेकी इसमें बहुत प्रशंसा है, बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव होता है, छोटी लडकियोंका प्रदरका स्राव (सीपिया) सूजाक। प्रसवके बाद जरायुसे रक्त स्राव, गर्भ-स्रावकी सम्भावना।

वचकी सर्दी। हाँफनीके साथ ब्राङ्काइटिस। दमा, खिडकी खुली ही रहनी चाहिये। हरा लसदार बलगम। नमकीन बलगम, खून-मिले थूकके साथ खाँसी। फुसफुसावरक झिल्ली (Pleura) में सुई गडनेकी तरह दर्द। मूत्राशयकी तकलीफोंके साथ दमा, कलेजा धडकना।

गुदास्थिमें ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो नोकदार चीज़ घुस रही है। गुल्फ-देशीय कण्डरा (Tendon-Achillis) में खींचनका दर्द। पसीना होनेके समय समूचे शरीरकी त्वचामें सुई गडनेकी तरह दर्द। अगुलीकी नोकमें सुन्नपन।

कैन्थरिस।

(Cantharis)

इस दवाका सबसे आवश्यक रूप है इसकी प्रादाहिक अवस्था और प्रदाहका सबसे जरूरी चरित्रगत लक्षण इसकी वह तेजी है, जिससे यह सडनवाली दशामें आ पहुँचता है। यह प्रादाहिक अवस्था मामूली तौरसे कई दिनोतक निश्चित पथपर बढती जाती है, पर जब यह दवा किसी जगहपर रख दी जाती है या भीतरी सेवन की जाती है, तो बहुत तेजीसे उस स्थानकी प्रादाहिक अवस्था बदल जाती है। भीतरी सेवन करनेके साथ ही यह तुरन्त मूत्र-पथपर आक्रमण करती है तथा तुरन्त मूत्राशय विकारकी दशा उत्पन्न कर देती है और मानसिक लक्षण उत्पन्न कर देती है। स्थानिक प्रादाहिक दशा बडी तेजीसे आ जाती है और इससे रोगी बडी ही तेजीसे प्रचण्ड रूपसे बीमार हो जाता है। जहरीले प्रभावोंमें, इसकी कडी खुराकोंसे

इसमें भयङ्कर और डरावने लक्षण दिखाई देते हैं। समूचा शरीर-विधान विशृङ्खलित रहता है, मूत्रनली-पथका जटिल लक्षण साधारणत' प्रकट हो जाता है। आरम्भिक दशामें वह अंश पचनशील हो जाता है।

मानसिक लक्षण बहुत आश्चर्यजनक होते हैं, इन लक्षणोंमें परिचालक लक्षण है—चेहरा लाल रहनेके साथ चेतनाका **एकाएक** क्षय हो जाना। एकाएक बेहोश हो जाता है। मनका विभ्रम, अद्भुत विचारोंमें भरा, विचार एकदम विशृङ्खलित हो जाते हैं और जिधर चाहते उधर चले जाते हैं, मानो वे किसी बाहरी प्रभावमें हों।

माथा गर्म, उन्मत्त, प्रलाप ग्रस्त। **अत्यधिक उत्तेजना और क्रोधके साथ,** चकाचौंध लानेवाली या चमकीली चीजोंसे आवेश नये सिरेसे उत्पन्न हो जाता है अथवा स्वर-यन्त्रको छूने या जलातङ्क रोगकी तरह पानी पीनेकी चेष्टा करनेपर आवेश बढ़ जाता है। भय और विचारोंकी विशृङ्खलता। मन अकसर उन विषयोंकी ओर दौड़ जाता है, जो प्रादाहिक अवस्था समर्थन करते हैं। मूत्राशय और जननेन्द्रिय प्रादाहित रहते हैं और उस अंशका रक्त-सञ्चय और उत्तेजना अकसर काम-वासना जागरित कर देते हैं, जिससे कि कामुक-विचार और कामुक-उन्मत्तता उत्पन्न हो जाती है। प्रचण्ड कामुक उत्तेजना। प्रदाहके साथ रहनेवाली एक वैसी उत्तेजना, जो उसीके सदृश विचारोंसे सम्मिलित रहती है। कामेच्छा, पागलोंकी तरह हो जाती है। पुरुषोंका लिङ्गोच्छ्वास दर्द-भरा और प्रचण्ड रहता है। लिङ्गेन्द्रिय प्रादाहिक और जखम-भरी रहती है, सङ्गमके समय दर्द होता है, तथापि कामोन्माद प्रचण्ड रहता है। प्रगल्भता। अपवित्र भाषा। बेचैनी जिसके अन्तमें क्रोध होता है, बेचैनी उसे बराबर हिलाया-डोलाया करती है, कामोन्मत्तताके साथ क्रोध और प्रलाप सम्मिलित रहता है। **कैन्थरिस**का इस तरहका मानसिक चरित्र **हायोसायमस, फास्फोरस** और **सिकैलि**के सदृश रहता है। एक प्रचण्ड सान्निपातिक अवस्था, जिसके साथ काम-सम्बन्धी विचार और बातचीत सम्मिलित रहती है। किसी-किसी समय तो वह प्रलापावस्थामें अश्लील गाने गाता है और मानव-जननेन्द्रिय, पेशाब और मलके सम्बन्धमें बड़बड़ाता है। उस विषयकी एक वहशत-भरी बकवाद, जिसपर जबतक स्वास्थ्य नष्ट नहीं हो जाता, तबतक कोई बात नहीं करता,

पर रोगमें, पवित्र, संयमशील मनुष्य, कुमारियाँ ऐसी बातें बोलती हैं, कि सुनकर आश्चर्य होता है, कि यह भाषा उन्होंने कहाँसे सीखी। ऐसे रोगी रहनेपर सुश्रूषा करनेवाली तथा चिकित्सकके अलावा सबको उस कमरेसे निकाल देना चाहिये।, मैंने एक प्रेममयी माताको रोते और हाथ मल-मलकर कहते सुना है,—"हां! मेरी पुत्रीने यह भाषा कहाँसे सीखी?" पर पुत्रीको दोष देना वृथा है। यह तो मूत्र पथ या मासिक रज-स्रावकी एक क्रिया है, जो सर्दी या खुली हवा लग जानेके कारण उत्पन्न हो जाती है तथा माताकी अपनी कन्याको रज-स्रावकी क्रियाको समझा देनेकी गफलतके कारण उत्पन्न हो जाती है और इसमें किस तरहका डिम्बाशय और जरायुका या बाह्य भागका प्रदाह रहता है और पेशाबमें जलन होती है और बाहरी अङ्गोंकी प्रादाहिक अवस्था उत्पन्न कर देती है अथवा पेशाब रुक जाता है और उन्मत्तता पैदा हो जाती है। कैन्थरिस ऐसा ही है।

फाड़ने, छेदनेकी तरह, नश्तर देनेकी तरह प्रचण्ड सर-दर्द, मानो छुरी मारी जा रही है। एक प्रादाहिक अवस्था, जो बहुत प्रचण्डतासे मनपर अधिकार जमा लेती है।

इस दवामें सर्वत्र ही **जलन** है। माथेमें जलन, टपक और छुरी मारनेकी तरह दर्द। चेतना-रहित तथा मानसिक दशामें प्रलाप। सरके पार्श्वदेशमें जलन। माथेके पिछले भागमें तथा सरके बगलके भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, मस्तिष्कमें खूब भीतरकी ओर नश्तर देनेकी तरह दर्द। केश झड़ जाते हैं।

सिर्फ आँखकी बीमारियोंमें इसका बहुत कम व्यवहार होता है, सिवा इसके कि जो सर और मनके लक्षणोंके साथ उत्पन्न होती हैं। बड़े-बड़े छालोंके साथ मुखमण्डलका विसर्प। ओठोंमें जलन और समस्त वायु-मण्डल **पीला-पीला** ही दिखाई देता है। आँखोंमें जलन और यन्त्रणा। आँखका विसर्प, जिसकी सड़नेकी प्रवृत्ति रहती है। आँख गर्म गर्म झुलसानेवाले आँसू। चेहरेका विसर्प, नाकको पीठका, जो पलकोंतक प्रभाव फैला देता है। इस अवस्थामें **रसटक्स**का विशेष व्यवहार होता है, पर यदि यह बहुत ही प्रचण्ड हो, तो कैन्थरिस अकसर अधिक निर्देशित तथा **रसटक्स**से ज्यादा उपयोगी भी होगा। **रसटक्स**में जलन और छाले होते हैं पर कैन्थरिसमें आपके दो बार देखनेको आनेके बीचमें ही विसर्प **काला** हो जायगा, धुमैला

हो जायगा, एक बहुत तीव्र परिवर्त्तन हो जायगा और ऐसा मालूम होगा, कि सड़न आरम्भ हो गयी है। विसर्पके स्थानपर तथा उसके चारों ओरके चमड़ेमें जलन होती है, छूनेसे भी जलन होती है, पर रसटक्समें ऐसा नहीं होता। कैन्थरिसमें यदि छोटे-छोटे छाले भी छू दिये जाते हैं, तो वे आगकी तरह जलने लगते हैं। छूनेपर उद्भेदोंमें जलन होना, चाहे कितना भी हलके भावसे छुआ जाये अर्थात वैसे ही उद्भेद, जैसे कि दवा उत्पन्न कर सकती है।

रोगी एक अवसन्न अवस्थामें प्रवेश करता है, पीला हुआ रहता है, मुर्देकी तरह चेहरा हो जाता है और मर जाता है। यह निम्न-श्रेणीकी बीमारियाँ, यहाँतक कि सड़न रोग और आँतोंका भयङ्कर प्रदाह, मूत्राशय, मस्तिष्क, मेरुदण्ड और फेफड़ोंमें प्रदाहकी समता आती है। धँसा हुआ और मुर्देकी तरह चेहरा। फेफड़ोंका प्रदाह, सड़नेवाले ढङ्गका, अवसन्नता और जिस फेफड़ेमें बीमारी रहती है, वह आगकी तरह जलता है और तुरन्त ही उससे मुर्दे-जैसी गन्ध-भरा बलगम आने लगता है। पतला, खून-मिला, पानीकी तरह बलगम। यह बीमारी एक अद्भुत तेजीसे आ पहुँची है और थोड़ी ही देरमें वह मर जायगा। नाक सिकुड़ी रहती है, चेहरा मुर्देकी तरह रहता है और पेशाब रुका रहता है। मुझे एक रोगी याद है, जो बहुत देरतक शराब पीकर निकला था। जैसी अवस्था मैंने ऊपर बतायी है, उसी अवस्थामें शामको उस रोगीको मैंने छोड़ा था। उसके मुँहसे खून-मिली लार चू रही थी और वह मर रहा था। एक ही रातमें ही उसकी वह अवस्था हो गयी थी और शराब पीनेके समय वह करीब-करीब जम गया था। यह सवेरेके पहले या तो कैन्थरिस या मृत्यु थी, पर सवेरेतक उसे जङ्गकी तरह बलगम आने लगा और वह जल्दी ही आरोग्य हो गया। आर्सेनिकमें फेफड़ेमें जलन होती है और उसमें काला बलगम आता है। बेचैनी और घबड़ाहटके साथ न्युमोनियाके चिह्न मौजूद रहते हैं तथा आर्सेनिकके दूसरे लक्षण भी पाये जाते हैं, आर्सेनिक उसे तुरन्त आरोग्य कर देगा। इन प्रचण्ड दवाओंकी उन रोगियोंके लिये जरूरत रहती है, जो तुरन्त मरनेवाले रहते हैं।

कण्ठमें जलन, तेज़ प्यास, साथ ही कण्ठ और पाकाशयमें जलन। सब तरहके तरलोंसे अनिच्छा रहनेके साथ प्यास अर्थात् मुँह और कण्ठकी

लालसा मानसिक अवस्थाके विपरीत रहतो है। कण्ठमें पानी पीनेकी इच्छा, पर मनमें अनिच्छा, पाकाशय, पाइलोरस (पाकाशयका नीचेकी ओरका मुँह, अन्न-द्वारी) तथा तलपेटमें प्रचण्ड जलन। तलपेट फूला और ढवढवाया रहता है, नश्तर देनेकी तरह, काटने और छुरी घुसानेके जैसा दर्द। जहाँ कहीं आँतोंकी तेजोसे होनेवाला प्रदाह रहता है, वहीं खून-मिले श्लेष्माका या रक्ताम्बु (Serum), पानोकी तरह, खून-मिले दस्त आँतों और पाकाशयसे आते हैं। इसी तरह पानी-जैसा खून-मिला स्राव आँखसे भी होता है और जहाँ कहीं यह पानीकी तरह तरल चमड़ेसे लगता है, वहीं जलन होती है और खाल उधड़ जाती है। खून-मिला पेशाब।

पेशाब करनेके समय ही पाखाना लग आना। रोगी पाखानेमें जाकर बैठ जायगा, मल-मूत्रका भयानक वेग होगा, सोचेगा कई बूंद पेशाब या और कुछ ज्यादा खून-मिला दस्त हो जाये, तो आराम मिले, पर उसे आराम नहीं मिलता। सभी अंग प्रदाहित और आगपर रखे-से मालूम होते हैं। मूत्राशय खाली रहनेपर ही कूथन और वेग नहीं होता, पर अकसर मूत्राशय भरा रहनेपर होता है। पेशाबका रुकना। कुछ भी पेशाब नहीं होता अथवा एक या दो बूंद चू पड़ता है। मूत्राशयमें भयानक वेग। वेगके साथ काटनेकी तरह दर्द, नश्तर देने, छुरीसे काटनेकी तरह मूत्राशय ग्रीवामें दर्द, भिन्न-भिन्न दिशाओंकी ओर दर्द छिटकता है। बार-बार पेशाब लगनेके साथ भयानक दर्द, लगातार कूथन। एक चिन्ताकी अवस्था और उन्मत्तता आ जाती है, बहुत प्रचण्ड बीमारी और रोगीको कामोत्तेजन अर्थात बहुत अधिक लिङ्गमें कड़ापन आनेके साथ मल-मूत्रका वेग होता है। समस्त मूत्र-यन्त्र तथा लिङ्गेन्द्रिय प्रदाह और सड़नकी अवस्थामें रहती है। पेशाब करनेके समय जलन, मूत्राशयमें तथा जननेन्द्रियके पास खूनका पेशाब आगकी तरह जलता है। पेशाबका रुकना या बन्द हो जाना, ऐसा बहुत कम होता है कि किसी सूजाकके रोगीको इस तरह मूत्राशय और मूत्रनालीमें कूथन और जलनके साथ इस तरहका प्रदाह है, पर यदि ऐसा रोगी हो तो यही दवा निर्देशित होती है। इस दवाका स्वरूप है तेजी और जल्दी, यह ऐसा दर्द और उत्तेजना उत्पन्न करती है, जैसी कि किसी दूसरी दवामें नहीं है। इसके बाद ही आता है, मर्क्युरियस कोरोसाइवस।

स्त्रियोंके सभी अंगोंमें अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णुता रहती है। डिम्बाशय और गर्भाशयका प्रदाह। योनिमें दर्द, झिल्लीमय कष्टरज:। मासिक ऋतु-स्राव बहुत जल्दी, बहुत गाढ़ा और काला।

सूतिकाक्षेप (सूतिका-गृहमें होनेवाली) अकड़न। फूलका भीतर रुक जाना, जलनका दर्द। जब परिस्रवका बाहर निकालनेवाला दर्द नहीं रहता तथा इसके साथ ही इसके सब लक्षण रहते हैं, तो इसका प्रयोग होनेके बाद, गर्भाशयका स्वाभाविक सङ्कोचन आरम्भ होता और झिल्लीको निकाल देता है।

प्रचण्ड छेद करनेकी तरह दर्द, यह मूत्रपिण्ड और पीठकी राहसे होता है। कमर, गुर्दा और तलपेटमें दर्द। पेशाब करनेके समय दर्द, जिससे वह एक बून्द पेशाब निकलनेपर भी बहुत कराहता और चीखता है।

कैप्सिकम।

(Capsicum)

मौसमके अनुसार बहुत-सी चीजें जो खाने-पीनेके काममें आती हैं, वे एक या दो वंशके भीतर ही फायदेमन्द दवाएँ हो जायँगी, क्योंकि लोग चाय, काफी, लाल मिर्च प्रभृति पदार्थों का ज़हर अपनेमें फैला लेते हैं और पिता-मातामें इन जहरीले प्रभावोंका रहना ही रोगका पूर्व कारण है, जो इन पदार्थों से उत्पन्न रोगोंके ही सदृश है।

बियर नामक शराब पीनेवाले और लाल मिर्चा खानेवालेके लाल मुँहके मोटे, थुलथुले बच्चे, जिनमें प्रतिक्रिया थोड़ी रहती है, उनकी शिथिल और थुलथुली धातु रहती है और चेहरा लाल तथा शिरास्फीतिकी अवस्था रहती है और जिन्हें बहुत ज्यादा बलकारक दवा खिलायी गयी है, अत्यधिक बलकारक औषधि खानेवालोंके बच्चे, इनमें कैप्सिकमके प्रयोगका क्षेत्र अकसर दिखायी देता है। उन धातुवालोंमें जिनका चेहरा गुलाबी रहता है, पर वह ठण्डा

रहता है, न कि गर्म और अच्छी तरह जँचायी करनेपर चेहरा महीन-महीन केशिकाओंसे भरा दिखायी देता है। फूले-फाले—गोल-गाल, सहन करनेकी शक्ति नहीं, **कैल्केरिया**की भाँति झूठी रक्तपूर्ण अवस्था। नाकका आखिरी हिस्सा लाल रहता है, गाल लाल रहते हैं, गालोंपर लाली, लाल आँखें, सहजमें ही शिथिल हो जानेवाले मनुष्य। यह प्रकृति रोगके बाद बहुत धीमी गतिसे प्रतिक्रिया करती है तथा दवाओंका असर नहीं मानती, एक ढीली-ढाली दशा, एक क्लान्त, आलसी धातु पदार्थ। पाठशालामें जानेवाली लड़कियाँ, जो अध्ययन या काम नहीं कर सकतीं, जिन्हें घर जानेकी बीमारी होती है और घर जाना चाहती है। वातज धातु प्रकृतिमें, सन्धियोंमें कड़कड़ाहट तथा सन्धियोंमें गठियाकी तली-सञ्चय, जोड़ कड़े, अकड़े, कमजोर, जल्द ही अपनी जगहसे खिसक जाते हैं, सम्पूर्ण शरीर-विधानकी शिथिलता रहती है, ये सर्दीले रोगी होते हैं और उन्हें हवा सहन नहीं होती और गर्म कमरेमें रहना चाहते हैं। साधारण मौसममें भी खुली हवा सर्दी पैदा कर देती है। उन्हें सर्दी और नहाना सहन नहीं होता।

घर जानेकी इच्छा (Home sickness) के सिवा मानसिक अवस्थाके सम्बन्धमें और कोई भी बात विशेष अद्भुत नहीं मिलती। गृह कातरता इस दवामें सर्वत्र दिखायी देती है और इसके साथ ही रहते हैं गाल लाल और नींद न आना, गलगह्वरमें गर्मी मालूम होना, भय। उन्हें धारणाओंकी अत्यधिक अनुभूति होती है, बराबर अपराध या असावधानता खोजा करते है, हमेशा सन्देही बने रहते है और अपमानकी ओर देखा करते हैं। असीम जिद्दी रहती है, यह एक मूर्खता है। यदि वह कोई चीज चाहती है और कोई दूसरा उसे देता है, तो वह बाधा प्रदान करती है। भावोद्रेकके बाद गाल लाल हो जाते हैं, पर गाल लाल रहनेपर भी गर्मीका अभाव ही रहता है, यहाँतक कि तापमान बढ़ा रहनेपर भी यही अवस्था रहती है या एक गाल लाल और दूसरा पीला रहता है या गाल पर्यायक्रमसे लाल और पीले होते हैं। लड़के चिढ़ते और बेढंगे रहते हैं।

कैप्सिकमके मनमें करीब-करीब लगातार आत्मघात करनेके विचार उत्पन्न हुआ करते हैं। वह अपनी हत्या नहीं करना चाहता, वह उन विचारोंको बाधा देता है, पर फिर भी वे आते हैं और वह इन विचारोंके कारण कष्टित

हो पड़ते हैं, बहुत-सी दवाओंमें लगातार विचार आनेका लक्षण है और यह आवश्यक है, कि भावोद्रेक और वासनाओंका प्रभेद किया जाये, यदि रोगी आत्मघात करनेके लिये रस्सी या छुरी चाहता है, तो यह आत्मघातके भावोद्रेकसे बिलकुल ही भिन्न है। भावोद्रेक तो कभी-कभी छा जाता है तथा मनकी समता नष्ट कर देता है और वह आत्महत्या कर लेता है, आपको हमेशा रोगीसे यह पता लगाना चाहिये, कि क्या वह अपने जीवनसे घृणा करता है और मर जाना चाहता है अथवा उसमें भावोद्रेक होता है, जिसे वह हटाये रखना चाहता है। कुछ मनुष्य रातभर जागते पड़े रहते हैं और मृत्युकी कामना किया करते हैं, पर इसका कोई कारण नहीं रहता। यह तो इच्छाकी एक दशा है, इच्छाका उन्माद। दूसरे रोगीमें खयाल मनमें कूद आता है, वह उसे हटा नहीं सकता और ये विचार कष्टदायक होते हैं। दोके भीतर प्रभेद करनेपर दवाका प्रभेद व्यापक स्वरूप प्राप्त होता है। वासना इच्छा शक्तिसे आती है, भावोद्रेक विचारमें आते हैं।

सर-दर्द इस ढङ्गका होता है मानो खाँसने या चलनेके समय सर हिलानेपर खोपड़ी फट जायगी। ऐसा मालूम होता है, मानो सर टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे। रोगी हाथसे माथा पकड़ लेता है, ऐसा मालूम होता है, मानो माथा बड़ा हो गया है, खाँसने और सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ता है और सर ऊँचा रखकर लेटनेपर घटता है। फाड़ डालनेकी तरह दर्द और टपक, धमकके साथ कपाल और कनपटीमें सर-दर्द। सर-दर्दमें ऐसा मालूम होता है, मानो ललाटकी राहसे मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा। झुकनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क बाहर निकल आयगा तथा लाल आँखें झुकनेपर बाहर निकल पड़ेंगी।

ज्ञानेन्द्रियाँ विशृङ्खलित रहती हैं और अति तीव्र हो जाती हैं, शब्द, गन्ध, स्वाद, स्पर्श, भावना और अपमानोंकी अतिरिक्त अनुभूति होती है, रोगी उत्तेजित रहता है।

कानमें दर्द, लगातार बना रहनेवाला दर्द, टनक, खाँसीके साथ दबावकी तरह दर्द, मानो कोई फोड़ा फट जायगा। अन्तः-कर्ण और चुचुकाकार प्रवर्द्धन (Mastoid process) तथा भीतरी कानकी हड्डियोंपर इसकी अद्भुत क्रिया होती है, कानके चारों तरफ और नीचे फोड़े तथा हड्डियोंके जखम, शङ्खास्थि (Temporal bone) का पत्थरकी तरह कड़े अंशमें अस्थि-

घत हो जाता है, चुचुकास्थिके फोड़ेमें तो इस दवाका बहुत ज्यादा व्यवहार हुआ करता है।

पुरानी नाककी सर्दी, रोगीको नाक और कण्ठमें सर्दी लग जाती है और इसके बाद श्लेष्मा जमने लगता है। बहुत बार मूर्ख रोगियोंसे लक्षण प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है और आपको जो कुछ दीखता है, उसीपर निर्भर करना पड़ता है अर्थात् स्रावकी प्रकृति तथा कुछ दूसरी चीजें देखनेको मिलती हैं और आप देखेंगे कि इससे कुछ रोगी आरोग्य किये जायँगे तथा सभी अन्य लक्षण छोड़ जायँगे, पर कुछ पुरानी सर्दीके रोगोंमें खूब सावधानीसे चुनी दवा देनेपर भी कुछ भी प्रतिक्रिया होती नहीं दिखाई देती और एकाएक चिकित्सकके ध्यानमें आता है, कि रोगीका चेहरा लाल हो रहा है और यह सर्दी है तथा नाकका आखिरी हिस्सा लाल और ठण्डा है तथा रोगी मोटा-ताजा और थुलथुला है और इतनेपर भी उसमें बहुत सहनशीलता नहीं है, पाठशालामें कभी कुछ सीख नहीं सकी है और यदि वह परिश्रम करती है, तो उसे पसीना होने लगता है तथा ठण्डी हवामें ठिठुर जाती है। अब उसे रोगीका गुप्त भेद मिल जाता है और इसी रहस्यका सहारा लेकर वह रोगीकी परीक्षा करता है अर्थात दवासे। यह एक बुरी चिकित्सा-प्रणाली है और इससे बदमाश तथा जड़ रोगीके सिवा और किसीको आराम नहीं किया गया। जब वह उस रोगिनीको कैल्किम देता है, यह उसे जागरित कर देता है, यह आरोग्य नहीं भी कर सकता है, पर इसके बाद **साइलिसिया** या **कैलि-बाइक्रोम** या शायद पहले दी हुई कोई दवा, जिसने कुछ क्रिया न दिखाई थी रोगको पकड़ लेती और आरोग्य कर देती है।

पाठ्य ग्रन्थमें लिखा है—"नाक लाल और गर्म", समूचे शरीरका चर्म लाल और जलता हुआ रहता है, केशिकाओंका रक्त-सञ्चय (Capillary congestion), गाल लाल और गर्म रहते हैं और यह पर्यायक्रमसे पीला होता है। चेहरेपर लाल धब्बे, बाहरी स्पर्श, हड्डीके दर्दकी तरह चेहरेमें दर्द, छूनेपर दर्द बढ़ जाता है। गण्डास्थिके दोनों प्रवर्द्धनों (Zygoma) में दर्द या गण्डास्थिके दोनों प्रवर्द्धन अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं। चुचुकास्थि (Mastoid) पर दबाव सहन नहीं होता। चुचुकास्थि-प्रदेशमें सूजन।

सड़े पानीकी तरह मुँहका बुरा स्वाद। खाँसनेके समय फेफड़ेसे जो हवा निकलती है, मुँहमें एक तेज़ बदबू पैदा कर देती है। **कण्ठसे एक**

गर्म तेज़ हवा आती है, जिससे खाँसनेके समय मुँहका स्वाद बिगड़ जाता है।

जीभ और ओंठपर, चिपटे, स्पर्श सहन न होनेवाले तथा चर्बी-भरी तलीके फैलनेवाले जखम हो जाते हैं। ओंठ तथा शरीरकी विभिन्न भागोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीको यदि चुटकीसे दबाया जाता है, तो वह उठी रह जाती है, जिससे प्रकट होता है, कि रक्तका दौरान धीमा है। कैप्सिकमका ऐसा ही थुलथुलापन है, इसमें दबानेपर झुर्री पड़ जाती है, यह कमजोर खूनका दौरान है। जिस अंशको आप छूते हैं, वह ढीला, थुलथुला, लाल, चिपटा और ठण्डा रहता है। यदि किसी बच्चेको छोटी माता हुई हो तो जबतक उसे कैप्सिकम न दिया जायगा, उसमें प्रतिक्रिया न होगी। चर्म तर और ठण्डा रहता है तथा केशिकाओंके रक्त-सञ्चयके कारण चर्मकी खूब सूक्ष्म एक खसड़ेवाली अवस्था रहती है, यदि बच्चा बड़ा हो गया है, तो वह सर्दी मालूम होनेकी शिकायत करेगा। उद्भेदवाली बीमारियोंके बाद, आँतोंकी बीमारियोंके बाद, ग्रन्थिकी बीमारियोंके बाद प्रतिक्रिया धीमी रहती है। बच्चा मोटा-ताज़ा और थुलथुला था, पर अब उसपर मास नहीं चढ़ता।

उसके कण्ठ और नाकमें सर्दी लग जाती है और कण्ठ ऐसा मालूम होता है, कि उससे खून बहने लगेगा, यह इतना ही लाल रहता है, एक महीन दानोंकी तरह दृश्य—यह फूला बदरङ्ग रहता है, बैंगनी, चितकबरा, थुलथुला और देखनेमें सञ्जकी तरह रहता है, गहरा लाल। गलकोपमें जखमकी तरह यन्त्रणा, इसके साथ ही जखम। उपजिह्वा बढ़ी, कण्ठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, तालुमूल बढ़ा, प्रादाहिक, बढ़ा और सञ्जकी तरह, एक बार सर्दी लगनेपर बहुत दिनोंतक कण्ठ घाव-पूर्ण रहता है या गल-क्षत (Sore-throat) हो जानेके बाद बहुत दिनोंतक कण्ठमें दर्द होता रहता है, कण्ठमें जलन, दबावकी तरह दर्द, कण्ठ गहरा लाल रहता है, शिथिल गल क्षत (Relaxed sore-throat), निगलनेमें दर्द, निगरण-कृच्छ्रता (निगलनेमें तकलीफ़)। फ़्लोसिक कण्ठकी क्रिया शिथिल रहती है, एक क्रियाहीन अवस्था, बहुत खराब भी नहीं हो जाया करता, पर अच्छा भी नहीं होता, प्रतिक्रियाका एक अभाव बना रहता है।

जाड़ा लगना आरम्भ होनेके समय प्यास रहती है। रक्तामाशयके प्रत्येक दस्तके बाद प्यास, बरफ जैसे ठण्डे पानीकी लालसा एकाएक पैदा हो जाती

है, जिससे सर्दी मालूम होने लगती है। जाड़ा आरम्भ होनेके पहले ही पानी पीनेकी इच्छा होगा और जब रोगी पानी पी लेता है, तो बहुत जल्द शीतका दौरा हो जाता है, पाकाशयमें ठण्ढक मालूम होती है। उसे कुछ गर्म चीजकी इच्छा होती है, कुछ ताकत लानेवाली चीज़, तेज़ चीजोंकी इच्छा करता है, यह ह्विस्की नामक शराब पीनेवालोंमें दिखाई देता है, वे लाल मिर्च खाना चाहते हैं और दूसरी ओर यह मिर्चा ह्विस्की पीनेकी लालसा पैदा कर देता है, ये विस्तार फैलाने योग्य स्फूर्तिदायक, कुछ स्फूर्तिदायक पदार्थकी इच्छा करते हैं, सहारा खोजते हैं। सुरा-तृष्णा—शराब पीनेकी अदम्य इच्छा (Dipsomania)।

अब ज़रा आर्सेनिकमें मुझे एक सकेत बताने दीजिये। सुरा तृष्णा (Dipsomania) में पापी जो दिनभर बहुत सी शराब पीते रहे हैं, कभी-कभी इस दशामें जा पहुँचते हैं, जिसमें उन्हें रातमें जागकर शराब पीनी ही पड़ती है, नहीं तो वे सवेरे उठने लायक नहीं रह जाते। सवेरे पहले ही तीन या चार पात्र छट जायेंगे, पर इसके बादवाला बना रहेगा, उन्हें तबतक पीते रहना पड़ेगा जबतक कि एक जम नहीं जमाता। वे उसी दशामें जा पहुँचते हैं, जिसमें उन्हें पीना जारी रखना ही पड़ता है। यदि वे बहुत देरतक सोते हैं, तो पहलेके कई बारका पान ही खा जायेगा और इसीलिये उन्हें रातमें जरूर ही उठना पड़ता है, नहीं तो ह्विस्कीका नशा सवेरेतक नहीं रहेगा जबतक कि वे कई बार पी ले गे। ऐसा आप उन वकीलोंमें देखेंगे जो बहुत कुछ काम स्फूर्तिदायकोंके बलपर करते हैं, नक्स-वोमिका, आर्सेनिक और कैप्सिकम उनके लिये कुछ करेगा, यदि आपसे सहयोग करेंगे। मैंने ऐसे एक पियक्कड़को जो बराबर शैम्पेन नामक शराब पिया करता था, कहते सुना है, कि वह इसे छोड़ देगा। वह भुन-भुनाया करता था—"मैं नहीं समझता कि यह पीने योग्य है," पर पहले यदि उसे शैम्पेन नहीं मिलती थी तो जीवनको ही रखने योग्य न समझता था। यदि ये मनुष्य लाभ उठाना चाहते हैं, तो उन्हें अवश्य ही सहयोग करना होगा।

रक्तामाशय। पाखाना हो जानेके बाद मरोड़ और प्यास और पीनेपर उसे थथरी पैदा हो जाती है। मलद्वार और मलनालीमें यन्त्रणा और जलन। मलान्त्र और मूत्राशयमें एक ही समय प्रचण्ड मरोड़का दर्द, बवासीरके मसे,

हम देखते हैं, कि इस रोगीका समस्त स्वास्थ्य-विधान शिथिल अवस्थामें हो रहा है, जल्दी-जल्दी परिवर्त्तन नहीं होता, परन्तु सभी चीजें धीमी पड गयी हैं, यहाँतक कि प्रादाहिक प्रणाली भी धीमी हो रही है। बहुत बार तो यह अर्द्ध-विसर्प प्रदाह (Quasi erysipelatous) रूपमें आता है। यह रोगवाली जगह नीली पड जाती है और दबानेपर वहाँ गड्हा पडता है। जरा सोचिये, **बेलेडोना**से इसका कितना गुण-वैषम्य है। **बेलेडोना** समस्त ग्रन्थियोंको प्रदाह-ग्रस्त बना देता है, वे फूलती हैं, गर्म रहती हैं तथा इतनी स्पर्श-असहिष्णु रहती हैं, कि उनका छूना मुश्किल हो जाता है। पहले ये चमकीली लाल रहती हैं, फिर बैंगनी हो जाती हैं और उनकी यह प्रवृत्ति रहती है, कि यदि यों ही छोड दिया जाये, तो उनमें विघटन आरम्भ हो जाता है। पर कार्बो ऐनिमेलिसका प्रदाह धीरे-धीरे आता है, इसकी गति धीमी रहती है और इसके पुनर्निर्माणकी प्रबलता नहीं रहती, शरीरपर इधर-उधर शिराओंकी विवृद्धि रहती है, शिरा-स्फीति रोग (Varicose veins)। प्रादाहिक स्थानमें जो कडा और बैंगनी रहता है, बहुत अधिक जलन रहती है। कण्ठकी ग्रन्थियाँ जलती हैं। वृद्ध भग्न-स्वास्थ्य प्रकृतिवालोंको शिथिल बाघियाँ उपदंशकी आरम्भिक अवस्थामें प्रदाह हो जाता है, ग्रन्थि बडी हो जाती हैं, बैंगनी और कडी हो जाती है और जलन होती है। स्तन-ग्रन्थि ढेलेकी तरह हो जाना, स्तन-ग्रन्थिमें मुर्गीके अण्डेके आकारका बैंगनी ढेला-सा हो जाता है, इसमें पीब पैदा नहीं होता, जैसा कि आप इससे आशा करते हैं, यह ठीक उस स्थानपर वैसा ही रहता है। यह बहुत बढता नहीं है, पर यह बहुत कडा रहता है।

स्त्रीकी योनिमें इतनी ज्यादा जलन होती है, कि चिकित्सकको जितनी उसने परीक्षा की है, उससे ज्यादा सावधानीसे परीक्षा करनेके लिये बाध्य करती है। उसे शायद समस्त योनि-ग्रीवा प्रादाहित, नीली और कुछ-कुछ बढी हुई दिखाई देगी। वह कहती है, कि यह आगके अङ्गारेकी तरह जलती है।

कार्बो ऐनिमेलिस अकसर तन्तुओंका जखम बहुतसे अङ्गोंमें और खासकर ग्रन्थियोंमें उत्पन्न करता है। कुछ देर बाद,—पर रोगकी आरम्भावस्थामें नहीं, एक जखम हो जाता है और कुछ दिनों बाद जखम बनता रहने बाद एकाएक रुक जाता है। यह शिथिल जखम हो जाता है, कडा जखम, बाघी फूट जाती है और जखम बन जाता है। एकाएक इसका

पकना बन्द हो जाता है और तन्तुओंके चारो तरफ़ कडापन और नीलापन आ जाता है। लाभ करनेवाला स्राव रुक जाता है और उसके बदले खून-मिला खाल उधेडनेवाला स्राव होने लगता है और उसके चारो ओरके स्थान जलने लगते हैं। अब जखम तथा भगन्दरोमें, जिनको दीवारें कडी रहती है और जला करती है तथा स्राव कटु होता है, उसकी दवा अकसर कार्बो ऐनिमैलिस ही होती है।

अतएव, यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, कि यह दवा वर्द्धित वृद्ध सुद्द कर्कटीया रोग (Cancerous growth) के लिये तथा कर्कटके जखमोंके लिये अत्यन्त उपयोगी होता है। इन सभी जखमोंमें जलन होती है। ये सभी रस-स्राव, कडे, काले रङ्गके तन्तुओंसे घिरे रहते हे और उन सबसे कटु चयकर रस चुआ करता है। रातमें पसीना और बहुत रक्त-स्राव होनेवाले वृद्ध कमजोर प्रकृतिवालोंको बोमारियाँ इसने आरोग्य की है। इसने दुरारोग्य रोगी आरोग्य किये है और वर्षों के लिये इसने कैन्सर (कर्कट) को दशा प्राय हटा रखी है, यद्यपि यह फिर आ जाता है और प्राण ले लेता है। कैन्सरमें जो दर्द होता रै तथा कडापन, डङ्क मारने और जलनको तरह दर्दोंका यह बहुत बडा उपशामक होता है। इसमें सन्देह नहीं, कि हम शिक्षा देना नहीं चाहते, न हम आपको यही बताना चाहते हैं, कि बढे हुए कर्कट-रोगका रोगी, जैसे कि कर्कटका कठिन अर्बुद भी पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है और कर्कट रोग आरोग्य हो जा सकता है। हम उस रोगीको आराम पहुँचा सकते हैं तथा सामयिक रूपसे सुश्रृङ्खला ला सकते है। इस तरह इन मारात्मक रोगोंमें भी कष्टोंसे कुछ छुटकारा मिला रहता है। कैन्सरके बहुतसे रोगी वास्तवमें विश्रृङ्खलताको एक ऐसी दशामें रहते हैं, कि सामयिक रूपसे कष्टोंके दमनकी ही आशा की जा सकती है और जो कोई इस बातका गर्व करता फिरता है कि उसने कैन्सरका रोगी आरोग्य किया है, उसे सन्देहको दृष्टिसे देखना चाहिये। कैन्सरपर ही अडे न रहिये, क्योंकि आप कैन्सरकी नहीं, बल्कि रोगीकी चिकित्सा कर रहे है। रोगी बीमार है और जब कोई रोगी इतना बीमार हो गया है कि उसे कैन्सर हो गया है तो उसकी शृङ्खलाकी अवस्था इतनी बिगडी रहती है, कि आरोग्य होना मुश्किल रहता है।

कार्बो ऐनिमैलिसकी परीक्षामें भग्न-स्वास्थ्यका रूप प्रकट हुआ है। इसने परीक्षकमें ऐसे लक्षण प्रकट किये हैं, जो वृद्ध, कमजोर धातु-प्रकृति, दुर्बल

आरोग्य तथा प्रतिक्रियाके अभाववालेमें होते हैं। इसीलिये, यह दवा उन रोगियोंके लिये बड़ी उपशामक हुई है जो इन रोगोंमें तकलीफ़ पाते हैं। मारात्मक, रस-स्राव तथा कड़ापन, जखमको तलीके नीचे तथा उसके चारों ओर संशय-पूर्ण कड़ापन, ग्रन्थियोंका सन्देहजनक कड़ापन। कोई ग्रन्थि प्रदाहित हो जाती है, कड़ी हो जाती है और वैसी-की-वैसी रह जाती है। ऐसी अवस्थाओंकी जो दवाएँ हैं, कार्बो ऐनिमेलिस उनमें शिरमौर है।

इस दवामें सर्वत्र ही विवृद्धिका लक्षण है। तन्तु सब इधर-उधर ढेरकी तरह जमकर कड़ी गाँठे बन जाती हैं तथा ग्रन्थियों और यन्त्रोंके तन्तु एकत्र होते हैं। स्वास्थ्य-विधानने अपनी समता खो दी है और इसीका यह परिणाम हुआ है, कि सब सामग्रियोंको विशृङ्खलित बटायी होती है। बहुत सुस्ती, शक्तिका अभाव, इसके साथ ही कलेजा धड़कना चिन्ता तथा नाड़ीकी विशृङ्खलता रहती है। कमजोर नाड़ी, तीव्र नाड़ी, अनियमित नाड़ी, रक्त-वाहिनियोंमें धमक, सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानमें उथल-पुथल रहता है, कभी-कभी इसे ताप कहा जाता है। कभी-कभी तो तापका ऐसा दौरा रहता है, मानो शरीर भाफसे भरा है। वक्ष और माथेमें इस तरहकी भयङ्कर अनुभूति, मानो भू-कम्प हो रहा है। हृदपिण्डकी शिराओंकी अस्वाभाविक दशाके कारण ऐसा होता है। तापकी झलक, यहाँ-वहाँ स्पन्दन अनुभव होना। रक्त-स्राव। इसमें सन्देह नहीं, कि मनुष्यकी अपेक्षा स्त्रीको रक्त-स्राव-प्रवणता अधिक रहती है, इसीलिये, ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले हो जाता है, बहुत दिनोतक होता रहता है, बहुत ज्यादा होता है। प्रत्येक मासिक ऋतु-स्रावके साथ सुस्ती। कार्बो ऐनिमेलिसकी रोगिनी स्त्री प्रत्येक ऋतु-स्रावके समय इतनी कमजोर हो पड़ती है, मानो मर जायगी। रक्त-स्रावकी मिकदारके अनुसार इतनी आश्चर्य-जनक कमजोरी नहीं आ सकती। जरायुकी विवृद्धिके साथ पुराना कड़ापन, जो क्रमश वर्ष-प्रति-वर्ष बढ़ता ही जाता है। (**आरम-म्यूर, नेट्रोनेटम**)। जरायु-ग्रीवा तथा समस्त जरायुका कड़ापन। श्वेत-प्रदरका बहुत ज्यादा स्राव। जरायुसे बदबूदार स्राव। जरायुका जखम, जो धीरे-धीरे मारात्मक अवस्थाकी ओर अग्रसर होता जाता है, ऋतु-स्राव काला और, बदबूदार होता है। अन्तमें, बिचारी, कमजोर स्त्री, जो इस दशाको वर्षों से भोग रही है, उसे जरायु-ग्रीवाका मारात्मक जखम हो जाता है, जिसमें जलन होती है, लगातार रक्त-स्राव होता है और बदबूदार

पनीला स्राव चूता रहता है। जरायुका जलनका दर्द जघातक फैल जाता है।

जब कभी ऐसी रोगिनी बच्चेको स्तन पिलाती है, तो उसे पाकाशयमें खालीपनका भाव मालूम होता है, पाकाशय-गह्वरमें कमजोरीका भाव मालूम पड़ता है और उसे बच्चेको हटा देना पड़ता है।

जरायुकी बहुत सी तकलीफें रहती हैं, जिनके साथ जलन, डङ्क मारनेकी तरह और खोंचा मारनेका भाव रहता है। नाकके ऊपर एक पीलापन लिये भूरी झीन-सा बन जाता है। यह कुछ-कुछ **सिपिया**की चितकबरी पीली झीनकी तरह रहता है। जरायुकी सभी तरहकी गड़बड़ियाँ।

ऊपर माथेकी ओर खूनका दौरान हो जाता है, रोगीको यह नींदसे जगा देता है, साथ ही भयङ्कर सपने देखनेमें आते हैं। इस बेचारे रोगीको मस्तिष्कके तलदेशकी तकलीफें होती हैं, सरमें फाड़नेकी तरह दर्द और यह खासकर पश्चात्-मस्तिष्कमें होता है। रोगीकी सर्दीको स्पर्श-असहिष्णुता बढ़ती ही जाती है। सर्दीलापन भी बढ़ता है। मोमकी तरह होना भी बढ़ता ही जाता है, यहाँतक कि शिरा-स्फीति तथा पूर्व-वर्णित समस्त दशाओंके साथ यक्ष्मा या कर्कट (Cancor) रोग हो जाता है।

कार्बो वेजिटेबिलिस।

(Carbo Vegetabilis)

अब हम उद्भिज कोयला—कार्बो-वेजका अध्ययन आरम्भ करते हैं। यह वास्तवमें निष्क्रिय पदार्थ है, जिसे औषध पूर्ण और शक्तिशाली बनाया गया है तथा उसे खूब महीनकर एक बहुत बड़ी आरोग्यकर सामग्री बना लिया गया है, इसका काफी तौरसे विभाजन करनेपर, इसमें रोगकी प्रकृतिकी समता आ जाती है और मनुष्योंको आरोग्य करता है। पाकाशयका अम्ल आरोग्य करनेके लिये प्राचीन प्रणालीवाले एक चम्मचकी मात्रामें इसका व्यवहार करते हैं, पर यह हैनिमैनका एक विराट स्तम्भ है, मूल-रूपमें यह एकदम निष्क्रिय रहता है और तबतक इसकी सच्ची आरोग्यदायक शक्ति प्रकट नहीं होती जबतक इसे

भरपूर शक्तिकृत नहीं किया जाता (Potentized)। यह उन गहरायीतक काम करनेवाली दीर्घ कालतक कार्यकारिणी सोरा-नाशक दवाओंमेंसे एक है। यह जीवनपर गहरायीतक प्रवेश करती है। परीक्षामें इसमें ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं, जो बहुत दिनोंतक रहते हैं तथा बहुत दिनोंकी स्थायी दशाओंको—जो धीरे और गुप्तरूपसे आती हैं, उन्हें यह आरोग्य करती है। यह खासकर रक्तावहा संस्थानपर क्रिया करती है, खासकर स्वास्थ-विधानके शिरावाले पार्श्वमें—हृत्पिण्डमें और समूचे शिरामण्डलपर। कार्बो-वेजके निदान-तत्वकी परीक्षा करनेके समय शिथिलता सोचनेका एक बढ़िया शब्द है। शिथिलता आलस्य, सूजन—ये ही सब शब्द आपके मनमें आवेंगे, क्योंकि ये अवस्थाएँ लक्षणावलीमें बहुत बार आती हैं। स्वास्थ्य-विधानकी सभी चीजें, शिथिल, स्फीतिपूर्ण, तनी और फूली रहती हैं, हाथ फूला रहता है, शिराएँ फूली रहती हैं, शरीर भरा और स्फीतिपूर्ण मालूम होता है, माथा भरा मालूम होता है मानो रक्तसे भरा है। प्रत्यङ्ग सब सुस्त मालूम होते हैं, इसीलिये रोगी खून निकल जानेके लिये पैर उठाये रखना चाहता है। शिराएँ सुस्त रहती हैं, शिथिल और पक्षाघात-ग्रस्त रहती हैं, सङ्कोचन प्रसारणशील स्नायुओंका पक्षाघात, शरीरकी शिराएँ बढ़ी रहती हैं तथा हाथ-पैरोंमें शिरा-स्फीति रोग दिखायी देता है।

शरीरकी भाँति ही समस्त मानसिक दशा भी सुस्त रहती है। मानसिक क्रियाएँ धीमी रहती हैं धीमी गतिसे सोचता है, धीमा, जड, आलसी, अपनेको तेज क्रियाओंमें नहीं लगा सकता या किसी कामके करनेकी वासना जागरित नहीं कर सकता। चुपचाप पड़े रहना और नींद लेना चाहता है, प्रत्यङ्ग सब जकड़े रहते हैं, वे बढ़े हुए मालूम होते हैं, चमड़ा धुमैला रहता है, कैशिकाओंका रक्तप्रवाह रुद्ध रहता है, चेहरा नीला रहता है। इस धुमैले चेहरेपर कोई भी ताकतकी दवा या पेय एक आभा ला देती है, शराबके टेबिलके चारों तरफ जब आप मनुष्योंको एकत्र देखें तो उनमेंसे आप कार्बो-वेजके रोगीको आसानीसे चुन ले सकते हैं, क्योंकि उनका चेहरा तमतमाया रहेगा, पर थोड़ी ही देरमें यह आभा चली जाती है और वह फिर बैगनी हो जाता है। धुमैला—करीब-करीब मैल धुमैला, चर्म आलस्यपूर्ण रहता है, शिथिल।

इस दवामें सर्वत्र **जलन** रहती है, शिराओंमें जलन, कैशिकाओंमें जलन, माथेमें जलन, चर्ममें खुजली और जलन, प्रादाहित स्थानोंमें जलन,

भीतरी जलन और बाहरी ठण्डक, कमजोर खूनके दौरानके साथ और दुर्बल हृत्पिण्डके साथ ठण्डक, बरफकी तरह शीतलता, हाथ-पैर ठण्डे और सूखे या ठण्डे और तर, **घुटने ठण्डे**, **नाक ठण्डी**, कान ठण्डे, जीभ ठण्डी, जलनके साथ पाकाशयमें ठण्डक। बेहोशी। शीताङ्गकी तरह सर्वत्र ठण्डे पसीनेसे भरा रहता है, **ठण्डी साँस, ठण्डी जीभ, ठण्डे चेहरासे साथ शीत आ जाना**, मुर्देकी तरह दिखाई देता है। ठण्डक-शीतकी इन सभी अवस्थाओंमें रोगी **पंखेकी हवा खाता रहना चाहता है।**

इस दवामें सर्वत्र रक्त-स्राव है। प्रादाहित स्थानोंसे रक्त चूना। जखमोंसे काला खून निकलना, फेफड़ेसे खून, जरायुसे और मूत्राशयसे खून जाना, रक्तका वमन होना, धीमा रक्त-स्राव, रक्तका दौरान कमजोर रहनेके कारण किसी कैशिकासे खून चूना आरम्भ हो जायगा और जारी रहेगा। इस दवामें मुश्किलसे कभी झोंकका रक्त-स्राव होता है, जैसा कि **बेलेडोना**में होता है या **इपिकाक, ऐकोनाइट, सिकेलि** तथा ऐसी दवाओंमें होता है, जिनमें बड़े वेगसे रक्त-स्राव होता है, पर यह एक धीमा कैशिकाओंका रक्त-स्राव—चूना है, स्त्रियोंको इस ढङ्गकी रक्त-स्रावकी बीमारी होती है, सभी समय थोड़ा-थोड़ा रक्त चूता रहता है। इसी वजहसे मासिक रज स्रावका काल बढ़ जाता है। प्रसवके बाद रक्तका निकलना, यह सङ्कोचनके द्वारा तुरन्त ही बन्द हो जाना चाहिये, रक्तवाहिनियोंमें सङ्कोचन नहीं होना, वे शिथिल रहती हैं, काला शैरिक रक्त-स्राव, नश्तर लगवाने बाद रक्तवाहिनियोंका सङ्कोचन और ऊपरकी ओर आकर्षण नहीं होता, अगर चर्मपर कोई आघात लग जाता है, तो आघातोंसे रक्त-स्राव होता है, सभी धमनियाँ बाँध दी गयीं, पर छोटी शिराओंकी दीवारोंमें किसी तरहका सङ्कोचन नहीं होता। किसी प्रादाहित स्थानसे रक्त-स्राव हो सकता है, कमजोर हृत्पिण्ड, शिथिल शिराएँ।

इसके बाद जखम निकलना, जैसा मैंने बताया है, वैसा ही यदि कोई रोगी हो जिसकी रक्तवाहिनियाँ शिथिल हों और तन्तु कमजोर हो, तो यह देखकर आपको आश्चर्य न करना चाहिये, यदि उसका सुधार न हो, तन्तु निर्माण न हो, इसलिये जब किसी अङ्गमें आघात आ जायगा, तो उसमें फूसी सी जमेगी, यदि एक बार जखम हो गया है, तो वह जल्द न भरेगा। तन्तु सब अलग भावके रहते हैं, इसीलिये हमें ऐसे शिथिल जखम देखनेका अवसर मिलता

है, खून निकलनेवाले, क्षयकर, कटु, पतले स्राव जख्मोंसे निकलते हैं, चमड़ेमें जख्म हो जाता है, श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जख्म हो जाता है। कण्ठ तथा मुँहमें जख्म, शिथिल और कामजोर दशाके कारण सर्वत्र सभी स्थानोंमें जख्म हो जाता है। या तो बहुत दुर्बल तन्तु-निर्माण होता है या बिलकुल ही नहीं होता, "कैशिकाओंमें रक्त जमता है"—यही बात पाठ्य-ग्रन्थोंमें बतायी गयी हैं।

आप देख सकते हैं, कि इन कामजोर अंगोंमें सड़न रोग (Gangrene) हो जाता है, कोई भी प्रदाह या रक्त-सञ्चय या तो काला हो जाता है या बैंगनी और उसमें फूसी आसानीसे जमने लगती है—बस यही सब सड़न रोग हो जानेके लिये जरूरी है, शैरिक अवस्थाएँ—रक्तका ज़हर—खासकर नश्तर लगवाने या किसी आघातके बाद यदि ऐसी अवस्थाएँ हों तो उनकी यह एक आश्चर्यजनक आरोग्यकारिणी दवा है। दूषित अवस्थाओंको (Septic condition), आरक्त ज्वरमें अथवा कोई भी रोग जो धीमा रूप प्राप्त कर लेता है, जिसके साथ चमड़ेका रङ्ग बैंगनी या चितकबरा हो जाता है, उनकी यह एक लाभदायक दवा है। कार्बो-वेजकी नींद इतनी घबड़ाहट भरी रहती है, कि उसे भयङ्कर कष्टदायक नींद कहा जा सकता है। सोनेको जानेके समय घबड़ाहट, कष्ट, झटका, ऐंठन और भय मौजूद रहता है, सब बातें डरावनी होती हैं। भयङ्कर दृश्य, भूत-प्रेत देखता है, एक विचित्र, शिथिल, मृत्युकी तरह निद्रा रहती है, साथ ही स्वप्न देखता है। कार्बो-वेजका रोगी घबड़ाहटमें और ठण्डे पसीनेसे ढँका जागता है। क्लान्ति। निद्राके बाद स्फूर्त्ति-ताजगी नहीं आती और इस तरह सम्पूर्ण रोगी निद्रासे सुस्त हुआ रहता है। वह इतना घबड़ाया रहता है, कि वह सोनेको जाना नहीं चाहता, अन्धेरेमें घबड़ाहट होती है, श्वास-कष्टके साथ घबड़ाहट मानो दम घुट जायगा, इतनी ज्यादा घबड़ाहट रहती है, कि लेट नहीं सकता।

उदासीनता कार्बो-वेजका प्रधान लक्षण है। घटनावश जो बातें पेश हो जाती हैं, उसको देखने या अनुभव करनेकी शक्ति नहीं रहती, उसका प्रेम वास्तवमें रुद्ध रहता है, इस तरह उसे जो कुछ कहा जाता है, उससे न तो वह जागरित ही होता है और न उसकी शान्ति ही भङ्ग होती है, "बिना प्रसन्न या अप्रसन्न हुए और बिना उसके विषयमें सोचे सब बातें सुन लेता है", भयङ्कर बातोंसे भी उसपर कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता, आनन्ददायक चीजोंसे भी

उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वह ठीक-ठीक नहीं जानता कि वह अपने बाल-बच्चे या स्त्रीको प्यार करता है या नहीं। यह शिथिलताका एक अंश है, चिन्तन करने या सोचनेकी शक्तिका न रहना, यह सब स्फीति या शिराओंकी स्फीतिके कारण होता है, शिराओंकी शिथिलता, माथा भरा मालूम होता है, फैला हुआ। उसका मन विभ्रमित रहता है और वह सोच नहीं सकता। वह यह अनुभव नहीं कर सकता कि कोई चीज़ ऐसी होनी चाहिये या नहीं या वह अपने परिवारवालोंको प्यार करता है या नहीं अथवा वह अपने शत्रुसे घृणा करता है या नहीं। सुस्त, मूर्ख, एक दूसरी अवस्था भी है—घबड़ाहट और भूतोंका रात्रिकालीन भय, घबड़ाहट मानो ग्रहण कर ली गयी है, आंख बन्द करनेपर घबड़ाहट, शामको लेटनेपर घबड़ाहट, जागनेपर फिर घबड़ाहट। वह सहजमें ही डर जाता है, सोनेको जानेके बाद झटका और मरोड़।

सर-दर्द अकसर पश्चात्-मस्तकमें होता है। उसका समूचा माथा फूला, भरा और तना रहता है। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो खोपड़ीकी त्वचा बहुत ही कसी हुई है, मानो सब चीजे माथेमें बँधी हैं। भयङ्कर पश्चात्-मस्तिष्कका सर-दर्द। न तो हट सकता है, न करवट ले सकता है, न करवट सो सकता है। हिलाया नहीं, जा सकता, क्योंकि ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा, मानो कोई चीज़ पश्चात्-मस्तिष्कको कसकर पकड़े हुए है। पश्चात्-मस्तकमें धीमा सर-दर्द, पश्चात्-मस्तकके निम्न-भागमें भयङ्कर दबावका दर्द, माथा भारी मालूम होता है। जब पश्चात्-मस्तकमें दर्द रहता है, तो सर तकियेकी तरफ खिंचा मालूम होता है या वह तकियेसे उठाया नहीं जा सकता। ओपियमकी तरह तकियेपरसे माथा उठा नहीं सकता। श्वास लेनेके समय सरमें दर्द-भरी धमक। कार्बो-वेजका रोगी लघु श्वास लेता है, जहाँतक सम्भव है, चुपचाप रहता है, यहाँतक कि अन्तमें उसे बाध्य होकर गहरी साँस लेनी पड़ती है और तेज़ कराहनेकी आवाज़की तरह बाहर निकलती है। मस्तक चर्ममें सङ्कोचनकी तरह सर-दर्द। खाँसनेके समय समूचे माथेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, समूचे माथेमें जलन होती है। माथेमें बहुत ज्यादा गर्मी, जलनका दर्द, माथेमें रक्तका चढ़ आना, जिसके बाद नाकसे खून गिरता है। आक्षेपिक सङ्कोचनके साथ माथेमें रक्त-सञ्चय, मिचली और आँखोंपर दबाव। खूब गर्म कमरेमें ऐसा मालूम होता है, मानो सर्दी

आयगी। इनमें बहुत-से सर-दर्द सर्दी लगनेके कारण, नाककी सर्दीके कारण, पुरानी सर्दीके ढीली पड़ जानेके कारण होते हैं। कार्बो-वेजके रोगीको पुरानी सर्दीकी तकलीफ़ रहती है। जब नाकसे खुलासा स्राव होता रहता है, तब वह सबसे अच्छा रहता है, पर यदि सर्दी लग जाती है और स्राव रुक जाता है, तो माथेमें रक्त-सञ्चय हो जाता है। वह स्रावका रुकना सहन नहीं कर सकता, जितनी बार उसे सर्दी लगती है, उतनी ही बार सर-दर्द पैदा हो जाता है, ठण्डी तर ऋतुमें, ठण्डी सीड-भरी जगहमें जानेसे तथा शीत लग जानेपर सर-दर्द हो जाता है। माथेके पिछले भागका भयङ्कर सर-दर्द या आँखपर सर-दर्द या सर-दर्द समूचे माथेको आक्रान्त कर देता है तथा हथौड़ीकी चोट जैसा मालूम होता है। ये दशाएँ **कैलि-बाइक्रोमिकम, कैलि-आयोडेटम** और **सीपिया**की तरह हैं। इनमेंसे बहुत-से सर-दर्द तो रुकी हुई सर्दीकी दशाके कारण होते हैं।

मुट्ठी-मुट्ठी केश झड़ते हैं। सरपर उद्भेद निकलते हैं। पाठशालाकी लड़कियाँ और लड़के भी, जो ढीले-ढाले हैं, देरसे सीखते हैं तथा रातमें जिन्हें भय लगता है, वे अकेले नहीं सोयेंगे या बिना किसीको साथ लिये अन्धेरे कमरेमें न जायेंगे। उन्हें सर-दर्द होता है, टोपीके दबावसे बदतर हो जाता है, टोपी उतार देनेके बहुत देर बादतक भी उन्हें दबाव मालूम होता रहता है। पसीना, ठण्डा पसीना, खासकर माथेका और ललाटका पसीना। कार्बो-वेजके रोगीको बहुत ज्यादा पसीना होता है, पहले यह ललाटपर होता है और पसीना ठण्डा होता है। हाथ लगानेपर ललाट ठण्डा मालूम होता है और उसपर कोई भी हवा लग जानेपर दर्द पैदा हो जायगा। वह उसे ढँके रखना चाहता है। माथेमें सर्दी सहन नहीं होती। यदि वह अत्यधिक गर्म हो जाता है और माथेमें पसीना होने लगता है तथा उस पसीना होते हुए माथेपर हवाका झोंका लगता है, तो तुरन्त उसकी सर्दी रुक जायगी और सर-दर्द पैदा हो जायगा। उसके घुटने, हाथ और पैर ठण्डे हो जाते हैं और बिना आराम पाये उसे पसीना होने लगता है।

आँखके लक्षण भी कष्टकर हैं और वे अक्सर सर-दर्दके साथ ही पैदा होते हैं। आँखोंमें जलनका दर्द, आँखें चमक-रहित हो जाती हैं, गड्ढेमें धँस जाती हैं तथा पुतलियोंकी रोशनीमें प्रतिक्रिया नहीं होती है। वह

मानसिक सुस्ती अनुभव करता है तथा सोचना नहीं चाहता। वह या तो बैठा रहना या लेट जाना चाहता है, क्योंकि हरेक परिश्रमसे उसे सर-दर्द पैदा हो जाता है। जब कभी यह अवस्था मौजूद रहती है, आँखें इसे दिखा देती हैं। आप जानते हैं, कि वह बीमार है, क्योंकि चमकीली, चकाचौंधी लानेवाला रूप आँखसे चला गया है। यदि कहीं उसे एकान्त मिल जाये और वह लेट सके—बशर्ते कि अन्धेरा न हो, तो उसे आराम मिलेगा। वह अकेला रहना चाहता है, वह क्लान्त, थका रहता है, उसका दिनका काम उसे क्लान्त कर सकता है। वह बैगनी चेहरे, ज्योति-हीन आँखे, धँसा हुआ चेहरा, थका मन और मस्तिष्कसे घर आता है। किसी भी मानसिक परिश्रमसे थकावट आ जाती है। सरमें भार, सरमें तकलीफ और भरापन, साथ ही हाथ-पैर ठण्डे। रक्त ऊपरकी ओर चढ़ता है। आँखसे रक्त स्राव, जलन, खुजली और आँखोंमें दबाव। आँखें महीन काम करने या अत्यधिक काम लेनेके कारण दुर्बल हो जाती हैं।

कार्बो-वेज कानसे स्रावकी भी एक दवा है। बदबूदार, पानीकी तरह, कटु और खाल उधेड़नेवाला स्राव। खासकर जो मैलेरिया, आरक्त-ज्वर या खसड़ाके बाद होते हैं,—खासकर आरक्त-ज्वरके बाद। शिरा-सस्थानकी एक शिथिल दशा। पुरानी बीमारियोंमें और खासकर जब कभी कोई रोगी अपने विषयमें कहता है या माता अपने बच्चेके विषयमें कहती है, कि वह मैलेरियाके आक्रमणके बाद फिर कभी अच्छा न रहा। खसड़ा या टाइफायड अथवा आरक्त ज्वरके निकलनेके बाद लड़की कभी अच्छी न रही। जब लक्षण गड़बड़ रहें, तो कार्बो-वेजपर ध्यान देना चाहिये तथा रोगीकी इतनी चिकित्सा हुई है, कि लक्षणोंमें बिलकुल ही निर्दशकता नहीं रह जाती। पुराने कानके स्राव या पुराना सर-दर्द, जब सभी लक्षण दब गये हैं। इस अवस्थामें कार्बो-वेज ही एक ऐसी बँधी दवा है, जो लक्षणोंको नियममें लाती है तथा कानसे और भी स्वास्थ्यप्रद स्राव होने लगता है। यह प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। खूनका दौरान उत्तम बना देता है और आंशिक-रूपसे रोग आरोग्य करता है, जिसके बाद एक उत्तम औषधिका चुनाव हो सकता है।

कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह या कर्णमूल-प्रदाह (Mumps)। जब कर्णमूल-प्रदाह, सर्दी लग जानेके कारण अपना स्थान बदल देता है तथा लड़कियोंकी

स्तन-ग्रन्थिमें चला जाता है तथा बच्चोंके अण्डकोषमें उतर जाता है, तो कार्बो-वेज उन्हें नियम-बद्ध करनेवाली दवाओंमेंसे एक है। बहुतकर तो यह बीमारीको अपनी मूल जगहपर ला देगा तथा इसे सुरक्षित रूपसे परिचालित करेगा। कानमें दर्द कानोंसे अनुग्र, बदबूदार स्राव, श्रवण-शक्तिका क्षय। भीतरी कानका जखम। कानके सामने कुछ भारी बोझ अनुभव होती है, कान बन्द हुए-से मालूम होते हैं, श्रवण-शक्ति घट जाती है, खासकर उन रोगियोंमें जो कुछ पुरानी बीमारियोंके कारण होते हैं।

कार्बो-वेजके रोगीको अक्सर सर्दी हो जाया करती है। वह गर्म कमरेमें जाता है और यह सोचकर कि मिनटभर बाद ही बाहर जायगा, वह अपना ओवरकोट पहन लेता है। तुरन्त ही वह गर्म होने लगता है, पर वह सोचता है, कि मिनटभर बाद ही बाहर जाना है और अपना ओवरकोट नहीं उतारता। इस ढङ्गकी कारवायीसे अवश्य ही नाककी सर्दी आ जायगी, यह नाकसे आरम्भ होगी, पानीकी तरह स्राव होगा, दिन और रात खूब छींक आयगी, वह गर्मीसे तकलीफ पा रहा है और सर्दीसे ठिठुर गया है, हवाका प्रत्येक झोंका उसे सर्द बनाता है तथा गर्म कमरेमें उसे पसीना आता है और इस तरह उसे दोनोंसे ही तकलीफ़ होती है, उसे आरामकी कोई जगह नहीं मिलती तथा वह अपनी नाक छिड़कता और झाड़ता रहता है। शायद उसे नाकसे रक्त-स्राव भी होता है, रातके समय वह बैंगनी आभा लिये हो जाता है, सर्दी कण्ठतक फैल जाती है तथा मुँह और कण्ठमें सूखापन और खाल उधड़नेका भाव पैदा कर देता है। पश्चात् नासारन्ध्र और कण्ठ, एक प्रकारके बहुत ज्यादा जलीय स्रावसे भर जाते हैं। इसके बाद उसमें स्वर-भङ्ग होना आरम्भ हो जाता है और शामको उसकी आवाज़ बैठ जाती है, साथ ही स्वरयन्त्र और कण्ठमें खाल उधड़नेका भाव मालूम होता है। खाँसनेपर स्वरयन्त्रमें खाल उधड़नेका भाव, छूनेपर जखमकी तरह यन्त्रणा, जितना ही वह खाँसता है, उतना ही ज्यादा खाल उधड़नेका भाव होता जाता है। यह दशा वक्षतक फैल जाती है, बहुत ज्यादा पतले श्लेष्माका स्राव, अन्तमें यह गाढ़ा, पीलापन लिये हरा हो जाता है और स्वाद भी बुरा हो जाता है। ऐसी ही यह सर्दी रहती है, अब इसके साथ पाकाशयकी गड़बड़ी आती है अर्थात् साधारणतः कार्बो-वेजकी शिकायतोंके साथ अमूमन सम्मिलित रहती है, वायु होनेके साथ तलपेटमें बहुत तनाव। इस नाककी सर्दीके साथ उसे डकार आती

है और अम्ल होता है तथा पेट गड़बड़ाया रहता है। जितनी ही बार वह अपना पाकाशय गड़बड़ा लेता है, उतनी ही बार उसे सर्दी हो जानेकी सम्भावना रहती है, जितनी ही बार वह अति गर्म कमरेमें जाता है, उसे नाककी सर्दी हो जानेकी सम्भावना रहती है, जिसके साथ ही छींक आती है, वक्षकी शिकायतें रहती हैं और श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह रहता है।

नाककी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह या सर्दी तो अन्य स्थानोंमें, जहाँ श्लैष्मिक-झिल्लियाँ हैं, क्या हो सकता है, उसका स्पष्ट उदाहरण है। पानीकी तरह श्लेष्मा और रक्त-स्रावके साथ सर्दीकी दशा, कार्बो-वेजमें कण्ठ, नाक, आँख, वक्ष और योनिमें श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह रहता है। मूत्राशयकी पुरानी सर्दीकी दशा, आँत तथा पाकाशयकी सर्दी, यह बहुतकर एक श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दवा है। स्त्रीको जब कुछ-कुछ श्वेत प्रदरका स्राव होता रहता है, तो उसे अच्छा मालूम होता है—यह उसे एक प्रकारकी रक्षा मालूम होता है, ये नित्य-प्रति प्राप्त होनेवाले स्राव सूख जाते हैं तथा स्थानिक चिकित्सा हो, तो सब प्रकारकी दवा लगाना प्रभृतिसे वशमें लाये जाते हैं तथा रोगी हिफाजत करनेवालेके हाथमें सौंप दिया जाता है या उसका एक दुःखजनक स्वास्थ्य-भङ्ग हो जाता है। यदि ये सर्दीके रोगी भीतरसे बाहरकी ओर आरोग्य नहीं किये जाते, तो स्राव जारी रहने देना चाहिये, जबतक यह स्राव जारी रहता है, रोगीको आराम मिलता रहता है। कार्बो-वेजके रोगीको सर्दीके साथ ज्वर-भाव हो जाना बहुत साधारण बात है, पर बहुत-सी अन्य बीमारियोंमें वह ठण्डा रहता है। उसके प्रत्यङ्ग ठण्डे रहते हैं, चेहरा ठण्डा रहता है, शरीर ठण्डा रहता है, चर्म ठण्डा रहता है और ठण्डा पसीना होता है। नाककी सर्दीकी आरम्भिक अवस्थामें तथा श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी अवस्थामें यह इतना साधारणतया नहीं हो जाता, सन्ध्यामें और रातमें रोगीको ज्वर-भाव हो जाता है, पर जब वह दूसरी अवस्थामें जाता है, जब बहुत ज्यादा श्लेष्मा आने लगता है, तब घुटने ठण्डे होने लगते हैं, नाक ठण्डी रहती है, पैर ठण्डे रहते हैं और ठण्डा पसीना होता है।

कार्बो-वेजके रोगीका चेहरा भी एक अध्ययनकी चीज़ है। चेहरा तथा हाव-भावमें साधारण लक्षण बहुत-से प्रकट हो जाते हैं। रोगी अपनी साधारण सार्वाङ्गिक दशा अपने चेहरेमें, खासकर आँखोंमें प्रकट करता है। वह आपको बता देता है, कि वह कितना बीमार है, वह आपको डरानेवाले सब

बता देता है। कार्बो-वेजमें बहुत पीलापन और ठण्डक रहती है, ओंठ सिकुड़े और नाक नुकीली तथा खिची रहती है। ओंठ सिकुड़े, नीले, शिथिल और रोगी मुर्देकी तरह रहते हैं। चेहरा ठण्डा, पीला और पसीनेसे भरा रहता है। परीक्षाके लिये जीभ निकालनेपर वह पीली और ठण्डी रहती है और श्वास भी ठण्डा रहता है, इतनेपर भी उसकी यही इच्छा रहती है, कि कोई पंखा झलता रहे। हैजा हो या अतिसार, बहुत ज्यादा पसीना हो या ज्वरके बादके उपसर्ग हों, यह सत्य है, कि ऐसा ही होता है। कभी-कभी सर्दी अपनी मञ्जिल पूरी कर लेने बाद, जब वक्षमें अपना अधिकार जमाती है, तो बहुत अधिक श्वासकष्ट होता है, अत्यधिक बलगम निकलता है, ज्यादा पसीना, बहुत ज्यादा सर्दी रहती है और रोगीको अवश्य ही पङ्खा झलना पड़ता है। श्वास-कष्ट और खाल उधड़नेके भावके साथ खाँसी, खाँसी आने बाद श्वास-कष्ट, सुस्ती और बहुत ज्यादा पसीना होने लगता है और रोगी पङ्खेसे हवा करने कहता है, ठण्डा चेहरा, सिकुड़ा चेहरा, इस तरह तकलीफ़ या बीमारी चेहरेपर ही प्रकट हो जाती है, दर्द तथा यन्त्रणाएँ, चिन्ता तथा शोक सभी चेहरेपर प्रकट हो जाते हैं, चेहरेका अध्ययन मनोरञ्जक तथा लाभदायक भी होता है। इसी तरह दवाओंके चेहरे—रूपका अध्ययन भी बहुत लाभदायक होता है, स्वस्थ पुरुषोंके मुखमण्डलोंका अध्ययन भी बहुत लाभजनक होता है, क्योंकि चेहरेके अध्ययनसे ही आप उनके इरादे जान सकते हैं। किसी मनुष्यके चेहरेपर उसके जीवनका व्यवसाय प्रकट रहता है, वह अपनी चिन्तन-प्रणाली, अपनी घृणाएँ, अपनी वासनाएँ और अपना प्रेम चेहरेपर ही प्रकट कर देता है, उस आदमीका चेहरा चुन लेना जिसने सारा जीवन खानेके सिवा और किसी चीज़से प्रेम नहीं किया है (Epicurean face) बहुत ही सहज है, उस आदमीका चेहरा देखकर चुन लेना कितना आसान है, जिसने रुपयोंके सिवा और किसी भी चीज़से प्रेम नहीं किया है—कञ्जूसका चेहरा, आप कितने ही कारबारी चेहरोंमें प्रेम देख सकते हैं, आप विद्यार्थीका चेहरा अलग छाँट ले सकते हैं, ये सब उस जीवनके प्रेमको दिखाते हैं, जिसे वे व्यतीत कर रहे हैं, कितनों ही से घृणा प्रकट होती है उस जीवनसे घृणा, जिसे उन्हें बाध्य होकर बिताना पड़ रहा है, मानव-जातिसे घृणा, जीवनसे घृणा, जिन्हें सभी कामोंमें असफलता मिली है, उनके चेहरेपर तो घृणाकी छाप-सी लगी दिखाई देती है। जिस तरह हम मनुष्योंमें ये चीजें देखते हैं, ठीक उसी तरह वे

दवाओंमें भी दिखाई देती है। चेहरोंका अध्ययन एक अत्यन्त मनोरञ्जक सामग्री है, किसी व्यस्त विचार-पूर्ण तथा दूर-दर्शी चिकित्सकके माथेमें इतनी बातें भरी रह सकती हैं, जिसे वह कभी बता नहीं सकता—जो बातें वह चेहरेके सम्बन्धमें जानता है। इसलिये चेहरेसे ही दवा प्रकट हो जाती है। कार्बो-वेजमें थोड़ी-सी शराब पीनेपर भी केशकी जड़तक चेहरा तमतमा उठता है, यह एक विशेष चरित्रगत लक्षण है। समूचे शरीरका चमड़ा तमतमा उठेगा, कभी-कभी तो यह तमतमाहट चकत्तोंके रूपमें पैदा होती हैं, ये एक साथ ही उत्पन्न होते हैं और एक कठिन तमतमाये स्थानके रूपमें होकर केशतक चले जाते हैं। इस दवाका कैशिकाओंमें रक्तके दौरानपर इतनी अधिक क्रिया होती है, कि कभी-कभी तो एक चम्मच शराबसे ही चमड़ेपर इस तरहकी तमतमाहट आ जाती है।

पुरानी किताबोंमें—शीतादपूर्ण मसूड़े (Scorbutic gums) के विषयमें बहुत कुछ लिखा है, अब यह रिग्स डिजीज (Riggs disease) कहलाता है—दाँत मसूढ़ोंसे अलग हो जाते हैं। मसूढ़ोंसे खून निकलता है, मसूढ़ोंमें स्पर्श कातरता, दाँत ढीले पड़ जाते है, हम सुनते है, कि 'मुँहके भीतर दाँत ढलमलाया करते हैं", **कार्बनों** (Carbons) मे ठीक ऐसी ही अवस्था उत्पन्न होती है, मसूढ़ेका हटना और उनका शोषण हो जाना, मसूढ़े स्पञ्जकी तरह छेद-भरे हो जाते है और उनसे बहुत सरलतापूर्वक रक्त स्राव होता है और इसीलिये मसूढ़ोंका ढीलापन और रक्त-स्राव जो बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं, दाँत बहुत तेजीसे क्षय होने लगते हैं, दाँत धोते समय मसूढ़ोंसे खून आता है। **पारद** (Mercury) सेवन करनेके कारण मसूढ़े तथा दाँतोंकी बीमारियाँ, दाँत बहुत लम्बे मालूम होते है और उनमें जखम हो जाता है। दाँतमें खींचन और फाड़नेकी तरह दर्द, गर्म, नमकीन या ठण्डी चीजें मुँहमें लेनेपर दाँतोंमें फाड़नेकी तरह दर्द , गर्मी तथा सर्द दोनोंसे ही दर्द, यह सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानकी सार्वाङ्गिक शैरिक अवस्थासे सम्बन्ध रखता है।

जीभका स्पर्श-असहिष्णु रहना, जीभका प्रदाह। कितने ही निम्न-श्रेणीके ज्वरोंमें, मोह ज्वर (Typhus) और सान्निपातिक ज्वर (Typhoid fevers), मसूढ़े काले हो जाते हैं—अर्थात वे कालापन बाहरकी ओर फेंकते हैं, खून निकलता है, बदबूदार रहते हैं और उनसे सड़ी चीजें निकलती हैं। यदि उन्हें छुआ या दबाया जाता है, तो खून निकलता है तथा जीभपर काले

रक्तका स्राव होता है। यह टाइफायडकी तरह सड़नवाले ज्वरोंमें—तथा रस-रक्त बिगड़नेवाली अवस्थाओंमें होता है। इन रस-रक्त बिगड़नेवाले लक्षणोंमें, जिसे साधारणत. खूनमें ज़हर फैलना (Blood-poisoning) कहते हैं, बहुत लाभदायक है। शिराओंसे काले खूनका चूना निम्न-श्रेणीका टाइफायड ज्वर, उन आरक्त ज्वरोंमें, जिनमें रोगीमें सान्निपातिक अवस्था आ जाना चाहती है तथा शीताङ्ग हो जाने (Collapse) की अन्तिम अवस्थामें, हैज़ामें तथा हिमाङ्गावस्थामें पीत-ज्वरमें, जहाँ ठण्ढक, ठण्ढा पसीना, गहरी सुस्ती, श्वास-कष्ट रहता है और रोगी पंखेकी हवा खाना चाहता है। ठण्ढी जीभके साथ बहुत ज्यादा सुस्ती।

मुँह तथा कण्ठ छोटे-छोटे बैंगनी छालेके रूपके जखमोंसे भरे हैं, जो आरम्भमें तो छोटे सफेद दागसे थे, पर अब वे बैंगनी हो गये हैं और उनसे काला रक्त निकलता है। इन छालोंके गड्ढोंसे सहजमें ही खून बहता है, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है, छाले हो जाते हैं। खून बहनेवाले छालेके आकारके जखमोंके साथ मुँहमें सूखापन और यन्त्रणा। किसी भी मुँह तथा कण्ठकी दशाके सम्बन्धमें कार्बो-वेजका यह साधारण स्वरूप है। कण्ठमें कड़ा श्लेष्मा, कण्ठमें खून-मिला श्लेष्मा। ये छोटे-छोटे जखम एक साथ चलते हैं, फैलते हैं और एक बड़े ढेरके आकारमें हो जाते हैं। एक बड़ा स्थान जखम-भरा होता है, उसकी श्लैष्मिक-झिल्ली हट जाती है और फिर इससे खून बहने लगता है, उसपर छोटे-छोटे काले धब्बे पैदा हो जाते हैं। कण्ठमें जखमकी तरह यन्त्रणा रहनेके कारण भोजन निगला नहीं जा सकता। साधारणत कण्ठ फूला-सा मालूम होता है।

कार्बो-वेजके रोगीको चाय, अम्ल, मिठाई तथा नमकीन चीजें खानेकी इच्छा रहती है। बहुत-से पाचन योग्य तथा उत्तम खाद्योंसे अनिच्छा रहती है। उदाहरणार्थ,—मांस, दूध, जिनसे वायु होता है, उनको खानेकी इच्छा नहीं रहती। अब यदि हम एक कार्बो-वेजकी प्रकृतिका रोगी तैयार करना चाहें, तो उसके पाकाशयसे ही आरम्भ करना होगा। यदि हम ये शिरा-स्फीतियाँ (Varicose veins) और हृत्पिण्डका दुर्बल शैरिक पार्श्व, यह पूर्णता और रक्त-सञ्चय तथा आध्मान-वायु, यह बिगड़ा हुआ पाकाशय और अन्त्राशय (Bowels) तथा मन और मस्तककी बीमारियाँ—सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानकी शिथिलता,—तो हम उसे इसी तरह तैयार और सुदृढ़ करेंगे।

हम उसे चर्बी और मिठाई, हलवा, मटर, चटनी प्रभृति सभी न पचनेवाली चीजें देंगे और शराब भरपूर पिलायँगे, तब यह कार्बो-वेजका रोगी तैयार होगा। क्या कभी हमलोगोंको इलाजके लिये ऐसा रोगी मिलता है? ज्योंही वे आपको अपना हाल कहने लगेंगे, त्योंही आप उनके जीवनकी जानने योग्य बहुत-सी बातें जान जायँगे, कि वे खाद्य-लोलुप मनुष्य हैं, वे वर्षों तक इन चीजोंको खाते रहे हैं और अब वे यह कहते हुए आपके पास आये हैं,—"ओह डाक्टर! मेरा पेट, जरा मेरा पेट देखिये, यदि आप किसी तरह इसे ठीक कर दे सकें।" लेकिन आप उनको क्या करेंगे? उसने आपके लिये, अपनेको कार्बो-वेजका रोगी बनाया है और आपको उसके नियमित भोजनपर लानेके लिये कुछ करना होगा और अब उसको पैरसे ही फिर सुधार आरम्भ करना होगा। मैंने इतना सिर्फ आपको यह दिखानेके लिये लिखा है, कि कार्बो-वेजके रोगी कैसे आते हैं और उनका पेट कैसा रहता है और वह क्या खाया करते हैं। रोगीके पाकाशयमें जलन होती है, पाकाशय तना रहता है, लगातार डकार आती रहती है, आध्मान-वायु रहता है, बदबूदार हवा छूटा करती है। वास्तवमें वह एक बदबूदार दशामें रहता है, एक सड़ी हुई अवस्था। उसे बदबूदार पसीना होता है, उसके कलेजेमें जलन होती है, डकारें आती हैं और जो कुछ वह खाता है, पाकाशय उसे उगल देता है।

शीत—जाड़ा लगनेके बाद कार्बो-वेजके रोगीको बहुत वमन होता है। वमन और पतले दस्त, रक्तका वमन, रक्तके वमनके साथ शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है, ठण्ढी साँस चलती है। नाड़ी सूतकी तरह तथा स्वल्प-विरामशील रहती है। मूर्च्छा, मुर्देकी तरह चेहरा रहता है और गाढ़ा काला रक्त चूता रहता है। खट्टे, खून-मिले, पित्तके ढेरोंके के।

पाकाशयमें बहुत वायु इकट्ठा होता है इसी वजहसे पाकाशय तना मालूम होता है। जो कुछ खाया जाता है, वही वायुमें परिणत हो गया-सा मालूम होता है, उसे बराबर डकार आया करती है और डकार आनेपर क्षणभरके लिये उसे आराम मिलता मालूम होता है। कार्बो-वेजमें आँतों तथा पाकाशयमें मरोड़ होता है, जलनका दर्द होता है घबड़ाहट रहती है तनाव रहता है। ये सभी लक्षण डकार आने या अधो वायु निकलनेपर घट जाते हैं। डकार आनेपर घटना तो एक स्वाभाविक बात मालूम होती है, पर जब हम

चायनाका अध्ययन करते हैं, तो देखनेमें आता है, कि डकार आनेपर रोगीकी तकलीफ़ बढ़ जाती है। धारणा यह है, कि डकार आनेपर रोगीको आराम मिलता है, पर **लाइकोपोडियम** और **चायना**में ऐसा मालूम होता है, कि कोई आराम नहीं मिलता। वे बारम्बार डकार लेते हैं, पर फिर भी यही मालूम होता है, कि पाकाशय ज्यों-का-त्यों वायुसे भरा है और कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है, कि और भी बदतर हो गया। यह एक विशेष लक्षण है, पर यह साधारण लक्षणोंमें आ जाता है और कभी-कभी तो एकदम सार्वाङ्गिक हो जाता है। डकार आनेपर सर-दर्द अच्छा हो जाता है, डकार आनेपर वातका दर्द अच्छा होता है तथा बहुत तरहका तनाव और तकलीफें डकार आनेपर घटती हैं।

उदरका भरापन शरीरकी सब तकलीफोंको बढ़ा देता है। वह भरापन, जो शिराओंमें होनेवाला बताया जाता है। वह कभी-कभी मांस-तन्तुओंमें होता है, चमड़ेके नीचे होता है, यह इस तरह मानो तन रहा है। यह कार्बो-वेजका एक स्वरूप है और वातज अवस्थाओंमें सूजनका कुछ अंश इसी प्रकृतिका होता है। खाद्य-पदार्थ बहुत देरतक ज्यों-का-त्यों पाकाशयमें रह जाता है, खट्टा और सड़ा-सा हो जाता है। यह आँतोंमें जाकर और भी उफनता है। अन्तमें बदबूदार अधो-वायुके रूपमें निकल जाता है। शूलका दर्द, जलनका दर्द, भरापन, सङ्कोचन और मरोड़का दर्द इस तनावसे उत्पन्न हो जाता है, रोगी शिकायत करता है, कि पाकाशय घावकी तरह मालूम होता है, इसीका वर्णन खोंचा मारनेके रूपमें और कभी-कभी भोजन करनेपर और कभी ठण्डा पानी पीनेपर ऐसा होनेके रूपमें दिया गया है। कार्बो-वेजने पाकाशयका जखम आरोग्य कर दिया है। यह एक दीर्घ-क्रिय औषधि है और पाकाशयकी सब तरहकी गड़बड़ियोंको दूर करनेकी इसमें शक्ति है, ये गड़बड़ियाँ जो न पचनेवाली चीजें, घीकी या बहुत ज्यादा खा लेनेके कारण उत्पन्न होती है।

अन्य यन्त्रोंकी भाँति कार्बो-वेजमें यकृत भी शिथिल और निश्चेष्ट-सा हो जाया करता है, यह बढ़ जाया करता है। यकृत स्थानकी अभिवृद्धि हो जाती है और इसीलिये बवासीर पैदा हो जाती है। यकृत-प्रदेशमें दर्द और तनाव, यकृतमें जलन और स्पर्श-कातरता, जिससे पाकाशय और आँतोंकी घाव-जैसी अवस्था रहती है। यकृत-प्रदेशमें एक प्रकारका तनावका भाव रहता

है, वह अंश खिंचा सा मालूम होता है, मानो बहुत कसा हुआ हो, यकृतमें दबावका दर्द होता है और सहन नहीं होता।

पाकाशयके भरापन और अधानके सम्बन्धमें जितना कुछ हम कह चुके हैं, वही उदरके सम्बन्धमें भी लागू होता है। सेप्टिक ज्वरकी तरहके निम्न श्रेणीके ज्वरोंमें कार्बो-वेजका प्रयोग हो सकता है, जब कि पेटकी फूलनेवाली अवस्था खूब स्पष्ट रहती है, इसके साथ हो अतिसार, खून-मिला स्राव, तनाव और आध्मान भी रहता है, इतना बदबूदार वायु खुलता है, कि रोगी एकदम बदबूसे भर जाता है। कार्बो वेजका एक बहुत ही आश्चर्यजनक लक्षण यह है, कि आँतोंमें इधर-उधर वायु ढेलेकी तरह एकत्र होता है। अवरुद्ध वायु, आँतोंका सङ्कोचन एक जगह उसे इस तरह रोक रखता है, कि वह ढेले या अर्बुदकी तरह मालूम होता है, जो अन्तमें गायब हो जाता है, वायुके कारण तलपेटमें इधर-उधर उदर-शूलका दर्द। तलपेटमें जलन होती है, चाहे कोई भी बीमारी क्यों न हो, कार्बो-वेजमें हमेशा ही वहाँ जलन होगी, वह अंश जलता है, वह भरा मालूम होता है, वह जगह रक्तसे फूलती और सूजन जैसी हो जाती है। अतिसार, आमाशय, हैजा जब खून मिला या पानीकी तरह दस्त आते हैं। बच्चोंका हैजा, मल श्लेष्मा मिश्रित रहता है, पानीकी तरह रक्त मिली आम, बर्फ शीत, पीलापन और ठण्डे पसीनेके साथ सुस्तीसे म्लान हो पड़ता है। नाक, चेहरा और ओठ सिकुड़े और आसन्न मृत्यु कालकी तरह हो जाते हैं, समस्त पतले दस्तवाली बीमारियोंमें सुस्ती कार्बो-वेजको बहुत कुछ निर्देश करेगी, यदि दस्त न भी निर्देश करे। कार्बो-वेजके अतिसारमें सब तरहके दस्त, चाहे किसी तरहके भी हों, सड़े होते और उनमें सड़ी बदबू रहती है। जितना ही ज्यादा पतला, गहरी काली आम रहेगी, उतना ही इस दवाका निर्देश होगा। मलद्वार और उसके चारो ओर खुजली, जलन और खाल उधड़नेका भाव, ये सभी कार्बो-वेजके सुदृढ स्वरूप हैं, सभी अतिसारकी दशामें यन्त्रणा—तलपेटकी दबानेपर फोड़ेकी तरह यन्त्रणा, बच्चोंके मलद्वारके चारों ओरकी खाल उधड़ जाती है। वह अंश लाल कच्चा और और खून निकलता हुआ रहता है और वहाँ खुजली होती है, जवानोंका मलद्वार खुजलाना, आँतोंमें घाव हो जाना, इस दवाकी प्रकृतिके अनुकूल ही श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जखम हो जाता है। जहाँ कहीं श्लैष्मिक-झिल्ली रहती है, वहीं जखम हो जानेकी सम्भावना रहती है। छालोंकी तरह इन्स, पेयर्स ग्लैण्ड (आँतकी गांठ) में

जखम, रोगी बिछावनपर पडा रहता है तथा पतला खून मिला तरल बह्वा करता है, यह खून मिले रक्ताम्बु की तरह होता है।

मूत्राशयकी श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाहवाली पुरानी अवस्था, जब कि पेशाबमें श्लेष्मा मिला रहता है, खासकर वृद्ध पुरुषोंके ठण्डे हाथ-पैर और ठण्ढा पसीना, पेशाब रुका हुआ रहता है।

पुरुष तथा स्त्री—दोनोंकी ही जननेन्द्रियमें कमजोरी और शिथिलता रहती है, पुरुष-लिङ्ग तो झूल पडता है। जननेन्द्रियकी शिथिलता, ठण्डी और पसीना भरी जननेन्द्रिय, आप-से-आप तरल रस चुआ करता है।

स्त्रियोंकी शिथिलताका पता तो नीचेकी ओर खिंचावकी अनुभूतिसे होता है, जरायुका नीचेकी ओर खिचाव, मानों भीतरी अंश निकल पडे गे। जरायु इस तरह नीचे खिच आता है कि वह पैरोंके बल खडी नहीं हो सकती, सभी भीतरी यन्त्र भारी मालूम होते हैं और नीचे लटका करते हैं।

कार्बो-वेजका दूसरा जबर्दस्त लक्षण है, जरायुसे काला चूनेवाला रक्त-स्राव, यह अकसर बहुत ज्यादा मात्रामें नहीं होता—झोंकसे होनेवाला रक्त-स्राव—उस दवामें यह भी है—लेकिन यह टपकनेवाला स्राव है, मासिक ऋतु-स्राव भी एक महीनेके बाद दूसरे कालतक चूता रहेगा। रक्त बदबूदार और गहरा, यहाँतक कि काला होता है, उसमें छोटे-छोटे थक्के रहते हैं और इसके साथ बहुत-सा रक्ताम्बु निकल जाता है, पाठ्य-ग्रन्थमें कहा है :—"जरायुमें उत्तेजनाके कारण अतिरजः," दुर्बलता इस अवस्थाका एक बढिया नाम है। ओजका अभाव शिथिलता, मास-तन्तुओंकी दुर्बलता। कार्बो-वेजकी प्रकृतिमें दुर्बलता सर्वत्र वर्त्तमान रहती है मास-पेशियाँ क्लान्त रहती है, प्रत्यङ्ग सब थके रहते हैं और समूचा शरीर क्लान्त और शिथिल रहता है। **बेलेडोना, इपिकाक, सिकेलि** और **हैमामेलिस**में जो झोक पाया जाता है, उससे यह विपरीत है। उनमें झोंकसे रक्त निकलता है और स्वाभाविक रूपसे उसके बाद जरायुका सङ्कोचन होता है, क्योंकि इस सम्बन्धमें कुछ-न-कुछ बल वहाँ रहता ही है, कार्बो-वेजमें प्रसवान्तिक स्राव या मासिक रज-स्राव या आकस्मिक रक्त-स्राव सबमें ही जरायु संकुचित नहीं होता। दुर्बलताकी वजहसे जरायु थोडा बढ जाता है (Sub-involution), सङ्कोचन बिलकुल नहीं होता, बल बिलकुल नहीं रहता, कमजोरी और शिथिलता रहती है। रज स्राव होनेके बाद या प्रसव और अन्य उपसर्गोंके बाद एक ऐसी दुर्बलताकी अवस्था आती है, जिसमें कार्बो-वेज ठीक

बैठता है, यदि फुल (Placenta) भीतर रुका रहता है, इसके साथ ही बहुत थोडा रक्त-स्राव होता है—ठीक टपकनेकी तरह—झोंकसे रक्त निकलनेकी प्रवणता नहीं रहती—तो चिकित्सकको याद आ जाता है कि समूचे गर्भ कालमें और प्रसवकालमें दर्द धीमा और शिथिल होता रहा है और वह कहता है—"मैंने पहले कार्बो-वेजके विषयमें क्यों नहीं सोचा?" उस स्त्रीको महीनो पहलेसे कार्बो वेजकी जरूरत थी। वह एक खुराक दे देता है और उसे इस विषयमें कुछ सोचनेका समय मिलनेके पहले ही, जरायु फूलको निकाल फेंकेगा और सब काम इतनी उत्तमतासे ठीक-ठीक कर देगा, कि उसपर शस्त्र प्रयोगकी जरूरत ही न पडेगी, जिसकी नहीं तो आवश्यकता आ पडती।

आजकल हमलोग इस हस्त-क्षेपक धात्री-चिकित्सा यह खरोंच निकालना (Curetting) तथा वह यह करनेके विषयमें इतना अधिक सुनते हैं, कि उससे होमियोपैथिक चिकित्सक निराश-सा हो पडता है, मानो वे अब प्रकृति द्वारा निर्माण किये हुए न हों और वे अपना यत्न आप नहीं कर सकते, मानो उन्हें अवश्य ही झाड-पोछकर साफ करना और पिचकारीसे धोना चाहिये। ये इन्जेक्शन और बाइ-क्लोराइड प्रभृति, जो किसी स्त्रीके शरीरसे कीडे निकालनेके लिये दिये जाते हैं, सभी वृथा है। यदि सुश्रृङ्खलित अवस्था उत्पन्न हो जाये, तो कीडे उत्पन्न ही नहीं होंगे, एक होमियोपैथिक चिकित्सक ऐसे सैकडों रोगियोंका प्रबन्ध कर सकता है और उसे कोई तकलीफ़ न होगी। यदि वह पहलेसे ही स्पष्ट देख लेता है, कि उस औरतको किस दवाकी जरूरत है, तो कोई रोगिनी खराब न होगी, अपनी निगरानी वे आप कर लेंगी, प्रसव होनेके पहले यदि वह स्त्री ठीक कर दी जाये तो अनियमित सङ्कोचन जिनकी वजहसे अस्वाभाविक दशा उत्पन्न हो जाती है, हटा दिया जा सकता है। कार्बो वेज एक वह दवा है, जो स्त्रीको प्रसवके उपयुक्त बनाता है अर्थात कार्बो-वेज माननेवाले लक्षण ऐसी दशाओंमें अकसर मौजूद रहते हैं। उसका स्वास्थ्य अकसर भग्न, शिथिल और क्लान्त हो जाता है, गर्भावस्था बहुत-सी गैरमामूली दशाएँ उत्पन्न करती है, गर्भावस्थामें मिचली होती है, पेट फूलता है, बदबू आती है, कमजोरी रहती है और शिराएँ वर्द्धित रहती हैं, उनसे ही आपको मालूम हो जायगा, कि निम्न-अङ्गोंकी शिराओंकी वृद्धि दबावके कारणसे है, पर यह साधारणतः दबावके कारण नहीं होता, पर उनकी शिराओंकी कमजोरीके कारण होता है।

दूधका रुक जाना, दूध स्तनसे पिलानेके कारण सुस्ती या बहुत कमजोरी। स्वाभाविक अवस्थामें बच्चोंको स्तन पिलाकर किसी स्त्रीको कमजोरी नहीं मालूम हो सकती। बीमार रहनेके कारण ही वह ऐसी हो जाती है, दूध पिलानेवाली दशाके पहलेसे ही वह कमजोर हो रही थी और यह कमजोरी उचित दवा देकर ठीक कर देनी चाहिये, तब वह अपना दूध तैयारकर बच्चेको बिना कष्टका अनुभव किये ही पिला सकेगी, ऐसे ही सुशृङ्खला होती है। कार्बो-वेज स्त्रियोंका दोस्त है तथा उसकी सन्तानका भी मित्र है। दस बरसतक वास्तविक होमियोपैथिक चिकित्साके बाद, आपको आश्चर्य हो जायगा, कि आपके सामने ऐसे कदाकार बच्चे है, वे बढे और उन्नत हो गये है, उनके छोटे-छोटे दोष और कदाकारिता दूर कर दी गयी है तथा वे अन्य बच्चोंसे कही सुन्दर है, क्योंकि वे नियमसे रखे गये है। चिकित्सक उन्हें देखता और अध्ययन करता है और कभी-कभी उन्हें ठीक रखनेके लिये ऐसी दवा दे देता है, जिसे उनकी माता चीनी समझती है। उसे यह जाननेकी जरूरत ही नही है, कि यह दवा है तथा बच्चेमें कोई दोष है, इस तरह वह उस बच्चेको अभिवृद्धि देखता है तथा उसे सब अस्वास्थ्यकर प्रवृत्तियोंसे बाहर निकाल रखता है। जो बच्चे होमियोपैथिक चिकित्सककी तत्त्वावधानमें बढते हैं, उन्हें कभी यक्ष्मा या कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease) होगा ही नही। वे सभी सुशृङ्खलामें ले आये गये है और वे वृद्धावस्था प्राप्तकर मरेंगे या व्यवसायके कारण उनका स्वास्थ्य भङ्ग होगा तो वे भाग नही निकलेंगे। इसलिये चिकित्सकका यह कर्त्तव्य है, कि बच्चो पर नजर रखे, जीवनका सबसे बडा काम है उनकी वंशगत दोषोंसे रक्षा तथा उनकी निम्नाभिमुखी प्रवृत्तियो से उनको बचाना। इसीलिये उनका जीवन-धारण है। जब छोटे बच्चो में यह प्रवृत्तियाँ पैदा होती दिखाई दे, तो यह कभी न कहना चाहिये, कि ये माता-पिताके दोषके कारण हुई है, यह केवल नुकसान पहुँचाता है और इससे कोई लाभ नहीं होता। चिकित्सक क्या कर रहा है, यह उसका अपना ध्यान है और सबसे बडा आराम जो वह इससे प्राप्त कर सकता है, वह उसका अपना है, उसे कभी इस बातकी आशा न करनी चाहिये, कि जो उसने किया है या जिसे छोडा है, लोग उसे तारीफ करेंगे। जो चिकित्सक अपने कार्यों की प्रशंसा या सहानुभूति चाहता है, उसे विवेक नहीं है। सज्जन, ठीक, सच्चा चिकित्सक रात्रिमें कार्य करता है, वह अन्धकारमें कार्य करता है, चुपचाप

कार्य करता है, यह प्रमाणकी खोज नहीं किया करता। यह ऐसा उस समय करता है, जब किसी घरमें बुलाया जाता है या जब परिवारवाले मनुष्य दवाखानेमें छोटे बच्चोंको लाते हैं, इस तरह बच्चोंका अध्ययन किया जा सकता है और उनके लक्षण जांचे और ध्यान दिये जाते हैं। जब कभी माता दवाकी इच्छासे बच्चे को लाती है उसको यह मालूम हो जाना चाहिये, कि बच्चोंको दवा मिल रही है, पर जब यह दवा न दिलाना चाहे तो उसे यही मालूम होना चाहिये कि बच्चोंको केवल चीनी दी जा रही है, इस तरह डाक्टरपर उसका विश्वास रहेगा इतना ही काफी है।

कार्बो-वेजमें आवाज़से बहुत से लक्षण प्रकट हो जाते हैं। नाककी सर्दीका वर्णन करते समय इसका बहुत कुछ आभास हमने दिया है। मैंने बताया है, कि किस तरह यह नाकमें शुरू होती है और कण्ठ, स्वर यन्त्र और वक्षमें चली जाती है। स्वर-यन्त्रकी बहुत सी बीमारियाँ नाकमें सर्दीकी वजह होती हैं, जो फिर सदाके लिये स्वर यन्त्रमें घर बना लेती हैं और इसी तरह हमलोगों को कार्बो-वेजके रोगीका पता लगता है। यह शायद ही कभी होता है, कि कार्बो-वेजकी सर्दी पहले स्वर-यन्त्रमें बैठती है। यह अमूमन नाककी राहसे जाती है। बहुत-सी दवाओं में सर्दी पैदा होनेका एक-एक क्रिया स्थान होता है। उदाहरणार्थ,—**फास्फोरस**के अधिकांश रोगियों की सर्दी वक्ष या स्वर-यन्त्रसे आरम्भ होती है, पर कार्बो-वेजमें ऐसा नहीं होता। इसकी सर्दी अमूमन नाककी सर्दी से आरम्भ होती है और स्वर-यन्त्र तो केवल उसके ठहरनेका स्थान होता है। यदि कार्बो-वेजकी सर्दी वक्षमें चली जाती है, तो यह श्वासोपनलियों (Bronchial tubes) या फेफड़ेमें अन्त हो सकती है। यह उसके रहनेका प्रिय स्थान है और ऐसा मालूम होता है, कि यह वहाँ रहना चाहती है। बोलनेपर स्वर-यन्त्रमें कमजोरी मालूम होना, कमजोर शिथिल मनुष्य तथा वक्ताओं और गवैयों के थके स्वर-यन्त्र। **स्वर-भङ्ग शामको वक्त उत्पन्न होता है।** स्वर-यन्त्र सवेरे खासा साफ रह सकता है पर ज्यों ही शाम होती है, उसकी आवाज़ भर्रायी हो जाती है। और भी बढे रूपमें, सवेरेके वक्त तो उससे बोला नहीं जाता, पर शामको स्वर-भङ्ग और आवाज़का भर्रा जाना इसका विशेष चरित्रगत लक्षण है। शामको आवाज़ भर्रायी और खाल उधड़ जानेका भाव। खाँसनेके समय स्वर-यन्त्रमें खाल उधड़नेकी तरह मालूम

होना, कोई कहेगा वहाँ जलन है, कोई उसे यन्त्रणा बतायगा। खाँसनेके समय स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना, स्वर-यन्त्रमें लगातार श्लेष्माका बनना, जिससे रोगी खाँस-खाँसकर निकालते रहनेकी चेष्टा करता है। इसमें श्लैष्मिक-झिल्लीमें भी यही कमजोरीकी प्रवणता दिखाई देती है। सुधरने या आरोग्य होनेकी कोई भी प्रवृत्ति नहीं रहती, स्वर-यन्त्र और टेंटुआकी श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहके कारण वह बदतर ही होता जाता है। बोलनेपर स्वर-भङ्ग और खाल उधड़नेका भाव, तीसरे पहर और शामको यह बदतर रहता है। उसे बाध्य होकर इतनी बार शामके वक्त अपना कण्ठ साफ करना पड़ता है, कि उसकी खाल उधड़ जाती है और घावकी तरह यन्त्रणा होने लगती है। अब मुझे मैटिरिया-मेडिकाके सम्बन्धमें एक दूसरी बात बताने दीजिये। इस दवाके बहुतसे परीक्षक अज्ञ पुरुष थे, इसलिये परीक्षामें वचनोंसे आपसमें कुछ गड़बड़ी है, चिकित्सकको इस बातपर ध्यान रखना चाहिये। खाँसनेपर कण्ठमें उपदाहका अर्थ करीब-करीब हमेशा यह है, कि स्वर-यन्त्रमें ही उपदाह है, यद्यपि परीक्षकने "कण्ठ" कहा है। अब एक दूसरी बात यह है,— कि बाध्य होकर उसे इतनी बार अपना कण्ठ साफ करना पड़ता है, कि स्वर-यन्त्र कच्चा और घावकी तरह यन्त्रणासे भरा हो जाता है। कण्ठका साफ करना, स्वर-यन्त्रमें यन्त्रणा नहीं उत्पन्न कर सकता। कण्ठको खरोंचनेपर स्वर-यन्त्र नहीं खुरच जाता, पर उसे बाध्य होकर जल्दी-जल्दी अपना **स्वर-यन्त्र** इस तरह साफ करना पड़ता है, कि वह अन्त खाल उधड़ा-सा मालूम होने लगता है। जखमकी तरह दर्द, स्वर-यन्त्रका खरोंचना और सुरसुरी, स्वर-यन्त्रके उपदाहके कारण छींक आने लगती है। स्वर-यन्त्रका यक्ष्मा। यह स्वर-यन्त्रके श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी अवस्था तथा स्वर-यन्त्रका सुधार न होना, तबतक जारी रहता है, जबतक यक्ष्मा नहीं हो जाता।

हूपिङ्ग खाँसीकी कार्बो-वेज एक बहुत बड़ी आरम्भिक दवा है। हूपिङ्ग खाँसीका होनेवाले लक्षण मुँह बन्द हो जाना, वमन तथा चेहरेकी लाली, सभी इसमें वर्त्तमान रहते हैं। जब रोगी गड़बड़ाया रहता है, तो यह उसकी हमलोगोंकी सर्वश्रेष्ठ दवा है। जब खाँसीसे किसी भी दवाका निर्देश नहीं होता या जब यह आंशिक-रूपसे वर्द्धित अवस्थामें रहती है। कार्बो-वेजकी एक ही खुराक बहुत कुछ उत्पन्न कर देगी और हूपिङ्ग खाँसीकी हलकी बीमारियाँ तो कई दिनोंके भीतर ही आरोग्य हो जाये गी। जब यह दवा

सदाके लिये आरोग्य नहीं करती, तो यह दूसरी दवाके बतानेवाले लक्षणोंको और भी स्पष्ट कर देती है। होमियोपैथिक चिकित्सकके तत्वावधानमें हूपिङ्ग खाँसीके बहुतसे रोगी, चुनी हुई दवा देनेसे एक सप्ताह या दस दिनोंमें ही आरोग्य हो जायेंगे, पर जब उन्हें बने रहने दिया जाता है, तो बहुत दिनोंतक बनी रहती है, यहाँतक कि बढ़कर छः सप्ताहतक जारी रहती है और फिर मौसमके अनुसार कम पड़ती है। यदि यह उतरनेकी ओर है, तो कभी-कभी जाड़ेभर खाँसी आती रहेगी। इसीलिये हूपिङ्ग खाँसी होमियोपैथिक चिकित्सकोंको यह दिखा देनेका अवसर देती है, कि होमियोपैथीमें कुछ है।

कार्बो-वेजके रोगीकी श्वासकी बहुत-सी तकलीफें होती हैं। दम घुटना, लेट नहीं सकना, वक्षमें कमजोरीका भाव, मानो वह दूसरी बार साँस न ले सकेगा। कभी-कभी तो हृत्पिण्डकी कमजोरीके कारण ऐसा होता है और कभी वक्षके जकड़ जानेके कारण पिछला ही साधारणतया होता है। कभी-कभी दमाकी तरह यह श्वास-कष्ट रहता है। यह दवा दमाको आरोग्य करती है। हम किसी खुली खिड़कीके पास रोगीको कुर्सीके सहारे देखेंगे या परिवारका कोई मनुष्य उसे सम्भवभर तेजीके साथ पंखेसे हवा करता दिखाई देगा। चेहरा ठण्डा, नाक सिकुड़ी, हाथ-पैर ठण्डे तथा वह मुर्देकी तरह पीला दिखाई देगा। उसके मुँहके सामने हाथ रखिये, आपको साँस ठण्डी मालूम होगी। साँस बदबूदार रहती है, सड़ी, शरीरकी अपेक्षा हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं, केवल हाथ ही नहीं, बल्कि समूचा ऊपरी हाथ और केवल पैर नहीं, बल्कि धड़तक प्रत्यङ्ग ठण्डे रहते हैं। केवल धड़ गरम मालूम होता है, यहाँतक कि चमड़ा भी ठण्डा रहता है।

कार्बो-वेजमें ओकाई और वमनके साथ घरघरानेवाली खाँसी आती है। वक्षमें घरघराहटके साथ सवेरेके समय खाँसी, वक्ष श्लेष्मासे भर जाता है और उसे निकालनेकी चेष्टामें रोगी खखारता और खाँसता है या खाँसता और वमन करता है। वक्षके श्लेष्माके कारण दिनमें किसी भी समय एक निश्चित प्रकारका श्वासरोध, मुँह बन्द हो जाना या ओकाईके साथ खाँसी पैदा हो जा सकती है, वह बलगम निकाल नहीं सकता। बलगम कड़ा, पीबकी तरह, पीला और गाढ़ा होता है। जीवनी शक्ति बहुत कमजोर हो जाती है, अत्यधिक शिथिलता भग्न स्वास्थ्य पुरुष, वृद्ध पुरुष, खाँसी या बहुत दिनोंके

परिश्रमके कारण भग्न-स्वास्थ्य पुरुष, सुस्ती, बहुत ज्यादा बलगम निकलनेके साथ वक्षकी सर्दी।

कभी-कभी कड़ी, सूखी खुसखुसी खाँसी भी आ सकती है, पर अन्तमें बहुत देरतक खाँसनेके बाद यह ढीली होने लगती हैं और रोगी बहुत-बहुत-सा बलगम थूकने लगता है। सूखी खुसखुसी खाँसी रहती है, पर इतनेपर भी वक्षमें घरघराहट रहती है और खाँसनेपर कोई लाभ होता नहीं दिखाई देता। वह खाँसता मालूम होता है और सुस्त हो जाता है, पसीना होने लगता है और हाँफने लगता है। ऐसा मालूम होता है, मानो खाँसीके कारण उसका दम घुट जायगा, अन्तमें मुश्किलसे थोड़ा-सा बलगम निकाल पाता है और फिर लगातार एकके बाद एक मुँहभर गाढ़ा, पीबकी तरह बलगम निकला करता है। आक्षेपिक खाँसीका भयानक आवेग कई मिनटोंतक स्थायी होता है, कभी-कभी एक घण्टेतक। ठण्डा पसीना, सर्दी और सिकुड़ा चेहरा दिखाई देता है। ज्यों-ज्यों खाँसीका आवेग होता जाता है, त्यों-त्यों यह बढ़ता जाता है। उसका चेहरा घबड़ाया दिखाई देता है, खाँसीके आवेगमें उसे इतनी ही ज्यादा तकलीफ़ होती है। पुराने यक्ष्माके रोगियोंकी बढ़ी हुई अवस्थामें यह अवस्था रहती है। ऐसी अवस्थामें कार्बो-वेज जब वे आरोग्य नहीं किये जा सकते तो एक अत्यन्त उपशामकके रूपमें कार्य करता है। यह वक्षकी मांस-पेशियोंको बलवान करता मालूम होता है, जिसमें कि रोगी अच्छी तरह बलगम निकाल सके। यह खाँसीको रोकता है। मुँह बन्द हो जाना, ओकाई और श्वासकष्टमें आराम पहुँचाता है और सामयिक रूपसे उसकी उन्नति हो जाती है। वक्षमें कमजोरी और श्वास-कष्टके साथ बहुत-सी दुरारोग्य अवस्थाओंमें यह एक आश्चर्यजनक उपशामकके रूपमें कार्य करता है। कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाहमें (Bright's disease), यक्ष्मामें तथा कर्कट-जनित रोगोंमें कार्बो-वेज तीव्र लक्षणोंको नाश कर देता है और बहुत कुछ सम्हाले रखता है।

हूपिङ्ग खाँसीमें इसी दवासे आरम्भ करना चाहिये। यह रोगको बहुत सरल बना देता है और कभी-कभी तो कई दिनोंमें ही आरोग्य कर देता है। रोगी तबतक खाँसता रहता है, जबतक वक्षसे यन्त्रणा नहीं दूर हो जाती, मानो उसके सीनेपर खूब मारा गया है। रातभर उसे खाँसीका आवेग रहता है, वह ड्रोसेरा-की तरह खाँसीके आवेगमें ही सोता है वह खाँसता, हाँफता,

पसीनेसे भरा और श्वास-रुद्ध भावसे ही नींदसे जागता है। दो-तीन घण्टेतक उसे आवेश नहीं भी रहेगा और फिर वह दौरा पैदा होगा जो एक घण्टेतक रहेगा। रातमें उसे दो-तीन बार जोरका खाँसीका दौरा होता है, वह (बलगमसे) भरने लगता है, वह घरघराहट भरी श्वास सुनता है और वह पहलेसे ही जान जाता है, कि अब कठिनाईका समय आ रहा है।

दमाके रोगीके जीवनभर ऐसा ही चला करता है। इसे ही तर दमा (*Humid asthma*) कहते है, वास्तविक तर दमा तो उन्हें होता है, जिनको छोटी श्वासीवनलियोंके सङ्कोचनकी बीमारी रहती है। जिससे कि सबसे स्वस्थ अवस्थामें रहनेपर भी उनके वक्षमें धीमी सीटी बजनेकी तरह आवाज़ हुआ ही करती है। जितनी ही बार इन रोगियोंको सर्दी लगती है, इनके वक्षकी सीटी-सी आवाज़ बढ जाया करती है। उन्हें बलगम पहले तो बहुत ज्यादा निकलता है, फिर कडा और अन्तमें पीव मिला आने लगता है, इन सब कालोंमें बहुत अधिक दमा-जनित श्वास-कष्ट रहता है। उन सब दमाके रोगियोंको कार्बो-वेज सर्वश्रेष्ठ दवा है, जहाँ कि श्वास लघुता इतनी स्पष्ट रहती है, कि आंशिक रूपसे अम्लजान प्रवेश कर पाता है (Oxidation) और इसीका यह नतीजा होता है कि रोगीको सर-दर्द हो जाया करता है और वह पखेकी हवा खाना चाहता है, बारम्बार होनेवाले दमाके पुराने रोगी, जितनी ही बार गर्म तर हवा चलती है, उसका दमा पैदा हो जाता है। कार्बो-वेजके दमाका दौरा रातमें होना एक साधारण बात है, उसे दौराका पता नहीं रहता, सोने जाता है, सिर्फ इतना ही कहता है, कि "आजकी हवा अच्छी नहीं है" और वह दमासे जाग पडता है। वह श्वासरुद्ध होता हुआ जागता है, पलङ्गसे उछल पडता है और खिडकीके पास चला जाता है या पखेकी हवा खाना चाहता है।

कार्बो-वेजके पुराने, कुचिकित्सित न्युमोनियाके रोगीके लिये जरूरत पडती है जिसके साथ ब्राङ्काइटिसका कुछ अंश रहता है। उन रोगियोंमें जिन्हें फेफडेकी यकृत भाव प्राप्ति तो हो गयी (Hepatization), पर उसकी सफाई न हुई तथा फेफडोंमें और श्वासनलियोंमें बुरे स्थान हो गये, साथ ही वक्षमें कमजोरी आ गयी। खाँसनेके समय वक्षमें दुर्बलता, वह समझता है, कि वक्षकी मांस पेशियोंमें काफी ताकत नहीं है, जिससे पूरी तरह बलगम निकाल सके या उसकी साँस लेनेमें मदद पहुँचा सके। न्युमोनियाकी तीसरी अवस्था,

बदबूदार बलगम, ठण्डी साँस, ठण्डा पसीना, पङ्खेकी हवा खानेकी इच्छा, फेफड़ोंमें पक्षाघात हो जानेकी सम्भावना। यही रोगकी सम्मिलित अवस्था है, जिसको यह दवा पूरी तरह ढँक लेती है। कभी-कभी तो ये दमाके रोगी इस अवस्थामें थोड़े ही समयतक रहते हैं, इसके बाद गुटिकाओं (Tubercles) से रक्त-स्राव होने लगता है। यदि कार्बो-वेज पहले पड सके तो यह रक्त-स्राव रोक देगा।

वक्षमें दर्द और जलन होती है। फेफड़ोंमें जलन, वक्षके पार्श्वोंमें जलन, खाँसीके साथ जलन, वक्षोस्थिके पीछेकी ओर जलन—समूचे टेंटुआमें जलन। खाँसनेके समय जलन बढ जाती है, यहाँतक कि साँस लेनेके समय भी खाल उधड़नेकी तरह मालूम होता है। उसे अपने वक्षपर दबाव, भारी, भार मालूम होता है। ये ही सब कितने ही किस्मके शब्द हैं, जिनका रोगी व्यवहार करता है, पर एक ही चीज़के ये सब वर्णन हैं।

हृत्पिण्डमें भी बहुत तरहकी तकलीफें होती हैं। यह मानो जोर लगाता-सा मालूम होता है, इसमें सन्देह नहीं कि हृत्पिण्डके शैरिक-पार्श्वमें ही तकलीफ़ रहती है, नसें मोटी पड जाती हैं, यह एक सम्पूर्ण रोगीकी शैरिक अवस्था है। शिराएँ अपना काम बहुत कठिनाईसे कर रही हैं, एक शिथिलता, जोर लगानेवाली अवस्था और रक्तमें भी उत्तेजना रहती है—उसीको कितने ही ग्रन्थकारोंने कामोत्तेजन लिखा है और कितनों ही ने इसे हृत्पिण्डकी विचलित क्रिया बताया है, जो सम्पूर्ण शरीरमें अनुभव होती है, समस्त शरीरमें स्पन्दन अनुभव होना, ऊपरकी ओर तापकी झलक चढ़ती है, जो पसीना होकर अस्त होती है। कभी-कभी यह वयःसन्धि-कालमें स्त्रियोंके लिये उपयोगिनी होती है, खासकर बढी हुई उमरके मनुष्योंके लिये उपयोगी है।

जवान मनुष्योंकी दुर्बलताकी अवस्थामें कार्बो वेजकी बीमारियाँ होती हैं, जैसे कि मध्य-वयसके पुरुषोंको असमयमें ही बुढ़ापा आ जाता है या स्वाभाविक रूपसे बुढ़ापेमें जो स्वास्थ्यभङ्ग होता है, वर्द्धित शिराएँ या पूर्ण शिराएँ और हाथ-पैर ठण्डे रहनेवाले प्रौढ पुरुषोंके लिये एक बहुत बडा लाभ पहुँचानेवाला है, कलेजा धडकनेके साथ रक्तका चूना—हृत्पिण्डकी विचलित (Turmultuous) क्रिया। एक बडी मेशीनकी तरह दौरान जारी रहता है, जो समूचे शरीरको हिला देता है।

नाड़ी प्राय अनुभवमें ही नहीं आती, ऐसा मालूम होता है, कि रक्तका झोंक बहुत अधिक होना चाहिये, पर यह ऐसा नहीं रहता है, सम्पूर्ण नाड़ी-मण्डलकी कमजोरी, नाड़ी अनियमित, सविराम, तेज। कैशिकाओंमें रक्त रुक जाता है, सम्पूर्ण स्पर्श-ज्ञान शून्यता, पक्षाघातकी सम्भावना, हृत्पिण्ड-प्रदेशमें जलन, इसके साथ ही वक्षमें घबड़ाहटकी एक भयङ्कर अनुभूति रहती है—हृत्पिण्ड-प्रदेशमें—मानो वह मरना ही चाहता है या कुछ होना चाहता है, उस विकृत क्रियाको वह अनुभव करता है और क्लान्त हो पड़ता है।

इस दवापर विचार करते हुए मैंने प्रत्यङ्गोंके विषयमें, उनकी ठण्डक और ठण्डे पसीनेके विषयमें, इतना अधिक कहता है, कि हाथ पैरोंके अधिकांश लक्षण बता दिये हैं। सार्वाङ्गिक प्रकृतिगत विशृङ्खलताओंकी कार्बो वेज उस समय बहुत बढ़िया दवा होती है, जहाँ निस्तेज शिराओंके जखम निम्न-प्रत्यङ्गपर होते हैं—पैरपर घुट्ठोंके ऊपर। इन जखमोंमें तेजी नहीं होती, इनसे पतला पानीकी तरह स्राव होता है या यह गाढ़ा खून-मिला और खुजली पैदा करनेवाला होता है। जलन करनेवाले निस्तेज घाव, शिरा प्रसारणवाले जखम, प्रत्यङ्गोंकी सूजन, बहुत कमजोर खूनका दौरान रहनेके कारण सड़न-वाली अवस्था, सड़नवाली अवस्था जैसी वृद्ध पुरुषोंको होती है। वार्द्धक्यके सड़नेवाले घाव, प्रत्यङ्ग फट जाते हैं, अंगूठा और निम्नाङ्ग फटता है और गदला दिखाई देता है, उनपर छाले निकलते हैं और उनसे खून तथा जलीय तरल निकलता है, आगकी तरह जलन होती है, अनुभूतिका क्षय, सन्धियोंमें अकड़न, अंगूठेके बीचमें खाल उधेड़ देनेवाला पसीना और सुन्नपन, पड़े हुए अङ्गके सुन्नपन। यदि रोगी दाहिनी करवट सोता है, तो दाहिना हाथ सुन्न हो जाता है, यदि बाईं करवट बदलता है, तो बायाँ बाहु सुन्न हो जाता है। उस अङ्गका खूनका दौरान इतना कमजोर रहता है, कि यदि किसी तरहका दबाव पड़ता है, तो वह सुन्न हो जाता है। बदन ठण्डा रहता है, हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं, वह निस्तेज, दुर्बल और हमेशा क्लान्त रहता है, शारीरिक या मानसिक परिश्रमकी इच्छा नहीं होती, थोड़ा सा भी परिश्रम करनेपर एक ऐसा भाव आ जाता है, कि अब बेहोश हुआ या दिमाग हो जायगा।

नींद सपनोंसे भरी होती है, वह श्वासकष्टके साथ जागता है, ठण्डे प्रत्यङ्ग लिये जागता है, खासकर घुटने ठण्डे रहते हैं, नींदमें पैर ऊपर खिंचे रहते हैं। नींदके बाद भी स्फूर्ति नहीं आती, इस ढङ्गसे उन बहुत-से रोगियोंको

जैसे स्वप्न दिखाई देते हैं, वैसे यह भी देखता है, जहाँ कि यह दवा इतनी प्रचण्डतासे शिराओंपर क्रिया करती है, मस्तिष्कके तलदेशपर क्रिया करती है तथा ऐच्छिक सस्थानपर कार्य करती है। वे भयङ्कर होते हैं, वह नींदमें आग, चोर, डाकू, डरावनी और भयङ्करी चीजें देखता है। घबड़ाहट, बेचैनी और मस्तकमें रक्त-सञ्चय उसे सोने नहीं देता, माथेमें खूनका दौरान हो जाता है उसका सर गर्म मालूम होता है, पर हाथ लगानेपर शरीर ठण्डा अनुभव होता है। वक्षका भीतरी भाग ऐसा मालूम होता है, मानो जल रहा है, पर वक्षका बाहरी भाग हाथ लगानेपर ठण्डा मालूम होता है, ऐसी ही अवस्था तलपेटकी भी रहती है। भीतरी गर्मी और जलनकी अनुभूति होती है, पर बाहरी ठण्डक कार्बो वेजका एक साधारण स्वरूप है।

बहुत ही तेज़ ज्वर रहता है और बहुत ही वेगका शीत या जाड़ा मालूम होता है, इसमें सन्देह नहीं कि जाड़ा लगनेके समय वह ठण्डा रहता है, पर एक आश्चर्यजनक बात और भी रहती है, जाड़ेके समय वह ठण्डा पानी पीना चाहता है और जब बोखार चढ़ जाता है, तो प्यास नहीं रहती। यह एक अद्भुत और असाधारण बात है, बोखारकी गरमीके समय रोगीको प्यास लगना तो साधारण बात है और जब सर्द हो जाये, तब पानी न मांगना। पसीनेके समय भी पानी न मांगना एक साधारण बात है, पर इसके रोगीमें आप ठण्डक, कम्प, ठण्डी सांस और यहाँतक कि शीतमें भी ठण्डा पसीना देखते हैं और आप कहते हैं, कि यह आश्चर्यकी बात है, कि वह इतना ठण्डा पानी पीता है, यह वास्तवमें अद्भुत है, असाधारण है और मुश्किलसे दिखाई देनेवाला है। इसीलिये यह कार्बो-वेजकी ज्वरकी अवस्थाका एक सुदृढ़ स्वरूप है।

इसी दवाके शीतके साथ शरीरका एक अंश अकसर स्वाभाविक दशामें गर्म अनुभव होता है अर्थात स्वाभाविक रूपसे गर्म, पर दूसरा पार्श्व ठण्डा रहता है, एक तरफ शीत, शरीर बरफकी तरह ठण्डा रहनेके साथ जाड़ा, तेज़ प्यासके साथ शीत, सहजमें ही पसीना होने लगता है, खासकर माथा और चेहरेपर पसीना होता है। क्लान्त कर देनेवाला, रात या सवेरेका पसीना, बहुत ज्यादा पसीना होता है, सड़ा या खट्टा।

पीत ज्वरकी तरह निम्न-श्रेणीका ज्वर और बहुत ही निम्न-श्रेणीका मोह-ज्वर (Typhus) या सान्निपातिक ज्वर (Typhoid)। बोखार कुछ दब जानेके बाद, उसपर बहुत देरतक शीतकी लहर आया करती है, साथ ही प्रति-

क्रिया नहीं होती। वह शायद समझ नहीं पाता, पर वह ठण्डा रहता है, उसके घुटने ठण्डे रहते हैं, उसकी साँस ठण्डी रहती है, ठण्डा पसीना होता है, एक तरहकी पाद्माघातिक दुर्बलता। चेहरा मुर्देकी तरह, नीला चेहरा। प्रत्यङ्गोंका ठण्डापन। अन्तिम अवस्थामें पीला बोखार, चेहरा बहुत पीला रहनेके साथ बहुत ज्यादा रक्त-स्राव। बहुत तेज़ सर-दर्द, शरीरका काँपना, ठण्डी साँस, ठण्डा पसीना और ठण्डी नाकके साथ हिमाङ्ग हो जाना। नाक तथा चेहरा सिकुड़ा, जीवनी-शक्ति बहुत कमजोर, ये सब कार्बो-वेजकी बहुत अधिक बात बताते हैं। किसी तीव्र आक्रमणका कोई प्रचण्ड मानसिक आघात, कोई तीव्र बीमारीके बाद प्रतिक्रियाका न होना। कमजोर मनुष्योंको जिन्हें श्वास-कष्ट, ठण्डक, बहुत ज्यादा पसीना, क्लान्ति, हिमाङ्गावस्था और मुर्देकी जैसी शकल हो, जो इन सबसे कष्ट पा रहे हों, उन्हें कार्बो-वेज अवश्य देना चाहिये।

नश्तर लगवाने बाद जो आघात पहुँचता है, जब रोगी हिमाङ्गावस्थामें जा पहुँचता है तथा नश्तरके आघातसे मर जानेकी सम्भावना रहती है, उस समय कार्बो वेज बहुत कुछ फायदा करता है। यह प्रदाह होनेके पहले होता है, क्योंकि जीवनी-शक्तिमें इतनी ताकत नहीं रहती, कि प्रदाह उत्पन्न कर सके। प्रदाहके लिये प्रतिक्रिया करे, हृत्पिण्डमें इतनी शक्ति भी नहीं रहती। प्रदाह प्रतिक्रियाके बाद उत्पन्न होता है, पर यदि प्रतिक्रिया न हो, तो कार्बो-वेज ही सबसे उपयोगी दवाओंमेंसे एक है।

कार्बोनियम सल्फ्युरेटम।

(Carboneum Sulphuratum)

कार्बन वाइसल्फाइडके लक्षण **सवेरे**के वक्त, दोपहरमें, तीसरे पहर, **शामको, रातमें,** आधी रातके पहले बदतर हो जाते हैं। यह एक गहराईतक क्रिया करनेवाली दवा है। इसका बहुत कम व्यवहार होता है और बहुत बार ध्यान ही नहीं दिया जाता। **खुली खिडकी और खुली हवाकी बहुत अधिक इच्छा**, खुली हवामें **अच्छा रहता है,**

पर झोंककी हवा लगनेपर रोगी बदतर हो जाता है। अलकोहल-मिली ताकतकी दवा अधिक व्यवहार करनेवाले भग्न-स्वास्थ्य रोगियोंके लिये यह विशेष लाभदायक है। सीढ़ी चढ़नेपर कमज़ोरी और दम घुटने लगना। नहानेपर बहुत-से लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। जलपान करनेके बाद बहुत-से लक्षण बदतर हो जाते हैं। कैन्सरकी वृद्धि रोकनेवाली यह एक बहुत उपयोगिनी दवा है (**ग्रैफाइटिसकी तरह**) और इसने वृक्क-रोग आरोग्य किया है। प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनका उसपर बहुत अधिक प्रभाव पहुँचता है, खासकर **गर्म तर मौसम**का। इस दवासे हरित्पाण्डु रोगकी भाँति एक लक्षण उत्पन्न होता है। यह पुराना वात, खासकर सन्धियोंके पुराने वातमें विशेष उपयोगी है। पोशाक बहुत ज्यादा सहन नहीं होती, सर्दी गर्मी दोनो ही उसे सहन नहीं होती। साधारणत सर्दी उसके सब लक्षण बढ़ा देती है और बहुत-से लक्षण उत्पन्न कर देती है। ठण्डा होनेपर बदतर, ठण्डी हवासे, ठण्डा हो जाने बाद, सहजमें ही सर्दी लग जाती है। खूब गर्माये रहनेपर खुली हवा या ठण्डी हवा लगनेपर सर्दी लग जाती है। **शीताङ्ग**में यह **कार्बो-वेज**की तरह ही उपयोगिनी दवा है। यन्त्रों तथा उसके अंशोंमें स्पष्ट शिरा-स्फीति रोग। किसी अंशका सङ्कोचन। इस तरहका सङ्कोचन, मानो किसी अंशके चारों ओर पट्टी बँधी है। हृत्पिण्डका सङ्कोचन। यह क्रोनिक और मृगी-जनित अकड़नमें उपयोगी है। मन और शरीरका बौनापन, रक्तवाहिनियोंका तनाव और शिरा-स्फीति। हाथ-पैरोंका शोथ। भोजनके बाद यह अच्छा भी रहता और बुरा भी, पेशियोंका धीरे-धीरे पतला पड़ते जाना, यहाँतक कि प्रत्यक्ष क्षीणता आ जाती है, लसिका-ग्रन्थियाँ बढ़ जाती हैं, अज्ञानताके बाद बेहोशी आ जाती है और याददाश्त-रहित हो जाता है, पैर ठण्डे रहनेपर लक्षण बढ़ जाते हैं, चर्बीका भोजन, दूध, गर्म भोजन और पेयोंसे लक्षणोंका ह्रास होता है, भीतरी भरापन मालूम होता है और सारे शरीरकी शिराएँ फूली—वर्द्धित रहती हैं। सन्धियोंकी गठियाकी दशा **धीमा रक्त-स्राव,** शारीरिक—जीवनी शक्तिवाली गरमीकी कमी, भीतरी और बाहरी भारीपन, ग्रन्थियोंका कड़ा हो जाना, बढ़ा हुआ आलस्य और हमेशा लेटे रहनेकी इच्छा।

झटका लगने या सीढ़ी चढ़नेपर बहुतसे लक्षण बदतर हो जाते हैं, श्लैष्मिक-झिल्ली तथा चर्मकी अचैत्य।

पेशियोंपर दबाव पड़नेसे कमजोरी बढ़ती है, माथेके लक्षण तथा श्वासके सिवा और सब लक्षणोंको लेटना घटा देता है, लेटे रहनेपर रोगीको अच्छा अनुभव होता है, ऋतु-स्राव होनेके पहले, **समय और बादमें** शिकायतें बदतर हो जाती हैं, हिलने डोलनेपर सभी लक्षण बढ़ जाते हैं, इसीलिये रोगी हिलने-डोलनेसे डरता है। श्लैष्मिक-झिल्लीका स्राव **बहुत ज्यादा**, गाढ़ा और लसदार होता है, दर्द अङ्ग तथा किसी एक अङ्गमें सुन्नपन शरीरमें रक्तका तेज़ हो जाना, ग्रन्थियोंमें तथा हड्डियोंमें दर्द या शरीरके सभी अङ्गोंमें बहुत तरहका दर्द, बँधे समयका अन्तर देकर धीमा और तेज़ आक्रमण, रह-रहकर होनेवाला आक्षेप, आवेशिक दर्द, जखमकी तरह कुचल जानेकी भांति शरीर और प्रत्यङ्गोंमें दर्द, भीतरी और बाहरी जलनकी तरह दर्द, काटनेकी तरह, **झटकेकी तरह** और खोंचा मारनेकी तरह दर्द, सभी अङ्गोंमें दबावका दर्द तो बहुत साधारण बात है, सुई गड़नेकी तरह दर्द और खुजलानेवाले बेधनेकी तरह सभी अंगोंमें दर्द, *भयङ्कर काटनेकी तरह दर्द*, *यह नीचेकी ओर सरक आता है*, इधर-उधर भटकनेवाला दद, भ्रमणकारी, धक्का देनेकी तरह और सुई गड़नेकी भांति दर्द, एकाङ्गी या एक पार्श्वका पक्षाघात, यन्त्रोंका बिना किसी दर्दके, दबाना बहुतसे लक्षणोंमें सहायता पहुँचाता है। समूचे शरीरमें स्पन्दन, नाड़ी आक्षेपिक और तेज़, नाड़ी धीमी, पूरा ज्वरके साथ या बिना ज्वरके ही वातज दशा पुरानी वातकी दशा, दर्दमें बहुत ज्यादा स्पर्श-कातरता, दर्दके बाद और रुके रहनेपर वह अधिक बदतर हो जाता है। शरीर और प्रत्यङ्गोंमें कड़ापन, गर्मीके दिनोंकी गर्मीके कारण उत्पन्न उपसर्ग, शोथज सूजन और ग्रन्थियोंकी सूजन, समूचे शरीरमें कम्पन, गुटिका-दोष हो जानेकी सम्भावना, फेफड़े और आँतोंका गुटिका-दोष (Tubercle) पेशियोंकी ऐंठन, उसकी शिकायतें शराबसे बढ़ जाती हैं और बहुतसे उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। चलनेसे भी शिकायतें बढ़ती हैं खुली हवामें घूमना बहुतसे लक्षणोंको बढ़ा देता है, वह गर्मियोंकी गर्मी और जाड़ेकी सर्दीसे बदतर रहता है, गर्म कपड़ा लपेटे रहनेपर भी बदतर रहता है, गर्म कमरा, गर्म बिछावन और सार्वाङ्गिक गर्मीसे उसकी अवस्था बदतर हो जाती है, इतनेपर भी उसे सर्दी सहन नहीं होती। सवेरेके वक्त **बहुत दुर्बलता, पुराने शराबियोंको**, गर्मियोंको गर्मी, ऋतुकालके समय, पाखाना होने बाद, सवेरेके वक्त दर्द-भरी बेचैनी।

एकदम भुलक्कड और इतना असावधान चित्त रहता है, कि हाथमें जो चीज़ चली जाती है, उसे तोड डालता है, जब कहा जाता है, तब होशमें आता है। **सवेरेके** वक्त घबड़ाहट, **शामको वक्त बिछावनमें, रातमें,** आधी रातके पहले, चेतना-सम्बन्धी, भयके साथ, भविष्यके सम्बन्धमें, ऋतु-स्रावके पहले, सान्निपातिक अवस्थामें चीजोंको दाँतसे काटता है, समय-समयपर लालची हो जाता है। बहुत हवा खुलनेपर सवेरेके वक्त प्रसन्न रहती है, किसीके साथकी इच्छा न रहना, पढ़नेके समय मुश्किलसे मन संयोग होता है, सोकर उठनेपर सवेरे मन चञ्चल रहता है, मानसिक परिश्रमसे, सर-दर्दसे, मानो शराबके नशेमें हो, छोटी छोटी बातोंपर भी बहुत दत्त-चित्त, बातके समय पागलोंकी तरह प्रलाप, चिल्लाता है और दाँत काटनेकी कोशिश करता है। भ्रम-पूर्ण दृश्य देखता है, रातमें उत्तेजना। भ्रमभरी चीजें देखना, निराश, हतोत्साह, असन्तोष और सवेरे मनकी सुस्ती, कुछ सोचना बहुत मुश्किल होता है। **बहुत उत्तेजना, शीत,** उत्तेजना—करीब-करीब शराबीपनकी सीमातक जा पहुँचती है। भय, सवेरे, रातमें, मृत्युका भय, उन्मादका भय, दुर्भाग्यका भय, मनुष्योंका भय, अन्धेरेमें चलनेसे भय, भुलक्कड, किसी चीजको क्या करना या यह भूल जाती है और उन्हें अपने हाथमें पकड़े रहती है। **सहजमें ही डर जाती है।** आनन्द और बहुत ज्यादा उल्लास, जल्दबाज़ भाव, **गुल्म-वायु-ग्रस्तों-सी चाल-चलन,** अस्थिर मति, उदासीन और मानसिक सुस्त, निस्तेजता, सवेरेके वक्त बहुत सुस्त हो पड़ता है, जड-बुद्धिता और उन्मत्तता, पहले तो बहुत विचार उठते हैं, इसके बाद गड़बड़ा जाते हैं और जड हो पड़ते हैं, सवेरेके वक्त चिड़चिड़ापन, कमजोर याददाश्त, ठीक-ठीक शब्द नहीं प्राप्त होता, लिखनेके समय गलत शब्दोंका प्रयोग करता है। उसके हाव-भाव हमेशा बदला करते हैं, उदासीन, सहजमें ही नाराज़ हो जाता है, क्रोध, मानसिक सुस्ती, धार्मिक प्रेम, रातमें बहुत बेचैन रहता है, आधी रातके पहले बदतर अवस्था रहती है शामके वक्त **उदासी**, जाड़ेके समय, ज्वरके समय, पसीना होनेके समय, रोगी गाता और सीटी बजाता है। चुपचाप बैठे रहनेकी इच्छा, किसीसे बात करनेकी इच्छाका न होना, पागलोंकी तरह व्यवहार, खिड़कीसे कूद पड़ता है, शून्य दृष्टिसे रोगिनी अपने हाथकी तरफ देखा करती है। नींदमें चौंक पड़ती है। सन्देहो, पहले तो खूब बकवाद

करता है, पर पीछे बोलनेकी इच्छा नहीं होती, नींदमें बातें करता है, लगातार कष्टदायक विचार बने रहते हैं, डरपोकपन, अचैतन्य, प्रचण्ड कार्य, बहुत रोती है। एक बार हंसती है, एक बार रोती है, नींदमें, सरमें चक्कर, सवेरेके वक्त सोकर उठनेपर, तीसरे पहर, शामको, खुली हवामें अच्छी रहती है, मानो नशा पिये हो, ऋतु-स्रावके समय, बैठे रहनेपर, झुकनेके समय आगेकी ओर गिर आनेकी प्रवणता, चलनेके समय, खुली हवामें टहलनेके समय।

पेशानीका ठण्डापन, सङ्कोचन, एक पट्टीकी तरह, ललाटका, पश्चात् मस्तिष्कका। माथेके चमड़ेमें कमी, माथेमें खालीपनका भाव, उद्भेद निकलना, खरोट जमती है। चकौता, खुजली, तर, पपड़ी जमनेवाली फुन्सियां, यन्त्रणा भरी और दर्द-भरी, माथेके चमड़ेका विसर्प, चलनेके समय माथा आगेकी ओर झुक जाता है, सर हिलानेपर एक तरहका माथेमें उतार-चढ़ाव मालूम होता है। माथेमें भरापन, ललाटमें भरापन, केश झड़ जाते हैं, तीसरे पहर ताप मालूम होना। खोपड़ीमें, माथेमें भार, और जलपानके बाद, माथेमें खूनकी अधिकता, माथेकी त्वचा बहुत जोरसे खुजलाती है, प्रत्येक गति माथेमें अनुभव होती है माथेकी त्वचामें गांठें, छूनेपर यन्त्रणा होती है, मूर्द्धादेशमें सुन्नपन, सवेरेके वक्त बिछावनमें ही सर-दर्द, जागनेपर, सवेरे ८ बजे, तीसरे पहर, शामको, रातके समय, १० बजे रातमें खुली हवामें अच्छा रहता है, सीढ़ी चढ़नेपर बदतर हो जाया करता है। केश बांधनेपर, जलपानके बाद, भोजनके बाद, भोजन कर लेनेपर गरम हो आनेपर, झटका लगनेपर, जोरसे पैर रखकर चलनेपर, मानसिक परिश्रमसे, हिलने-डोलनेपर, माथा हिलानेपर, सोने बाद, पाखाना होने बाद, गरम कमरेमें, सर्दी लगनेपर सर-दर्द। जाड़ेके समय, ज्वरके समय, वातज, सर-दर्द, सर्दीके कारण उत्पन्न सर-दर्द, सर हिलानेपर और कुछ सोचने या पढ़नेके समय माथेमें धमकका दर्द, प्रचण्ड सर-दर्द तबतक बढ़ता ही जाता है, जबतक मस्तिष्कपर प्रभाव नहीं हो जाता। सवेरे जागनेपर ललाटमें दर्द, दिनभर रहता है, तीसरे पहर बहुत प्रचण्ड हो जाता है, शामको और रातमें पश्चात् मस्तकमें दर्द। माथेके दोनों पार्श्वों में दर्द, एक तरहका सर-दर्द, बायीं ओर बहुत बदतर, तीसरे पहर कनपटीमें दर्द, सर हिलानेपर और झुकनेपर बदतर हो जाता है। सवेरे सोकर उठनेपर ६ बजे, कनपटीमें धमकका,

दर्द, **मूर्द्धा-देश**मं दर्द, ललाट और कनपटियोंमें छेदनेकी तरह दर्द। **मूर्द्धा-देश**में जलनका दर्द, कनपटियोंमें काटनेकी तरह दर्द, यह भोजनके बाद बदतर हो जाता है। ललाटमें खींचनेकी तरह दर्द, १० बजे पश्चात् मस्तकमें दर्द, कनपटियोंमें, शामके वक्त माथेमें धीमा-धीमा दर्द, ललाटमें झटकेका दर्द, दोपहरके पहले माथेमें दबावका दर्द, जौंभाईके साथ, पढ़ने और झुकनेके समय, पढ़नेके समय बदतर, आँखके ऊपर, यह आँखके ऊपर और कनपटीतक फैल जाता है। **पश्चात् मस्तकमे दबावका दर्द,** कनपटीमें, यह मूर्द्धा-देशतक फैल जाता है; मूर्द्धादेशमें **दिनभर दर्द रहता है,** माथेमें घाव जैसा, कुचल जानेकी तरह दर्द, कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, बायीं तरफ ज्यादा होता है, पश्चात् मस्तकतक फैल जाता है। फाड़नेकी तरह दर्द, खुली हवामें और आरामके समय अच्छा रहता है, **कपालमें**, माथेके पिछले भागमें पार्श्वमें, कनपटियोंमें, बायीं ओर बहुत ज्यादा। पेशानीपर ठण्डा पसीना. श्रम करनेके समय माथेके चमड़ेमें स्पर्श सहन नहीं होता, पश्चात् मस्तक और कनपटीमें टपकका दर्द। माथेमें बिजलीकी तरहका झटका मालूम होना।

रातके समय पलकें आपसमें सट जाती हैं, स्राव कटु, खून मिला, पीबकी तरह और पीला होता है। आँखोंकी सुस्ती, आँखके पास उद्भेद, पलकोंपर, ऊपरी पलकपर खुजली और जलन। पलकोंका गिरना। पलकोंपर दाने। आँखें गरम मालूम होती हैं। पलकोंका भार और उन्हें हिलानेपर यन्त्रणा होती है, आँख और पलकोंका सर्दी-जनित प्रदाह। चक्षु-श्वेतपटल काली-काली नसोंसे भरा रहता है, कनीनिकामें चेतना न रहना। आँख और **पलकों**में खुजली, खुली हवामें और पढ़नेके समय आँखसे पानी बहना, आँख हिलानेपर उनमें दर्द होना, लगातार दर्द बना रहना, सर-दर्दके साथ जलनका दर्द, सवेरे, पढ़नेके समय, शामको, पढ़नेके वक्त पलकोंके किनारे दर्द, चक्षुकोषमें दर्द। दर्द काटनेकी तरह, दबावकी तरह, मानो बालू पड़ी है, घावकी तरह, खुजलाहट और फाड़नेकी तरह दर्द, पीछेकी ओर खिंचाव, शामको आँखोंमें बहुत गरमी मालूम होनेके साथ दबाव मालूम होना, पढ़नेके समय और पाखाना होने बाद खुजली, पुतलियाँ सिकुड़ी और फैली भी, **आलोकातङ्क,** पलकोंका काँपना, आँखमें लाली, पलकोंमें, पलकोंके किनारोंमें लाली, बार-बार गुहेरी होना, घूर-घूरकर देखना और गड्ढेमें धँसी आँखें, फूली हुई पलकें,

मोटी पलके, पलकोंमें ऐंठन, कनीनिकामें जखम, पलकोंका जखम, कमजोर श्रांखे, धुँधली दृष्टि, चीजें बहुत दूरपर मालूम होती हैं। द्वित्व-दृष्टि, (Diplopia) झिलमिलाहट, दृष्टि शक्तिका लोप, धीरे-धीरे गायब हो जाना, श्रदूर-दृष्टि (Myopia)।

कानसे स्राव, खून-मिला, बदबूदार, पीब भरा, कानोंकी लाली, कानोंके पीछे दाने निकलना, कानमें फडफडाहटकी श्रावाज़ मालूम होना, कान लाल श्रौर गर्म होते हैं, मध्य-कर्णमें श्रौर कानकी नलीमें प्रदाह। कानमें खुजलाहट, कानमें श्रावाज़, सबेरे, शामको, रातमें, भनभनाहट, पटाका फटनेकी तरह श्रावाज़, चीं-चींकी श्रावाज़, फडफडाहट, भनभनाहट, घण्टोंकी श्रावाज़, गरजकी श्रावाज़, श्रावाज़का जोर, तीसरे पहर श्रौर शामको कानमें दर्द, निगलनेके समय दबाव, सुई गडने श्रौर फाडनेकी तरह दर्द, पाखाना होने बाद सुई गडनेकी तरह दर्द, दाहिने कानमें बदतर, कानमें स्पन्दन। कानकी श्रनुभूति रुकी हुई, पहले तो तेज़ सुन पड़ता है, इसके बाद धीमा पड जाता है श्रौर श्रन्तमें श्रावाज़ श्राना बन्द हो जाता है, इसने कानकी नलीकी बीमारीके कारण पैदा हुई भ्रांसी श्रारोग्य कर दी है।

नाककी पुरानी सर्दीकी तो यह बहुत ही लाभदायक दवा है, नाक ठण्डी रहती है, खुली हवामें नाककी सर्दी हो जाना, जाडा लगनेके साथ लगातार होती है, खांसीके साथ, जल स्राव होनेवाली, शामको सूख जाता है, सब समयका सभी उपादानोंसे पूर्ण नाकका स्राव, साफ, बहुत ज्यादा पपडी श्रौर खरोंट जमती है, खाल उधड जाना, हरापन लिये, कडे-कडे टुकडे, बदबूदार, पीब-भरा, गाढ़ा, लसदार पानी, गाढा पीला पीब, नाककी ठोरमें जलन श्रौर लाली, नाकमें सूखापन। सबेरे श्रौर शामको नाकसे खून गिरना, गहरे रङ्गका खून, नाक छिडकनेके समय, नाकमें खुजली। नाकका रुक जाना, नाकसे सडी बदबू निकलना। नकसोर फूटना, नाकमें दर्द श्रौर घावकी तरह यन्त्रणा, नाककी जडमें जलन, इसने नाकका श्रर्बुद श्रारोग्य किया है। गन्धे बहुत तेज़ मालूम होती है, इसके बाद गन्ध श्राना ही बन्द हो जाता है, बार-बार छ। नाक फूली रहती है। नाकमें ऊपरकी श्रोर जखम।

चेहरा चितकबरा और रक्त-हीन-सा रहता है, चेहरेमें तनावकी अनुभूति, चेहरा ठण्डा और ओठ **फटे रहते हैं**, चेहरा बदरङ्ग रहता है, **नीलापन लिये**, काला, हलका **पीला**, रोगीकी तरह, पीला, सूखे जलते हुए ओठ। ठुड्डीपर उद्भेद, ओठोंपर, मुँहके चारों तरफ और नाकपर उद्भेद निकलते हैं, चेहरेपर और ललाटपर गुलाबी रङ्गके मुँहासे, शराबियोंके मुँहपर काले सिरेवाले मुँहासे (Comedones), चेहरा और नाकपर पपड़ी जमनेवाले उद्भेद, प्रत्यङ्गोंमें फाड़नेकी तरह दर्दके साथ चेहरेपर भैंसिया दाद (Herpes), **तर खुजलानेवाले** उद्भेद, फुन्सियाँ, जलभरी फुन्सियाएँ, दाने। **गालोंपर** और नाकपर लाल उद्भेद, भूसी, पपड़ी जमनेवाले उद्भेद, बायें गालपर भैंसिया-दाद, चेहरेपर चकत्ते, पीब-भरा विसर्प (Phlegmonous erysipelas), चेहरेका भाव घबड़ाया-सा रहता है, वहशत-भरा, रोगियल, कष्ट-पूर्ण, भावहीन। शामको चेहरेमें गर्मी, जाड़ा लगनेके समय, तापकी चञ्चल प्रभा, चेहरेमें खुजली। **ठण्डी हवामें** चेहरेमें दर्द, लेटनेके समय। चेहरा और ओठोंमें जलन। चेहरेमें खींचन, घाव, कुचलनेकी तरह दर्द और फाड़नेकी तरह दर्द। **ठण्डा पसीना चेहरेपर**। जबड़ेका कड़ापन, धँसी हुई आँख, चेहरेका फूलना, शोथज, गाठे, कर्णमूल-ग्रन्थि फूली, निम्न-हन्वस्थ-ग्रन्थिकी सूजन। निचले हनुकी पेशियोंमें तनाव, ओठोंमें जखम।

मुँह और जीभकी अचेतनता। जीभ और मुँहमें छाले। मुँह और मसूढ़ोंसे खून जाना। जीभ ठण्डी मालूम होती है, जमी फटी रहती है, दाँतसे मसूढ़े अलग पड़ जाते हैं, जीभपर सफेद लेप चढ़ी रहती है, अदम्य प्यासके साथ मुँह और जीभका सूखापन, मुँहसे बदबूदार गन्ध आती है, सड़ी गन्ध, जीभ और मुँहमें जलन होती है, खून मिली लार निकलती है, लार बहुत ज्यादा निकलता है, बोलनेमें तकलीफ होती है और तोतलाता है, मसूढ़े फूले, स्वाद बिगड़ा रहता है, सवेरे स्वाद तीता रहता है, गन्ध, धातुकी तरह, जी मिचलानेवाला, लसदार, नमकीन, खट्टा, मीठा। कोमल तालुमें सुरसुरी होती है, लेट जानेपर मुँहका जखम, दाँत किनारेपर आ जाते हैं और ढीले रहते हैं। शामको और रातमें दाँतमें दर्द, ठण्डी हवामें, ठण्डे पानीसे, भोजनके समय और बाद, चबाते रहनेपर, छूनेपर, गर्म भोजन और पेयोंसे, बाहरी गरमीसे, गर्म तथा ठण्डी दोनों ही प्रकारकी चीजोंसे, दर्द खींचनकी तरह, झटका देनेकी तरह,

झटका या सुई गड़नेकी तरह, धमककी तरह, **सुई गड़ने**की तरह, फाड़नेवाला, ९ बजे सवेरे झटका और सुई गड़नेकी तरह दर्द, रातमें और सवेरे धमक। ठण्डी हवामें और तीसरे पहर फाड़नेकी तरह दर्द।

श्वास-रोधक सूखेपनके साथ ठण्डी ऋतुमें कण्ठकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह, लाली और भरापनकी अनुभूति। बराबर खखारते रहनेकी इच्छा, सड़नेकी ओर प्रकृतिके साथ कण्ठका प्रदाह, कण्ठमें एक ढेले-सा अनुभव होना, सवेरे कण्ठमें श्लेष्मा, लसदार, नमकीन मालूम होता है, खाँसनेपर कण्ठमें दर्द, निगलनेपर, खाली घूँट लेनेपर, कण्ठकी जलन पाकाशयतक उतर आती है, कण्ठनलीमें जलन, खाल उधड़ जाना और घावकी तरह यन्त्रणा, निगलनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द। कण्ठनलीमें ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठमें हड्डी अड़ी हुई है, कण्ठकी खरोंचना, कण्ठनलीकी अकड़न, हमेशा कुछ निगलते रहनेकी इच्छा, निगलनेमें कष्ट, कण्ठ और तालुमूलकी सूजन, गर्दनकी ग्रन्थियाँ फूली रहती हैं। **चुल्लिका-ग्रन्थि** (Thyroid gland) **बढ़ी रहती है।**

भूख घटी हुई या सहजमें ही तृप्त हो जाती हैं, कम भूख खानेकी इच्छा रहे बिना ही राक्षसी भूख, खानेसे अनिच्छा, चर्बी, मछली, खाद्य, गोश्त और दूध खानेकी इच्छाका न होना, पाकाशयमें सर्दी अनुभव होना, पाकाशयमें **सङ्कोचन** अनुभव होना, खाली डकारें, भोजनके बाद, बिना किसी फायदेके, दूध पीनेके बाद, चलनेके समय खाली डकारें आती हैं **डकार आनेसे उपशम** होता है, खट्टी डकारें, तीती, खाली या खाये पदार्थकी डकारें आती हैं, बुरी डकारें, जोरकी, जी मिचला देनेवाली, दुर्गन्धित, खट्टी मुँहमें पानी भर आता है, भोजनके बाद पाकाशयमें भरापन मालूम होना या पाकाशयमें चबानेकी तरह दर्द, भोजनके बाद कलेजेमें जलन, पाकाशयमें तापकी झलक, भार, हिचकी और खाद्यसे घृणा, सवेरेके वक्त मिचली, तीसरे पहर, रातमें, भोजनके बाद, बेहोशीके साथ, डकार आने बाद अच्छा रहता है, सर-दर्दके समय, ऋतु-स्रावके समय। पाखाना होनेके बाद जलन, ऐंठन और चिकोटी काटनेकी तरह दर्द, भोजन और पाखाना होने बाद पाकाशयमें दबावकी तरह दर्द, पाकाशयमें घावकी तरह यन्त्रणा, छुरी मारनेकी तरह दर्द, पीठतक फैल जाता है, सुई गड़नेकी तरह दर्द, स्पन्दन। खाँसीके साथ ओकाई, "एक-एक साथ बँधे रहनेका भाव," सवेरेके वक्त प्यास जलनकी तरह

प्यास, जाड़ा लगनेके समय, बहुत तेज़ प्यास, तापके समय, बहुत ज्यादा मात्रामें पानी पीता है। सवेरेके समय वमन, खाँसनेपर वमन, भोजनके बाद वमन, सर-दर्दके साथ वमन, ऋतु-स्रावके समय, पित्तकी कै, तीता पानी, रक्त, खाद्य, हरा श्लेष्मा, खट्टा, पानीकी तरह वमन।

तलपेटमें ऐसी अनुभूति होना मानो पतले दस्त आयेंगे। भोजनके बाद तनाव, पेट फूला हुआ, तलपेटमें रस-स्राव। तलपेटमें वायु होना, रुका हुआ, कोष-प्रदेशमें भोजनके बाद भरापन, भरापन और गडगड़ाहट, तलपेटका कड़ापन, यकृतका कड़ा पड़ जाना। **यकृतकी बीमारियाँ,** पैरमें शोथज सूजनके साथ, सवेरेके वक्त दर्द, तीसरे पहर, शामको, रातमें दर्द, मानो पतले दस्त आयेंगे, भोजनके बाद, श्वास लेनेके समय, ऋतु-स्रावके पहले और समय, हिलने-डोलनेपर, **दबाव** पड़नेपर, कुक्षि-प्रदेशमें, बैठनेके बाद कोखकी जगहपर, उदर-प्रदेश (*Hypogastrium*) में, वक्षण-देश (Inguinal region) में, तलपेटके पार्श्व भागोंमें, **यकृतमें**, यकृतके बायें खण्डमें, नाभि-प्रदेशमें, तलपेटमें जलनका दर्द, कुक्षि-प्रदेशमें, यकृतमें, तलपेटमें मरोड़, सवेरेके वक्त, १० बजे, तीसरे पहर, रातमें, पाखाना होनेके पहले, पाखाना होनेके बाद, नाभि-प्रदेशमें, कुक्षि-देशमें, तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द, नाभीकी जगहपर, तलपेटमें खिंचाव, झटका देनेकी तरह दर्द, बायें कुक्षि-प्रदेशमें, **यकृतमें**, तलपेटमें घावकी तरह या कुचल जानेकी तरह दर्द, **यकृतमें**, तलपेटमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कुक्षि-प्रदेशमें, वक्षण-देशमें, तलपेटके दोनों बगलोंमें, यकृतमें। तलपेटमें फाड़नेकी तरह दर्द, यह नाभि-प्रदेशमें आरम्भ होकर मूत्राशयतक फैल जाता है। नाभीका ऊपरकी ओर खिंचना (**प्लम्बम**), तलपेटमें गुड़गुड़ाहट, पाखाना होनेके पहले **तनाव,** पाखाना हो जाने बाद कम्पन। पाखाना हो जाने बाद कमजोरीका भाव, बहुत डकारके साथ कब्ज, पाखाना **कष्टकर**, वृथा ही लगता है, भरपूर पाखाना न होना, सवेरेके वक्त पतले दस्त आना, ५ बजे सवेरे, जलपानके बाद, रातमें, दोपहरके ---- भोजनके बाद, रातके भोजनके बाद, बिना किसी दर्दके दस्त, [illegible] ...ारी, पतले, पीले, फेनभरे दस्तके साथ नाभि [illegible], लेईकी तरह, पतले, पानीकी तरह. [illegible] ये कुक्कुरो

पतले दस्त आते हैं और कुछकी कब्ज रहता है। रक्तामाशय, खून मिले दस्त। मलद्वारके चारों ओर उद्भेद, मलद्वार और चूतड़के बीचकी खाल उधड़ जाना, भगन्दर (Fistula in ano) **बदबूदार, बहुत ज्यादा पाद आना,** चलनेके समय, घट जाता है। मलद्वारमें सुरसुरी, चमकीले लाल रंगका रक्त-स्राव, **बवासीर,** नीला पुराना, **बाहरी** मसा, बड़ा, ऋतु-स्रावके समय, **बहुत यन्त्रणा** रहती है। **मलनालीकी क्रियाका न होना।** पेशाब करनेके समय आप-से-आप पाखाना हो जाना। **मलद्वारमें पास तरी** बनी रहना, खुजलाहट, जलन, सवेरेके वक्त खुजलाहट होना, पाखाना हो जानेके बाद, पाखाना होनेके समय, मलनालीमें दर्द, जलन और खुजलाहट। पाखाना होनेके समय, पाखाना होनेके बाद जलन, पेशाब करनेके समय मलद्वारमें और मूत्राशय-ग्रीवामें मरोड़ तथा सुई गड़नेकी तरह दर्द। बाहरकी ओर काटने और दबावकी तरह दर्द, मलद्वारमें यन्त्रणा, पाखाना होनेके बाद, मलद्वारमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, शामके वक्त, पाखाना होनेके समय, पेशाब करनेके समय मलद्वारमें और मूत्राशय-ग्रीवासे लेकर मूत्रनलीतक सुई गड़नेकी तरह दर्द। मलद्वारमें फाड़नेकी तरह दर्द, पाखाना होनेके समय कून्थन, मलद्वारका बार-बार निकल आना, सवेरेके वक्त पाखाना लगना, भोजनके बाद, ८ बजे सवेरे, १० बजे सवेरे, पाखाना होनेके समय। क्रिमि, छोटी क्रिमि, सूतेकी तरह क्रिमि, फीता-क्रिमि, मल कटु होता है, काला, **खून-मिला,** भूरा **कड़ा,** गांठ-गांठ, **खायी हुई चीज मिला,** हलके रङ्गका, भेंड़की मींगीकी तरह।

पेशाबमें श्लेष्माकी तली रहनेके साथ मूत्राशयकी सर्दी, मूत्राशयमें दर्द, यन्त्रणा, मूत्राशय-ग्रीवामें ऐंठन, दबावकी तरह दर्द, पेशाब करनेके समय मलद्वारमें और मूत्राशय-ग्रीवासे लेकर मूत्रनलीतक सुई गड़नेकी तरह दर्द। मूत्राशयका पक्षाघात। पेशाब रुक जाना, मूत्राशयमें कूथनका भाव, पेशाबका वेग, रातमें, लगातार वेग बना रहना, वृथा, पेशाब नहीं होता, दर्द-भरा पेशाब टपका करता है। मूत्रकृच्छ्रता, कमजोर धारा, बार बार खासकर रातमें नींदमें, अनजानमें पेशाब हो जाता है। पेशाब रुक जाना। मूत्रनलीसे पुराने सूज़ाक-जैसे मवादका स्राव, मूत्रनलीसे रक्त जाना मूत्रनलीमें खुजली, इसके साथ ही बूंद-बूंद पेशाब होनेकी अनुभूति पेशाब और पाखानेके समय मूत्रनलीमें जलन। पेशाब करनेके समय काटनेकी तरह दर्द। पेशाब कटु

अण्डलाल-मिला, खून-मिला, जलता हुआ रखनेपर तरलकी तरह हो जाता है। काला, लाल, बहुत मवाद, बदबूदार, **बहुत थोडा।** पीबकी तली जमती है, श्लेष्माको, सफेद। अण्डोंकी क्षीणता, बहुत लिङ्गोत्तेजना होती है। लिङ्गमें उत्तेजना होती ही नहीं, सम्पूर्ण ध्वज-भङ्ग। **अण्डवृद्धि।** लिङ्ग-मुण्डका प्रदाह। जननेन्द्रिय और मुष्कमें खुजली, अण्डकोषमें दर्द, आराम करनेके समय। शुक्ररज्जुमें जलन, अण्डोंमें खिचाव, अण्डोंमें सुई गडनेकी तरह दर्द, शुक्ररज्जुमें। शामको जननेन्द्रियमें और मुष्कमें पसीना होना, जननेन्द्रिय शिथिल, सङ्गम-कालमें बहुत शीघ्र वीर्य-स्राव हो जाता है। रातमें स्वप्न-दोष, काम-यन्त्र सिकुडे, कामेच्छाका अभाव। लिङ्गाग्र-चर्मकी सूजन, अण्डोंमें सूजन, उपकोष (Epididymis) की सूजन। अण्डोंका गुटिका-दोष (Tuberculosis)।

डिम्बकोषोंकी क्षीणता। जरायुका कर्कट रोग, सङ्गमसे विदग्धा, उद्भेद निकलना और खाल उधड जाना, जरायुका प्रदाह, योनिमें खुजली। **श्वेत-प्रदर, कटु,** खून-मिला, जलन करनेवाला, बहुत ज्यादा स्राव, ऋतु-स्रावके पहले और बाद, दूधकी तरह, पतला, सफेद, पानीकी तरह। ऋतु-स्राव होता ही नहीं। ऋतु-स्राव खाल उधेडनेवाला, काला, गहरे रङ्गका, पहला ऋतु-स्राव देरसे होता है, अनियमित ऋतु, **बहुत देरसे** या बहुत जल्दी, बदबूदार, बिना दर्दका, पहले बहुत ज्यादा, फिर **थोडा,** कम समयतक रहता है, दबा हुआ, जरायुसे धीमा रक्त-स्राव। जरायुमें दर्द, जलन, यन्त्रणा कमजोर प्रसवका दर्द। कार्बन बाइ सल्फाइडमें काम करनेवाली स्त्रियाँ अकसर बन्ध्या होती हैं। योनिका कोषावृत्त अर्बुद।

वायु-पथोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। स्वर-यन्त्रका सङ्कोचन खाँसी उत्पन्न करता है। स्वर-यन्त्रमें ताप, स्वर-यन्त्रका प्रदाह। स्वर-यन्त्र और टेटुआका उपदाह, स्वर-यन्त्रमें बलगम, स्वर-यन्त्रमें दर्द, स्वर-यन्त्रमें जलन। टेटुआ और स्वर-यन्त्रकी खाल उधडी रहना। स्वर-यन्त्र और टेंटुआमें यन्त्रणा, स्वर यन्त्रका यक्ष्मा, टेंटुआमें घरघराहट। रोगी बराबर स्वर-यन्त्र साफ किया करता है। स्वर-यन्त्र बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु। टेंटुआ और स्वर-यन्त्रमें सुरसुराहट। सबेरे और शामको स्वर-भङ्ग, साथ ही सर्दी, तर मौसममें। आवाज़ रोध हो जाती है।

तेज़ श्वास-प्रश्वास। इसने दमामें खासा फायदा दिखाया है। अलकोहल और कोयलेकी गैसकी वजहसे श्वास-रोध। **श्वासमें कष्ट, शामकी वक्त**, ज्यों-ज्यों रात बढ़ती जाती है, बन्द कमरेमें, खाँसनेके समय, भोजनके बाद, थोड़े भी परिश्रमके बाद, लेटे रहनेके समय। खिड़की खुली रहनी ही चाहिये, सो जानेपर, जागनेपर। श्वास छोड़नेके समय घरघराहट होती है, लघु-श्वास, ठण्डी श्वास। रातमें और गर्म कमरेमें श्वास-रोध, भनभनाहट, सीटी बजनेकी तरह आवाज़।

खाँसी, सवेरेके वक्त, शामको, **रातमें**, आधी रातके पहले, ठण्डी हवामें, दमाका, ठण्डे होनेपर, स्वर-यन्त्रके सङ्कोचनसे, सूखी, खुसखुसी स्वर-भङ्गकी तरह, स्वर-यन्त्रमें वायुनलियाँ तथा टेटुआमें उपदाहकी वजहसे। सवेरेकी खाँसी ढीली रहती है। शामको लेटे रहनेपर, आवेगिक स्वर-यन्त्रकी खाल उधड़ी रहनेकी वजहसे, स्वर-यन्त्रको खरोचनेके कारण, छोटी, नींदसे जगा देती है। आक्षेपिक, श्वास-रोध करनेवाली, बोलनेसे, स्वर-यन्त्र और टेटुआमें सुरसुरी होनेके कारण, कुकुर खाँसी (हूप खाँसी)। बलगम, दिनके समय, **सवेरे**, शामको, रातमें, खून-मिला, बहुत ज्यादा, **हरापन लिये**, श्लेष्मा, बदबूदार, पीबकी तरह, इसका स्वाद सड़ा और नमकीन रहता है, लसदार, पीला। इसने कानकी बीमारीके कारण उत्पन्न आवेगिक खाँसी आरोग्य कर दी है।

वक्षमें धवड़ाहट, **हृत्पिण्डमें**, स्तनके कैन्सरमें यह बहुत उपयोगी प्रमाणित हुआ है। वक्षका बहुत ही जबर्दस्त श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह। वक्षमें एक प्रकारकी सर्दीकी अनुभूति। **शामकी वक्त वक्षका सकोचन।** फुसफुसावरक झिल्लीका शोथ। वायु स्फीति (Emphysema)। वक्षपर उद्भेद, फुन्सियाँ, स्तन-ग्रन्थिका विसर्प। वक्षमें भरापन मालूम होना। वक्षमें ताप और फेफड़ेसे रक्त स्राव। स्तन ग्रन्थि कड़ी पड़ जाती है। श्वासोपनलीका, हृत्पिण्डका, फेफड़ेका फुसफुसावरक झिल्लीका स्तन ग्रन्थिका प्रदाह। समूचे वक्षमें खुजली, पर खासकर बगल और स्तन ग्रन्थिमें अधिक होती है। **वक्षपर भयानक दबाव।** खाँसनेपर, हिलने-डोलनेपर वक्षमें दर्द, वक्षके बगलोंमें दर्द। हृत्पिण्डमें लगातार दर्द, **जलन।** वक्षके मध्य भागमें और बायें पार्श्वमें जलन। वक्षमें काटनेकी तरह दर्द, साँस लेनेमें

बायें निम्न-वक्षसे लेकर पीठतक, वक्षमें **दबावकी तरह दर्द**; स्तन-ग्रन्थिमें, बायें पार्श्वमें। खाँसीके साथ वक्षमें खाल उधड़नेका भाव, खाँसनेपर सीनेमें यन्त्रणा। वक्षके बायें पार्श्वमें पीठकी राहसे गहरी साँस लेनेपर सुई गड़नेकी तरह दर्द। वक्षोस्थिमें दर्द, ऊपरकी ओर चढ़ता है। हृत्पिण्डमें दर्द, वक्षमें इधर-उधर सुई गड़नेकी तरह दर्द। वक्षमें फाड़नेकी तरह दर्द, श्वासके वक्त कलेजेमें धड़कन, रक्त-हीन रोगियोंमें, घबड़ाहटके साथ, थोड़े भी परिश्रमसे, हिलने-डोलनेपर दिखाई देता है। हलचलकी तरह। बगलमें पसीना। यक्ष्माकी बहुत ही उपयोगिनी दवा है। वक्षमें लगातार एक प्रकारकी दुर्बलता मालूम होने लगना।

पीठमें ठण्डक, कटि-प्रदेशमें। पीठपर उद्भेद, दोनों हँसुलियोंके बीचमें एक भार-सा मालूम होना। पीठमें खुजली। पीठमें दर्द, रातमें, साँस लेनेपर, जाड़ाका दौरा होनेके समय, ऋतु-स्रावके समय, हिलने-डोलनेपर, बैठे रहनेपर। ग्रीवा-प्रदेशमें दर्द, दोनों हँसुलियोंके बीचमें। सवेरे जागनेपर कमरकी जगहपर दर्द, ऋतु-स्रावके समय, बैठे रहनेपर। कटि या त्रिकास्थि-प्रदेशमें सवेरे जागनेपर दर्द। त्रिक-प्रदेश (Sacrum) में सवेरे जागनेपर दर्द, ऋतु-स्रावके समय। गुदास्थि (Coccyx) में दर्द। पीठमें लगातार यन्त्रणा, कटि-प्रदेशमें, त्रिकास्थिमें। कटि-प्रदेशमें कुचल जानेकी तरह अनुभव होना। पीठमें जलन, दोनों हँसुलियोंके बीचमें जलन। ग्रीवा-प्रदेशमें खींचन, कटि-प्रदेशमें। पीठमें दबावकी तरह दर्द, कटि-प्रदेशमें। पीठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, ग्रीवा-प्रदेशमें, हँसुलियोंमें, कटि-प्रदेशमें, ग्रीवा प्रदेशमें तथा कटि-प्रदेशमें फाड़नेकी तरह दर्द, गर्दनकी जगहपर कड़ापन। पीठमें तनाव, ग्रीवा-प्रदेशमें तनाव, सीढ़ी चढ़नेपर कटि-प्रदेशमें, त्रिक-प्रदेशमें, ऊपर चढ़नेपर और भी बदतर हो जाता है। **पीठमें कमजोरी**, कटि-प्रदेशमें।

बाहु और हाथोंका स्पर्श-ज्ञान लोप हो जाना। प्रत्यङ्गोंकी सर्दी, सर-दर्दके साथ, ऊपर बाहु, हाथ, अंगुलियाँ, निम्न-प्रत्यङ्ग, घुटने, पैर, **तलवा** श्वासकी बिछावनमें ठण्डे रहते हैं, निम्न-प्रत्यङ्गोंका सङ्कोचन। पेशियों तथा कण्डराओंमें खिंचाव, ऊपरी प्रत्यङ्गोंमें, हाथोंमें, अंगुलियोंमें। हाथका चमड़ा फटा। सन्धियोंमें दरार पड़ना, दाहिने कन्धेमें, प्रत्यङ्गोंमें ऐंठन, ऊपरी

त्यङ्गोंमें, जङ्घा, पैरमें, बिछावनमे पैरकी पोटलीमे, पैरमे, तलवेमे, अंगूठेमें। जाड़ेके समय नाखूनोंका नीला पड़ जाना। प्रत्यङ्गका शोथ हो जाना। प्रत्यङ्गोंपर उद्भेद, करभ (हाथका पिछला भाग) पर भैंसिया दाद, फुन्सियाँ, रस-भरी फुन्सियाँ, अंगुलियोंके दर्म्यान जल भरी फुन्सियाँ, दोनो जाँघोंके बीचके स्थानकी खाल उधड़ जाना, दोनो जाँघोंके बीचकी। प्रत्यङ्गोंमें खसुरी, ऊपरी प्रत्यङ्गोंमें, हाथमें, पैरोंमें, पञ्जेमें। हाथकी गर्मी, तलहथ्थीकी, पञ्जोंकी, तलवेको। प्रत्यङ्गोंमें भार, ऊपरी प्रत्यङ्गोंका, निम्न-प्रत्यङ्गका, पैरका, पैरके पञ्जोंका। उरु-सन्धि रोग। प्रत्यङ्गोंमें खुजली, ऊपरी प्रत्यङ्गोंमें, उर्द्ध-बाहुमें, अग्र-बाहुमें, हाथमें, निम्न-प्रत्यङ्गमे, जघामे। इस दवासे पैरका शोथ आरोग्य कर दिया गया है। नर्त्तन रोगकी तरह प्रत्यङ्गोंका फड़कनकी भाँति हिलना। ऊपरी अङ्गोंका सुन्नपन, निम्न-अङ्गोंमें प्रत्यङ्गोंमें दर्द, जाड़ा लगनेके समय, आवेशिक, वातज, सन्धियोंमे, गठियाकी तरह, ऊपरी अङ्गोंमें दर्द। रातकी समय, बाएँ बाहुमें आघातकी तरह दर्द, कन्धेमें वातका दर्द, हिलाने डुलानेपर कोहनीमें, कोहनीका और हाथका वात, हाथमें वातका दर्द, निम्न-प्रत्यङ्गो में दर्द, वातज। हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाना, सर्दी लगनेके कारण गृध्रसी वात, खानेके बाद जघेमें। जघो में स्नायु शूल, घुटनेमें, कूल्हेमें, घुटनेके गड्ढेमें, पैरमें दर्द, वातज, सबेरे पैरकी घुट्ठीमें, सीढ़ी चढ़नेके समय पर्यस्थि (Os calsis) में, रातके भोजनके बाद और चलनेके समय पैरो में, अग्रबाहुमें यन्त्रणा। प्रत्यङ्गो में जलनका दर्द, कन्धेमें, ऊपरी बाहुमें, अग्रबाहुमें, हाथमें, तलहथ्थीमें, जघेमें, पैरमें, तलवेमे, पैरके जोड़ो में दर्द। प्रत्यङ्गो में खीचनका दर्द, कन्धेमें ऊपरी बाहुमें, कोहनीमें, अग्रबाहुमें, कलाईमें, हाथो मे, अंगुलियो में, निम्न-प्रत्यङ्गो में, कूल्हेमें, चलनेके समय कूल्हेमे, घुटनेके गड्ढेमें, पैरो में पैरकी पोटलीमें, पैरमें खुजली, त्रिकोण पेशीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, उरु तथा घुट्ठीमें सीढ़ी चढ़नेपर झटकेका दर्द। सभी प्रत्यङ्गो में झटका, सुई गड़नेकी तरह दर्द, द्विमुखी पेशीमें, अंगुलियो में, अंगूठेमें, जङ्घामें, पैरो में, पैरके अंगूठेमें। बाये अग्रबाहुमें दबावका दर्द, ऊपर झुकनेसे बढ़ जाता है, बायी एँड़ीमें। यन्त्रणा-पूर्ण, कुचले-से प्रत्यङ्ग; सन्धियोंमे, ऊपरी प्रत्यङ्गो में, निम्न-प्रत्यङ्गो में, जङ्घामें, चलनेके

समय तलवेमें, प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनसे प्रत्यङ्गो में सुई गड़नेकी तरह दर्द, सन्धियों में, ऊपरी प्रत्यंगमें, **दाहिने कन्धेमे।** तर, ठण्डी ऋतुमें, यह नीचे हाथतक फैल जाता है, ऊपरी बाहुमे, अग्रबाहुमे, कोहनीमें, कलाईमे, हाथमे, अगुलियों, निम्न-प्रत्यगोंमें, कूल्हेमें, जघेमें, घुट्ठोमें, पैरमें, चलनेके समय पैरके अगूठेमे। सभी प्रत्यङ्गो में फाड़नेकी तरह, इधर-उधर भटकनेवाला, एकाएक दर्द, सन्धियो में, ऊपरी प्रत्यङ्गो मे, कन्धेमें, ऊपरी बाहुमें, कोहनीमें, **अग्रबाहुमे,** कलाईमें, हाथो की अगुली सन्धियो में, निम्न-प्रत्यगोंमे, घुटनेमें, पिण्डलीमें, घुट्ठोमें, पैरमें, अगूठेमें, अगूठेके सिरमें। कलाईकी प्रसारिणी पेशीमे पक्षाघात, निम्न-प्रत्यङ्गो में। हाथमें पसीना, **पैरमे; ठण्डा,** बदबूदार, बहुत ज्यादा, पैर और पजे बेचैन, प्रत्यगो का कड़ापन, अगुलियो का, निम्न-प्रत्यगका, घुटनेका। हाथकी सूजन, निम्न-प्रत्यङ्गोंकी, पैरकी, घुट्ठीकी, पैरके पजेकी। यकृत रोगके साथ प्रत्यङ्गकी शोथज सूजन। घुटनेके गड्ढे और पैरमें तनाव। प्रत्यङ्गो का हिलना, ऊपरी और निम्न हाथ तथा पैरो का। प्रत्यगो का कांपना, ऊपरी प्रत्यङ्गका, अग्रबाहुका, हाथका, निम्न-प्रत्यङ्गका। प्रत्यङ्गो की ऐंठन, ऊपरी प्रत्यङ्गो की, हाथकी, निम्न-प्रत्यङ्गकी, जघाकी पैरकी, पजेकी। निम्न-प्रत्यङ्गोंका, **पैरका,** पजेका, **नाखूनके पासका,** जखम। शिरा-स्फीति, **निम्न-प्रत्यङ्गोंकी, पैरकी,** सभी प्रत्यङ्गो की कमजोरी, सन्धियो की, **ऊपरी प्रत्यङ्गोंकी, निम्न-प्रत्यङ्गोंकी,** जघाकी, घुटनेकी, पैरकी।

सवेरेकी गहरी नींद। सपने, काम पूर्ण, **चिन्ताभरे,** खतरोंके, मृत्युके, कष्टदायक, पूर्वकी घटनाओ के, उन्माद-पूर्ण, डरावने, भूत-प्रेतो के, भयङ्कर दुःखदायी **तङ्ग करनेवाले,** विस्तृत। देरसे नींद आती है, रातभर बेचैन रहता है। **सवेरेके वक्त औंघाई,** तीसरे पहर, तीन बजे दिनके बाद, शामको, रातके भोजनके बाद, भोजनके बाद, पढ़नेके समय, आधी रातके पहले नींद नही आती, औंघाईके साथ, सोच-विचार करनेपर, नींदसे जागनेपर, नींदके बाद उसे स्फूर्ति नही आती। जागना कष्टकर होता है, सवेरे या देरसे, जल्दी-जल्दी।

सवेरे बिस्तरपर ही ठण्डक, तीसरे पहर, **शामको,** ७ बजे शामको, ८ बजे रातमे। बरफकी तरह ठण्डक, ऋतुकालके समय सर्दी। भोजनके

बाद जाड़ा लगना, शामके समय, इसके बाद पसीना, नींदके समय पसीना। शामके वक्त **और रातके समय** ज्वर। **रात्रिकालीन-ज्वर,** जाड़ेके साथ, रातके समय जलनकी तरह ताप, बिना शीतका ही बोखार। रातके समय सूखा ताप। बहुत तेज़ ताप। तापकी झलक। बिना पसीनेका ही बोखार। **पीब-ज्वर।** कँपकँपकीके साथ ज्वर। दिनके समय पसीना, सवेरे, शामको, **रातसे,** घबड़ाहटके समय। ठण्डा, खाँसनेपर **खानेके समय, भोजनके बाद,** थोड़े भी परिश्रम या हिलने-डोलनेपर। रातके समय बहुत ज्यादा पसीना, नींदके समय और बाद पसीना, बदबूदार, रातके समय पसीना। पसीना होनेके समय **शिकायतें** पैदा हो जाती है।

चर्मकी अचेतना। खरोंचनेके बाद, दाँतसे काटनेकी तरह दर्द। खुजलाने बाद चर्मकी जलन। चर्मकी ठण्डक। जाड़ेके दिनोंमें **फटना और दरारें पड़ना।** रङ्ग बदरङ्ग हो जाना। नीलापन, यकृतके रोग, लाल चकत्ते, पीला। जलनके साथ सूखापन। **उद्भेद।** दाँतसे काटनेकी तरह, छाले, फोड़े, **जलन,** स्राव, क्षय करनेवाला, लसदार, पीला-स्राव, सूखा, अकौता। भैंसिया दादकी तरह उद्भेद, पपड़ी जमे, खरोंटवाले, फाड़नेकी तरह दर्द, गोल विसर्प (Zoster)। उद्भेद, खुजली, छोटी माताकी तरह, गलित, फुन्सियाँ, रस-भरे दाने, खुजलाने बाद दाने निकल आना, पपड़ी जमनेवाले उद्भेद, तर, खुजलाने बाद और भी बदतर हो जाते हैं। **रस-भरे उद्भेद।** यन्त्रणादायक उद्भेद, खुजलाने बाद ये उद्भेद और भी बदतर हो जाते हैं। पीब होनेवाले उद्भेद, गुटिकाएँ (Tubercles), आम-वात (जुलपित्ती), गाँठ-गाँठ उद्भेद, खुजलाने बाद बढ़ जाते हैं। पीले तरलसे फुन्सियाँ भरी रहती हैं। **बहुत सूजनके साथ विसर्प** तथा **गोल फुन्सियोंसे छिपे।** खुजलाने बाद **खाल उधड़ जाना।** उपमास, बतौड़ी। समूचे शरीरमें सुरसुरी। **चर्ममें** कड़ापन। समूचे शरीरमें खुजली, झटका। **रातके समय खुजली,** गर्म बिछावनमें, यहाँ-वहाँ खुजलाने और गड़नेवाला दर्द, समूचे शरीरमें। चर्मका सड़ना, खुजलाने बाद, चर्ममें जखमकी तरह दर्द। **जखम,** काले, रक्त-स्रावी जलन करनेवाले, **कार्कटके जखम,** गहरे स्राव होनेवाले, खून-लिले, बहुत ज्यादा स्राववाले, खाल उधेड़ देनेवाले,

बदबूदार, पीला पीव, भगन्दरका घाव, धीमा—निस्तेज, कड़ा, दर्द-भरा, सड़नेवाला, छत्तेके आकारका, स्पर्श-असहिष्णु, **छेदवाले** (Spongy), डङ्क मारनेकी तरह दर्दवाले, ढँक जानेवाले। अस्वस्थ्य चमड़ा, **छोटे-छोटे जखम पकने लगते हैं।**

कार्डुयस मेरियैनस।

(Carduus Marianus)

यकृतकी दवाओंमें यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दवा है, यदि एक होमियोपैथिक चिकित्सक इस कथनके लिये क्षमा किया जा सके। इसमें बहुत तरहके दर्द होते हैं। दबावकी तरह, खींचनकी तरह, टाननेकी तरह, जलनकी तरह, हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाते है। रोगीको सर्दी सहन नहीं होती तथा बँधे समयका अन्तर देकर या अनियमित समयका अन्तर देकर पित्तज वमन हुआ करता है। लेखकने बहुतसे वमनके साथ होनेवाले सर-दर्दके रोगी इस दवासे आरोग्य किये हैं। जिनका अन्त पित्तका वमन होकर होता था तथा जिन रोगियोंको कैलोमेल लेनेका अभ्यास पड़ा हुआ था। (सैंग)। यकृत रोगके साथ शोथज रस-स्राव। लक्षण मिलनेपर रक्त-स्राव और कामला रोगको यह आरोग्य करता है।

उदासी, चिड़चिड़ापन और रोना। रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, दबावकी तरह, सामयिक रूपसे उत्पन्न दर्द होता है। माथेमें भरापन और भार। ठण्डी हवा माथेकी त्वचामें सहन नहीं होती। आँखके गोलेका बाहरकी ओर निकल पड़ना। पीला चक्षु-श्वेतपटल, पलकोंके किनारोंमें जलन। नाकके भीतरी भागमें जलन, नाकसे रक्त-स्राव।

स्वाद तीता, नीरस या स्वाद ही नहीं रहता। भूरी जीभ। खानेकी इच्छा ही नहीं होती, मिचली और श्लेष्माकी कै, इसके बाद पित्तकी। दर्द-भरी ओकाई और इसके बाद खट्टे तरलका वमन। पाकाशयमें बायीं ओरसे दाहिनी ओर खींचनका दर्द, पाकाशयमें जलन, रक्तकी कै होती है, बहुत काले।

यक्ततके लचण और सभी लक्षणोंमेंसे बहुत आवश्यक है। दाहिने कुक्षि-देशमें बायीं करवट लेटे रहनेपर खींचनकी तरह दर्द, **आर्निका, मैग्ने-शिया-म्यूर, नेट्रम-सल्फ और टीलियम**की तरह। दबाने, खींचने, सुई गड़नेकी तरह यक्ततके दाहिने खण्डमें दर्द। इस दवासे स्वस्थ पित्त निकलने लगता है और इसीलिये पित्त-पथरी होनेवाली अवस्थाको यह आरोग्य कर देता है। हमने अनेक बार पित्त पथरी होनेकी प्रवणता को दूर कर दी है। यक्ततमें रक्त-सञ्चय और अर्श, यन्त्रणा-पूर्ण, कुचलनेकी तरह, कड़ा यक्तत। कभी-कभी बायां खण्ड, पर अकसर दाहिने खण्डमें ही तकलीफ़ रहती है। जब फेफड़ा और यक्ततके लक्षणोंका रोग सम्मिलित रहता है और खून थूकमें आता है।

तलपेटमें खोंचन, सुई गड़नेकी तरह दर्द और जलनकी तरह दर्द, तलपेटमें तनाव, काटनेकी तरह दर्द।

पाखाना काला होता है। मल कड़ा, गाठ-गाठ, मिट्टीकी तरह, पित्त-रहित मल। मलनाली और मलद्वारमें जलन। खुजलानेवाली बवासीर। अदम्य कब्जियत।

मूत्रनलीमें जलन। बहुत ज्यादा और गहरे रङ्गका पेशाब, उसमें बहुत ज्यादा तली जमती है, गदला पेशाब, पेशाब रुक जाना।

बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव, ऋतु-स्राव रुका हुआ। यक्ततमें रक्त-सञ्चयके कारण जरायुसे रक्त स्राव। योनिमें खोंचन, श्वेत-प्रदर।

यक्तत रोगके कारण खांसी। जब दाहिने फेफड़ेके निचले अंशपर रोगका आक्रमण हो जाता है, साथ ही यक्ततका पुराना रक्त-सञ्चय।

यक्ततमें दर्दके साथ वक्षमें दर्द, डङ्क मारनेकी तरह दर्द, खोंचनकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है।

दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे पीठमें दर्द (बहुत कुछ चेलिडोनियम और इस्कुलसकी तरह)। पीठमें खोंचनका दर्द। मेरुदण्ड बहुत स्पर्श-असहिष्णु।

मरोड़, खींचन, दबाव, प्रत्यङ्गोंमें वातज दर्द। दाहिनी त्रिकोणाकार पेशीमें बहुत तेज़ दर्द। उरु-सन्धिमें दर्द, उठने, सामनेकी ओर झुकने और हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। निम्न-प्रत्यङ्गोंमें स्नायु-शूलका दर्द, हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाता है। पैरका शोथ शिरा स्फीति, जखम, पेशियोंमें

झटका और वात। पेरकी पोटलीमें और तलवेमें मरोड़। चलना एकदम असम्भव हो जाता है।

पाकाशय-सम्बन्धी और पित्तज ज्वर।

कास्टिकम।

(Causticum)

कास्टिकम एक बहुत ही खोजकी दवा है और वृद्ध, भग्न-स्वास्थ्य प्रकृति-वाले, जो पुरानी बीमारियाँ भोगते हैं, उनके लिये बहुत उपयोगी है। नयी बीमारोमें तो इसका मौके-बेमौके ही प्रयोग होता है। इसकी बीमारियाँ, अग्रगामी, धीमी रहती है और सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानके नीचे लाती जाती हैं। मांस-पेशिक शक्ति धीरे-धीरे घटती जाती है, एक प्रकारका पक्षाघात। कण्ठनलीका पक्षाघात, कण्ठका पक्षाघात, जैसा कि झिल्लीक प्रदाह (Diphtheria) में हुआ करता है। ऊपरी पलकोंका पक्षाघात, मूत्राशयका पक्षाघात, प्रत्यङ्गोंका, निम्न-प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात, बहुत आलस्य। मांस-पेशिक शिथिलता, अवर्णनीय थकावट और शरीरका भाव और एक तरहकी कँपकँपी, सिहरावन, झटका, पेशियोंकी ऐंठन, नींदमें ऐंठन प्रभृति होता है।

दूसरा बहुत ही आवश्यक स्वरूप कण्डराओंमें दिखाई देता है। कण्डराएँ छोटी हो जाती है, जिसका परिणाम यह होता है, कि कुछ दिनोंके लिये या सदाके लिये खिचाव या छोटापन आ जाता है तथा प्रत्यङ्ग ऊपर खिचे रहते हैं। अग्रबाहुकी कण्डराएँ खिची रहती है और धीरे-धीरे झुकाव बढता जाता है। कभी-कभी तो समूची पेशी कडी हो जायगी और छोटी पड जायगी, इतनी कि हाथसे छूनेपर एक कडे किनारेकी तरह मालूम होगी।

पेशियों तथा कण्डराओंका खिचाव।

इसके साथ ही कण्डराओं और बन्धनियोंकी वातज अवस्थाका बहुत अधिक सम्बन्ध है। कभी-कभी तो इसके साथ ही सूजन रहती है, पर हमेशा यह दर्दके साथ होता है और सन्धियोंके कम्पनमें इसका अन्त होता है। एक तरहकी सन्धियोंकी कसावट, जिससे कि वह अड-सी जाती है।

सन्धियोंमें बहुत कड़ापन और जब कि ऐसा होता रहता है, तो रोगी धीरे-धीरे कमजोर होता जाता है। एक तरहकी उदासीनताकी अवस्थाम चला जाता है। निराश, घबड़ाया और भयपूर्ण होता जाता है। हमेशा ही उसके मनमें निराशा बनी रहती है और एक ऐसा भाव बना रहता है, कि कुछ उसपर झटका रहा है, कुछ होना ही चाहता है। कास्टिकमका यही साधारण स्वरूप है। ये सब मिलकर एक तस्वीर बन जाती है, इन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

कास्टिकमकी दूसरी बढ़नेवाली तकलीफ़ गुल्म वायु (हिस्टीरिया) है। धीरे-धीरे बढ़नेवाली हिस्टीरिया, गुल्म-वायु-जनित मरोड़, स्त्री अपना अपने ऊपरका समस्त अधिकार छोड़ देती है और बेवकूफोंकी बातें बोलती हैं। उसके स्नायु-सस्थान शब्द, स्पर्श, उत्तेजना या कोई भी गैरमामूली बातसे अत्यन्त असहिष्णु हो पड़ते हैं। जरा-सी भी आवाज़से वह चौंक पड़ती है, नींदमें चौंक उठती है, ऐंठन या झटका, बहा आसानीसे चौंक पड़ता है या इस तरह काम करता है, मानो बिना किसी कारणके ही चौंक पड़ा हो।

वातज-प्रकृतिके साथ पाक्षाघातिक दुर्बलता सम्मिलित रहती है। वातज अवस्थाएँ विचित्र ही होती हैं। रोगी स्वय न तो गर्मी और न सर्दी बर्दाश्त कर सकता है। ये दोनों ही उसकी वातज दशाओंको बढ़ा देते हैं तथा उसकी स्नायविक दशा और उसकी सार्वाङ्गिक अवस्थाकी वृद्धि कर देते हैं। गर्मीसे उसका दर्द घटता है, परन्तु सूखी ऋतुमें उनकी अभिवृद्धि हो जाया करती है। सन्धियाँ बहुत कदाकार हो जाती हैं, वे बड़ी हो जाती हैं, कोमल हो जाती हैं और उनसे रस-स्राव होता है। सूखी मौसममें हमेशा अवस्था बदतर रहती है, सूखी ऋतुमें ज्यादा दर्द तथा यन्त्रणा होती है। वह वात पेशी तथा सन्धि दोनोंपर ही प्रभाव डालता है। इस रोगीके सर्दी तथा सूखी हवा, दोनोंसे ही रोग बढ़ जाते हैं। ऐसे बहुत-से आदमी हैं, जो नीची जमीनसे पूर्वकी कोलोरॉडक गये हैं, उन्हें सर्द, सूखी हवासे वात रोग हो जायगा। ऐसे रोगीको किसी झीलकी हवाके पास घुड़सवारी कराइये, उसे चेहरेके उस तरफ पक्षाघात हो जायगा। घोड़ेकी देरतककी ऐसी सवारी, जिसमें चेहरेपर हवा लगे, उसके दूसरे ही दिन उस पार्श्वके चेहरेमें पक्षाघात हो जायगा। ऐसा पक्षाघात हमेशा कास्टिकमसे आरोग्य होगा।

छेदने, फाडने और पक्षाघातकी तरह दर्द, वह दर्द जो सुन्न हो जाता है, वह दर्द जो उसको जान निकाल लेता है, वे बहुत तेज़ रहते हैं, वे बहुत देर-तक एक स्थानपर रह सकते हैं। गति-शक्ति-राहित्यमें जो बिजलीकी लहरकी तरह दर्द होता है, कास्टिकमने अकसर उसे बहुत आरोग्य किया है।

अब इन सब बीमारियोंके साथ रोगी धीरे-धीरे दुर्बल होता जाता है, यहाँतक कि अन्तमें वह चल नहीं सकता, अब वह बैठ नहीं सकता, वह इतना थका और कमजोर रहता है, कि लेट ही जाना पडता है। उसका मन और शरीर क्लान्त रहता है। यह एक पाक्षाघातिक क्लान्ति है।

अकडनके लक्षण। मरोड कभी यहाँ, कभी वहाँ। यदि डर जाये तो निश्चय है, कि कुछ-न-कुछ अकडनकी दशा आ ही जायगी। हिस्टीरियाकी प्रकृतिवाली स्त्रीको डरसे हिस्टीरिया हो जायगा। स्नायविक लडकियाँ, जिनको नर्त्तन रोग हो जानेकी प्रकृति रहती है, उनकी पेशियोंमें झटका लगेगा और दिन-रात ऐसा ही होता रहेगा, रातके समय नर्त्तन रोग। स्थानिक नर्त्तन रोग, किसी एक अंगमें झटका लगना, जीभका नर्त्तन रोग या चेहरेके एक पार्श्वका नर्त्तन रोग।

वयःसन्धि-कालमें, डरसे सर्दी लग जाने या मौसमके बहुत बडे परिवर्त्तनके समय खुली हवा लगनेके कारण जवान मनुष्योंकी मृगीकी बीमारी। मृगी, नर्त्तन रोग, पक्षाघात, हिस्टीरिया जो ऋतु-स्रावके समय बदतर हो जाती है। हम देखते हैं, कि कास्टिकम एक गहरी क्रियाशील दवा है। ठण्डी सूखी हवा लगनेके कारण बदतर हो जाता है। इसमें गर्मीसे बढनेवाली, तर दिनोंमें, तर मौसममें बढनेवाली वातकी शिकायतोंका लक्षण है, पर यह इतना निर्देशक नहीं है।

जितने उपसर्ग बता चुके हैं, उनमेंसे कोई ठण्डे पानीसे नहानेपर पैदा हो जा सकते हैं। देरतकका ठण्डी हवाका झोंक वातज तकलीफोंको बढा देगा और भीजने या नहानेके कारण सर्द होनेपर वातज तकलीफें बढ जायँगी।

कास्टिकमने उन्माद रोग आरोग्य किया है, प्रचण्ड सन्निपातके साथ नया पागलपन नहीं, धीमें प्रकारका मानसिक विकार, जिसमें कि मस्तिष्क थक जाया करता है। बहुत दिनकी बीमारी और बहुत तकलीफोंके कारण स्वास्थ्य-भङ्ग हो गया है और अन्तमें मन घबडाहटमें आ पडता है, अन्तमें

रोगी समझा जाता है कि इसमें कोई भी काम करनेकी योग्यता नहीं और अन्तमें वह पूर्व-सूचना आती है, कि कुछ होना चाहता है। वह सोच नहीं सकता और इसीलिये अपना व्यवसाय नहीं कर सकता। वह एक तरहसे शक्ति-हीन होता जाता है, वह भय-भरे विचारोंसे भरा रहता है, 'भूतकी कुचिन्ता" भयानक भ्रम-पूर्ण विचारोंसे भरा, प्रत्येक परिवर्त्तनपर भय रहता है कि कुछ होना चाहता है। मृत्युका भय, यह भय कि इस परिवर्त्तनमें कुछ भयङ्कर घटना घटा चाहती है। हमेशा कुछ भयङ्कर घटनाकी आशा किया करता है। कारिटकमकी मानसिक दशाका यह एक आश्चर्यजनक स्वरूप है। यह वृद्ध, भग्न-स्वास्थ्य मानसिक रोगियोंमें प्राप्त होता है, बहुत दिनोंकी चिन्ताके बाद या किसी किसमकी बहुत दिनोंकी झंझटोंके बाद ऐसी अवस्था आती है। नींद आनेके पहले घबड़ाहट, इसके साथ ही कास्टि-कमका रोगी अपनी समता खो देता है। हरएक चीज़ उसमें उत्तेजना उत्पन्न कर देती है, जितना ही वह अपनी बीमारियोंके विषयमें सोचता है, उतना ही बदतर होता जाता है। बहुत दिनोंका स्थायी शोक और दुःखके कारण मानसिक तथा अन्य उपसर्ग। भय तथा बहुत दिनोंकी झंझटोंका हानिकर प्रभाव, व्यवसायकी झंझटोंसे क्लान्त।

उद्भेदोंका दब जाना भी मानसिक लक्षण उत्पन्न कर सके हैं। मानसिक क्लान्ति, निराशा, घोर निराशा, जिङ्कका मलहम लगाने बाद जो उद्भेद दब जाते हैं, उनसे यह उत्पन्न होता है। जब उसके शरीरपर उद्भेद थे, तो वह बहुत अच्छा था, पर जब वे गायब हो गये तो उसका मन विशृङ्खलित हो गया। माथा और चेहरेके पार्श्व-भागमें उद्भेद तथा समूचे माथेमें फैल जाते हैं। मोटे पपड़ी-भरे उद्भेद समूचे पश्चात् मस्तिष्कको ढँक लेते हैं। क्योंकि ये उद्भेद जब दब जाते हैं, तो नर्त्तन रोग हो जानेकी सम्भावना हो जाती है। जबानोंमें कम्पन, पक्षाघातिक दुर्बलता और चेहरेपर उद्भेद, मुखमण्डलके पक्षाघातमें अकसर दिखायी देते हैं, ताकत देनेवाले लोशन तथा मलहमोंसे पुराने खुजलीको आरोग्य करनेका भी यही परिणाम होता है। तब रोगीको प्रचण्ड सर-दर्द हो जाता है, रक्त सञ्चयी और धमककी तरह सर-दर्द होता है। सरमें सुई गड़नेकी तरह प्रचण्ड दर्द होता है, यह शामको बदतर हो जाता है। पर नियमानुसार सर-दर्द अद्भुत प्रकृतिका होता है। कास्टि-कमका सर दर्द अकेला होता किसी खास अवसरपर ही दिखायी देता है।

अमूमन यह वातज या गठियाकी दशाओंसे सम्मिलित रहता है, जिसका प्रभाव खोपड़ीकी त्वचापर होता है, खोपड़ीकी त्वचा सिकुड़ती है और अन्य स्थानोंके सङ्कोचनकी भाँति जगह-जगहपर कस जाती है। वातज सर-दर्द, कभी-कभी तो दर्द इतना तेज़ होता है, कि मिचली और वमन उत्पन्न हो जाता है। अन्धा कर देनेवाला सर-दर्द, जिसके बाद पक्षाघात हो जाता है।

ग्रीवास्तम्भ (गर्दन अकड़ जाना--Torticollis), गर्दनकी पेशी छोटी पड़ जानेके कारण कभी-कभी सर एक पार्श्वमें खिंच जाता है, कण्ठराओं और पेशियोंकी शिथिलताकी कास्टिकम आरोग्यदायक दवा है।

कास्टिकममें आँखोंके भी बहुत-से लक्षण हैं। बहुत बार रोगी कहता है, कि पलकें इतनी भारी मालूम होती हैं, कि वह उन्हें उठाये नहीं रख सकता। यह धीरे धीरे बढ़ता जाता है, यहाँतक कि यह वास्तविक पक्षाघात हो जाता है। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है, कि आँखोंके सामने पर्दा पड़ा है, कुहरेकी तरह दृष्टि। आँखोंके सामने चिनगारियाँ। सम्पूर्ण वायु-मण्डल छोटे-छोटे काले कीड़ोंसे भरा रहता है। द्वित्व-दृष्टि। दृष्टि-शक्ति धीरे-धीरे कमजोर होती-होती अन्तमें नष्ट हो जाती है। चाक्षुषी नाड़ीका पक्षाघात हो जाता है। आँसुओंका स्राव, आँसू कटु, जलते हुए होते हैं, जखम हो जाना, आँखसे बहुत ज्यादा स्राव, पलकोंका सट जाना, आँखकी पेशियोंका पक्षाघात। कनीनिकाके जखमके साथ होनेवाले कण्ठमालाके कारण आँख उठना (अभिष्यन्द) को इसने आरोग्य किया है। सोराके मूलमें रहनेके कारण पीब होनेवाला अभिष्यन्द रोग।

इस दवाका दूसरा बहुत जबर्दस्त स्वरूप इसको मसे उत्पन्न करनेकी प्रवृत्ति है। चेहरेपर, नाककी ठोरपर, अंगुलियोंके अन्तमें तथा हाथपर मसे। कड़े, सूखे, सींगकी तरह मसे, शरीरके कितने ही अंशोंपर निकलते हैं।

इस दवाका स्वाभाविक स्वरूप बहुत ज्यादा, मोटा, कड़ा, लसदार स्राव श्लैष्मिक-झिल्लीसे कराना है। सर्दी-जनित तकलीफ कण्ठकर्णी-नलीतक चली जाती है। नाक और कण्ठसे कानमें जा पहुँचती है, जिसका परिणाम यह होता है, कि कानमें गरजकी आवाज़, पटाखेकी आवाज़ तथा प्रतिध्वनियाँ हुआ करती हैं। कानमें बहुत ज्यादा मैल इकट्ठा होता है, सर्दीकी वजहसे उत्पन्न बहरापन और श्रवण-स्नायुके (Auditory nerve) पक्षाघातके कारण बहरापन। कानमें बहुत ही तेज़ खींचनका दर्द।

इसकी नाककी स्नैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह (सर्दी) बहुत ही कष्टदायक होता है। पुरानी चीण सर्दी जिसमें समूचे नासा पथमें पपड़ी जमा करती है। जखमके साथ नाकके पिछले भागकी सर्दी, दाने पैदा हो जाना और बहुत ज्यादा, गाढ़ा, पीला या पीलापन लिये हरा स्राव, नाकसे खून आता है, जल्दी-जल्दी कटु जलीय स्राव नाकसे होता है। नाककी बहुत खुजली। नाककी नोंकपर एक मसा उत्पन्न हो जाता है।

चेहरेमें बहुत प्रचण्ड दर्द होता है। सर्दी लग जानेके कारण स्नायु शूल। इन दर्दोंके कारण अकसर चेहरेका पक्षाघात हो जाता है, चेहरेमें फाड़नेकी तरह दर्द, सुई गड़नेकी तरह दर्द, वातज-प्रकृतिका दर्द।

मुँह तथा नाकके चारों तरफ जखम। ओठके पास फटे तथा नाककी दीवार और आँखके कोनेमें फटे घाव। जरा सी भी उत्तेजना मिलनेपर दरारें पड़ जाना चाहते हैं, भगन्दर सन्धियोंके पासके चमड़ेका फटना। पुराना नकौतोंके पुराने रोगी, जिनकी सन्धियोंकी महरावें फटती हैं। कड़ी दीवारके साथ भगन्दरके छेद।

मसूढ़े शीताद रोगकी तरह (Scorbutic) हो जाते हैं और दांतसे हट जाते हैं। मसूढ़ेसे खून बहता है और जखम हो जाता है। हवामें घुड़सवारी करनेके कारण दांतकी जड़में बहुत तेज़ फाड़नेकी तरह दर्द। पुराने वातके रोगी, जो दिनभर सूखी हवा लगकर दांतकी तकलीफ़ सहा करते हैं। सुई गड़ने, फाड़ने तथा धमककी तरह दांतमें दर्द, यहांतक कि ठण्डी हवा खींचनेपर मजबूत दांतमें भी दर्द होने लगता है। बार-बार और जल्दी-जल्दी होनेवाले मसूढ़ोंके फोड़े। सड़ा, खट्टा या मुँहका स्वाद तीता।

जब जीभपर पक्षाघातिक दशाका प्रभाव होता है, तो बोली तुतलाने लगती है। गलकोष और कण्ठनली, इन दोनोंकी ही सम्पूर्ण पक्षाघातकी दशा रहती है। इसीलिये डिफ्थीरियाके परिणाममें कास्टिकम लाभदायक होता है। जब उसका अच्छी तरह इलाज नहीं हुआ रहता या जब दवा रोगको आरोग्य करनेके लिये काफी नहीं होती। भोजन गलत राहसे उतरता है या स्वर-यन्त्रमें जाता है अथवा नाकके पिछले हिस्सेमें। वाचा-सम्बन्धी यन्त्रोंका पक्षाघात, जीभका पक्षाघात, बोलनेके समय लटपटा जाती है, चबानेके समय लटपटा जाती हैं, चबानेके समय जीभ और गालको काट लेता है। डिफ्थीरियाके बादका पक्षाघात एक सांघातिक अवस्था है और कुछ ही दवाएँ

इसे आरोग्य कर सकती हैं। कास्टिकम उनमेंसे एक है। **लेकेसिस** और **कालुम्रलस** भी महत्वको दवाएँ हैं। कण्ठ और मुँहका सूखापन, कण्ठको खाल उधडी रहना, कण्ठमें भरापनका भाव रहनेके कारण लगातार घूट लेना पडता है। कण्ठमें एक स्नायविक भाव। यह अकसर पक्षाघातके पूर्वमें होता है। उत्तेजित होनेपर **स्टेफिसेग्रिया**का रोगी लगातार घूट लिया करता है और यह तबतक हुआ करता है, जबतक यह क्रिया एक भयानक कष्टप्रद नहीं हो उठती। कण्ठमें जलन, कण्ठमें झटका, स्वर-यन्त्रसे बराबर गाढा श्लेष्मा खखार-खखारकर निकाला करता है। रोगी जो आवाजें करता है, उसे यह जाननेके लिये अध्ययन कीजिये, कि श्लेष्मा कहाँसे आ रहा है। स्वर-भङ्गका मौजूद रहना बताता है, कि रोग स्वर-यन्त्रमें हैं।

कास्टिकमका रोगी भूखसे व्याकुल होकर खाने बैठता है, पर खाद्य-पदार्थ देखते ही उसकी भूख गायब हो जाती है। खाद्य-पदार्थका विचार, दृश्य या गन्ध भूखको गायब कर देता है। गर्भवती स्त्रियोंमें यह एक साधारण लक्षण है। भूखी रहनेपर भी खानेकी जगहपर बैठनेपर वह खा नहीं सकती। कैलि-कार्बोनिकममें खालीपन तथा पाकाशयके खालीपनकी अनुभूति है, इसके साथ ही भोजनसे अनिच्छा रहती है। **चायना**में राक्षसी भूख रहती है, पर खाद्य-पदार्थके दृश्यसे घृणा करता है।

भोजनके बाद प्यास, पानी पीनेकी इच्छा न होनेके साथ ठण्डे पानीकी प्यास, बियर नामक शराब पीनेकी इच्छा करता है, धुआँ-सा मांस, तीती कटु चीजें खानेकी इच्छा करता है, पर मीठी लजीज़ चीजोंकी इच्छा नहीं रहती। बहुत-सी दवाएँ, जिनमें भूख नहीं रहती, उनमें मीठी चीजें, पीठीकी चीजें प्रभृति खानेकी इच्छा होती है। प्यासके लक्षण, पर पानी पीनेकी इच्छा न होना, बहुत कुछ **लेकेसिस**को तरह है, ये दोनों ही बहुत आस-पास एक साथ चलती है, कण्ठकी पक्षाघातिक दशामें।

यह एक पाकाशयकी विचित्र अनुभूति है, कि वहाँ चूना खदबदा रहा है। पाकाशयमें कम्पन, जलन। रोटी खानेपर भार और दबाव मालूम होता है, काफीसे पाकाशयके सभी लक्षण बढ़े-से मालूम होते हैं, पर एक घूट ठण्डे पानीसे आराम मिलता है। इस दवाके बहुत-से लक्षण ठण्डे पानीकी एक घूटसे अच्छे बना दिये जा सकते हैं। एक घूट ठण्डा पानी पी

लेनेपर प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी रोक दी जा सकती है। पाक्षाघातिक दशामें ठण्डा पानी ताकत देता मालूम होता है। इन पुराने स्पर्श-असहिष्णु मेरुदण्डके लक्षणमें हाथमें लगा हुआ गर्म पानी दर्द पैदा कर देता है। केवल ठण्डे पानीसे ही आराम मिलता है।

कास्टिकममें डकार, मिचली, वमन तथा पाकाशयमें तनाव और प्रचण्ड दर्दका लक्षण है। चिकोटी काटनेकी तरह शूलका दर्द, मलान्त्रमें भी वह पाक्षाघातिक दुर्बलताकी प्रवृत्ति रहती है, जो शरीरके अन्य भागोंमें पायी जाती है। मलान्त्रकी क्रिया नहीं होती तथा कड़े मलोंसे भरी रहती है। जो आप-से-आप बिना लक्ष्यके ही निकल जाता है। ऐलोमें आप-से-आप पाखाना, छोटा कड़ा गेन्दकी तरह बच्चोंमें टपक पड़ता है। जब बच्चा इतना बड़ा भी हो जाता है, कि इन बातोंको समझने लगता है, तो भी उन्हें अनजानमें पाखाना हो जायगा।

पाक्षाघातिक दशाके कारण बहुत कम जोर लगाते ही जब रोगी खड़ा रहता है, तो पाखाना हो जाता है, खड़े रहनेके सिवा और वक्त पेशाब नहीं होता, किसी दूसरी भी स्थितिमें न होना सार्सापेरिला है। कब्ज, जल्दी-जल्दी वृथा ही पाखाना होना, मल कड़ा और चमकीला होता है तथा बड़ी तकलीफ़ और परिश्रमसे निकलता है।

मलद्वारका फटना, मलनालीमें खुजली और सुई गड़नेकी तरह दर्द, दिन और रात बहुत ज्यादा खुजली, बवासीरके मसे, गुह्यद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानपर टपक, कटे घाव और मसेमें टपक होती है और वे आगकी तरह जलते हैं। बवासीरके मसेसे रस-स्राव होता है और वे कड़े पड़ जाते हैं।

इस दवामें मूत्राशयका दो प्रकारका पक्षाघात होता है, एक तो बाहर निकलनेवाली पेशीपर प्रभाव डालते हैं और पेशाब रुक जाता है और दूसरा मलद्वारावरोधिनी पेशीपर प्रभाव पहुँचाता है और तब पेशाब आप-से-आप हो जाता है, "रोगीको इतनी आसानीसे पेशाब होता है, कि उसे धार निकलनेका पता ही नहीं रहता और शायद ही अन्धेरेमें उसे यह विश्वास होता है कि उसे पेशाब हो रहा है, जबतक कि वह हाथ लगाकर देख नहीं लेता।" कास्टिकममें पेशाबकी धार निकलनेका बिलकुल ही पता नहीं लगता, यह बिछावनपर पेशाब कर देनेवाले बच्चोंको बहुत ही लाभदायक दवा है,

खासकर स्त्रियोंकी भी यह एक आश्चर्यजनक दवा है। **खाँसनेके समय आप-से-आप पेशाब चू पड़ता है।** प्रसवका रुक जाना। मूत्राशयका पक्षाघात। कोई ऐसी स्त्री जिसे देखनेवाले मनुष्योंकी बहुत बड़ी भीड़मेंसे रेलगाडीके पास जाना पड़ता है, वह अपनी यात्राके अन्तमें देख पाती है, कि उसे पेशाब नहीं होता। यदि रोगीको उस समय सर्दी लग गयी है, तो उसकी दवा **रसटक्स** हो सकती है। अत्यधिक दबाव पड़ जानेके कारण या बहुत अधिक दबाव पड़ने और सर्दी लग जानेके कारण पेशियोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलताकी **रसटक्स** और **कास्टिकम** ही बहुत बड़ी दवाएँ हैं।

ऋतु-स्रावके समय बहुत कमजोरी। ऋतु-स्रावके समय चिन्ता-भरे सपने, उदासीनता, मरोड़की तरह अकड़न, पीठमें दर्द, ऋतु-स्रावके समय स्त्री बहुत-सी गड़बड़ियाँ भोग करती है। ऋतु-स्राव आरम्भ होनेके समय ही एक बहुत तेज़ मरोड़का दर्द पैदा हो जाता है। बच्चेको दूध पिलानेवाली धायको, थकावट, रातमें देखने और चिन्ताके कारण दूध आना बन्द हो जाता है।

कास्टिकमके रोगीको आवाज़की तकलीफ़ रहती है। आपको याद होगा, कि जब हम **कार्बो वेजिटेबिलिस**के लक्षणोंपर विचार कर रहे थे, मैंने कहा था, कि स्वर-भङ्ग शामके वक्त बदतर हो जाता है। अब यह देखिये, कि कास्टिकमका स्वर-भङ्ग सवेरे बदतर हो जाता है। सवेरे बिगड़ी हुई आवाज़में ही इसका रोगी जागता है। यह रोग यदि साधारण रहता है, तो कुछ देरतक इधर-उधर चलने-फिरने और थोड़ा-सा बलगम निकालनेपर रोगी अच्छा रहता है। स्वर-रज्जुके (Vocal cord) पक्षाघातके कारण एकाएक आवाज़ रुक जाना। कभी-कभी तो यह सवेरेकी रोग-वृद्धिके साथ आरम्भ होता है और धीरे-धीरे बढ़कर दिनभर और दिन-रात बना रहता है।

कास्टिकमका बलगम कड़ा होता है और समूचे शरीरको हिला देता है। वक्ष श्लेष्मासे भरा मालूम होता है और उसे ऐसा मालूम होता है, कि यदि वह कुछ और भी **गहराईतक खाँस** सकता, तो बलगम निकल जाता और वह चेष्टा करता है और बराबर तबतक खाँसता रहता है, यहाँतक कि थक जाता है या उसे इस बातका पता लग जाता है, कि **एक घूंट**

ठण्डा पानी पी लेनेसे ही आराम मिलेगा; पर यह एकदम बरफकी तरह ठण्डा होना चाहिये। खाँसी खोखली होती है और ऐसा मालूम होता है, कि किसी पीपेमें खाँस रहा है। यदि वह खूब गहराईतक खाँसता हुआ श्लेष्मातक जा पहुँचता है, तो बलगम निकालनेपर उसे आराम मिलता है। कभी-कभी तेजीसे पैदा होनेवाली क्षयकी बीमारीके पहले यह खाँसी आती है। यह एक गहराईतक काम करनेवाली दवा है, यह राजयक्ष्माको आरोग्य करती है, खासकर श्लेष्माका क्षय या तेजीसे बढ़नेवाला क्षय। "*इस तरहकी अनुभूतिके साथ खाँसी, कि रोगी इतना गहरा खाँस नहीं सकता* कि श्लेष्मा निकल सके, यह सुरसुरीके कारण उत्पन्न होती है, साथ ही खाल उधड़नेका भाव। सवेरे और शामको खाँसीके कारण रोगिनीकी नींद खुल जाती है। एक घूट ठण्डा पानी पी लेनेसे ही खाँसी बन्द हो जाती है। सामनेकी ओर झुकनेपर खाँसी बढ़ती है। लगातार कष्टदायक खाँसी, प्रत्येक बार खाँसीके साथ पेशाब चू पड़ता है।" समस्त प्रत्यङ्गोंमें इस तरहके दर्दके साथ इन्फ्लुएञ्जा, मानो मार खायी हो। "सर्दीकी दशामें हूपिङ्ग खाँसी (कुकुर खाँसी)।"

वक्षमें बहुत यन्त्रणा और कसावट, वक्षमें दबाव मालूम होना, ऐसा मालूम होता है, मानो उसपर एक बोझा रखा है। यह श्लेष्मासे भरा मालूम होता है और रोगी तबतक खाँसता है, जबतक कि मुँहभर श्लेष्मा नहीं निकल आता और इसके बाद कुछ देरतक उसे आराम मिलता है। मृत्युकी तरह पीला, पसीनेसे भरा।

पीठके भी बहुत-से लक्षण रहते हैं। दर्द और कड़ापन, अपनी जगहसे उठनेपर कड़ापन मालूम होना। *प्रत्यङ्गोंमें कड़ापन, कूल्हेके भीतरसे और* पीठमें। इसीलिये वह बैठा-बैठा उठ बैठता है तथा दर्द बिछावनकी गरमी तथा बाहरी प्रयोग की हुई गर्मीसे घट जाता है, केवल कभी-कभी अंगुलियोंका दर्द गर्मीसे पैदा हो जाता है।

कैमोमिला।

(Chamomilla)

कैमोमिलाकी सार्वाङ्गिक धातुगत प्रकृति बहुत अधिक स्पर्श-असहिष्णुता है। प्रत्येक भावका बहुत अधिक अनुभव होना, अपने पारिपार्श्विक अवस्थाओंका बहुत ज्यादा बोध होना। मनुष्योंका अति अधिक स्पर्श-द्वेष और सबसे बढकर है—**दर्दका बहुत अधिक अनुभव होना।** प्रकृतिगत चिडचिडापन इतना ज्यादा रहता है, कि थोडेसे दर्दसे भी इतने दिखावे पैदा हो जाते हैं, मानो रोगी बहुत तकलीफ़में हो। यह प्रकृतिगत रूपसे स्त्रियोंके स्नायु-मण्डलमें होता है, जब कि वह क्लान्त हो पडती है। बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहती है और दर्द भोगती रहती है।

इसके साथ-ही-साथ मानसिक अवस्था भी चलती है। मनकी स्पर्श-असहिष्णुता, बहुत अधिक चिडचिडापन। कैमोमिलामें ये दोनों ही इस तरह एक साथ रहते हैं, कि इनको अलग नहीं किया जा सकता। **दर्दका बहुत अधिक अनुभव होना।** सडनका, असन्तोषका, इतने **सहजमें** ही प्रभाव पहुँच जाता है, कि स्नायु इन कारणोंसे बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु हो पडते हैं तथा दर्द, अकडन, शूलका दर्द, सर-दर्द तथा अन्य प्रकारके स्नायविक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। स्नायविक लडकेको यदि सजा दी जायगी, तो उसे अकडन हो जायगी। अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णु स्त्री बराबर इनके दुःखसे कष्ट भोगती रहेगी। उत्तेजन और सडनके कारण पेशियोंका हिलना और फडकना, स्नायुओंकी अति अधिक अनुभवशीलता, इतनी अधिक कि कुछ ही दवाएँ इसका मुकाबला कर सकेंगी। जैसे—**काफिया, नक्स-वोमिका और ओपियम।** इसमें सन्देह नहीं, कि **ओपियम**पर वक्तृता सुने बिना आप स्वभावतः यही समझेंगे, कि **ओपियम**से बेहोशी—तन्द्रा आती है। आपमेंसे जिस किसीने कच्चे **ओपियम**से (अफ़ीम) पैदा होनेवाली मनकी भयङ्कर दशा और तकलीफ़ देखी होगी, वही समझ सकेंगे, कि कैमोमिलाके अनुभवाधिक्यसे मेरा क्या मतलब है? बच्चोंकी अकडन। यह आज-

कम भी कोई असाधारण बात नहीं है और खासकर जब इस देशमें चिकित्सा-व्यवसाय किया जाता है, क्योंकि छोटी माताएँ और धात्रियाँ बच्चोंको कैमोमिली चाय शूलके लिये दिया करती हैं, पर डाक्टर तुरन्त देख लेगा, यदि वह कैमोमिलाको जानता है, पर ये टङ्कार या अकड़नकी बीमारियाँ कैमोमिलाके कारण होती हैं। आप इसके झटकेपर, अकड़न, माथा गर्म तथा बढ़े हुए अनुभवाधिक्यपर ध्यान दीजिये, आवाज और मनुष्योंका अनुभव अधिक होता है तथा दो अकड़नोंके बीचमें होनेवाली चिड़चिड़ाहट। बच्चोंकी अकड़न, वे अकड़ जाते हैं, आँखें चक्कर खाती हैं, चेहरा कदाकार हो जाता है, पेशियाँ ऐंठती हैं, प्रत्यङ्ग बाहरकी ओर झटका खाकर छट जाते हैं, अगूठे मट जाते हैं, शरीर पीछेकी ओर झुक जाता है। कैमोमिलाकी अकड़नकी यही स्वाभाविक अवस्था है। ये अकड़नें अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णु बच्चोंको होती हैं, जब उन्हें दाँत निकलनेके समय बहुत तकलीफ़ भोगनी पड़ती है। दाँत निकलना तो एकदम स्वस्थ-प्रणालीसे होना चाहिये, पर यह वास्तवमें एक रोगकी तरह माना जाता है और बहुतसे चिकित्सक दाँत निकलनेवाले बच्चोंको दवाएँ दिया करते हैं। पहले एक फिर दूसरी। कैमोमिला भी उसी तरह दाँत निकलनेकी दवाके रूपमें अपव्यवहृत हो रहा है। इसमें सन्देह नहीं, कि बहुतसे बच्चोंको दाँत निकलनेके समय मस्तिष्कका उपदाह, पेटकी गड़बड़ी और वमन हुआ करता है, पर मैं यह कहता हूँ, कि दाँत निकलना एक रोगकी अवस्था न होना चाहिये, यह स्वाभाविक होना चाहिये। यदि बच्चे स्वास्थ्य-पूर्ण रहते, तो उनके दाँत आसानीसे निकल आते, पर धीरे-धीरे दाँत निकलनेका भी हमें सामना करना पड़ेगा और वह चिड़चिड़ापनकी अवस्था, वह अत्यधिक अनुभवाधिक्य, जिससे कि बच्चा सो नहीं सकता। इस तरह जागता है, मानो भयानक सपना देखा हो। उत्तेजनामें सोकर उठता है, वमन करता है, दस्त आने लगते हैं, हरे लसदार पतले दस्त, कुचले हुए घासकी तरह होते हैं। दाँत निकलनेके साथ बदबूदार अतिसार। ये लक्षण उस समय उत्पन्न होते हैं, जब बच्चेकी पूरी तरह खबरदारी नहीं की जाती या माता पूरी तरह प्रसवके उपयुक्त नहीं हुई रहती। "डकारकी तरह अकड़न, पलकोंमें ऐंठन, प्रत्यङ्गोंमें दर्द, साधारण सुस्ती, बेहोशी।" सुन्नपनके साथ सम्पूर्ण शरीरमें स्नायु-शूलका दर्द, ऐंठन, झटका या कनकनीका दर्द। ज्यादातर गर्म प्रयोगसे दर्द घटता है, सिवा दाँत और

जबड़ेके दर्दमें। दाँतमें दर्द, दाँतका दर्द, सर्दीसे घटता है और गर्मीसे बदतर हो जाता है, पर कानका और हाथ-पैरोंका दर्द गर्म प्रयोगसे अच्छा किया जाता है।

आप मूलग्रन्थके "ताप और मौसम" शीर्षक स्थानमें यह लक्षण देखेंगे, कि तापसे दर्द बदतर हो जाता है। मानो दो काले धब्बे लगे हुए हैं, मानो ये इसके दो बहुत ही महत्वपूर्ण लक्षण हैं और तब नीचे, बिना किसी अड़चनके ही कहा है—"सर्दीका बहुत अधिक अनुभव होना, सर्दीला" और "तापसे अच्छा रहना," पर असल बात यह है, कि तापसे बदतर हो जानेवाले दर्द, केवल दाँत और जबड़ेका दर्द है और यह निश्चित रूपमें उसी अंशका एक विशेष लक्षण है। जब कि यह सत्य है, कि सार्वाङ्गिक दशामें इसमें जो लिखा है, रोगी इससे ठीक बिलकुल विपरीत रहता है और तापसे अच्छा रहता है। दर्द तो साधारणतः गर्मीसे अच्छा रहता है, पर स्वतः रोगी भी तापसे अच्छा रहता है। इसलिये खासकरके यह कहना चाहिये कि वह दर्द जो साधारणत तापसे बदतर हो जाता है, दाँतका दर्द है।

कैमोमिलाका सबसे महत्वपूर्ण अंश है, रोगीकी मानसिक अवस्था। यह सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानपर प्रभाव जमाये रहती है और आप देखेंगे कि शरीरके प्रत्येक प्रदेश और अध्ययन किये जानेवाले हरेक अंशपर रोगीकी मानसिक अवस्थाकी छाप रहती है। इस दवामें अन्य अंशोंके लक्षणोंकी अपेक्षा ज्यादा मानसिक लक्षण हैं। रोना, "दर्दनाक कराहना। चिड़चिड़ापन।" इतनी ज्यादा उत्तेजना प्रवणता रहती है कि यह कभी-कभी एक बहुत अद्भुत रूपमें प्रकट हो जाती है। रोगिनी दर्दसे पागल हुई-सी मालूम होती है और वह रोगिनी अपना विवेक तथा समस्त कूटनीतित्व भूल जाती है। उदारताका नष्ट हो जाना, उसे दूसरोंके भावोंपर ध्यान देनेकी कोई जरूरत ही नहीं मालूम होती, दूसरेके भावोंपर ध्यान दिये बिना ही वह उनसे झगड़ा मोल ले लेती है। इसीलिये जब आप चिकित्सा-व्यवसायके लिये निकलें तो उस समय आश्चर्य न करें, यदि प्रसव-वेदना और कष्टसे भरी किसी रोगिनीकी पलङ्गके पास आपके पहुँचते ही वह कहे कि "डाक्टर, आपकी कोई जरूरत नहीं है, आप चले जायें।" ठीक ऐसा ही किसी भी स्त्रीके सम्बन्धमें हो सकता है, भयानक दर्दके कारण वह पागल हो रही है और यह उन्मत्तता, यह दर्दोंका अनु-

भयाविष्ट, मानसिक दशासे मिला रहता है। अपनी प्रकृतिपर अधिकार नहीं रख सकती और उसकी प्रकृति गर्म हो आया करती है। अब बच्चेको देखिये, बच्चा कलपता, चिल्लाता और प्रत्येक चीज़के लिये हाथ पैर पटकता है। प्रत्येक मिनट वह कुछ नयी चीज चाहता है, पर जो चीज मांगता था, उसे देनेपर इनकार कर देता है। यह कुछ खानेकी चीज, कुछ खेलनेका पदार्थ या खिलौना कुछ भी हो सकता है, पर जब ये चीजें बच्चोंको दी जाती हैं तो वह फेंक देता है, कमरेके बाहर फेंक देता है। बच्चेने जो चीज़ मांगी थी, पर अब जिसे वह नहीं चाहता, वह देनेके कारण धात्रीको मार देता है। **चाचल्य,** ऐसा मालूम होता है, कि कभी-कभी दर्द या तकलीफें धीरे-धीरे हिलनेपर घटती हैं, यह खासकर बच्चोंको होता है। बच्चा गोदमें रहनेपर ऐसा मालूम होता है, कि दर्द घटा रहता है और इसीलिये बच्चा दिन-रात गोदमें रहना चाहता है। शूलका दर्द तथा आँतोंकी तकलीफोंके सम्बन्धमें तो यह बिलकुल सत्य है। कानके दर्दमें भी ऐसा ही होता है, शामको आनेवाला बोखार तथा सर्दीसे होनेवाली बीमारियाँ तथा दाँत निकलनेके समयकी दशामें भी ठीक ऐसा ही होता है। **बच्चेको अवश्य ही गोदमें लेकर घूमना चाहिये।** आपको बाध्य होकर हमेशा बच्चेको गोदमें लिये रहना पड़ता है और फिर परिवारके लोगोंके लिये बेचैनी और चांचल्य रहता है। बच्चा दो-तीन बार कमरेमें धायके साथ ऊपर नीचे जाता है और फिर अपनी माताके पास जा पहुँचता है, फिर दो-तीन बार माताके साथ ऊपर-नीचे जाता है और फिर पिताके पास जानेकी इच्छा प्रकट करता है, उसी तरह उसका मिजाज़ बराबर बदला करता है। कभी भी सन्तुष्ट नहीं होता। उसे शान्ति नहीं मालूम होती, जब उसके कानमें दर्द होता है, तो तेज़ खोंचा मारनेकी तरह दर्दके कारण वह चीख उठता है। कानपर हाथ ले जाता है, दर्दके कारण अकसर आवाज तेज और चीखकी तरह हो जाती है, बड़ी उमरवालोंको जब दर्द होता है, तो इतना तेज़ होता है, कि वे शान्त नहीं रह सकते। हमेशा ही निश्चित रूपसे हिलने-डोलनेपर दर्द घटता नहीं है, पर ऐसा होता मालूम होता है। परन्तु वे इसीलिये हिला करते हैं, कि वे शान्त रह ही नहीं सकते। इस तरह कैमोमिलाका रोगी बिछावनमें छटपटाया करता है। यदि पलङ्गपर रहता है, क्षणभर भी शान्त नहीं

कन्धोंको ढकनेके लिये दूसरे आच्छादनकी जरूरत पड़ती है। कैमोमिलाका रोगी कान ढके रहना चाहता है। समूचा शरीर हवा और सर्दी सहन नहीं कर सकता है। रोगी बहुत ज्यादा वस्त्र पहनना और भरपूर ओढना चाहता है।

छींक, पानीकी तरह सर्दी, एक ओरका चेहरा गर्म रहता है तथा अक्सर सर और जबड़ेमें दर्द होता है। बहुत पानी बहनेवाली सर्दी, लसदार, कटु स्राव, साथ-ही-साथ गन्ध-शक्तिका नाश हो जाता है। जबतक सर्दी रहती है, तबतक घ्राण-शक्ति गायब रहती है।

चेहरेमें छेदनेकी तरह दर्द, कभी-कभी इसका आक्रमण दाँतोंपर हो जाता है, साथ ही बाह्य चेहरेपर। ऐसी स्पर्श-असहिष्णु स्त्रीका प्राप्त होना कठिन नहीं है। यदि वह असन्तोषसे विचलित हो रही है, यदि उसके नौकरोंने उसे तङ्ग किया है, उसके कमरेमें जाकर वह चेहरेके दर्दकी तकलीफ़, उत्तेजना और क्रोध भोग रही है। यदि चेहरेके बाहरी स्नायुओंमें दर्द है, तो तापसे दर्द घट जायगा। चेहरेका गर्म रहना, जब कि बाकी शरीर ठण्डा रहता है। "कुछ खाने या पीने बाद चेहरेपर पसीना होने लगता है।" सरके पास, केशवाली त्वचामें पसीना होना, इस दवाका एक साधारण स्वरूप है। कभी-कभी तो छोटी माता या आरक्त ज्वरमें हमें कैमोमिलाके प्रदर्शन प्राप्त होंगे। माथेके पास पसीना होना, एक ओरका चेहरा लाल रहता है। "गालकी एक तरफकी सूजन।" अर्थात एक प्रादाहिक आक्रमण, लाल-पर-लाल और अन्तमें बैगनी हो जाता है, विसर्पकी ओर बढ़ता जाता है, इसके साथ ही कैमोमिलाके मानसिक लक्षण रहते हैं। चेहरा लाल, एक पार्श्वकी लाली, चेहरेमें जलन, चेहरेका स्नायु-शूल, यदि कोई गर्म चीज़ मुँहमें ली जायगी, तो दाँतका दर्द पैदा हो जायगा और कभी-कभी तो दाँतकी जड़में टपक और दर्द पैदा हो जायगा। फाड़ने, सुई गड़ने और डङ्क मारनेकी तरह दर्द हो जाता है। बोलनेपर बढ़ जाता है, खुली हवामें बढ़ता है, गर्म कमरेमें, बिछावनमें, गर्म होनेपर तथा कोई भी चीज, जिससे शरीर गर्म होता है, इस दाँतके दर्दको बढ़ा देगा। यह मुँहमें ठण्डा पेय लेनेपर घटता है। वह दाँतका दर्द, जो दिनके समय बिलकुल ही नहीं होता, पर ज्योंही रात होती है और रोगी बिछावनमें गर्माता है, तब यह गोली मारनेकी तरह और फाड़नेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। इसमें

साथ ही चिड़चिड़ापन, दर्दका अनुभवाधिक्य, मानसिक दशा, गर्म सर तथा कैमोमिलाका दाँतका दर्द रहता है। मसूढ़ेका प्रदाह और सूजन। मसूढ़ेमें फोड़ा हो जानेकी सम्भावना, गर्म कमरेमें जानेपर दाँतमें दर्द, जब कि ठण्ढ़ी हवामें यह अच्छा था। यह दाँतका दर्द इस ढङ्गका है, जो सर्दी लगनेपर, पसीना होनेके कालमें सर्द हवा लगनेपर होता है और इतनेपर भी यह दाँतका दर्द जब मौजूद रहता है तो सर्दीसे घटता है। "हवाका झोंका लगनेके कारण दाँतका दर्द। ठण्डी चीजें खानेपर घटता है। आधी रातके पहले बदतर हो जाता है।" कैमोमिलाकी बहुत-सी तकलीफें जो शामको या रातमें पैदा होती हैं, वे करीब-करीब या ठीक आधी रातके समय दब जाती हैं। आधी रातसे लेकर सवेरेतक कैमोमिलाकी प्राय. सारी शिकायतें गायब रहती हैं। उनमेंसे बहुत-सी दिनके समय भी नहीं रहतीं, **रातके प्रथम भागमें** ही इसकी रोग-वृद्धि रहती है। "दाँत बहुत लम्बे मालूम होते हैं, फूले हुए मसूढ़े।" कैमोमिलाका रोगी अक्सर मसूढ़ोंसे ठण्डे पानीका गिलास पकड़ लेगा। छोटे-छोटे बच्चोंका भी मसूढ़ा प्रदाहित, दर्द-भरा रहता है, दाँत निकलना कष्टकर होता है और मुँहको देरतक ठण्डा रखनेकी इच्छा मालूम होती है। जब यह बहुत छोटा रहेगा, तो आप उससे यह आशा नहीं कर सकते, कि गिलासका ठण्डा किनारा मसूढ़ोंसे पकड़ रखेगा। मुँहसे बहुत ज्यादा बदबूदार गन्ध निकलना।

समूचे शरीरमें बच्चेको जो अकड़न होती है, वही स्वर-यन्त्रपर भी प्रभाव पहुँचा सकती हैं और कभी-कभी तो बच्चोंके किसी अन्य अंगपर प्रभाव पहुँचाये बिना ही स्वर-यन्त्रपर प्रभाव पहुँचा देती है। "खाँसनेके समय स्वर-यन्त्रका आक्षेप या बिना खाँसी आये ही स्वर-यन्त्रका आक्षेपिक सङ्कोचन। श्वास रुकना, कण्ठकी अकड़न, घाव और प्रदाह।" कैमोमिला गल क्षत (Sore-throat) आरोग्य करता है, जब कि कण्ठ समान भावसे लाल रहता है, जो लाली प्राय समूचे कण्ठमें फैल जाती है साथ ही भरपूर सूजन बनी रहती है। तालुमूलका (Tonsils) प्रदाह। बहुत लाली, जब मानसिक दशा मौजूद हो। यह उन चिड़चिड़े प्रकृतिवाले, जो उसी तरह दर्द भोगा करते हैं, जो सहजमें ही क्रोधित हो जाते हैं, जो लगातार चिढ़े रहते हैं, उनके सिवा और किसीका गलक्षत आरोग्य न करेगा। गलक्षतमें कैमोमिला कब देना चाहिये? यह कैमोमिलाकी मानसिक अवस्था ही बताती है।

ही सहन नहीं होता"—यह सभी तरहके दर्द और उपसर्गोंमें होता है और मानसिक दशा, यह चिड़चिड़ापन, ऋतु-कालके समय चिड़चिड़ी मानसिक दशा—ये सभी कैमोमिलाका प्रदर्शन करते हैं। यह अतिरज' हो या स्वल्प-रज.—रज'स्रावमें बहुत ज्यादा काले थक्के निकलते हैं। "क्रोधके बाद ऋतु-शूल (Menstrual colic)—इसका मतलब है, कि ऋतु-कालमें जरायुमें प्रचण्ड मरोड़का दर्द। यदि स्त्रीको किसी तरहकी उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है या क्रोध आ जाता है। कामोत्तेजन, भावोद्रेक, मनकी चञ्चलतामें, उस स्त्रीमें रजः-स्रावके समय ऐंठन पैदा कर देते हैं, जिन्हें मरोड़ नहीं होता, इस तरह उसपर आक्रमण करते हैं, मानो उसे सर्दी लग गयी हो। झिल्ली जिस ऋतु-शूल (बाधकके दर्द) के साथ निकलती है, उसमें यह बहुत लाभ करती है। यह शायद पहले मासिक ऋतु-कालसे हो थी, प्रत्येक माह स्त्रियाँ कुछ-न-कुछ झिल्ली ऋतु-स्रावके साथ निकाल फेंकती हैं। यह प्रचण्ड प्रसवकी तरहके दर्दके साथ निकल जाती है और अकसर थक्कोंके साथ। कैमोमिला इसका उपशामक (थोड़े समयके लिये रोकनेवाला) हो सकता है। यह वह धातुगत दवा नहीं है, जो जड़से आरोग्य कर देती है और गहरी सोरा-नाशक दवाकी भाँति भविष्यमें झिल्लीका बनना रोक देती है, पर तेज़ आक्रमणमें, मनकी चिड़चिड़ी अवस्था जब हो, यह अकसर उपशामक ही होती है, ज्वरकी हरारतकी दशा तापसे घट जाती है, मरोड़ तथा प्रसवके दर्दकी तरह कसकर पकड़ रखनेका भाव। "पीला यन्त्रणादायक श्वेत-प्रदर बहुत ज्यादा रज स्राव, रक्त गहरे रङ्गका, करीब-करीब काला, थक्के भरा, पीछेसे भीतर होकर सामनेकी तरफतक दर्द, मूर्च्छाका आक्रमण, प्रत्यङ्गोंका ठण्डापन, बहुत तेज़ प्यास।'

गर्भावस्थामें भी स्त्रियोंमें कैमोमिलाकी दशा उत्पन्न हो जाती है। अनियमित सङ्कोचन, झूठा प्रसवका दर्द। प्रसवका दर्द, जो गलत स्थानमें अनुभव होता है। प्रसवका दर्द, जो पीठमें बहुत ज्यादा अनुभव होता है। बहुत ही दर्द-भरा सङ्कोचन, कानमें फाड़ने, चीख निकालने देनेकी तरह सङ्कोचन। इतनी चिड़चिड़ी हो जाती है, कि दर्दको शाप देती है, डाक्टरको धिक्कारती है, हर शख्सको लानत मलामत करती है, डाक्टरको अपने कमरेसे बाहर निकाल देती है, धात्रीको भगा देती है और फिर उसे बुलाती है, जो चीज़ उसे दी जाती है, उसे लेनेसे इनकार कर देती है। इधर-उधर कसकर पकड़नेवाला

प्रसवका दर्द और मरोड़, जिससे मालूम होता है, कि जरायुके कुछ तन्तु एक दिशाको सङ्कुचित हो रहे हैं और कुछ दूसरे तन्तु दूसरी दिशाको। वहां वही समता नहीं रहती। नियमवद्ध सङ्कोचन जो जरायुकी चीजें बाहर निकाल फेंकनेके लिये रहना चाहिये, सन्तान या अण्डको निकाल देनेके लिये वह नहीं होता। यदि गर्भधारण कालमें कोई स्त्री चिकित्सकके तत्वावधानमें हो तो जरायुके इस अनियमित सङ्कोचनको दूर करनेवाली दवा चुन सकता है या प्रसवका समय आनेपर यह सङ्कोचन ठीक कर सकता है। तब इतना प्रचण्ड दर्द नहीं हो सकता, उसे सङ्कोचनका अनुभव तो होता है, पर बहुत बार यह दर्द रहित भावसे होता है। आप हमेशा किसी स्त्रीको इस तरह तैयार न कर सकेंगे, वे हमेशा आपको ऐसी इजाजत न देगी, स्त्रियां ज्यादातर कल्पनामय और खामखेयाली रहा करती हैं और प्रसवके थोडो ही देर पहले भले ही राजी हो जायें, पर दूसरे समय नहीं हो सकती, सम्पूर्ण गर्भावस्थामें उस स्त्रीको चिकित्सा होनी चाहिये और कभी-कभी तो इससे भी ज्यादा समय लगता है। किसी स्त्रीके लिये *गर्भावस्था चिकित्सा* करानेका एक दैवी काल है, इस समय उसकी बीमारीके ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं, जो किसी भी दूसरे समय दिखायी नहीं देते। यदि उसमें सोराकी अवस्था है, तो *गर्भ* होनेके पहलेतक वह छिपी रह जा सकती है, क्योंकि सम्भव है, कि प्रकृतिमें रहनेवाली दशाको प्रकट करनेवाला गर्भ एक उत्तेजक कारण हो सकता है। इसलिये होमियोपैथिक चिकित्सकके लिये रोगिनीको अध्ययन करनेका यह एक सुअवसर प्राप्त होता है तथा उन प्रकट हुए लक्षणोंके आधारपर उस स्त्रीको धातुगत परिवर्त्तन करनेवाली दवा देनेका अवसर प्राप्त होता है, जो केवल उन लक्षणोंको ही दूर नहीं करेगी और प्रसवके लिये तैयार करेगी, बल्कि उसके स्वास्थ्य-विधानमें जो कुछ गडबडी है, उसको बहुत कुछ दूर कर देगी तथा जीवन-भरके लिये उसका तकलीफोंसे छुटकारा हो जायगा तथा बहुत-से ऐसे उपसर्गों से वह छूट जायगी, जो शायद तबतक अच्छे न होते, जबतक वे दूसरे ढङ्गसे बाहर प्रकट न हो जाते। जो स्त्री होमियोपैथीके सम्बन्धमें बहुत कुछ समझती है, वह अवश्य गर्भ होते ही धातुगत चिकित्साके लिये अपनेको तैयार कर लेती है अर्थात् चिकित्सकको सभी बाते सावधानतासे बतायगी, उसका पूरा विवरण देगी, सभी तकलीफे बतायगी, सभी कष्ट कहेगी, जिसमें वह रोगिनीका पूरा पूरा अध्ययन कर सके। गर्भावस्था न रहनेपर जो प्रकृति-

मरोड। प्रत्यङ्ग सो जाते हैं, प्रत्यङ्गोंमें तथा कभी-कभी अन्य स्थानोंमें दर्दके साथ; पर खासकर प्रत्यङ्गोंमें एक **सुन्नपनका भाव** या मुर्दपनके भावके साथ दर्द, सुन्नपनके भावके साथ दर्द, कभी-कभी तो चर्मका स्पर्श-ज्ञान बिल्कुल ही लोप हो जाना प्रभृति रहता है, पर इतनेपर भी लम्बे स्नायुओंमें तथा हाथ-पैरोंमें बहुत तेज़ दर्द रहता है तथा रोगी अन्य समयोंकी भाँति ही इस समय भी दर्द-कातर रहता है। दर्दका बहुत अधिक अनुभव होना, पर **स्वयं दर्द ही एक सुन्नपनका भाव** अपने बाद लाता है। पुरानी किताबोंमें, इसे पक्षाघात पैदा करनेवाला दर्द कहा गया है। हाथ-पैरोंमें अकड़न, समूचे शरीरमें ऐंठन। "पैरकी पोटली और टाँगोंमे मरोड़, पैरोंमें फाड़नेकी तरह दर्द, जिसके बाद गहरा जाड़ा लगता है। रातके समय तलवेमें जलन, अपना पैर बिछावनसे बाहर निकाल रखता है।" बँधे ढङ्गको चिकित्सा करनेवाले सभी उस समय **सलफर** ही देते हैं, जब रोगी अपने पैर बिछावनसे बाहर निकाल रखता है, पर गर्म पैर, जलते हुए तलवेके लक्षणकी दवाएँ बहुत-सी हैं। इन सबमें रोगी बिछावनसे अपने पैर बाहर निकाल रखता है, इसमें सन्देह नहीं, कि उन्हें ठण्डा रखनेके लिये। पता नहीं लगता कि इन सबको ही **सलफर** क्यों दिया जाना चाहिये ?"

रातमें पैदा होनेवाले दर्दका कभी-कभी आधी रातके पहले एक दूसरा स्वरूप यह है, कि वे इतने प्रचण्ड होते हैं, कि रोगी शान्त नहीं रह सकता। बच्चेको जब दर्द होता है, तब वह गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है, इससे उसको फायदा होता दिखाई देता है। जब अवस्था-प्राप्तोंको यह रातका दर्द होता है, तो वे उठकर सहनपर टहलते हैं। सुन्न कर देनेवाला दर्द, तापसे घटनेवाला दर्द रोगीको बिछावनसे उतार देनेवाला दर्द, जिसके साथ प्रत्यङ्गोंमें ऐंठन होती है। दर्दका बहुत अधिक अनुभव होना, बहुत चिड़-चिड़ापन। कैमोमिलाका रोगी रातमें सो नहीं सकता। **बेलेडोना**की तरह वह निद्रालु रहता है, पर वह सो नहीं सकता। यदि वह दिनभर शान्त रहता है, तो वह सो जाना चाहता है, पर ज्योंही सो जानेका समय आता है, वह एकदम जाग पड़ता है, रातमें वह निद्रा-रहित और बेचैन रहता है, खासकर रातके प्रथम भागमें। कभी-कभी रातमें, सोनेकी चेष्टाके समय कैमोमिलाका रोगी इस तरह खाम-खयालसे भरा और इतना उत्तेजित

रातके प्रथम भागमें रहता है, कि जब वह सोने जाता है, तो वह घबड़ाता है और ऐंठन होती है तथा डरावने सपने देखता और तकलीफोंसे भरा रहता है। "चिन्ता-भरे सपने। भयङ्कर भूत प्रेत, छाया देखता और चौंक पड़ता है, प्राणघातक घटनाओंके सपने।" सोनेकी चेष्टा करनेपर मानसिक क्लान्त और बाह्य-रूपसे भी क्लान्त रहता है।

चेलिडोनियम।

(Chelidonium)

चेलिडोनियम नयी बीमारियोंके लिये ज्यादा उपयोगिनी दवा है, यद्यपि यह कितनी ही पुरानी बीमारियोंको आरोग्य करता है। यह बहुत गहरायीतक काम करनेवाली दवा नहीं है। यह साधारण घटनापर तथा काल और प्रक्रियाकी गहराईमें बहुत कुछ **ब्रायोनिया**की तरह है। यह प्रधानतः पाकाशय और आँतोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहमें, नये तथा आधे पुराने यकृतके उपसर्गों में तथा दाहिनी ओरके न्युमोनियामें व्यवहृत होता है। चमड़ा बहुत कुछ पीली आभा लिये हो जाता है और धीरे-धीरे बढ़कर इन रोगोंके साथ कामला रोग (Jaundice) हो जाता है। कामलाके साथ अर्द्ध-पुरातन पाकाशय प्रदाह पाकाशय तथा अन्त्रोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह, कामलाके साथ, यकृतमें रक्त-सञ्चय तथा यन्त्रणा। दाहिनी ओरका न्युमोनिया, जिसके साथ जटिल यकृतके उपसर्ग या कामला रोग रहता है। यह दवा सम्पूर्ण स्वास्थ्य-मण्डलपर प्रभाव दिखाती मालूम होती है, पर करीब-करीब सबमें ही इसके साथ यकृत आक्रान्त रहता है और यह वृद्ध पुरुष और चिकित्सक जिसे पित्तप्रकोप (Biliousness) कहते हैं, उसके लिये उपयोगी है। रोगी साधारणतः पित्त-दोष दूषित रहता है, उसे मिचली और वमन होता है, शिराओंमें तनाव रहता है। चमड़ेका रङ्ग पीलापन लिये भूरा रहता है।

परीक्षामें बहुत कम मानसिक लक्षण प्रकट हुए हैं। रोगीकी इच्छा अनिच्छाओंका उनसे पूरा पता नहीं लगता, बुद्धि-जनित क्रियाओंका भी स्पष्ट आभास नहीं प्राप्त होता। इसकी परीक्षाकी और भी जरूरत है। इतनेपर भी

परीक्षामें बहुतायतके लक्षण प्रकट हो गये हैं। "उदासी और घबड़ाहट", मानसिक दशामें कुछ-न-कुछ तकलीफ़ हमेशा ही बनी रहती है, "घबड़ाहटके कारण आराम नहीं मिलता," इस वजहसे रोगी दिन-रात बेचैन रहता है। उदासी मानो रोगिनीने कोई अपराध किया है, मानो कोई भयावनी घटना घटा चाहती है, इतनी उदास कि वह सोचती है, कि जरूर मर जायगी, निराशासे रोती है, मानसिक श्रम और बातचीतसे अनिच्छा। यदि आप उन दवाओंकी परीक्षा करें, जो आरम्भमें यकृतपर क्रिया करती है, जो यकृतकी क्रियाको घटा देती हैं, तो आपको एक शब्द "उदासीनता" मिलेगा। हृद्-रोगोंके साथ बहुत अधिक उत्तेजना, यकृतकी तकलीफोंके साथ मानसिक दशाका धीरे-धीरे हटते जाना, मनकी कार्य करनेकी शक्तिका न रहना, चिन्तन करनेकी ताकतका न रहना, नाड़ी धीमी, सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानकी शिथिलता, कानसक साधारणतः विचलित—विशृङ्खलित हो पड़ते हैं और रोगोंके सरमें चक्कर आता है। "चीजें चक्कर खाती हैं," सरमें चक्कर पैदा हो जाता है और यह तबतक नहीं छूटता, जबतक मिचली, इसके बाद यहाँतक कि वमन नहीं होने लगता। "सरमें इतना चक्कर आता है, कि वह वमन करने लगता है। मनकी विशृङ्खलता, चेतनाका क्षय और मूर्च्छा, यकृतके रोगोंके साथ ये भी साधारण लक्षण रहते हैं।

निम्न-लिखित लक्षण यकृतके लक्षणोंके साथ कुछ-न-कुछ अवश्य ही मौजूद रहते हैं—धीमा लगातार होनेवाली प्रकृतिका दर्द होता है, "घावकी तरह यन्त्रणा।" कुचल जानेकी तरह दर्द। यकृत छूनेपर स्पर्श-असहिष्णु, लगातार बना रहनेवाला दर्द, जो सम्पूर्ण दाहिने यकृत-खण्डमें होता मालूम होता है, जिससे भरापनका एक भाव पैदा हो जाता है। श्वासमें तकलीफ़के साथ ऊपरकी ओर दबाव, पाकाशयसे सहानुभूतिके साथ तथा मिचली और वमनके साथ नीचेकी ओर दबाव। इसके बाद दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे तेज़ दर्द अनुभव होता है। दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे धीमा लगातार बना रहने-वाला दर्द, दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे तेज़ खोंचा मारनेवाला दर्द, ये न्युमोनिया और प्लुरिसी (फुसफुसावरक-झिल्ली) के प्रदाहके साथ भी मिले रहते हैं। यह न्युमोनिया और प्लुरिसीको आरोग्य करता है, यह कितनी ही तरहका यकृतका रक्त-सञ्चय आरोग्य करता है, अब ये दर्द सामनेसे पीछेकी ओर जाते हैं तथा पीठमें होते मालूम होते हैं। पीठमें कड़ा दर्द मालूम होता है। "बहुतसे

रोगी इसे खोंचा मारनेकी तरह दर्द कहेगे, कुछ फाड़नेकी तरह दर्द बतायेगे और दूसरे इसे ऐसा तीव्र दर्द कहेगे, जो दाहिने कोखके भीतर होता हुआ यकृतके दाहिने खण्डमे होकर पीठमें चला जाता है। "यकृत-प्रदेशसे आरम्भ होनेवाला दर्द, यह कन्धा और पीठकी तरफ आघात करता है, यकृत-प्रदेशमें अकड़नकी तरह दर्द, यकृत-प्रदेशमे दबावका दर्द।" प्रदाह या रक्त-सञ्चयमें भरापन और विवृद्धि, अर्द्ध-पुरातन रोगी या नये रोगीके लिये यह दवा इन दशाओंके लिये उपयोगिनी मालूम होती है। दाहिना कुक्षि-प्रदेश तना रहता है और दबानेपर दर्द होता है।

इस दवाने पित्त-पथरीका शूल आरोग्य किया है। ऐसे चिकित्सक, जो दवाका ठीक परिपालन जानते हैं, कई मिनटोंमे ही पित्त पथरीका शूल आरोग्य कर देते हैं। इन छोटी नलियोंपर काम करनेवाली दवाएँ हमारे पास है, जो उन्हें शिथिल बना देती है और बिना दर्दके ही पत्थरको निकल जाने देती हैं। सम्पूर्ण स्वस्थ अवस्थामें, इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि पित्तमें कभी पत्थर नहीं होता, जो पित्ताशयमें रुका रहे, पर यह छोटी-सी पित्त-कोष प्रणाली, अपना छोटा सा मुँह खोल देती है और उसमे एक छोटा सा पत्थर चला जाता है और उस छोटी-सी नलीकी श्लैष्मिक-झिल्लीको खरोचता हुआ उपदाह उत्पन्न कर देता है। जब यह दर्द खोंचा मारनेकी तरह होता है। छुरा मारनेकी तरह, फाड़ने, छेदनेकी तरह दर्द, पीठके भीतर फेंकता है, तो चेलिडोनियम उसे आरोग्य कर देगा। क्योंकि वह आरोग्य होता है, रोगी कहता है,—"ओह। कैसा आराम मिला, दर्द चला गया है।" इस दवाने वह आक्षेप आरोग्य कर दिया है। छोटी प्रणाली खुल जाती हैं और वह पत्थर डक्टस काम्युनिस कोलिडोकस (Ductus Communis Choledochus) की राहसे निकल जाता है। निर्देशित लक्षणोंके अनुसार दी हुई प्रत्येक दवा पित्त-पथरी-शूलको आरोग्य कर देगी।

बिछावनपर पड़े हुए छटपटाता, कोई रोगी, जिसे बहुत ताप, अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णुता रहती है, जिसे शरीरका छूना सहन नहीं होता, दर्दसे चीखता है, चेहरा लाल और माथा गर्म रहता है, उसे इसके साथ ही पित्त-शूलका दर्द है, वह तीन मिनटोंके भीतर ही **बेलेडोना**से आरोग्य हो जायगा, पर वह सब इस दवाके अनुरूप ही नहीं है। **नेट्रम-सल्फ**

परीक्षामें बहुतायतके लक्षण प्रकट हो गये हैं। "उदासी और घबड़ाहट", मानसिक दशामें कुछ न-कुछ तकलीफ हमेशा ही बनी रहती है, "घबड़ाहटके कारण आराम नहीं मिलता," इस वजहसे रोगी दिन-रात बेचैन रहता है। उदासी मानो रोगिनीने कोई अपराध किया है, मानो कोई भयावनी घटना घटा चाहती है, इतनी उदास कि वह सोचती है, कि जरूर मर जायगी, निराशासे रोती है, मानसिक श्रम और बातचीतसे अनिच्छा। यदि आप उन दवाओंकी परीक्षा करें, जो आरम्भमें यकृतपर क्रिया करती हैं, जो यकृतकी क्रियाको घटा देती हैं, तो आपको एक शब्द "उदासीनता" मिलेगा। हृद्-रोगोंके साथ बहुत अधिक उत्तेजना, यकृतकी तकलीफोंके साथ मानसिक दशाका धीरे-धीरे हटते जाना, मनकी कार्य करनेकी शक्तिका न रहना, चिन्तन करनेकी ताकतका न रहना, नाड़ी धीमी, सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधानकी शिथिलता, कानतक साधारणतः विचलित—विशृङ्खलित हो पड़ते हैं और रोगीके सरमें चक्कर आता है। "चीजें चक्कर खाती हैं," सरमें चक्कर पैदा हो जाता है और यह तबतक नहीं छूटता, जबतक मिचली, इसके बाद यहाँतक कि वमन नहीं होने लगता। "सरमें इतना चक्कर आता है, कि वह वमन करने लगता है। मनकी विशृङ्खलता, चेतनाका क्षय और मूर्च्छा, यकृतके रोगोंके साथ ये भी साधारण लक्षण रहते हैं।

निम्न-लिखित लक्षण यकृतके लक्षणोंके साथ कुछ-न-कुछ अवश्य ही मौजूद रहते हैं—धीमा लगातार होनेवाली प्रकृतिका दर्द होता है, "घावकी तरह यन्त्रणा।" कुचल जानेकी तरह दर्द। यकृत छूनेपर स्पर्श-असहिष्णु, लगातार बना रहनेवाला दर्द, जो सम्पूर्ण दाहिने यकृत-खण्डमें होता मालूम होता है, जिससे भरापनका एक भाव पैदा हो जाता है। श्वासमें तकलीफके साथ ऊपरकी ओर दबाव, पाकाशयसे सहानुभूतिके साथ तथा मिचली और वमनके साथ नीचेकी ओर दबाव। इसके बाद दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे तेज़ दर्द अनुभव होता है। दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे धीमा लगातार बना रहनेवाला दर्द, दाहिनी स्कन्धास्थिके नीचे तेज़ खोंचा मारनेवाला दर्द, ये न्युमोनिया और प्लुरिसी (फुसफुसावरक-झिल्ली) के प्रदाहके साथ भी मिले रहते हैं। यह न्युमोनिया और प्लुरिसीको आरोग्य करता है, यह कितनी ही तरहका यकृतका रक्त-सञ्चय आरोग्य करता है, जब ये दर्द सामनेसे पीछेकी ओर जाते हैं तथा पीठमें होते मालूम होते हैं। पीठमें कड़ा दर्द मालूम होता है। "बहुतसे

दाहिनी ओरकी वक्षके लक्षण, यकृतकी बीमारी तथा इनमें रहनेवाले मानसिक उपसर्गों के साथ चेलिडोनियममें खांसी रहती है। हिलने-डोलनेपर प्रचण्ड अभिवृद्धि। तापसे दर्द घट जाता है। पाकाशयमें फैल जानेवाला दर्द भी तापसे उपशम हो जाता है। भोजन कर लेनेपर मानसिक लक्षण घट जाते है, गर्म दूध पीनेकी इच्छा करता है, गर्म तरल। गर्म चीजें खानेपर यकृत, वक्ष तथा पाकाशयके उपसर्ग घटते हैं।

'पित्तका वमन, ओकाई, पित्तकी डकारें घबड़ाहटके आक्रमणके समय मिचली और ओकाई।" ऊपर जो रोग बताये गये हैं, वे साधारणतः इनमें वर्त्तमान रहते हैं। जब दर्द तेज़ हो जाता है, तो पाकाशयपर आघात करता और वमन लाता मालूम होता है। कुछ गर्म चोज़ोंसे घटना। "पाकाशय-गह्वरमें बेचैनीका एक भाव, पाकाशयमें लगातार दर्द यह हिलने-डोलनेपर बढ़ता है और डकार आनेपर घटता है। पाकाशय-गह्वरमें सङ्कोचन और स्पर्श-कातरता। "ये सभी छूनेपर बढ़ जाते हैं और भोजन करनेपर घटते हैं।" पाकाशयमें लगातार यन्त्रणा, भोजन कर लेनेपर घटती है। पाकाशयमें सङ्कोचन और चिकोटी काटनेकी तरह दर्द, यह प्रत्यङ्गोंको ऊपर खींचनेपर तथा बायीं करवट लेटनेपर अच्छा रहता है। भोजनसे घटता है।

इसमें आँखके भी बहुत-से लक्षण हैं। सुई गड़नेकी तरह दर्द। "कनीनिकाका गदलापन।" प्रदाह। आँखमें कुचल जानेकी तरह दर्द, दाहिने चक्षु गह्वरके ऊपरका स्नायु-शूल।" बहुत-से अवसरोंपर यह दाहिनी ओर अधिक पसन्द करता है।

चेहरेमें जो कुछ प्रकट होता है, उसमें कामला एक बहुत ही प्रत्यक्ष चीज़ है और इसके बाद, उसका भूरा, मैला चेहरा हो जाता है। "पीला, मैला—पीला चेहरा।"

पाकाशय यकृत और फेफड़े प्रभृतिकी तरह गर्मीसे सर-दर्द पैदा हो जाता है। हिलने-डोलनेपर सर-दर्द बढ़ता है, तापसे बढ़ता है, गर्म कमरेमें बढ़ता है तथा गर्म बाहरी प्रयोगसे बढ़ता है। यही इसका सार्वाङ्गिक और अन्तर दशासे प्रभेद दिखाई देता है। इसमें बहुत तरहका सर-दर्द होता है। समय बाँधकर होनेवाला पित्तज सवमन सर-दर्द, इसके साथ ही पित्तकी कै, यह गर्मी लग जानेके कारण होता है। बहुत ज्यादा गरमा जानेपर, हिलने-

डोलनेपर बढता है, अन्धेरे कमरेमें चुपचाप पडा रहना चाहता है तथा पित्तका वमन होनेपर अच्छा रहता है। पुराने ढङ्गके पित्तज वमनके साथ सर-दर्द।

पित्तज अतिसार। कामला रोगके साथ, मिट्टीकी तरह, पोला, मल-मिला, पोटीनकी तरह मल, पित्त-रहित मल, बहुत ही हल्के रङ्गका मल। बच्चोंको एकदम सफेद पाखाना होना, पर्यायक्रमसे पतले दस्त और कब्ज। मल भूरा, सफेद, पानीको तरह, हरी आम, पतला, लसदार, चमकीला, पोला या भूरा, जिसपर पीली रेखा पडी रहती है।

स्वर-भङ्ग। "खाँसनेके समय स्वर-यन्त्रमें दर्द और स्वर-यन्त्रमें दबाव।" यकृतके लक्षण और निमुमोनिया तथा साधारणत वक्षकी तकलीफोंके साथ श्वास-कष्ट उत्पन्न हो जाता है। "खाँसीका हलका दौरा होनेके साथ श्वासमें कष्ट। लघु तेज़ श्वास-प्रश्वास। घबड़ाहट, मानो अवश्य ही इसका दम अटक जायगा। श्वास-कष्ट, वक्षमें कसावट मानो श्वास रुक जायगी।" इसमें रातके समय तर दमाका आक्रमण होता है। यह प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तन-कालमें उत्पन्न हो जाता है। रोगी बहुत ठण्डा या बहुत गर्म ऋतु-परिवर्त्तन सहन नहीं कर सकता। कन्धोंमें, कूल्हेमें, प्रत्यङ्गोंमें ऋतु-परिवर्त्तनके कारण वातज-रोग।

यकृत, फेफडा और वक्षकी बीमारियोंके साथ खाँसी आती है। खाँसी आक्षेपिक रहती है। पुरानी खाँसी, बहुत तेज़, आक्षेपिक सूखी तथा आवेग़के रूपमें आती है। "बलगमके साथ आक्षेपिक खाँसी।" थोडी देरतक खाँसी आनेके बाद थोडा-सा बलगम निकलता है। "छोटी खाँसीका बारम्बार आक्रमण। लघु खाँसी, जिसके साथ थोडा-सा भूरा श्लेष्मा निकलता है। घरघराहट-भरी, क्लान्त करनेवाली खाँसी।"

प्रत्यङ्गोंमे वात और स्नायु-शूलका दर्द होता है। साधारणत प्रत्यङ्गोंका बहुत ही तीव्र स्नायु-शूल, प्रत्यङ्ग भारी और अकडे मालूम होते हैं। इसके बाद रोगी कुछ कमजोर हो पडता है, कलेजा कमजोर तथा खूनका दौरान भी दुर्बल हो जाता है, प्रत्यङ्गोंकी शोथ-ग्रस्त अवस्था, बहुत बेचैनी। "उप-सर्गोंमें कम्पन और ऐंठन, क्लान्ति, जडता, काम करनेकी इच्छा न होना।

शरीरके निम्न-अंशमें, प्रत्यङ्गों और हाथ-पैरोंमें होनेकी अपेक्षा माथा तथा चेहरेमें ही अधिककर स्नायु-शूल हुआ करता है।

आर्द्रके साथ होनेवाले न्युमोनियाकी तरह या यक्ष्मके प्रदाहको भांति इसमें तेज ज्वरका आक्रमण होता है। इसने सविराम ज्वर आरोग्य किया है, जो शामको या तीसरे पहर आता है।

चर्ममें खुजली, कामला रोग। इसने पुराने गलित जख्मोंको आरोग्य किया है।

चिनिनम आर्सेनिकोसम।

(Chininum Arsenicosum)

बीमारी रातमें आती है, अधिकांश उपसर्ग खुली हवामें बढ़ जाते हैं, बढ़ती हुई सार्वाङ्गिक रक्त क्षीणता। प्रादाहित स्थान काले पड़ जाते हैं। हरित्पाण्डु रोग। **सर्दी सहन नहीं होती** तथा सर्दीसे तथा सर्द हो जानेपर उपसर्ग और भी बदतर हो जाते हैं, सर्दी लग जानेकी प्रवृत्ति।

कमजोर स्वास्थ्यवालोंकी यह एक लाभदायक दवा है। ठण्ढे, पीले, क्षीण हुए मनुष्य। बहुत दिनोंका पीब-स्राव तथा रक्त स्रावके बाद। पुराना अतिसार, जब दुर्बलता सबसे बढ़ी-चढ़ी दिखाई देती है, रक्तवाहिनियोंका भरावन, गह्वरोंमें शोथ या शोथ रोग। क्षीणता। शारीरिक परिश्रम सहन नहीं कर सकता थोड़ी भी उत्तेजना होनेपर मूर्च्छित हो जाता है। गर्म रहना चाहता है, गर्म पेय तथा गर्म भोजनकी इच्छा करता है, गर्म कमरेमें रोग घट जाता है, लेट जाना चाहता है। हिलने-डोलनेसे घृणा, फाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द प्रत्यक्ष रूपसे बँधे समयपर बीमारी होती है। समूचे शरीरमें स्पन्दन मालूम होता है, नाड़ी तेज, **कमजोर और अनियमित** रहती है। शिथिल और थुलथुला (ढीला), दर्द अत्यधिक अनुभव होता है, बहुत-से उपसर्ग रातमें उत्पन्न हो जाते हैं। खड़े होनेपर बहुत-से लक्षण बढ़ जाते हैं, **स्पर्शका बहुत अधिक अनुभव होना, कम्पन,** खुली हवामें टहलनेपर बीमारी बढ़ जाती है, चलनेपर कमजोरी मालूम होना तूफानी झोंकेकी हवामें उपसर्ग बढ़ जाते हैं।

थोड़ेमें ही क्रोधित हो जाता है तथा बोलने या सवालका जवाब देनेसे इनकार करता है, दिन-रात चिन्ता रहती है, पर शामको, जाड़ेके समय बढ़ जाती है। भयके साथ घबड़ाहट, ज्वरके समय घबड़ाहट, यहाँतक कि उन्मत्त हो उठता है, जागनेपर घबड़ाहट। उन चीजोंकी इच्छा करता है, जिनके मिलनेपर उनकी परवाह नहीं करता, अपने अत्यन्त अन्तरङ्ग मित्रोंकी भी आलोचना करने लगता है, शिकायत किया करता है, जागनेपर चित्त-विभ्रम। छोटी-छोटी बातोंपर भी बहुत अधिक ध्यान देता है (**साइलिसिया, थूजा**)। रातमें, रक्त-स्राव होने बाद सन्निपात-ग्रस्त हो पड़ता है। बहुत-से खाम-खयाल, भ्रमात्मक चीजोंका भ्रम, मूर्त्तियाँ देखता है, डरावनी मूर्त्तियाँ, जाड़ा, ताप और रोगके समय निराशा, प्रत्येक पदार्थसे असन्तुष्ट, सहजमें ही हताश और मूर्च्छित हो पड़ता है, मन-ही-मन क्रोधित, छोटी-छोटी बातोंपर उत्तेजित हो उठता है, कल्पित पदार्थोंपर विचार। रातमें किसी विपत्तिके आनेका भय, भूत-प्रेतोंका भय, भुलक्कड़पन, रातमें विचारोंसे मन भरा रहता है। सविराम ज्वरमें असन्तोष, सभी आनन्दोत्सवोंसे उदासीन, काम करनेकी इच्छा न होना। जाड़ेके समय और जागनेपर **चिड़चिड़ा** रहता है। ज्वरके समय बिछावनसे उछल पड़ता है, जाड़ेके समय और ज्वर-कालमें कराहता है, जीवनसे वितृष्णा, याददाश्तकी कमजोरी। रोगी सहजमें ही क्रोधित हो जाता है और अपमान करना चाहता है। रातमें और ज्वरके समय बहुत बेचैनी, घबड़ाहट-भरी बेचैनी, जिसकी वजहसे बिछावनसे उतर पड़ता है, निराश हो जाता है, बहुत उदासी, खासकर जाड़ा लगने और ज्वरके भोगकालके समय और कभी-कभी पसीना होनेके समय, आवाज़ तथा सार्वाङ्गिक रूपसे बहुत अधिक स्पर्श-असहिष्णुता रहती है। भावपूर्ण, काम-सम्बन्धी ज्यादतियों और वीर्य-चयके कारण उत्पन्न मानसिक लक्षण। बोलनेसे इनकार करता है और चुप रहता है। बिना हिले-डोले घण्टोंतक चुपचाप बैठा रहता है। भटकती हुई बातें, नींद लगते ही चौंक पड़ता है और इस तरह जाग उठता है, मानो डर गया हो। निम्न-श्रेणीके ज्वरोंमें बेहोशकी तरह बिछावनपर पड़ा रहता है। आत्मघाती प्रकृति, सन्देही। बद्धमूल विचार, डरपोक, जीवनसे ऊबा। रोना। शीतके विषयमें सोचनेसे ही जाड़ा लगने लगता है। मानसिक परिश्रमसे सर-दर्द बदतर हो जाता है।

मिचलीके साथ शामको सर-दर्द हो जाता है। खुली हवामें टहलनेके समय।

माथेमें अत्यधिक गर्मीके साथ लघुमस्तिष्कमें रक्त सञ्चय। ललाट ठण्डा हो जाता है और पसीनेसे भर जाता है, माथेका सङ्कोचन ललाटमें बहुत गर्मी, सवेरे माथेमें बहुत भार मालूम होना, सर हिलानेपर मस्तिष्कमें गति मालूम होना, मस्तिष्कमें खूनके दौरानकी अनुभूति गर्दनसे पीछेकी ओर तथा बाहुमें चकडन सी होकर वास्तविक टङ्कार उत्पन्न हो जाता है। माथेमें खींचा मारनेकी तरह दर्द होता है, जिससे नींद नहीं आती। समूचे माथेमें दर्द, सोकर उठनेपर सवेरे, तीसरे पहर, पर रातमें बहुत ही तेज़ हो जाता है। रातमें सर-दर्द, सर्द हवासे सरमें दर्द पैदा हो जाता है, खोपड़ीकी त्वचा स्पर्श-असहिष्णु हो जाती है। रोगके समय कंघी करने या केश बाँधनेपर तकलीफ़ होती है, सर्दीका सर-दर्द। शीत और तापके समय बहुत ही तेज़ दर्द, पर ज्योंही खुलकर पसीना होने लगता है, त्योंही घट जाता है, सर्द होनेपर दर्द या तो बदतर हो जाता है या दर्द पैदा हो जाता है। नाककी सर्दीके साथ दर्द बहुत तेज़ रहता है, खाँसने या झटका लगनेपर और भोजनके बाद बदतर हो जाता है। हथौड़ीसे ठोकनेकी तरह सर-दर्द। ऋतु-स्रावके समय सर-दर्द, सर-दर्द मानसिक परिश्रमसे बढ़ जाता है। स्नायविक सर-दर्द तथा उत्तेजना या शोर-गुलके कारण सर-दर्द। आवेशिक दर्द **समय बाँधकर** होनेवाला सर-दर्द, प्रत्येक दो सप्ताहपर होनेवाला सर-दर्द, धमककी तरह दर्द, टहलनेके समय दर्द बदतर हो जाता है। स्नायु शूलका दर्द, बायें पार्श्वमें ज्यादा होता है, रगड़नेपर घटता है। सरमें भीतरकी ओर लगातार दर्द मालूम होता है। ललाटमें दर्द, ज्यादातर दाहिनी तरफ होता है, सोनेपर **माथेके पिछले** भागमें, शामको सरके दोनों पार्श्वोंमें, कनपटीमें और ललाटमें, खोपड़ीमें, ज्वर आनेके बाद और नींदके बाद समूचे माथेमें कुचल जानेकी तरह दर्द, बायें पश्चात् मस्तिष्क-प्रदेशमें जलनकी तरह दर्द, यह सवेरे गलेतक फैल जाता है। फट जानेकी तरह दर्द, दबावका दर्द, ललाटमें दबाव, आँखोंपर, पश्चात् मस्तक तथा कनपटियोंमें दबाव। ललाटमें सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द, ललाटमें पसीना। ठण्डी हवामें सर खोल देनेपर उपसर्ग बढ़ जाते हैं।

प्रदाहित आँखें। आँखसे आँसू बहना। बहुत ज्यादा आलोकातङ्क तथा चक्षुपुट (पलक) सम्मिलनी पेशीकी अकडन। गर्म आँसू झोंकसे निकलते हैं। प्रत्येक आँखमें बड़े-बड़े जखम, आधी रातसे लेकर ३ बजे सवेरेतक बदतर अवस्था रहती है। बायी आँखके सामने झिलमिलाहट। रातमें आँखोंमें दर्द। **जलन करनेवाला दर्द,** दबाव, गड्ढेमें धँसी आँखें। धुँधली दृष्टि, आँखके सामने चिनगारियाँ। **दुर्बल दृष्टि-शक्ति।**

कानमें आवाजें। गुनगुनाहट, भनभनाहट, घण्टेकी आवाज़, **गरज, गानेका शब्द।** कानमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। कानमें दर्द, जलन करनेवाला, सुई गड़नेकी तरह, फाड़नेकी तरह दर्द, श्रवण-शक्ति तीव्र। श्रवण-शक्ति गड़बड़।

स्रावके साथ नाककी सर्दी। सूखी सर्दी, खून-मिले स्रावके साथ नाककी सर्दी या **पीब-भरा** स्राव। नाकमें सूखापन। **नकसीर।** नाक रुकी। छींकें आना, नाककी कोनोंकी खाल उधड़ जाना, खासकर समय बाँधकर होनेवाली नाककी सर्दी और बार-बार नाककी सर्दी होना, जिससे लगातार सर्दी जारी रहती है, उसमें खासकर लाभदायक होता है।

हरित्पाण्डु रोगकी तरह चेहरा। फटे ओठ, नीलापन लिये ओठ, पीला मिट्टीकी तरह चेहरा। पीले चेहरेके साथ गालोंपर चक्करकी तरह लाल दाग। चेहरेका बीमारीकी तरह रङ्ग। कामला रोगकी तरह चेहरा। चिन्तित चेहरेका भाव, खुली हवामें चेहरेका दर्द बदतर हो जाता है, जलन, फाड़नेकी तरह दर्द। समय बाँधकर होनेवाला दर्द। निम्न-हन्वस्थि और कर्णमूल-ग्रन्थिकी सूजन। ठण्डा पसीना। चेहरेका शोथ। ओठोंका घाव।

मुँहमें जलन करनेवाला कर्कटका जखम। मुँहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे रक्त-स्राव। फटी-फटी जीभ। **जीभ काली,** भूरी, सफेद या पीली। मुँह और जीभ सूखी, मुँह गर्म, जीभका जलन करनेवाला खाल उधड़ना। **जखम-भरी जीभ।** मुँहसे लार बहना, फूली हुई जीभ और मसूढ़े, खानेके समय स्वाद खराब, **तीता,** धातुका स्वाद, नमकीन **खट्टा,** मीठा। जीभपर फुन्सियाँ। रातमें दाँतमें दर्द, दोनों दाँतोंसे एक साथ काटनेपर बढ़ जाता है और छूनेसे तथा ठण्डे पेयोंसे बढ़ता है। दर्द समय बाँधकर होता है और झटका देनेकी तरह, **धमक**की तरह, फाड़नेवाला तथा मैलेरिया ज्वरके बाद होता है।

कण्ठमें सङ्कोचन, कण्ठमें सूखापन, साघातिक आरक्त ज्वरमें कण्ठका सड़ी गन्धके साथ सड़नेवाला प्रदाह, कण्ठ गर्म मालूम होता है। डिफ्थीरियामें जब कालापन लिये रस-स्राव होता था तथा मुँहसे सड़ी गन्ध आती थी, उस समय इस दवाका व्यवहार हुआ है। **निगलनेपर बहुत ज्यादा दर्द।** कण्ठमें जलन। निगलनेपर कण्ठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। निगलनेमें कष्ट। सूखा कण्ठ। बराबर खुखारकर कण्ठ साफ किया करता है।

भूख या तो घट जाती है या **राक्षसी भूख** रहती है। जलपानकी भूख ही नहीं रहती, भोजनकी इच्छाके बिना ही जबर्दस्त भूख। गरिष्ट खाद्य तथा चर्बीसे घृणा, **खाद्य और मांससे अनिच्छा।** शराब पीनेकी, ठण्डे पेयोंकी, खट्टी चीजोंकी और मीठी चीजोंकी इच्छा। पाकाशयमें ठण्डापनकी अनुभूति। खालीपन, खानेपर अच्छा हो जाता है। भोजनके बाद डकार, **तीता,** खाली, खाद्य-पदार्थों का, खट्टा। मुँहमें पानी भर आना। भोजनके बाद भरापनका भाव। कलेजेमें जलन। भोजनके बाद पाकाशयमें बहुत अधिक भार। हिचकी। पेट सहजमें ही गड़बड़ा जाता है। अण्डा या मछली पचा नहीं सकता, पानी तीता मालूम होता है। सर-दर्दके कालमें, भोजन करने बाद मिचली। खाँसनेसे पेटमें दर्द, **भोजनके बाद।** जलन, मरोड़। **दबाव, यन्त्रणा,** सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। खाँसीके साथ ओकाई। शामके वक्त, **पसीना होनेके समय,** तेज़ प्यास, तापके समय थोड़ा-थोड़ा पानी पीनेकी प्यास। रातमें खाँसनेपर, **कुछ पीनेके बाद, भोजनके बाद,** सर दर्दके साथ वमन। वमन पित्तका, काला, खूनका, खाद्य-पदार्थका, श्लेष्माका, खट्टा, पानीका। नींद आनेके साथ ही मिचली और वमन। २ बजे दिनको एकाएक वमन होने लगना।

शीतके समय तलपेटमें ठण्डक मालूम होना, सवेरे, भोजनके बाद, उदरमें तनाव, आध्मान वायु, तलपेटका शोथ। मैलेरियाके प्रभावके कारण यकृत और प्लीहा बढ़ी हुई। सविराम ज्वरमें **पेट फूलना।** तलपेटमें भरापन, **यकृतका कड़ापन।** भोजनके बाद तलपेटमें बोझकी तरह भार मालूम होना। उदर-शूलकी तरह। जाड़ा लगनेके समय तलपेटमें बहुत दर्द, अतिसारके समय, भोजनके बाद, पाखाना होनेके पहले, तलपेटके बल लेट

प्रत्यङ्ग वरफकी तरह ठण्डे, ऊपरी प्रत्यङ्ग ठण्डे। **हाथ-पैर ठण्डे। घुटने ठण्डे। पैर ठण्डे।** पैरकी पोटलियोंमें ऐंठन। अगुलीके नाखूनोंमें नीलापन। प्रत्यङ्गोंपर उद्भेद। जङ्घोंके बीचकी खाल उधड़ जाना। प्रत्यङ्गोंका भार, निम्न-प्रत्यङ्गोंका। उरु सन्धि-रोगमें बहुत दिनोंतक पीव होने बाद। प्रत्यङ्गोंमें, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें सुई गड़नेको तरह दर्द। प्रत्यङ्ग, अग्रबाहु, निम्न-प्रत्यङ्ग तथा पैरोंकी कमजोरी। सर्दीला भावके साथ निम्न-प्रत्यङ्गोंके रोएँ खड़े हो जाना। तलहत्थियाँ गर्म और सूखी। प्रत्यङ्गोका दर्द, **वातज,** सन्धियोंमें। **गठियाकी सन्धियाँ।** ऊपरी प्रत्यङ्गोंमें, कन्धोंमें दर्द। घुटनोंमें दर्द। समस्त प्रत्यङ्गोंमें लगातार बना रहनेवाला दर्द। भ्रमणकारी लगातार बना रहनेवाला दर्द। बायें बाहुको द्विमूल पेशीमें दर्द। पैरोंमें, प्रत्यङ्गोंमें जलन। प्रत्यङ्गोंमें ऊपरी अङ्गोंमें खींचनका दर्द, जङ्घामें, घुटनेमें, पैरमें, कन्धों में सुई गड़नेकी तरह दर्द, ऊपरी बाहुमें, **कूल्हेमें, जघाओंमे, घुटनोंमे, पैरमे। प्रत्यङ्गोंमे फाड़नेकी तरह दर्द,** ऊपरो शाखा अङ्गोंमें, कन्धो मे, **कोहनियोंमे,** कलाईमें, हाथमें, **अंगुलियोंमे,** निम्न-अङ्गो में, जघाओ में, पैरो'में, घुट्टीमें, पञ्जेमें। **प्रत्यङ्गोंकी बेचैनी;** निम्न प्रत्यङ्गो'की, पैरो'की, पञ्जो की। प्रत्यङ्गो का कड़ापन, हाथो का, अगुलियो का, निम्न-प्रत्यङ्गो का। हाथ-पैरो की शोथज सूजन। प्रत्यङ्गो'का काँपना, हाथका, निम्न-प्रत्यङ्गो'का। निम्न-प्रत्यङ्गो'की कमजोरी, प्रत्यङ्गो की सन्धियो की, ऊपरी प्रत्यङ्गो की, **निम्न-प्रत्यङ्गोंकी, घुटनोंकी, जघाओंकी दुर्बलता।**

गहरी नींद। ज्वरके समय निद्रा। चिन्ता-भरे सपने, मृत्युके, भयावने, दुर्भाग्यके, तङ्ग करनेके, जीवन्तकी तरह। देरसे सोता है, ३ बजे सवेरेतक बेचैन रहता है। **बेचैन नींद,** तीसरे पहर और शामको **औंघाई** आती है। आधी रातके पहले अनिन्द्रा। निन्द्रा स्फूर्तिदायक नहीं होती। बहुत सवेरे जागता है, बारम्बार, बहुत जम्हाई लेता है।

सविराम ज्वर। शीत—सवेरे—दोपहरके पहले, दोपहरमें, तीसरे पहर, शामको रातमें, आधी रातमें, **खुली हवामे;** खुली हवामें घूमनेपर, होनेवाला, बिछावनमें रहनेपर। **कुछ पोना जाडा बढा देता है।** चौथिया जाड़ा, चौथिया या **तिजारी ज्वर। कड़ा हिला देनेवाला**

जाडा । समस्त शरीरपर ठण्डी-ठण्डी लहरोंका जाडा और रोएँ खडे हो जाना। गर्म कमरा रोगको घटा देता है। **बाहरी गरमीसे** बीमारी घटती है। जाडा लगने बाद जोरका बोखार आ जाता है। शामको और तीसरे पहर बिना जाडेके ही बोखार। पर्यायक्रमसे शीत और ज्वर। जलन करनेवाला बोखार। समस्त दिन ज्वर-भाव, पर रातमें बढ जाता है। रातमें सूखा ताप, **क्षय-ज्वर ।** निद्राके समय ताप। जाडा, ताप फिर पसीना। तापके समय रोगी खुला रहना चाहता है। **पसीना—सवेरे और रातमें,** घबडाहटके समय सर्दी, खाँसनेसे, **कमजोरीके साथ, थोडा भी परिश्रम करनेपर, ज्वरके बाद,** हिलने-डोलनेपर, बहुत ज्यादा पसीना, **निद्राके समय, जागने बाद,** चादरमें पीला दाग पडता है। भीड-भरे कमरेमें रहनेके कारण बोखार। मैलेरिया ज्वर, पसीनेके समय सब लक्षण बढ जाते हैं। बहुत ज्यादा सुस्तीके **साथ ज्वर ।**

चर्मका दुबला होते जाना। जलन। **चर्म ठण्डा ।** नीलाभ बदरङ्ग, **पीला, सुनहरा,** प्रत्येक ग्रीष्म ऋतुमें कामला हो जाता है। **सूखापन ।** जलन करनेवाले उद्भेद, फोडे, फुन्सियाँ, खुजलानेपर आमवात निकलना। चकत्ते, **सुरसुरी ।** रोमाञ्च होना। **खुजलाहट,** जलन। **चमडा बहुत स्पर्श-असहिष्णु रहता** है। एक प्रकारकी यन्त्रणाका भाव। मट जाना। चर्मकी शोथज सूजन। जखम, जलन, स्पर्श-असहिष्णुता, डङ्क मारनेकी तरह दर्द।

साइक्यूटा विरोसा ।

(Cicuta Virosa)

इसकी अकडन-प्रवणताके कारण यह दवा बहुत ही मजेदार हो रही है। यह समस्त स्नायु मण्डलको उपदाहकी ऐसी अवस्थामें ला रखती है, कि किसी भी अङ्गपर दबाव देते ही टङ्कार हो जाता है। यह अकडन केन्द्रसे परिधितक फैल जाती है, माथा, चेहरा और आँखे भी आक्रान्त हो जाती हैं। पाकाशयमें एक प्रकारकी सुरसुरी होकर अकडनकी सूचना दे देती है

कुछ उपसर्ग तो वक्षसे, खासकर हृत्पिण्डसे फैलते हैं। जाड़ा और शीत वक्षसे आरम्भ होते हैं, हृत्पिण्डके स्थानपर एक प्रकारकी ठण्डक मालूम होती है और वहाँसे वह अन्य स्थानोंतक फैलती है। अकसर अकड़न सरके पास आरम्भ होती है और कण्ठके पास तथा नीचेकी ओर फैल जाती है। समूचे शरीरमें एक इस ढङ्गका तनाव रहता है, कि उत्तेजना होनेके बाद, शरीरमें एक प्रकारकी आग भड़क उठती है और उससे टङ्कार पैदा हो जाता है। कण्ठनली या कण्ठमें किसी तरहका भी उपदाह, उस प्रदेशमें भयानक टङ्कार उत्पन्न कर देगा। मछलीकी एक हड्डी निगल जानेपर, रक्त-पूर्ण मनुष्योंको एक चुनचुनीभर होती है, पर उसके बदले इतना अधिक उपदाह हो जाता है, कि अकड़न होने लगती है और शरीरके अन्य भागोंमें फैल जाती है। चर्म या नाखूनके भीतर काँटा गड़नेपर जो अकड़न पैदा हो जाती थी, पुराने समयमें यह उस टङ्कार और अकड़नकी दवा थी, जो **बेलेडोना**की प्रतियोगिता करती थी। आजकल हम स्नायुमें आघातके लिये **लीडम और हाइपेरिकम**का बहुत अधिक व्यवहार देखते हैं।

इसके कुछ लक्षणोंका विचित्र रूप यह है, कि वे निस्पन्द-वायु (Catalepsy) बेखुदीका आकार धारण करते हैं, या तो निस्पन्द वायुकी अवस्था रह सकती हैं अथवा बहुत कुछ उसकी जैसी अवस्था हो हो जा सकती है। जो कुछ हुआ है या किसी निश्चित समयपर रोगीने जो कुछ कहा है, वह उसे बिलकुल याद नहीं रहता। वह किसीको नहीं जानता और बिना किसीको पहचाने पड़ा रहता है, पर उससे जब कुछ पूछा जाता है, तो ठीक-ठीक जवाब देता है और फिर क्या हुआ है यह उसे बिलकुल याद नहीं रहता।

यह एक मस्तिष्क मेरुदण्डका उपदाह है। सर पीछेकी ओर खिंच जाता है, पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है, सभी अङ्ग अकड़े और कड़े पड़ जाते हैं। इसने आघातसे उत्पन्न अकड़न, दाँती लगना, मृगी, मृगीके ढङ्गका टङ्कार आरोग्य किया है।

आँतोंमें तेज़ दर्दके साथ अकड़नकी गति और अकड़न पैदा हो जाती है। यदि पाकाशय बिगड़ा और सर्द हुआ रहता है या उसमें भय अथवा अन्य मानसिक उपसर्ग रहते हैं, तो अकड़न पैदा हो जाती है। वह अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णु रहता है तथा स्पर्श और झोंकेकी हवासे अकड़न पैदा हो

जाती है। यह अकड़न ऊपरसे नीचेकी ओर फैलती है और इस तरह यह **क्यूप्रम**के बिलकुल विपरीत है। **क्यूप्रम**की अकड़न हाथ पैरोंसे केन्द्रकी ओर फैलती है अर्थात छोटी छोटी अकड़नें, सिर्फ मरोड़, पहले अंगुलियोंमें मालूम होता है, उसके बाद हाथमें और फिर वक्ष तथा समूचे शरीरमें अनुभव होता है। साइक्यूटामें माथा, आँखें और कण्ठकी छोटी छोटी अकड़नें, प्रचण्ड कुञ्चनें पीठकी ओरसे हाथ पैरोंमें फैलती हैं। **सिकेलि**की अकड़न कभी-कभी चेहरेसे आरम्भ होती है।

समय-समयपर तो रोगी किसीको भी नहीं पहचानता, पर जब उसे स्पर्श किया या उससे कुछ कहा जाता है, तो वह ठीक-ठीक उत्तर देता है। एकाएक उसे चेतना आ जाती है और जो कुछ हुआ है, उसे बिलकुल याद नहीं रहता। वह वर्त्तमानमें भूतको मिलाकर गोलमाल कर देता है, वह अपनेको एक छोटा बच्चा समझता है, वह नहीं जानता कि वह कहाँ है। पुराने दोस्तोंके चेहरे उसे अद्भुत दिखाई देते हैं, वह उनकी तरफ देखता और सोचता है, कि क्या ये वे ही मनुष्य हैं, जिन्हें वह पूर्वसे जानता था। उसे अपना मकान और परिचित स्थान भी विचित्र मालूम होते हैं, आवाजें अद्भुत सुन पड़ती हैं। दर्शन और घ्राणेन्द्रियाँ तथा और-और विशेष इन्द्रियाँ विशृङ्खलित और विचलित हो पड़ती हैं। वह खास अपनी उम्र और अपनी परिस्थितिके सम्बन्धमें घबड़ाया रहता है। निष्पन्द-वायु (Catalepsy) रोगके आक्रमणके बाद किसी स्त्रीका बच्चों-सा व्यवहार हो जा सकता है। कोई पुरुष सोचता है, कि वह बच्चा है और बच्चों-सा व्यवहार करता है। बेढ़ंगा ढङ्गसे हँसता है, *खिलौने खेलता है तथा लड़कोंकी भाँतिके अन्य व्यवहार करता है।* उसे ऐसा मालूम होता है, कि वह किसी अद्भुत स्थानमें है और इससे उसे भय मालूम होता है। बड़ी घबड़ाहटके साथ भविष्यको सोचता है। मानसिक शक्तिकी शून्यता—कुछ कालके लिये विचारों और अनुभूतियोंका न आना। अमूमन आनन्दोल्लास और निष्पन्द-वायुकी अवस्थासे ही अकड़न होती है। **नेट्रम-म्यूर** इस दवाके *मानसिक लक्षणोंके बहुत कुछ सदृश है*, क्योंकि **नेट्रम-म्यूर**की रोगिनी घरके काम-काज बराबर *किया करती है* और दूसरे *काम भी करती है*, पर दूसरे दिन उनके विषयमें कुछ भी नहीं जानती। **नक्स-मस्केटा** एक ऐसी दवा है, जिसमें भी इसी तरह काम करनेके समय एकदम माथा साफ हो जाता है। मस्तिष्क एकदम खाली हो जाता है।

इसके रोगीमें अद्भुत इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं। कोयला तथा अन्य विचित्र पदार्थ खाना चाहता है, क्योंकि उसमें कौन चीज़ खाने योग्य है या नहीं है, इसका प्रभेद करनेकी शक्ति नहीं रहती। वह कोयला और कच्चा बालू खाता है, अकेला रहना चाहता है, सङ्ग-साथ पसन्द नहीं करता। डङ्क मारना, चिल्लाना, नाचना, खिलौने पसन्द करता है, बच्चेकी तरह चारों तरफ कूदता है। परिताप और अफसोस करता पलङ्गपर पड़ा रहता है। बहुत उत्तेजना, डरे हुए भावसे बच्चा किसीके कपड़े पकड़ लेता है। यह बहुतकर टङ्कारके पहले हो सकता है। चेहरेपर भयङ्कर भय, इतनेपर भी जब अकड़न दूर हो जाती है, तो उसे भयकी याद नहीं रहती। आक्रमण आरम्भ होनेके बाद भय तथा घबड़ाहटकी अवस्था आती है, यद्यपि अभी टङ्कार नहीं पैदा हो गया है। अकड़नके समयके बीचमें रोगी कोमल, शरीफ, धीर और विनम्र रहता है, जिससे **स्ट्रिकनिया** और **नक्स-वोमिका**की अड़कनसे अन्तर प्रकट होता है। **नक्स-वोमिका**की अकड़न समूचे शरीरमें होती है तथा छूने और जोरकी हवा लगनेपर बदतर हो जाती है, शरीर नीला या बैंगनी रङ्गका हो जाता है, पर दो अकड़नोंके बीचमें रोगी बहुत चिड़चिड़ा रहता है। सच तो यह है, कि इसके रोगी जब एक अकड़नसे छूटकर दूसरेमें जाते हैं, तो आप यह नहीं देख सकते, पर जब अकड़न छूट जाती है, तो **नक्स**का रोगी बहुत ही चिड़चिड़ा हो जाता है, पर अकड़न दूर होनेपर, साइकूटाके रोगीको जब अकड़न छूटती है, तो उदासी, चिन्ता और अन्धकारसे भरा रहता है, भविष्यसे कष्ट उधार लेता है, उदासीकी कहानियोंसे आक्रान्त रहता है और अमङ्गलदर्शी होता है। उसे समाजसे भय, सङ्ग-साथसे भय होता है और अकेला रहना चाहता है। वह सन्देही रहता है और मनुष्योंसे मिलना नहीं चाहता, दूसरोंसे घृणा करता है अपनेको बहुत बड़ा अनुमान करता है। इस विषयमें यह **प्लाटिनम**से मिलती है, पर दूसरे विषयमें इन दोनों दवाओंका कोई भी सादृश्य नहीं है। भयसे भरा, **ओपियम, इग्नेशिया** और **एकोनाइट**की तरह भयसे अकड़न हो जाती है।

सरमें चक्करसे भरा रहता है। समस्त ज्ञान-तन्तु प्रचण्ड रूपसे उत्तेजित रहते हैं, चीजें चारों ओर चक्कर खाती मालूम होती हैं। चलनेपर सरमें

चक्कर, चमकीली आंखें प्रभृति। करोटीमें आघातके कारण बीमारियां या मरमें चोटके कारण। कितनी ही बार तो आघात-प्राप्त स्थानपर कोई भी तकलीफ नहीं होती, उस स्थानपर सङ्कोचन हो सकता है और इतनेपर भी सब दर्द दूरके अंगोंमें होता है। पेशियोंमें खिंचाव और मरोड़। मस्तिष्कमें विकम्पन और इसीसे पुराना आघात, खासकर ऐंठन। अर्द्ध-पक्षात रूपका सर-दर्द, जिसकी वजहसे रोगीको चुपचाप सीधे बैठे रहना पड़ता है। टहलनेपर इस ढङ्गका सर-दर्द मानो मस्तिष्क ढीला पड़ गया है। जब दर्दकी ठीक-ठीक प्रकृति सोची जाती है, तो दर्द बन्द हो जाता है। जब अकड़न थी तथा अकड़न छूनेपर बढ़ जाती थी, साथ ही बोखार और यहांतक कि दाग-दाग चित्तकबरी त्वचा थी। आघात प्राप्त होनेके बाद मन तथा मस्तकके उपसर्ग। मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह (Cerebro-spinal meningitis) रोगी इस तरह कुर्सीपर बैठा बैठा बातें करता है, मानो कुछ हुआ ही नहीं है, पर इसके बाद आगकी लपटकी तरह वह दूसरी दशामें जा पहुँचता है, जिसमें कि वह किसीको भी नहीं पहचानता। यह ऐंठनमें परिवर्त्तित हो जाती है, आक्षेपमें सर पीछेकी ओर झुक जाता है, माथेका पीछेकी ओर झटका। अकड़न माथेमें आरम्भ होती है और पीछेकी ओर उतरती है। मस्तक, बाहु और पैरोंमें प्रचण्ड झटके। इसकी अकड़नमें **बेलेडोना**की तरह सर गर्म तथा हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं। सोनेके समय खोपड़ीकी त्वचामें पसीना। बच्चा इस तरफसे उस तरफ सर लुढ़काता है। सर गर्म।

आंखोंकी भी आक्षेपिक क्रिया। पुतलियां फैलीं और चेतना-रहित, रोगी एक जगह जकड़ा-सा पड़ा रहता है और **क्यूप्रम**की तरह, उसकी आंखें टकटकी लगी, स्थिर, चमकीली और ऊपरकी ओर उलटी रहती हैं। मस्तिष्कके उपदाहके कारण बच्चेकी वक्र-दृष्टि ही एक अकड़न हो सकती है। जितनी ही बार बच्चा डरता है उतनी ही बार उसे डेरी दृष्टि हो जाती है, जब उसे स्पर्श किया जाता है या जब सर्दी लगती है या गिरकर चोट लगनेपर या सामयिक रूपसे उसे वक्र-दृष्टिकी बीमारी हो जाती है।

नाक स्पर्श असहिष्णु रहती है। स्पर्श तथा हिलने डोलनेपर शिकायतें पैदा हो जाती हैं और इसीलिये यह आघात-प्राप्तिके परिणाम, उपदाह और अत्यधिक अनुभूति प्रवणतामें इतनी लाभदायक और प्रथम औषधि मानी गयी थी।

इसमें हजामतकी तकलीफें भी है, दाढी रखनेवालोंके फुन्सियोंकी तरहके उद्भेदमें यह लाभदायक है, हजामत बनवानेकी एक खुजली, जहाँ दाढी, मूछके केश हैं वहाँ समूचे चेहरेपर कडे-कडे उद्भेद। अकौताकी तरह गालपर उद्भेद। निम्न हनु ग्रन्थिकी सूजन। विसर्पके उद्भेद। ओठ और पलके, जहाँ कि थोडा भी दबाव कडापन लाता है, उसमें यह **कोनियम**के बहुत कुछ सदृश है। इसने ओठका कोषार्बुद (Epithelioma) आरोग्य कर दिया है।

कण्ठकी तकलीफें भी बहुत कुछ आक्षेपिक ढङ्गकी होती है। मछलीकी हड्डी या कोई चीज़ निगल जानेपर यदि वह कण्ठमें अड जाती है, तो अकडन पैदा हो जाती है। साइकूटाका प्रयोग करने बाद अकडन रुक जायगी और वह निकाल ली जा सकेगी। चोटके रोगियोंके लिये, जिसके साथ प्रचण्ड श्वास-रोध रहता है, जिसमें कि वह परीक्षा भी नहीं करने देता, उसमें भी यह उपयोगी है।

वक्षमें ठण्डकका भाव। वक्षकी अकडन। उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो हृत्पिण्डकी अकडन बन्द हो गयी। पीठके आक्षेपिक लक्षण। पीछेकी ओर टेढा पड जाना। अङ्गोंकी सभी अवस्थाएँ आक्षेपिक ढङ्गकी रहती है।

सिना।

(Cina)

सिना प्रधानतः बच्चोंकी दवा है, पर यह अवस्था-प्राप्तोंकी उन दशाओंमें भी उपयोगिनी होती है, जिनपर बहुत कम विचार किया जाता है। इसका एक प्रत्यक्ष स्वरूप है, इसका राग—क्रोध, मानसिक और शारीरिक, जो इसमें सर्वत्र दिखाई देता है, बच्चा कुछ चाहता है, पर नहीं जानता कि क्या। बच्चेकी बीमारी छूनेसे यहाँतक कि उसकी ओर घूरकर देखनेसे भी बढ जाती है तथा अपरिचितोंको देखनेपर तो बदतर हो जाती है। त्वचा स्पर्श-असहिष्णु रहती है। खोपडीकी त्वचा और गर्दनका पिछला भाग, कन्धे और बाहु इतने स्पर्श-कातर रहते हैं, कि कुचल जानेकी तरह एक यन्त्रणा बनी रहती

है। मानसिक और शारीरिक अनुभूतियोंका बढ जाना। क्रिमिके लिये सिना प्रयोग करनेको पुरानी प्रणालीपर आपको ध्यान देनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि यदि आप लक्षणों द्वारा परिचालित होंगे तो रोगी भी आरोग्य हो जायगा और क्रिमि भी गायब हो जायगी।

रोगी हरेक पदार्थसे विचलित हो उठता है तथा साधारण भोजन करनेपर भी बदतर हो जाता है। बच्चा साधारण भोजन करता है और रातभर सपने देखता, हिलता और नींदमें अपनेको ऐंठता है। भयसे जाग पडता है, सपनेमें जो कुछ देखा है, उसपर उत्तेजित ढङ्गसे बातें करता है, स्वप्नको सत्य समझता है तथा कुत्ते, भूत-प्रेत तथा वे डरावनी चीजें देखता है, जो उसने स्वप्नमें देखी हैं। जागनेके समयपर भी स्वप्न बना ही रहता है। बहुत घबडाहटके साथ जागनेपर चिल्लाता और कांपता है, गुर्राता है और शिकायत करता है। यद्यपि इस छोटे-से रोगीको गोदमें लेनेपर रोग वृद्धि हो जाती है, इतनेपर भी वह **कैमोमिला**की तरह गोदमें और उलझा रहना चाहता है। यद्यपि वह उस दवाकी तरह इतना अधिक चिडचिडा नहीं रहता इतनेपर भी उसे गोदमें रखना ही चाहिये। सबसे पहले जब उसे निकाला जाता है तो वह पकडनेपर चिल्ला उठता है। पहले ही स्पर्शसे रोग बढ जाता है। अकडन और ज्वरोंमें, प्रलापके साथ स्पर्श और अत्यधिक अनुभूति बराबर बनी रहती है, आंखें चमकीली रहती हैं, मुँह खिंचा रहता है तथा नाक और मुँहके चारों ओर सफेद घेरा दिखायी देता है। पेटकी गडबडीके साथ, भोजनके बाद रोगीको अकडन पैदा हो जाती है, सर पीछेकी ओर खिंचा रहता है और आँखें चमकीली रहती हैं। उसका पाकाशय खट्टा रहता है और बच्चा हमेशा खट्टा दूध थूका करता है तथा खट्टी हवा छोडा करता है। बच्चेके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है। माता कहती है, कि "बच्चेको क्रिमिकी साँस चलती है।" पर क्रिमि न रहनेपर भी यही गन्ध बनी रहती है। अकडनके समय वह अचेत रहता है और मुँहमें फेन भर आता है।

सर्दी लगने बाद या सोकर उठनेपर गन्ध, दृश्य और स्वादमें प्रलापावस्थामें भ्रम, चित्त विभ्रममें ही जाग उठता है। चीजोंका स्वाद और गन्ध विभिन्न आती है। स्वाद और स्पर्शेन्द्रियाँ या तो अति वर्द्धित हो जाती हैं या बदली रहती हैं।

भीतरी मस्तिष्कोदक रोगके कितने हो रोगियोंमें, बढ़ी हुई खोपड़ोवालोंको नहीं, बल्कि सुषुम्ना नाड़ो (Spinal cord) के मध्य स्थानमें तथा ग्राहक कोष्ठमें बढ़ा हुआ रस होनेपर रोगीमें सिनाके लक्षण पैदा हो जाते हैं। सरको लुढ़काना, बार-बार, सर-दर्द होना, हिलना सहन न होना, सर-दर्द हुए बिना मेरुदण्डको स्पर्श किया या थपथपाया नहीं जा सकता। धूप लगनेपर सदा बीमारी बढ़ जाती है, माथा गर्म रहता है और धूपमें भी पैर ठण्डे रहते हैं। सिना इनमेंसे कुछ रोगियोंको आरोग्य कर देगा। वे किसी तरहकी गड़बड़ी सहन नही कर सकते, इससे अकड़न पैदा हो जाती है। उन्हें सजा नही दी जा सकती, क्योंकि उससे अकड़न पैदा हो जाती है। यदि चतुर्थ ग्राहक-कोष्ठ बन्द हो गया है, तो वे दुरारोग्य हो जायेंगे, भीतरी दबाव जारी रहेगा और वे रोगी इसीसे मर जायेंगे। ऐसी आजन्म दशायें दुरारोग्य रहती हैं।

आँखोंमें स्पर्श-कातरताके साथ धीमा-धीमा दर्द, मृगीका दौरा और सविराम ज्वरके आक्रमणोंके पहले और बाद सर-दर्द। करोटीमें सर-दर्दके पहले और समय स्पर्श सहन नहीं होता। सिनाके बच्चोंके केशमें कघी नहीं लगायी जा सकती तथा सिनाकी रोगिनियोंको माथे और स्नायुओंकी बीमारियों। बाध्य होकर केश लटकाये रखना पड़ता है।

हाथ-पैरोंमें ठण्डक रहती है तथा चमड़ेमें कुछ खुजलाहट, पर माथेके लक्षण प्रधान बने रहते हैं। मनकी थोड़ी भी गड़बड़ी होनेपर वह पचा नहीं सकता और उसे दस्त आने लगते हैं, गर्मियोंमें बीमारी बढ़ जाती है, तापका मस्तिष्कपर प्रभाव पहुँचता है, उसकी क्रियाको रोक देता है और इसके बाद हरे, लसदार पतले दस्त या सफेद दस्त आने लगते हैं और बच्चा वमन करने लगता है। सिनाका प्रधानतया ऐसा ही **दिमाग** रहता है। मस्तिष्कसे आदेश नहीं ग्रहण किये जाते और इसी वजहसे पाकाशयके लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और क्रिमि पैदा हो जाती है। यदि वह आरोग्य कर दिया जाता है, तो स्वास्थ्य-पूर्ण पाकाशयिक रस (*Gastric juice*) निकलकर क्रिमिको भगा देता है।

बच्चा अपना सर इधर से उधर पलटता है। कभी-कभी एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वसे सर हिलानेपर दर्द अच्छा रहता है। आप अनुभूति-प्रवण स्त्रियोंमें भी यह देखेंगी, जिन्हें अपने केश लटकाये रखने पड़ते हैं, सरको

लुढकानेपर आराम पहुँचता है, हिलानेपर नहीं जैसा कि पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है, वह बहुत प्रचण्ड है।

आँखके सामने सब तरहके रङ्ग दिखाई देते हैं। चीजें पीली दिखाई देती हैं। यह असहनशील स्त्रियां तथा उन स्नायविक असहन स्त्रियोंके लिये विशेष उपयोगी है, जिनको आँखोंसे काम लेनेपर दशा बदतर हो जाती है तथा सिलाई करनेपर माथा तथा आँखोंमें दर्द हो जाता है। इस सम्बन्धमें यह रूटाके सदृश है, आँखपर जोर पडनेके लक्षण। यह युवतियोंके लिये इतनी बहुत उपयोगिनी नहीं है, बल्कि मध्य वयसको उन स्त्रियोंके लिये विशेष लाभ-दायक होती है, जिन्हें दूर-दृष्टि (Presbyopia) की बीमारी आरम्भ हो गयी है, महीन काम करने और छापा पढनेपर आँखोंपर दबाव पडता है। आँखे मलनेपर साफ दिखाई दे सकता है। बिछावनसे उठनेपर आँखके सामने कालापन, विभिन्न रङ्ग तथा खासकर पीला रङ्ग दिखाई देता है। क्रिमि रहनेपर वक्र दृष्टि (Stribismus), खासकर यह मस्तिष्क रोगपर निर्भर करता है, क्योंकि क्रिमि मस्तिष्कपर ही निर्भर है।

चेहरा धँसा, पीला, नाककी दीवारें भीतर खिंची, चेहरेके चारों तरफ नीला घेरा या भूरी लकीरें। माता कहती है—"क्रिमिका एक निश्चित चिन्ह" है। बच्चा अपनी नाक अपने हाथसे या तकियेपर या धायके कन्धेसे रगडता है। बच्चा तबतक अपनी नाकमें अंगुली डालता रहता है, जबतक खून नहीं आ जाता। दृष्टि स्पष्ट रोगियन रहती है, पर यह मस्तिष्ककी तकलीफ, केन्द्रके कष्टको बतानेवाली है। इसके मस्तिष्कके लक्षण सबसे महत्व पूर्ण और सबसे ज्यादा ध्यान देने योग्य है। यदि इसका रोगी डर जाता है, कोड़े खाता है या फटकारा जाता है, तो मस्तिष्क विचलित हो जाता है और पाकाशय गडबडा जाता है। उन्हें अनपच हो जाता है और क्रिमि उत्पन्न हो जाती है। मुँहके चारों तरफ सफेद या नीलापन दिखाई देना, नींदमें दाँत कडमडाना। दाँत निकलनेके पहले ही बच्चा चबानेकी तरह मुँह चलाता है, चबानेकी तरह मुँह चलाना—एक इस पार्श्वसे उस पार्श्वकी ओर गति है। ठण्डा पानी और ठण्डी हवाका सहन न होना। नाक, मुँहसे खून गिरना, तरल पदार्थ निगल नही सकता। वे कण्ठनलीमें घरघराते हैं—अकडन पैदा होनेके पहले और बाद, जब मायेके लक्षण मौजूद रहते हैं, तो गडगडाहटको आवाजके साथ दूध या पानी कण्ठनलीमें घरघराया करता है। यह मस्तिष्कके

लक्षणोंके साथ अतिसार और वमनमें मौजूद रहता है। निगलनेके समय गलेमें घरघराहटके उपसर्ग **आर्सेनिक** और **क्यूप्रम**में ही प्रधान है। यह नर्त्तनकी गति (Choreic movements) जीभतक फैल जाती है।

बच्चा या अवस्था-प्राप्तोंको खा लेनेपर भी आराम नहीं मिलता, वह भूखा ही रहता है। पेट भरा रहनेपर भी वह भूखा ही रहता था। आप सोचते होंगे, कि भोजनसे घृणा हो जायगी, पर सिनामें वही खालीपन, भूखका भाव है। भोजनके बाद, पाकाशयमें जब चबानेकी तरह दर्द होता है या बच्चा यथेष्ट पेट भर लेनेपर भी खानेके लिये जब चिल्लाता रहता है या थूककर और वमन कर पेट खाली कर देता है और फिर रोना, रे रियाना आरम्भ करता है, तो सिनापर ध्यान दीजिये। शराब पीनेपर इस तरह काँप उठता है, मानो वह सिर्का हो।

पेट भरा और तना। बहुतकर तो सिनाका रोगी बच्चा अपने पेटके बल लेट जायगा और इसी तरह सो जायगा। यदि उसे करवट लेटा दिया जायगा तो फिर जाग उठेगा। माताकी गोदमें रहनेपर, वह माताके कन्धेपर अपना पेट रखकर सोयेगा, पर जब उसे पलङ्गपर करवट लेटा दिया जायगा, तो वह जाग उठेगा। यदि आपकी देख-रेखमें कोई ऐसा बच्चा हो, जिसे बहुत ज्यादा, बड़े झोंकसे और बहुत बदबूदार दस्त आते हों, तलपेटके बल लेटनेपर घटते हों तथा दूसरी करवट लेटनेपर तुरन्त दस्त आ जाता हो, तो उसकी दवा **पोडोफाइलम** होगी। यह सिना नहीं हो सकता। सिनाका दस्त बहुत ज्यादा नहीं आता और अकसर सफेद रहता है।

सवेरेके वक्त कफसे मुँह भर आनेवाली खाँसी। रातमें लघु, खुसखुसी खाँसी। आक्षेपिक खाँसी। कुक्कुर खाँसी (Whooping cough)।

अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णुता, कम्पन, अकड़न, नर्त्तन रोग। आक्षेपिक जम्हाई आना। बच्चा पेटके बल हुए बिना या लगातार हिलते रहे बिना सो नहीं सकता।

सिनकोना या चायना।

(Cinchona or China)

अब हम सिनकोना या चायनाका अध्ययन आरम्भ करेंगे। मैलेरियाके प्रभावके कारण जिन मनुष्योंने बहुत स्नायु-शूल भोगा है, बार-बार रक्त-स्राव होनेके कारण जो रक्त-रहित या रोगियल हो पड़े हैं, उनमें चायनाके लक्षण प्रकट हो सकते हैं। चायनामें क्रमश बढ़ती हुई रक्त स्वल्पता उत्पन्न होती है, जिसके साथ बहुत पीलापन और कमजोरी रहती है। इसका कभी-कभी रक्त पूर्ण व्यक्तियोंके लिये भी प्रयोग होता है, पर यह एक अपवाद (exception) है। इतनेपर भी इस श्रेणीमें भी लक्षण रक्त स्वल्पताकी अवस्थाकी ओर बढ़ते जा रहे हैं, जो इसी औषधिकी शीघ्र होनेवाली क्रिया द्वारा रोके जा सकते हैं।

समूचे शरीरमें क्रमश बढ़ती हुई सनसनी, एक क्रमश बढ़ता हुआ स्नायुओंका उपदाह रहता है। स्नायु हमेशा चञ्चल रहते हैं, इसीलिये ऐसे मनुष्य कहेंगे—"डाक्टर साहब! मुझे क्या हो गया है? मैं कितना स्नायविक हो पड़ा हूँ? हर जगह ऐंठने, फाड़ने या काटनेको तरह दर्द होता है,—अङ्गोंमें तथा समूचे शरीरमें इतनी अधिक स्पर्श असहिष्णुता रहती है, कि कितनी ही बार तो स्नायु-रेखाएँ दिखाई दे जाती हैं। उदाहरणार्थ,—अगुलियोंके छोटे छोटे स्नायु, अत्यधिक स्पर्श-द्वेषके कारण दिखाई देने लगते हैं। चायनाका रोगी बहुत अधिक स्पर्श-कातर होता ही जाता है। उसे हिलना-डोलना और बहुत ठण्डी हवा सहन नहीं होती, खुली हवामें उसे सर्दी लग जाती है। इसीलिये खुली हवा लगनेपर तथा ज्यादा हिलने-डोलने अथवा स्पर्शसे दर्द पैदा हो जाता है। पुरानी क्विनाइनसे दबा दी गई हुई मैलेरियाकी दशा, क्रमश बढ़ता हुआ पीलापन, रक्त-हीनता, रक्त स्वल्पता, परिपोषणकी बिगड़ी अवस्था जबतक कि रोगीको बराबर सर्दी नहीं लग जाया करती, उसे यकृत तथा आँतोंकी बीमारियाँ, बिगड़ा हुआ पाकाशय रहता है और वह बहुत ही कष्टमें पड़ा रहता है और प्राय प्रत्येक काम जो करता है, उससे करीब-करीब बीमार हो जाता है। अनपच हुए बिना वह फल नहीं खा सकता, वह खट्टी चीजें नहीं खा सकता। वह दुबला, पीला मोमकी तरह रहता है।

दर्दों से कष्ट उठाता है, जैसा कि क्विनाइनवाले रोगियोंको हुआ करता है और थोड़ा भी परिश्रम करनेपर उसे पसीना होने लगता है।

ऐसे रोगीको सहजमें ही रक्त-स्राव होने लगता है। शरीरके किसी भी द्वारसे रक्त-स्राव होता है—नाकसे, कण्ठसे या जरायुसे और रक्त-स्रावके बाद उपसर्ग आ जाते हैं। इस दवापर विचार करनेपर मालूम होता है, कि इसकी सार्वाङ्गिक धातुगत प्रकृति, रक्त-स्रावके सम्बन्धमें, रक्त-सञ्चय और अकसर प्रदाहकी ओर रहती है। रक्त-स्राव होनेवाले अङ्गमें या उससे दूरके स्थानमें प्रदाह। उदाहरणार्थ,—किसी स्त्रीको गर्भ-स्राव हो जाता है, रक्त-स्राव होता है, पर बिना किसी तरहका उत्तेजक कारण हुए ही जरायु या फेफड़ेका प्रदाह हो जाता है। इन प्रदाहोंके साथ मास-तन्तुओंका अत्यधिक उपदाह, फाड़नेकी तरह दर्द, पेशियोंमें मरोड़ और वास्तविक अकड़न उत्पन्न हो जाती है। उदाहरणार्थ,—जब चायनाकी रोगिनीको प्रसव-कालमें थोड़ा भी रक्त-स्राव होता है, तो ठीक रक्त-स्रावके बीचके कालमें अकड़न होने लगती है। इस समय शायद ही आपको कोई दूसरी दवा सोचनेकी जरूरत पड़े। **सिकेलि** एक ऐसी दूसरी दवा है, जिसमें यह लक्षण है, पर ये दोनों एक प्रकारकी नहीं दिखाई देती। **सिकेलिकी** रोगिनी अपने वस्त्र फेंक देती और खिड़कियाँ खुली रखना चाहती है, ठण्ढी ऋतु रहनेपर भी, पर चायनाकी रोगिनीको, *प्रसव पीड़ाके समय झोंककी हवा लग जाती है*, तो उसे अकड़न हो जा सकती है। प्रसवके मध्यमें ही दर्द बन्द हो जाता है और अकड़न पैदा हो जाती है। इस प्रदाहका दूसरा रूप है—इसका तेजीसे बढ़ना और तीव्रता, जो तेजीसे सड़नमें परिणत हो जाती है। रक्त-स्रावके बादका उपदाह और वह अङ्ग तेजीसे काला हो जाता है।

चायनामें शिराओंमें भरापन हैं। ठीक-ठीक शिरा-स्फीतिवाली दशा नहीं रहती, बल्कि शिराओंके आवरणका एक प्रकारका पक्षाघात रहता है। *ज्वरके समय शिराएँ पूर्ण हो जाती है।*

ये सब उपसर्ग ऐसे हैं, जो भग्न-स्वास्थ्यकी प्रकृतिमें, कमजोर तथा अनुभवाधिक्यवाले रोगियोंमें—खासकर अनुभवाधिक्यवाली स्त्रियोंमें दिखाई देते हैं। फूलोंकी, रसोईकी तथा तम्बाकूकी गन्धका बहुत अधिक अनुभव होना। कमजोर, शिथिल, क्षीणता-प्राप्त, पीले, कमजोर हृदयवाले, कमजोर

रक्तका दौरान और शोथ-प्रवणताके साथ यह रहता है। इस दवामें सर्वत्र शोथका लक्षण है। अन्द गह्वरोंका शोथ और सूजन। इस शोथमें एक विचित्र बात यह है, कि यह रक्त-स्रावके बाद उत्पन्न होता है। रक्त-स्वल्पतावाली दशामें एकदम सीधे रक्त-क्षयके बाद ही शोथ दिखाई देता है। यह ठीक-ठीक चायनाका रोगी है।

समस्त श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहवाली अवस्था। पाकाशय—द्वादश अंगुल अन्त्रकी सर्दी (Gastro duodenal catarrh), जिसके अन्तमें कामला रोग हो जाता है। कामलाके साथ पुराने यकृत रोगके रोगी, वे बहुत दिनोंतक मैलेरिया विषके प्रभावमें रहे हैं। कमजोर, स्पर्श कातर, रक्त-हीन। ऐसे रोगी दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिममें दिखाई देते हैं तथा मिसिसिपि उपत्यकामें मिलते हैं।

सामयिकता चायनाका एक बहुत बड़ा निदर्शन माना जाता है, पर यह भूल है। सामयिकता एक वह लक्षण है, जिसपर क्विनाइन (Quinine) का प्रयोग होता है। चायनामें सामयिकता है, पर अन्य कितनी ही दवाओंकी अपेक्षा अधिक नहीं तथा बँधे ढङ्गसे काम करनेवाले जैसा समझते हैं, वैसा अमूमन इसका प्रयोग नहीं होता। उपसर्गों में कुछ भी सामयिकता रहनेपर ऐलोपैथ क्विनाइनका प्रयोग करते हैं। इतनेपर भी सामयिकता इस दवाका एक जबर्दस्त स्वरूप है। नित्य बँधे समयपर नियमित भावसे दर्द होता है। सविराम ज्वर नियमित-भावसे होता है और बँधे ढङ्गसे चला करता है।

रातमें और कभी-कभी तेजीसे आधी रातके समय रोग वृद्धि इस सामयिकताका एक अङ्ग है। शूलमें १२ बजे रातमें नियमित रूपसे होनेवाले दर्दको शायद एक सप्ताह पहले ही आपने सन्देह किया हो, कि चायनाका दर्द है। कई रातें कष्ट भोगनेके बाद चायनाकी एक खुराकने फिर तकलीफ न होने दी। नियमित भावसे नाकसे रक्त-स्राव होता है। रातके समय पतले दस्त। कितने ही झोंकसे होनेवाले, काले, पानीकी तरह रातमें होनेवाले दस्त। दिनके समय, सिर्फ भोजनके बाद, भोजनके बाद साधारणत रोग-वृद्धि हो जाती है।

याद रखिये, कि यह सर्दीला रोगी है, झोंककी हवा सहन नहीं होती, सर्दी सहन नहीं होती, जिसे ठण्ढी हवा लगनेपर बीमारी हो जाती है। स्पर्श

सहन नहीं होता, हिलना-डोलना सहन नहीं होता। मांस-तन्तुओंका बहुत अधिक उपदाह रहता है।

रक्त तथा अन्य जैव रसोंके चयवाली दशामें चायनाका प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ,—जिन्होंने बहुत अधिक काम-चरितार्थकर गुप्त पापोंमें उनका चय किया है, वे कमजोर, निद्रा-रहित और चिड़चिड़े हो गये हैं। उनमें कमजोरी और सारे शरीरका चर्म ठण्डा रहता है, प्रत्यङ्गोंमें मरोड़ तथा झटका लगता है पेशियोंमें खींचन और झटका होता है, पुरानी दिल उठनेकी बीमारी, मृगीके आकारकी अकड़न, पाचाघातिक दुर्बलता, माथेमें रक्त चढ़ जाता है, कानोंमें घण्टीकी आवाज़ होने लगती है, आँखोंके सामने अन्धेरा छा जाता है, ज़रा-सी भी उत्तेजना होनेपर मूर्च्छा आ जाती है। चायनाका धातुगत विकार ऐसा ही होता है और इसपर नज़र रखनेपर, मानसिक अवस्थासे शायद ही आपको आश्चर्य हो। स्नायविक अनुभवाधिक्य-वाले रोगीकी जैसी दशा रहनेकी आप आशा करते हैं, यह ठीक वैसी ही है। मनकी दुर्बलता, सोचने या स्मरण रखनेकी शक्तिका न रहना। रातमें भयसे पूर्ण। जानवर, कुत्ता या कुछ देखनेका भय। आत्महत्या करना चाहता है, पर साहस नहीं होता, धीरे-धीरे मन दुर्बल होता जाता है, गलत बात या शब्दोंका प्रयोग करता है। तरकीबें बनाता रातमें जागता पड़ा रहता है। सिद्धान्त बनाता, खयाली पोलाव पकाता है, किसी दिन आश्चर्यमय कार्य करनेकी बात सोचता रहता है। सवेरे वह सोचता है, उसने ये बेवकूफीकी बातें कैसे सोचीं। नींद हो जानेके बाद उसका दिमाग साफ हो जाता है तथा वह जीवनके कामोंमें अधिक दार्शनिक रूपसे विचार करने लगता है। कोई मानसिक सवाल जिसका मतलब काम है, करनेमें असमर्थ रहता है। वह कामसे भय खाता है। वह सज्ञा-शून्य, उदासीन, हतोत्साह और चुप रहता है तथा सोचनेकी इच्छा नहीं होती। वह मनपर अधिकार नहीं रख सकता, उसे नहीं करने देता है, जो वह करना चाहता है, आप देखें कि यह अबतक वास्तविक उन्माद नहीं है।

रक्त-स्रावके बाद मनकी यह अवस्था आती है। रक्त-स्रावके बाद अनिद्रा। किसी स्त्रीको बहुत-सा रक्त-चय होने बाद कई रातें नींद नहीं आयेगी।

रक्त-स्रावके बाद सरमें चक्कर आ सकता है। यह तो स्वाभाविक परिणाम है, सरमें चक्कर और मूर्च्छा, पर साधारणत कई दिनोंतक सुनासिब

खाद्य मिलनेपर ये लक्षण गायब हो जायँगे, पर चायनाके रोगोमें ये बुरेसे बदतर हो जाते हैं। कड़े रक्त-स्रावके बाद स्त्रीको रक्त नहीं बनता। यह कु-समीकरण (Bad assimilation) है और सरमें चक्कर कई दिन या कई सप्ताहोंतक बना रहता है। चायना इसे सुधार देगा।

यह दवा सर-दर्दसे भरी है। भग्न स्वास्थ्य व्यक्तियोंका रक्त-सम्बन्धी सर-दर्द। हाथ-पैर ठण्डे और शरीर ठण्डे पसीनेसे भरा। छेदने, फाड़नेकी तरह दर्द। दबाव और टपक। ज्योंही हवा सरमें लगती है, ये दर्द पैदा हो जाते हैं। गर्म कमरेमें सर-दर्द अच्छा रहता है, छूनेपर बदतर हो जाता है, हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाता है तथा सर्दीसे भी बदतर हो जाता है। ये ही प्रधान स्वरूप हैं। जरा भी छूनेसे गड़बड़ी बढ़ जाती है, पर अपवादपर ध्यान दीजिये। **जोरसे दबानेपर** चायनाका दर्द, दर्दको घटा देता है। जैसे कि हलका दबाव बढ़ा देती है। मांस-तन्तुओंकी स्पर्श कातरता, स्नायु-पथमें स्पर्श-असहिष्णुता, छूनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर दर्द पैदा हो जाता है। कनपटोमें टपकके साथ सरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, जो अंगुलीसे जाना जा सकता है, जोरसे दबानेपर घटता है, लेकिन छूनेपर बढ़ जाता है। झटका और चलनेपर हिलना-डोलना सरमें चोट पहुँचाता है। यहाँतक कि बिछावनपर करवट बदलना रोग बढ़ा देता है। गाड़ीपर सवारी नहीं कर सकता या कोई चीज़ जो सहसा धक्का दे देती है। कड़े दबावसे घटना, टपककी तरह सर-दर्द, हवाका प्रवाह लगनेपर, खुली हवामें, हलके ढङ्गसे छूनेपर बढ़ता है। जोरसे दबानेपर घटता है। खोपड़ीकी त्वचा ऐसी मालूम होती है, मानो केश कसकर पकड़ लिया गया है। यह स्पर्श-असहिष्णु रहती है, खोपड़ीकी त्वचामें बहुत अधिक पसीना होना, रातमें दर्द बढ़ जाता है। अत्यधिक काम-तृप्तिके कारण सर-दर्द। जैव-रसका क्षय।

अब हम आँखपर आते हैं। रोशनीका सहन न होना। चक्षु-श्वेत-पटलका पीलापन। सर्द हवा लगनेपर स्नायु-शूल उत्पन्न हो जाता है। गर्म रखने और चुपचाप रहनेपर घट जाता है, "रतौंधी, दृष्टिका धुँधलापन। ऐसा अनुभव होता है, मानो आँखोंमें बालू पड़ी है। रोशनीसे सर-दर्द बदतर हो जाता है। अँधेरेमें अच्छा रहता है।"

कान और नाकमें भी आपको वही स्पर्श कातरता प्राप्त होगी, जैसी कि आँखोंमें, जरा भी आवाज़से तकलीफ़ होने लगती है। घण्टी बजने, गरजने,

भनभनाने और गानेकी आवाज़ कानमें आती है, कानमें झींगुरकी तरहकी बोलनेकी आवाज़। मध्य-कर्णकी सूखी सर्दी। इस दशाका परिणाम अकसर सुननेकी गड़बड़ी रहती है। यह धीरे-धीरे तबतक बढ़ती जाती है, जबतक एकदम बहरापन नहीं आ जाता और कानकी आवाज़ उसके बाद भी बहुत दिनोंतक जारी रहती है, जबतक रोगीकी उक्त आवाजें पहचाननेकी शक्ति गायब हो जाती है। कानसे रक्त-स्राव, बदबूदार खून-मिला पीब-भरा स्राव।

रक्तस्वल्प रोगियोंकी नाकसे अकसर रक्त जाना। यहाँ फिर सूखापन और श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी अवस्था प्राप्त होती है। सूखी सर्दी या तर सर्दी, रुकी हुई सर्दी, जिससे प्रचण्ड सर-दर्द उत्पन्न हो जाता है। गन्धोंसे मिचली आती है, फूलोंकी गन्ध, रसोईकी और तम्बाकूकी गन्ध सहन नहीं होती।

चेहरा बदरङ्ग, दबा, फूला, रक्त-रहित और रोगीकी तरह रहता है, बोखार रहनेपर लाल रहता है और कभी-कभी उस समय सभी जाड़ा लगता रहता है, पर ज्वरके विराम कालमें, पीला, रोगियल और म्लान रहता है। चेहरेका स्नायु-शूल, फाड़ने, छेदने, छुरीसे काटनेकी तरह दर्द, साधारण तापके साथ दर्द। चेहरेकी शिराएँ तन जाती हैं, यह चायनाके सविराम ज्वरके ताप और पसीनेके समय ज्यादा तर देखनेमें आता है।

दाँत ढीले पड़ जाते हैं, मसूढ़े फूल जाते हैं, चबानेके समय दाँतोंमें दर्द होता है, वे बहुत लम्बे मालूम होते हैं, जरा भी सर्दी लगनेपर दाँतोंमें दर्द हो जाता है, इस तरह छेदनेकी तरह दर्द मानो दाँत खींचे जा रहे हैं, प्रत्येक बार जब बच्चा स्तन पान करने लगता है। दाँत और मसूढ़ेके आस-पास रोगात्मक रस-स्राव, काला और बदबू भरा। निम्न आकारके ज्वरमें अत्यधिक सड़नका भाव।

स्वाद बहुत ही तीव्र रहता है। इतना अतिवर्द्धित कि किसी भी चीज़में स्वाभाविक स्वाद नहीं आता। "मुँहका स्वाद तीता। खाद्य या तो तीता या बहुत नमकीन अनुभव होता है। ऐसी जलन, मानो जीभकी नोकपर मिर्चा रखा हुआ है। कण्ठ तथा मुँहमें सूखापन। निगलनेमें कष्ट।" कभी-कभी तो राक्षसी भूख रहती है, पर साधारण रूप यह है, कि सभी पदार्थोंसे घृणा रहती है, सभी खाद्योंसे अनिच्छा। चायनाका रोगी खानेके सम्बन्धमें हमेशा तैयार रहता है। खानेको बैठ [illegible] भी [illegible] मालूम होती हैं और वह पेट भरकर खा लेता है। [illegible]।

बात नहीं है, कि वह खाता है या नहीं "घृणा और भयङ्कर भूख।" "भूखपर क्षुधाका न रहना। खान-पानसे उदासीन। केवल खानेके समय कुछ भूख और खाद्यका स्वाभाविक स्वाद आ जाता है। भूख न लगना, सब तरहके खाद्यमे अनिच्छा, रोटी खानेकी इच्छा न होना।' उसकी भूख विभिन्न प्रकारकी होती है। प्यास भी विचित्र होती है। रोगी कहेगा—"मैं जानता हूँ, अब मुझे शीत लगना ही चाहता है, क्योंकि मुझे प्यास लगी है।" ज्वरमें शीतावस्थाके पहले प्यास, पर ज्योंही शीतावस्था आरम्भ हो जाती है, प्यास नहीं रहती। परन्तु जब वह गरमाने लगता है, तो प्यास आरम्भ हो जाती है अर्थात् *दोनों अवस्थाओंके मध्य-कालमें रोगीको प्यास लगती है*, पर जब जाड़ा लगना एकदम बन्द हो जाता है, वह गर्म हो जाता है, तो भी उसकी प्यास दब जाती है और वह केवल अपना मुँह तर रखना चाहता है, पर ज्योंही गर्म लहरें दबनी आरम्भ होती है, त्यों-त्यो उसकी जलकी मात्रा बढ़ती जाती है और सम्पूर्ण पसीना होनेके कालतक तो उसे **मुश्किलसे काफी पानी मिलता है।** *शीतावस्थाके पहले और बाद प्यास तथा* **पसीनेवाली अवस्थाके समय प्यास।** *शीतावस्थामें प्यासका* न रहना। गर्म लहरोंके समय—तापके समय प्यासका न रहना। चायनाकी अपेक्षा आप **इपिकाक** और **नक्स-वोमिका**से सविराम ज्वरके विशेष रोगी आरोग्य कर सकेंगे। चायनामें बहुत ही स्पष्ट शीत, ताप और पसीना रहता है।

मछली और फल खाने तथा शराब पीनेपर *पाकाशयके उपसर्ग आ जाना।* इतना आध्मान और तनाव रहता है, मानो पेट फट जायगा। लगातार जोरकी और सुदृढ़ डकारें आती रहती हैं, पर इतनेपर भी किसी तरहका आराम नहीं मिलता, इतना अधिक पेट फूलता है। **कार्बो-वेज**में डकार आनेपर कुछ आराम मिलता है। **लाइकोपोडियम**में दोनों हैं। *निम्न रोगोंके ज्वरोंमें तलपेट और पाकाशय फूलकर तनाव। आँतोंमें यन्त्रणाके कारण* हिल नहीं सकता। रक्तका वमन। कभी-कभी इसके बाद हाथ-पैरोंमें शोथ हो जाता है। "हिचकी, मिचली, वमन। डकारें, डकारमे खाद्यका स्वाद या वे तीती या खट्टी होती हैं। बारम्बार वमन। खट्टा श्लेष्मा, पित्त या रक्तका वमन।" *यह विशेषकर रातमें होता है।* पाकाशयमें धमक और

गडगडाहट। पाकाशयमें ठण्डकका भाव। फल खानेके बाद उत्तेजन होना। अम्लत्व। दूध पीने बाद पाकाशयमें गडबडी।

अतिसार। बहुत ज्यादा। आँतोंसे पानीकी तरह काला स्राव। तलपेटमें गडगडाहट और गों-गों करना। खानेके बाद तुरन्त और रातमें दस्त लग आना, आँतोंसे बहुत-सा वायु अधोवायुमें निकलता है, धीरे-धीरे पतले दस्त आने लगते हैं। दस्त अधिकाधिक पानीकी तरह रहता है। चीणता और रातमें रोग-वृद्धिके साथ पुराना अतिसार—संग्रहणी। **पेट्रोलियममें** भी संग्रहणीका लक्षण है, पर इसके दस्त दिनके समय आते हैं।

पुं-जननेन्द्रियका प्रधान निर्देशक स्वरूप है—कमजोरी। स्त्री-जननेन्द्रियकी विभिन्न दशाएँ रहती हैं। जरायुसे रक्त-स्राव होनेवाली स्त्रीके सम्बन्धमें आप किसी भी समय एकाएक डिम्बाशयका तीव्र प्रदाह देख सकते हैं। जरायुसे रक्त-स्राव, जरायुकी स्थान-च्युति। ऋतु-स्राव समयके बहुत पहले और बहुत ज्यादा होता है। काला थक्का-थक्का रक्त, ऋतु-शूल, जरायुसे रक्त-स्राव, रक्त-स्रावके साथ-साथ जरायुमें मरोड, प्रसवकी तरह दर्द, कानोंमें गरजकी आवाज़, दृष्टिका चय, पलङ्गपर नीचेकी ओर सरक जाना। प्रसूतावस्थामें प्रसवान्तिक स्राव बहुत ज्यादा होता है और बहुत दिनोंतक रहता है। बहुत दिनोंतक दूध पिलानेके कारण स्वास्थ्यका अवनत हो जाना, दाँतमें दर्द, चेहरेका स्नायु-शूल।

श्वास-कष्ट। वक्षका श्लेष्मासे भर जाना और घरघराहट, दमा। 'वक्षमें दबाव, मानो रक्तका प्रचण्ड दौरा हो गया है। कलेजेमें बहुत जोरोंकी धडकन, खून-मिला बलगम, एकाएक सुस्ती आ जाना।" रातमें सूखी श्वास-रोधक खाँसी। रातमें बहुत ज्यादा पसीना। वक्षमें दर्द, सर्दी और तापकी असहनीयताका बढते जाना, हाथ ठण्डे रहनेके साथ चेहरेमें गर्मी और लाली।

मेरुदण्डमें यन्त्रणा-भरे स्थान रहते हैं। प्रत्यङ्गोंमें फाडने और खींचा मारनेकी तरह दर्द, ताप तथा जोरसे दबानेपर घटना, छूनेपर पैदा हो जाना या सर्द हो जानेपर होना। रातके समय बदतर। "घुटने कमजोर, खासकर चलनेके समय।"

चायना अविराम या सविराम, टाइफायड या मैलेरियासे उत्पन्न निम्नश्रेणीके ज्वर आराम करता है।

सिस्टस केनाडेन्सिस।

(Cistus Canadensis)

यह एक मोरा-नामक, एक गहरी क्रिया करनेवाली दवा है। यह बहुत कुछ कैल्केरियाके सदृश ही है, पर इसकी क्रिया कुछ कोमल होती है। इसमें भी परिश्रमसे वही क्लान्ति, श्वास कष्ट, पसीना और ठण्डक है, जो कैल्केरियामें प्राप्त होती है।

किसी बिगड़े और विशेष प्रकारके रोगको आरोग्य करनेपर ही कोई दवा जबर्दस्ती आपका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। मुझे याद है, जब पहले-पहल सिस्टसने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। मैंने इसे समय-समयपर अध्ययन करनेके लिये अपनी सूचीमें लिख रखा था और इस निर्णयपर पहुँचा हूँ, कि यह एकतरफा सिद्धान्त था, कि एक उन्नीस वर्षकी युवती मेरी दृष्टिमें आयी। इसके गलेकी गाँठे बड़ी और कड़ी थीं, खासकर कर्णमूल ग्रन्थि। उसके कानसे बदबूदार पीव निकलता था, उसकी आँखे प्रादाहित थीं और उनमें पीव हो रहा था, आँखके कोने फट गये थे, ओठ फटे थे और रक्त बहता था तथा अंगुलियोंके सिरोंपर एक तरहका पुराना अकौता (Salt Rheum) हो रहा था। मैं उसे कैल्केरियाके योग्य रोगिनी न मान सका। खूब अध्ययनके बाद यह दवा उचित और आवश्यक प्रतीत हुई और यद्यपि उसकी अच्छी-बुरी बहुत ज्यादा होमियोपैथिक चिकित्सा हो चुकी थी, तथापि इस औषधिने आरोग्य कर दिया।

ग्रन्थियाँ प्रादाहित, फूली और पीव-भरी रहती हैं। यह अस्थि-क्षत (Caries) उत्पन्न करता और पुराने जखमोंको आरोग्य करता है। इसमें गण्डमालाकी प्रकृति भी है। बढ़ी हुई ग्रन्थियोंके साथ पुराना अतिसार—यह संग्रहणीमें लाभ करती है तथा उन मनुष्योंको भी लाभ पहुँचाती है, जो थुलथुले, रोगियल और पीलिया हो रहे थे, जो साँस फूले बिना ऊपर नहीं चढ़ सकते थे। सभी श्लैष्मिक झिल्लियाँ मोटी, पीली आभा लिये हो जाती हैं, बदबूदार श्लेष्माका स्राव होता है और इसीलिये यह पुरानी और कष्टदायक सर्दीके लिये लाभदायक है। रोगीका वक्ष श्लेष्मासे भर जाता है तथा बलगम निकल जाने बाद, उसे कुछ आराम मिलता है, पर वक्ष खाली होनेपर

वक्षमें खाल उधड़नेका भाव आ जाता है। इसमें उद्भेद, भैंसिया दाद, विसर्पिका, पपड़ी जमे उद्भेद, हाथ तथा अंगुलियोंके सिरोंपर पुराना अकौता, जाड़ेमें तथा ठण्डे पानीसे धोनेपर अंगुलियोंका फटना और खून बहना प्रभृति लक्षण हैं।

मानसिक परिश्रमसे इसकी सब बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। वह उत्तेजना-शील रहता है। उसकी खाँसी, सर-दर्द तथा अन्य दर्द मानसिक परिश्रमसे बदतर हो जाते हैं। सरसे लेकर और कानतक दर्द धक्का देता है। प्रादाहिक स्थानोंमें खोंचा मारने, सुई गड़ने और फाड़नेकी तरह दर्द। पहले कोई उद्भेद-वाली बीमारी होनेके कारण पुराना कानसे स्राव। मानसिक परिश्रमके बाद उसे ऐसा मालूम होता है, मानो पक्षाघात-ग्रस्त हो पड़ा है तथा **कैल्केरिया** और **बोरेक्स**की तरह मानसिक उत्तेजनासे उसकी बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। यदि उसे बाध्य होकर उपवास करना पड़ता है तो सर-दर्द हो जाता है और **लाइकोपोडियम**की तरह, यह सर-दर्द खा लेनेपर आराम हो जाता है। ठण्डकके साथ सम्मुख कपालका सर-दर्द, गर्म कमरेमें पसीना होने लगता है, वह ठण्डा हो जाता है और जितना ही ज्यादा पसीना होता है, उतना ही वह ठण्डा होता जाता है। ठण्डे पसीनेके साथ ललाटमें दर्द और पसीना। जितना ही वह ठण्डा होता है, दर्द भी उतना ही बढ़ता है। स-वमन सर-दर्द और सर-दर्दके साथ बहुत ज्यादा सुस्ती, ललाटसे भीतरी ठण्डककी अनुभूति, अक्सर गर्म कमरेमें। सर-दर्दके साथ नाककी जड़में दबावका दर्द। कर्णमूल-ग्रन्थि इतनी ज्यादा फूली रहती है कि यह सरको एक ओर धक्का देकर हटा देती है। संग्रहणीके साथ तलपेटकी ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं और यह सूजन गुटिका-दोषयुक्त (Tuberculosis) हो सकती है। उद्भेदके साथ या बिना उद्भेदके ही बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ।

समूचे शरीरमें एक रेंगनेका भाव। सुरसुरी, झुनझुनी और चींटी रेंगनेकी तरह अनुभव होता है, पर कोई उद्भेद नहीं रहता। तबतक वह बदन खरोंचता रहता है, जबतक खून नहीं निकल आता और अपने शरीरकी खाज और चुनचुनी दूर करनेकी चेष्टा किया करता है। चेहरेपर उद्भेद, अकौता। कानके पास उद्भेद।

नाकमें ठण्ड या जलन अनुभव होना। इसका प्रभेद करना कठिन है। नयी सर्दीमें नाक मोटे, पीले श्लेष्मासे भर जाता है और जब यह निकाल दिया

जाता है, तो नासा-गह्वर खाली हो जाता है तथा उपदाह उत्पन्न हो जाता है। इसको कोई खाल उधेड़ना कहेगा दूसरा ठण्डक कहेगा और कोई जलन बतायेगा, फिर जब श्लेष्मासे नाक भर जाती है, तो आराम मिलता है। **आर्सेनिकमें** नाकका श्लेष्मा इतना कटु होता रहता है, कि उसमें जलन होती है, पर **ऐरिटम-क्रूड और ह्रस्कुलस** तथा इस दवामें, जब नाक खाली रहती है तो जलन और खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होता है। खाल उधड़नेके भावकी अनुभूति, श्वास लेनेके समयकी हवासे ठण्डक या जलन उत्पन्न होती है। नाककी सर्दीकी बीमारी फैल रही थी और यह सबसे जबर्दस्त लक्षण था, श्वासकी साथ खींची हुई हवासे दर्द श्वासके साथ खींची हुई हवासे बहुत जलन, पर नयी सर्दीमें इस दवाका मूल्य नहीं प्रकट होता है। यह पुरानी बीमारियोंमें दिखाई देता है, जब कि स्राव गाढ़ा रहता है और श्वास लेनेके समयकी हवासे ठण्डकका भाव और नाकमें जलन मालूम होती है।

"तेज़ खोंचा मारनेकी तरह दर्द, असह्य खुजली और मोटी पपड़ी, साथ ही दाहिनी गण्डास्थिके दोनों प्रवर्द्धनोंमें (Zygoma) जलन।" इस दवाने चेहरेका त्वक् रोग (Lupus) आरोग्य किया है। निम्न हनुका अस्थि-क्षत (Caries)। "निचले ओठका खुला रक्त स्रावी कर्कटका घाव (Cancer)। चेहरेकी सभी सन्धियोंमें दर्द। इसने ठुड्डी और जबड़े सामनेवाले अंशका, गहरा क्षयकर ज़खम, जिसके साथ बहुत ज्यादा कटु मवाद निकलता था, सुरसुरी और गांठें फूली थीं नहानेसे रोग-वृद्धि होती थी, खुली हवा बहुत ज्यादा स्पर्श असहिष्णु हो रही थी और सिर्फ बहुत गर्म कमरेमें आराम मिलता था, आरोग्य किया है।

दाँतोंमें सब तरहकी गड़बड़ियाँ रहती हैं मसूढ़े अलग हो जाते हैं, दाँत ढीले पड़ जाते हैं, शीताद-पूर्ण मसूढ़े। नाकमें भी वही ठण्डका भाव बताया गया है, जो मुँहमें रहता है—खोंचा मारनेकी तरह दर्द और ठण्डक। मुँह और कण्ठ श्लेष्मासे भरा रहता है। कण्ठ रूखा मालूम होता है, मानो बालूसे भरा है। कण्ठमें सूखे स्थान। पुरानी शीर्णतावाली सर्दीमें कण्ठ चमकीला मालूम होता है। वार्निश किये रहनेकी तरह चमकता है। प्रत्येक बारकी सर्दी कण्ठमें बैठ जाती है, सभी जगह गर्म हवा अच्छी मालूम

होती है, पुराने रोगियोंको कण्ठमालाकी ग्रन्थियोंके साथ बीमारी रहती है। ग्रन्थियाँ बढ़ी रहती हैं और रोगी तापकी इच्छा करता है। आगके, चूल्हेके पास चला जाता है और तेज़ कर देता है, नाक, कण्ठ और फेफड़ेमें गर्मी लेना चाहता है। जिन रोगियोंको यक्ष्मा होनेवाला होता है, उन्हें भी इसी तरह तापकी इच्छा रहती है। सर्दीले मनुष्य, छूनेपर वे ठण्डे मालूम नहीं होते, पर वे भीतर सर्द—सर्दीले हैं। गोंदकी तरह श्लेष्मा, खखार-खखारकर निकाला करते हैं, खासकर सवेरे, गलेका भीतरी भाग प्रादाहित और सूखा रहता है। कण्ठकी ग्रन्थिमें पीव पैदा हो जाता है।

ये रोगी तीव्र पदार्थोंकी इच्छा करते हैं और खासकर ऐसी चीजें चाहते हैं, जो उन्हें गरमा दें। उन्हें कुछ ताकत दे दे, कुछ बल बढ़ा दे, समुद्री मछली, पनीर, कुछ "तीव्र पदार्थ।"

"स्तन-ग्रन्थिका पुराना कड़ापन और प्रदाह। बायाँ स्तन प्रादाहित, पीव, इसके साथ ही वक्षमें भरापनका भाव। ठण्डी हवाका तेज़ मालूम होना।" साथ ही ग्रन्थियाँ प्रादाहित। इसमें हमें ग्रन्थियोंके बढ़नेकी प्रवणता दिखाई देती है और इसीसे हम सब ओरकी गाँठोंका आक्रान्त होना और उनका बढ़ना सोच ले सकते हैं। गलेकी गाँठें लड़ी-सी बढ़ी रहती है—गाँठदार रस्सीकी तरह, जैसा कि हाजकिन्स डिज़ीज़ (Hodgkins disease—रक्त-हीनताके साथ लसिका-ग्रन्थियोंके फूलनेकी तरह बीमारी), कुछ ही सीमित दवाओंमें यह गाँठ पड़नेका लक्षण है।

चर्म तथा श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें खुजली, खुजलानेपर कानकी खुजली आराम नहीं होती तथा वारम्बार रगड़ने और खुजलानेके कारण वह अंश खाल उधड़नेकी तरह हो जाता है। आँखें भी बराबर खुजलाती हैं। कण्ठमें भी बराबर खुजली बनी रहती है। वक्षमें बराबर सुरसुरी रहती है, जिससे खाँसी आती है। मलद्वार तथा अन्य सभी द्वारोंमें खुजली रहती है और खुजलानेवाले अंश तबतक रगड़े जाते हैं, जबतक कि उनकी खाल नहीं उधड़ जाती और खून नहीं बहने लगता।

कण्ठमाला, गर्दनकी ग्रन्थियोंकी सूजन और उनमें पीव होना। कमरकी दादकी तरह पीठपर उद्भेद। पीठपर । गुदास्थिमें जलन और कुचल जानेकी तरह दर्द, छूनेपर ...

कार्बो-

ऐनिमैलिसकी तरह है, जिसमें दबानेपर गुदास्थिमें दर्द होता है, खासकर स्नायविक स्त्रियोंको जरा भी चोट आ जानेपर ऐसा ही हो जाता है।

हाथोंपर विसर्पिका (Tetter), खुजलानेपर छालोंसे रस-स्राव। नाखूनकी बीमारियाँ। काम करनेवाले आदमियोंके हाथोंपर कड़े मोटे-मोटे स्थान, साथ ही गहरी दरारें ।

ज्वरके लक्षण काफी तोरसे प्रकट नहीं हुए। पुराने रोगियोंकी क्लान्तिके साथ बहुत ज्यादा पसीना होता है। रातमें पसीना।

क्लिमैटिस इरेक्टा।

(Clematis Erecta)

क्लिमैटिसकी आंशिक परीक्षा हुई है और इसीलिये इसका कुछ ही दशाओंमें प्रयोग होता है , पर ये बहुत ही कामकी है, इसलिये इसे ध्यान दिये बिना नहीं छोड़ा जा सकता। इसमें विसर्पके फफोलोंकी तरह उद्भेद होते हैं। इसकी एक स्थायी मानसिक दशा यह है, कि वह अकेला रहनेसे डरता है, इतनेपर भी वह सङ्ग-साथसे भय करता है। वह सङ्ग-साथकी आवश्यकतासे भी भय करता है और ऐसा मालूम होता है, मानो डरावनी और कष्टकर चीजोंसे समस्त वायुमण्डल परिपूर्ण हो रहा है, जो उसे कष्ट पहुँचाते हैं। इससे वह उत्साह-हीन हो जाता है। यह दवा प्रमेह-विष ग्रस्त रोगियोंकी मानसिक और सार्वाङ्गिक प्रकृतिमें उपयोगी होती दिखाई देती है। यह उनके लिये योग्य मालूम होती है, जिनका सूजाक थोड़े दिन हुए दबा दिया गया है , क्योंकि उसके दब जाने बाद ही ग्रन्थियोंके प्रदाहके साथ यह मानसिक दशा आयगी।

उद्भेदोंके सम्बन्धमें भी यह विचित्र ही है। कोई ऐसा न सोचे कि इतनी हानि-रहित एक बूटीसे इतनी तकलीफ़ पैदा हो जायगी , पर ऐसे भी मनुष्य हैं जो इस द्राचालतासे उतने ही स्पर्श-असहिष्णु हैं, जितने **रसटक्स**से तथा अपने प्रदर्शनोंमें यह बहुत कुछ **रसटक्स**के समान है भी। यह **रसटक्स**की तरह ही एक जहरीला दृश्य उत्पन्न करती है। ऐसे फोड़े

फुन्सियोंकी बहुत-सी दवाएँ हैं, जो **रसटक्स**की तरह दिखाई देती हैं और इन सबको ही आपको एक दूसरेके विपरीत सम्बन्धके रूपमें व्यवहार करना पड़ेगा, पर किसी निश्चित रोगीको ही इसका प्रयोग करना उचित है, जिसमें ऐसा उद्भेद उत्पन्न किया है। **क्रोटोन-टिग, रसटक्स, रैनानक्युलस, ऐनाकार्डियम** और क्लिमेटिस समय-समयपर इतनी सदृश मालूम होती हैं, कि उन्हें अपने-अपने उद्भेदके कारण अलग रखनेमें मैं अयोग्य हूँ। सार्वजनिक प्रतिविषके रूपमें ये सब आपसमें सदृश हैं। **रसटक्स**की अपेक्षा ये सभी गहरी क्रियाशील दवाएँ हैं। **रैनानक्युलस,** छोटी बटरकपने, पलकोंका कोषार्बुद आरोग्य किया है। इसने कर्कटके रोग आरोग्य किये हैं, इसीलिये हम कहते हैं, कि यह मांस-तन्तुओंकी गहरायीतक क्रिया करती है।

बाह्य शिरमें भी क्लिमेटिसके दिखावे प्रकट करते हैं। इसपर चकत्ते-चकत्ते उद्भेद होते हैं, जिनमें बहुत खुजली डङ्क मारनेकी तरह दर्द और कनकनाहट रहती है। अब उद्भेदोंके सम्बन्धमें जो यहाँ सत्य है, वही क्लिमेटिसके उद्भेदोंके विषयमें भी होगा। यह धोनेसे बढ़ जाता है। इसमें टीस होगी और जलेगा और धोनेपर एक अर्द्ध-प्रादाहिक अवस्था पैदा हो जायगा। दवाके भीतरी स्वरूपसे इसका मिलान कीजिये। दाँत और जबड़ेमें प्रचण्ड दर्द होता है, पर जब कि ठण्डी चीजें लगाकर उद्भेदको और भी बदतर बना दिया जाता है, तब मुँहमें ठण्डा पानी रखनपर जबड़े और दाँतके दर्दमें आराम पहुँचता है और ताप तथा बिछावनकी गरमीसे यह दर्द बहुत बढ़ जाता है। ठण्डे पानीसे धोने तथा बिछावनकी गरमीसे उद्भेद भी बढ़ जाते हैं। यह जाँचनेके लिये हमें कुछ गहरायीतक जाना होगा, कि कोई उद्भेद **रसटक्स**का है, कि क्लिमेटिसका या किसी दूसरी दवाका। फफोलोंकी तरह उद्भेद। ये पीली तरलसे भरे रहते हैं और फफोलोंमें कड़ापन रहता है। यह विसर्पिका और अकौतासे सम्बन्ध रखनेवाले उद्भेद उत्पन्न करता है और ये उद्भेद फैलते हैं। आँखके पास भी ये चकत्तेकी तरह उद्भेद निकलते हैं। यदि पहली अवस्थामें इन्हें देखा जाये तो ये रसभरी फुन्सीकी तरह मालूम होंगी, पर पीछे देरसे देखनेपर जख्मकी तरह मालूम होंगे। विसर्पिकाका सरल और जटिल स्वरूप। शरीरमें वर्तुलाकार विसर्पिका (Herpes zoster)। "आँखोंमें जलन

और टनक, उन्हें बन्द करनेपर और भी बढ़ना। चक्षुउपतारकाका प्रदाह। आँखे प्रादाहित, बाहर निकली, धुँधली। पलकोंका पुराना उपदाह।"

दाँतोंके सम्बन्धका दर्द बिछावनकी गरमीसे बढ़ जाता है, जो एक साधारण लक्षण है, दर्द रातमें पैदा होता है, मुँहमें गर्म चीज़ें रखनेपर बढ़ता है तथा मुँहमें ठण्डा पानी रखनेसे घटता है। दाँतमें छेदने और खींचनेकी तरह दर्द, रातमें बदतर हो जाता है, मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर कुछ देरके लिये अच्छा रहता है, ठण्डी हवा खींचनेपर अच्छा रहता है और बिछावनकी गरमीसे बदतर हो जाता है। दिनमें तो दाँतोंका दर्द सहन हो जाता है, पर ज्योंही वह बिछावनपर लेटता है और सीधा होता है, त्योंही यह दर्द बढ़कर असह्य हो जाता है। खोखले दाँतमें दर्द, ठण्डे पानीसे अच्छा या ठण्डी हवा खींचनेकी वजहसे अच्छा।

कठिन अर्बुद रोगसे सम्बन्ध रहनेपर भी वंक्षणकी ग्रन्थियोंका फूलना इसका एक जबर्दस्त स्वरूप है। इसका रुके हुए सूज़ाकसे भी सम्बन्ध है तथा ग्रन्थियोंकी वातसे। दाहिनी शुक्र-रज्जुकी सूजन और दर्द, यह रातमें बदतर हो जाता है तथा चलनेपर और बिछावनकी गर्मीसे बढ़ जाता है। जब यह दोनों पार्श्वमें रहती है, तो एक यह अद्भुत बात है कि शरीरके दाहिनी ओरकी ग्रन्थियोंमें बायीं ओरकी ग्रन्थियोंकी अपेक्षा विशेष दर्द होता है। इसने मूत्राशयकी बहुत-सी तकलीफें पैदा की है, लगातार पेशाब लगना, बहुत ही दर्द-भरी कूथन। धारा रुक जाती है और फिर जारी होती है। मूत्रनलीमें दबानेपर दर्द होता है। पेशाबकी धार बहुत धीमी रहती है, एक कमजोर धार निकलती है, क्योंकि मूत्रनली छोटी रहती है।

इस दवाकी प्रकृति है, कि तन्तुओंमें प्रदाह और रस-स्राव हो और इसीलिये सूज़ाककी उस दशामें यह लाभदायक होता है, जहाँ पेशाबकी धार धीमी रहती है और जिसकी इन्जेक्शनसे चिकित्सा हुई है। मूत्रनलीके इस घोमें प्रदाहके कारण मूत्रनलीसे तरल स्राव होता है और मूत्रनली एक बड़े कीड़ेकी डोरीकी तरह मालूम होती है। दबानेपर दर्द होता है और यह तबतक होता रहता है, जबतक यह बिलकुल बन्द नहीं हो जाता। जब क्लिमेटिस निर्देशित रहता है, तो आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि यह दवा देने बाद स्राव जारी हो गया है और इसके बाद ही पुराना सङ्कोचन चला जाता है। दो या तीन महीनोंके अन्तमें उसे कुछ भी मालूम नहीं होता।

पेशाब, मूत्राशय प्रभृतिके सम्बन्धमें एक आश्चर्यजनक रूप यह है, कि रोगी मूत्राशयको बिलकुल ही खाली नहीं कर सकता। उसे हमेशा ऐसा ही मालूम होता है, मानो उसमें कुछ रह गया और जब उसे यह मालूम होता है, कि पेशाब होना खतम हो गया, तो पेशाब फिर चूता रहता है। यही मूत्रनलीकी निरुद्धता (Stricture) का साधारण रूप है। एकदम समस्त मूत्र निकाल देनेकी शक्तिका न रहना। पेशाब करना आरम्भ करते ही इसमें बहुत ज्यादा जलन होती है, पेशाब करनेके समय मूत्रनलीमें मानो सीकें गड़ती हैं और पेशाब हो जानेपर भी इसमें जलन हुआ ही करती है। मूत्रनलीसे गाढ़े पीवका स्राव।" जोरोंका प्रदाह रहनेपर सूजाककी पहली अवस्थामें, इसका शायद ही कभी निर्देश होता है, पर उन रोगियोंमें होता है, जो लँभड़ाते रहते हैं। तब यदि सूजाक दबा दिया जाता है, तो उसकी परिणामावस्था (Sequelæ) आती है। अण्डोंका प्रदाह तो एक साधारण बात है और यह उसकी योग्य दवाओंमेंसे एक है। एक आश्चर्यकी बात है, कि बायेंकी अपेक्षा दाहिना अङ्ग साधारणतः विशेष आक्रान्त होता है। रुक-रुककर पेशाब होना। अबतक रहनेवाले लिङ्गोच्छ्वासके साथ रुकता और फिर होता है। दाहिनी शुक्ररज्जु बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहती है। अण्डोंमें दर्द, खींचन। दर्द-भरे, प्रादाहित और फूले अण्ड, बहुत ही दर्द-भरा सूजन और कड़ापन मिला अण्डकोष-प्रदाह। अब जब सूजन उतर जाती है, तो शायद आप **पल्सेटिला** देंगे, जो उस समयकी दवा थी, पर इसने रोगको आरोग्य नहीं किया—अभी भी इस अंशमें कड़ापन है। मोटाई और नीचे लटक जानेके साथ दाहिने मुष्ककी सूजन।

स्त्रियोंमें इसकी ज्यादा परीक्षा नहीं हुई है, जिसका अफसोस है, क्योंकि यह जान रखना अच्छा होगा, कि यह दवा अण्डकोषोंकी तरह ही डिम्बाशयपर भी प्रभाव डालती है। रोगी-पार्श्वमें इसका व्यवहार हुआ है और स्त्रियोंकी बहुत-सी बीमारियाँ इसने आरोग्य की है, खासकर स्तन ग्रन्थिका प्रदाह। "ग्रन्थियोंका कड़ापन और जखम। कड़ापन और जखमके साथ स्तनका कर्कट रोग, कन्धेमें कर्कट रोगके साथ बायें स्तनका कर्कट रोग।" यह एक रोगी-पार्श्वका लक्षण है—"रातमें बदतर।" वह खुले रहना सहन नहीं कर सकती।

दबे हुए सूजाकके कारण इसमें प्रत्यङ्गोंकी वातज अवस्था भी है। बहुत अधिक स्नायविक दुर्बलता और पेशियोंकी ऐंठन। इसमें लेटनेपर दर्द होता

है और सोनेको जानेके पहले। एक बिजलीका झटका, ऐंठन, झटका, मानो एक बिजलीकी बैटरी लगी हुई है। इसमें सार्वाङ्गिक ज्वर-भाव भी है, पर विशेष ध्यान देने योग्य नहीं।

शरीरपर जल भरे उद्भेद। यहां-वहां भैंसिया दादकी तरह उद्भेद, इसकी विसर्पिकाकी धातु रहती है। "फुन्सियाँ तथा जल भरे उद्भेद, पहलेसे तो पीब निकलता है और दूसरीसे साफ पानीकी तरह स्राव। पीले जल-भरे फफोले और पीली फुन्सियाँ, इस दवामें दोनों ही हैं। "प्रचण्ड खुजलीके साथ, काले, जलन करनेवाले उद्भेद।" जख्म हो जानेवाला भैंसिया दाद। "खून-मिले रस निकलनेवाले उद्भेद, फैलनेवाले जख्म।"

काकुलस इण्डिकस।

(Cocculus Indicus)

हम इसकी सार्वाङ्गिक क्रिया और मन दोनोंका ही अध्ययन करेंगे। काकुलस मनको और शरीरको सभी कार्यशीलताएँ घटा देता है और एक तरहकी पाक्षाघातिक दुर्बलता उत्पन्न कर देता है। सभी कामोंमें समयके पीछे, सभी स्नायविक भाव देरसे केन्द्रमें पहुँचते हैं। यदि आप इसके रोगीके अंगूठेमें चिकोटी काटेंगे, तो वह तुरन्त कहनेके बदले मिनटभर ठहरकर कहता है,—"ओह!" सवालोंका जवाब वह बहुत धीरे-धीरे देता है। बहुत कुछ सोचने बाद, पर यह सोचनेकी एक चेष्टाभर है और ऐसा ही प्रत्येक स्नायविक प्रदर्शनोंमें, विचारोंमें तथा मांस पैशिक क्रियाशीलता प्रभृतिमें होता है, क्योंकि वह कमजोर है, वह क्लान्त हो रहा है। पहले तो यह धीमापन आता है, फिर एक प्रकारकी प्रत्यक्ष पाक्षाघातिक दशा, इसके बाद सम्पूर्ण पक्षाघात। यह स्थानिक या सार्वाङ्गिक हो सकता है। ऐसे कितने ही कारण हैं, जिनका यह परिणाम होता है। पतिकी सेवा करनेवाली कोई स्त्री, पिताकी सुश्रूषा करनेवाली कन्या, चिन्ता, कष्ट और अनिद्रासे श्रान्त क्लान्त हो पड़ती है। वह थक गयी है, कोई भी मानसिक या शारीरिक परिश्रम सहन नहीं कर सकती, उसके घुटने कमजोर हो रहे हैं, पीठमें कमजोरी है और

जब उसका निद्राका समय आता है, तो वह सो नहीं सकती। इस ढङ्गसे पैदा हुई बीमारी काकुलसके ज़हरसे सम्बन्ध रखती है और इसीलिये हैनिमैनके समयसे लेकर आजतक काकुलस सुश्रूषा करनेके कारण पैदा हुई बीमारियोंकी दवा हो रही है। ठीक वैसी ही बीमारी नहीं, जो पेशेदार धात्रियोंको पैदा होती है, क्योंकि काकुलसको विरक्ति, चिन्ता, बहुत दिनोंको अनिद्रा, जैसा कि सुश्रूषा करनेवाली माताएँ या बेटियोंको होता है या किसी उस धात्रीको जैसा होता है, जो उस परिवारवालेकी चिन्ता अपने ऊपर ओढ लेती है या टाइफायड ज्वरमें या लम्बी बीमारियोंमें पतिकी सेवा करनेवाली स्त्री प्रभृतिका इस ढङ्गके रोगोंसे सम्बन्ध रहता है। इसके अन्तमें उसका शरीर और मन अवसन्न हो पडते हैं, वह सो नहीं सकती, उसे रक्त-सञ्चयी सर-दर्द होता है, मिचली, वमन और सरका चक्कर हो जाता है। इससे ही यह मालूम होता है, कि काकुलसकी बीमारी कैसे आरम्भ होती है। मन और शरीरसे इस तरहका कोई क्लान्त घुडसवारीके लिये निकलता है, उसे स-वमन सर-दर्द हो जाता है, पीठमें दर्द होता है, सरमें चक्कर, मिचली और वमन होता है, वह गाडीमें बैठकर सफरके लिये जाती है, स-वमन सर-दर्द होने लगता है। एक या दो मील जाते-न-जाते मिचली हो जाती है, वमन और स-वमन सर-दर्द होता है। उसे सारे शरीरमें कमजोरी मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो उसका अन्त हो जायगा।

काकुलसके रोगी सवारीपर हवा खाने निकलते हैं और उन्हें वमनके साथ सर-दर्द, मिचली हो जाती है, सरमें चक्कर आने लगता है। काकुलसका रोगी हिलना-डोलना सह नहीं सकता। उसकी बीमारी बोलने, हिलने-डोलने, आँखें हिलाने तथा घुडसवारीसे बढ जाती है। चीजें देखनेके लिये सावधानतासे सर घुमानेके लिये उसे काफी समय चाहिये। चलने, सोचने और प्रत्येक काम करनेके लिये भरपूर समयकी जरूरत पडती है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधान सुस्त पड जाता है, अकार्यशील बन जाता है।

कम्पनशील, थका, उत्तेजनापूर्ण। कोई चीज़ पकडनेके साथ हाथ काँपते हैं या वह बेहूदा ढङ्गसे उस चीज़को पकडता और गिरा देता है। इस दवामें सर्वत्र असमता है और इसीलिये गति-शक्ति-राहित्यमें इसका सफलता पूर्वक प्रयोग होता है। इसमें घूर-घूरकर देखना और सुन्नपन है। सुन्नपन तो इस दवाका एक प्रत्यक्ष रूप है। निम्न शाखाओंका सुन्नपन,

अङ्गुलियोंमें, कन्धेमें, चेहरेके पार्श्व भागमें। चिन्ताके कारण पैदा हुए रोग।

स्नायु-केन्द्रका बहुत ज्यादा उपदाह, थोड़ी भी आवाज़ या झटका सहन नहीं होता। आपने सुना है, कि बेलका रोग झटकेसे बदतर हो जाता है। ऐसा ही ठीक बेलेडोनाकी भांति, काकुलसमें भी होता है। अनिद्रा तथा अन्य सार्वाङ्गिक लक्षणोंमें भी काकुलस बेलेडोनाके सदृश है। सामुद्रिक मिचलीकी अनुभूति और सरका चक्कर कभी-कभी समूचे शरीरमें अनुभव होता है। एक प्रकारकी बेहोशीका भाव, जिसके बाद कभी-कभी अचैतन्य या पाक्षाघातिक कठोरता आ जाती है। सन्धियोंका अकड़ जाना तो काकुलसका एक साधारण स्वरूप है। यह साधारणतः प्रत्यङ्गोंमें होता है, लेकिन यह एक ऐसा सुदृढ़ लक्षण है, कि मैं इसे यहाँ बताऊँगा। कुछ देरतक प्रत्यङ्ग फैलाये रहने और उसी भावसे रखे रहने बाद, जब मोड़े जाते हैं, तो थोड़ी देरके लिये उनमें दर्द होता है। वह प्रत्यङ्गोंको झुकाता है और रोगिनी चीखती है, पर झुक जाने बाद रोगिनीको आराम मिल जाता है और इसके बाद वह उठ और घूम सकती है। यह आपको किसी दूसरे स्थानपर न मिलेगा। यह एक प्रदाह-रहित भावसे होता है, यह एक तरहकी पाक्षाघातिक दुर्बलता है एक क्लान्त शरीर और मनका पक्षाघात है। काकुलसमें सर-दर्द, पीठका दर्द, दर्द तथा तकलीफें मौजूद रहती हैं। एक आदमी अपना पैर कुर्सीपर फैलायगा, पर वह बिना हाथ लगाये उसे मोड़ नहीं सकता। ऐसी बातें अद्भुत हैं। *शरीरको चलानेपर मूर्च्छा, आँतोंके* दर्दके कारण मूर्च्छा, शूलके दर्दसे मूर्च्छा। इन सब विचारों और कार्य-शीलताओंके मन्द पड़ जानेके साथ-ही-साथ रोगी रोगसे बहुत ही कातर और दर्दों से भी स्पर्श-कातर रहता है।

बिजलीके झटकोंकी तरह समूचे शरीरमें अकड़न। नींद न आनेके बाद टङ्कार। रोगीमें स्नायविकता और उत्तेजना, घबड़ाहट तथा अनिद्रा तबतक बनी रहती है, जबतक अकड़न पूरी नहीं आ जाती। टङ्कार, हैजा, दर्दके साथ पाक्षाघातिक दुर्बलताका आक्रमण, चेहरेका पक्षाघात, आँखोंका पक्षाघात, हर जगहकी पेशियोंका पक्षाघात, प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात, यहाँतक कि जैसी अवस्था हमने वर्णन की है, डिफ्थीरिया भी वैसी ही अवस्था उत्पन्न करती

देखी गयी है। यही नींदकी कमी और घबड़ाहटके कारण मुझे निम्न शाखाओंके पक्षाघातका एक रोगी मिला, जिसका एक बहुत ही सावधान होमियोपैथ द्वारा बहुत दिनोंसे इलाज हो रहा था, चिकित्सा और देख-रेखके आरम्भिक कालमें यह एक ऐसी चीज़ थी, जिसने मुझे बहुत अचरजमें डाल दिया। यह रोगिनी एक छोटी लड़की थी, जिसे डिफ्थीरियाके बाद पैरोंका पक्षाघात हो गया था और जिसके लिये किसी प्रकारकी आशा न दी गई थी। पर डाक्टर मूरने (उस समय वह आक्रोजेनेरियन थे) उस रोगिनीको देखा। मैं डाक्टर और उस परिवार दोनोंसे ही परिचित था। उन्होंने रोगिनीका अच्छी तरह अध्ययन कर काकुलस सी० एम० का प्रयोग किया। कुछ ही दिनोंके बाद बच्चोंने पैर हिलाना आरम्भ किया और फिर बीमारी एकदम अच्छी हो गई। मैं इसपर बराबर आश्चर्यसे विचारा करता हूँ। यह एक उत्तम तथा रोगिनीके सभी तत्वोंके अनुकूल दी हुई दवा थी। डाक्टर मूर लिटी और हेरिङ्गके शिष्योंमेंसे थे।

आप देख सकते हैं, कि जब मानसिक क्रियाशीलता धीमी पड़ जाती है, तब क्या आ रहा है तथा सुश्रूषाके कारण चिन्ता और नींद न ले सकनेके कारण क्या होता है। मन ऐसा हो जाता है मानो जड़त्व आ रहा है और यदि आप काकुलसके रोगीको देखें, तो आपको आश्चर्य होगा कि रोगी बरस-दो-बरसमें पागल क्यों न हो गया? क्योंकि उसका मन तो एकदम सादा दिखाई देता है। वह जमीनकी ओर देखता है और धीरे-धीरे सवाल करनेवालेकी ओर आँख घुमाकर, मुश्किलसे सवालका जवाब देता है। यह स्नायविक अवसन्नता और सान्निपातिक ज्वरमें देखनेमें आता है। यह **फास-एसिड**के इतने सदृश हैं, कि दोनों दवाओंका सावधानतासे प्रभेद करना चाहिये। समय जल्दी-जल्दी बीतता है, वह समझ नहीं पाता कि समूची रात बीत गयी। वह इतना घबराया रहता है, कि एक सप्ताह बीत गया है, पर वह उसे एक क्षण समझता है। अनुभूतिका धीमापन, अपने विचार प्रकट करनेके लिये उसे ठीक शब्द नहीं मिलते। उसका मन बहुत धीमी क्रिया करता है। वह याद नहीं रख सकता जो हो गया है। अभी जो कुछ पढ़ा है, उसे भूल जाता है, बोल नहीं सकता, थोड़ी भी आवाज़ सहन नहीं कर सकता, जरा भी बात काटना नहीं सह सकता। जबान उसके वशमें नहीं

रहती। मनमें विकलता और उच्चारणकी कठिनता रहती है। कोई खयाल उसके मनमें पैदा होता है और बैठ जाता है तो वह न तो उसे बदल सकता है और न हटा सकता है। बल्कि यह ठीक वहीं जमा रहता है और यदि वह कुछ बोलता है, तो कुछ ऐसी बात कहेगा, जिससे आपकी समझमें आ जायगा, कि उसपर कोई विचार दखल जमाये हुए है। इस तरह वह जड़ताकी एक अवस्थामें मालूम होता है। सरमें चक्करके साथ मानसिक विशृङ्खलता, करीब-करीब सभी मानसिक लक्षणोंके साथ सरमें चक्कर रहता है। वह एक कष्ट और अचेतन्यकी दशामें रहता है, इतनेपर भी जो कुछ हो रहा है, सब जानता है और समय-समयपर तो जो हो रहा है, उसे याद रखता है और वर्णन कर देता है, पर जरा भी आँख नहीं मिटमिटाता, एक पेशीको भी नहीं हिलाता। उसका चेहरा प्रसन्न रहता है, चेहरेपर मुस्कुराहट रहती है, जानता है, कि क्या हो रहा है, इतनेपर भी बिना बोले पेशियोंको एकदम शिथिलताके साथ या किसीकी स्पष्ट पहचाने बिना ही पड़ा रहता है। पूरी तरह शिथिल, इतनेपर भी जानता है, कि क्या हो रहा है, यह तन्द्राके सदृश है, सोच नहीं सकता, मृत्युका भय। ऐसा अनुभव करता है, कि कोई भयङ्कर घटना घटने-वाली है। यह सब शोथ, चिन्ता, विरक्ति और बहुत दिनोंतक अनिद्राके दुष्परिणाम है। सरमें चक्कर अमूमन मिचलीके साथ होता है, काकुलसका रोगी बिना तुरन्त ही मिचली पैदा हुए गाड़ीसे झाँक नहीं सकता, किश्तीसे नीचेकी ओर देख नहीं सकता तथा बहता पानी नहीं देख सकता।

शायद अब आप अन्दाजा लगा सकेंगे, कि मस्तकके लक्षण कैसे होने चाहिये। सर-दर्दके साथ सरमें चक्कर, अत्यन्त मिचली तथा पाकाशयकी गड़बड़ीके लक्षण। किसी गाड़ी, सवारी या जहाजमें चढ़नेपर सर-दर्द पैदा हो जाता है। हिलने डोलनेसे सर-दर्द। गतिशील पदार्थपर आँख नहीं जमा सकता, सरमें चक्कर, सर घूमना और सर-दर्द पैदा हो जाता है। मस्तकमें रक्त सञ्चय, दबाव और टपककी तरह सर-दर्द। ऐसा सर-दर्द, मानो खोपड़ी फट जायगी या मानो कोई बड़ा कपाट खुल और बन्द हो रहा है। सरमें चक्करके साथ स वमन सर-दर्द, फिर धूपमें काम करनेके कारण सर-दर्द। किसी गाड़ीमें चढ़नेके कारण वमनके साथ सर दर्द।

धुँधली दृष्टि तथा दृष्टिकी गड़बड़ी। आँखोंकी पेशियोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलता तथा स्थिति-स्थापक पेशीकी पाक्षाघातिक दुर्बलता, चेहरा पीला

देखी गयी है। यही नींदकी कमी और घबड़ाहटके कारण मुझे निम्न शाखाओंके पक्षाघातका एक रोगी मिला, जिसका एक बहुत ही सावधान होमियोपैथ द्वारा बहुत दिनोंसे इलाज हो रहा था, चिकित्सा और देख-रेखके आरम्भिक कालमें यह एक ऐसी चीज़ थी, जिसने मुझे बहुत अचरजमें डाल दिया। यह रोगिनी एक छोटी लड़की थी, जिसे डिफ्थीरियाके बाद पैरोंका पक्षाघात हो गया था और जिसके लिये किसी प्रकारकी आशा न दी गई थी। पर डाक्टर मूरने (उस समय वह आर्क्टोजिनेरियन थे) उस रोगिनीको देखा। मैं डाक्टर और उस परिवार दोनोंसे ही परिचित था। उन्होंने रोगिनीका अच्छी तरह अध्ययन कर काकुलस सी० एम० का प्रयोग किया। कुछ ही दिनोंके बाद बच्चीने पैर हिलाना आरम्भ किया और फिर बीमारी एकदम अच्छी हो गई। मैं इसपर बराबर आश्चर्यसे विचारा करता हूँ। यह एक उत्तम तथा रोगिनीके सभी तत्वोंके अनुकूल दी हुई दवा थी। डाक्टर मूर लिपी और हेरिङ्गके शिष्योंमेंसे थे।

आप देख सकते हैं, कि जब मानसिक क्रियाशीलता धीमी पड़ जाती है, तब क्या आ रहा है तथा सुश्रूषाके कारण चिन्ता और नींद न ले सकनेके कारण क्या होता है। मन ऐसा हो जाता है मानो जड़त्व आ रहा है और यदि आप काकुलसके रोगीको देखें, तो आपको आश्चर्य होगा कि रोगी बरस-दो-बरसमें पागल क्यों न हो गया? क्योंकि उसका मन तो एकदम सादा दिखाई देता है। वह जमीनकी ओर देखता है और धीरे-धीरे सवाल करनेवालेकी ओर आँख घुमाकर, मुश्किलसे सवालका जवाब देता है। यह स्नायविक अवसन्नता और सान्निपातिक ज्वरमें देखनेमें आता है। यह **फास-एसिड**के इतने सदृश हैं, कि दोनों दवाओंका सावधानतासे प्रभेद करना चाहिये। समय जल्दी-जल्दी बीतता है, वह समझ नहीं पाता कि समूची रात बीत गयी। वह इतना चकराया रहता है, कि एक सप्ताह बीत गया है, पर वह उसे एक क्षण समझता है। अनुभूतिका धीमापन, अपने विचार प्रकट करनेके लिये उसे ठीक शब्द नहीं मिलते। उसका मन बहुत धीमी क्रिया करता है। वह याद नहीं रख सकता जो हो गया है। अभी जो कुछ पढ़ा है, उसे भूल जाता है, बोल नहीं सकता, थोड़ी भी आवाज़ सहन नहीं कर सकता, ज़रा भी बात काटना नहीं सह सकता। जबान उसके वशमें नहीं

ज्वरोंमें पाया जाता है। कुछ पीनेके बाद तलपेटका तनाव, पेट फूलनेवाला शूलका दर्द। फाड़ने, काटने तथा पकड़नेकी तरह आंतोंमें दर्द। अतिसारके साथ आंतोंमें विकीर्ण होनेवाला दर्द। मलान्त्रकी एक पाक्षाघातिक दशा। पाखानेके समय कांखनेकी शक्तिका न रहना। पाखानेका वेग होना और मलान्त्रमें जलन। पाखाना लगता है पर आंतोंमें मलाधारकी क्रिमिकी तरहकी क्रिया—धमन क्रिया (Peristaltic action) नहीं होता।

बहुत ज्यादा मासिक ऋतु-स्राव होता है, जल्दी जल्दी ऋतु स्राव होता है, बहुत दिनोंतक जारी रहता है। समयके दो सप्ताह पहले ही ऋतु स्राव हो जाता है। चिन्ता तथा रञ्जसे अप्रसन्न स्त्रियोंको तथा बहुत दिनोंतक नींद न होनेके कारण बहुत जल्द ऋतु स्राव होता है, बहुत ज्यादा होता है और बहुत दिनोंतक होता रहता है। सर दर्द, मिचली, सरमें चक्कर। आंतो में भयङ्कर मरोड़का दर्द, ऋतुकालमें जरायुमें कसकर पकड़ रखनेकी तरह दर्द। फिर ऐसी रोगिनी जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है उनको रजोरोध भी रहता है या कई सप्ताह या महीनोंतक कोई ऋतु स्राव नहीं होता या ठीक ऋतु-कालका समय आते ही बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव, ऋतु-स्रावके बदले जारी हो जाता है। रोगिनी क्षीण हो जाती है, तथा अधिकाधिक रोगिनी और रक्तहीन होती जाती है। चेहरा हरी आभा लिये पीला या पीलापन लिये रङ्गका हो जाता है। "ऋतु-स्रावके बदले श्वेत-प्रदरका स्राव," या "दो ऋतु-स्राव कालके बीचमें बहुत ज्यादा श्वेत प्रदरका स्राव।'

हृत्पिण्ड कमजोर और नाड़ी दुर्बल रहती है। प्रत्यङ्गों में पाक्षाघातिक दुर्बलता, सुन्नपन पेशियों का हिलना, ऐंठन, कपकपी, अनुभूतिका क्षय, शक्तिका क्षय। सभी अङ्गोंकी सार्वपेशिक दुर्बलता। प्रत्यङ्गोंमें सुन्नपन और पाक्षाघातिक भाव। हाथ तथा अंगुलियों का टेढ़ा-मेढ़ा रहना। एक हाथको दूसरेसे पकड़नेके लिये चेष्टा करनेपर, उसमें भ्रमणशील सुन्नपन आ जाता है या पाक्षाघातिक दुर्बलताके साथ एक स्थायी सुन्नपन आ जाता है, कभी-कभी परिवर्त्तनशील। कभी एक पार्श्व सुन्न और दूसरा पक्षाघात ग्रस्त रहता है। पैरके तलवे सो जाते हैं। पैरके तलवेका सुन्नपन, जैसा कि गति शक्ति-राहित्यमें प्राप्त होता है। ठण्डे पैर, कमजोरीके कारण पैर ठीक नहीं पड़ते। चलनेके समय डगमगाते हैं और रोगी एक पार्श्वकी ओर गिर जाना चाहता है। घुटने अकड़े, निम्न शाखाओंका पक्षाघात, यह पीठसे आरम्भ होता है। ठण्डसे

और रोगियल हो जाता है। मृतको तरह पीला, इसके साथ ही चेहरेमें दर्द, सरमें चक्कर और मिचली। मुखमण्डलमें फाड़नेकी तरह दर्द, चेहरेका स्नायुशूल, चेहरा भर्राया, चेहरेकी पेशियोंकी ऐंठन और काँपना, चेहरेकी पेशियोंका पक्षाघात, चेहरेका सुन्नपन, ऐंठन, झटका लगना, सुन्नपन, पक्षाघात और फाड़नेकी तरह दर्द।

काकुलसके अधिकांश रोगोंके साथ अवसन्नता और स्नायविक क्लान्ति रहती है।

पाकाशयके उपसर्ग। खाद्यसे घृणा, धातुका स्वाद। मुँहका स्वाद तीता, जो मिचलानेवाला रहता है और कोई भी खाद्य स्वाद नहीं लगता। वह थोड़ेसे बोखार या "सर्दी" से बोमार पड़ा रहता है। सर-दर्द, सरमें चक्कर, मिचली, घृणा, प्रत्यङ्गोंमें दर्दके साथ, खासकर घुटने और पैरकी हड्डियोंमें दर्दके साथ सविराम ज्वर, इसके साथ ही वही विचित्र कड़ापन, मिचली और खाद्यसे घृणा वर्त्तमान रहती है। सविराम ज्वरमें या धीमी टाइफायड अवस्थामें हमें मिचलीके साथ खाद्यसे यह घृणा प्राप्त होती है, आप रोगीके पास जाकर सुश्रूषा करनेवालीसे पूछिये—"तुम रोगीको क्या खिला रही हो?" और रोगी गुर्राता है। खाद्यका विचार ही रोगीका मुँह बन्द कर देता है। सुश्रूषा करनेवाली कहेगी कि जितनी ही बार वह खानेका जिक्र करती है, रोगी मुँह बन्द कर लेता है। खाद्यका विचार या दूसरे कमरेसे आयी हुई खाद्यकी गन्ध या रसोई घरसे आनेवाली गन्ध रोगीमें मिचली पैदा कर देगी। ऐसा लक्षण दो दवाओं में है—काकुलस और **कोलचिकम**।

पक्षाघातिक दशाएँ। कण्ठनलीका पक्षाघात, निगल नहीं सकता। डिफथीरियाके बाद कण्ठकी पाक्षाघातिक दशा। निम्न-श्रेणीके ज्वरके साथ गलेमें जखम। बोखार छूट गया है, पर रोगी पनपता नहीं, उसमें बहुत ही स्नायविक कम्पन, सुन्नपन पेशियोंमें ऐंठन और कमजोरी है। ऐसी अनुभूति मानो पाकाशयमें एक कीड़ा रेंग रहा है। पाकाशयकी ऐंठन। पाकाशयके शूल, प्रचण्ड आक्रमण, पाकाशयमें प्रचण्ड मरोड़। पीसने, चिकोटी काटने, सङ्कोचनकी तरह दर्द। आँतों के दर्दसे ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें, **तेज पत्थरोंसे दबायी जा रही हैं**। इससे मूर्च्छा और वमन उत्पन्न हो जाता है। आँतों में शूलका दर्द, तलपेटमें भयङ्कर तनाव, जैसा कि टाइफायड्

जबतक गर्मीकी ऋतु नही आती। रोगी ठण्डा रहता है और उसकी बीमारियाँ शीत ऋतुमें ही उत्पन्न होती हैं। उसे सर्दी सहन नही होती, सहजमें ही सर्दी लग जाती है। आपको स्वत. रोगी और उसकी बीमारियोंसे प्रभेद करना चाहिये, क्योंकि वे आपसमें एकदम विपरीत रहते हैं। जब ठण्ड लगकर वह एक बार बीमार होता है, तो गर्म कमरेमें उसकी अवस्था सदा बदतर रहती है और ठण्डी हवामें अच्छा रहता है। गर्म कमरेमें, बिछावनमें बहुत गर्म हो जानेपर और गर्म चीजे पीनेपर उसे खाँसी आने लगती है। ठण्डे कमरेमें और ठण्डी चीजे पीनेपर वह अच्छा रहता है, परिश्रमसे बदतर हो जाता है, गर्म किये जानेपर, गर्म होनेपर अर्थात एक बार जब रोग भीतर बैठ गया है, तो यह अपनेको बदला करता है।

यह बहुत-सी अन्य दवाओंकी भाँति नही है। मुझे डाक्टरोंके यह लिखते हुए कई पत्र मिले हैं,—"आपकी रेपर्टरी और बोनिङ्गहासेनमें यह क्या है? कितनी ही दवाएँ सर्दीसे अच्छी और सर्दीसे बदतर लिखी हैं? वे दोनो ही कदापि नही हो सकती।" पर उनमे दोनो ही क्रियाएँ हैं। कभी-कभी विभिन्न अवस्थाओंमें और कभी उसी अवस्थामें वैसा ही होता है, कभी ये प्राथमिक और कभी गौण लक्षण होते हैं। यह निश्चय करानेके लिये, कि यह कैसे होता है, कि ये अवस्थाएँ एक दूसरेके बिलकुल विपरीत रहती हैं, किसी दवाकी अच्छी तरह परीक्षा होनी चाहिये, पर बोनिङ्गहासेनने उन दोनो ही बातोंको लिखा है, जो विशेष लक्षणके रूपमें है या जो साधारण लक्षणके रूपमें है और यदि उनके विचारमें कोई लक्षण किसी दशासे आश्चर्य-जनक-रूपसे बदतर हो जाता है और यह साधारणके बिलकुल विपरीत भी रहता है, उन्होंने उस लक्षणको मोटे अक्षरोंमें प्रकट किया है। हम जो कुछ कह रहे हैं, **फास्फोरस** उसका तो उज्ज्वल उदाहरण है। यदि आप **फास्फोरस**का साव-धानतासे अध्ययन करेंगे, तो आप देखेंगे, कि वक्षकी बीमारियाँ सभी सर्दीसे, सर्द हवासे और ठण्डे हो जानेपर बदतर हो जाती हैं। सर्दी लग जाती है और वह रोगीके वक्षमें जम जाती है तथा खाँसी और वक्षका उपदाह सर्दीसे या सर्द हवा लगनेसे बदतर हो जाते हैं इतनेपर भी रोगी पाकाशयमें ठण्डी चीजे डालना चाहता है। उसके पाकाशयको ठण्डी चीजे अच्छी मालूम होती हैं। उसे भले ही सरकी बीमारी हो, पर उसका माथा सर्दीसे अच्छा रहता है, वह पाकाशयमें ठण्डी चीजे चाहता है। यदि उसे

मर्करीके अत्यव्यवहारसे होता है। अकड़नके साथ, निम्न-प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात, सुन्नपन और कुचल जानेका भाव।

रातभर अगोरने और बहुत दिनोंतक सुश्रूषा करनेके कारण अनिद्रा, यह एक लक्षण है, जिसपर मैंने इतनी बार ध्यान दिलाया है। घबड़ाया, डरावने सपने, निद्रा न होने और रात्रि-जागरणका दुष्परिणाम। "थोड़ा भी नींदका न होना उसके स्वास्थ्यपर प्रभाव डालता है।"

काक्स कैक्टाई।

(Coccus Cacti)

यह एक छोटी-सी दवा है और इतनी कठिन दवाओंके अध्ययनके बाद इसके अध्ययनसे कुछ आराम मिलेगा। पूरी-पूरी परीक्षा होनेपर इसमें सन्देह नहीं कि यह अपनेको एक गहराईतक काम करनेवाली धातु-संशोधक दवा हो जायगी। यद्यपि इसने कुछ बद्धमूल पुरानी बीमारियाँ आरोग्य की हैं, तथापि इसका प्रयोग खासकर नयी बीमारियोंमें ही होता है। यह इस कारणसे कि इसकी परीक्षा बहुत थोड़ी हुई है तथा हमलोगोंको सार्वाङ्गिक रीतिसे इसका ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है। मानसिक लक्षण बहुत कम प्रकट किये गये हैं। जहाँतक दिखाया गया है, इसका व्यवहार वायु-पथोंकी सर्दीकी अवस्थामें और उस हूपिङ्ग खाँसीमें होता है, जिनमें बहुत ज्यादा, डोरीकी तरह, चाशनीकी तरह श्लेष्मा निकलता है। नाकमें, कण्ठमें, खासकर वायु-पथोंमें और योनि-पथमें बहुत ज्यादा मात्रामें श्लेष्मा रहता है। बँधे ढङ्गसे काम करनेवाले चिकित्सक, जब कभी गाढ़ा, डोरीकी तरह लसदार श्लेष्मा देखते हैं, तो उनके ध्यानमें काली-बाईक्रोम आता है। यह (की-नोट) कुञ्जियोंके अध्ययनसे होता है, पर काली-बाईके सिवा अन्य दवाओंमें भी यह लक्षण है।

आक्षेपिक खाँसी, हूपिङ्ग खाँसी, शराबियोंकी खाँसी, खासकर जाड़ेके दिनोंमें काक्स कैक्टाईके रोगीको पुरानी सर्दी होती है। यह उस समय आरम्भ होती है, जब शीत ऋतु आरम्भ होती है और तबतक बनी रहती है,

कहेंगी, कि यदि वह उसे काफी ठण्डा पानी पिला दे, तो वह आवेगको घटा दे सकती है। वह तबतक श्लेष्मासे भरता जाता है, जबतक फिर श्वास नहीं लिया जा सकता और इसे अवश्य ही निकल जाना चाहिये। इतनेपर भी बच्चा जोर लगाकर अपनी साँस रोके रहेगा, कि खाँसी न आये। आप देखकर आश्चर्य करेंगे कि काक्कस कैक्टाई किस तरह खाँसीकी प्रकृति बदल देता है। सरल श्वास-प्रश्वास द्वारा ही रोगमें घटनेका चिन्ह प्राप्त हो जायगा। खाँसी घट जाती है, ओकाई चली जाती है और एक सप्ताह या दस दिनोंमें खाँसी भी गायब हो जायगी। भोजनके बाद खाँसीका बढ़ना, चलनेपर बढ़ना और गर्म कमरेमें बढ़ना।

हूपिङ्ग खाँसीकी आरम्भिक अवस्थामें कार्बो-वेज उसे बढ़ा देगा तथा लक्षणोंको प्रकट कर देगा तथा दूसरे नुस्खेकी एक सुन्दर तस्वीर सामने ला रखेगा, यदि उससे आरोग्य न भी हो।

नाकसे गाढ़े श्लेष्माका स्राव, छींकनेकी इच्छाके साथ नाक रुकी हुई। नाकका बहुत अधिक सूखापन। श्लेष्मा निकल जानेपर वायुपथोंमें जलन होती है, सिर्फ श्वास द्वारा हवा खींचनेपर भी वक्षमें जलन होती है। लालीके साथ कण्ठमें जलन। कण्ठमें सुरसुरी। स्वरयन्त्रके पीछे कण्ठमें केश या रोगी अड़ी रहनेकी तरह मालूम होना, गलकोष बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहता है, गलकोष और तालुकी महराब जहाँतक दिखाई देती है, बहुत लाल रहती है। कण्ठमें जलन, गर्मीसे बढ़ना, खासकर जब रोगी बिछावनमें गर्म हो जाता है, गर्म पेयोंसे बढ़ना, यद्यपि गर्म पेय इतने बुरे नहीं रहते। ठण्डे पेयोंसे उत्तम। यदि रोगी बिछावनमें गरमा जाता है या कमरा गर्म हो जाता है, तो वह स्वर-यन्त्रको हाथसे पकड़ने और खाँसने लगता है। तालुका थोड़ा भी छूना या मसूढ़ेकी परीक्षाके समय छूना, कभी-कभी उस समय ओकाई ला देगा जब वे अङ्ग स्वाभाविक दिखाई देते हैं। बिना ओकाई आये वह खखार भी नहीं सकता। खाद्य निगलनेपर कभी-कभी यह ठीक वापस आ जायगा और उसका मुँह भर जायगा और ओकाई आयगी।

बहुत प्यास, बार-बार और बहुत ज्यादा मात्रामें पानी माँगता है। मुँहका स्वाद जी मिचलानेवाला। कण्ठमें मिचली। सफेद, तीते स्वादवाले फेनकी कै होती है। दाँतका दर्द, दाँतोंमें एकाएक खींचनका दर्द, छूने और सर्दीसे बदतर हो जाता है।

पाकाशयकी तकलीफ़ रहती है, तो कोई भी गर्म चीज़से वह बदतर हो जाती है, वह ठण्डा पानी पीना चाहता है और ज्योंही वह गर्म होता है, वह उसे वमन करा देता है। अब आप देखें, कि **फास्फ़ोरस**का रोगी सर्दीसे बदतर और फिर गर्मीसे भी बदतर हो जाता है। हाथ-पैरोंका दर्द तापसे अच्छा रहता है।

जैसा कि बताया गया है, पुरानी खाँसी अकसर जाड़ेसे, शीत ऋतुसे आरम्भ हो सकती है और सम्पूर्ण जाड़ेभर रह सकती है। वक्षमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा बनता है। यह एक आक्षेपिक खाँसी होती है, जिससे कि रोगीको खाँसनेके लिये प्रचण्ड चेष्टाएँ करनी पड़ती हैं। चेहरा नीला हो जाता है। अन्तमें उसे ओकाई आती है और बहुत-सा लम्बी डोरीकी तरह कड़ा, बलगम वमनके साथ निकलता है, जिससे उसका मुँह और कण्ठ भर जाता है और उसका श्वास रोध होने लगता है। यह इस वजहसे होता है, कि श्लेष्मा इतना लसदार होता है, कि यह आसानीसे गल-कोषसे नहीं निकलता, इसीलिये रोगी वमन करता है। अब इस दवाका एक आश्चर्यजनक रूप देखिये। गल-कोषसे जिस किसी चीज़का सम्बन्ध हो जाता है। मुँहका भीतरी भाग, यहाँतक कि मसूढ़ेसे भी, उससे मुँह बन्द हो जाता है, ओकाई आती है, तथा वमन हो जाता है। यह उन स्पर्श-असहिष्णु व्यक्तियोंकी पुरानी दशाओंमें मिलता है, जो बिना गलगलाये और कभी-कभी वमन किये बिना, जो न तो दाँत माँज सकते हैं या दाँतोंकी सफाई कर सकते हैं।

चर्म तथा श्लैष्मिक-झिल्लीकी अत्यधिक सार्वाङ्गिक स्पर्श-असहिष्णुता रहती है। पोशाकका दबाव सहन नहीं होता।

वक्षकी तकलीफोंके साथ बेतरह श्वास-कष्ट रहता है। बिना श्वास-कष्टके वह चल नहीं सकता। बिना श्वास-रोध हुए, वह किसी ऊँचाईपर नहीं चढ़ सकता। कुछ परिमाणमें श्लेष्मा निकल जाने बाद खाँसी अच्छी रहती है और वह दो-तीन घण्टोंतक अच्छा रहता है, जब इन भयङ्कर आक्रमणोंमेंसे एक फिर आ जाता है। बिछावनमें गर्म हो जानेपर, रातमें यह बदतर हो जा सकता है। यदि वह बिना बहुत-सा ओढना ओढ़े किसी ठण्डे कमरेमें लेटा रहे तो उसे बहुत देरतक खाँसी नहीं आयगी।

हुपिङ्ग खाँसी भी इसी प्रकृतिकी होती है। आप बच्चोंको ओढना उतारे बिछावनपर पड़े देखेंगे। वे ठण्डा कमरा चाहते हैं और माता आपसे

पाकाशयकी तकलीफ रहती है, तो कोई भी गर्म चीज़से वह बदतर हो जाती है, वह ठण्डा पानी पीना चाहता है और ज्योंही वह गर्म होता है, वह उसे वमन करा देता है। अब आप देखें, कि फास्फोरसका रोगी सर्दीसे बदतर और फिर गर्मीसे भी बदतर हो जाता है। हाथ-पैरोंका दर्द तापसे अच्छा रहता है।

जैसा कि बताया गया है, पुरानी खांसी अकसर जाड़ेमें, शीत ऋतुमें आरम्भ हो सकती है और सम्पूर्ण जाड़ेभर रह सकती है। वक्षमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा बनता है। यह एक आक्षेपिक खांसी होती है, जिससे कि रोगीको खांसनेके लिये प्रचण्ड चेष्टाएँ करनी पड़ती हैं। चेहरा नीला हो जाता है। अन्तमें उसे ओकाई आती है और बहुत-सा लम्बी डोरीकी तरह कड़ा, बलगम वमनके साथ निकलता है, जिससे उसका मुँह और कण्ठ भर जाता है और उसका श्वास रोध होने लगता है। यह इस वजहसे होता है, कि श्लेष्मा इतना लसदार होता है, कि यह आसानीसे गल-कोषसे नहीं निकलता, इसीलिये रोगी वमन करता है। अब इस दवाका एक आश्चर्यजनक रूप देखिये। गल-कोषसे जिस किसी चीज़का सम्बन्ध हो जाता है। मुँहका भीतरी भाग, यहांतक कि मसूढेसे भी, उससे मुँह बन्द हो जाता है, ओकाई आती है, तथा वमन हो जाता है। यह उन स्पर्श-असहिष्णु व्यक्तियोंकी पुरानी दशाओंमें मिलता है, जो बिना गलगलाये और कभी-कभी वमन किये बिना, जो न तो दाँत मांज सकते हैं या दांतोंकी सफाई कर सकते हैं।

चर्म तथा श्लैष्मिक-झिल्लीकी अत्यधिक सार्वाङ्गिक स्पर्श-असहिष्णुता रहती है। पोशाकका दबाव सहन नहीं होता।

वक्षकी तकलीफोंके साथ बेतरह श्वास-कष्ट रहता है। बिना श्वास-कष्टके वह चल नहीं सकता। बिना श्वास-रोध हुए, वह किसी ऊँचाईपर नहीं चढ़ सकता। कुछ परिमाणमें श्लेष्मा निकल जाने बाद खांसी अच्छी रहती है और यह दो-तीन घण्टोंतक अच्छा रहता है, जब इन भयङ्कर आक्रमणोंमेंसे एक फिर आ जाता है। बिछावनमें गर्म हो जानेपर, रातमें यह बदतर हो जा सकता है। यदि यह बिना बहुत-सा ओढ़ना ओढ़े किसी ठण्डे कमरेमें लेटा रहे तो उसे बहुत देरतक खांसी नहीं आयगी।

हूपिङ्ग खांसी भी इसी प्रकृतिकी होती है। आप बच्चोंको ओढ़ना उतारे बिछावनपर पड़े देखेंगे। वे ठण्डा कमरा चाहते हैं और माता आपसे

तली , ठीक वैसी ही अवस्था जैसी किसी बच्चेको आरक्त ज्वरके बाद सर्दी लग जानेपर होती है।

काफिया।

(Coffea)

सार्वाङ्गिक स्पर्शाधिक्य द्वारा ही इस दवाको प्रकृतिका पता लगता है। देखना, सुनना, गन्ध, स्पर्श—सबका अत्यधिक अनुभव होना, दर्दका बहुत अधिक अनुभव होना। इसका अत्यधिक अनुभवाधिक्य कभी-कभी बहुत ही आश्चर्यजनक होता है। **आवाजसे दर्द बढ जाता है।** श्रवण-शक्ति इतना अधिक रहता है, कि आवाज़ कष्टदायक होती है। चेहरेमें दर्द, दाँतमें अनुभवाधिक्य, दर्द, सर-दर्द, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें दर्द, सब जगहकी तकलीफ़ शोर-गुलसे बढ जाती है। इस दवामें ही सकनेवाली सभी तरहकी स्नायविक गडबडियाँ प्राप्त होती है और वे सभी शोरगुलसे बढ जाती हैं। यहाँतक कि दरवाजा खुलनेकी आवाज़ तथा दरवाजेकी घण्टी बजनेकी आवाज़ भी बहुत तकलीफ पैदा कर देती है। ऐसे रोगी इतने अनुभवाधिक्यवाले होते हैं, कि वैसी आवाजें सुनते है, जो स्वस्थ्य अवस्थामें कभी सुन नही पड सकती। सिवा "नक्स-वोमिका" के शायद मेटीरिया-मेडिकामें ऐसी कोई दूसरी दवा नही है, जिसमें साथ-ही-साथ दर्द भी हो जो इसका मुकाबला कर सके, पर जो चिकित्सक इसे नही जानते साधारणत दूसरे कमरेसे आयी हुई आवाज़से या बच्चोंके शोरगुल या आवाजोंसे बढनेवाले दर्दके लिये **नक्स-वोमिका**का ही प्रयोग करते है। बहुत-सी दवाओंमें शोरगुलसे बढनेवाली स्नायविकताएँ हैं, आवाज़से सर-दर्द बढ जाता है तथा सरकी अन्य बीमारियाँ बढ जाती हैं और कुछ मनुष्य स्नायविक हो जाते है, पर हाथ-पैरोंके दर्दका आवाजोंसे बढ जाना विचित्र बात है। ऐसा मालूम होता है, कि आवाज़ उसे इतना विचलित कर देती है, कि वह दर्द सहन नही कर सकता।

काफियाकी दशा भावोद्रेक या मनकी प्रचण्ड उत्तेजनाके कारण उत्पन्न होती है, पर खासकर "प्रसन्नतापूर्ण आश्चर्यमे।" परिणाम होता है, अनिद्रा,

मानसिक लक्षणोंमें खासकर सुस्ती और घबड़ाहट है, बहुत उदासी, प्रत्येक चीज़पर एक पर्दा पड़ा-सा मालूम होता है। शङ्कित-चित्तता, खासकर २ बजेसे ४ बजे सवेरेतक। यह अवस्था लैकेसिसकी तरह बकवाद और सजीवतामें बदल जाती है। अन्य लक्षण भी ऐसे है, जो नींदके बाद बदतर हो जाते हैं, सवेरे कीटाणुके कारण सर-दर्द पैदा हो जाते है या ललाटमें सर-दर्दके साथ जागता है। मानसिक परिश्रमसे बढ़ता है, लेटनेके बाद, धीरे-धीरे टहलनेपर घटता है, परिश्रमसे और खाँसनेपर बढ़ता है, नींदके बाद बदतर हो जाता है।

मूत्रपिण्डपर इसका एक जबर्दस्त स्वरूप है, इसका नवीन कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह। पेशाबमें अण्डलाल। पेशाबमें गहरी लाल तली। खोंचा मारनेकी तरह मूत्रपिण्डसे मूत्राशयतक और फिर नीचे पैरतक दर्द होता है, चलने-फिरनेपर बढ़ जाता है। दर्द गुर्दा। पेशाब लगता है, पर तबतक पेशाब उतरता नही, जबतक कि रक्तका बड़ा-सा थक्का निकल नही जाता। काक्कस कैक्टाईमें हृत्पिण्डके दाहिने पार्श्वपर रोगका आक्रमण हो जाता है, रक्त-वाहिनियाँ फटने योग्य हो जाती हैं और उनसे रक्त-स्राव होने लगता है, रक्त चूता है और बड़े-बड़े काले थक्के बन जाते हैं। ऊपरी लक्षण जरायुसे रक्त-स्राव होनेवाली स्त्रियोंको होते हैं। जहाँ रक्त बिना रुकावटके निकलता है, वहाँ जरायुसे रक्त-स्राव होता है, धीरे-धीरे जमता है तथा योनिमें बहुत-से थक्के नहीं बनते, पर इस दवामें बहुत तेज़ीसे थक्के बनते हैं तथा योनि पथ उनसे भर जाता है और तबतक मूत्राशय खाली नही हो पाता, जबतक ये थक्के निकल नही जाते। जरायुसे रक्त-स्राव इस दवाका एक सुदृढ स्वरूप है। बहुत ज्यादा, बारम्बार और ज्यादा दिनोंतक होनेवाला मासिक रज स्राव। बड़े-बड़े काले थक्कोंसे जरायु भरा रहता है, प्रसवकी तरह दर्द होकर ये निकलते हैं और फिर बनते हैं। जरायु तथा योनि-पथका प्रदाह, इसके साथ ही बहुत ज्यादा, गाढ़ा, सफेद चावनीकी तरह, डोरो-जैसा श्लेष्मा। योनिका जखमकी तरह यन्त्रणा। वस्त्रका दबाव सहन नही कर सकता।

मुँहसे रक्त आना, थक्का-थक्का, परिश्रमसे बढ़ना।

कमरमें धीमें दर्दके साथ पुरुषोंको ध्वजभङ्ग रहता है। अण्डलाल मिले पेशाबके साथ मूत्रपिण्ड-प्रदेशमें धीमा-धीमा दर्द, पेशाब प्रस्त्रतिमें भारी

शारीरिक क्लान्ति, बहुत बेचैनी, रातके अधिकांश भागमें जागती रहती है। काफियासे उत्पन्न होनेवाली अनिद्रा, सबको, यहाँतक कि साधारण मनुष्योंको भी मालूम है। रोगियोंके साथ रातमें जागनेके लिये सुश्रूषा करनेवाली नर्स इसे पीती है। काफियाका रोगी बहुत तेज़ीसे सोचता और काम करता है। रोगिनी विचारोंसे इतनी भरी रहती है, कि वह रात-रातभर कार्यक्रम बनाती और हजारों बातें सोचती पड़ी रहती है। वह अपने मनमें उठनेवाली विचार-धाराको रोक नहीं सकती। **ओपियम, चायना और नक्स-वोमिका**के रोगीकी तरह दूरकी घड़ीकी आवाज़ सुनती है। इतनी अधिक मस्तिष्ककी क्रियाशीलता रहती है, मानसिक उत्तेजना, कि वह ऐसी आवाजें सुनती है, जो बिलकुल खयाली रहती हैं। याददाश्त भी तेज़, सहजमें ही अनुमान लगा लेती है। विचारोंसे भरी, सोचने और ग्रहण करनेकी ताक़त बढ़ी हुई। काफिया मानसिक शक्तिको बढ़ा देता है, पर कुछ देर बाद प्रतिक्रिया होने लगती है। रोगिनी मूर्च्छा और निद्रालु होने लगती है, उसके भ्रमात्मक विचारोंका अन्त नहीं होता, भ्रम-भरी दृष्टियोंका। मनके सामने भड़कीले दृश्य आते हैं। वर्षोंसे याददाश्तमें न आयी हुई बातोंकी याद करती है, बचपनमें कही हुई कविताएँ बोलती है। आँखें चमकीली, पुतलियाँ फैली, चेहरा तमतमाया, माथा गर्म रहता है।

इन सब स्नायविक अवस्थाओंके साथ रोगी ताजी हवासे भय खाता है, उसे सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती जोरकी हवा और ठण्डी ऋतु बर्दाश्त नहीं होती। ठण्डे मौसममें, ठण्डी हवासे उपसर्ग पैदा होते हैं। मुँह तथा जबड़ेमें दर्द। **मुँहमें बरफसे ठण्डा किया पानी रखनेपर आराम मिलता है।** यह दाँत और चेहरेके दर्दमें होता है, जब यह गहराईपर जबड़े होता है। माथा गर्म मसूढ़ोंकी प्रादाहिक अवस्था। दाँतोंमें दर्द, दाँतोंमें छेदने, फाड़नेकी तरह दर्द जो सर्दी लगने, भावोद्रेक होने या उत्तेजनासे और प्रसन्नता होनेपर होता है, हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। बरफ या बरफकी तरह ठण्डी चीज़से घटता है और गर्म खाद्यसे बढ़ता है। गर्म चाय नहीं पी सकता, यह दर्द बहुत बढ़ा देता है, यह एक विशेष लक्षण है। साधारणसे विशेष लक्षण विपरीत रहते हैं। एक स्थानपर आप "सर्दीसे धक्का" मोटे अक्षरोंमें छपा देखेंगे, पर यह केवल जबड़े और चेहरेके

स्नायविक, उत्तेजना, स्नायुशूल, पेशियोंकी ऐंठन, दाँतका दर्द, चेहरेमें दर्द, लाल चेहरा और माथा गर्म होता है।

किसी बड़े कारणसे प्रसवके दर्दका कष्ट पाती हुई किसी स्त्रीको देखनेके लिये आप बुलाये जा सकते हैं। वह लगातार काम करती है, सफल है, पर रोती हुई प्रलाप-ग्रस्त, स्नायु-शूल-ग्रस्त और अनिद्रासे भरी बिछावनपर जाती है। उसके कलेजेमें धड़कन होती है, उसकी नाड़ी फड़कती है, उसपर बेहोशीके दौरे होते हैं और काफियाका प्रयोग न हो तो वह मर जा सकती है। काफी पीनेवाले, जो किसी परीक्षामें रहते हैं और फिर उनका स्वास्थ्य भङ्ग हो जाता है, उनकी भी ऐसी ही अवस्था रहती है।

काफियाके रोगीको शराब सहन नहीं होती, थोड़ी भी शराब उसकी स्नायविकताको बढ़ा देती है, अनिद्रा उत्पन्न कर देती है, चेहरा तमतमा उठता है, बोखारकी हरारत आ जाती है, बहुत उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है। यह अवश्य ही नशा नहीं है, बल्कि स्नायविक उत्तेजना है। काफियामें चर्ममें इतनी दर्द-भरी स्पर्श-असहिष्णुता रहती है, कि उसकी धारणा नहीं लगायी जा सकती। मुझे एक विशेष रोगी याद है—एक स्त्रीका निम्न अङ्ग पलङ्गके बाहर था, उसका एक पार्श्व आगकी तरह लाल था। मैं उसपर हाथ रखनेके लिये उस ओर बढ़ा, पर उसने कहा—"ओह! उसे न छुइये, मैं उसे छूना सहन नहीं कर सकती। मैं उसे स्वयं भी नहीं छू सकती।" मैंने पूछा—यह कितने समयसे बढ़ रहा है। उसने कहा—"ओह! यह सब एक घण्टेमें हो गया।" काफी पीनेवालोंका यह एक साधारण लक्षण है। बोखार नहीं था, चर्ममें तेज़ डङ्क मारने और जलनकी तरह दर्द, उसके साथ ही एकाएक रूखे दाने पैदा होनेके साथ-ही-साथ लाली और ताप। यह ठीक वैसे ही जल्द छोड़ भी जाता है, ठण्डी हवा लगनेपर, किसी प्रकारकी जोरकी या पखेकी हवा, हिलना-डोलना प्रभृतिसे रोग बढ़ता है, इतनेपर भी गरमीसे बीमारी बढ़ती है। यदि कोई सड़कपर चलता है, तो रोग बढ़ता है, जब मैं पलङ्गकी ओर बढ़ रहा था, तो वह औरत कराहती थी। ऐसी बातें कई मिनटोंमें ही मैंने काफियासे आराम होती देखी हैं।

एकाएक भावोद्रेक होकर मूर्च्छा। हिस्टीरिया (गुल्म-वायु), स्नायविकता, रोना। दर्दसे कातर-भावसे रोना, चोटकी तरह भावके कारण काँपना और रोना, थोड़ी भी गफलतसे, सबसे अधिक मानसिक और

होता है, कि कानमें होनेवाली गरजकी आवाज़, पश्चाद्-मस्तिष्कमें हो रही है। कभी-कभी तो इसके साथ ही माथेमें बुलबुले फूटने और टनककी तरह होता है। जब रोगी यह कहते हैं,—'मेरे माथेमें गरजकी आवाज़ आती है", तो आपको समझना चाहिये, कि यह कानमें है। कितनी ही बार इसके साथ ही कानमें गरज, घण्टी बजनेकी आवाज़, कानमें भनभनाहट, एक तरहकी मस्तकको स्पन्दनको विचित्र अनुभूति होती है, जिसे कि भ्रमसे रोगी आवाज़ समझनेकी भूल करता है। मैं यह इसलिये कहता हूँ, कि काफियाके रोगीको पश्चाद् मस्तिष्कमें कुछ फटने या बुलबुलोंकी तरह मालूम होता है। सरमें बुरी तरह अनुभूति होता है, यह छोटा मालूम होता है, सर-दर्द, मानो मस्तिष्क पटलपर कुछ दबाया जा रहा है। इसके पहले जो रक्त सम्बन्धी दशाका वर्णन किया गया है, उसकी वजहसे आप स्वभावत मान ले सकते हैं, कि दबाव होगा। "सर दर्द, मानो समूचा मस्तिष्क फाड डाला और कुचल डाला तथा टुकडे-टुकडे कर डाला गया है। हिलने-डोलने, शोरगुल या रोशनीमें बदतर।" शोरगुल और रोशनीसे माथे और आँखके लक्षण बदतर हो जाते हैं। "सर-दर्द असह्य, माथा छोटा अनुभव होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो तरलसे भरा है। स्नायविक हिस्टोरियाका सर-दर्द, एक पार्श्वका सर दर्द।" एक दूसरा मस्तकका लक्षण भी है, जो बहुत साधारण है—एक ऐसी अनुभूति, मानो माथेमें एक काठी ठोंकी जा रही है, काफियाका सर-दर्द चलने और हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाता है, सहनपर केवल खिसकनेपर भी वह कहता है, कि उसे सरमें हवाका एक झोंका लगता है और शरीरके किसी अंशमें दर्द होनेपर तो यह सत्य ही है। यदि काफियाके रोगीके हाथमें दर्द होता है, तो हवामें हाथ हिलाना उसकी बीमारीको बढा देगा। मैं इसे इस ढङ्गसे इसलिये दिखाना चाहता हूँ, कि वह हवासे कितना स्पर्श-असहिष्णु रहता है और खासकर दर्दवाले अंशको हवामें वैसी दशा रहती है। जब हवाके विपरीत वह चलता है, यहाँतक कि शान्त हवाके विपरीत भी, तो भी उसे यह अनुभव होता है, पर सर्दीसे दाँतके दर्दका घटना एक अपवाद है, यह एक विशेष लक्षण है।

पुराने काफी पीनेवालोंके लिये चेहरेका स्नायुशूल तो एक साधारण बात है। स्पर्श-असहिष्णु रोगी काफी पीते हैं और अन्तमें उन्हें इसका अभ्यास हो जाता है। वे कहते हैं, कि इसके बिना काम नहीं चलता। उन्हें काफी

सम्बन्धमें है, पर सर्दी से बदतर सार्वाङ्गिक है। ठण्ढी हवा और खुली हवासे घृणा, जबतक यह बहुत गर्म और शान्त नहीं रहती। जोरकी हवासे घृणा। "दाँतोंका-स्नायु-शूलका दर्द, मुँहमें ठण्ढा पानी लेनेपर एकदम आराम हो जाता है, पर ज्योंही वह गर्म होता है, त्योंही फिरसे उत्पन्न हो जाता है। ऋतु-स्रावके समय दाँतोंमें दर्द। दाँत निकलनेके समय रक्त-स्राव बच्चोंकी बीमारियाँ।" वे स्नायविक, उत्तेजनाशील बच्चे, जो धात्री और मातासे चमकीली आँखोंसे बहुत तेजीसे बातें करते हैं और चेहरा लाल रहता है, सो नहीं सकते। यह रोगीको शान्त कर देगा तथा दर्द-रहित भावसे दाँतके निकलनेमें सहायता पहुँचायगा। बहुत-से मस्तिष्क और मानसिक कष्टवाले स्नायविक बच्चोंका ऐसा ही वर्णन है। बच्चा बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहता है, सहजमें ही इसे सर्दी लग जाती है। बँधा नुसखा लिखनेवाला चिकित्सक उस बच्चेको **बेलेडोना** देता है, जिसका माथा गर्म, चेहरा गर्म तथा कण्ठकी धमनियाँ फड़कती रहती हैं और जब उससे फायदा नहीं होता, तो वह फिर **बेलेडोना** देता है और मात्राका आकार तबतक बढ़ाता जाता है, जबतक बच्चेपर ही परीक्षा नहीं हो जाती। वह **बेलेडोनाके** बच्चेको इसके बाहर निकाल देता है, जब कि काफिया उसे आरोग्य कर देता। बहुत-से स्थानोंपर जहाँ **बेलेडोना** निर्देशित रहता है, वहाँ बच्चा शिथिल और जड़की तरह रहता है और सोना चाहता है। बच्चा वे बातें सोचता है, जो उसकी माता नहीं सुन सकती। चीजें देखता है, चीजोंकी अनुमान करता है, डरता हुआ भागता है। कमरेमें नाना प्रकारकी चीजोंको देखता है। इस तरह उत्तेजित जागता है, मानो उसने भ्रम-पूर्ण दृश्य देखे हों, चीजोंको खोजता है और अन्तमें देखता है, कि वे वहाँ नहीं हैं। ऐसी बातें काफियाके सुदृढ़ स्वरूप हैं।

समय-समयपर माथा गर्म, चेहरा तमतमाया और आँखें इतनी चमकीली रहती हैं, कि सन्यास रोग (Apoplexy) हो जानेका भय होता है। रोगी अक्सर आपसे कहेंगे, कि वे सरमें एक प्रकारकी "आवाज़" सुनते हैं यथा मस्तिष्कमें एक घण्टी बजने और गरजकी आवाज़। कान ही एक ऐसा यन्त्र है, जिसमें आवाजें आती हैं, पर आश्चर्यकी बात तो यह है, कि कभी-कभी कान बहुत धोखा देनेवाले हो जाते हैं। कभी-कभी ऐसा मालूम

होता है, कि कानमें होनेवाली गरजकी आवाज़, पश्चात् मस्तिष्कमें ही रही है। कभी-कभी तो इसके साथ ही माथेमें बुलबुले फूटने और टनकको तरह होता है। जब रोगी यह कहते हैं,—"मेरे माथेमें गरजकी आवाज़ आती है", तो आपको समझना चाहिये, कि यह कानमें है। कितनी ही बार इसके साथ ही कानमें गरज, घण्टी बजनेकी आवाज़, कानमें भनभनाहट, एक तरहकी मस्तकको स्पन्दनकी विचित्र अनुभूति होती है, जिसे कि भ्रमसे रोगी आवाज़ समझनेकी भूल करता है। मैं यह इसलिये कहता हूँ, कि काफियाके रोगीको पश्चात् मस्तिष्कमें कुछ फटने या बुलबुलोंकी तरह मालूम होता है। सरमें बुरी तरह अनुभूति होता है, यह छोटा मालूम होता है, सर-दर्द, मानो मस्तिष्क-पटलपर कुछ दबाया जा रहा है। इसके पहले जो रक्त सञ्चयी दशाका वर्णन किया गया है, उसकी वजहसे आप स्वभावत मान ले सकते हैं, कि दबाव होगा। "सर दर्द, मानो समूचा मस्तिष्क फाड़ डाला और कुचल डाला तथा टुकड़े-टुकड़े कर डाला गया है। हिलने-डोलने, शोरगुल या रोशनीसे बदतर।" शोरगुल और रोशनीसे माथे और आंखके लक्षण बदतर हो जाते हैं। "सर-दर्द असह्य, माथा छोटा अनुभव होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो तरलसे भरा है। स्नायविक हिस्टीरियाका सर-दर्द, एक पार्श्वका सर दर्द।" एक दूसरा मस्तकका लक्षण भी है, जो बहुत साधारण है—एक ऐसी अनुभूति, मानो माथेमें एक काठी ठोंकी जा रही है, काफियाका सर-दर्द चलने और हिलने डोलनेपर बदतर हो जाता है, गहनपर केवल विसकनेपर भी वह कहता है, कि उसे सरमें हवाका एक झोंका लगता है और शरीरके किसी अङ्गमें दर्द होनेपर तो यह सत्य ही है। यदि काफियाके रोगीके हाथमें दर्द होता है, तो हवामें हाथ हिलाना उसकी बीमारीको बढ़ा देगा। मैं इसे इस ढङ्गसे इसलिये दिखाना चाहता हूँ, कि वह हवासे कितना स्पर्श-असहिष्णु रहता है और खासकर दरवाले अङ्गकी हवामें वैसी दशा रहती है। जब हवाके विपरीत वह चलता है, यहाँतक कि शान्त हवाके विपरीत भी, तो भी उसे यह अनुभव होता है, पर सर्दीसे दांतके दर्दका घटना एक अपवाद है, यह एक विशेष लक्षण है।

पुराने काफी पीनेवालोंके लिये चेहरेका ब्रहुमूल तो एक साधारण बात है। स्पर्श-असहिष्णु रोगी काफी पीते हैं और अन्तमें उन्हें इसका ... हो जाता है। वे कहते हैं, कि इसके बिना काम नहीं चलता।

मिलनी ही चाहिये। ऐसे व्यक्तियोंको काफी पीना बन्द कर देना चाहिये। जब काफीसे खञ्जता-सी उत्पन्न हो तो यह निश्चित प्रदर्शन है, कि काफी पीना अवश्य बन्द कर देना चाहिये। ऐसा ही चाय और अन्य पेयोंके सम्बन्धमें भी है, ऐसे मनुष्योंको कभी-कभी काफीकी आदत हो जाती है और वे अधिक मात्राओंमें इसे पीने लगते है, चेहरा लाल हो जाता है, सर-दर्द पैदा हो जाते हैं तथा काफियाके अन्य लक्षण आ जाते है। काफी बन्द कर देनेसे एक काफी परीक्षा हो जाती है और प्रतिविषके रूपमें आपको **कैमोमिला** और **नक्स-वोमिका**का अध्ययन करना पडता है। इन सभी दवाओंमें आप विपरीत प्रभाव प्राप्त करते हैं। अब **ओपियम** इसे स्पष्ट कर देगा। **ओपियम**का पहला प्रभाव कब्ज होता है। अब कई खुराकें दे दीजिये और ज्योंही अफीमका प्रभाव हटता है, रोगीको पतले दस्त आने लगते है। अफीम खानेवाले तो इसे शायद ही बन्द करें, क्योंकि उन्हें पतले दस्त होने लगते हैं। यदि आपको कोई ऐसा **ओपियम**का रोगी मिले, जिसे पतले दस्त आते हों तो प्रायः हमेशा ही **पल्सेटिला** उसे बन्द कर देगा, पर ऐसे भी व्यक्ति हैं, जो इसके विपरीत होते हैं। अकसर **ओपियम**की छोटी खुराकसे भी आमाशय उत्पन्न हो जायगा और यह यदि बढ गया तो रक्तामाशय और आँतोंका प्रदाह पैदा हो जायगा। इसमें सन्देह नही, कि इनमें एक प्रक्रिया है और दूसरी प्रतिक्रिया है।

बराबर काफी पीनेवाली स्त्रीको बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत दिनोंतक होनेवाला ऋतु-स्राव होगा। जरायुसे रक्त-स्राव होना भी असाधारण बात नहीं है। काफियाका दूसरा स्वरूप यह है, कि स्त्रियाँ ऋतुकालमें मुश्किलसे कपडा ले सकती हैं। (**प्लेटिनम**)। वह अंश एक अतिरिक्त अनुभूतिकी दशामें रहता है। योनि गर्म और स्पर्श-असहिष्णु रहती है, अकसर सङ्गम रोके रहना पडता है। पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है,—"स्त्री-जननेन्द्रियमें अतिरिक्त अनुभूति, साथ ही बहुत उत्तेजनशीलता। वह एक आनन्दकी दशामें रहती है, प्रचण्ड खुजली और अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णुताके साथ स्त्री-जननेन्द्रियसे रक्त-स्राव। अतिरज, बडे-बडे काले थक्के निकलते है," कभी-कभी बहुत बडे चमकीले लाल थक्के रहते हैं, "प्रत्येक गतिसे बदतर, साथ ही वक्षण देशमें प्रचण्ड दर्द और मृत्युका भय।" बहुत ज्यादा खुजलीके साथ अत्यधिक स्पर्श-

असहिष्णुता काफियाका एक सुदृढ स्वरूप है और आपको अकसर काफी पीनेवालियोंमें ये ही लक्षण मिलेंगे।

यह उत्तेजना प्रसव कालमें भी दिखाई देती है, ये सभी स्नायविक प्रदर्शन मिलते हैं, स्नायु संस्थान गडबडाया रहता है और ऐसी मानसिक दशा, जैसी बतायी जा चुकी है, प्रसवान्तिक वेदनाके बाद पैदा हो जाती है, दर्दकी असीम स्पर्श-असहिष्णुता रहती है, चिल्लाती है, भ्रम देखती है, सब तरहकी आवाज़ें सुनती हैं, हिलने-डोलनेपर दर्द बढता है, शोरगुलसे बढ जाता है, घरमें प्रत्येक मनुष्यको शान्त रखना चाहती है।

बच्चोंका टङ्कार। सूतिकाक्षेप (Puerperal convulsion), अत्यधिक उपदाहिता। "कलेजा धडकना, नाडी फडकती हुई" "अत्यधिक स्नायविकताके साथ हृत्पिण्डकी तेज़ धडकन, बहुत ही सम्पत्ति प्राप्तकी खबरसे उत्पन्न अनिद्रा तथा मस्तिष्कका स्नायविक उपदाह।" किसी स्त्रीको प्रसवके समय एकाएक कोई बढिया असाधारण खबर सुना दीजिये, वह एक आनन्दातिरेकमें हो जायगी और सम्पूर्ण सूतिकाकालमें यह लक्षण वर्त्तमान रहेगा। बच्चा और दूध दोनों ही इससे आक्रान्त हो जाते हैं, दूध बह निकलता है। रक्त-स्राव होनेकी भी सम्भावना रहती है। बहुत उत्तेजनशीलता और भय।

कोलचिकम।

(Colchicum)

यह एक विचित्र बात है, कि गठियाके लिये कोलचिकम परम्परासे व्यवहार होता आ रहा है। सभी पुरानी पुस्तकोंमें इस रोगके लिये इसकी सिफारिश की गयी है। परीक्षामें भी यह प्रमाणित होता है, कि गठियाकी कितनी ही अवस्थाओंमें कोलचिकम ठीक बैठता है तथा, वात और यूरिक एसिडकी प्रकृति, सूजन या बिना सूजनके साथ वात-सम्बन्धी रोगोंपर परम्परासे प्रयोग करनेवाले यह नहीं बताते कि गठियाकी किस दशामें इसका प्रयोग करना चाहिये या किस ढङ्गके वातमें। यह वास्तवमें एक अनुभवकी दवा थी। "यदि यह गठिया है, कोलचिकमकी परीक्षा कीजिये।" पर यह सवाल कभी सामने

मिलनी ही चाहिये। ऐसे व्यक्तियोंको काफी पीना बन्द कर देना चाहिये। जब काफीसे खञ्जता-सी उत्पन्न हो तो यह निश्चित प्रदर्शन है, कि काफी पीना अवश्य बन्द कर देना चाहिये। ऐसा ही चाय और अन्य पेयोंके सम्बन्धमें भी है, ऐसे मनुष्योंको कभी-कभी काफीकी आदत हो जाती है और वे अधिक मात्राओंमें इसे पीने लगते हैं, चेहरा लाल हो जाता है, सर-दर्द पैदा हो जाते हैं तथा काफियाके अन्य लक्षण आ जाते हैं। काफी बन्द कर देनेसे एक काफी परीक्षा हो जाती है और प्रतिविषके रूपमें आपको **कैमोमिला** और **नक्स-वोमिका**का अध्ययन करना पड़ता है। इन सभी दवाओंमें आप विपरीत प्रभाव प्राप्त करते हैं। अब **ओपियम** इसे स्पष्ट कर देगा। **ओपियम**का पहला प्रभाव कब्ज होता है। अब कई खुराकें दे दीजिये और ज्योंही अफीमका प्रभाव घटता है, रोगीको पतले दस्त आने लगते हैं। अफीम खानेवाले तो इसे शायद ही बन्द करें, क्योंकि उन्हें पतले दस्त होने लगते हैं। यदि आपको कोई ऐसा **ओपियम**का रोगी मिले, जिसे पतले दस्त आते हों तो प्रायः हमेशा ही **पलसेटिला** उसे बन्द कर देगा, पर ऐसे भी व्यक्ति हैं, जो इसके विपरीत होते हैं। अकसर **ओपियम**की छोटी खुराकसे भी आमाशय उत्पन्न हो जायगा और यह यदि बढ़ गया तो रक्तामाशय और आँतोंका प्रदाह पैदा हो जायगा। इसमें सन्देह नहीं, कि इनमें एक प्रक्रिया है और दूसरी प्रतिक्रिया है।

बराबर काफी पीनेवाली स्त्रीको बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत दिनोंतक होनेवाला ऋतु-स्राव होगा। जरायुसे रक्त-स्राव होना भी असाधारण बात नहीं है। काफियाका दूसरा स्वरूप यह है, कि स्त्रियाँ ऋतुकालमें मुश्किलसे कपड़ा ले सकती हैं। (**प्लेटिनम**)। वह अंग एक अतिरिक्त अनुभूतिकी दशामें रहता है। योनि गर्म और स्पर्श-असहिष्णु रहती है, अकसर सङ्गम रोके रहना पड़ता है। पाठ्य-ग्रन्थमें लिखा है,—"स्त्री-जननेन्द्रियमें अतिरिक्त अनुभूति, साथ ही बहुत उत्तेजनशीलता। वह एक आनन्दकी दशामें रहती है, प्रचण्ड खुजली और अत्यधिक स्पर्श-असहिष्णुताके साथ स्त्री-जननेन्द्रियसे रक्त-स्राव। अतिरज, बड़े-बड़े काले थक्के निकलते हैं," कभी-कभी बहुत बड़े चमकीले लाल थक्के रहते हैं, "प्रत्येक गतिसे बदतर, साथ ही वक्षण देशमें प्रचण्ड दर्द और मृत्युका भय।" बहुत ज्यादा खुजलीके साथ अत्यधिक स्पर्श-

करता है, जब वह किसी रोगीको कहानी सुनता है या उसकी शारीरिक परीक्षा करता है, तो वह जानता है, कि ये रोगी किस ढङ्गसे अपनेको बनाते हैं, वह जानता है, कि क्या होनेको आशा करनी चाहिये। वह रोगका स्वाभाविक झुकाव जानता है और क्या अद्भुत तथा गैरमामूली है, यह तुरन्त पहचान लेता है। जबतक वह स्वाभाविक नहीं जानता, तबतक अद्भुत और असाधारणको नहीं समझ सकता। इसलिये लक्षणावली शास्त्र और निदान शास्त्र तथा रोग तत्व प्रभृति इस सम्बन्धमें आपको बहुत कुछ बता देंगे पर ज्यों-ज्यों आपको होमियोपैथिक चिकित्सामें तजुर्बा होता जायगा, क्योंकि आपको इसका और भी सूक्ष्म विचार मालूम होता जायगा, क्योंकि आपको मेटोरिया-मेडिका आपको और भी निकटस्थ भावसे अध्ययन कराना सिखाती है। मेटोरिया मेडिकाका पढ़नेवाला प्रभेद करनेके लिये हरेक छोटो चोज़को खोज निकालना, उनको अलग करना सोखता है। इसलिये यह कहा जा सकता है, कि रोगका अध्ययन करनेमें वर्षों का पर्यवेक्षण मेटोरिया मेडिकाके सहारे रोगी मनुष्यका अध्ययन करना, मानव-समाजके रोगोंका बहुत बड़ा ज्ञान उत्पन्न कर देगा बनिस्बत इसके कि बँधे ढङ्गसे दवाका प्रयोग करते जाना। बँधे ढङ्गसे दवा देना पर्यवेक्षणको शक्तिको सुप्त कर देता है।

इस दवाकी सभी बोमारियाँ हिलने डोलनेपर बढ़ जाती हैं, दर्द-भरे उपसर्ग, सरको बोमारियाँ, आँतोंकी बोमारियाँ, यकृतके रोग, पाकाशयको शिकायतें, ये सभी हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाती हैं। गतिसे इतनी रोग-वृद्धि होती है, कि रोगी हटना नहीं चाहता। करीब-करीब वैसा ही जैसा हमें ब्रायोनियामें प्राप्त होता है। हिलने-डोलनेसे अनिच्छा तथा हिलने-डोलनेपर रोग-वृद्धि, ठण्ढे होनेपर तथा सर्दीमें, तर ऋतुमें रोग-वृद्धि। यह एक सर्दीला रोगी रहता है, सर्दीसे स्पर्श-कातर, बहुतसे वातके रोगियोंको सर्दी सहन नहीं होती, पर इसमें कुछ अपवाद भी है। लीडमके रोगीसे बढ़कर कोई दूसरा वातका रोगी नहीं होता। वह दोनों ही पार्श्व प्रदर्शित करता है, यद्यपि वह ठण्ढा रहता है, उसके दर्द सर्दीसे घटते हैं। कोलचिकमका दर्द तापसे घटता है कपड़ा लपेट रखनेसे, गर्म होनेसे, यदि वह हटता या चलता है, तो उसे कोई भी बोमारी हो, बढ़ जायगी। इस दवाको सभी बीमारियोंके साथ बहुत सुस्ती रहती है, प्रत्यङ्गोंको कमजोरी बहुत क्लान्ति। कोरण्ड-घटित मूत्रग्रन्थि प्रदाह (Brights disease) होनेको तरह वह धीरे-

नहीं आया कि यदि कोलचिकममें रोगीको फायदा न हो तो क्या करना चाहिये, यह था—"नुस्खा दो और उसे जारी रखो" और दवा तबतक खिलायी जाती थी, जबतक रोगी दृढतासे बदतर-से-बदतर न होता जाता था तथा एक चिकित्सकसे दूसरेके हाथमें जाता था। यह सत्य है, कि गठियाकी दशामें कोलचिकम ठीक बैठता है। ठण्ढकी लहर, तर हवा, पेशाबका प्रवाह रोकेगी, इसे थोड़ा कर देंगी या पेशाबसे कड़े पदार्थकी मात्रा घटा देगी। कोलचिकमकी परीक्षामें यह होता है और बहुत बार इसकी सत्यता प्रमाणित हुई है। यह अच्छी तरह जाना जा चुका है, कि ऐसी दशा गठियाकी दशाको सामने ला देगी या बढ़ा देगी। यदि पेशाबमें कठिन पदार्थों की कमी है, यदि वे पेशाबके साथ नहीं निकलते, तो कुछ अवश्य हो होगा और गठियाकी दशा आ जायगी।

सर्दीसे, तर मौसमसे, बरसातमें, ठण्डी वर्षामें, कोलचिकमकी रोग-वृद्धि हो जाया करती है, कमजोर करनेवाली किसी भी चीज़से यह बढ जाता है। ग्रीष्म ऋतुकी तीव्र गर्मीमें यह बढ जाता है। इसमें ग्रीष्मकालका वात होता है, गर्मीसे पेशाबका प्रवाह घट जायगा या पेशाबमें कड़ी चीजोंकी मात्रा घट जायगी।

एक सन्धिसे दूसरी सन्धिपर हटना, एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वमें जाना, नीचेसे ऊपर चढना या ऊपरसे नीचे उतरना, इस दवाकी यह प्रकृति इसमें सर्वत्र दिखाई देती है। सूजनके साथ या बिना सूजनके ही वातज दशाएँ, पहले यहाँ, फिर वहाँ, इधर-से-उधर जगह बदला करती है। दूसरा आश्चर्यप्रद स्वरूप है, इसकी सार्वाङ्गिक शोथज दशा, जब हाथ पैर फूलते हैं और दबानेपर गड्ढा पड़ता है, आन्तरिक गह्वरका शोथ—पीले पेशाबके साथ। पेशाब ज्यादा हो या थोड़ा, रहेगा यह पीला ही।

मांसपेशिक वात और सन्धियोंके सफेद रेशेदार तन्तुओंका वात, कुछ दिनोंसे जारी रहनेवाली वातज तकलीफोंका अन्त हृत्पिण्डके रोगमें होता है, जब हृत्‌कपाटोंकी तकलीफोंके साथ हृत्पिण्डकी बीमारी रहती है, तो सबसे पहली बात जो चिकित्सक खोजता है, वह रोगीका वातका इतिहास है। हमें यह कहने दीजिये कि मेटेरिया-मेडिकाके अध्ययनका एक अंश, रोगी मनुष्योंकी देख-रेखसे भरा है, एक व्यस्त चिकित्सक बिना पुस्तकके ही सीखता है, पर इसमें सन्देह नहीं कि उसे उस विषयके साहित्यसे परिचित रहना पड़ता है अर्थात् पढ़कर, देखकर, वह बीमारीकी सार्वाङ्गिक प्रकृतिका ज्ञान प्राप्त

इन बीमारियोंके साथ पाकाशय और आँतोंकी बीमारियाँ भी निश्चित हो है। यह काकुलसकी तरह है। खाद्य पदार्थ एकदम स्पर्श नहीं किया जाता। मिचली, ओकाई, मुँहमें पानी भर आना—यह सब उसके सामने खाद्यका नाम लेते ही हो जाता है, खाद्यका खयाल और गन्धसे ही मिचली और वमन उत्पन्न हो जाता है। इन निम्न-रूपकी बीमारियोंके साथ, जो अवस्थाएँ वर्णन की गयी हैं, हम देख सकते हैं, कि इस ढङ्गकी कमजोरी काकुलसकी कमजोरीसे कुछ भिन्न ही है। कोलचिकममें प्रलाप, सुस्ती, मानसिक अवसाद, दर्दका बहुत ज्यादा अनुभव होना जो उसके मस्तिष्कमें अनुभव होता है और यह मानसिक लक्षण उत्पन्न कर देता है, बहुत अधिक दर्द-कातर, चित्त-विभ्रम, अनुभवकी गड़बड़ी, जो पढ़ता है, समझ नहीं सकता, सर-दर्द सभी वातज प्रकृतिके होते हैं, अकसर सम्पूर्ण खोपड़ी यहाँतक कि मस्तिष्कको आवरक झिल्लीमें कुचल जानेकी तरह यन्त्रणा होती है। मस्तककी त्वचा स्पर्श-असहिष्णु रहती है, माथेमें दबाव—सङ्कोचन, दबाव फट जानेकी तरह दर्द, माथेमें ताप, मस्तक त्वचामें फाड़नेकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेपर सब सर-दर्द बढ़ जाते हैं।

आँखके लक्षण भी वात प्रकृतिके होते हैं, वातसे उनका सम्बन्ध रहता है, वातज ज्वर, वातज ज्वरके साथ चक्षुउपतारा प्रदाह (Iritis) हो जाना, कोई आश्चर्यकी बात नहीं है और यह कोलचिकमका एक सुदृढ़ स्वरूप है, पलकोंका जखम, अञ्जनी, गुहेरी, खुली हवामें बहुत आँसू बहना। आँसुओंसे खाल उधड़ जाती है और पलकोंमें लाली उत्पन्न हो जाती है।

सहजमें ही उसे सर्दी लग जाती है। छींक, नाकका छेद बन्द हो जाना, वात तथा गठियाकी धातुवालोंकी नाकसे खून गिरता है, यह एक स्वरूप ऐसा है, जो अन्य सभी दवाओंकी अपेक्षा कोलचिकममें अधिक है। उसे गन्धका इतना अनुभवाधिक्य रहता है कि उसे उन चीजोंकी भी गन्ध आती है, जिनकी दूसरोंको नहीं आती। उसे ऐसी गन्धें आती हैं, जिनसे मिचली उत्पन्न हो जाती है। "तेज गन्धसे वह एकदम घबड़ा उठता है।' आप उसे शोरबा या "साउप्" या ऐसी ही कोई चीज खाने कहें और वह बीमार हो जायगा। बहुत सावधान रहनेपर भी उसे रसोई घरसे गन्ध आ जायगी और यह लक्षण इस दवामें है। टाइफायड ज्वरमें, साधारण ढङ्गसे ज्यादा सुस्त—टाइफायडमें आप ही काफी सुस्ती रहती है—वह गैरमामूली ढङ्गसे सुस्त हो

धीरे दुर्बल होता जाता है, वह कुछ दिनोंसे दुर्बल होता गया है और वह पीला और मोमकी तरह हो जाता है, उसके हाथ-पैरोंमें दबानेपर गड्ढे पडते हैं। आप पेशाबकी परीक्षा कीजिये, उसमें आपको अण्डलाल (Albumen) अवश्य मिलेगा, अण्डलालके कारण पेशाब स्याहीकी तरह काला होता है। मांस-तन्तुओंमें असाधारण प्रकारकी उपदाहिता, यन्त्रणा, स्पर्श-असहिष्णुता, गति असहिष्णुता रहती है, समूचे शरीर और सन्धियोंमें कुचलनेकी तरह भाव। बिजलीके स्पन्दनकी तरह स्पर्श और गति, एक प्रकारकी दर्द-भरी अनुभूति शरीरमें उत्पन्न कर देते हैं, बहुत दुर्बलता और क्लान्ति। बिना श्वासकष्ट हुए वह जरा भी परिश्रम नही कर सकता। उसे पडे रहना पडेगा, हटना नहीं चाहता, ताकत घटती जाती है, ऐसा मालूम होता है, मानो हिलने-डोलने और परिश्रमसे उसकी जान निकल जायगी, वह इतना क्लान्त और थका रहता है। यह स्वभावत उस समय होता है, जब कोरण्ड घटित मूलग्रन्थि-प्रदाह (Brights disease) की ओर रोगी अग्रसर होता है, यह सविराम ज्वरकी ओर बढता है, गुर्दा तथा यकृतकी बीमारियां। आलस्य, सुस्ती, चिन्ता। पेशियां ऐंठती हैं और समूचे शरीरमें मानो बिजलीके झटके लगते हैं, बहुत ज्यादा देरतक परीक्षा करनेपर इसके जहरीले प्रभावसे एक तरहकी पक्षाघातिक दुर्बलता प्रकट हुई थी। जबडे लटक पडते हैं, पेशियां थुलथुली और शिथिल रहती हैं, इस तरह वह पीठके बल लेट जाता है, मानो डूबता जा रहा है, टाइफायडकी तरह, निम्न श्रेणीके वातज और सविराम ज्वरकी भांति पलङ्गमें पायतानेकी तरफ सरक जाता है, इतनी ज्यादा क्लान्ति रहती है, अङ्गोंका या किसी एक अङ्गका या किसी एक अंशका पक्षाघात।

कौलचिकमके रोगीको करीब-करीब लगातार पसीना हुआ करता है, यहांतक कि बोखार रहनेपर भी और कभी-कभी उसका पसीना ठण्डा होता है, यदि उसपर हवाका प्रवाह चला जाता है, तो वह उसका पसीना दबा देता है और प्रत्यङ्गोंकी पक्षाघातिक अवस्था आ जाती है। पेशाबका दब जाना और रुक जाना। इसीसे इसकी बीमारीकी गहरी प्रकृति और ढङ्ग मालूम हो जाता है। निम्न-रूपकी बीमारियां, दुर्बलकारी रोग, स्नायविक कम्पनके साथ रोग, बहुत सुस्तीके साथ होगा, नयी बीमारी आरोग्य हो जाने बाद, बहुत कमजोरी और शोथ आ जाता है, आरक्त ज्वरके बाद शोथ।

और वमन इसके बहुत ही सुदृढ़ स्वरूप हैं। "मिचली तथा वमनेच्छा लार चूट जानेके कारण मिचली, डकारें तथा श्लेष्मा और पित्तका बहुत ज्यादा वमन, प्रचण्ड ओकाई, जिसके बाद बहुत ज्यादा और बहुत झोंकसे खाये हुए पदार्थका वमन होता है और फिर पित्त निकलता है।"

पाकाशयमें कभी ठण्ढक और कभी जलन होती है। अब यह हो सकता है, कि कोलचिकमके रोगीको जलन तथा ठण्ढक दोनों ही होते हैं। ये दोनों ही रेपर्टरीमें लिखे हैं और परीक्षामें प्राप्त हुए हैं पर कभी-कभी यह कहना बहुत मुश्किल होता है, कि कौन-कौन है, जितना आप खयाल करते हैं, उससे कहीं कठिन है, जबतक कि आप कहीं एक टुकड़ा बरफ न लगायें या कुछ बहुत गर्म न दें।

"पाकाशय-गह्वरमें जलन।" पाकाशयमें ठण्ढक। अब पाकाशय और भी ज्यादा ध्यान देनेकी सामग्री हो जाती है। वायुसे पाकाशय तना रहता है, उदराध्मान, सम्पूर्ण तलपेटमें बहुत यन्त्रणा। ठीक वैसी ही पेट फूलनेकी अवस्था, जैसी सान्निपातिक (टाइफायड) में प्राप्त होती है। यदि किसी गाँव-गँवईमें चिकित्साके लिये जायें तथा किसानकी गायें ताजा तिपत्र (Clover-patch) के खेतमें घुसकर उसे भरपूर खा लें तथा उनका पेट इतना फूल जाये, कि आपको भय हो कि वह फट जायगा, तो आप तुरन्त सहायता दें और उनमेंसे प्रत्येक गायको कोलचिकमकी कुछ गोलियाँ खिला दें। आपको तथा उस कृषकको भी यह देखकर आश्चर्य होगा, कि कुछ ही मिनटोंमें सब वायु निकल गया और आप उसे होमिओपैथीमें बदलकर ला सकते हैं। यह जाना गया है, कि कृषक एक कसाईकी छुरी गायके थैलीमें अन्तिम छोटी पसलीके बीचमें वायु निकल जानेके लिये रखते हैं। गाय अच्छी हो जायगी, पर कोलचिकम कसाईकी छुरीसे कहीं अच्छी चीज है। यही घोड़ेके सम्बन्धमें भी सत्य है और वास्तवमें मनुष्य तथा जानवरोंके सम्बन्धमें भी। जब तलपेट बहुत फूला और तना हुआ हो, तो अकसर कोलचिकम उपयोगी दवा होती है।

आक्षेपिक दर्द, शूल, फाड़नेकी तरह दर्द, जलन, पीसने-जैसा दर्द, जिनसे बाध्य होकर रोगीको दुहरा जाना पड़ता है। यह हिलने-डोलनेपर बढ़ता है। शूलके साथ बहुत तनाव और यन्त्रणा। खानेपर रोग वृद्धि हो जाती है, दुहरा जानेपर घटती है और इसके बाद अतिसार उत्पन्न हो जाता है।

पड़ता है। वह दूध नहीं पी सकता, कच्चे अण्डे नहीं खा सकता, रसा नहीं पी सकता, क्योंकि उनका खयाल आते ही, उसका मुँह बन्द हो जाता है। इसी तरह उसे कई दिवस हो गये है और उसके परिवारवाले डरते हैं, कि वह भूखो मर जायगा। उसे गन्धोंसे इतनी ज्यादा रोग-वृद्धि होती है, कि ऐसा मालूम होता है, कि इसने उसपर अधिकार जमा लिया है। यह उसकी भूख, उसकी दुर्बलता, उसके पाकाशयको आक्रान्त करता है। इससे यह मालूम होता है, कि यह एक सुदृढ़ स्वरूप है। देखिये, कि यह उसका एक प्रेम है, यह एक परिवर्त्तित प्रेम है और प्रेम तो साधारण है। यह आँखसे प्रदर्शित हो या नाक या स्पर्शसे। यह उसके निजी-जीवनमें प्रवेश कर जाता है, क्योंकि यह उसमें गन्धसे घृणा उत्पन्न करता है और जब यह अविराम ज्वरकी तरह निम्न-रूपकी बीमारियोंमें रहता है या चयकर ज्वर और वातज रोगोंमें होता है, तो यह एक सार्वाङ्गिक भाव हो जाता है। यदि यह कोई ऐसी चीज़ होती, जिसका एक ही चीज़पर प्रयोग होता, तो यह विशेष लक्षण हो जाता है, पर आप यह देखे, कि यह एकदम अन्तरतममें प्रवेश कर जाता है। घृणा पैदा करता है, मानसिक लक्षण हो जाते हैं और मनुष्यका एक अंश हो जाता है। कहा जा सकता है, कि वह स्वय गन्धसे घृणा करता है, खाद्यकी गन्धसे घृणा करता है और उसके विचारसे ही घृणा करता है। कोलचिकमके रोगीके सामने "खाद्य" का नाम न लीजिये, बल्कि पहले उसे कोलचिकम दीजिये और इसके बाद बहुत जल्द ही वह कुछ खानेको मांगेगा। यह खाद्यसे उस घृणाको हटा देता है। यह एक कैसी मर्मान्तिक बात होती है, कि कोई आदमी उसीसे घृणा करता है, जो उसे जीवित रखेगा।

दाँत बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं। "वातके दाँत।" मसूढे जड़ छोड़ देते हैं, कुछ समय बाद दाँत ढीले पड़ जाते है। दाँतोंमें दर्द, जबड़े और दाँतो की वातज दशा। "दाँत पीसना, एक साथ दबानेपर दाँत स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं।"

"भोजनसे घृणा, खाद्यको देखने और गन्धसे घृणा," खासकर उसकी गन्धसे। "मछली, अण्डा, चर्बी, गोश्त या शोरवाकी गन्धसे उसे मिचली या मूर्च्छा आने लगती है।" कोलचिकमके रोगीको या तो बहुत प्यास रहती है या बिलकुल ही प्यास नहीं रहती अथवा यह पर्यायक्रमसे होता है। मिचली

और वमन इसके बहुत ही सुदृढ स्वरूप हैं। 'मिचली तथा वमनेच्छा लार फूट जानेके कारण मिचली, डकारें तथा श्लेष्मा और पित्तका बहुत ज्यादा वमन, प्रचण्ड ओकाई, जिसके बाद बहुत ज्यादा और बहुत झोंकसे खाये हुए पदार्थका वमन होता है और फिर पित्त निकलता है।"

पाकाशयमें कभी ठण्डक और कभी जलन होती है। अब यह हो सकता है, कि कोलचिकमके रोगीको जलन तथा ठण्डक दोनों ही होते हैं। ये दोनों ही रेपर्टरीमें लिखे हैं और परीक्षामें प्राप्त हुए हैं, पर कभी-कभी यह कहना बहुत मुश्किल होता है, कि कौन कौन है, जितना आप ख्याल करते हैं, उससे कहीं कठिन है, जबतक कि आप कही एक टुकडा बरफ न लगाये या कुछ बहुत गर्म न दें'।

"पाकाशय-गह्वरमें जलन।" पाकाशयमें ठण्डक। अब पाकाशय और भी ज्यादा ध्यान देनेकी सामग्री हो जाती है। वायुसे पाकाशय तना रहता है, उदराध्मान, सम्पूर्ण तलपेटमें बहुत यन्त्रणा। ठीक वैसी ही पेट फूलनेकी अवस्था, जैसी सान्निपातिक (टाइफायड) में प्राप्त होती है। यदि किसी गाँव-गँवईमें चिकित्साके लिये जाये तथा किसानकी गाये ताजा तिपत्र (Clover-patch) के खेतमें घुसकर उसे भरपूर खा ले तथा उनका पेट इतना फूल जाये, कि आपको भय हो कि वह फट जायगा, तो आप तुरन्त सहायता दे और उनमेंसे प्रत्येक गायको कोलचिकमको कुछ गोलियाँ खिला दे। आपको तथा उस कृषकको भी यह देखकर आश्चर्य होगा, कि कुछ ही मिनटोंमें सब वायु निकल गया और आप उसे होमिओपैथीमें बदलकर ला सकते हैं। यह जाना गया है कि कृषक एक कसाईकी छुरी गायके थैलीमें अन्तिम छोटी पसलीके बीचमें वायु निकल जानेके लिये रखते हैं। गाय अच्छी हो जायगी, पर कोलचिकम कसाईकी छुरीसे कही अच्छी चीज़ है। यही घोडेके सम्बन्धमें भी सत्य है और वास्तवमें मनुष्य तथा जानवरोंके सम्बन्धमें भी। जब तलपेट बहुत फूला और तना हुआ हो, तो अकसर कोलचिकम उपयोगी दवा होती है।

आक्षेपिक दर्द, शूल, फाडनेकी तरह दर्द, जलन, पीसने-जैसा दर्द, जिनसे बाध्य होकर रोगीको दुहरा जाना पडता है। यह हिलने-डोलनेपर बढता है। शूलके साथ बहुत तनाव और यन्त्रणा। खानेपर रोग वृद्धि हो जाती है, दुहरा जानेपर घटती है और इसके बाद अतिसार उत्पन्न हो जाता है।

इसमें ठीक वैसा ही अतिसार होता है, जैसा कि निम्न प्रकारके ज्वरोंमें होता है। रक्तामाशय और अतिसारके चाशनीकी तरह दस्त। कढाईमें चाशनीके एक ढेलेकी तरह हो जाते हैं, जमा हुआ श्लेष्मा। बहुत ही कष्टदायक, कोलचिकमके दस्त बहुत ही कष्टदायक होते हैं। तलपेटमें भयानक यन्त्रणा। उस अंशकी बहुत अधिक शिथिलता, मलद्वारका बाहर निकल आना। सड़ा बदबूदार, काला, खून-मिला श्लेष्मा। "प्राणघातक मिचलीके साथ, आँतोंसे खून-मिला स्राव।" सफेद श्लेष्मा और प्रचण्ड कूथनके साथ, बिगड़ा रक्तामाशय। बदबूदार, काला, थक्का-थक्का रक्त और श्लेष्मा आँतोंसे निकलता है। प्रचण्ड शूलके दर्दके साथ अतिसार, आँतोंको खरोंच और काँच निकल आनेके साथ खून-मिले दस्त। गर्म, तर ऋतु या बसन्तमें बहुत ज्यादा, पानीकी तरह दस्त। पानीकी तरह, चाशनीकी तरह श्लेष्मा। मलद्वारावरोधिनी पेशी (Sphincter) में प्रचण्ड ऐंठनके साथ निकलता है। यह पानीकी धाराकी तरह पतला निकलता है, पर ज्योंही यह ठण्डा होता है, यह चाशनीकी तरह हो जाता है।

पेशाब होनेके समय जलन होती है, इसके साथ ही बहुत दर्द होता है। मूत्रपिण्डका प्रदाह, मूत्राशयका प्रदाह, कूथन, पेशाब रुक जाना। मूत्रपिण्डमें पेशाब बिलकुल नहीं बनता। शोथके साथ बहुत थोड़ा पेशाब। पेशाब स्याहीकी तरह होता है अर्थात बहुत गहरा, भूरा और कभी-कभी एकदम काला, अण्डलालसे लदा। ब्राइट रोग (कोरण्ड-घटित मूत्रग्रन्थि-प्रदाह) के नये रूपसे यह दवा सैद्धान्तिक रूपसे बहुत मिलती है।

बहुत अधिक श्वास-कष्ट, तेज़ लघु-श्वास, हृत्पिण्डका स्पन्दन सुदृढ, श्वास-क्रिया वर्द्धित। हृत्पिण्डकी धड़कन समूचे कमरेमें सुन पड़ती है। कलेजा धड़कना, वक्षमें दबाव। रोगीको ऐसा अनुभव होता है, मानो वक्षपर एक भारी भार रखा है। साँस नहीं ले सकता। वक्षोदक रोग (Hydrothorax), फुसफुसावरक-झिल्ली-गह्वर, रक्ताम्बुके कारण तना रहता है, जिससे श्वास-कष्ट होता है। "हृत्पिण्डकी क्रियाकी आवाज़ नहीं आती, अस्पष्ट, बहुत दुर्बल।" डङ्क मारने, फाड़नेकी तरह वक्षकी पेशियोंमें दर्द।

बाहुओंमें पाक्षाघातिक दर्द, अङ्गुलि-सन्धियाँ बढ़ी। इससे भी यह मालूम होता है, कि किस तरह निम्न आकारकी बीमारी, कैसा कमजोर रक्तका दौरान, यह दवा लाती है। "इतनी कमजोरी कि चलनेके समय घुटने

आपसमें लड जाते हैं, समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्द, सन्धियोंका फूलना।" सन्धियाँ सबसे अधिक आक्रान्त होती हैं, मास-पेशिक वात, सुन्नपन, शोथ, अङ्गोंका फूलना।

कोलोसिन्थ।

(Colocynth)

कोलोसिन्थका प्रधान स्वरूप है, उसका तेज़ फाड़नेकी तरह स्नायु-शूलका दर्द, यह दर्द इतना तीव्र होता है, कि रोगी शान्त रह नहीं सकता। कभी-कभी तो यह दर्द हिलने-डोलनेपर घट जाता है—कम से-कम ऐसा मालूम होता है, कि विश्राम कालमें यह बदतर हो जाता है—दबावसे और कभी-कभी तापसे घटता है। चेहरेमें, तलपेटमें, स्नायु पथपर दर्द होता है।

ये दर्द कभी-कभी बडे ही विचित्र कारणोंसे उत्पन्न हो जाते हैं, जैसे क्रोध और असन्तोषसे। इसलिये गर्म मिजाजी, सहजमें नाराज़ हो जानेवाले या चिड़चिडे मनुष्योंको कोलोसिन्थकी शिकायतें हो जाती हैं। क्रोध आनेके बाद माथा, आँखें, मेरुदण्डमें नीचेकी ओर तथा आँतोंमें प्रचण्ड स्नायु-शूल हो जायगा।

अत्यन्त बेचैनी रहनेपर भी दर्दके कारण बहुत कमजोरी रहती है। तेज़ शूलके दर्दके साथ संग्रहणीकी बीमारी रहनेवाले रोगी कभी-कभी इतने कमजोर हो जायँगे, कि वह मुश्किलसे बोल सकेगा। एक मूर्च्छाका भाव या यहाँतक कि मूर्च्छातक आ जाती है, दर्दका कोई गैरमामूली लक्षण नहीं है, स्नायु-पथमें पीसनेकी तरह होती है और कितने ही रोगियोंको सुन्नपन, काटा बिंधनेकी तरह दर्द और इस तरहका सिहरावन-सा होने लगता है, मानो रोगवाली जगहपर चीटी रेंग रही है।

गृध्रसी-वात (Scitica) के लिये तो कितने ही चिकित्सक इसका बंधी दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं और सिर्फ जब इससे फायदा नहीं होता, तभी ये रोगीका लक्षण ग्रहण करते हैं, कि दूसरी निर्देशित दवा चुन सकें, ऐसी चिकित्साके लिये कोई भी बहाना नहीं है। जहाँ जोरसे दबानेपर

और तापसे दर्दमें फायदा मालूम होता है, जहाँ विश्राम-कालमें बदतर हो जाता है और रोगीको निराश बना देता है, वहाँ साधारणत. कोलोसिन्थ आरोग्य कर देता है, पर सभी रोगियोंके लिये यह निर्देशित नहीं रहता। कितने ही दवाएँ पेशी और कण्डराएँ पसन्द करती है, कितनी ही हड्डियोंको, अस्थि-आवरणको और अन्य दवाएँ बडे-बडे स्नायु-पथोंको अपने लक्षण प्रदर्शन करनेके लिये चुनती हैं। नियमानुसार कोलोसिन्थका दर्द, बडे स्नायुओंमें ही प्रकट होता है।

मानसिक लक्षण बहुत आश्चर्यप्रद नहीं है। ज्योंही कोलोसिन्थके परीक्षकको स्नायु-पथोंमें दर्द होना आरम्भ होता है, वह चिडचिडा हो उठता है, सभी चीजें उसे तङ्ग करती हैं, वह विरक्तिसे बदतर हो जाता है।

दर्दसे चीखता है, कमरेमें इधर-उधर टहलता है और ज्यों-ज्यों दर्द बढता जाता है, उसकी घबडाहट बढती जाती है, बात करने या जवाब देने या दोस्तोंसे मिलनेकी इच्छा नहीं होती।

उसके दोस्त उसे चिढा देते हैं और वह अकेला रहना चाहता है।

इन भयङ्कर दर्दों को सहनेके सिवा और कोई चारा नहीं रहता।

दर्दके साथ बारम्बार वमन और अतिसार होता है, खासकर अगर दर्द तलपेटमें रहता है।

आवेशके रूपमें उदर-शूल होता है, जो बढता जाता है।

रोगीको बहुत मिचली होती है और अन्तमें वमन हो जाता है और पाकाशय खाली हो जाने बाद भी उसे ओकाई आती रहती है।

कोलोसिन्थ स्नायुमण्डलमें उस व्यक्तिकी तरह एक दशा उत्पन्न करता है, जो बरसोंतक रञ्ज और दिक्कतोंमें जीवन बिताते रहे हैं। एक आदमी जिसका कारबार गडबडा जाता है, वह चिडचिडा और स्नायविक तथा क्लान्त हो पडता है। कोई स्त्री अपने अप्रेमी पतिको दिन-रात अन्य स्त्रीके फेरमें पडा देखती-देखती चिडचिडी हो जाती है और जरा भी उत्तेजना मिलनेपर गडबडा जाती है। यह कोलोसिन्थकी परीक्षककी अवस्था है।

एकाएक बीमारी हो जानेवाले सुदृढ, बलशाली, स्वस्थ पुरुषोंकी बीमारीमें शायद ही कभी यह दवा निर्देशित होती है। यह ऊपर बताये धातुमें ज्यादा ठीक बठती है या जिन्हें ज्यादा खा लेनेका अभ्यास रहता है।

क्रोधसे पैदा हुआ माथेकी त्वचामें फाड़नेकी तरह दर्द दिखाई देता है, क्लान्तिसे, दबाव और तापसे अच्छा होनेवाला दर्द तथा शान्त चुपचाप रहनेपर बदतर होनेवाली वेदना ।

माथेमें लगातार चबानेकी तरह दर्द ।

सम्पूर्ण मस्तिष्कमें कष्टदायक, फाड़ने तथा खोदनेकी तरह दर्द, पलके हिलानेपर असह्य हो जाता है ।

समूचे माथेमें तेज़ दर्द, आँखे हिलानेपर बदतर हो जाता है ।

बहुत ही तीव्र, दबाने, फाड़नेकी तरह सर-दर्द, जिससे रोगिनी चिल्ला उठती है ।

वात, गठिया या स्नायविक धातुवालोंका रह-रहकर होनेवाला सर-दर्द ।

एक साथ ही फाड़ने और पेंच घुमानेकी तरह दर्द ।

सामयिक या छूट-छूटकर होनेवाला सर-दर्द ।

पाठ्य पुस्तकमें कुछ ऐसी ही बातें लिखी हैं, पर दर्दकी प्रकृति उतनी महत् नहीं है, जितनी कि वह परिस्थिति जिसमें दर्द होता है और वह दशा जिसमें रोगी रहता है, रोगीका जीवन-वृत्तान्त स्वय रोगीका बहुत काम करा देता है।

बड़ो प्रचण्ड स्नायुशूल जो आँखोंमें होता है ।

वातज चक्षु-उपतारकाका प्रदाह (Iritis), जो रातमें तथा शामको बदतर हो जाता है ।

आँखोंमें जलन, काटने और चपक जानेकी तरह तेज़ दर्द ।

सर और चेहरेके अन्य भागोंकी अपेक्षा आँखके दर्दका जलन एक विशेष चरित्रगत लक्षण है ।

तेज़ छुरी मारनेकी तरह दर्द । दबावका दर्द ।

चेहरेका दर्द खासकर महत्व-पूर्ण है, क्योंकि कोलोसिन्थ इस प्रदेशमें स्नायु-शूलके लिये बहुतकर प्रयुक्त होता है, चेहरेके स्नायु-शूलमें दूसरोंकी अपेक्षा ज्यादाकर तीन दवाओंका प्रयोग होता है—**बेलेडोना, मैग्नेशिया-फास्फोरिका** और कोलोसिन्थ ।

बेलेडोनाका दर्द इतना प्रचण्ड होता है कि उसके साथ ही उसका चेहरा लाल होता है, आँखे चमकती हैं, सर गर्म रहता है और उस अंशको छूनेपर स्पर्श सहन नहीं होता ।

कोलोसिन्थका दर्द लहरोंमें आता है, तापसे, दबावसे अच्छा रहता है और आराम करनेके समय बदतर हो जाता है तथा उत्तेजना और विरक्तिसे उत्पन्न होता है। यह दर्द अमूमन बायीं तरफ होता है, पर **बेलेडोना**का दाहिनी तरफ होता है और ठण्डसे उत्पन्न होता है।

मैग्नेशिया फास्फोरिकाका दर्द फाड़नेकी तरह तथा स्नायुओंमें बिजलीके झटकेकी तरह लगता है तथा ताप और दबावसे घट जाता है।

कोलोसिन्थके चेहरेका भाव चिन्ता, घबड़ाहट-भरा, तकलीफकी तेजीके कारण रहता है। दर्द कहीं भी हो, चेहरा बदरङ्ग हो जाता है, अन्तमें यह पीला हो जाता है और गाल नीले हो जाते हैं।

गालकी हड्डीमें फाड़नेकी तरह दर्द या और भी ठीक कहा जाये, तो चक्षु-गह्वरके नीचेवाले स्नायु, जहाँ कि वह छिद्रसे निकलता है, वहाँपर होता है। कभी-कभी यह दर्द गर्म तारकी तरह मालूम होता है, कभी ठण्डी काटीकी तरह और कभी-कभी यह फाड़ने, जलन करने अथवा डङ्क मारनेकी तरह होता है। बहुत बार यह चेहरेपर फैल जाता है, जिससे कि स्नायुओंकी छोटी-छोटी शाखाओंमें सुरसुरी होती हैं, अमूमन यह बायीं ओर होता है। रोगी चिल्लाता है और बहुत ही तेज़ बेचैन रहता है।

सर और कानतक फैल जानेवाला फाड़ने और जलन करनेकी तरह दर्द।

सभी दर्द दबानेपर अच्छे रहते हैं, पर यह आरम्भमें होता है। बहुत तेजीसे कई दिनोंतक दर्द होते रहनेपर, वह जगह अत्यन्त स्पर्श-असहिष्णु हो जाती है और फिर दबाव सहन नहीं होता।

खाद्यसे घृणा।

तीव्र पीपासा।

खूब गरमाये रहनेपर पानी पी लेनेके कारण शूलका दर्द या अनपचकी चीजें खानेपर, ऊँचे ढङ्गसे रहनेपर, आलू खानेपर शूलका दर्द।

कोलोसिन्थके रोगीको **ऐल्यूमिना**के रोगीको भाँति आलू तथा स्टार्चवाले पदार्थ सहन नहीं [illegible]

कितनी ही [illegible] अपेक्षा [illegible] वमन कुछ दूसरे ही प्रकारका होता [illegible] जब दर्द बहुत ही तेज़ हो जाता है, तो [illegible] में जो

कुछ रहता है, निकल जाता है और रोगीको तबतक ओकाई आती रहती है, जबतक बीमारोको तेजो बनो रहती है।

पाकाशयका दर्द, कसकर पकड़ रखने, मरोड़ या खोदनेकी तरह होता है, मानो अंगुलियोंसे कसकर पकड़ रखा है।

इसी ढङ्गका दर्द तलपेटमें भी होता है, पर वे अब भी जोरसे दबानेपर अच्छे रहते हैं और दुहरा जानेपर—जिसका मतलब दबाव है—इसका दौरा बढ़ते हुए तेज़ आवेशोंमें होता है यहाँतक कि मिचली और वमन होने लगते हैं, इसके साथ ही बहुत बेचैनी और मूर्च्छा रहती है। पाकाशय-गह्वरमें धँसनेकी अनुभूति रहती है। रोगी कुर्सीकी पीठपर झुक जाता है या फुट-बोर्डपर, यदि पलङ्गसे निकलनेकी ताकत नहीं रहती।

गाइडिङ्ग सिम्टम्स नामक ग्रन्थमें कई पृष्ठ इस विषयके दुहराये गये हैं, जिनसे मालूम होता है, कि जहाँ ये लक्षण मौजूद रहते हैं, वहाँ यह कितनी उपयोगिनी होती है। उन्हें पढ़ना लाभदायक होगा।

तलपेटके निचले भागके दर्द अङ्गोंको ऊपर खींचने तथा मुट्ठीसे दबानेपर अच्छे रहते हैं। कोलोसिन्थ डिम्बाशयके भयङ्कर स्नायु-शूलमें लाभदायक है। रोगिनी दर्दवाले पार्श्वके अङ्ग तलपेटपर सिकोड़ लेगी और वही रखे रहेगी।

चिकित्सक पूछता है—"यह दर्द होनेकी वजह क्या है?" सम्भवत उसका उत्तर होगा—"मेरे नौकरने खूबसूरत कम्बलपर गन्दा पानी डाल दिया, इसीपर कुछ बकना पड़ा और उसीका यह नतीजा है।"

अवज्ञा-मिश्रित क्रोधके साथ शूलका दर्द, सामनेकी ओर दुहराकर झुक जानेपर अच्छा और खड़े होनेपर या पीछे झुकनेके समय तन जानेपर बदतर हो जाना।

अतिसार और आमाशयमें भी ये ही लक्षण रहते हैं। मलके साथ सफ़ेद श्लेष्मा रहता है, गाढ़ा, खूनकी तरह और चागनीकी तरह रहता है, कभी-कभी खून मिला भी रहता है। पहले यह बहुत ज्यादा हो सकता है, तेज़ गन्ध रह सकती है, थक्का-थक्का हो सकता है, पर पीछे यह पानीकी तरह, पीला, थोड़ा और करीब-करीब गन्ध-हीन हो जाता है।

विरक्ति-मिश्रित क्रोधसे अतिसार और आमाशय, पाखानेके समय बहुत भीषण कूथन, शूलके साथ पाखाना लग आना।

यहाँतक कि बहुत थोड़ा खानेपर भी उसे शूलका दर्द होता है, पाखाना लगता है और पतले दस्त आरम्भ हो जाते हैं। खानेके बाद पतले पानीकी तरह दस्त।

इन रोगियोंमेंसे बहुतोंको ताप और बिछावनकी गर्मीसे आराम मिलता है।

कोनियम मेकुलेटम।

(Conium Maculatum)

यह एक गहरी, दीर्घ क्रियाशील सोरा-नाशक औषधि है तथा स्वास्थ्य-विधानमें एक ऐसी गड़बड़ी स्थापित कर देती है, जो पहुँचसे बहुत दूर रहती है और इतने दिनोंतक स्थायी रहती है कि शरीरके करीब-करीब सभी मांस तन्तुओंको विचलित कर डालती है। इसकी बीमारियाँ सर्दी लगनेपर होती हैं, सम्पूर्ण शरीरकी ग्रन्थियाँ आक्रान्त हो जाती हैं। जखमवाले प्रदेशमें और प्रादाहित अंगोंवाले प्रदेशकी बद्धमूल बीमारियों में भीतरी रस-स्राव, लसिका-पथकी ग्रन्थियों में भीतरी रस-स्राव, इसलिये, हमें गाँठों को एक लड़ी प्राप्त होती है। बगलकी गाँठ प्रादाहित हो जाती हैं, और जखम हो जाता है। गर्दनकी, वंक्षणकी और उदरकी गाँठें बड़ी हो जाती हैं जखमवाली जगह कड़ी पड़ जाती है। वक्षके घावके चारों ओर ढेले और गाँठें हो जाती हैं। दूध न उत्पन्न होनेवाले स्तनमें भी गाँठें, ढेले और गाँठें, कड़ापन तथा बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ समूचे शरीरमें चर्मके नीचे बन जाती हैं। ग्रन्थियोंके साघातिक रोगों में कोनायमका बहुत अधिक व्यवहार हुआ है, क्यों कि यह आरम्भसे ही गाँठों को पकड़ता है और भीतरी रस-स्राव करता है। इसके बाद वे धीरे-धीरे गूमड़की तरह पत्थर-जैसी कड़ी हो जाती हैं। अब दूसरा इस दवाका वृहत् स्वरूप है, इसकी स्नायुओंपर होनेवाली क्रिया। स्नायु सब अत्यन्त दुर्बलताकी दशामें रहते हैं। कम्पन, पेशियों में झटका तथा स्नायुओंकी कमजोरीके कारण ऐंठन। बिना बहुत क्लान्त हुए कोई भी शारीरिक श्रमका काम नहीं होता। धीरे धीरे पक्षाघातिक दुर्बलता आती जाती है, जैसा कि

काकुलसमें बताया गया था। मन तथा शरीरकी क्लान्ति अर्थात शरीरकी कार्य-शक्तिका धीरे-धीरे कम पड़ते जाना। यकृत कड़ा पड़ जाता है, शिथिल हो जाता है, बढ़ जाता है। मूत्राशय कमजोर रहता है। पेशाबका केवल एक ही अंश निकाल सकता है या कभी-कभी तो एकदम पाक्षाघातिक अवस्था रहती है और उसमें निकालनेकी शक्ति नहीं रहती। इससे प्रकट होता है, कि दवा पाक्षाघातिक दुर्बलताकी ओर ले जाती है।

हिस्टीरिया। मनकी व्याधि-शङ्कापूर्ण अवस्था, साथ ही स्नायविकता, कम्पन तथा पेशियोंकी कमजोरी। आरम्भिक अवस्थामें ही वह थक जाता है, पर अन्तमें यह तबतक जारी रहता है, जबतक कि प्रत्यङ्ग पक्षाघात-ग्रस्त नहीं रहते।

बहुत-सी बीमारियाँ दर्द-रहित रहती हैं। जखम तथा पाक्षाघातिक दशाएँ भी दर्द-रहित ही होती हैं। बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक दुर्बलता, मांस-पेशिक सस्थानकी बहुत सुस्ती, क्लान्ति, कम्पनशील दुर्बलता, पैर तथा कूल्हेकी कमजोरी। मानसिक लक्षण, स्नायविक लक्षण, कम्पन,—विधुर तथा उन विधवाओंमें जिनका रति सम्बन्ध एकाएक विच्छिन्न हो पड़ा है। भरपूर ताकत रहनेपर, यदि किसी पुरुष या स्त्रीकी वासना पूरी नहीं होती तो उसमें कम्पनशील दुर्बलता उत्पन्न हो जाती है। वह कोई मानसिक काम सहन नहीं कर सकता तथा दूसरोंकी कही बातोंपर ध्यान नहीं रख सकता। यह मनुष्योंकी तरह इतना ज्यादा स्त्रियोंमें न तो प्रत्यक्ष होता है और साधारणत होता भी नहीं है। जब किसी असाधारण बल-शालिनी स्त्रीमें यह दशा उत्पन्न होती है, तो उसके जरायु और डिम्बाशयमें बहुत तेज़ रक्त-सञ्चय हो सकता है। इस नशामें कोनायमकी अपेक्षा **एपिस** उसके लक्षणोंके अनुकूल बैठ सकता है, पर हिस्टीरिया और उत्तेजना-शीलताकी अकसर कोनायम ही दवा होती है। इसके बहुत-से लक्षण ऐसे ही कारणसे उत्पन्न होते हैं।

कोनायमकी इतनी गहरी क्रिया होती है, कि यह धीरे-धीरे मानसिक शक्ति-हीनताकी अवस्था उत्पन्न कर देती है। मन विचलित हो जाता है, शरीरके पेशियोंकी भाँति ही मन पहले क्लान्त हो जाता है, कोई भी मानसिक श्रम सहन नहीं कर सकता, याददाश्त कमज़ोर रहती है। मन एकाग्र नहीं होता, ध्यान नहीं लग सकता, वह चिन्तन नहीं कर सकता और उसके बाद

यहाँतक कि बहुत थोड़ा खानेपर भी उसे शूलका दर्द होता है, पाखाना लगता है और पतले दस्त आरम्भ हो जाते हैं। खानेके बाद पतले पानीकी तरह दस्त।

इन रोगियोंमेंसे बहुतोंको ताप और बिछावनकी गर्मीसे आराम मिलता है।

कोनियम मेकुलेटम।

(Conium Maculatum)

यह एक गहरी, दीर्घ क्रियाशील सोरा-नाशक औषधि है तथा स्वास्थ्य-विधानमें एक ऐसी गड़बड़ी स्थापित कर देती है, जो पहुँचसे बहुत दूर रहती है और इतने दिनोंतक स्थायी रहती है कि शरीरके करीब-करीब सभी मांस तन्तुओंको विचलित कर डालती है। इसकी बीमारियाँ सर्दी लगनेपर होती है, सम्पूर्ण शरीरकी ग्रन्थियाँ आक्रान्त हो जाती हैं। जखमवाले प्रदेशमें और प्रादाहित अङ्गोंवाले प्रदेशकी बद्धमूल बीमारियोंमें भीतरी रस-स्राव, लसिका-पथकी ग्रन्थियोंमें भीतरी रस-स्राव, इसलिये, हमें गाँठोंको एक लड़ी प्राप्त होती है। बगलकी गाँठ प्रादाहित हो जाती हैं, और जखम हो जाता है। गर्दनकी, वंक्षणकी और उदरकी गाँठें बड़ी हो जाती हैं जखमवाली जगह कड़ी पड़ जाती है। वक्षके घावके चारों ओर ढेले और गाँठें हो जाती हैं। दूध न उत्पन्न होनेवाले स्तनमें भी गाँठें, ढेले और गाँठें, कड़ापन तथा बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ समूचे शरीरमें चर्मके नीचे बन जाती हैं। ग्रन्थियोंके साघातिक रोगोंमें कोनायमका बहुत अधिक व्यवहार हुआ है, क्योंकि यह आरम्भसे ही गाँठोंको पकड़ता है और भीतरी रस-स्राव करता है। इसके बाद वे धीरे-धीरे गूमड़की तरह पत्थर-जैसी कड़ी हो जाती हैं। अब दूसरा इस दवाका वृहत् स्वरूप है, इसकी स्नायुओंपर होनेवाली क्रिया। स्नायु सब अत्यन्त दुर्बलताकी दशामें रहते हैं। कम्पन, पेशियोंमें झटका तथा स्नायुओंकी कमजोरीके कारण ऐंठन। बिना बहुत क्लान्त हुए कोई भी शारीरिक श्रमका काम नहीं होता। धीरे धीरे पाचाघातिक दुर्बलता आती जाती है, जैसा कि

प्रत्येक पदार्थ उसे तङ्ग और विचलित कर डालते है। किसी प्रकारकी भी उत्तेजना सहन नही कर सकता, इससे मानसिक और शारीरिक कष्ट उत्पन्न हो जाते हैं, कमजोरी और उदासी आ जाती है, कभी-कभो शोक सहन करनेवाले मनुष्यमें भो कोनियमके लक्षण उत्पन्न हो जाते है, उनकी याददाश्त नष्ट हो जाती है। यह पहले हो सकता है, वे भूल जाते है, याद करते ही कोई बात उन्हें याद नही आ जाती, इस तरह वे कमजोर-से-कमजोर होते जाते हैं, यहांतक कि उनमें चित्त-विभ्रम उत्पन्न हो जाता है। यदि यह निश्चित रूपसे मानसिक रहता है, तो चित्त-विभ्रम ही उसका परिणाम होता है, यदि यह शरीरकी ओर बढता है तो पक्षाघात हो जाता है और सार्वाङ्गिक पाक्षाघातिक दुर्बलताका आ जाना, कोई असाधारण बात नही है। इस तरह शरीर और मन एक साथ ही तबतक दुर्बलताकी ओर अग्रसर होते हैं, जबतक कोई निश्चित प्रदर्शन नही निकल पडता, जो उसे चित्त विभ्रमकी ओर भेज देता है और इस अवस्थामें शरीर जैसा-का-तैसा बना रहता है। ऐसे रोगियोंमें एक समय ऐसा आता है, जब शरीर और मनमें एक प्रभेद उत्पन्न हो जाता है। जब कभी होमियोपैथिक चिकित्साके समय शरीर तो उन्नत होता है, पर मानसिक अवस्था बदतर होती जाती है, तो समझना चाहिये, कि वह रोगी कभी आरोग्य न होगा। ऐसे भी रोगी होते है। मैं कभी शरीर सुधरते और मन किसी दर्जेमें भी बिगडते नही देखना चाहता। मानसिक उन्नतिसे बढकर दवाका लाभ करनेका और कोई दूसरा प्रमाण नही है।

जरा भी अल्कोहल मिला पेय कोनियमका रोगी सहन नही कर सकता। कोई शराब या ताकत देनेवाले पेय उसमें कम्पन, उत्तेजना, मनकी दुर्बलता और सुस्ती उत्पन्न कर देगा। ऐसे रोगियोंको बहुत तरहका सर-दर्द होता है। स्वास्थ्य नष्ट होते जानेवाले रोगियोंको सर दर्द होता है, बेधने, फाडनेकी तरह माथेका दर्द, माथेमें धमक, मस्तिष्ककी गडबडी होनेका पूर्व चिन्ह। स्नायु-शूल।

पेशियोंको कमजोरी, चेहरेके एक पार्श्वकी पेशियोंकी कमजोरी। ऊपरी पलकोंका पक्षाघात। टनकाका दर्द, यह सब सार्वाङ्गिक स्वास्थ्यभङ्गका चिन्ह है। उन आकस्मिक मस्तिष्कके प्रचण्ड रक्त-सञ्चयके लिये हम कभी कोनियम देनेके विषयमें न सोचेंगे या माथा, चेहरा अथवा आंखोंके प्रचण्ड दर्दके

मानसिक दुर्बलता उत्पन्न हो जाती है। कोई भी मानसिक परिश्रम सहन करनेकी शक्तिका न रहना या किसी चीज़पर मन नहीं लगा सकना इस दवाके कुछ महत्वपूर्ण लक्षण हैं। सामयिक रोगोंका उन्माद, यद्यपि उन्मादकी अपेक्षा चित्त-विभ्रम शब्द ही विशेष उपयुक्त होता है। जब आप मानसिक दशाकी परीक्षा करने आयेंगे तो आपको ऐसे लक्षण दिखाई पड़ेंगे, जिन्हें देखकर आप सोचने लगेंगे, कि रोगी तो प्रलाप-ग्रस्त है, पर बात ऐसी नहीं है, यह मनकी धीरे-धीरे बढ़नेवाली दुर्बलता है। तेज़, अति-क्रिय अवस्था नहीं, जैसी कि ज्वरके साथ रहती है, यह बिना बोखारका ही प्रलाप है, ऐसा ही कहा जाता है, यह लगातार नहीं होता। धीमी गतिसे होनेवाले उन्मादका रूप। वह धीमी गतिसे सोचता है और वह कई सप्ताह तथा कई महीनोंतक इसी अवस्थामें रहता है, यदि वह आराम भी होता है। वे उत्तेजना-प्रवण रोगी, जिनमें कुछ-न-कुछ प्रचण्डता तथा मानसिक दशाकी क्रियाशीलता रहती है, जिनसे **बेल, हायोस, स्ट्रैम** और **आर्स**का कुछ-न-कुछ सादृश्य रहता है, पर इस दवामें ऐसा कुछ नहीं दिखाई देता। यह मानसिक दशा इस तरह धीमी गतिसे क्रमशः आती है, कि परिवारवालोंको कुछ पता ही नहीं लगता। थोड़ी-थोड़ी आनेवाली अद्भुत चीजोंसे उसका दिमाग भरा रहता है, जब परिवारवाले उसके किये बहुतसे कामोंको देखते है, तो उन्हें आश्चर्य होने लगता है, कि यह पागल तो नहीं हो रहा है परन्तु वह चित्त-विभ्रमकी अवस्थाकी ओर अग्रसर हो रहा है। कोनायम एक धीमी, शिथिल प्रकृतिका होता है, सम्पूर्ण उदासीनता, किसी काममें मन नहीं लगता, खासकर जब खुली हवामें घूमता है। "वह लोगोंके पास रहना या जो उसके पाससे गुजरते हैं, उनसे बात नहीं करना चाहता, उसे पकड़ रखने और उन्हें गाली देनेकी इच्छा होती है।" यह वास्तवमें एक पागलपनका काम है। "उदास और शोकाच्छन्न, मनका बहुत अधिक असुख, यह प्रत्येक चौदहवें दिन निकलता है।" जिससे दो सप्ताहकी सामयिकता प्रकट होती है। कोनायमका रोगी एक कोनेमें बैठ जायगा और उदासी तथा सुस्तीकी अवस्थामें झीखता रहेगा, पर वह इसका कोई कारण न बतायगा कि क्यों उदास है, एक व्याधि-शङ्काग्रस्त रोगी, जो अपने भाव और वहमोंमें घूमा करते है, लोग उसे तङ्ग करनेके लिये तर्क करते हैं और जितना ही कारण जाननेके लिये तर्क करते हैं, उतना ही वह उदास होता जाता है। विषाद-ग्रस्त, चिड़चिड़ा, विरक्त।

धब्ब, द्वित्व दृष्टि, दृष्टि शक्तिकी दुर्बलता लघु दृष्टि अर्थात् दूरकी चीज़ न दिखायी देना, अक्षरोंक आवरणमें छुड़े बिना देरतक पढ़ नहीं सकता।" यह सब दोषावह अयथास्थान कौशलके परिणाम हैं। "दृष्टिकी विभिन्न श्रेणियोंपर धीमी गतिसे दृष्टि स्थापन।" जब यह चिड़चिड़ा हुआ रहता है, तो दृष्टि शक्ति मद-सी रहती है। आँखोंमें चकाचौंध और कमजोरी, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना। **आँखोंकी प्रदाहके बिना ही रोशनीसे घृणा।** तेज़ रोशनी तथा धुँधली रोशनीके परिवर्त्तनपर आँखकी पुतली नहीं जमती और दूसरे उसे तकलीफ़ होती है। तीव्र आलोकातङ्क और आँसू बहना। इसमें आँखके गोलेके बाहर या भीतरवाले किसी भी तन्तुमें रक्त-सञ्चय हुए बिना ही आलोकातङ्क। कभी पुतलियाँ सिकुड़ी और कभी फैली रहती हैं। कोनायमने कनीनिकाका जखम आरोग्य कर दिया है। पढ़नेके समय आँखोंमें जलन, आँखमें धक्का देने, चिलक मारने, काटने और जलनकी तरह दर्द। पलकें कड़ी पड़ जाती हैं, मोटी हो जाती हैं, भारी रहती हैं और गिरती हैं। मुश्किलसे पलकें उठायी जा सकती हैं। इस तरह यह पक्षाघात शरीरकी सभी पेशियोंमें फैल जाता है और ठीक इसी तरह मनपर प्रभाव डालता है। "शायद ही कभी पलक उठा सकता है, मानो वे किसी भारसे दबी मालूम होती हैं, सम्पूर्ण पलक-पटलपर जलन, अञ्जनी, आँखकी पेशियोंका पक्षाघात।" इसकी एक प्रत्यक्ष दशा है, चेहरेकी, कानोंकी और जबड़ेके भीतरकी गांठोंका फूलना। कर्णमूल-ग्रन्थि फूलती है और कड़ी पड़ जाती है। यही धीरे-धीरे बढ़कर हनु-निम्नस्थ ग्रन्थि (Sub-maxillary) और जिह्वाधोवर्त्तिनी (Sub-lingual) ग्रन्थियोंमें भी हो जाता है। कर्कटीया रोगोंमें गालके एक पार्श्वकी ग्रन्थियोंका फूलना। इसने पलकोंका, नाकका और गालका कोषार्बुद (Epithelioma) आरोग्य कर दिया है। कड़ापनके साथ ओठोंका जखम, जखमके भीतर, गहराईपर कड़ापन रहेगा और उस जखममें लसिका पहुँचानेवाली नसोंकी राहमें गांठोंकी एक लड़ी-सी बन जाती है।

आंशिक पक्षाघात फैलकर कण्ठनलीका पक्षाघात हो जाता है, निगलनेमें तकलीफ़ होती है, आधी राहतक खाद्य जाकर रुक जाता है। कण्ठमें एक तरहका विचित्र चढ़ने-सा अनुभव होना, रुक जानेका भाव, मानो कोई चीज़ वहाँ अड़ी हुई है। निगलनेकी अनैच्छिक चेष्टाके साथ कण्ठमें एक ढेला रहनेकी तरह भरापन। कण्ठनलीमें इस तरहका दबाव, मानो कोई

आक्रमणपर कभी कोनियम न देंगे, बल्कि सार्वाङ्गिक वर्द्धनशील बीमारियोंके लिये। चेहरा, आँखें और माथेके स्नायु-पथपर सुई गडने, छेदने या छुरी मारनेकी तरह दर्द होता है। माथेके शिखरदेशमें सुई गडनेकी तरह दर्द, अकसर ये लक्षण होमियोपैथिक चिकित्सकको शारीरिक परीक्षाकी ओर परिचालित करेंगे। शारीरिक परीक्षासे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं, वे लक्षण जो इस दवाको निर्देश करते हैं।

उत्तेजनासे सर-दर्द हो जायगा। कोनियमका साधारण लक्षण है, खोपडीकी त्वचाका सुन्नपन, यह एक सार्वाङ्गिक लक्षण है, जहाँ कहीं बीमारी होगी, वही सुन्नपन, दर्दके साथ सुन्नपन, कमजोरीके साथ बहुत ज्यादा सुन्नपन, सुन्नपनके साथ पाक्षाघातिक दशा रहती है। पेशाब करनेके योग्य न रहनेके साथ वमन, सर-दर्द, बहुत ज्यादा सरमें चक्कर। कमरेकी सारी चीजें चक्कर खाती मालूम होती हैं, माथेमें विभ्रमका भाव। अकसर विचारोंमें भूला पडा रहता है। अपरिवर्त्तित नाडीके साथ सरमें चक्कर और दबाव। झुकनेसे सरमें चक्करका बदतर हो जाना। थाडे भी नशीले पेयसे उसे नशा आ जाता है। सर घुमानेके समय सरमें चक्कर, मानो चक्कर खा रहा है, अपनी जगहसे उठनेके समय, गिर पडनेके समय बदतर, **मानो पलङ्ग चक्कर खा रहा है, पलङ्गपर करवट बदलनेके** समय या चारों तरफ देखनेके समय। कोनायममें होनेवाला सरका चक्कर तो अमूमन इस ढङ्गका होता है, कि **बिछावनपर पड़े-पडे करवट बदलने या आँखें घुमानेपर होने लगता है।** यह बहुत कुछ **काकुलस**की भाँति है, केवल सरमें चक्कर ही नहीं, बल्कि पेशियोंकी सार्वाङ्गिक शिथिलता, आंशिक पक्षाघात या समूचे शरीरकी पेशियोंकी दुर्बलता, आँखोंमें भी रहती है, आँखकी सभी पेशियोंकी मासपेशिक दुर्बलता रहती है, जिससे कि गतिशील पदार्थोंको बिना सवमन सर-दर्द हुए अथवा दृष्टिकी मानसिक गडबडी बिना कोनियमका रोगी देख नहीं सकता। गाडीपर सवारी करना, तीव्र गतिशील पदार्थोंको देखना, तेजीसे दृष्टि जमाना—इसे दृष्टि-स्थिरताका धीमापन कहा जा सकता है। यह बहुत-सी बीमारियोंके कारण हो सकता है। काफी तेजीसे गतिशील पदार्थोंका पीछा करनेकी शक्तिका न रहना और एक सर-दर्द पैदा हो जाता है। "चीजें लाल, इन्द्रधनुषके रङ्गकी या धारीदार दिखाई देती हैं। गडबड़ाये

धव्व, दिल-दृष्टि, दृष्टि शक्तिकी दुर्बलता, लघु दृष्टि अर्थात् दूरकी चीज़ न दिखायी देना, अक्षरोंके आपसमें जुड़े बिना देरतक पढ़ नहीं सकता।" यह सब दोषावह अवस्थान कौशलके परिणाम हैं। "दृष्टिकी विभिन्न श्रेणियोंपर धीमी गतिसे दृष्टि-स्थापन।" जब यह चिड़चिड़ा हुआ रहता है, तो दृष्टि शक्ति रद्द-सी रहती है। आंखोंमें चकाचौंध और कमजोरी, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना। **आँखोंमें प्रदाहसे बिना ही रोशनीसे घृणा।** तेज़ रोशनी तथा धुँधली रोशनीके परिवर्त्तनपर आंखकी पुतली नहीं जमती और दूसरे उसे तकलीफ़ होती है। तीव्र आलोकातङ्क और आंसू बहना। इससे आंखके गोलेके बाहर या भीतरवाले किसी भी तन्तुमें रक्त-सञ्चय हुए बिना ही आलोकातङ्क। कभी पुतलियाँ सिकुड़ी और कभी फैली रहती हैं। कोनायमने कनीनिकाका जखम आरोग्य कर दिया है। पढ़नेके समय आंखोंमें जलन, आंखमें धक्का देने, चिलक मारने, काटने और जलनकी तरह दर्द। पलकें कड़ी पड़ जाती हैं, मोटी हो जाती हैं, भारी रहती हैं और गिरती हैं। मुश्किलसे पलकें उठायी जा सकती हैं। इस तरह यह पक्षाघात शरीरको सभी पेशियोंमें फैल जाता है और ठीक इसी तरह मनपर प्रभाव डालता है। "शायद ही कभी पलक उठा सकता है, मानो वे किसी भारसे दबी मालूम होती हैं, सम्पूर्ण पलक-पटलपर जलन, अञ्जनी, आंखकी पेशियोंका पक्षाघात।" इसकी एक प्रत्यक्ष दशा है, चेहरेकी, कानोंकी और जबड़ेके भीतरकी गाठोंका फलना। कर्णमूल-ग्रन्थि फूलती है और कड़ी पड़ जाती है। यही धीरे-धीरे बढ़कर हनु-निम्नस्थ ग्रन्थि (Sub-maxillary) और जिह्वाधोवर्त्तिनी (Sub-lingual) ग्रन्थिमें भी हो जाता है। कर्कटीया रोगोंमें गालके एक पार्श्वकी ग्रन्थियोंका फूलना। इसने पलकोंका नाकका और गालका कोषार्बुद (Epithelioma) आरोग्य कर दिया है। कड़ापनके साथ ओठोंका जखम, जखमके भीतर, गहराईपर कड़ापन रहेगा और उस जखममें लसिका पहुँचानेवाली नसोंकी राहमें गांठोंकी एक लड़ी-सी बन जाती है।

आंशिक पक्षाघात फैलकर कण्ठनलीका पक्षाघात हो जाता है, निगलनेमें तकलीफ़ होती है, आधी राहतक खाद्य जाकर रुक जाता है। कण्ठमें एक तरहका विचित्र चढ़ने-सा अनुभव होना, रुक जानेका भाव, मानो कोई चीज़ वहां अड़ी हुई है। निगलनेकी अनैच्छिक चेष्टाके साथ कण्ठमें एक ढेला रहनेकी तरह भरापन। कण्ठनलीमें इस तरहका दबाव मानो कोई

गोल चीज़ पाकाशयसे ऊपर चढती आ रही है। स्नायविक स्त्रियोंमें प्राप्त होनेवाला यह एक स्नायविक रोग है और यही वायु-गोला (Globus hystericus) कहलाता है। जब किसी स्त्रीको ऐसा अनुभव होता है, कि वह रोना चाहती है और वह घूंट लेती तथा श्वास-रोध होता है, तो उस रोगिनोके कण्ठमें ऐसा ही ढेला अनुभव होता है। स्नायविक, भग्न-स्वास्थ्य प्रकृति, जीवनसे ऊबी, भविष्यमें रोग, शोक और पक्षाघात या चित्त-विभ्रम ही देखती है। जब उसको फुर्सतका क्षण मिलता है, तो वह रोती हैं। अपनी वर्द्धित ग्रन्थियाँ और कमजोरीपर उदास हो जाती है और कण्ठमें एक ढेला-सा होता है।

बहुत-सी पाकाशयकी बीमारियाँ रहती हैं, पाकाशयका जखम, पाकाशयका कर्कट रोग। सब लक्षण मिलनेपर पाकाशयकी बीमारियोंकी कोनायम एक बहुत ही उपशामक दवा हो जाती है। कुछ समयके लिये यह कर्कटीया दशा दबा देगी, पर इसके बाद फिर कठिनायी आ जाती है, क्योंकि जब लक्षण काफी तौरसे कोनायम प्रदर्शित होनेवाले अग्रसर हो जाते हैं, तो उस समय फिर आरोग्यकी आशा नहीं रह जाती।

तलपेटका कड़ापन, तलपेटका अत्यधिक अनुभव, चिकोटी काटनेकी तरह दर्द, सुई गड़नेकी तरह दर्द, शूल, काटने-जैसा दर्द, मरोड़का दर्द। तलपेटमें नीचेकी ओर खिंचाव—स्त्रियोंकी—मानो गर्भाशय बाहर निकल पड़ेगा। वृथा ही वेगके साथ काज हो अतिसारकी अपेक्षा अकसर रहता है, कड़ा मल, मलनालीका पक्षाघात। पाखानेके समय काँखनेकी शक्तिका न रहना, मल निकालनेवाले सभी अङ्गोंकी पाक्षाघातिक दुर्बलताके कारण भीतरकी सामग्री बाहर निकाल फेंकनेकी शक्तिका न रहना। स्वाभाविक पाखाना हो जाने बाद भी तलपेटमें स्पन्दन और खालीपन। स्त्री पाखानेके समय इतना काँखती है, कि योनि-पथको राहसे जरायु बाहर निकल पड़ता है। प्रत्येक दस्तके बाद कम्पनशील दुर्बलता और कलेजा धड़कना। पेशाब रुकेगा और फिर जारी होगा। पेशाब निकालनेके लिये काँखता-काँखता थक जाता है और बन्द कर देता है। पेशाबकी धारा रुक जाती है और बिना किसी दबावके ही फिर होने लगता है और एक बार पेशाब करनेमें दो तीन बार ऐसा ही हो जाता है। पेशाब करनेके समय अनियमित मांस-पेशिक क्रिया। "रुक-रुककर पेशाब होना तथा पेशाब हो जाने बाद काटनेकी तरह दर्द, पेशाब रखा रहनेपर गदला हो जाता है।"

पुरुषोंको रमण-शक्तिका दुर्बल पड़ जाना, ध्वजभङ्ग। उसमें प्रचण्ड कामेच्छा रह सकती है, पर इतनेपर भी उसे ध्वजभङ्ग रहता है। "अत्यधिक रमणेच्छा, पर सम्पूर्ण या आंशिक ध्वजभङ्ग। विना स्वप्नके ही वीर्य-स्राव।" दर्द-भरा वीर्य-स्राव और वेदनापूर्ण लिङ्गोद्रेक। शुक्र-यन्त्रमें बहुत यन्त्रणाके साथ श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी अवस्था, इसीलिये जब लिङ्गोद्रेक होता है, तो छुरीसे काटनेकी तरह दर्द होता है, मानो वीर्य कटु हो गया है। विधुर तथा स्त्री-सङ्गमके अभ्यस्त पुरुषोंकी दबी हुई कामेच्छाका दुष्परिणाम। "लिङ्गमें कमजोरी, अपूर्ण लिङ्गोत्थान, बहुत थोड़ी देरतक कड़ापन रहता है, आलिङ्गनके बाद दुर्बलता, अण्डकोषमें सूजन और कड़ापन।" कड़ापन और अण्डकोषकी सूजन धीरे-धीरे होती है। "प्रत्येक भाव-परिवर्त्तनके समय, बिना कामुक विचारके हो या पाखानेके समय मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे स्राव, इसके साथ ही लिङ्गाग्र-चर्ममें खुजली।" इसलिये, हमें उस अंशका बढ़ा हुआ उपदाह, मूत्राशय-ग्रीवा, काम-यन्त्र, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी दुर्बलता और ध्वजभङ्गके साथ, उपदाह प्राप्त होता है। याद रखना चाहिये, कि पुरुषोंका अण्डकोष बढ़ा और कड़ा रहता है, स्त्रियोंका डिम्बकोष और जरायु कड़ा और बढ़ा रहता है। "समयके बहुत पहले और बहुत थोड़ा रज-स्राव होनेपर जरायुमें अकड़न।" गर्भावस्थाकी आरम्भिक अवस्थामें तल-पेटमें यन्त्रणा, बच्चेके हिलने-डोलनेपर दर्द होता है। जरायु-ग्रीवामें जलन डङ्क मारने और फाड़नेकी तरह दर्द। स्तनमें बहुत यन्त्रणा। इस दवामें स्तन-ग्रन्थिका क्षीण होना, साथ ही विवृद्धि और कड़ापन है। ऋतु स्राव रुका हुआ, दर्द-भरा ऋतु-स्राव, टपक, फाड़ने और जलनेकी तरह जरायु और डिम्बकोषमें तथा वस्ति-गह्वरमें दर्द। इसने जरायुका तन्तुमय अर्बुद (Fibroid tumours) आरोग्य कर दिया है। इसने जरायु-ग्रीवाका कर्कट रोग पैदा होना रोक दिया है। स्त्रियोंका सबसे ज्यादा तकलीफ देनेवाला कोई प्रवर्द्धन यदि है, तो कर्कटीया-प्रवर्द्धन (Cancerous growth) है। सभी कर्कटीया रोगोंका रोकना अत्यन्त कष्टदायक है। यह बहुत शीघ्रतासे बढ़ जायगा, पर कोनायम उन दवाओंमेंसे एक है, जो उस प्रदाहको धीमा कर देगी और रक्त-स्रावको रोकेगी। कोनायमने जरायु-ग्रीवामें कड़ापन और भीतरी रस-स्राव उत्पन्न किया है।

श्वासमें कष्ट। प्राय लगातार सूखी खाँसी, पलङ्गपर लेटनेपर ज्यादा हो जाती है। पहले लेटनेके साथ ही खाँसी, बाध्य होकर रोगीको बैठ

जाना और खाँसकर बलगम निकालना पड़ता है, गहरी साँस लेनेपर खाँसी आती है। ऐसा ही कोनायमकी खाँसीका अद्भुत दृश्य है। वक्षमें सुई गड़नेकी तरह भयानक दर्द, वक्षकी दर्द-भरी सूजन। वक्षमें छेदने, फाड़नेकी तरह दर्द।

पीठके दर्दके साथ पीठकी कमजोरी एक बड़ी अद्भुत चीज़ है। शूल वेधनेकी तरह दर्द बताया गया है। "मेरुदण्डमें चोट या कुचल जानेका दुष्परिणाम।" आघातके बाद, खासकर कटि-प्रदेशमें आघातके बाद, निम्न-अङ्गोंमें दर्द तथा शिराओंके भर जानेकी तकलीफ़ हो जाती है। वातज दर्द, निम्न-प्रत्यङ्गोंका पक्षाघात, जखम। **प्रत्यङ्गोंको लटकाये रखनेपर** सभी तकलीफें और दशाएँ अच्छी रहती हैं। कोनायम बहुत-सी अन्य दवाओंसे कुछ भिन्न ही है। कुर्सीपर पैर रख देनेपर दर्द और यन्त्रणाको आराम पहुँचता है या उन्हें बिछावनपर रख देनेपर, पर वातवाले रोगी या पैरके जखमवाले रोगी तथा पैरकी अन्य विचित्र बीमारियोंवाले रोगी लेट जायँगे और पलङ्गपर घुटनेतक अपना पैर लटकाये रखेंगे। यह एक ऐसी चीज़ है, जिसपर कुछ मनुष्य ध्यान दे सकते हैं। इसीलिये हमें कम-से-कम एक ऐसी चीज़प्राप्त होती है, जिसपर निदान-शास्त्रके अनुसार हम नुस्खा लिख सकते हैं, पर अबतक इसका कोई कारण हमें नहीं प्राप्त हुआ। मध्य उम्रके मनुष्योंका पैर डगमगाना,

इस दवाका दूसरा बृहत् स्वरूप है—नींदमें बहुत ज्यादा पसीना होता है। कभी-कभी तो रोगी कहेगा, कि आँख बन्द करते ही उसे पसीना होने लगता है। इसमें तो कोई भी सन्देह नहीं कि नीद आनेके पहले आँख बन्द करते ही रोगीको पसीना होने लगता है। इस वजहसे कि कोनायम बहुत स्पष्ट कड़ापन और भीतरी रस-स्राव प्रादाहित मास तन्तुओंमें उत्पन्न करता है। जहाँ प्रदाह रहता है, वहा सकोर्णता उत्पन्न हो जा सकती है। मूत्रनलीकी सङ्कीर्णता—सकरा पड जाना और जरायु-मुखकी सकीर्णता कोनायमसे आरोग्य की गयी है।

क्रोटेलस होरिडस।

(Crotalus-Horridus—Rattle snake)

सबसे पहला खयाल तो यह होगा, कि क्रोटेलस, लैकेसिस, एपिस तथा अन्य जैव-विषोंका त्याग कर देना चाहिये और यह सत्य भी है, कि अनजान मनुष्य इनके प्रयोगको भयकी दृष्टिसे देखेंगे, पर जब इनका मुनासिब रीतिसे प्रयोग होता है तथा जब हम उनकी मांगनेवाली जरूरतोंकी भयङ्करतापर ध्यान देते हैं और फिर जब हमें निश्चय हो जाता है, कि इनकी जब मांग होती है, तब कोई दूसरी चीज़ बदलेमें नहीं दी जा सकती और फिर जब उन्हें शक्तिकृत कर लिया जाता है और इतना परिवर्त्तित कर दिया जाता है, कि एकदम शुद्ध हो जाते हैं, क्योंकि वे सरल पदार्थमें घटाकर ला दिये जाते हैं, तो मनसे भय दूर हो जाता है। यह सत्य है, कि क्रोटेलस-जैसी चीज़की मांगनेवाली बीमारी बड़ी ही जटिल होती है। क्रोटेलसके रोगीके शय्या-पार्श्वमें खड़े होनेपर मालूम हो जाता है, कि मृत्यु सन्निकट है। रोगी भयावना दिखाई देता है और माता अपने बच्चेके लिये या स्त्री पतिके सम्बन्धमें तुरन्त ही चिकित्सकसे कहेगी,—डाक्टर साहब। इसे बचानेके लिये किसी भी चीज़का प्रयोग कीजिये, इस रोगीको आरोग्य करनेके लिये कुछ भी दीजिये।"

क्रोटेलसके लक्षण विचित्र हैं। यह दवा अपने तईं आप ही प्रकट करती है। इसका कोई एवज नहीं हो सकता क्योंकि सम्पूर्ण रूपसे विचार करनेपर, ऐसी कोई दूसरी दवा नहीं दिखाई देती। इसके अति निकटस्थ सम्बन्ध रखनेवाले दूसरे सर्प-विष हैं, पर यह उन सबसे भयानक है, सिवा इसके कि शायद ऐन्सिष्ट्रोडन कानट्राइक्स (Copper head) हो सकता है। सांप काट लेनेपर हमें अति दुष्परिणाम होता है, हम तेजीसे मृत्युकी ओर बढ़ते देखते हैं, हम मृत्यु हो देखते हैं। एक बहुत ही ऊँचे दर्जेकी रस-रक्तकी विकारावस्था, ये सर्प-विष सियानहाइड्रेट आफ सोडा या अन्य नमक माने जाते हैं। यह जाना गया है, कि सियान हाइड्रेटकी स्वाभाविक रूपसे गलानेवाला अलकोहल है और इसी वजहसे सांप काटनेपर यह बहुत ज्यादा मात्रामें प्रयुक्त होता है। इसने जीवन-कालको बढ़ाया है। यहांतक

कि जानतक बचाई है। पर प्रचण्ड आक्रमणमें ऐसा होता है, तो पुराना प्रभाव उसमें सदा प्रदर्शित होता रहता है और इसीसे हमलोगोने लक्षण सग्रह किये हैं। जिन कुत्तोको साँपने काटा था, उन्होंने साँप काटनेका पुराना प्रभाव प्रकट किया था और उनमें ही एक विचित्र सामयिकता प्रदर्शित हुई थी अर्थात् **प्रत्येक वसन्तमें**, जब कि शीत दबता है और गर्मी आरम्भ होती है। मुझे एक बार एक कुत्तेका पता लगा था, जिसे रैटलस्नेकने काटा था और जो मर गया था। इसे गलेमें काटा था और उस प्रदेशमें प्रत्येक वसन्त ऋतुमें एक फोड़ा हो जाता था। यह तबतक होता रहा, जबतक वह जीवित रहा, वृद्धावस्थातक, जब कि वह उसी रोगसे मरा। सर्प-विषका सम्बन्ध वसन्त ऋतुसे है, ग्रीष्म ऋतुके आरम्भ कालसे।

क्रोटैलसका दूसरा स्पष्ट स्वरूप, जैसा कि दूसरा सर्प-विषोंमें होता है, कि **वृद्धिके समय रोगी सो जाता है।**

क्रोटैलस-होरिडसका विष, अपने आरम्भिक प्रदर्शनोंमें—उस तरहका रस-रक्तका बिगड़ा परिवर्त्तन प्रकट करता है, जैसा कि आरक्त ज्वर, झिल्ली-प्रदाह (डिफ्थीरिया), टाइफायड तथा निम्न-श्रेणीके रक्त बिगड़नेमें तथा उन रोगोंमें प्रकट होता है, जो बहुत तेजीसे आते हैं, रक्तको तहस-नहस कर डालते हैं, रक्तवाहिनियोंको शिथिल बना देते हैं, शरीरके सभी द्वारोंसे रक्त-स्राव होता है, नशेमें रहनेकी तरह तेजीसे बढ़नेवाली बदहवासी और भर्राया हुआ चेहरा रहता है। करीब-करीब पाचावातिक प्रकृतिकी मानसिक और शारीरिक अवसन्नता रहती है, आरक्त ज्वर जब सड़नेवाला हो जाता है, टाइफायड ज्वर जब गलित रूपमें परिणत होता है, डिफ्थीरिया, जब उसमें बहुत रक्त-स्राव और सड़न रहती है, शरीर चितकबरा दिखाई देता है, पीला मिला हुआ नीला। आश्चर्यजनक तेजीसे कामला रोग हो जाता है, आँखें पीली हो जाती हैं तथा चमड़ा भी पीला और चित्ती-चित्ती हो जाता है। नीले दाग। काला और नीला चर्म, पीला और चितकबरा हो जाता है। रक्त-स्राव होने बाद चर्म बहुत ही रक्त-हीन हो जाता है। नीलापन चकत्तोंके रूपमें, यह सुनहरा, पीला और रक्त-रहित रहता है, शरीर मोमकी तरह दिखाई देता है। कान, आँख, नाक, फेफड़े तथा हर जगहकी श्लैष्मिक-झिल्लीसे रक्त-स्राव, आँतोंसे तथा जरायुसे रक्त-स्राव। एक रक्त-स्रावी

धातु, बहुत ही निम्न, सड़नेवाली श्रेणीकी, जो गैरमामूली तेजीसे पैदा होती है तथा गैरमामूली कम समयमें ही जो सड़नकी अवस्थामें जा पहुँचती है, उन बीमारियोंमें क्रोटेलसका प्रयोग होता है। जिसपर तेजीसे ज़हरका असर हो गया है, वही इस बिगड़ी सुन्न सड़नेवाली, अर्द्ध-चेतन दशाको प्राप्त होता है और ऐसा भाव रहता है, कि मृत्यु उसे ग्रास करना ही चाहती है। खून चूते ही काला पड़ जाता है, यह कभी-कभी तरल रहता है।

स्नायविकताकी एक भयङ्कर दशा रहती है। प्रत्यङ्गोंका काँपना, कम्पनशील दुर्बलता। जीभ निकालनेपर काँपती हुई बाहर निकलती है। थोड़े भी परिश्रमसे क्लान्त हो पड़ता है। जीवनी शक्ति एकाएक सुस्त पड़ जाती है, सम्पूर्ण शरीरमें एक पाचाघातिक दुर्बलता रहती है। पेशियोंकी ऐंठन, प्रत्यङ्गोंका काँपना, सान्निपातिक अवस्थामें पलङ्गके पातानेकी ओर सरक जाता है। इस अवस्थामें इस दवाने फायदा किया है। पीत ज्वरका बहुत सुस्तीके साथ बीखार, कितने ही प्रकारके पीत-ज्वर इससे आरोग्य किये गये हैं। अकड़न और पचाघात, इसमें नर्त्तन रोगकी तरह पेशियोंकी ऐंठन है, स्थानिक ऐंठन, हिस्टीरियाके प्रदर्शन।

मानसिक लक्षण भी परीक्षाके योग्य है। निम्न-श्रेणीका प्रलाप, बुदबुदाना, विचित्र ढङ्गसे आप ही-आप बोलना, यह कुछ-न-कुछ **लैकेसिस**से भिन्न है। दोनोंमें ही बकवादीपन है, पर **लैकेसिस**का बकवादीपन इतना तेज़ रहता है, कि यदि कमरेका कोई आदमी कुछ कहता रहता है, तो रोगी उसका सूत्र पकड़कर कथा समाप्त कर देता है, यद्यपि उसने कभी उस बातको नहीं सुना है, इतना ही क्रियाशील मन रहता है। **लैकेसिस**के रोगीके आगे किसीको भी कहानी समाप्त करनेकी इजाजत नहीं है। कोई कुछ कहना आरम्भ करेगा। वह कहेगा—"ओह हाँ। मैं यह समझता हूँ" और वह दूसरी ही धारासे आरम्भ करेगा और किसी दूसरी तरहसे उसे समाप्त करेगा। क्रोटेलसका रोगी भी ऐसा ही करता है, पर क्रोटेलसका रोगी उसे उठा लेगा, उसपर धीमे तरीकेसे कुछ भुनभुनाता रहेगा। यह नशेकी तरहकी एक निम्न धीमी दशा है, **लैकेसिस**में वहशत-भरी उत्तेजना रहती है। "अवसन्नता, औंघाई और तन्द्राके साथ प्रलाप।" वह इसे बताता है "पलङ्गसे भाग जानेकी इच्छाके साथ बकवाद-भरा प्रलाप।" यद्यपि यह धीमा रहता है, उसकी गतियाँ धीमी

रहती है, "टाइफस (मोह-ज्वर) का बुदबुदाहट-भरा प्रलाप। उदासी।" बराबर उसके विचार मृत्युपर ही अड़े रहते हैं। "असीम अनुभवाधिक्य," पढ़नेपर आँखोंमें आँसू भर आते हैं। डरपोकपनके साथ उदासी, ठण्ढे पसीनेके साथ घबड़ाहट भरा और पीला, चिड़चिड़ा मिज़ाज, जरा ही रञ्ज होनेपर गरमा उठता है। हिलने-डोलनेपर सरमें चक्कर, चकाचौंध आ जाता है। शान्त रहनेपर भी दर्द होता है, सोने जानेपर दर्द होता है तथा प्रचण्ड दर्दसे वह जाग पड़ता है। जितना ही ज्यादा वह सोता है, उतना ही अधिक उसे सर-दर्द होता है।

वह अपने उपसर्गों में ही सो जाता है। साँपवाले ज़हरके कुछ-कुछ तकलीफोंमें ही सोते हैं। सोनेके बाद सरकी तकलीफें पैदा हो जाती हैं, वह सर-दर्दमें ही सोता है, जितना ही ज्यादा वह सोता है, उतना ही ज्यादा उसे सर-दर्द होता है, माथेमें पीछेकी ओर इतने जोरका सर-दर्द होता है, कि उसे तकियासे उठाना असम्भव हो जाता है। पेशियाँ इतनी क्लान्त हो जाती हैं, कि उन्हें रोगीको हाथोंसे पकड़ रखना पड़ता है। ऐसा ही **लैकेसिसमें** भी होता है। मोमी चेहरा, पीला, बैंगनी, चित्ती-चित्ती चेहरेके साथ रक्त-सञ्चयी सर-दर्द, मानो कुचल गया हो। "सर-दर्द आँखोंतक फैल जाता है। प्रत्येक बार कुछ दिनोंपर पित्तज सर-दर्द।" प्रचण्ड सवमन सर-दर्द, इसके साथ ही चकाचौंधपन और मस्तक-शिखरमें धमक मालूम होना। धीमा टपककी तरह सर-दर्द, **"धीमा, भारी, धमक-भरा, पश्चात् मस्तकका सर-दर्द।"** सम्पूर्ण मस्तक रक्त-सञ्चयकी एक अवस्थामें रहता है, वह घबड़ाया और चकराया रहता है। सर बहुत बड़ा मालूम होता है, माथा भरा मालूम होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा। सर-दर्द, जो लहरोंमें उत्पन्न होता है, जैसे कि वे पीछेकी ओर होते हैं, रक्तका दौरान ऊपरकी ओर होता है, एक उत्तेजना मानो खून ऊपर चढ़ गया है। लहरें उठनेके साथ सर-दर्द तथा हिलने-डोलने और झटकेसे बढ़ना, पलङ्गपर करवट बदलनेपर, पलङ्गसे उठनेपर या लेट जानेपर। अवस्थाका परिवर्त्तन यह लहरें उत्पन्न कर देगा। **लैकेसिसमें** यह कहा गया है और मैंने परीक्षामें भी प्रमाणित होते देखा है, कि शुरूमें मेरुदण्डकी राहसे नीचे उतरता है और नाड़ीकी चालकी समगतिमें ऊपर चढ़ता है।

आँखोंसे रक्त-स्राव। आँखें देखनेमें पीली। "आँखसे खून निकलता है, आँखोंमें जलन, आँसू बहनेके साथ लाली।" आँखोंमें दबाव, मानो आँखें सरसे बाहर निकल पड़ेंगी। ऊपरी ओठोंका पक्षाघात। पलकोंके श्लैष्मिक-झिल्लीका पक्षाघात।

कानोंमें तरंगें। "आवाज़ सहन नहीं होती।" धीमा-धीमा दर्द और कानोंमें टपक। बदबूदार, बहुत ज्यादा, पीला, दुर्गन्धित खून मिला कानका स्राव। रस-रक्त बिगड़नेवाली बीमारियोंमें, निम्न-श्रेणीके आरक्त ज्वरमें या उस डिफ्थीरियामें, जिसमें आँखें और कानोंसे खून चूता है। कानसे रक्त निकलना, नाकसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव। रस-रक्त बिगड़नेवाली बीमारियोंमें नाक ही वह यन्त्र है, जिससे अमूमन रक्त-स्राव होता है। नाकसे रक्त स्राव होनेपर रक्तको ऊपर चढ़ानेवाली अवस्थामें कुछ आराम पहुँचता है। इस दवामें नाकसे रक्त-स्राव होनेके साथ माथेमें प्रचण्ड रक्त-सञ्चय रहता है। इसने सब तरहके बदबूदार स्रावोंको आरोग्य किया है। भयङ्कर, बदबूदार सड़ा नाकसे स्राव। नकसीर फूटना।

कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह। चेहरेका नीलापन और बदरङ्ग हो जाना। चेहरेका पीला दिखाई देना, यह कामलाकी एक प्रत्यक्ष दशा है। मोम-जैसी और रक्त-हीन, पीलापन लिये हरी दिखाई देनेवाली लड़कियोंको बहुत दिनोंतक ऋतु-स्राव नहीं होता और उन्हें फोड़े-फुन्सियाँ होने लगती हैं।

रोगी अकसर रातमें दाँत पीसता हुआ जाग पड़ता है। स्वाद बुरा और सड़ा रहता है। मसूढ़ोंका प्रदाह, मुँहसे रक्त आना। कण्ठसे रक्त आनेके साथ कण्ठका प्रदाह। कण्ठ और मुँहमें जलन। काँपती, छटपटाती और फूली हुई जीभ। बाहर निकाल रखनेके समय जीभका काँपना, हिलानेके समय हाथोंका काँपना। डिफ्थीरियाके जिन रोगियोंके नाक, मुँहमें खून जाता है, वे बहुत ही निम्न-श्रेणीके होते हैं और यदि ठीक चुनी हुई दवा नहीं पड़ती, तो रोगी मर जाता है। ऐसी दशामें कण्ठ डिफ्थीरियाकी झिल्लीसे भर जायगा, जो काली दिखाई देती है। इसके चारों तरफसे रक्त-स्राव होता है। रक्त स्रावके साथ मुँहका जख्म। मुँहमें जख्म। मर्क्युरियसके बादका उन लोगोंमें जख्म, जिनके मुँहसे रातमें लार चूती है। मुँहका खून बहनेवाला घाव, निगलनेमें कष्ट। मारात्मक डिफ्थीरिया। तुरन्त ही काला, पित्तज वमन हुए बिना दाहिनी करवट या

पीठके बल लेट नहो सकता। यह एक आश्चर्यजनक पित्तकी, स-वमन सर-दर्दकी तथा बहुत बडी मात्रामे पित्तको के होनेको दवा है। बहुत-सो क्रोटेलसको निर्देश करनेवालो निम्न-श्रेणीको बीमारियाँ बहुत-बहुत मात्रामें पित्तका वमन होनेके साथ आरम्भ होतो है, कभो-कभो पित्त खूनसे मिला रहता है।

पाकाशयमें दर्द, ऐसी ठण्डक मानो पाकाशय या तलपेटके भीतर बरफका टुकडा रखा हुआ है। पाकाशय उपदाहित, कोई चोज़ धारण नहो कर सकता, लगातार खून फेंका करता है। क्रोटेलसने पाकाशयका जखम आरोग्य कर दिया है। जब बहुत पित्तका और रक्तका वमन होता है, तो इसने कार्सिनोमाका उत्पन्न होना रोक दिया है। बहुत-से ऐसे अवसरोंपर वमन जब रक्तमे थक्का बँधनेकी प्रवृत्ति नहो रहतो। अब पाकाशयके इन जखमोंके साथ तथा कर्कट रोग, निम्न रस-रक्त बिगडनेवाले रोगके साथ कामला रोग करीब-करीब मौजूद रहता है। कामला रोग तथा कुछ-न-कुछ रक्त स्राव, ज्वर शायद हो ऊँचा उठे, कभी-कभी तो ताप स्वाभाविकसे भी कम होता है, लेकिन रस-स्राव और रक्त-स्रावके साथ नाकमे और मुँहसे काला रक्त-स्राव और काला, बहुत थोडा, रक्त-मिला पेशाब, जिसमें अण्डलाल मिला रहता है। टाइफायडके और निम्न रस-रक्त बिगडनेवाली बीमारियोंका, आध्मानयुक्त टाइफायड तथा रस-रक्त बिगडनेवालो बोमारोका आध्मानयुक्त तलपेटकी तरह तलपेट बहुत तना रहता है। आँतोंका जखम, आँतोंसे रक्त-स्राव। सुन्नपनके साथ तलपेटमें बहुत दर्द और घावकी तरह यन्त्रणा। उसका ऐसा अनुभव होना मानो काठका बना है। "मल काला, काफीके चूरको तरह। दूषित मूलका रक्तामाशय, बदबूदार पानी, भोजन प्रभृतिसे उत्पन्न, ज़हरीलो भाफ लगकर उत्पन्न अतिसार।" डिम्बाशय और गर्भाशयका प्रदाह। निम्न श्रेणीका सडनका बोखार। रक्त-स्राव। या तो काले थक्के या वह रक्त निकलता है, जिसमें जमनेकी तरह प्रवृत्ति नहो रहती और बराबर बहा करता है तथा सन्धि कम्पनको बहुत तकलीफ रहती है। गर्म लहरें। कामला रोग। जरायु या अन्य भागोंसे रक्त-स्राव। बहुत खून जमनेके साथ जरायुका कैन्सर, बहुत बदबू। रोगी पीला हो जाता है, कामला हो जाता है, बहुत क्लान्ति, चित्तो-चित्ती शरीरको त्वचा दिखाई देतो है। चेहरेको सूजन, पैरको सूजन, खासकर शिरा-पथोंकी सूजन।

सूतिकास्तम्भ (प्रसवके बाद जांघको शिराओंका फूलना—Phlegmasia alba dolens) जरा भी छू लेनेपर बदतर हो जाना। झटका या हिलने-डोलनेसे बदतर।

हृत्पिण्डकी जो बहुत बड़ी कमजोरी यह उत्पन्न करता है, उससे यह कारण प्राप्त होता है, कि यह कुछ-न-कुछ हृत्पिण्डकी दवा है। पर **नेजा, लेकेसिस** और **एलेप्स**की तरह अन्य सर्प-विषका इसकी अपेक्षा अधिक रोगोंमें प्रयोग होता है। यह हृत्पिण्ड सुस्त करता मालूम होता है, बल्कि समूचे शरीरको अवसन्न बनाता है और इसके उपसर्ग विशेषकर सार्वाङ्गिक होते हैं, प्रत्यङ्गोंको चित्ती-चित्ती शकल। हाथ-पैरोंकी सड़ने-वाली शक्ल।

फोड़े, कार्बङ्कल और उद्भेद बैङ्गनी चर्मसे घिरे रहते हैं, चितकबरी, नीली, बड़े-बड़े दाग भरी त्वचा। मार्बलको-सी दशा। फोड़े, अर्बुद तथा एक ऐसी दशा यह उत्पन्न करता है, जो कार्बङ्कल-सी रहती है, जिसमें बहुत जलन और प्रचण्ड दर्द होता है, पर उसका विचित्र स्वरूप है—साने आँटेकी तरह मध्य स्थान। विष-व्रण (Carbuncle) या फोड़ेके चारों तरफ कई इञ्चोंतककी जगहपर शोथ रहता है, साथ ही दबानेपर गड्ढा पड़ता है। फोड़े, घाव या विष-व्रणसे गाढा काला रक्त निकलता है, जिसका थक्का नहीं जमता। गर्दन और पीठपर होनेवाले विष-व्रण, एक फुन्सी होकर आरम्भ होते हैं और फिर कई हो जाते हैं और वे छोटी छोटी फुन्सियाँ और ददोरोंसे घिरे रहते हैं उस स्थानपर दबानेपर गड्ढा पड़ता है। इन विष व्रणोंके लिये आपको **आर्सेनिकम, ऐन्थ्रासिनम, लेकेसिस, सिकेलि** या क्रोटेलसका अध्ययन करना पड़ेगा। ये वे औषधियाँ हैं, जिनकी प्रकृतिमें साघातिकता और प्रदर्शन भरा है।

सूतिका ज्वरमें बराबर काला बदबूदार रक्त चूता है, जो जमता नहीं है शरीरके प्रत्येक द्वारसे रक्त-स्राव और जरायुसे भी। जरा उस स्त्रीपर ध्यान दीजिये जो गर्भावस्थामें टाइफायड ज्वर भोग रही हैं, उसे गर्भ-स्राव हो जाता है और फिर ऊपर बताये लक्षणोंके साथ एक निम्न रस रक्त बिगड़नेवाली अवस्था आ पहुँचती है और उसकी ऐसी दशा दिखायी देती है कि गर्भ-स्राव होने बाद खून जाते-जाते वह मर जायगी। रक्त जमेगा नहीं और स्राव

बराबर जारी रहता है या किसी स्त्रीको सान्निपातिक ज्वरके कालमें आर्त्तव स्राव होने लगता है। यह सच्चा आर्त्तव-स्राव नहीं है अर्थात् साधारण स्रावसे इसका कोई सम्बन्ध नहीं रहता, क्योंकि यह बहुत ज्यादा काला और तरल होता है तथा जो जटिल लक्षण बताये गये हैं, उनके साथ लगातार रक्त-स्राव हुआ करता है और उस रोगीका चेहरा खासकर चित्ती-चित्ती रहता है, विह्वल अचेतन दशा रहती है। ऐसा दृश्य मानो वह नशेमें है, मुर्देकी तरह पड़ी रहती है। जब उसे जगाया जाता है, तो प्रत्येक पेशी कांपती है, यदि जीभ निकालती है, तो कांपती है तथा बोलनेकी शक्ति नहीं रहती। क्रोटेलस उस रोगिनीकी जान बचा सकता है। क्या सर्पसे उत्पन्न बीमारीसे भी जटिल किसी बीमारीका खयालमें आना सम्भव है। जब कोई चिकित्सक ये लक्षण देखता है, तो वह तुरन्त उस रोगीको दवा सोचता है, जो इन दशाओंकी समता रखती हो। **बैप्टीशिया, आर्सेनिकम, सिकेलि और ओफिडिया** और कभी-कभी **आर्निका, फास्फोरस** और **पाइरोजेन** ये दवाएँ हैं।

और भी पुरानी दशामें रोगी निद्राके और भी भयङ्कर लक्षण प्रकट करता है। वह भयमें नींदसे जागता है। हत्या, मृत्यु, मरे हुए मनुष्य और मुर्दे अर्थात् भूत और लाशसे या श्मशानसे सम्बन्ध रखनेवाले भयङ्कर सपने देखता है। यहाँतक कि स्वप्नमें उसे मुर्देकी गन्ध भी आती है। जब वह जागता है तो थका रहता है, जड़ हुआ रहता है, अङ्कोंका जोड़ नहीं लगा सकता, लिखनेमें भूल करता है, वाक्योंके बदले शब्दोंका प्रयोग करता है और शब्दोंके बदले अक्षरोंका। वह अपना हिसाब-किताब नहीं रख सकता, क्योंकि वह उनको जोड़ नहीं सकता, वे सब उसे विचित्र मालूम होते हैं। निद्राके बाद पर्यायक्रमसे बहुत देरका कष्टकर जागरण होता है। गर्म मौसमके किसी भी परिवर्त्तनसे वह विचलित हो पड़ता है। बहुत चिड़चिड़ापन, हिलना-डोलना सहन नहीं होता, अपने पारिपार्श्विकोंसे सहजमें ही विचलित हो पड़ता है तथा सहजमें ही उत्तेजना पैदा हो जाना भी इस दवाका स्वरूप है। इसके बाद ही, अपने दोस्तोंसे वह सन्दिग्ध-चित्त रहता है तथा वैज्ञानिक आधारपर तर्क नहीं कर सकता, वह नशीले पेयोंकी लालसा करता है और इस लालचको वह रोक नहीं सकता। पुराने शराबियोंमें इस

आश्चर्यजनक सादृश्यके कारण ही सकम्प प्रलाप (Delirium tremens) में इसका व्यवहार जारी है, इसमें भर्राया चेहरा रहता है, चेहरेका बैगनी रूप शराबियोंमें एक अद्भुत ढङ्गकी भूख, स्फूर्तिदायकोंकी लालसाकी लहरें उत्पन्न होती हैं। यह विश्वास करनेका भरपूर कारण है, कि मोटे-ताजे हृष्ट, भूखे शराबियोंके लिये, यदि इसका ठीक-ठीक व्यवहार हो, तो कड़ी शराब पीनेकी आदत छुड़ानेकी यह एक गहरी क्रियाशील दवा होगी।

क्रोटोन टिग्लियम।

(Croton Tiglium)

क्रोटोन आयल (जमाल गोटेका तेल) जब शरीरके चर्मपर लगाया जाता है, तो चकत्ते और फुन्सियाँ, दोनों ही प्रादाहित स्थानपर उत्पन्न करता है तथा वह अंश बहुत ही लाल और यन्त्रणापूर्ण हो जाता है। प्रदाह अकसर यहाँतक बढ़ जाता है, कि यह विसर्प-जैसा हो जाता है, पर अमूमन इससे उत्पन्न उद्भेद, चकत्ते-भरे अकौतेकी तरह रहते हैं। कई दिनोंतक उद्भेद निकलते रहेंगे। इसके बाद वे सूखने लगेंगे और इसके कुछ दिन और बाद उससे भूँसी निकलने लगेगी।

जब किसीकी मात्रा अधिक हो जाती है, जैसा कि बहुत दिनोंतककी परीक्षामें किया गया है या मूल-पदार्थसे जैसा होता है या जब परीक्षक बहुत अधिक स्पर्श-असहिष्णु रहता है, तो परिवर्त्तित दशा प्राप्त होती है। भीतरी दशा बाहरीसे पर्यायक्रमसे परिवर्त्तित होती है। उद्भेद हट जानेपर भीतरी प्रदर्शन मौजूद नहीं रहते जैसा कि वातज अवस्थामें देखा जाता है। खाँसी और आँतोंके लक्षण। यदि इन दलोंका विभिन्न-भावसे हमलोग अध्ययन करें, तो वे सभी बहुत मनोज्ञ होंगे।

सबसे पहले इसकी खाँसी। इसमें दमाकी तरह खाँसी होती है, आधी रातके समय आती है और अकसर रोगीको गहरी नींदसे जगा देती है। प्रचण्ड खाँसीके दौरे, इनके साथ ही श्वास-कष्ट और दम घुटना, लेटने तथा रातके समय बदतर हो जाना, जिससे बाध्य होकर रोगीको बैठे रहना पड़ता है या बिछावनपर इधर-उधर करवट बदलना पड़ता है या उठकर जानेवाली

कुर्सीपर बैठ जाना पडता है। उसके दोस्त सोचते हैं, कि इसे यक्ष्मा तो नहीं हो रहा है। यदि बच्चा रहता है, तो सोचते हैं, कि हुप खाँसी तो नहीं हो गई है। वायु-पथोंमें बहुत ही अधिक उपदाह रहता है, जिससे श्वासके साथ हवा खींचनेसे ही खाँसी आती है। गहरी साँसका सहन न होना। अब ऐसा ही कुछ समयतक होता रहेगा और इसके बाद ही शरीरपर कहीं-न-कहीं उद्भेद निकल पडेंगे। चकत्ते, फुन्सियाँ, गुच्छों और थक्कोंके रूपमें निकलेंगे, वे प्रदाहित और लाल हो जाती हैं और अन्तमें सूखकर ऊपरसे भूसी निकल जाती है और वे गायब हो जाती हैं और इसके बाद, फिर उसको खाँसी लौट आती है। यह पुरानी दशामें जारी रह सकता है और जब रोगीकी ऐसी दशा रहे, तो इस दवापर ध्यान देना बहुत जरूरी है।

दूसरा अत्यन्त महत्व-पूर्ण लक्षण है, आँतोंका लक्षण और शायद इसके उद्भेदोंके सिवा ये लक्षण सबसे ज्यादा परिचित हैं। यह नये और पुराने दोनों प्रकारके अतिसारोंमें ही लाभदायक होता है। यह बच्चोंके हैजामें भी उपयोगी है। इसका स्पष्ट स्वरूप है, वह आकस्मिकता, जिससे इसके दस्त आते हैं। यह **पीला, पानीकी तरह या कोमल मल**के रूपमें झोंकसे निकलता है। कोमल, पतला मल, **एक झोंकमें** निकल पडता है। यह इतना स्पष्ट है, कि देहाती रोगी कह देते हैं—"हंसकी तरह।" एक झोंकमें यह सब निकल जाता है। अपने छोटे रोगीके विषयमें माता कहती है,—डाक्टर साहब! आप इसके प्रचण्ड वेगपर चकित रह जायेंगे, क्योंकि सब एक झोंकमें ही निकल जाता है।" यह वर्णनात्मक है। बहुत-सी दवाओंमें रुकावट और बहुत देरतक मल-त्यागकी चेष्टाका लक्षण है, जिनमें कि बहुत समय लगता है। बहुतसे अतिसार, बहुत देरतक जारी रहते हैं, जिसमें पतला मल, थोडा थोडा झोंकसे या पानी निकला करता है, पर यह विशेष स्वरूप बहुत ही आश्चर्यप्रद है। यह हमेशा ही ऐसा नहीं भी हो सकता है, पर यह पतले, पीले मल या पीले पानीका प्रचण्ड झोंकसे निकलना इस दवाका एक अद्भुत स्वरूप है। इसके साथ ही तलपेट बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहता है और बहुत ज्यादा तना रहता है, आँतोंमें बहुत गडगडाहट होती है और जब रोगी उसपर हाथ रखता है, तो रोगी कहता है, कि उसे गडगडाहट मालूम होती है, मानो उसमें पानी भरा हो और

सम्भवतः मल निकालनेके लिये यह ऐसा ही रहता भी है, क्योंकि यदि यह बात न होती, कि बृहदन्त्र और मलान्त्र तरलसे भरे हैं, तबतक एक कड़े झोंकमें सब मल नहीं निकल जाता। क्रोटोन टिग्लियमके अतिसारमें होनेवाली दूसरी अद्भुत बात यह है, कि तलपेट या नाभीपर दबाव देनेपर मलान्त्रमें दर्द होता है और पाखाना लग आता है और मल निकलनेके साथ एक ऐसी अनुभूति होती है, मानो मलान्त्र बाहर निकल पड़ेगा। रोगियोंने ऐसा बताया है, कि मानो दर्द आँतोंसे लेकर नीचे मलद्वारतक होता है। थोड़ा-सा भी पानी या दूध पीना, जो कुछ भी खाद्य ऐसे अतिसारके लिये उपयुक्त हो, लेनेपर तुरन्त ही पाखाना लग आयगा। उसे भोजनके बाद तुरन्त पाखाने जाना पड़ेगा। यह क्रोटोन टिग्लियमके अतिसारका साधारण स्वरूप बताता है। यदि बच्चा इसका रोगी होता है, तो बहुत क्लान्ति रहती है। तलपेट वायुसे फूला, आँतोंमें बहुत गड़गड़ाहट, अत्यन्त सुस्ती रहती है और ज्योंही बच्चा मुँहभर दूध पीता है या माताके स्तनसे खींचता है, त्योंही पतला या धसधसा मल झोंकसे निकल जाता है।

दूसरा अत्यन्त महत्वपूर्ण लक्षण-समूह है इसके आँखोंके लक्षण। इसकी आँखोंके उपसर्ग प्रादाहिक प्रकृतिके होते हैं तथा आँखोंके चारों तरफ तथा पलकोंपर छाले तथा पीव भरी फुन्सियाँ होती हैं। कनीनिकामें पीव-भरी फुन्सियाँ, दानेदार पलकें। आँखके सभी मांस-तन्तुओंका प्रदाह, चक्षुतारा और चक्षुश्वेत-पटलका प्रदाह रहता है। आँखकी रक्तवाहिनियाँ तनी रहती हैं, आँखें लाल तथा खाल उधड़ी-सी मालूम होती हैं। पलकें उलटकर देखी जाती हैं, तो बहुत प्रादाहित और दानेदार तथा छाले और पीव-भरी फुन्सियोंसे भरी मालूम होती हैं। इस प्रादाहिक दशाके साथ एक प्रकारकी यह अनुभूति क्रोटोन-टिगकी आँखके रोगियोंमें साधारणतः मौजूद रहती है, कि मानो आँखें एक डोरीके सहारे पीछे खिंची हुई हैं या चाक्षुषी-नाड़ी (Optic nerve) सबके भीतर पीछेकी ओर आँखोंको खींच रही हैं। यह आँखोंकी डोरीके सहारे पीछेकी ओर खींचन, **पैरिस क्वाड्रिफोलिया**का भी अद्भुत लक्षण है पर **पैरिस-क्वाड**की दशा कुछ दूसरी ही रहती है। पत्थर या धातुपर महीन खोदाई करनेवाले या सुईका महीन काम करनेवालोंकी आँखोंका अत्यधिक व्यवहार साथ ही सरमें स्नायु-शूल, जो

आँखोंके अत्यधिक व्यवहारके कारण होता है, जब कि प्रदाहके साथ आँखोंमें दर्द रहता है, पर यह धीमी प्रकृतिका दर्द और यन्त्रणा रहती है, जिसे आप वातज या स्नायु-शूलसे उत्पन्न कह सकते हैं। इसके साथ ही ऐसी अनुभूति रहती है, मानो आँखें मस्तिष्कमें पीछेकी ओर खिंची हैं। ऐसे रोगियोंके लिये **पेरिस क्वाड**का प्रयोग कीजिये, पर जैसा बताया है, वैसी प्रादाहिक दशाओंमें, उसी डोरीके सहारे पीछे खिंचावकी क्रोटोन टिग्लियम ही दवा है।

बच्चों के माथेकी त्वचामें कष्टदायक अकौता। या तो उसमें केवल जल-भरे छाले होते हैं अथवा बहुत कुछ पीव भरी फुन्सियाँ सम्मिलित रहती हैं। छाले सूख जाते हैं और भूसी निकलकर लाल, खाल उधड़ी प्रादाहित सतह निकल आती है, जिसे छूना सहन नहीं होता। जब भूसी निकलना करीब-करीब समाप्त होनेपर होता है, तो नये छाले और पीव-भरी फुन्सियाँ निकलने लगती हैं और जब एक स्थान साफ़ होता रहता है, तो दूसरेमें फुन्सियाँ निकलती रहती हैं। ऐसा ही पुराने अकौतामें हुआ करता है। उद्भेद अकसर आँखके पास, कनपटीपर, चेहरेपर और मस्तक-शिखरपर होते हैं। इनकी शकल **सीपिया**के इतने सदृश रहती है, कि दोनोंका प्रभेद अकसर निर्णय नहीं किया जा सकता। **सीपिया**में भी वही पीव-भरी फुन्सियोंके साथ छाले निकलते हैं, चर्म पटलसे रक्त-स्राव और खाल उधड़ना तथा उद्भेदों की नयी फसलों का लक्षण है। मस्तक-त्वचाकी रक्त-स्रावी दशा, इसका खाल उधेड़ना, दूधिया फोड़े या बच्चों के उद्भेदमें क्रोटोन-टिगकी अपेक्षा **सीपिया**का अधिक प्रयोग होता है। क्रोटोन-टिगमें इस दशाके बच्चों को बहुतकर झोंकसे दस्त होनेवाला अतिसार हो जाता है, यह थोड़ी भी गड़बड़ी या अनपचसे होने लगता है। यह औषधिके परिचालनमें बहुत सहायता पहुँचाता है। जब दो लक्षण-समूह सम्मिलित रहते हैं, माथेकी त्वचाके लक्षण और अतिसार, तो आप मुश्किलसे गलती कर सकेंगे। आप यह भी देखेंगे, कि यदि अतिसार बहुत दिनों तक जारी है, तो माथेके लक्षण घटते जायँगे और आप सोचेंगे कि आपके रोगीको मस्तक-त्वचाकी तकलीफ़ घट रही है, पर जब अतिसार थोड़ा-सा घटता है, तो तुरन्त मस्तक-त्वचाके फोड़ोंकी नयी फसल तैयार हो जायगी। यदि अतिसार पुराना पड़

जाता है, तो बाहरी उद्भेद गायब हो जायँगे और यदि अतिसार ज्यादा बढ़ता है, तो बाहरी उद्भेद बदतर हो जायँगे। ऐसी धातु-प्रकृतिवालों के लिये दस्त होते रहना आवश्यक होता है। श्लैष्मिक-झिल्ली भीतरी चर्म है और शरीरका आच्छादन बाह्य चर्म और यह दवा इनमेंसे एक या दूसरेपर अपने प्रदर्शन खासकर दिखाती है या तो श्लैष्मिक-झिल्लीपर या शरीरके आच्छादन, बाह्य चर्मपर।

इसका एक दूसरा प्रदर्शन भी है, जिसपर आपको लक्ष्य रखना चाहिये—स्तनसे दूध पिलानेके सम्बन्धके कुछ लक्षण। प्रसवके बाद माता स्वाभाविक रूपमें कुछ दिनों तक रह सकती हैं, पर एकाएक उसे एक दिन या दूसरे स्तनमें दर्द हो जाता है और इस तरहकी खींचन मानो डोरीसे खींचा जा रहा है। उसे ऐसा मालूम होता है, कि मानो स्तन-वृन्त पीछे एक डोरीसे बँधे हैं, जो पीछेकी ओर खींच रही है, तेज़ खींचनकी तरह, डङ्क मारनेकी तरह दर्द जिसकी वजहसे रोगिनीको दिन-रात टहलते रहना पड़ता है। यद्यपि है यह बहुत साधारण चीज़, पर क्रोटोन-टिगके सम्बन्धमें यह बहुत ही महत्व-पूर्ण लक्षण है। यह डोरीके सहारे खींचनका लक्षण आँखे तथा स्तनोंमें देखनेमें आता है तथा बहुत कुछ **प्लम्बम**की तरहका एक और भी लक्षण है दबानेपर नाभीमें खिंचाव, बहुत कुछ डोरीकी तरह। इन बातोंका एक साथ सम्मिलित रहना, उन्हें आपको दवाकी प्रकृतिका एक अंश समझने योग्य और ध्यानमें रखने योग्य बनायगा। मैंने एक इस तरह डोरीसे स्तन-वृन्तकी खींचनवाली एक रोगिनीको आरोग्य किया था। मैंने उसे सहनपर टहलते देखा और देखा कि तकलीफ़ अवश्य बहुत ज्यादा है, क्योंकि समय-समयपर उसकी आँखों में आँसू भर आते थे। कई रातों से वह इसे सहन कर रही थी, जिससे मालूम होता है, कि क्रोटोन टिग्लियम बहुत समयके तथा कुटिल दर्दको भी आरोग्य कर सकता है। स्तनपर पोल्टीस लगायी गई थी, उसपर गर्म प्रलेप चढ़ाया गया था, पर उनसे कोई लाभ नहीं पहुँचा—यह सूत्र भी याद रखने लायक है।

बच्चोंके हैजामें स्वभावतः वमनका लक्षण रहता है, जो अमूमन क्रोटोन-टिगमें नहीं होता। यद्यपि इसमें भी कुछ वमन है, इसलिये बच्चोंके हैजामें जहाँ वमनके लक्षणकी इतनी प्रधानता नहीं रहती, जितनी कि पतले दस्त रहते हैं, उनकी दवा क्रोटोन-टिग हो सकती है। एक लक्षणकी सूचना मिली

थी, जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। दृष्टिका लोप, सरमें चक्कर, पोनेपर बढ़ना, आँतोंसे बहुत बार पीलापन लिये हुरे पानीका स्रावके साथ अत्यधिक मिचली मुँहमें बहुत पानी भर आना। इस तरह हमें अत्यधिक मिचली मिलती है, पर वमन नहीं, मिचली बहुत कुछ **इपिकाका**की तरह होती है, परन्तु **इपिकाका**में क्रोटोन-टिगकी तरह दस्त नहीं आते, बल्कि थोड़ा-थोड़ा झोंकाके साथ मल निकलता है, प्रत्येक मिनट हमें थोड़ा-थोड़ा झोंकके साथ दस्त ही देखनेमें आता है, जिसके साथ ही कृथन रहती है। **इपिकाका**में वमन बच्चोंके हैजाका महत्वपूर्ण लक्षण है और जब पाकाशय खाली हो जाता है, तो बहुत ज्यादा ओकाई और क्लान्ति इससे हो जाती है और मल थोड़ा होता है, पर क्रोटोन-टिगमें दस्त बहुत ज्यादा आते हैं और यद्यपि मिचली रहती है, पर वमन कम और शायद ही कभी होता है।

इस दवाका दूसरा विचारणीय स्वरूप है, इसका **रसटक्स**से सम्बन्ध। यह **रसटक्स**का प्रतिविष है। **रसटक्स** परिवार (खासकर रसटक्स) में फुन्सीवाले उद्भेदोंमें क्रोटोन-टिगका बहुत ही निकटस्थ सम्बन्ध है। खासकर **रसटक्स, ऐनाकार्डियम, सीपिया** और **ऐनागेलिस**से है। क्रोटोन-टिग्लियमके उद्भेद ज्यादाकर जननेन्द्रियपर ही अपना घर बनाते हैं। **रसटक्स** भी ऐसा ही करता है और जब **रसटक्स**के ज़हरसे जननेन्द्रियमें उद्भेद निकलते हैं, तो साधारणतः क्रोटोन-टिग ही प्रतिविष होता है। इसके अलावा जब उद्भेद निकलते हैं, तो आँखोंको या खोपड़ीकी त्वचाके पास निकलते हैं, तो भी क्रोटोन-टिग ही प्रतिविषका काम करता है। जब लक्षण केवल तलहत्थीमें रहते हैं, तो क्रोटोन-टिग दवा नहीं होती, बल्कि **ऐनागेलिस** दवा होती है। क्रोटोन-टिगकी क्रिया जिस तरह जननेन्द्रियपर होती है, उसी तरह **ऐनागेलिस**की तलहत्थीपर। यदि आप **ऐनागेलिस**की परीक्षा करें, तो आपको मालूम होगा कि उद्भेद निकलते हैं और उसपरसे भूसी निकलकर वह गायब हो जाते हैं और ज्योंही वह जगह ऐसी मालूम होती है, कि आराम हो जायगी, त्योंही एक नयी [illegible] निकल आती है। **रसटक्स**का इससे [illegible] यह [illegible] बनाता है, पर **रसटक्स**के उद्भेद फिर [illegible] नहीं [illegible] क्रोटोन-टिगके

उद्भेदोंमें कुछ जलन रहती है, पर **रसटक्स**की तरह नहीं, **रसटक्स**के उद्भेदोंकी जलनका दर्द आगकी तरह होता है। यह हवासे बदतर हो जाता है और जितना गर्म सहन हो उतने गर्म पानीमें डुबो रखनेपर अच्छा रहता है। जिन मनुष्योंको **रसटक्स**के उद्भेद निकलते हैं, वे अपनी खुजली और जलनके विषयमें हाथको रगडनेके सम्बन्धमें कहते हैं। ऐसा ही क्रोटन-टिगमें भी होता है, पर यह अमूमन इतना यन्त्रणाप्रद होता है, कि वह उसे छू नहीं सकता। जब इनकी उद्भेद कोमल रहते हैं, तो थोडा-सा रगडनेपर उसमें आराम पहुँचता है, **रसटक्स**में खुजलानेपर तकलीफ़ बढ जाती है। **रसटक्स**के ज़हरके बुरे रोगी अपनी अगुलियाँ अलग रखे रहेंगे, यदि उनपर बडे-बडे छाले हैं और उन स्थानोंको न छुएँगे, क्योंकि इससे इतनी प्रचण्ड खुजली होती है, कि रोगीको पागल बना देती है। यद्यपि क्रोटीन टिगमें ऐसा नहीं होता, तथापि वे एक दूसरेके प्रतिविष रूपमें सदृश है। वे दोनों बिलकुल एक समान नहीं है, पर उनका सदृश रहना आवश्यक है। यह सत्य है, कि वे दवाएँ जिनमें खुजलानेपर आराम पहुँचता है, ऐसी दवाओंकी अधिक प्रतिविष है, जिनमें खुजलानेपर आराम पहुँचता है। जितना ही वे सदृश हो, उतना ही अच्छा है, पर सिर्फ सार्वाङ्गिक प्रकृतिमें जब दवाएँ सदृश रहती हैं, तो वे एक दूसरेकी प्रतिविष होती हैं और जब वे सार्वाङ्गिक प्रकृतिमें सदृश रहेंगी तो वे रोगको आरोग्य करेंगी। यह भी सत्य है, कि जब दवाएँ सार्वाङ्गिक प्रकृतिमें सदृश नहीं होती, तो खास-खास स्थानोंके सम्बन्धमें वे सदृश हो सकती है और उस स्थानके लक्षणोंको हटा दे सकती है, पर रोग जारी रहेगा। इस दशामें रोग आरोग्य करनेके लिये यह दवा काफी नहीं है, पर इसने कुछ लक्षण हटा दिये है। यह बहुत ही दुःखदायी चिकित्सा प्रणाली होती हैं, क्योंकि रोगको प्रकृति बदले बिना ही यह उसके प्रदर्शन बदल देती है। इस तरह कोई दरिद्र चिकित्सक दवाएँ खोजा करता है, एक प्रकारके लक्षण समूहके लिये एक तरहकी दवा देता है और दूसरे लक्षण समूहके लिये दूसरी दवा और रोगी भी पहलेकी अपेक्षा बदतर होता जाता है। यदि अपनी सार्वाङ्गिक प्रकृतिमें दवाएँ सदृश रहती है, तो छोटे-छोटे बाहरी लक्षण इतने अधिक महत्वपूर्ण नहीं होते।

"मुष्क तथा लिङ्गमुण्डपर, बार-बार खाल उधेड़नेवाली खुजली।" "मुष्क तथा लिङ्गपर छालेके रूपमें उद्भेद।" लिङ्गेन्द्रियपर छाले और फुन्सियोंके रूपके उद्भेदोंकी यह दवा है। इसका **पेट्रोलियम**से निकटस्थ सम्बन्ध है, जिसमें कि लाल चकत्ते और दानेदार उद्भेद निकलते हैं और जिसके साथ महीन लाल दाने जननेन्द्रियपर होते हैं, बहुत तेज़ खुजली होती है, समय-समयपर खुजलानेपर बदतर हो जाती है, जबतक कि जलन नहीं पैदा हो जाती और फिर खून बहता है, जिससे आराम पहुँचता है।

क्यूप्रम मेटालिकम।

(Cuprum Metallicum)

क्यूप्रम एक सबसे विशेष **अकड़न**की दवा है। प्राय प्रत्येक रोगके साथ ऐंठन या अकड़नकी प्रवृत्ति रहती है, जिसे क्यूप्रम उत्पन्न और आरोग्य करता है। इसमें प्रचण्डताके प्रत्येक दर्जेकी अकड़न, महज छोटी पेशियोंकी ऐंठन और एक पेशीकी अकड़नसे लेकर शरीरकी सभी पेशियोंकी अकड़न है। जब ये पैदा होनेको होती हैं, तो सबसे पहली सूचना अंगुलियोंकी खींचन होती है या अंगूठेका ऐंठना अथवा पेशियोंका ऐंठना रहता है। इसमें ऐंठन, कम्पन, कंपकंपी हैं तथा इसमें वह जोरदार सङ्कोचन भी है, जिससे कि हाथ एकाएक जोरसे बन्द हो जाते हैं। इस दशामें पहले अंगूठे आक्रान्त होते हैं, वे खिंचकर तलहत्थीकी ओर चले आते हैं और फिर अंगुलियाँ कसकर उनपर बन्द हो जाती हैं (इस तरह मुट्ठी बँध जाती है, कि अंगूठा भीतर और अंगुलियाँ ऊपर कसकर बन्द रहती हैं)। हाथ-पैरोंकी अंगुलियों और अंगूठोंकी यह अकड़नकी दशा बढ़ती है और तबतक फैलती है, जबतक कि प्रत्यंग घोर क्लान्तिकी अवस्थामें नहीं जा पहुँचते। जबर्दस्त सङ्कोचन, बड़े जोरोंसे प्रत्यङ्ग खिंचते हैं और ऐसा मालूम होता है, कि प्रत्येक स्थानकी पेशियोंके प्रचण्ड सङ्कोचनके कारण शरीर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। कितनी ही बार यह सङ्कोचन धीमें आकारका, झटके और मरोड़के साथ होता है।

क्यूप्रमके बहुत-से **मानसिक लक्षण** हैं। इसका प्रलाप भी बहुत तरहका होता है। असम्बद्ध बातें बकना, असम्बन्ध-रूपसे सब तरहके

विषयोंका बकना। इसने मानसिक लक्षणोंकी एक श्रेणी उत्पन्न की है। प्रलाप, बोलीकी असम्बद्धता, याददाश्तकी कमी। इसके विभिन्न रोगोंमें, जैसे कि हैजा, कुछ रूपोंका ज्वर, सूतिकावस्था, अतिरञ्ज मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय प्रभृतिमें प्रलाप रहता है बेहोशी और झटका तथा पेशियोंका मरोड़ रहता है। आँखें विभिन्न दिशाओंकी ओर चक्कर खाती हैं, पर साधारणतः ऊपर, नीचे और भीतरकी ओर घूमती हैं। नाकसे रक्त-स्राव होता है और दृष्टि-शक्ति गड़बड़ायी रहती है। अकड़नके दौरोंके बीचमें रोगी असम्बद्ध बोलता है, प्रलाप बकता है, जिस समयके बीच रोगी ईर्षालु, प्रचण्ड, रोता हुआ या चीखता रहता है। चीख-चीखकर रोगी टङ्कार-ग्रस्त हो पड़ता है। एक स्थानपर तो यह कहा गया है, कि बछड़ेकी तरह डकरता है।

इस दवामें इस ढङ्गके आक्षेप पैदा करनेकी शक्ति है, जिसके बाद **ऐसा मालूम होता है, कि रोगी मर गया** या अति प्रसन्नताकी अवस्थामें है। यह टङ्कारकी दशा कभी-कभी रक्तका दौरान बन्द होनेकी अवस्थामें जा पहुँचती हैं, जिसमें कि मनकी क्रिया होनो बन्द हो जाती है और पेशियाँ या तो शान्त रहती हैं या सिर्फ काँपा करती हैं। क्यूप्रम बतानेवाली कुकुर खाँसी (Whooping cough) का यह परिचालक लक्षण है। माताकी भाषामें इसे बतानेके लिये अपने शिशुका जो वर्णन वह बताती है, उससे आप पाठ्य-ग्रन्थकी अपेक्षा अधिक स्मरण रख सकते हैं। वह कहती है, कि जब बच्चेको हूपिङ्ग खाँसीका यह प्रचण्ड दौरा होता है, तो उसका चेहरा नीला या पीला हो जाता है, अंगुलियोंके नाखून बदरङ्ग हो जाते हैं आँखें उलट जाती हैं और बच्चा तबतक खाँसता है, जबतक उसकी साँस नहीं रुक जाती और इसके बाद बहुत देरतक इस तरह बेहोश पड़ा रहता है, कि उसे सन्देह होने लगता है, कि बच्चा अब साँस न लेगा, पर श्वासमें प्रचण्ड आक्षेपिक क्रियाके कारण बच्चा खूब लघु-श्वासोंसे फिर होशमें इस तरह आ जाता है, मानो उसमें जीवन आ गया। आक्षेपिक हूपिङ्ग खाँसीका समस्त स्वरूप इसमें आ गया। माताके इस कथनके साथ आप कुछ चीजें और भी देख सकते हैं, पर ऐसे रोगीका सम्पूर्ण विवरण, इसकी समस्त प्रकृति, यही प्रकट करती है कि यह क्यूप्रमकी हूपिङ्ग खाँसी है। यदि माता जल्दीसे ठण्डा पानी पिला देती है, तो वह खाँसी बन्द कर देगी, खासकर ठण्डा पानी अकड़नमें आराम पहुँचायगा और इसीलिये माताको जल्दीसे ठण्डा पानी

लानेका अभ्यास पड़ जाता है और बच्चा भी जानता है, अगर उसने एक बार इसकी परीक्षा की है, कि एक गिलास ठण्डा पानी उसे रोक देगा। जब कभी श्वास-यन्त्र आक्रान्त होते हैं, तो **आक्षेपिक श्वास चलने** लगती है। श्वास-कष्ट। वक्षमें भी घरघराहट होती है। जितना ही अधिक श्वास-कष्ट होगा, उतना ही अगूठा मुड़ा और अगुलियाँ ऐंठा करेंगी।

वक्षके निम्न-भागमें, अग्रखण्ड उपाङ्ग-प्रदेशमें (in the region of xiphoid appendix) एक आक्षेपिक दशा रहती है, जो बहुत ही कष्टदायक होती है। कभी-कभी तो इतना ज्यादा **आकुञ्चन** होता है, कि रोगी सोचता है, कि वह मर जायगा और दूसरे समय एक ऐसा भाव होता है, मानो अग्रखण्ड उपाङ्गसे पीठतक एक छुरी भोंकी हुई है। कोई कहता है, कि उस प्रदेशमें एक ढेला-सा रखा मालूम होता है और दूसरे कहते हैं, कि पाकाशयमें बहुत-सा वायु इकट्ठा हो रहा है। यह आवाज़की पूर्णताको नष्ट कर देता है और ऐसा मालूम होता है, कि उसकी जान निकल जायगी। कभी-कभी यह उदर-शूलका आकार धारण कर लेता है और कभी स्नायु-शूलका। यदि आप पाकाशय-प्रदेशकी कसावटकी अनुभूतिकी परीक्षा करें, तो आप तुरन्त देखेंगे कि आवाज़ किस तरह आक्रान्त हो गई है। आपको रोगी बिछावनपर बैठा दिखाई देगा, वह आपको फटी और दबी आवाज़में कहता है, कि यदि उसे फायदा न पहुँचाया गया, तो तुरन्त मर जायगा। उसका चेहरा भय और उत्कण्ठाका चित्र बना हुआ रहता है। वह सचमुच ही ऐसा दिखाई देता है, मानो मरना ही चाहता है, यह सनसनी भयानक होती है। क्यूप्रम बहुत तेज़ीसे इस उपसर्गको आरोग्य कर देता है। यह आकुञ्चन और श्वास-कष्ट, कभी-कभी हैज़ामें तथा कष्टप्रद ऋतु-स्रावमें भी हो जाते हैं। इस आकुञ्चनके साथ वक्षका आक्षेप भी रहता है तथा एक स्नायविक आक्षेपिक श्वास-क्रिया रहती है। वह पूरी-पूरी साँस लेने योग्य नहीं रहता।

क्यूप्रमका रोगी **मरोड़**से भरा रहता है। अङ्गोंमें तथा वक्षकी पेशियोंमें कम्पन और कमजोरीके साथ मरोड़ या ऐंठन रहती है। वृद्धावस्थामें तथा अकाल-पक्कतामें, यह उन मरोड़ोंके लिये लाभदायक होता है, जो पैरकी पिण्डलियोंमें होता है, पैरके तलवेमें होता है तथा रातमें पलङ्गपर अगूठे

तथा अंगुलियोंमें होता है। कमज़ोर हुए, स्नायविक, कम्पनशील वृद्ध पुरुषोंमें, कूप्रमकी एक विचित्र क्रिया होती है। जब बहुत दिनोंतक अकेला रहने बाद कोई वृद्ध पुरुष विवाह करता है, तो उसका मरोड़ कभी-कभी उसे सङ्गम करनेसे रोकता है, सङ्गम आरम्भ करते ही उसके पैरकी पिण्डलियाँ और तलवोंमें मरोड़ होने लगता है। खासकर जो युवक दुराचारोंके कारण, कड़े पेयोंके कारण देरतक रातमें जागने और नाना प्रकारके दुष्कर्मोंके कारण **अकालपक्व** हो गये हैं, ऐसे व्यक्तियोंको ये मरोड़ होना कोई विचित्र नहीं है। इन दशाओंको कूप्रम और **ग्रैफाइटिस** (Graphites) दो दवाएँ हैं, पर कूप्रममें कहा जाता है, कि मरोड़ ऐसे समय होता है, कि सङ्गमको रोक देता है, पर **ग्रैफाइटिस**का मरोड़ सङ्गमकी क्रियाके समय होता है। जो हो, ये दोनो दवाएँ आपसमें एक दूसरेसे निकटस्थ सम्बन्ध रखती हैं और इसीलिये **ग्रैफाइटिस** यदि रोगीको धातु-प्रकृतिसे मिलता है, तो उसे देना चाहिये और ऐसा ही कूप्रमके सम्बन्धमें भी होना चाहिये। **सलफर**ने भी इस दशाको आरोग्य किया है।

मासिक ऋतुकालमें होनेवाली आक्षेपिक दशाओंमें भी कूप्रम लाभ दायक है। **आक्षेपके साथ कष्टप्रद ऋतु-स्राव,** जो अंगुलियोंमें उत्पन्न होता है और समूचे शरीरमें फैल जाता है। हिस्टीरियाके प्रदर्शनोंकी तरह दिखाई देनेवाला जबर्दस्त सङ्कोचन। यह भले ही हिस्टीरिया-जनित हो, पर यह कूप्रमकी आरोग्य क्रियामें हस्तक्षेप नहीं करता, ये केवल आक्षेपिक या टङ्कारकी प्रकृतिके होते हैं। प्रलापके साथ प्रचण्ड कष्टरज, आँखोंका पलट जाना, चेहरेकी ऐंठन तथा मृगीके ढङ्गके प्रदर्शन।

कूप्रमकी **मृगीमें** अंगुली और अंगूठेका सकोचन और झटका रहता है। वह चीखकर गिर पड़ता है तथा आक्रमण कालमें पाखाना और पेशाब होता रहता है। वक्षके निम्न अंशमें प्रचण्ड आकुञ्चन होकर जो मृगी आरम्भ होती है, यह उसीमें निर्देशित होता है। जैसा कि हमने बताया है या उस सकोचनके साथ जो समूचे शरीरमें सब पेशियोंमें फैल जाता है।

इसके अलावा प्रसवके पहले और बाद होनेवाली **सूतिकावस्था** (Puerperal state) में भी कभी-कभी जरूरत पड़नेवाली एक दवा है।

रोगी मूत्र-विकारकी प्रकृतिका हो सकता है, पर इसपर ध्यान देनेकी जरूरत नहीं है, पेशाब थोड़ा और अण्डलाल मिला होता है। प्रसवावस्थाकी उग्र गतिके साथ रोगिनी एकाएक अन्धी हो जाती है। उसे कमरेसे सब रोशनी हटी हुई मालूम होती है, प्रसवका दर्द रुक जाता है और टङ्कार पैदा हो जाता है, जो अगुलियों और अंगूठोंसे उत्पन्न होता है। जब आपको ऐसे रोगी मिलें तो कूप्रमको न भूलिये। बगैर कूप्रमके आपको बहुत समयतक इस रोगीको आरोग्य करनेके लिये राह देखनी पड़ेगी।

मारात्मक हैजामें, जिसमें झोंकसे पानीकी तरह और बहुत ज्यादा वमन होता है, पाकाशय तथा आंतोंकी सारी सामग्री निकल जाती है। रोगी बहुत कुछ खाली हो जाता है, उसका समूचा शरीर नीला पड़ जाता है, हाथ-पैर ठण्ढे रहते हैं, पेशियाँ फड़का करती हैं, हाथ-पैर तथा अंगुलियाँ और अगूठे ऐंठा करते हैं, वक्षकी अकड़न, वक्ष ठण्ढा, भर्राया रहता है, चकत्ता-चकत्ता नीला शीताङ्ग हो जाना चाहता है, अंगुलियोंके नाखून तथा अगूठेका नाखून तथा हाथ और पैर नीले हो जाते हैं, कई ऐसी दवाएँ हैं, जो इस दशामें कूप्रमकी भांति मालूम होती है। हैजामें हम स्वभावत ऐसी दवा खोजेंगे, जिसमें हैजाकी तरह स्राव होता हो, कुछ-न-कुछ आक्षेपिक दशा, बहुत अधिक नीलापन, ठण्डक, अवसन्नता और शीत आ जाना हो। यहाँ हम हैनिमैनके विचारपर ध्यान दिलायेंगे। हैनिमैनने हैजाका रोगी नहीं देखा था, पर उहोंने देखा कि **कैम्फर** और **वेरेट्रम**ने कूप्रमके लक्षणकी तरह रोगमें लक्षण उत्पन्न किये हैं। उन्होंने रोगके वर्णनसे देखा है, कि हैजाका साधारण दृश्य कूप्रम, **कैम्फर** और **वेरेट्रम**के सार्वाङ्गिक रूपके समान है और ये तीनों दवाएँ ठीक हैजा रोगकी दवाएँ हैं। इन सबमें ही हैजाका सार्वाङ्गिक रूप, उसकी प्रकृति और उसका सार्वाङ्गिक दृश्य है। इन सबमें ही कमजोर करनेवाला वमन, अतिसार, ठण्ढापन, शीताङ्ग हो जानेकी प्रवृत्ति, शरीर रसके निकल जानेके कारण धँसते जानेकी प्रवृत्ति है।

मैंने जो कुछ कहा है, उससे आप देखेंगे, कि कूप्रमका रोगी, दूसरोंकी अपेक्षा एक आक्षेपिक—अकड़नवाला रोगी रहता है। इसमें बहुत ही तेज़ अकड़न होती है और अकड़न ही इसका परिचालक स्वरूप है, यह

रोगीके अन्य लक्षणोंको ढँक लेता है, वह मरोड़-ऐंठनसे परिपूर्ण रहता है तथा पेशियोंके खिंचावके कारण होनेवाले दर्दसे उसे बाध्य होकर चिल्लाना पड़ता है, इन तीनों दवाओंमें **कैम्फ़र**में सबसे ज्यादा शीतलता है, **कैम्फ़र**का रोगी मृत्युकी तरह शीतल रहता है। **कैम्फ़र**में नीलापन है, सुस्त करनेवाला स्राव है, यद्यपि यह क्यूप्रम और **वेरेट्रम**से कम है। पर आखिरी दोनों दवाओंमें रोगी ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है, पर **कैम्फ़र**में वह कमरेकी खिड़कियाँ खुली और ठण्डा रहना चाहता है, यद्यपि वह ठण्डा रहता है, पर इतनेपर भी वह खुला रहना चाहता है और खिड़कियाँ खुली रखनी चाहता है। पर यहाँ **कैम्फ़र**का एक दूसरा रूप भी बताने दीजिये, इसमें कुछ दर्द-भरी अकड़नें भी रहती हैं और **जब दर्द जारी रहता है**, तो वह ओढ़ना ओढ़ लेना और खिड़कियाँ बन्द रखना चाहता है। यदि आँतोंमें दर्दके साथ मरोड़ रहता है, वह ओढ़ना ओढ़े रहना चाहता है। इस तरह **कैम्फ़र**में सभी ज्वर दशाके उपसर्गोंमें (कैम्फ़रमें ज्वर बहुत कम होता है) तथा दर्दके समय, वह ओढ़ना ओढ़े और गर्म रहना चाहता है, पर **ठण्डापन—शीतलताके समय** वह खुला रहता और हवाकी इच्छा करता है। तब हैजामें, अत्यधिक ठण्डक और नीलापन **कैम्फ़र**का निर्देश करते हैं। इसके अलावा, **कैम्फ़र**के साथ अकसर थोड़ा और साथ ही बहुत ज्यादा स्राव भी होता है, इस तरह हैजाका रोगी एकाएक बीमार हो जाता है, उसे ठण्डापन, नीलापन और क्लान्ति आ जाती है, पर करीब करीब न तो वमन होता है, न दस्त—एक वह अवस्था जिसे **शुष्क हैजा** (Dry Cholera) कहते हैं, इसका सरल मतलब यह है, कि असाधारण थोड़े दस्त के आते हैं। यह **कैम्फ़र** है। दूसरा प्रधान स्वरूप है, शरीरकी ठण्डक, बगैर उसे हमेशा होनेवाले पसीनेके जो इस बीमारीमें होता है। क्यूप्रम और **वेरेट्रम**में ठण्डा लसदार पसीना होता है और **कैम्फ़र**में भी पसीना होता है, पर अधिकतर **कैम्फ़र**की जरूरत रहनेवाला रोगी बहुत ठण्डा, नीला और सूखा रहता है तथा खुला रहना चाहता है, यह अद्भुत बात है। अब हम **वेरेट्रम**पर जाते हैं और देखते हैं, कि ये तीनों दवाएँ बहुत कुछ

समान है तथा हैजामें इनका पूर्णतया व्यवहार होता है तथा वे सब अलग अलग है। बहुत ज्यादा क्लान्त करनेवाले स्रावोंके कारण—बहुत ज्याद पसीना, आँतोंसे बहुत ज्यादा स्राव (रस), बहुत अधिक वमन औ पसीनेके बहुत ज्यादा ठण्डापनको **वेरेट्रम** एक अद्भुत दवा है। रोगों कुछ मरोड़ भी रहता है और तब वह गरमी जाना चाहता है, गर्म पेयों उसकी बीमारी तथा गर्म बोतलके प्रयोगसे जो दर्द और कष्टोंको घटाता है घट जाती है।

इन तीनों दवाओंकी प्रकृति शीतांग और मृत्युकी ओर है। अ फिर हिरुक्ति करनी पड़ती है'—अकड़नवाली प्रकृतिके रोगियोंके लिये क्यूप्रम, अत्यधिक ठण्डापन और कुछ-न-कुछ सूखापनकी प्रकृतिके रोगियोंके लिये **कैम्फर** और जब **बहुत ज्यादा** पसीना, वमन और दस्तका दिखाव रहता है तो **वेरेट्रम**का प्रयोग होता है। यह याद रखनेके लिये बहुत कम है, पर इसके सहारे आप विश्वासके साथ हैजाकी महामारीका सामना कर सकते है।

हैजा जैसी अवस्थाओंकी और भी दवाएँ, जिनका क्यूप्रमसे सम्बन्ध है और जिनपर ध्यान देना चाहिये। **पोडोफाइलम**में ऐंठन है, खासकर आँतोंमें। इसमें बिना किसी दर्दके झोंकसे दस्त आते हैं, साथ ही कै भी होती है और इसीलिये यह अव्यापक हैजा (Cholera morbus) में उपयोगी होता है।

पोडोफाइलममें प्रचण्ड मरोड़ होता है, इससे रोगोको ऐसा मालूम होता है, मानो आँतोंमे गाठें बाँधी जा रही है। पानी जैसा पतला पीला दस्त होता है और यदि कुछ समय बाद उसको परीक्षा की जाती है, तो ऐसा मालूम होता है, कि पीसा हुआ अन्नका दाना उसमें मिला हुआ है। भयङ्कर दुर्गन्ध रहती है, **पोडोफाइलम**के मलकी तरह उसमें गन्ध रहती है। यदि आप यह कहें, कि उसमें सड़े मासकी तरह गन्ध आती हैं, तो यह आंशिक उपमा होती है, यह बिल्कुल मुर्देकी तरह भी नहीं होती, पर भयङ्कर बदबू और चुभनेवाली बू रहती है। पाखाना झोंकसे बहुत ज्यादा आता है और इसके साथ ही भयङ्कर सुस्ती रहती है। माता कहती हैं—"यह आश्चर्यकी बात है, कि इतना मल कहाँसे

आता है।" जब वह बच्चे या बालकसे सुस्त करनेवाले अति मलका वर्णन करती है। मल झाकसे निकलकर बह जाता है—देरतक होता रहता है। इसके साथ ही समस्त तलपेटमें खालीपन, धँस जानेका भाव, मृत्युकी तरह खालीपन रहता है। कूप्रमके सम्बन्धमें विचार करते हुए **फास्फोरस**पर भी ध्यान देना चाहिये। इसमें भी आँतोंमें मरोड होता है, क्षय करनेवाला अतिसार रहता है और मृत्युकी तरह सुस्ती रहती है, पर साधारणत इसके साथ त्वचा गर्म रहती है, भीतरी जलन रहती है, पेटमें जो सामान जाता है, वह गडगडाहटके साथ, ज्योंही वे पेटमें पहुँचते हैं गडगडाने लगते हैं और आँतोंकी राहसे बराबर गडगडाते हुए जाते हैं। पानी पीनेके साथ ही गडगडाहटके साथ आँतोंकी राहसे निकल जाना चाहता है। अब कूप्रममें यह गडगडाहट कण्ठमें आरम्भ होती है, रोगी गडगडाहटके साथ ही निगलता है। निगलनेके समय अन्ननलीमें गडगडाहट।

ऐंठन, झटका, कम्पन और चर्मके नीलापनके साथ समूचे शरीरमें ऐंठनकी तरह मरोड। समूचे द्वार-आवरण और पेशियाँ अकडी रहती हैं, सभी क्रियाएँ अनियमित, शृङ्खला-हीन और अकडन-भरी ताँबेका ज़हर फैलनेपर हो जाती हैं। हमलोग कूप्रमके प्रत्येक अंश अध्ययन कर रहे हैं, इसीलिये उसे ध्यानमें रखिये। उद्भेदोंका दबना या भीतर बैठ जाना, इसके साथ ही अतिसार और अकडन, कभी-कभी केवल अकडन किसी खसडा या आरक्त ज्वरके शरीरपरके दाने सर्दी या हवाका झोंक लगकर दब गये हुए और इसी वजहसे टङ्कार पैदा हुए रोगीपर ध्यान दे। वह **जिङ्कम** और कूप्रम, कभी-कभी **ब्रायोनिया**का रोगी भी होता है, पर विशेषकर **जिङ्कम** और कूप्रमका होता है। एकाएक आरक्त ज्वर दबकर, पेशाब रुकनेके साथ, नर्त्तन रोग प्रभृतिसे प्रत्यङ्गोंकी ऐंठन। बच्चेकी पेशियोंका मरोड, पिण्डलियोंका मरोड, समूचे शरीरमें मरोड दबे हुए उद्भेद। बहुत दिनोंसे जारी रहनेवाला कोई स्राव। वह व्यक्ति उत्तेजनासे कमजोर और क्लान्त हो पडा है, पर इस स्रावने ही उसे मुश्किलसे जीवित बना रखा है। वह क्रमश दुर्बल हो गया है, पर यह इसीलिये अबतक जीवित है, कि स्राव जारी है। इसने उसे एक

रक्षा-कवच दे रखा है। यदि इसे एकाएक रोक दिया जाये, तो टङ्कार हो जायगा। यह कूप्रमकी तरह है। किसी स्त्रीको बहुत दिनोंसे अत्यधिक श्वेत-प्रदर जारी है और कोई बुद्धिमान डाक्टर कहता है, कि तुम्हें इञ्जेक्शन लेना ही चाहिये और इस उपायसे वह यह स्राव कुछ दिनोंके लिये रोक लेती है। गुल्म-वायु-सम्बन्धी अकड़न, मरोड़ और पेशियोंका फटना पैदा हो जायगा, कुहनी और अगूठेमें खिंचाव होने लगेगा। पुराने जखमोंसे स्राव। भगन्दर दबा दिया गया हुआ।

जो स्राव एकाएक दबा दिया है और उसके बाद अकड़न उत्पन्न हो गई है, उसे कूप्रम फिरसे जारी कर देगा। यह अकड़नको रोककर स्रावको फिरसे जारी कर देता है। इसमें अस्थि-क्षत (Caries) है। वार्द्धक्य-जनित सड़न (Senile gangrene) है या वह सड़न रोग है, जो बुढ़ापेमें होता है। वृद्ध झुर्रियाँ-भरे अस्सी-नब्बे वर्षके व्यक्ति, जिनकी अगुलियों और अगूठोंपर काले धब्बे पड़ जाते हैं, कमजोर रक्तका दौरान।

कूप्रमके रोगीके स्नायु सदा बहुत ज्यादा खिंचावके कारण सभी समय बहुत क्लान्त रहते हैं। वह उड़ जाना चाहता है, कुछ भयङ्कर कार्य करना चाहता है। भावुकता। बाध्य होकर कुछ करना पड़ता है, बेचैन और इधर-उधर घूमा करता है—लगातार बनी रहनेवाली बेचैनी, स्नायविक कम्पन, हमेशा थका हुआ। पेशियोंकी बहुत अधिक कमजोरी और अकड़न न रहनेपर भी शरीरकी शिथिलता। नींदमें ऐंठन, झटका और चौंक उठना। मस्तिष्ककी बीमारीके साथ दाँत पीसना। एकाएक प्रदाह रुक जाता है और आपको आश्चर्य होगा, कि क्या हो गया? एकाएक उन्माद उत्पन्न हो जाता है, प्रलाप, अकड़न और अन्मापन आ जाता है। - आश्चर्य-जनक आकस्मिकताके साथ मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय और प्रदाह पैदा हो जाता है। रोगका स्थान बदल देता है, शरीरके एक अशसे पूर्ण-रूपमें शरीरके दूसरे अंशमें रोग चला जाता है। उद्भेद बैठ जानेके कारण या अतिसार रोधके कारण या स्राव रोधके कारण भी यही दशा हो सकती है और यह मस्तिष्कमें चला जाता है, मनपर प्रभाव जमाता है और उन्माद उत्पन्न कर देता है। एक वहशत-भरा सक्रिय उन्मादकी तरह प्रलाप। कूप्रमकी क्रिया धीमी नहीं होती, हर जगह प्रचण्डता दिखाई देती है। इसके अतिसारमें प्रचण्डता, वमनमें तीव्रता रहती है। इसकी आक्षेपिक क्रियामें भी प्रचण्डता रहती है।

इसके उन्माद और प्रलापमें अद्भुत और प्रचण्ड चीजें दिखाई देती हैं। यह हिस्टीरियाका मरोड़ या हिस्टीरियाकी प्रकृति एक रात या एक दिनमें सेंट-बाइटसडैन्स (नर्त्तन रोगमें) परिवर्त्तित हो जा सकती है और फिर इस तरह चली जा सकती है, मानो कुछ भी नहीं हुआ है। ऐसी ही आकस्मिकतासे यह अपनी चलन बदल देती है। कूप्रममें साधारणतः यह लगातार परिवर्त्तन होना नहीं मालूम हुआ है। सार्वाङ्गिक आक्षेपिक रोग। आक्षेपिक खाँसी, समूचे शरीरमें अकड़न। चेहरा बैंगनी हो जाता है, उसका श्वास फूलने लगता है, श्वास रोध हो जाता है। माता सोचती है, कि बच्चा अब कभी नहीं जी उठेगा। वक्षकी अकड़न, स्वर-यन्त्रकी अकड़न, सम्पूर्ण श्वास-यन्त्रकी इस ढङ्गकी अकड़न, कि बच्चा मृत्युकी श्वास लेता मालूम होता है।

हूपिङ्ग खाँसी। कुकुर खाँसीके हरेक दौरेके साथ यह भयङ्कर आक्षेपिक दशा आ जाती है, यह आक्षेपिक खाँसी है। पेशियोंका हिल उठना। हिस्टीरियाकी धातुगत प्रकृतिमें जैसा खिंचाव प्राप्त होता है, वैसे ही सब तरहके खिंचावके साथ कूप्रममें सब प्रकारकी अकड़न रहती है, सूतिकाक्षेप। इस ढङ्गका सङ्कोचन, जिसमें अङ्ग पहले झुक पड़ेंगे फिर तनेंगे।—एक तरहका पर्यायक्रमसे झुकना और फिर फैलना। बच्चोंमें आप देखेंगे, कि एकाएक पैर बड़े प्रचण्ड वेगसे झटका देते हैं, फिर बड़े वेगसे ऊपर तलपेटकी ओर आते हैं और फिर बाहरकी ओर फैलते हैं। ऐसी लक्षणावली किसी दूसरी दवामें प्राप्त करना मुश्किल है। टैबेकममें यह लक्षण है, पर बहुत-सी दूसरी दवाओंमें नहीं है। कूप्रममें ही साधारणतया झुकने और फैलानेका यह लक्षण है। अङ्गोंकी अकड़न, ऐंठन तथा पेशियोंका झटका। हमलोग लक्षण-चित्रका एक अंश एक भागमें और दूसरा दूसरे भागमें प्राप्त करते हैं।

मस्तकमें भयानक रक्त-सञ्चय और माथेमें प्रचण्ड दर्द। शिखर-देशमें टनकनेकी तरह दर्द, मस्तक शिखर-देशमें तेज दर्द, कुचल जानेकी तरह दर्द। मस्तक-शिखरमें रेंगनेकी तरह अनुभूति, कनपटीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह (Meningitis), मृगीका दौरा होनेके बाद सर-दर्द। शीत आ जानेके लक्षणके साथ मस्तिष्कका पक्षाघात। अन्य शरीर-यन्त्रको छोड़कर मस्तिष्कपर रोगका आक्रमण हो जाता है।

चेहरेके सम्बन्धमें, अकड़न, आँखोंका फड़कना, पलकोंका ऐंठना। आँखोंमें कुचल जानेकी तरह दर्द, आँखकी पेशीकी इस तरहकी अकड़न, कि आँखें ऐंठती और झटका खाती हैं, पहले एक पार्श्वसे फिर दूसरी तरफसे। आँखोंका चक्कर खाना। आँखें आक्षेपिक रूपसे बन्द। "इस तरह बन्द कि वे चिपकी-सी मालूम होती हैं।" आँखके चारों तरफकी अस्थि-आवरक-झिल्ली और अश्रु स्रावी ग्रन्थिके कौषिक-तन्तुका प्रदाह। कनीनिका (Cornea) में जखमके दाग। चेहरा और ओंठ नीले। हूपिङ्ग खाँसी और अकड़नमें चेहरा बैंगनी हो जाता है, ओंठ नीले रहते हैं।

जीभका प्रदाह, जीभका पक्षाघात। टङ्कार होनेके बाद कूप्रममें पक्षाघात हो जाना कोई असाधारण बात नहीं है। ऐसा मालूम होता है, कि टङ्कारकी प्रचण्डता एक प्रकारकी प्रतिक्रिया और पाक्षाघातिक दुर्बलता, सुन्नपन और सुरसुरी तथा हिलने-डोलनेकी शक्तिका क्षय उत्पन्न कर देता है। "कण्ठकी अकड़नके कारण वाचा-शक्तिको रोक देता है। निगलनेपर ऐसी अनुभूति होती है, मानो सङ्कटापन्न दशा आ गयी है। ठण्डे पेयोंकी तेज़ प्यास।" ठण्डा पानी पीनेपर बहुत-सी तकलीफें घट जाया करती हैं, कभी-कभी ठण्डा पानी पीनेपर अकड़न नर्म पड़ जाया करती है। कभी-कभी ठण्डी हवा श्वासके साथ खींचनेपर खाँसी पैदा हो जाती है, पर ठण्डा पानी पीनेपर काक्कस कैक्टाई (Coccus Cacti) की तरह रुक जाती है। "गर्म खाद्य और पेयोंकी इच्छा, जल्दी जल्दी खाता है।" दूध पीनेके कारण अजीर्ण।

इसके अलावा मिचली, वमन और अतिसार कुछ-न-कुछ इस अकड़नके साथ मिले ही रहते हैं, पाकाशयकी अकड़न, अतिसार और वमनके साथ वक्षका आक्षेप। पिण्डलियों, अंगुलियों और अंगूठोंका, घुटनेका मरोड़। "पाकाशयमें दबाव।" पाकाशय और आँतोंमें समय बाँधकर मरोड़ होता है, बँधे समयपर मरोड़ होना, प्रत्येक दो सप्ताह बाद और ठीक नियमित भावसे होनेवाले प्रचण्ड मरोड़के रूपका-शूलका दर्द इसने आरोग्य कर दिया है। इसमें पाकाशयमें दर्द होता है तथा अग्रखण्ड बन्धनके पास इस तरहका दर्द होता है, मानो जान निकल जायगी। यदि इसे जल्दी नहीं हटाया जाता, तो वह थोड़ी ही देरमें निश्चय ही मर जायगा। वक्षके आर-पार सङ्कोचन, श्वास-रोधका भाव, पैरोंमें मरोड़। कूप्रमकी क्रिया जीवनपर गहराईतक होती है तथा इसने कितनी ही बार पुरानी हिस्टीरियाके रोगियोंको इस तरह

पकड़ रखा है, कि इसने बहुत ही कम समयमें हिस्टीरियाकी मरोड़की प्रवृत्ति भी एकदम दूर कर दी है। खासकर क्रूप्रमके मरोड़के आरम्भमें अंगूठेका नीचेकी ओर खिंचना आरम्भ हो जाता है। कठिनतासे वे ऊपर उठाये जा सकते हैं, वे फिर पीछे खिंच जायेंगे और तब उनपर अंगुलियाँ आ बैठेंगी और कसकर खींचने लगेंगी। यह कष्टदायक है। ऐसी अकड़नवाले बच्चोंमें तथा ऐसी अकड़नवाले हिस्टीरियाके रोगियोंमें क्रूप्रम जीवनमें गहराईतक क्रिया करता है तथा टङ्कार और मरोड़को प्रवणता भी दूर कर देता है। मूत्रसार-विकारके कारण अकड़न, पेशाब रुकने या थोड़ा होनेके साथ मरोड़, मूत्राशयमें पेशाब नहीं रहता। ऋतु-स्राव आरम्भ होनेवाली जवान लड़कियोंमें, प्रत्यङ्गोंमें भयानक मरोड़, तलपेटमें मरोड़, अतिसार, जरायुमें मरोड़ रहता है। प्रत्येक रज-स्राव-कालमें मृगीकी तरह अकड़न होती है। ऋतु-स्रावके पहले या समय या दब जानेके बाद, प्रचण्ड, असह्य मरोड़ तलपेटमें होता है। इस ढङ्गके रोगी असाधारण नहीं हैं। वयःसन्धि-कालकी लड़कियाँ नहाने जाती हैं जब उनकी माताएँ कुछ अधिक लज्जाशील, कुछ अधिक स्पर्श-असहिष्णु रहती हैं तथा अपनी कन्याओंसे, जिसकी वे आशा करती हैं, नहीं कह दिये रहती हैं तथा किसी-किसी समय ठण्डे पानीसे नहानेके विषयमें खोज-खबर नहीं रखती हैं। मासिक रज-स्राव आरम्भ होता है। ठण्डे पानीसे नहाकर वह उस स्रावको रोक देती है और अकड़न पैदा हो जाती है। यह क्रूप्रमसे सम्बन्ध रखता है, इसे हिस्टीरियाकी अकड़न कहा जा सकता है। वे बहुतकर हिस्टीरिया-सम्बन्धी अकड़नका रूप धारण करेंगी, ये नर्त्तन रोग (*Chorea*) का रूप भी धरण कर सकती हैं। अकड़नके बदले यह प्रचण्ड प्रलापके साथ मस्तिष्कके रक्त-सञ्चयका भी रूप धारण कर सकता है। इसके अलावा स्राव रुक जानेके बाद, पसीना होने बाद, जोरका रज-स्राव नहीं होता और अकड़न पैदा हो जाती है। ऋतु-स्राव-कालमें बारम्बार अकड़नका दौरा होना। रक्त-स्वल्पता रहनेपर, क्रूप्रम इसकी अचरज-भरी दवा नहीं मानी जाती, पर इसमें हरित्पाण्डु-रोग (Chlorosis) है। यह एक गहराइतक क्रिया करनेवाली दवा है। यह बड़ी शक्तिके साथ सम्पूर्ण ऐच्छिक सस्थान, इच्छा और अनिच्छाको आक्रान्त करती है। यह उन लड़कियोंके लिये ठीक बैठती है, जो अपने ही ढङ्गके काम करती हैं, जिनपर कभी शासन नहीं हुआ है और जब वे बड़ी

हो जाती है तथा वय सन्धि-कालमें जा पहुँचती है और किसी तरहके शासनमें उन्हें रहना पड़ता है या जो कभी नारी नहीं बन सकी है, उन्हें यह पागलपनका दौरा होता है, मरोड़ होता है। कूप्रम कभी-कभी उन्हें होम-हवासवाली बना देगा। इस तरह यह घृणा और प्रेममें भी ठीक बैठता है। यह प्रधानतया ऐच्छिक-संस्थानसे ही सम्बन्ध रखता है।

आक्षेपिक श्वास-क्रिया, बहुत अधिक श्वास-कष्ट, दमाकी तरह श्वास-प्रश्वास। आक्षेपिक दमा तथा अति प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसीका आक्रमण। "सूखी, कड़ी, कठिन खाँसी, वक्षमें घरघराहट, अकड़न। सूखी आक्षेपिक खाँसी तबतक आती है, जबतक उसका श्वास नहीं रोध हो जाता। चेहरा लाल या बैंगनी रहता है।

साईक्लामेन।

(Cyclamen)

हिलने-डोलनेसे अनिच्छा, इतनेपर भी **हिलना-डोलना** रोगिनीका दर्द और बेचैनी **घटा देता** है।

खुली हवाकी इच्छा न होना, इतनेपर भी खुली हवा कुछ लक्षण, खासकर नाककी सर्दी और खाँसीका लक्षण घटा देती है।

इन्द्रियानुभूतिकी स्पष्ट सुस्ती और खास-खास इन्द्रियोंकी तो इसके चित्रकी एक अजूबा अंश है।

हरित्पाण्डु-रोग, अनियमित रज स्राव और कलेजा धड़कना।

सुई गड़नेकी तरह दर्द।

परिश्रम करनेपर कमजोरी और रोग-वृद्धि।

थुलथुली पेशियाँ।

टहलनेपर बहुतसे लक्षण घट जाते हैं।

रातमें बहुत ज्यादा बेचैन।

बहुत आलस्य।

शामको कमजोरी, चलने-फिरनेपर घट जाती है।

सर्दी और ठण्डी हवा सहन नहीं होती।

अत्यधिक गर्म हो जानेपर पैदा हुए उपसर्ग।

भावभङ्गीका परिवर्त्तन मानसिक दशाका एक आश्चर्यजनक निदर्शन है।

कमजोर याददाश्तके साथ विचारोंका बहुत अधिक प्रवाह।

चिड़चिड़ापनके साथ पर्यायक्रमसे आनन्दका भाव।

अत्यधिक क्षोभ, एकाएक गम्भीरता या चिड़चिड़ापनमें परिवर्त्तित हो जाता है।

रञ्ज और भयके कारण वह लगातार मानसिक अशान्तिमें रहती है।

मनकी सुस्ती उसे मानसिक परिश्रमसे रोकती है।

विचारोंमें तर्क, एकान्त खोजता है, भविष्यकी चिन्ता किया करता है।

असम्बद्ध उत्तर देता है, मनकी विशृङ्खलता।

काम करनेकी इच्छा न होना और खुली हवाका भय।

गर्म कमरेमें और एकान्तमें रहना चाहता है।

बहुत देरतक चुपचाप बैठा रहता है। कम्पनके साथ उत्तेजना।

उदासी मानो रोगिनीने किसीका अपकार किया है। (**आरम**)

आँसुओंसे भरी और अपने उस रञ्जपर विचार किया करती है, जो एकदम खयाली होता है।

सोचती है, कि वह संसारमें अकेली है और हरेक उसका पीछा कर रहा है। (**चायना**)।

जिद्दी और बुद्धि सम्पन्न। वह दृढतासे कमजोर होती जाती है, बेहोशीके दौरे होते हैं, वह पीली और रक्त-स्वल्प हो जाती है।

यदि स्वल्प-रज या चक्षु-रोगके साथ ये लक्षण रहें तो बड़े ही महत्व-पूर्ण हैं।

खुली हवामें टहलनेके समय सरमें चक्कर आना, चीजें चक्करके आकारमें घूमती हैं, कमरेमें तथा बैठे रहनेपर घट जाती हैं। आँखके सामनेकी सभी चीजें अन्धकारमय हो जाती है और वह इस तरह गिर जाती है, मानो मूर्च्छित हो गयी है।

माथेका दर्द संज्ञाहीन कर देनेवाला होता है और उसे डरा देता है, कि उसका ज्ञान न नष्ट हो जाये। छेदने, झटका देने, दबानेकी तरह ललाट और कनपटीमें दर्द। ललाटमें भयङ्कर दर्द। दर्दवाली करवट या पीठके बल सोनेपर दर्द बदतर हो जाता है। एक पार्श्वका दर्द। सवेरे और शामको दर्द, वमनसे घट जाता है, खुली हवामें और हिलने-डोलनेपर घट जाता है। दर्दके साथ अन्धकारमय दृष्टि। मस्तक-शिखरमें दबाव, मानो मस्तिष्क किसी वस्त्रमें लपेटा हुआ है, जिससे उसकी बुद्धि नष्ट हो जा सकती है। सवेरे सोकर उठनेपर आँखके सामने चिनगारियोंके साथ सर-दर्द। माथेमें धमक। माथेमें खूनका दौरान हो जाना, घबड़ाहट और चित्त-विभ्रम, दृष्टि अन्धकारमय, सरमें चक्कर, भोजनके बाद सार्वाङ्गिक शीतलता। ठण्डे प्रयोगसे सर-दर्द घट जाता है। विचलित पाकाशयके साथ सर-दर्द। माथा ऐसा मालूम होता है, मानो उसपर खोपड़ीकी एक टोपी रखी है। मस्तक त्वचामें फाड़नेकी तरह दर्द।

दृष्टि-क्षेत्रमें धब्बे, कुहरा, नीले रङ्ग, चिनगारियाँ, चमकीली चीजें दिखाई देती हैं, बहुत तरहके रङ्ग—आभा पीली और फिर हरी, आगकी चिनगारियाँ, धुआँ, रोशनीके चारों तरफ घेरा, काले चकत्ते या मक्खियाँ। दृष्टिका धुँधलापन। द्वित्व दृष्टि। एक ही रेखामें डेरा देखना (Convergent strabismus) पुतलियाँ फैली। अर्द्धदृष्टि-पथका अन्धापन। ताप और जलन। पलकें शोथ-ग्रस्त। ऊपरी पलकोंकी सूजन। पलकोंकी सूजन और खुजली। सर-दर्दके समय धुँधली दृष्टि। बिगड़ी दृष्टि, गन्ध, घ्राण और स्वाद।

श्रवण-शक्तिका धीमापन। कानमें भनभनाहट, घण्टोंकी आवाज़ और गरज। खींचनका दर्द।

घ्राण-ज्ञान घटा हुआ। नाकमें सूखापन। सूखी या बहनेवाली सर्दी, गर्म कमरेमें बदतर हो जाती है, खुली हवा और ठण्डे कमरेमें अच्छी रहती है, गर्म कमरेमें छींक और पानीकी तरह स्राव, खुली हवामें एकदम बन्द हो जाता है। खुली हवामें घूमना रोगीको अति आरामप्रद कार्य मालूम हुआ करता है। सर्दीके समय नाककी हड्डीमें दबावका दर्द। बहुत उत्तप्त हो जाने या बहुत गर्मीसे सर्दी लग जाती है।

पीला, रोगियल चेहरा, स्त्रियोंकी आँखोंके नीचे कालापन। सिकुड़ा हुआ ललाट—झुर्रियाँ-भरा।

सूखे ओठ। ऊपरी ओठका सुन्नपन।

छेदने, सुई गड़ने या फाड़नेकी तरह दाँतमें दर्द, रातमें दाँतमें झटका, स्वाद नष्ट हो जाता है या बदल जाता है। स्वादहीन, बुरा, सड़ा, खट्टा, **सभी पदार्थोंका स्वाद नमकीन** मालूम होता है। जीभ सफेद या पीलापन लिये। जीभपर जलन-भरे छाले। **लार बहना बढ़ जाता है।** जीभकी नोकमें जलन। **लारका स्वाद नमकीन** रहता है। मुँहमें लसदार श्लेष्मा।

कण्ठमें जलन, सूखापन और खरोंच।

भूख न लगना, यहाँतक कि खाद्य पदार्थसे अनिच्छा, प्यासका न रहना। सिर्फ ज्वर-कालमें प्यास लगती है। लेमोनेडकी इच्छा, **नाइट्रिक-एसिड, बेलेडोना, सैबाइना**, रोटी, मक्खन और चर्बीकी चीजें खानेसे अनिच्छा, पर न पचनेवाली चीजें खानेकी इच्छा करता है, मांससे घृणा, पर सार्डिन नामक समुद्री मछली खानेकी इच्छा, पहला ग्रास खाने बाद भूख (लाइकों) और इसके बाद खाद्यसे घृणा। पाकाशय कमजोर। भोजनके बाद मिचली। सूअरका मांस सहन नहीं होता। पाकाशयके लक्षण बहुत कुछ **पल्सेटिला**की तरह रहते हैं। काफी पीनेके बाद लक्षण बदतर हो जाते हैं। भोजनके बाद वमन, सवेरेके वक्त वमन, पानी पीनेकी तरह श्लेष्माका वमन। डकार, पाकाशयमें यन्त्रणा तथा कण्ठ नलीमें जलन, टहलते रहनेपर अच्छा रहता है, भरापन, मानो उसने बहुत खा लिया है, भोजनके बाद पाकाशयमें भार। पाकाशयमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

तलपेटमें शूलकी तरह दर्द, चलते रहनेपर घट जाता है। समूचे तलपेटमें, यहाँतक कि कुक्षिदेशपर तनाव। ग्रामको चबानेकी तरह दर्द। भोजनके बाद चबानेकी तरह दर्द, तलपेटमें गुड़गुड़ाहट और गड़गड़ाहट। रातके समय आवेगिक मरोड़, टहलते रहनेपर घट जाता है। तलपेट और यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

काफी पीने बाद अतिसार। हरित्पाण्डु-रोग-ग्रस्त स्त्रियाँ, जिन्हें वमनके साथ सर-दर्द और मासिक गड़बड़ी रहती है, उनका अतिसार। पानीकी

तरह, बड़े झोंकके दस्त। बिना गन्धके, भूरे, पीले दस्त, शामको अतिसार। कब्ज, मल कड़ा, मिचली, पाखाना होने बाद शूलका दर्द। पाखाना होने बाद शूलका दर्द और पाखाना लग आना, खूनी बवासीर। मलद्वारमें खींचन और दबावकी तरह दर्द, मानो वह स्थान पक जायगा।

बार-बार पेशाब लगना, वृथा ही पेशाब लगना। पेशाब बहुत ज्यादा और पानीकी तरह। धुएँकी तरह तली, रूखे उपमास। पेशाब करनेकी इच्छाके साथ मूत्रनलीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द।

पुरुषोंकी कामेच्छा घट जाती है, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि, सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ उपदाहित (Irritable) रहती है, बार-बार पाखाना-पेशाब लगता है (**नक्स**)।

ऋतु-स्राव बहुत जल्दी-जल्दी होता है, अनियमित या रुका रहता है, बहुत ज्यादा, बहुत दिनोंतक जारी रहना या बहुत थोड़ा होना। जब खून ज्यादा रहता है, तो मानसिक लक्षण अच्छे रहते हैं। स्राव काला और थक्का-थक्का होता है। ऋतु-स्राव-कालमें प्रसवकी तरह दर्द, यह पीठमें कमरके पास होता है और श्रोणिदेशके दोनों ओर नीचे उतरता है। जरायुसे रक्त-स्राव। खुली हवाका भय। ऋतु-स्राव रुका हुआ, हृत्पिण्डकी धड़कन, रोना, श्वास-रोधकी इच्छा न होना और खुली हवासे भय। माथेमें खूनका दौरान और बहुत थोड़ा रज:स्राव। अत्यधिक परिश्रम या बहुत उत्तप्त हो जानेके कारण ऋतु-स्राव रुका हुआ। मासिक रज:-स्रावके कालमें मूर्च्छा। रज स्राव होने बाद स्तनमें दूध आ जाना। दूध पिलानेके बादके उपसर्ग (**चायना**)।

रातके समय स्वरयन्त्रमें बहुत खखार, गाढ़ा सफेद श्लेष्मा निकलना। स्वरयन्त्र और टेंटुआमें सुरसुरी। वक्षमें दबाव। श्वास-रोध करनेवाली खाँसी, टेंटुआमें खखारने और सूखापनके कारण हो जाती है। निद्राकालमें खाँसी, स्वरयन्त्रमें सूखापन और सङ्कोचन रहनेके कारण। खाँसी खुली हवामें, यहाँतक कि ठण्डी हवामें घट जाती है।

वक्षोस्थिके मध्य भागमें दबाव, वक्षमें कमजोरी। वक्ष तथा हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। फाड़ने और सुई गड़नेकी तरह दर्द तथा श्वास-लघुता, हिलने-डोलने और आराम करनेके समय हो जाती है।

कलेजा धडकना और रक्त-स्वल्पता-सम्बन्धी मरमर शब्द, हृत्पिण्डकी कम्पनशील क्रिया, बहुत ज्यादा आलस्य। नाडी कमजोर। ऐसी अनुभूति मानो स्तन-वृन्तसे हवाकी धार निकलती है। स्तन फूले, अगर्भवती स्त्रियोंके स्तनसे भी दूध आ जाना। स्तन फूले और ऋतु-स्रावके बाद बहुत कडे हो जाते हैं।

कडापनके साथ गर्दनमें खींचनका दर्द, पीठकी ओर एकाएक दर्द होता है और कन्धा पीछेकी ओर खींचनेपर घट जाता है। दाहिने गुर्देके प्रदेशमें सुई गडनेकी तरह दर्द, श्वास लेनेके समय बदतर हो जाता है। बैठनेके समय पीठके निचले भागमें दर्द, उठनेपर रुक जाता है।

प्रत्यङ्गोंमें फाडने और खींचनेकी तरह दर्द, चर्मकी स्पर्श-असहिष्णुता, थुलथुली पेशियाँ। ऊपरी अङ्गोंमें फाडने और खींचनका दर्द। हाथोंमें इस तरहकी कमजोरी मालूम होना, मानो रोगिनी हाथमें जो चीज़ पकडे है, वह गिर जायगी। लिखनेवालोंका हाथ काँपना। पैरकी प्रसारिणी पेशीमें खींचनकी तरह दर्द, एँडोमें जलनका यन्त्रणादायक दर्द। चलनेके बाद अंगूठे भरे-से मालूम होते हैं। प्रत्यङ्गोंमें कमजोरी।

आरामप्रद नींद नहीं आती, चिन्ताजनक स्वप्नोंसे गडबडा जाती है, डरावने विस्तृत सपने, बेचैन नींद। रातमें देरसे नींद आती है। बहुत तडके जागता है, पर देरसे सोना चाहता है। रातमें कलेजा दबानेके सपने। सवेरे जागता है, पर बहुत ही क्लान्त और निद्रालु, उठ नहीं सकता। स्वप्न-दोष हो जाता है।

जाडा, ज्वर और पसीना, गर्म कपडोंसे शीत नहीं घटता। ऋतु-स्राव-कालमें सर्दीलापन। दोपहरके पहले या शामको जाडा लगना। शामको जाडेकी प्रधानता रहती है। चेहरा गर्म होने बाद जाडा आरम्भ होता है। शीत और ताप पर्यायक्रमसे होते हैं। सम्पूर्ण शरीरमें तापकी अनुभूति, खासकर चेहरा और हाथोंमें, शिराओंके फूलनेके साथ ताप (चायना)। भोजनके बाद सार्वाङ्गिक उष्णता। निद्राकालमें, रातमें पसीना बदबूदार। कभी-कभी शरीरके निम्न-भागमें पसीना।

रातमें बिछावनपर खुजली। खुजलाने बाद या खुजलानेपर या जगह बदलनेपर सुरसुरापन।

डिजिटेलिस।

(Digitalis)

प्राचीन चिकित्सा-प्रणाली (एलोपैथी) की मेटिरिया-मेडिकाकी अन्य किसी भी दवाकी अपेक्षा इस दवाने विशेष नुकसान पहुँचाया है। जिस किसी रोगीके कलेजेकी चाल तेज़ रहती है या हृत्पिण्ड सम्बन्धी कुछ भी रहता है, उसे ही डिजिटेलिस दिया जाता था। इसने किसी भी अन्य दवाकी अपेक्षा अधिक जानें ली हैं। यदि हृत्पिण्डकी चाल तेज़ रहनेपर इसका प्रयोग होगा, तो तुरन्त ही एक विचित्र ढङ्गका पक्षाघात उत्पन्न कर देगा, उस समय हृत्पिण्डकी समता—रचक पट्टिया टूट जानेके कारण, अभावकी पूर्त्ति बन्द हो जाती है, रोगी धँसने लगता है और अन्तमें मर जाता है। वे नहीं जानते कि ज्वर निमोनिया तथा अन्य नयी बीमारियाँ भोगनेवाले बहुतसे रोगी अधिक दिनोंतक जीवित रहते, यदि इसका दवाके रूपमें प्रयोग नहीं रहता, यही मूल अर्कके रूप। बहुत बून्दोंकी मात्रामें, जैसा कि वे इसका प्रयोग करते हैं, जबतक कि हृत्पिण्ड सुस्त नहीं पड जाता। वे इसे शान्तिकर—उपशमकारी कहते हैं। हाँ यह शान्तिकर हैं, यह रोगीको बहुत शान्त बना देता है। आपने देखा होगा कि किसी मुर्दाफरोशके हाथोंमें सर्वोत्तम वस्त्र पहने रोगी कैसा शान्त दिखाई देता है। यही डिजिटेलिस करता है। इसी ढङ्गसे ऐलोपैथोंके हाथमें यह उपशामक—शान्तिदायक है। कोई होमियोपैथिक चिकित्सक कभी नाडीकी गति घटानेके लिये दवा नही देता। वह सम्पूर्ण रोगीके लिये दवा लिखता है और हृत्पिण्डकी क्रिया अपने आप ही अपना काम कर लेती है।

डिजिटेलिसका ज्वरमें बहुत कम व्यवहार होता है। नाडी तेज़ रहनेपर इसका निर्देश होनेके बदले, उस अवस्थामें निर्देश होता है, जब नाडी धीमी रहती है। ऐलोपैथोवाले इसे नाडीकी तेजी घटानेके लिये उस अवस्थामें प्रयोग करते है, जब नाडीकी गति तीव्र रहती है। यदि अच्छे आदमियोंको यह दिया जाये, तो नाडीकी गति यह धीमी बना देगा और जब किसी रोगी मनुष्यको यह दिया जाता है, तो नाडी धीमी रहती ही है।

यह यकृतमें बहुत गड़बड़ी उत्पन्न कर देता है। "यकृतमें रक्त सञ्चय और उसकी विवृद्धि, यकृतमें यन्त्रणा।" यकृतके पास कोमलता,—पर इस कालमें नाडी बहुत धीमी रहती है। यह आँतोंको बहुत शिथिल बना देता है, यकृतमें अक्रियता उत्पन्न करता है और मल पित्त-रहित, हलके रङ्गका और प्रोटीनकी तरह होता है और नाडी धीमी रहती है। इसके साथ ही कामला मिला लीजिये और आपको डिजिटेलिसकी पूरी-पूरी तस्वीर प्राप्त हो जायगी। धीमी नाडी, यकृतमें अस्थिरता पीले मलके साथ कामला रोग और यदि आपने डिजिटेलिसका नाम भी नहीं सुना और देखा है, तो भी आप इसे मुश्किलसे छोड़ सकेंगे। अब आप उसमें छोटे छोटे लक्षण जोड़ सकते हैं, पर यह चीज़का स्वरूप नहीं बदलता। यह डिजिटेलिस है।

डिजिटेलिसका हृत्पिण्ड, डिजिटेलिसका यकृत और डिजिटेलिसकी आँतोंका एक दूसरा लक्षण-समूह है। पाकाशयमें खालीपन, धँसते जानेका भाव। ऐसा मालूम होता है, मानो वह मर जायगा और खा लेनेपर भी उसे अच्छा नहीं मालूम होता। यह एक स्नायविक, मृत्युकी तरह धँसते जाना है, जो डिजिटेलिसकी हृत्पिण्डकी तकलीफोंके साथ रहती है। डिजिटेलिसमें बहुत अधिक स्नायविक अवसन्नता देखकर आपको आश्चर्य न होना चाहिये। बेचैनी और बहुत ज्यादा *स्नायविक दुर्बलता।* "*ऐसा मालूम* होता है, मानो वह टुकड़े-टुकड़े होकर उड़ जायगा। घबड़ाहट। ऐसा अनुभव होता है, मानो कुछ होना चाहता है। "ऐसा मालूम होता है, मानो उसका सम्पूर्ण स्वास्थ्य-विधान घबड़ाहट पूर्ण भावों और बेचैनियोंसे भरा है। आलस्य मूर्च्छा, क्लान्ति और बहुत ही ज्यादा सुस्ती। साधारण-सी उत्तेजनापर भी मूर्च्छा आ जाती है। यह पाकाशयसे आरम्भ होती है, पाकाशय तथा आँतोंमें कमजोरीकी एक खौफनाक अनुभूति।

उसकी नींद भयङ्कर सपने, गला दबानेके सपने और भयसे भरी रहती है, गिर पड़नेके स्वप्न देखता है—हृत्पिण्डकी बीमारीवालोंके लिये यह एक साधारण घटना है। जब नाडी बहुत ही धीमी रहती है, जब यह अनियमित रहती है तो मस्तिष्कमें भी निद्राकालमें अनियमित रूपसे रक्त पहुँचता है तथा एक *अशान्त अवस्था रहती है। बिजलीके झटकेकी तरह,* एक *झटका शरीरके* भीतरसे चला जाता है, भीतरी कपकपीकी तरह ऐंठनकी तरह। एकाएक मास-पेशीका हिल उठना, मानो बिजलीकी एक लहर शरीरके भीतर होकर

चली गयी। धीमी नाडी, मूर्च्छाका भाव और बहुत कमजोरीके साथ इसका रहना। हृत्पिण्डकी बीमारीका दौरा भोगनेवालोंका नीलापन लिये ओठोंका पीलापन—समय-समयपर ऐसा मालूम होता है, मानो नाडी रुक जायगी। चेहरा नीला हो जाता है, अगुलियाँ नीली हो जाती हैं। पीठके बल लेटे रहना चाहता है, बार-बार नीदमें चौंक पडता है। रातमें शरीरका हिल उठना।

हृत्पिण्डके लक्षण बहुत ज्यादा हैं, पर धीमी नाडीकी तरह कोई दूसरा इतने महत्वका नहीं है। रोगके आरम्भमें नाडी धीमी रहती है। अब यह बिजलीकी तरह उडती हुई रह सकती है। वह चिन्तित, बेचैन रहता है, भयङ्कर स्वप्न देखता है तथा पाकाशयमें धँसते जानेका भाव अनुभव करता है—यह डिजिटेलिसकी बढी हुई अवस्थाकी तरह मालूम होता है, पर मैं *यह जानना चाहता हूँ, कि क्या आरम्भमें नाडी धीमी थी?* शायद रोगी स्वयं ही कभी जानता है, पर कोई कहता है, कि आरम्भमें नाडी ४८ थी, यह डिजिटेलिस है। यदि नाडी आरम्भमें तेज़ थी, तो डिजिटेलिसकी बात भी न सोचिये, क्योंकि इससे कोई लाभ न होगा। डिजिटेलिसकी नाडी पहले धीमी रहती है और शायद ऐसी ही कई दिनोंतक रहती है, यहाँतक कि अन्तमें हृत्पिण्ड काँप-काँपकर चलने लगता है। नाडीकी चाल अनियमित, रुक-रुककर रहती है और ऐसा मालूम होता है, कि चलते-चलते रुक जायगी और इसके बाद हमें ये सब अद्भुत प्रदर्शन प्राप्त होते हैं। कमजोरी डिजिटेलिसकी नाडीकी निश्चित प्रकृति है और ये सब चरित्रगत लक्षण इसके साथ ही चलते हैं। पहले यह धीमी रहती है और कभी-कभी सुदृढ। जब बात हृत्पिण्डको आक्रान्त करना चाहता है, उस समय धीमी, सुदृढ नाडी, "प्रचण्ड, पर बहुत तेज़ नाडी नहीं, एकाएक प्रचण्ड वेगसे कलेजा धडकने लगना, साथ ही नाडीकी गति बिगडी।" जरा भी हिलना-डोलना घबडाहट और कलेजेकी धडकन बढा देता है, जब नाडी बहुत धीमी चलती है। कभी-कभी ४० तक नीचे, तो रोगीके सर घुमानेके साथ-ही-साथ नाडी फडकने लगती है तथा उसकी क्रिया बढ जाती है। यदि वह पलङ्गपर करवट बदलता है, तो उसे ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड बन्द हो जायगा। यदि वह चलता-फिरता है, तो उसे समूचे शरीरमें फडकन मालूम होती है और यह पीछे हटने लगती है और फिर धीमी पड जाती है, पर अन्तमें यह बदलती है और सभी समय फडक-फडककर चला करती है।

रक्तसे उत्पन्न हृत्पिण्डकी धड़कन। एकाएक ऐसा मालूम होना, कि हृत्पिण्ड शान्त हो गया। हृत्पिण्डका फड़फड़ाना। जरा भी माँस-पैशिक परिश्रम करनेपर हृत्पिण्डकी क्रिया अधिक और सविराम हो जाती है— कमजोर हृत्पिण्ड, बढ़े हुए यकृत, नाड़ी धीमी तथा कामला और पीले मलवाला कोई व्यक्ति। इसके साथ ही उसे कष्टदायक खाँसी रहेगी। डिजिटैलिस तबतक खाँसीमें काम नहीं करता, जबतक हृत्पिण्डकी वजहसे खाँसी न आती हो, आधी रातके समय खाँसी। उबाले हुए श्वेतसारकी तरह बलगमके साथ खाँसी, फेफड़ेमें तली जमनेवाले रक्त-सञ्चयमें, खून-मिले श्लेष्माके साथ खाँसी। बोलनेपर, चलनेपर, कोई ठण्डी चीज पोनेपर, शरीरको झुकानेपर, खाँसी। ये सब खाँसियाँ अन्य रोगोंके साथ सम्मिलित रहती हैं।

श्वास-प्रश्वासके सम्बन्धमें भी यही बात कही जा सकती है। हृत्पिण्डकी तकलीफें और यकृतकी तकलीफोंके साथ श्वासमें कष्ट रहता है, "श्वास-प्रश्वास अनियमित और बड़े कष्टसे लिया छोड़ा जाता है।" गहरी श्वास लेनेकी क्रिया। जब वह सोने जाता है, तो श्वास रुक जाना चाहती है। तब वह हाँफता हुआ उठता है, **लेकेसिस, फास्फोरस** तथा **कार्बो-वेज** और कुछ अन्य दवाओंमें भी यह लक्षण हैं, वे दवाएँ जो खासकर लघु-मस्तिष्कको आक्रान्त करती है, जो मघुमस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय उत्पन्न करती है, जब कोई रोगी सोने जाता है, तो वृहत् मस्तिष्क लघु-मस्तिष्कसे कहता है, "अब तुम कुछ देरतक इस श्वासको चलाओ, मैं थक गया हूँ," पर लघुमस्तिष्क इस अवसरके योग्य नहीं रहता। इसमें रक्त-सञ्चय हुआ करता है और ज्योंही वृहत् मस्तिष्क आराम करना आरम्भ करता है। लघु-मस्तिष्क भी सो जाता है और रोगीको कष्ट भोगने देता है और इस तरह हमें श्वास-रोध प्राप्त होता है। नीदमें श्वास प्रश्वासपर अधिकार रखता है और रोगीके जागते रहनेपर वृहत् मस्तिष्क श्वास प्रश्वासकी क्रिया कराता है। यदि पहले कभी नहीं मालूम हुआ हो, तो हम दवाओंकी परीक्षासे यह सीख सकते हैं।

"रातमें श्वास-रोध हो जानेका भय।" अब इसका विश्लेषण करना चाहिये। वह अपने तजुर्बेसे जानता है, कि जितनी ही बार उसे नींद लगती है, उसका श्वास-रोध होने लगता है और इसीलिये श्वास-रोध होनेके भयसे

वह सोना नहीं चाहता। रातमें श्वास-रोधके भयके मूलमें यही बात है। यह ठीक वैसा ही है, जैसा कि यदि वह दिनके समय सो जाता है। "केवल हाँफ-हाँफकर श्वास ले सकता है।" यदि फेफड़ेके निम्न-भागमें पूर्णता हो, तो डिजिटेलिस एक लाभदायक दवा होती है। रोगी बिस्तरपर बैठा हुआ है और प्रत्येक फेफड़ेके निम्न-भागमें ठोसपन तथा ऊपरी भागमें प्रतिध्वनि (Resonance) मिलती है, तब ऐसा होता है, कि यदि रोगी लेट जाता है, तो उसका श्वास-रोध होने लगता है। डिजिटेलिसका रोगी बिना तकिया लगाये, पीठके बल ही उस समय लेटा रहना चाहता है, जब फेफड़ेमें भरापन नहीं रहता, पर जब उसमें हाइपोस्टेटिक काञ्जेशन (Hypostatic congestion) रहता है, तो उसको श्वास-रोध होने लगता है। यदि रोगके आरम्भ-कालमें नाड़ी सुस्त थी और अब यह तेज़ हो गयी है, तो डिजिटेलिस कुछ फायदा कर सकता है।

अब जनन-मूत्र-यन्त्रके सम्बन्धका स्वरूप, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी विवृद्धिके पुराने रोगियोंको मेरी समझमें नहीं आता, कि डिजिटेलिसके बिना मैं क्या कर सकूँगा? जहाँ पेशाब करनेके समय लगातार टीस होती है, बहुत-सी अवसरोंपर, जहाँ महीनोंतक या बरसोंतक कैथिटर (मूत्र-शलाका) का प्रयोग किया है, क्योंकि स्वाभाविक रूपसे वह पेशाब नहीं कर सकता और जब पुराने अविवाहित और वृद्ध पुरुषोंको रुका हुआ पेशाब रहता है, तो डिजिटेलिस उसकी बढ़िया दवा होती है। यह मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिका आकार घटा देता है और कितनी ही बार तो इसने आरोग्य कर दिया है। "पेशाब रुकनेके साथ शोथ।" मूत्र-विकारका ज़हर फैलनेपर तथा मूत्रपिण्डके कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Brights disease) में डिजिटेलिस बतानेवाले बहुत-से लक्षण मिलते हैं। पेशाबका रुकना, पेशाबका टपकना, शुक्रमेह, रात्रिकालीन स्वप्न-दोष, वे व्यक्ति जो बरसोंसे बदचलनीमें लगे हैं, बढ़ी हुई मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि।

यह पुराना सूज़ाक आरोग्य कर सकती है। इसने नया सूज़ाक भी आरोग्य किया है, इसने लिङ्ग-मुण्डपर रहनेवाली पतली कोमल झिल्लीका प्रदाह आरोग्य किया है। जननेन्द्रियकी शोथज सूजन।

"भूख न लगना और तेज़ प्यास।" बहुतसे चिकित्सक, जब रोगी बहुत पानी पीता और कम खाता है, तो सलफर देते हैं। डिजिटेलिसकी

मिचली टूपिकाक और आयोनियाकी तरह नहीं होती। यह एक विचित्र मिचली है। खाद्यकी गन्धसे मृत्युकी तरह मिचली, धँसते जाना, खालीपन और इसके साथ ही हृत्पिण्डके रोग, कामला और यकृत रोगके साथ उत्पन्न करती है। मिचलीके साथ एक मृत्युका भाव मिला रहता है, मानो वह धँसता जा रहा है। कभी कभी खा लेनेपर भी मिचली बन्द हो जाती है, पर यह धँसनेका भाव भोजन कर लेनेपर भी रह जाता है, जिससे पता लगता है, कि यह भूखके अलावा कुछ और है। 'लगातार मिचली, पाकाशय-गह्वरमें अत्यधिक अनुभूति प्रवणता, पाकाशय-गह्वरमें मूर्च्छा और ऐसा धँसते जानेका भाव, मानो वह मर जायगा। भूख नहीं, पर बहुत प्यास। यकृत-प्रदेशमें यन्त्रणा और कड़ापन, यकृत-प्रदेशमें दबावका बहुत अधिक अनुभव होगा।" अब याद कीजिये—यकृत और हृत्पिण्डके लक्षण, कामला, नाड़ी धीमी, पाकाशयमें भयानक धँसते जानेका भाव, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी विवृद्धि, खाकी पाखाना और आपको डिजिटेलिसके प्रधान लक्षण प्राप्त हो जायँगे।

जो कुछ मैंने कहा है, उसके बाद आपको डिजिटेलिसके रोगीकी सब समय जो भयङ्कर घबड़ाहट होती है, उसपर आश्चर्य न होगा। वह अकेला रहना चाहता है, उदासी, उदासीनता, निराशा और बेचैनीसे वह निर्णय नहीं कर सकता, कपकपी। पाकाशय, आँत और यकृतकी तकलीफें वैसी ही रहती हैं, जो आपको कभी-कभी कड़ी शराब पीनेवालोंमें शराब छोड़नेके बाद, दिखाई देती है। वह अवसन्न हुआ रहता है उसका हृत्पिण्ड बलहीन, अनियमित कमजोर धीमा रहता है और उसमें उदासी तथा उदासीनता रहती है। वह किसी काममें अपनेको लगा नहीं सकता, डिजिटेलिस उसे उठानेमें सहायता पहुँचायगा।

ड्रोसेरा रोटण्डिफोलिया।

(Drosera Rotundifolia)

कुकुर खाँसी (हूपिङ्ग खाँसी) में ही इसका व्यवहार बहुत कुछ सीमित हो रहा है, पर इसका और भी विस्तृत प्रयोग है। जब इसकी आक्षेपिक प्रकृतिकी हम परीक्षा करते हैं, इसकी क्लान्ति, इसके मरोड़पर ध्यान देते हैं, जो बहुतसे रोगोंमें फैलता रहता है, तो हमें समझमें आ जाता है, कि यह एक विस्तृत औषधि है। मृगोको तरहकी ऐंठन, बहुत लम्बी अनिद्रा, नींदसे जागनेपर बहुत ज्यादा पसीना, बेचैनी और घबड़ाहट। सोचता है, कि कोई हमेशा उसका पीछा कर रहा है, तापको झनक, रातमें भय। बहुत-से उपसर्ग रातमें ही उत्पन्न होते हैं। घबड़ाहट, अनिद्रा और भूतोंका भय। आक्षेपिक खाँसी, अकेले रहनेसे भय और अपने जिगरी दोस्तोंपर भी सन्देह। मनकी चञ्चलता और सरमें चक्कर आना। शरीरके बहुत-से भागोंमें शूल बेधनेकी तरह दर्द, खासकर माथेमें और हाथके सहारे माथेको दबा रखना पड़ता है, खाँसनेके समय वक्षको सहारा देना पड़ता है, तलपेटपर जरूर ही दबाव डालना पड़ता है, दबावकी तरह रक्त-सञ्चयी सर-दर्द। खसड़ेकी तरह उद्भेदोंके साथ शरीरके बहुतसे भागोंमें भयङ्कर खुजली। चक्षु-गोलक समुन्नत और रक्त-सञ्चय-पूर्ण, खसड़ा और अकड़नके समय हो जाता है। आँखोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कानमें आवाजें, गरज, भनभनाहट और ढोलकी आवाज़, बच्चोंकी कानका दर्द, कानोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कितने ही शरीर-द्वारोंसे रक्त-स्राव, खासकर नाकसे, कण्ठसे, स्वर-यन्त्रसे और आक्षेपिक खाँसीसे सम्बन्ध रहनेपर, खाँसनेपर वक्षसे। साधारणतः चेहरा पीला तथा चेहरेमें तापके साथ वह धँसा रहता है, उसके हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं, सिवा खाँसनेके समयके, जिस समयको चेहरा लाल हो जाता है, रक्त-सञ्चय हो जाता है तथा **बेलेडोना** और **क्यूप्रम**की तरह बैगनी हो जाता है। बहुतसे रोगोंमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है, मुँहका बिगड़ा स्वाद तो एक साधारण लक्षण हैं, जब कि यह फेफड़ेकी तथा स्वर-यन्त्रकी क्षय-रोग-ग्रस्त अवस्थामें तथा हूपिङ्ग खाँसीमें ही प्राप्त होता है, मुँहसे रक्त-स्राव और खून-मिली लार, कड़ी चीजें निगलनेमें तकलीफ़ कण्ठ तथा स्वर-यन्त्रका सङ्कोचन

तथा अन्ननलीका संकरा पड़ जाना, जिससे निगलनेमें रुकावट आती है, इस दवामें सर्वत्र मरोड़ लानेवाला सङ्कोचन है, किसी चीज़को पकड़नेके समय हाथोंमें मरोड़ आ जाना। भाड़ू का हैण्डल पकड़नेके समय। कण्ठमें जलन और खरोंच रहती है कण्ठमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, कण्ठ गहरा, लाल या बेंगनी रहता है। मुझे विश्वास है, कि ड्रोसेराके रोगी शय्या-पार्श्वका बहुत ही महत्वपूर्ण लक्षण है। स्वर यन्त्रमें खरोंच और भोजनके बाद खाँसी। परीक्षामें पीने बाद खाँसी आती है, इसमें खासकर भोजनके बाद खाँसी आती है तथा स्वर-यन्त्रमें सङ्कोचन रहता है। खाँसनेके समय मिचली और वमन। सबेरे रक्त और पित्तका वमन तथा श्लेष्माका वमन और खाद्य पदार्थों का वमन। तबतक खाँसी आती है, जबतक ओकाई और वमन नहीं हो जाता। पाकाशय-गह्वरमें सङ्कोचनका दर्द, तलपेटके पार्श्व-भागमें सकोचनशील दर्द, खट्टी चीजें खाने बाद शूलका दर्द। इस दवामें सबसे अधिक उपदाह स्वर यन्त्रमें प्राप्त होता है, जहाँ क्रमकर पकड़ने, मरोड़ संकोचन और जलन होती है, स्वर-यन्त्र और अनवरत उत्तेजना, खाँसी तथा लगातार उपदाह और स्वर-यन्त्रमें खरोंच-सा उत्पन्न कर देती है। स्वर-यन्त्रमें श्लेष्माका एकत्र होना, स्वर-यन्त्रमें सूखापन, स्वर-यन्त्रमें ऐंठन, स्वर-यन्त्रमें सुरसुरीके कारण प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी, स्वर यन्त्रमें बहुत अधिक चुनचुनीके कारण खाँसी आने लगती है, उसे नींदसे जगा देती है, घण्टे-घण्टे बढ़ती हुई तेजीके साथ आती है जिससे कि दवा हूपिङ्ग खाँसीके सदृश बन जाती है, जिससे कि यह बहुत लाभदायक होती है। स्वर-यन्त्रमें पर रहनेकी तरह अनुभूति। स्वर-यन्त्रका आक्षेप, खाँसनेके समय हाथ-पैरोंमें अकड़न। चुनचुनीके कारण और स्वर-यन्त्रमें बलगम जमा रहनेके कारण खाँसी आती है, ये दशाएँ स्वर-यन्त्रके यक्ष्मा रोगमें प्राप्त होती हैं। हूपिङ्ग खाँसीमें, स्वर-यन्त्र-प्रदाहमें तथा स्वर-यन्त्रकी श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहमें भी प्राप्त होती है।

वक्षकी और स्वर-यन्त्रकी आक्षेपिक तकलीफोंके कारण श्वासमें कष्ट और श्वास-रोध होता है। बोलने या खाँसनेके समय एक ऐसी अनुभूति होती है, मानो वक्षमें श्वास रोकनेवाली कोई चीज़ है। आधी रातके बाद श्वासमें तकलीफ़ और खाँसी आती है। खासकर जागनेपर कष्टकर श्वास-प्रश्वास। एक भी आवाज़ नहीं निकाल सकता। कष्टकर श्वास प्रश्वास तथा श्वास-रोधकी तरह मालूम होना। स्वर-यन्त्रकी अकड़नके कारण चेहरा नीला हो जाता

है। वक्षमें दबाव, श्वास-रोधके ये आक्रमण खाँसीके साथ या लेटे रहनेपर होते हैं। बोलनेपर दमाकी तरह श्वास तथा स्वर-यन्त्रमें सङ्कोचन। गँहरी आवाज़वाली, रूखी खाँसी, रूखी खरोचनेवाली खाँसी, जोरकी आवाज़के साथ कुक्कुर खाँसी, आक्षेपिक हूपिङ्ग खाँसी, हूपिङ्ग खाँसीके साथ वक्षका प्रचण्ड सङ्कोचन और कण्ठ तथा स्वर-यन्त्रकी पेशियोंका सङ्कोचन। दो-तीन घण्टेके आवेशमें हूपिङ्ग खाँसीका दौरा होता है, पर रातमें लेटनेपर तथा ३ बजे सवेरेके वक्त यह बहुत बदतर हो जाती है। स्वर-यन्त्रमें अत्यन्त कष्टदायक चुनचुनी, जिससे खाँसी होती है। स्वर-यन्त्रमें चुनचुनीके कारण आवेशिक सूखी खाँसी। मेरुदण्डके उपदाहके कारण आक्षेपिक खाँसी, सहानुभूतिक खाँसी। यक्ष्माकी ओर अग्रसर होनेवाली जवान लड़कियोंकी प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी, चमकीला लाल या काला रक्तका थक्का बलगमके साथ आनेवाली खाँसी। खून-मिला बलगम। ये आक्षेपिक खाँसियाँ अकसर छोटी मातामें या छोटी माताके आक्रमणके बाद आती हैं, स्वर-यन्त्रमें उपदाह रह जाता है। यह छोटी माता या खसड़ाकी बहुत बार निर्देशित औषधि रहती है, **कार्बो-वेजिटेबिलिस**की तरह, छींकने या खाँसनेके समय वक्षमें सुई गड़नेकी तरह प्रचण्ड दर्द। आराम पानेके लिये उसे हाथसे छाती दबा रखनी पड़ती है। खाँसी इतनी भयानक रहती है, कि खाँसनेके समय रोगीको जरूर ही जोरसे हाथोंसे वक्षको दबा रखना पड़ता है। वक्षमें दबाव, वक्षमें जलन, वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। आक्षेपिक खाँसीके साथ होनेवाली पुरानी ब्राङ्काइटिसकी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है। यक्ष्मामें तथा फेफड़ेके क्षय रोगमें बराबर होनेवाली आक्षेपिक खाँसीका यह बहुत बड़ा उपशामक है। वक्षके इन उपसर्गोंमें, कन्धोंके बीचमें दर्द, पीठमें दर्द, मानो खाँसनेपर कुचल गया है। हाथ-पैरोंमें ठण्डापन तथा हाथ-पैरोंका नीलापन। खाँसीके साथ हाथ-पैरोंमें मरोड़। खाँसी इतनी प्रचण्ड रहती है, कि रोगीको अकड़न हो जाती है, इन आक्षेपिक खाँसियोंके साथ, खासकर यक्ष्मा-ग्रस्त दशामें ज्वरका भी आक्रमण होता है, जाड़ा और सर्दीलापन और एक पार्श्वका जाड़ा। हूपिङ्ग खाँसीके साथ जाड़ा और बोखार। स्वर-यन्त्रके प्रदाहके साथ जाड़ा और बोखार। आधी रातके बाद ताप तथा खाँसी भी बदतर हो जाती है, ललाट तथा हाथ-पैरोंमें ठण्डा पसीना, ज्वरके बाद, समस्त शरीरमें पसीना, खाँसीके साथ समूचे शरीरमें बहुत

ज्यादा पसीना। खाँसी बहुत क्लान्तिमें अन्त होती है। ज्वरके साथ हुपिङ्ग खाँसी।

डलकामारा—बिटर स्वीट।

(Dulcamara – Bitter sweet)

यह दवा खासकर श्लेष्मिक-झिल्लियोंपर प्रभाव दिखाती मालूम होती है इसमें नया पुराना दोनों ही स्राव जारी करने या बन्द करनेकी प्रवणता है।

प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनसे, गर्मीसे, ठण्डकसे, सखाडसे, तरीसे तथा पसीना निकलते हुए शरीरको ठण्डा करनेसे डलकामाराके रोगीमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है। वह शुष्कतामें, यहाँतक कि सूखी ऋतुमें अच्छा रहता है तथा सर्दी और सीड सभी उपसर्गों को बढ़ा देते हैं। वह शामके वक्त रातमें और आराम करनेके समय बदतर रहता है।

डलकामारा पाकाशय, आँते, नाक, आँख और कानकी सर्दी उत्पन्न करता है तथा उद्भेदोंके साथ चर्मकी प्रादाहिक दशा उत्पन्न करता है। यदि आप इनके विवरणमें जायें तो आपको यह देखकर आश्चर्य होगा, कि ऋतु-परिवर्त्तनसे इसके रोगीकी धातुगत दशा कितनी परिवर्त्तित हो जाती है।

ग्रीष्म-ऋतुके अन्तके, गर्म दिन और ठण्डी रातके समयके होनेवाले अतिसारकी यह एक आश्चर्यजनक उपयोगिनी दवा है। साथ ही परिवर्त्तनशील दस्त आते हैं, बच्चोंका अतिसार। पाचन होता नहीं मालूम होता, पीले, लसदार दस्त आते हैं, अनपचके दस्तके साथ पीला हरा मल। बार-बार दस्त, दस्तमें रक्त और एक लेदका लोंदा, जिससे कि प्रत्यक्ष सर्दीकी दशा मालूम होती है। यह अच्छा और बदतर होता है, यह साधारण दवाओंसे अच्छा होता है, यह अकसर पल्सेटिलासे अच्छा होता है, पल्सेटिलाके लक्षणोंकी ही प्रधानता मालूम होती है और कभी-कभी यह आर्निकासे आरोग्य होता है, पर प्रत्येक बार ज्योंही बच्चेको सर्दी लगती है, यह फिर

होने लगता है और जल्द ही चिकित्सककी समझमें आ जायगा, कि उसने समस्त लक्षणोंके अनुकूल दवा नहीं दी है। अकसर यह बहुत ही तङ्ग करनेवाली दशा रहती है, क्योंकि लक्षण सब दो-तीन आक्रमण हुए बिना पहचानमें नहीं आते। यह खोज निकालना सहज नहीं है, कि यह आक्रमण सर्दीसे हुआ है या कैसे।

हर साल स्त्रियाँ अपने बच्चोंको इस मौसममें पहाड़से लाती हैं और तब हमें कुछ डलकामाराके रोगी मिल जाते हैं। ग्रीष्म-ऋतुके अन्तमें यदि किसीको पहाड़पर जानेकी जरूरत हो, तो इसे जानना चाहिये, कि क्या दशा है? यदि आप ऐसे समय पहाड़ोंमें जायें, उत्तर या पश्चिमकी तरफ, तो आप देखेंगे, कि दिनके समय सूर्यकी किरणें बहुत तीखी रहती हैं, पर यदि शामके समय आप घूमने निकलेंगे, तो ठण्ढी हवाका ऐसा झोंका आता है, कि वह आपकी हड्डीतककी ठण्ढी कर देगा। इससे बच्चा बीमार हो जायगा। दिनमें दोपहरके समय बहुत गर्मीके कारण बच्चेको निकाला नहीं जा सकता, इसलिये शामको वह गाड़ीमें निकाला जाता है। दिनमें वह अपने घरमें बहुत गर्म हो गया है और शामको उसे इस तरह सर्दी लग जाती है। ठीक ऐसी दशासे जो अवस्था उत्पन्न होती है, डलकामारा ऐसे उपसर्गोंकी दवा है। इसलिये युवक जो धूपकी गर्मीमें बाहर निकला है और रातमें जिसे सर्दी लग जाती है, जिसका मतलब है, दिन गर्म और रात ठण्ढी, जैसा कि वर्षके अन्तमें, गर्मीके अन्तमें और जाड़ा आनेके समय होती है, यह गर्म हवा और ठण्ढी हवाके झोंकेका सम्मिश्रण। यदि आप गर्म दिनके बाद पहाड़ी जङ्गलकी ओर जायँ, तो आप हवाके झोंकेके भीतरसे जायँगे, जिससे आपको पसीना होने लगेगा और मिनटभर बाद ही एक ठण्ढी हवाका झोंका आपको अपना लबादा पहननेके लिये बाध्य करेगा, फिर गर्म हवाका झोंका आयगा और ऐसा ही होता रहेगा। ऐसी हवा पसीना ला देगी और फिर उसको दबा देगी। ठीक ऐसी ही कारणोंसे जो लक्षण उत्पन्न होते हैं, डलकामाराके भी वैसे ही लक्षण हैं और तब हम अनुभवमें यह कहनेके लिये स्वतन्त्र हैं, कि डलकामारा ऐसे रोगियोंको आरोग्य कर देता है। गत कालमें तो पहाड़से लाये हुए इन बच्चोंको देखकर मैं घबड़ा उठता था तथा जो लक्षण दिखाई देते थे, उनके अनुसार दवा देता था। इसके बाद मैंने इस विषयपर सावधानतासे विचार किया और पता लगा

लिया, कि वे सर्द-गर्म प्रदेशमें आ रहे हैं। बहुत बार बच्चोंको जल्दीसे घर लाना पड़ता है, क्योंकि पहाड़ोंपर अतिसार आरोग्य नहीं किया जा सकता, पर डलकामाराकी एक खुराक उनको वहीं रहने और उसी अवस्थामें ठीक रहनेके योग्य बना देगी। सर्दीसे होनेवाला और बार-बार दुहरानेवाला रक्तामाशय। यदि उन्हें डलकामाराकी एक खुराक दे दी जाये, तो उन्हें बार-बार सर्दी लगनेसे उनकी रक्षा करेगा।

ऐसे भी मनुष्य हैं, जो कुछ इस ढङ्गके व्यवसायमें लगे हैं, जो वास्तवमें डलकामाराकी दशा रहती है। मान लीजिये, कि मलाईका बरफ बनानेवाले, बरफ लानेवाले तथा समान ठण्ढा बनाये रखनेवाले मनुष्य, ठण्डे कमरेमें बरफको इधर-उधर हाथसे किया करते हैं गर्मीकी हवा गर्म है, उन्हें बाहर निकलकर कुछ ताप लेना ही पड़ता है और इसके बाद फिर वे अपने ठण्डे कमरेमें जाते और बरफको हाथसे उठाते हैं। मैंने ये बातें देखी हैं और उनका पीछा करनेका अवसर प्राप्त हुआ है। इन पुरुषोंको समय समयपर आँतोंकी बीमारियाँ तथा अन्य सर्दीके रोग या अमूमन पतले दस्तकी बीमारियाँ हो जाया करती हैं। यह उनकी जीविका है, इसीलिये उनका व्यवसाय नहीं रोका जा सकता। लक्षण मिलनेपर डलकामारा ऐसे अतिसारोंको आरोग्य कर देता है। लक्षण मिलनेपर **आर्सेनिकम** भी ऐसे रोगियोंको आरोग्य कर सकता है, पर समय-समयपर लक्षण डलकामाराके सदृश रहते हैं, क्योंकि दवाकी यही प्रकृति है। सर्दीसे सर्दी लग जाना, सीड-भरी जगहे पसीना रुकनेके कारण बीमारियाँ, गर्म वायु-मण्डलसे बरफके घरमें जाना, बरफवाले कमरेमें जाना, ठण्डे कमरेमें जाना, इस जलवायुमें ऐसी तकलीफें, जो अत्यधिक परिश्रमसे उत्पन्न होती हैं, बहुत गरमा जानेपर होती हैं और फिर वस्त्र उतार फेंकना तथा सर्दी लग जाना पसीनेका रुक जाना, बोखरा आ जा सकता है। हड्डियोंमें दर्द, दर्दके साथ कम्पन, पेशियोंमें कम्पन और ज्यों-ज्यों ज्वर बढ़ता जाता है, रोगी तकलीफ़की दशामें रहता है, याद नहीं रख सकता, जो कुछ कहना चाहता था, उसे भूल जाता है। शब्दोंको भूल जाता है, जो उसके स्वाभाविक विचार प्रकट कर सके तथा रोगी एक चकाचौंधकी अवस्थामें जा पहुँचता है। एक चित्त-विभ्रमकी अवस्था। मस्तिष्कके इस शिथिल खूनक दौरानवाली सर्दीमें यह लाभ पहुँचाता है। कम्पन और जाड़ेके साथ सर्दी मानो हड्डियोंमें है।

डलकामारा वातसे भरा है, वातज वेदना और यन्त्रणासे, समस्त शरीरमें घावकी तरह या कुचल जानेकी तरह दर्दसे परिपूर्ण है। सन्धियाँ प्रादाहित रहती हैं, लाल हो जाती हैं, स्पर्श सहन नहीं होता और फूली रहती हैं। **पसीना रुक जानेके कारण उत्पन्न,** ऊँचेसे नीचे तापमानमें आने या सर्दीसे या तर मौसमके कारण उत्पन्न प्रादाहिक वातके रोगियोंके लिये यह उपयोगी है। शामको, रातमें और आराम करनेके समय रोगी बदतर हो जाता है।

इसके अलावा, इसमें बहुत-सी पुरानी बीमारियाँ है। आँखकी श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशा, पीबकी तरह स्राव, गाढ़ा, पीला स्राव, दानेदार पलकें, जितनी ही बार सर्दी लगती है, आँखें लाल हो जाती है। "जितनी ही बार सर्दी लगती है, वह आँखमें बैठ जाती है"—रोगी अमूमन यही बात कहता है। अकसर रोगी यह सवाल पूछेगा—'जितनी ही बार सर्दी लगती है, यह आँखोंमें क्यों घर बना लेती है? यदि मैं ठण्डे वायु-मण्डलमें चला जाऊँ या गरमी जानेपर अपना ओवर-कोट उतार दूँ, मुझे देखना पड़ेगा।" यदि रातमें सर्दी पड़ती है, रोगीने अपने वस्त्र उतार फेंके है, तो उसे सर्दी लग जाती है तथा आँखोंमे घाव या यन्त्रणा हो जाती है। ऐसी आँखें अकसर बहुत बार डलकामारासे आरोग्य हो जाती हैं। केवल आँखके विषयमें, यह तो केवल एक श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहकी दशा है, पर जिस ढङ्गसे यह दशा होती है, वह एक महत्वकी चीज़ है। यही इस रोगीकी प्रकृति है, जिसकी आँखें यन्त्रणा-ग्रस्त होती हैं, कि उसे सर्दी लग जाती है। यह कुछ दूसरी दवाओंमें भी है, पर यह एक खास बात है।

डलकामारामें नाकसे भी खून-मिले खरोंटके साथ सर्दीका स्राव होता है। हमेशा मोटा, पीला श्लेष्मा नाक छिड़कनेमें निकलता है। शिशु और बालक बालिकाएँ, जिन्हें नाक बहा करती है, वे हमेशा सर्दीमें, तर ऋतुमें, बदतर रहते हैं। जब रोगी कहता है—"डाक्टर साहब। ठण्डी तर ऋतुमें, मैं नाकसे साँस नहीं ले सकता, मेरी नाक बन्द हो जाती हैं या मुझे मुँह खोलकर सोना पड़ता है।" सर्दीवाले रोगियोंको जिन्हें सदा ठण्डी वर्षा होनेपर नाक रुक जाती है, डलकामारा उनको एक बहुत ही लाभदायक दवा है।

यह खासकर हेमन्त ऋतुकी दवा है। डलकामाराके रोगी गर्मीके दिनोंमें बड़े आराममें रहते हैं, उनकी सर्दीकी दशा बहुत कुछ चली

जाती है, गर्म दिन और गर्म रातें, समान तापमानके कारण, उन्हें मुवाफिक होती मालूम होती है, पर ज्योंही ठण्डी रातें आती हैं तथा ठण्डी वर्षा होती है, उनकी सभी बीमारियाँ लौट आती हैं। वातकी अभिवृद्धि हो जाती है और सर्दीका स्राव बढ़ जाता है। हमारी माताएँ, बहुत कालसे इस दवाका व्यवहार करती आ रही हैं, वे उलकामाराका मरहम बनाया करती थीं। आपको पता लगेगा, कि जिन गाँवोंमें उलकामारा पैदा होता है, वहाँकी बुढ़ाएँ, इसे संग्रह कर लाती हैं, तथा घावोंके लिये इसका मरहम (Salve) बना रखती थीं। यह अचरजकी बात है, कि जब किसी उभरते हुए घावपर यह लगाया जाता था, चाहे वह तरलके रूपमें हो या मरहमके रूपमें, तो कितनी तरी पहुँचाता था, पर इस दवाका यदि धातुगत प्रकृतिके अनुसार भीतरी प्रयोग होता है, तो यह और भी उपयोगिनी होती है। यह जखम और श्लैष्मिक झिल्लीमें जखम होनेकी एक प्रवृत्ति उत्पन्न करती है और यह दशा सड़नेवाले घावकी ओर हो जाती है। कभी-कभी तो यह भैंसिया दादके उद्भेदोंकी तरह आरम्भ होता है, पर यह फैलता है और अन्तमें पीला पीब पैदा हो जाता है और इसके बाद जो दाना पड़ना (Granulation) चाहता था, वह नहीं पड़ता। क्षय होनेवाली दशा दिखायी देती है और वह जगह भरती नहीं। खासकर ठुड्डीकी हड्डीके पास, वहाँ खाल उधड़ी-जगहें हो जाती हैं जो अस्थि-आवरक झिल्लीतक फैलती हैं, हड्डीतक चली जाती हैं और अस्थि क्षय तथा अस्थि-क्षत (Necrosis and caries) हो जाता है, इस तरह इसमें श्लैष्मिक-झिल्ली या चर्मके रोग प्राप्त होते हैं पहले तो ये फुन्सीकी तरह होते हैं फिर टूट जाते हैं और क्षय करने लगते हैं। इसका सम्बन्ध खासकर बहुत ही स्पर्श-कातर रक्तस्रावी जखमोंके लिये है। जिनमें नकली दाने पड़ते हैं, सड़नेवाले जखम। यह बात अमूमन मालूम नहीं है, यह तो उनकी तजुर्बेकी बात है, जिन्होंने इस दवाको लक्ष्य किया है और फिर यह भी आश्चर्यकी बात है, कि आर्सेनिकम, जिसका मैंने एक दो बार जिक्र किया है, उसमें भी यही दशा है। क्षय करनेवाले जखम, सड़नेवाले जखमोंकी सब दवाओंमें आर्सेनिकम प्रधान है, फैलनेवाले घाव, खासकर जो बाघीसे पैदा होते हैं, जो फट जाते हैं और फिर आराम नहीं होते।

इस दवाका दूसरा स्वरूप है, शरीरपर उद्भेद पैदा कर देनेकी प्रवणता। यह एक उद्भेदोंकी आश्चर्यजनक दवा है, जिसमें फुन्सियाँ, पपड़ियाँ, सूखी भूरी पपड़ियाँ, तर पपड़ियाँ, भैंसिया दाद होती है। डलकामारा पीली फुन्सियोंकी तरह एक ऐसे उद्भेद उत्पन्न करता है, कि यह उस अवस्थाकी एक बहुत ही उपयोगिनी दवा हो गयी है अर्थात् छोटे-छोटे बहुतसे फोड़ोंकी तरह उद्भेद, ये छोटे-छोटे निकलते हैं और ये फोड़े फैलते हैं। ग्रन्थियोंकी वृद्धि और कठोरता। माथेकी त्वचाके उद्भेद जो सेहोरिया (Crusta lactea) की तरह होते हैं, उनकी भी डलकामारा एक अत्यन्त उपयोगिनी दवा है। असीम यन्त्रणा, खुजली, खुजलानेपर भी खुजलीका न घटना तथा तबतक खुजलाना पड़ता है, जबतक रक्त-स्राव नहो हो जाता या खाल नहीं उधड़ जाती। चेहरेपर, ललाट, समूची नाकपर, लेकिन खासकर गालोंपर निकलनेवाले उद्भेद, जो इन पपड़ियोंसे एकदम भर जाते हैं, बच्चोंका अकौता। कई सप्ताहके बच्चोंको भी उनके माथेकी त्वचापर ये उद्भेद निकल आते हैं और आपको यह जान रखना चाहिये, कि इनकी दवाओंमेंसे एक डलकामारा भी है, इसका भी अन्य दवाओंकी तरह ही बराबर व्यवहार होता है। **सोपिया, आर्सेनिकम, ग्रेफाइटिस,** डलकामारा, **पेट्रोलियम, सलफर** और **कैल्केरिया** करीब-करीब समान रूपसे निर्दिष्ट दवाएँ हैं। पर इनमेंसे कम-से-कम इस आबोहवामें, मैं समझता हूँ, कि शायद **सोपिया** बहुत विशेष निर्दिष्ट रहती है।

ये सभी सर्दीके लक्षण, वातज लक्षण, चर्मपरके उद्भेद, धातुगत प्रकृतिकी अवस्थाकी अद्भुत रोग-वृद्धियोंके कारण हैं, चाहे कोई भी उपसर्ग क्यों न हो, उसकी धातुगत दशा ठण्डेमें और तर मौसममें बदतर रहती है।

"ठण्डे तथा तर मौसमोंमें सर्दी और वातज सर-दर्द," जब सर-दर्द ही प्रधान तकलीफ़ रहती है, तो सर्दी उससे एक विभिन्न ही पथ अवलम्बन करती है, जो कि यह तब करता है, जब सर्दी ही प्रधान उपसर्ग रहता है। यह दो प्रणालियोंसे अपनेको परिचालित करता है। कुछ डलकामाराके रोगियोंको जब कभी सर्दी और तर ऋतुकी वजहसे सर्दी लग जाती है, तो वह छींकने लगता है, नाककी सर्दी हो जाती है तथा जल्द ही नाकसे बहुत ज्यादा गन्ध लिये और पीला स्राव जारी हो जाता है, दूसरी ओर डलकामाराकी सर्दी

पहली अवस्थामें सूखी रहती है तथा तरल सर्दी, दूसरी अवस्थामें आती है, जिसे डलकामाराका सर दर्द होता है, उसे सूखी सर्दी रहती है, जब कभी उसे सर्दी लगती है, तो आम तौरसे होनेवाले इसके साथकी सर्दीके स्रावके बदले, उसे पहले छींक आती है, इसके बाद फिर उसे वायु-पथोंमें सूखापन मालूम होता है, आम तौरसे होनेवाला स्राव पीला हो जाता है, जिससे उसे आराम मिलता है और तब वह जानता है, कि उसे अवश्य पता लगाना चाहिये, क्योंकि साथ ही स्रायु-शूलका दर्द आयगा, पश्चात् मस्तकमें दर्द और अन्तमें समूचे सरमें दर्द हो जायगा। स्रायु-शूलका दर्द और सूखी नाकके साथ रक्त सञ्चयके कारण होनेवाला सर-दर्द। ठण्डक और तर मौसमकी प्रत्येक लहर उसे सर-दर्द पैदा कर देगी। सर्दीका स्राव इतना तेज़ नहीं होता, कि उसपर ध्यान दिया जाये। वह इसके विषयमें कुछ ज्यादा कहता भी नहीं है, डलकामाराका सर-दर्द बहुत ही प्रचण्ड होता है, उसके साथ ही तेज़ दर्द रहता है। वह डाक्टरके पास सर-दर्द छुड़ानेके विचारसे जा सकता है, पर यह रुकी हुई सर्दीकी अवस्था है, जो पीली पड़ गई है और नाक सूख जाती है। ज्योंही स्राव जारी हो जाता है, उसका सर-दर्द आराम हो जाता है। तब सर्दीके ढङ्गका यह सर-दर्द प्रत्येक ओस, सर्द हवा या बहुत उत्तप्त हो जाने अथवा ठण्डी हवामें खूब गरमा जाने बाद हो जाता है या बहुत कपड़ा पहन लेनेके कारण और फिर कोट उतार देनेके कारण हो जाता है, वह भी डलकामारकी दशाका ही है।

एक तरहका उद्भेद, जो बहुत कुछ डलकामाराके उद्भेदोंकी तरह होता है। दाद, चकत्तेके आकारकी विसर्पिका। यह कभी माथेकी त्वचा या चेहरेपर होता है। कभी कभी बच्चोंके केशोंमें दाद होती है। डलकामारा करीब-करीब हमेशा ही इन दादोंको आरोग्य कर देगा।

डलकामाराके रोगी बच्चोंको बहुत अधिक कानका दर्द होता है।

"सूखी सर्दी, गतिशील रहनेपर घटी रहती है, आराम करनेके समय बदतर हो जाती है तथा हवा लगनेपर नयी हो जाती है तथा ठण्डी हवामें बदतर रहती है।" कुछ नाककी सर्दियाँ तो गर्म हवा बिलकुल ही सहन नहीं कर सकतीं और कुछ गर्म कमरा चाहती है। डलकामाराकी सर्दी खुली हवामें जानेपर बदतर हो जाती है तथा गतिशील रहनेपर अच्छी रहती है।

नक्स-वोमिकाकी नाककी सर्दी खुली हवामें अच्छी रहती है, रोगीको नाकमें दर्दकी बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। **नक्स-वोमिका**का रोगी साधारणतः गर्मी, गर्म हवा और गर्म कमरेकी इच्छा करता है, पर सर्दी में—नाककी सर्दी में उसकी एकदम विपरीत अवस्था रहती है। वह खुली हवामें हिलते-डोलते रहना चाहता है, वह ठण्डी हवा खोजता है, क्योंकि इससे उसकी तकलीफे घटती हैं। गर्म कमरेमें उसकी नाकमें एक प्रकारकी चुनचुनी होती है तथा नाकसे दिन रात पानी चुआ करता है। **नक्स-वोमिका**की सर्दी घरमें बदतर रहती है, रातमें बदतर रहती है, गर्म बिछावनमें बदतर रहती है। इस तरह स्राव तकियेपर बहा करता है। डलकामारामें यह घरमें रहनेपर ज्यादा बहता है, रातमें बढा रहता है तथा ठण्डी हवा तथा ठण्डे कमरेमें कम स्राव होता है। डलकामाराकी नाककी सर्दी के साथ यदि रोगी ठण्डे कमरेमे चला जाये, तो नाककी हड्डीमें दर्द पैदा हो जायगा, उसे छींक आने लगेगी और उसकी नाकसे पानी गिरने लगेगा, परन्तु ठीक यही दशा **नक्स-वोमिका**के रोगीको आराम पहुँचायगी। **ऐलियम-सिपा**का रोगी गर्म कमरेमें बदतर हो जाता है, **नक्स-वोमिका** की तरह ठण्डेमें और खुली हवामें अच्छा रहता है। गर्म कमरेमें जाते ही वह छींकने लगता है। इस तरह हमें इन बातोंका अर्थ प्रकट होता है। विवरणोंमें जाने और प्रत्येक रोगीकी परीक्षा करनेकी जरूरत मालूम होती है।

यही एक दशा है, जो वर्षके अन्तमें, कही २० वी अगस्तके समय आपको मिलेगी। वे इसे कभी-कभी उद्भिज्ज्वर (Hay fever) कहते हैं। प्रत्येक वर्ष ज्योंही रात ठण्डी होने लगती है तथा सर्दी, सीडकी मौसम रहती है और वर्षा होती है, उसे बार बार छींकके साथ नाक रुकती है और रोगी नाकको गर्म रखना चाहता है। मैंने ऐसे रोगियोंको समय-समयपर गर्म कपडे पहिने घरमें बैठे तथा चेहरा और नाकपर गर्म पानी तकलीफ़ घटानेके लिये ढालते मालूम किया है। नाकका कड़ापन ताप घटा देता है। ये रोगी कभी-कभी गर्म कपडे नाकपर रखे भी श्वास ले सकते हैं, पर यदि ये रातकी हवामें बाहर निकले या ठण्डी जगहमें जाये और खासकर यदि वहां सीड हो, वर्षा होती हो, तो उन्हें बहुत कष्ट होता है। उद्भिज्ज्वरके

अन्य रोगी दिनके समय रोग भोगते हैं और इतनी ठण्डी जगहमें चले जाते हैं, जितनी वे जा सकते हैं, यहांतक कि ठण्डे स्थानके लिये पहाडोंमें भी चले जाते हैं। ये बातें एक तरहकी धातुगत प्रकृति बतानेवाली है। यह दशा एक प्रकारका चिन्ह और लक्षण चिकित्सकोंको बताती है, जिसके सहारे बुद्धिमान चिकित्सक रोग आरोग्य कर सकता है। यदि इस दशाके पास चिन्ह और लक्षण प्रकट करनेका कोई जरिया न होता, तो दवाओंसे आरोग्य हो नहीं होता।

"नाक और आँखोंसे बहुत ज्यादा पानीका स्राव, खुली हवामें बदतर हो जाना", "बन्द कमरेमें, सवेरे जागनेपर उत्तम" प्रभृति। नये पैदा हुए घास और सूखे हुए दानेसे डलकामाराका रोगी बहुत हो स्पर्श-असहिष्णु रहता है। रोगीको बाध्य होकर जहां यह मिलता है, उस देशसे उन्हें बाध्य होकर अलग रहना पडता है। उद्भिज्ज्वरके लिये हमें खासकर रोगकी ऐसी दवा खोजनी पडती है, जो वर्षके अन्तमें होते है। ऐसी हो दशाएँ है, जो उद्भिज्ज्वरकी तरह है। उदाहरणार्थ—रोज़ कोल्ड (Rose cold) जो जूनमें पैदा होती है। ऐसी भी दूसरी दशाएँ हैं, जो बसन्तमें आती हैं, जो कभी कभी **नैजा** और **लैकेसिस**से आरोग्य होती है। इस तरह हमें वर्षका समय देखना पडता हे, दिनका समय देखना पडता है, रात या दिनकी रोग-वृद्धि देखनी पडती है और देखना पडता है तर और शुष्क दवाएँ, गर्म और ठण्डी दवाएँ। घटनाओंसे हमें दवाका अध्ययन करना पडता है।

डलकामाराका रोगी अकसर एक रोगियल रोगी रहता है। भय रहता है, कि उसकी श्वासोपनलियोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें अर्थात श्वास यन्त्रकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें प्रदाहकी अवस्था हो जायगी, कितने हो ऐसे अवस्था प्राप्त रोगी यक्ष्मासे मर जाते हैं, जो डलकामारासे आरोग्य हो जाते और इस श्रेणीके रोगोंमें बहुत साधारण रूपसे आपको ऐसे मिलेंगे जो प्रत्येक बारके शीत और मौसमकी तर हवासे बदतर हो जाते हैं। ऐसे रोगी ठीक डलकामाराके हदमें प्रवेश करते हैं। वे दक्षिणमें जाकर अच्छे रहते हैं, जहां बराबर गर्म जलवायु रहता है। डलकामाराका रोगी रोगियल रहता है, नया यक्ष्मा हो जानेका भय बना रहता है, पीला चेहरा, रोगियल पीला और म्लान। इससे मालूम होता है कि यह एकदम गहराईतक जीवनी शक्तिमें प्रवेश करता है और ऐसी गडबडी उत्पन्न करता है, जो बहुत बीमार रोगियोंमें पर्याप्त जो

सूखी, तङ्ग करनेवाली खाँसी, जो जाड़ेकी दिनोंकी "सर्दी" है, जो गर्मियोंमें गायब हो जाती और जाड़ेमें लौट आती है। **सोरिनम**में ही सूखी तङ्ग करनेवाली शीतकालकी खाँसी है। **आर्सेनिकम**में जाड़ेके दिनोंकी खाँसी है।

ऋतु-स्रावके पहले चेहरेपर दाने निकल आते है।" "मानो ऋतु-स्राव बतानेवाला हो, इसके साथ ही असाधारण कामोत्तेजन रहता है, भेसिया दादकी तरह उद्भेद निकल आते हैं," इसके "ठण्डे" घत बहुत हो कष्टदायक होते हैं, रोगोको ये "ठण्डे घत ओंठ या जननेन्द्रियपर हो सकते हैं।" जितनी हो बार सर्दी लगती है, उतनी ही बार भगोष्ठोंपर दादकी तरह उद्भेद या लिङ्गाग्र-चर्मपर ये उद्भेद निकल आते हैं। सर्द सोडवाली ऋतुके सर्दीके उपसर्ग, 'स्तन फूले, कड़े, यन्त्रणापूर्ण और दर्द-भरे।" "स्तन-ग्रन्थि फूली, अक्रिय, दर्द-रहित, खुजली" यह सब उस 'सर्दी" के कारण है, जो उनमें घर बनायी हुई मालूम होती है।

"खाँसी, सीड ठण्डे जलवायु या भीज जानेके कारण उत्पन्न।" "खाँसी सूखी, स्वर-भङ्गवाली और सूखी या ढीली, इसके साथ हो बहुत ज्यादा बलगम निकलना और श्रवण शक्ति धीमी, सर्दीका बोखार।" "लेटे रहनेपर और गर्म कमरेमें खाँसी बढ़ी रहती है और खुली हवामें अच्छी।"

सर्दी लग जानेके कारण पीठमें वातज खञ्जता और कड़ापन, हिलने-डोलनेपर अच्छा रहता है, कटि-प्रदेशमें खींचनकी तरह दर्द, जो आराम करनेके समय निम्न अङ्गतक फैल जाता है। प्रत्येक बार सर्द हवा लग जानेपर गर्दन पकड़ जाना। ठण्ड लग जानेपर अङ्गोंमें सुई गड़ने फाड़नेकी तरह वातज-वेदना। गतिशील रहनेपर यह अच्छी रहती है, रातमें या शामके समय कुछ बोखारके साथ बदतर हो जाती है। यन्त्रणाप्रद, कुचल जानेकी तरह समूचे शरीरमें मालूम होना। हाथोंपर, अगुलियोंपर और चेहरेमें मसे।